अग्निदीक्षा

निकोलाई ऑस्त्रोवस्की

अनुवादक : अमृत राय

अग्नि-दीक्षा

अनुवादक-
अमृत राय

निकोलाई ऑस्त्रोवस्की

अभिदीक्षा

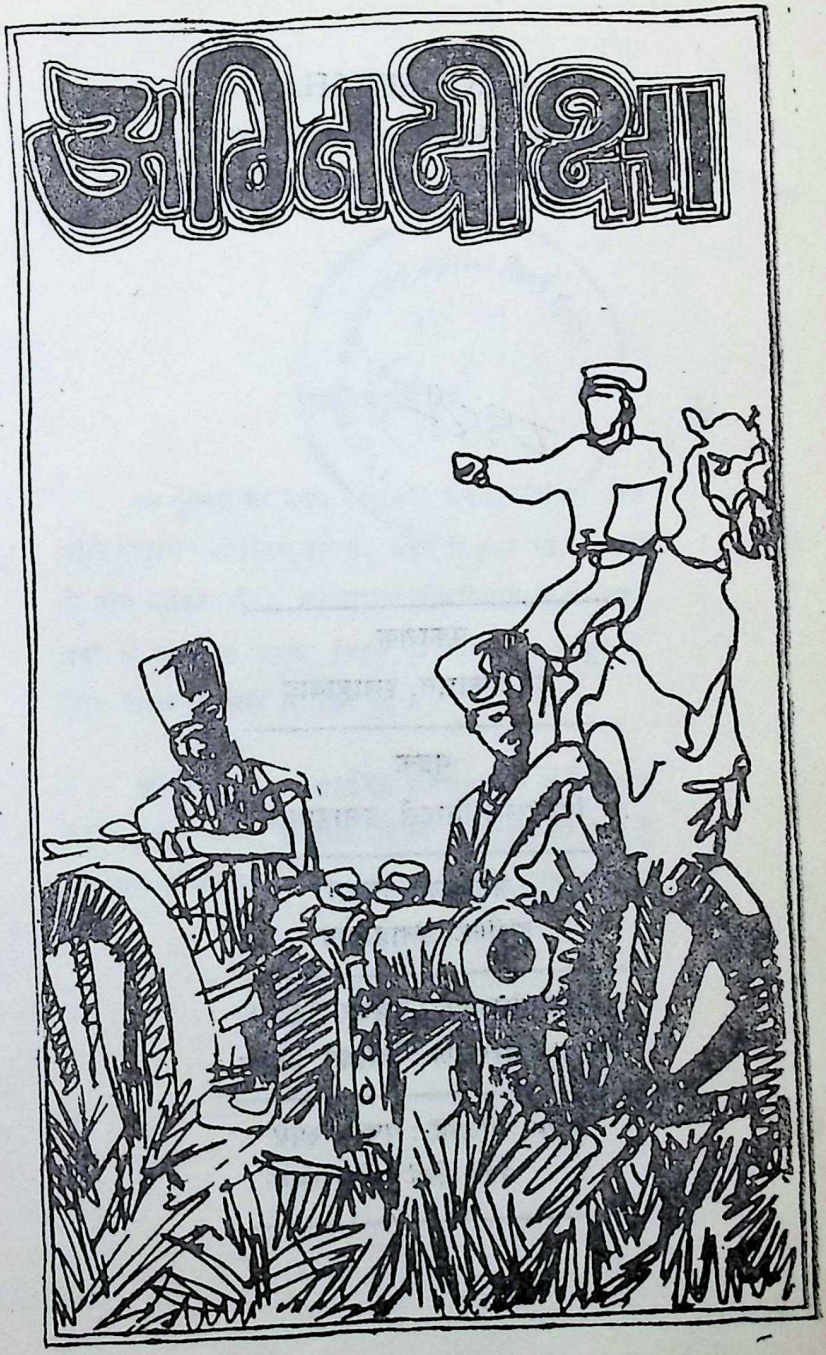

AGNIDEEKSHA

A Novel by Nikolai Ostrovsky

Translated by Amrit Rai

कस्तूरबा देवी स्मारक पुस्तकालय
भरतपुर
१२५६२

प्रकाशक

हंस प्रकाशन, इलाहाबाद

मुद्रक

पियरलेस प्रिन्टर्स, इलाहाबाद

आवरण / सज्जा

इम्पैक्ट, इलाहाबाद

प्रथम संस्करण : नवंबर १९५४

वर्तमान संस्करण : दिसंबर १९८८

मूल्य : सजिल्द : पचास रुपये

पेपर बैक : तीस रुपये

प्रकाशकीय

इस पुस्तक का प्रथम संस्करण लगभग पैंतीस बरस पहले पीपुल्स पबलिशिंग हाउस, बंबई से हुआ था। पाठकों के बीच इसको जैसी असाधारण लोकप्रियता मिली, इतने वर्षों में अब तक इसके कितने ही संस्करण हो चुके हैं, और संभव है आगे भी होते रहें।

हमें आपको यह सूचना देते हुए बड़ा हर्ष है कि प्रथम प्रकाशक के सौजन्य से ऐसी विशेष व्यवस्था की गयी है कि आगे से यह पुस्तक हंस प्रकाशन से भी प्रकाशित हुआ करेगी।

SC 9833

देश के प्रति
निष्ठा और समर्पण
की
यह अद्भुत कहानी
अपने देश की
नयी पीढ़ी को

निकोलाई ऑस्त्रोवस्की और उसका उपन्यास

सोवियत साहित्य के इतिहास में निकोलाई ऑस्त्रोवस्की के उपन्यास **अग्नि-दीक्षा** की बहुत महत्वपूर्ण जगह है। इस पुस्तक की रचना, और इसी की रचना नहीं, ऑस्त्रोवस्की का समूचा साहित्यिक कृतित्व एक वीर बोल्शेविक के साहस की कहानी है।

ऑस्त्रोवस्की का जन्म १९०४ में रोवनो प्रदेश के ऑस्त्रोवस्की जिले के विलिया नामक ग्राम में हुआ था। उसका पिता मजदूर था मगर आमदनी इतनी कम थी कि उसकी माँ और छोटी बहनों को खेत-मजदूर का काम करना पड़ता था। उसका बड़ा भाई एक लुहार का अपरेन्टिस था जो अपने मजदूरों के साथ बहुत बुरा बर्ताव करता था। इस भावी लेखक के बचपन पर बेहद गरीबी और कठोरतम शोषण की जो छाया पड़ी थी, उसने उसके हृदय में अपने वर्ग-शत्रुओं के विरुद्ध तीक्ष्ण घृणा का बीज बो दिया था और सामाजिक अन्याय और मनुष्य के अपमान के विरुद्ध प्रतिवाद करने की प्रेरणा भी डाल दी थी। नौ बरस की उम्र में वह गड़रिये का काम करता था और ग्यारह बरस की उम्र में उक्रेन के शेपेतोवका नामक नगर के स्टेशन पर एक छोटे से रेस्तोराँ के बावर्चीखाने में काम करता था।

रेस्तोराँ में गन्दगी और गुलामी का जो वातावरण था, उससे बचने के लिए किशोर निकोलाई अपना अधिकांश समय अपने भाई के साथ गुज़ारता था जो रेलवे डिपो में एक मिस्त्री था।

इसी जगह पर उसने मानव अधिकारों के लिए मजदूरों के संघर्ष की बात सीखी और बोल्शेविकों के मुँह से लेनिन और उनके विचारों के बाबत सुना।

गाँव के स्कूल में किशोर निकोलाई ऑस्त्रोवस्की ने अपना परिचय एक असाधारण मेधावी विद्यार्थी के रूप में दिया। जब वे लोग शेपेतोवका आ गये

तो निकोलाई के माता-पिता ने उसको एक-दो साल स्कूल में भेजा। मगर कुछ ही महीनों बाद धर्मशास्त्र पढ़ानेवाले पादरी की सिफारिश पर उसको वहाँ से निकाल दिया गया क्योंकि वह टेढ़े-टेढ़े सवाल करके पादरी साहब को तंग किया करता था।

१९१७ की क्रान्ति ने निकोलाई ऑस्त्रोवस्की के लिए शिक्षा के दरवाजे खोले। वह बिजलीघर में आगवाले का काम भी करता था और उसके साथ ही साथ पढ़ता भी था और स्कूल से निकलनेवाले एक साहित्यिक पत्र और अपनी ही स्थापित की हुई एक साहित्यिक गोष्ठी के संचालन में भी योग देता था। किशोरावस्था में निकोलाई ऑस्त्रोवस्की के सबसे पूजनीय वीर गैरीबाल्डी और गैड-फ्लाई जैसे लोग थे। वह बहुत पढ़ता था और उक्रेन के महान क्रान्तिकारी कवि तारस शेवचेन्को की कृतियाँ, गोगोल की रोमानी कहानी 'तारस बुल्बा' और दूसरे महान प्राचीन लेखकों की कृतियाँ किशोर ऑस्त्रोवस्की को सबसे ज्यादा भाती थीं और उसके मन पर उन्हीं का सबसे ज्यादा असर था।

उक्रेन में घमासान गृहयुद्ध हो रहा था और नयी पीढ़ी के लोगों को अपनी ओर खींच रहा था। किशोर ऑस्त्रोवस्की और उसके अन्य मित्र, आक्रमणकारियों से और देश के साथ विश्वासघात करके जर्मन सेनाओं से मिल जानेवाले उक्रेनी पूँजीपतियों से लड़ने में गुप्त क्रान्तिकारी कमेटी को मदद पहुँचाते थे। शेपेतोवका के मुक्त हो जाने पर नौजवान ऑस्त्रोवस्की ने आगे बढ़कर वहाँ की जिन्दगी को व्यवस्थित करने और चोरबाजारी करनेवालों और क्रान्ति के दुश्मनों से लड़ने में क्रान्तिकारी कमेटी को मदद पहुँचायी।

निकोलाई ऑस्त्रोवस्की शेपेतोवका के सबसे पहले पाँच नौजवान कम्युनिस्टों में से एक था। अगस्त १९१९ में वह घर से भाग गया और लाल सेना में दाखिल हो गया और यहाँ पर उसने अपना परिचय एक बहादुर सैनिक के रूप में दिया। १९२० के ग्रीष्म में वह पहली घुड़सवार सेना की एक टुकड़ी के साथ, जिसने क्रान्ति-विरोधी पोलों के विरुद्ध संघर्ष में बड़ी कीर्ति अर्जित की थी, अपने नगर लौटा। मगर युद्ध अभी खत्म नहीं हुआ था और पन्द्रहवर्षीय ऑस्त्रोवस्की फिर मोर्चे पर जाने के लिए सेना में भर्ती हुआ। लुओव की लड़ाई में वह बुरी तरह घायल हुआ और उसकी दाहिनी आँख की रोशनी जाती रही। अस्पताल में दो महीना गुजारने के बाद उसे सेना से छुट्टी दे दी गयी और वह शेपेतोवका लौट आया।

१९२१ के ग्रीष्म में ऑस्त्रोवस्की कीव चला गया जहाँ वह एक स्थानीय कोमसोमोल (नौजवान कम्युनिस्ट) संगठन का प्रधान बना और उसके साथ ही साथ एक रेलवे कारखाने में एलेक्ट्रीशियन का काम भी करता रहा। ये बहुत कठिन दिन थे। रोटी और ईंधन की सख्त कमी थी। निकोलाई ऑस्त्रोवस्की

नौजवान मजदूरों की एक टुकड़ी का नेता बना जिसका काम कुछ दूर के एक जंगल से शहर में लकड़ी लाने के लिए नयी रेलवे लाइन बिछाना था। यह काम बहुत ही कठिन हालतों में किया गया और गोकि इस काम में कामयाबी मिली मगर इसमें शक नहीं कि निकोलाई ऑस्त्रोवस्की की तन्दुरुस्ती टूट गयी। इसके तुरन्त बाद ही पतझड़ के दिनों में, जब कि अभी निकोलाई ऑस्त्रोवस्की अपनी बीमारी के बाद ठीक भी नहीं हो पाया था, वह अपने कोमसोमोल साथियों के साथ मिलकर बाढ़ में से लकड़ी के पट्टे बचाकर निकालने में लग गया और इस काम के लिए उसे नीपर नदी में घुटने-घुटने भर बर्फानी पानी में खड़ा रहना पड़ता था।

लड़ाई का उसका जख्म, टाइफस बुखार और भयंकर गठिया — तीनों ने मिल कर ऑस्त्रोवस्की की तन्दुरुस्ती को इस बुरी तरह से तोड़ दिया कि उसे कीव का अपना काम छोड़ना ही पड़ा। मगर यह बात उसके गले के नीचे नहीं उतरती थी कि उसे बाकायदा रोगी करार दिया जाय और देश के राजनीतिक और रचनात्मक जीवन से उसका सम्बन्ध-विच्छेद कर दिया जाय। वह बराबर आग्रह करता था कि उसको काम दिया जाय और तब फिर मजबूर होकर उसकी इच्छा का पालन करने के लिए उसे बेरोजदोव भेजा गया। बेरोजदोव पुरानी पश्चिमी सीमा पर एक छोटा सा उक्रेनी नगर था और वहाँ पहुँचकर ऑस्त्रोवस्की तुरन्त ही पार्टी और कोमसोमोल के महत्वपूर्ण काम में जुट गया।

१९२४ में ऑस्त्रोवस्की कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य बना। तब तक उसकी तन्दुरुस्ती इतनी चौपट हो चुकी थी कि उसके लिए कोई भी काम करना असम्भव था। अच्छे से अच्छे विशेषज्ञों ने उसकी चिकित्सा की और उसे बहुत दिन तक सेनेटोरियम में भी रखा गया, मगर उस सबसे कोई नतीजा नहीं निकला और उसकी बीमारी बराबर तेजी से बढ़ती गयी। १९२६ के अन्त तक आते-आते यह बात साफ हो गयी कि यह वीर नवयुवक इसी तरह आजीवन शैया-ग्रस्त ही रहेगा। तीन साल बाद वह बिलकुल अन्धा हो गया और १९३० में हाथों और कुहनियों को छोड़कर सारा शरीर ऐसा जकड़ गया कि हिल-डुल भी न सकता था।

अब उसके अच्छे होने की कोई उम्मीद न थी और ऐसी हालत में निकोलाई ऑस्त्रोवस्की ने एक ऐसी योजना अपने लिए निकाली, 'जो उसके जीवन को कुछ सार्थकता दे सके।' उसकी अपनी स्थिति चाहे जितनी करुण रही हो, यह नौजवान बोल्शेविक ऐसे जीवन की कल्पना भी न कर पाता था जो जनता के कार्यों और संघर्षों से अलग हो। उसने लड़नेवालों की कतार में एक बार फिर शरीक होने का संकल्प किया और इस बार उसके हाथ में एक नया हथियार था — उसकी कलम। उसको एक ऐसी किताब लिखने की लौ लगी थी

जिसमें गुजरे हुए बहादुर जमाने की कहानी हो और जो पार्टी की नयी पीढ़ी को कम्युनिस्ट भावना के अनुसार ढालने में मदद पहुँचा सके। पार्टी के प्रति उसकी यही सेवा होगी।

शायद १९२४ या १९२६ में अपनी भयानक बीमारी के पहले दौर में, यह विचार पहली बार ऑस्त्रोवस्की के मन में आया। बीते हुए सबसे शुरू के दिनों के कोमसोमोल सदस्यों के बहादुरी से भरे कारनामों और उन बीते दिनों के बारे में बातें करना उसे अच्छा मालूम होता था। और जिस तरह वह कहानी सुनाता था, उससे साफ पता चलता था कि उसको कहानी कहना आता है। मगर उन दिनों ऑस्त्रोवस्की यह नहीं सोचता था कि वह लेखक बनेगा। वह तो बाद में जब कम्युनिस्ट विश्वविद्यालय ने चिट्ठी-पत्री के कोर्स के जरिए उसको मार्क्सवाद और लेनिनवाद की खूब अच्छी शिक्षा दी, तब वह अपने अनुभवों को नयी रोशनी में देखने लगा और उसने इस बात को समझा कि उसकी मातृभूमि की आजादी में लेनिन की पार्टी ने कितना अधिक योग दिया है और कम्युनिज्म के विचारों में वह कौन-सी ताकत है जिसने उसके देश को, देशवासियों को और खुद उसको भी एकदम बदल दिया है।

ऑस्त्रोवस्की बड़े मनोयोग से पुराने रूसी लेखकों — पुश्किन, गोगोल, तुर्गनेव, तोल्सतोय, चेखोव और, सबसे अधिक गोर्की की कृतियाँ पढ़ता था। गोर्की की कुछ चुनी हुई रचनाओं का एक संग्रह, 'माँ' और ऐसी ही कुछ और किताबें ऑस्त्रोवस्की बराबर पढ़ा करता था। बाद के सालों में जब उसकी आँख की रोशनी चली गयी थी, तब वह अपने दोस्तों और सम्बन्धियों से अनुरोध करता था कि वे उसको गोर्की पढ़कर सुनायें और साहित्य के सम्बन्ध में और मजदूर वर्ग के लेखक के कर्त्तव्यों के सम्बन्ध में गोर्की के विचार नकल करके उसको दें। उसने गृहयुद्ध के बारे में समस्त राजनीतिक साहित्य बहुत अच्छी तरह पढ़ा और उसमें भी खास तौर पर दिमित्री फुर्मानोव की दो कृतियाँ 'चपाइयेव' और 'म्युटिनी', सेराफिमोविच का 'आयरन फ्लड' और फादियेव का 'डिबेकिल'। इन सभी किताबों में रूस के स्वतंत्रता संग्राम और नये सोवियत मानव के जन्म की कहानी थी।

इसके बाद प्रथम पंचवर्षीय योजना के वर्ष आये।

अन्य सोवियत नागरिकों की तरह लाखों कोमसोमोल सदस्यों ने भी मेगनिटोगोर्स्क के लोहे के कारखाने, नीपर के लेनिन हाइड्रो-एलेक्ट्रिक स्टेशन, वोल्गाग्राद ट्रैक्टर प्लान्ट और इसी तरह के दूसरे विशाल निर्माण-कार्यों में हाथ बँटाया। दूसरी ओर इन्हीं दिनों करोड़ों किसानों ने सामूहिक खेती के आन्दोलन में अपना योग दिया।

इन्हीं महान घटनाओं के असर से निकोलाई ऑस्त्रोवस्की के नायक का

अन्तिम रूप उसके मन में आया, वह नायक जिसे उसका सृष्टा "हमारे युग का चरितनायक" पुकारता है।

नवम्बर १९३० में एकदम अन्धे और अशक्त हो जाने पर उसने अपने उपन्यास 'अग्नि-दीक्षा' पर काम करना शुरू किया। इस किताव का कुछ हिस्सा लेखक ने अपने हाथ से लिखा था, बावजूद उन तमाम कठिनाइयों और उस दर्द के जो निश्चय ही उसे महसूस हुआ होगा। बाकी उसने अपनी पत्नी, बहन और सबसे आत्मीय मित्रों को बोलकर लिखाया था। जून १९३३ में यह किताब पूरी हुई।

'अग्नि-दीक्षा' नये मानव के जन्म की कहानी है, समाजवादी युग के उस नये मनुष्य की जो मानवता के सुख के लिए होनेवाले संघर्ष में सब कुछ करने की योग्यता अपने अन्दर दिखलाता है, जो बड़े-बड़े काम अपने सामने रखता है और उन्हें पूरा करके दिखलाता है।

जिस हालत में यह किताब लिखी गयी — इसको लिखने के लिए लेखक को जिस तरह यन्त्रणा से और रोग से लड़ना पड़ा, पार्टी और सोवियत अधिकारियों ने जिस तरह उसकी सहायता की जो न तो उसके मित्र थे और न सम्बन्धी — वह खुद इस बात का परिचायक है कि मानव-सम्बन्धों में कितना बड़ा परिवर्तन आ चुका है और नये मनुष्य का जन्म हो गया है।

जीवन की घोषणा करनेवाले जिस सशक्त विचार ने इस युवा लेखक के मन को पकड़ लिया था, और जिस तरह लेखक ने अपने-आपको 'संसार की श्रेष्ठतम वस्तु : मानवता की स्वतंत्रता' के संघर्ष पर अपने-आपको न्यौछावर कर दिया था, यही वह चीज थी जो उन सब लोगों को अपनी गिरफ्त में ले लेती थी जो निकोलाई ऑस्त्रोवस्की के सम्पर्क में आते थे।

'अग्नि-दीक्षा' लेखक की अपनी जिन्दगी की कहानी है मगर वह इससे भी ज्यादा कुछ है — "वह एक उपन्यास है और केवल कोमसोमोल के सदस्य ऑस्त्रोवस्की का जीवन-चरित्र नहीं है," जैसा कि उसके लेखक ने स्वयं लिखा है। यह बात कि पावेल कोर्चागिन के रूप में हम आसानी से उसके स्रष्टा को पहचान लेते हैं, ऑस्त्रोवस्की का एक विशेष गुण है — अपने नायक के साथ उसका अत्यन्त घनिष्ठ सम्पर्क। नायक और लेखक दोनों के निजी, सामाजिक व रचनात्मक जीवन घनिष्ठ रूप में एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं और दोनों ही का लक्ष्य जनता की सेवा है। यह गुण सभी सोवियत लेखकों में पाया जाता है और यही कारण है कि उनके विभिन्न चरित्रों में सच्चाई और विश्वसनीयता आती है।

अपने जीवन-चरित्र को नये साँचे में ढालते हुए, जो कि बहुत हद तक उसकी समूची पीढ़ी का जीवन-चरित्र है, निकोलाई ऑस्त्रोवस्की अपना उपन्यास अपने नायक के बचपन की एक तस्वीर देकर शुरू करता है और पाठक को दिखलाता है कि किस तरह एक शत्रुता से भरे हुए परिवेश के विरुद्ध संघर्ष करते हुए पावेल कोर्चागिन के मन और चरित्र का निर्माण होता है; कैसे उसके विचार पकते हैं और उसको इस आवश्यकता की चेतना होती है कि परिवेश और सम्पूर्ण समाजव्यवस्था को नये सिरे से बनाना है; कैसे समाजवाद के लिए जनता का संघर्ष सामाजिक जीवन की आर्थिक स्थितियों को बदलकर एक नई समाजवादी चेतना को जन्म देता है और सामाजिक और वैयक्तिक आचरण के एक नये मानदण्ड की स्थापना करता है, जो कि वास्तव में एक मानवीय आचार का आधार है।

समाजवादी प्रणाली में श्रम की प्रकृति, उसका रूप और प्राण दोनों बदल जाते हैं और करोड़ों आदमी निर्माण में लगी हुई एक ही समष्टि के अंग बन जाते हैं जो एक ही योजना के अन्तर्गत अपनी मातृभूमि के लिए एक नये जीवन का निर्माण करते हैं। ये परिवर्तन फिर ऑस्त्रोवस्की के नायकों के विचारों, भावनाओं और उनके आपसी सम्बन्धों को बदल देते हैं।

जहाँ तक पावेल कोर्चागिन की बात है, श्रम और समाजवादी सम्पत्ति के प्रति नया दृष्टिकोण उसके अन्दर लड़ाई के मोर्चे से लौटने के तत्काल बाद ही दिखायी देने लग जाता है। उसके अन्दर इस भावना का जन्म होता है कि वह अपने कारखानों और अपने देश का मालिक है। उत्पादन के नये सम्बन्धों से पैदा होनेवाली यह नयी भावना ही कोर्चागिन के उस संघर्ष की अनुप्रेरक शक्ति है जो वह आलसी और स्वार्थी लोगों के खिलाफ करता है, उन मजदूरों के खिलाफ जो अपने औजारों के प्रति लापरवाही बरतते हैं और इस बात को भूल जाते हैं कि वे सब अब जनता की मिल्कियत हैं। वही भावना कोर्चागिन को कोमसोमोल का एक कर्मठ कार्यकर्ता बनाती है, तोड़-फोड़ करनेवालों और चोरी-छिपे व्यापार करनेवालों के खिलाफ डट कर लड़नेवाला सैनिक बनाती है और गाँवों में सामूहिक खेती का एक अत्यन्त उत्साही संगठनकर्ता बनाती है। समाजवादी निर्माण के युग में स्वामित्व की भावना एक नये उच्चतर धरातल पर पहुँच जाती है। करोड़ों आदमी समाजवादी उद्योग-धन्धों और सरकारी व सामूहिक खेतों के सजग निर्माता बन जाते हैं। अपनी जनता के रचनात्मक श्रम में योग देने की अदम्य भावना ही पावेल को अपनी उस अन्तिम रचनात्मक सिद्धि के पास पहुँचाती है।

पावेल कोर्चागिन की वीरता रूस के मजदूर वर्ग के अन्दर निहित वीरता है। इस वीरता की प्रकृति पावेल कोर्चागिन की जिन्दगी के हर नये दौर के

साथ बदलती जाती है। वह लड़का जो जुखराई को पेतल्युरा के सिपाही के चंगुल से छुड़ाता है, अभी पूर्ण रूप से क्रान्तिकारी नहीं है। अपनी जीवन स्थिति के खिलाफ जो सहज प्रतिवाद पावेल कोर्चागिन करता है, वह उसको वर्ग-संघर्ष के भीतर खींच लाता है और उसी रास्ते पर बढ़ते हुए उसके अन्दर समाजवादी चेतना का उदय होता है। गृहयुद्ध के दिनों में ऊँचे आदर्शों के लिए उसके भीतर जो आत्मोत्सर्ग की भावना रहती है, उसी से उस सजग कम्युनिस्ट आत्म-अनुशासन का जन्म होता है जो जनता के लिए एक उदाहरण बनता है और फिर धीरे-धीरे उपन्यास के अन्त तक पहुँचते-पहुँचते एक प्रौढ़ समाजवादी चेतना का रूप ले लेता है, जो कोर्चागिन के चरित्र और आचरण का नियमन करता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह बीमार और अशक्त नायक निर्माण के संघर्ष में लगे हुए लोगों की पंक्ति में एक बार फिर से आने के लिए जिस तरह का अनोखा संघर्ष करता है, उसके लिए वह किसी रूप में बाध्य नहीं है और अगर कोई बाध्यता है तो यही कि वह भी समाजवाद के लिए संघर्ष करनेवाली करोड़ों जनता का एक अंग बनना चाहता है और इसी की अदम्य प्रेरणा उसको निरन्तर आगे बढ़ाती रहती है।

पावेल कोर्चागिन ने शुरू-शुरू में क्रान्ति के प्रति अपने कर्त्तव्य को जिस रूप में समझा था उसमें अपनी व्यक्तिगत जिन्दगी के लिए कोई भी जगह न थी, यहाँ तक कि उस प्रेम के लिए भी कोई जगह न थी जो यौवन का एक नैसर्गिक गुण है। पावेल मध्यवर्गी घराने की लड़की तोनिया से अपनी दोस्ती को खतम कर देता है और कम्युनिस्ट लड़की रिता उस्तिनोविच के प्रति अपने प्रेम को शुरू में ही दबा देता है। मगर कुछ ही वर्षों बाद पावेल कोर्चागिन अपने स्रष्टा की भाँति, अपने वैराग्य को छोड़ता है और अपनी इच्छाशक्ति का कड़े-से-कड़ा इम्तहान लेने के लिए अकारण ही अपने-आपको कष्ट देना, जो कि उन दिनों कोमसोमोल के पहले सदस्यों में बहुत हुआ करता था, बन्द कर देता है।

पावेल की माँ और उसकी पत्नी ताया क्रान्तिकारी संघर्ष में उसकी साथिनें हैं। वह खुद उन्हें कम्युनिस्ट पार्टी के अन्दर लाता है और इस तरह उनके जरिए निःस्वार्थ भाव से जनता की सेवा करता है और उस क्रम को टूटने नहीं देता।

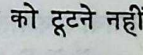

अपने नायक का चित्रण करने में निकोलाई ऑस्त्रोवस्की दिखलाता है कि किस तरह पावेल कोर्चागिन के सबसे अच्छे गुण, समाजवाद के लिए जनता के संघर्ष में योगदान देने की प्रक्रिया में पैदा होते, मँजते और निखरते हैं। ऑस्त्रो-

वस्की के नायक का जो आन्तरिक सौन्दर्य है, जिस चीज के लिए वह खड़ा है, उसकी विजय का बीज उन तमाम घटनाओं में है और उनकी ऐतिहासिक सच्चाई में है जिसका चित्रण उपन्यास में हुआ है। यही वह चीज है जो पावेल कोर्चागिन को अपनी पीढ़ी का एक प्रतिनिधि नायक बनाती है।

समष्टि से हटकर हम पावेल कोर्चागिन की कल्पना भी नहीं कर सकते। हम उसे अपने ऐसे साथियों से अलग करके देख ही नहीं सकते — जैसे सर्योजा ब्रुजाक जो कि इसलिए युद्ध में जाता है ताकि फिर युद्ध न हो; जैसे सर्योजा की बहन वालिया, वह वीर युवती देशभक्त जिसे क्रान्ति-विरोधी पोल मार डालते हैं, जैसे इवान जार्की, वह अनाथ लड़का जिसे लाल सेना की एक कम्पनी गोद ले लेती है; जैसे जिला कोमसोमोल का मंत्री ओकुनेव; और नौजवान जहाजी मजदूर इवान पांक्रातोव।

अपने साथियों की भाँति पावेल कोर्चागिन ने भी अपने सबसे अच्छे गुण पुराने बोल्शेविकों से पाये हैं, जो क्रान्तिकारी संघर्ष में उन नौजवानों के नेता और शिक्षक हैं। उपन्यास में इस पुरानी बोल्शेविक पीढ़ी का नेतृत्व इस तरह के लोग करते हैं, जैसे बोलोस्त की गुप्त क्रान्तिकारी कमेटी का प्रधान दोलिनिक जो थकना नहीं जानता, जैसे वह बहादुर क्रान्तिकारी फियोदोर जुखराई जो पहले मल्लाह था और १९१५ से ही बोल्शेविक पार्टी का सदस्य था; जैसे तोकोरेव जो गुप्त क्रान्तिकारी आन्दोलन का कार्यकर्त्ता था; जैसे फौजी कमिसार क्रेमर और इसी तरह के और भी बहुत से लोग। ये दोनों पीढ़ियाँ आपस में ऐसे धागों से जुड़ी हुई हैं जो दिखायी नहीं देतीं मगर अटूट हैं।

कोर्चागिन के बहादुरी के कारनामे वैसे ही हैं जैसे उसके साथियों के। पावेल कोर्चागिन किसी मतलब में उन हजारों लोगों से अलग नहीं है जो उसी रास्ते पर चलते हैं। बिना इस बात की चिन्ता किए कि इसका क्या नतीजा होगा, पावेल गिरफ्तार जुखराई को पकड़कर ले जाने वाले पेतल्युरा सैनिकों पर हमला बोल देता है; सर्योजा ब्रुजाक, जिसके मन में अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध विद्रोह और मानवता के प्रेम की भावना है, अपने को एक बूढ़े यहूदी के आगे डाल देता है जब एक नशे में चूर पेतल्युरा सैनिक बुड्ढे पर अपनी तलवार चलाता है। पावेल कोर्चागिन पहली घुड़सवार सेना की मशहूर कार्रवाइयों में हिस्सा लेता है; इवान जार्की क्रान्ति-विरोधियों के हाथ से क्रीमिया को मुक्त कराने की लड़ाई में नाम कमाता है।

रेल की पटरी बिछाने के काम में कोर्चागिन के मित्र भी उसी लगन और निःस्वार्थ सेवा-भावना का परिचय देते हैं जो स्वयं पावेल में पायी जाती है। यह भी गौर करने की बात है कि सेर्गेई ब्रुजाक का चरित्र भी ऑस्त्रोवस्की ने जीवन से ही लिया है। इस उपन्यास के अनेक चरित्रों में एक से ही मानव-

गुण पाये जाते हैं और यही चीज उनको उतना सजीव और प्रातिनिधिक बना देती है।

पावेल और उसके मित्रों के सामने प्रेम और मैत्री का एक बहुत ही ऊँचा और नैतिक दृष्टि से अत्यन्त पवित्र मानदण्ड रहता है। उपन्यास में प्रेम और मैत्री की भावना अजस्र भाव से बहती रहती है और उसको अनेक दृश्यों में विशेष महत्व दिया गया है — जैसे पावेल और तोनिया की मुलाकात और सर्योजा और रिता की मुलाकात, जिसमें कि प्रेम के उदय का वर्णन किया गया है, और पावेल व ताया, उसकी पत्नी और साथिन, के परस्पर सम्बन्ध का चित्रण। रिता उस्तिनोविच, आना बोर्हार्ट, लिदिया पोलेविख और दूसरे नारी पात्र, सभी पवित्र और ऊँचे चरित्र वाले हैं और उन सबसे पता चलता है कि मानव-सम्बन्धों में कितने महान परिवर्तन हो चुके हैं।

यह उपन्यास उन सभी बातों की भर्त्सना करता है जो कुत्सित हैं और मनुष्य का अधःपतन दिखलाती हैं। इस चीज का पता बहुत सी बातों से चलता है — जैसे पावेल का रवैया उस पतित त्रात्स्कीपन्थी दुबावा की ओर; उस दुश्चरित्र फाइलो से उसकी मुलाकात; और फिर लेखक ने राजवालिखिन और लिदा के बीच की बातों का चित्रण जिस प्रकार से किया है, उससे भी इस बात का पता चल जाता है। निकोलाई ऑस्त्रोवस्की दिखलाता है कि किस तरह राजनीतिक जिन्दगी में दुरंगी चाल चलने और अपनी निजी जिन्दगी में नैतिक रूप से पतित होने का चोली-दामन का साथ है। वह दिखलाता है कि जनता के दुश्मन और पार्टी और कोमसोमोल के क्षणिक अनुयायी किस प्रकार स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों को कुत्सित दृष्टि से देखते हैं। इस उपन्यास के भीतर-भीतर चलनेवाला एक सबसे महत्वपूर्ण विचार यह है कि बोल्शेविक आदर्श ऊँचे-से-ऊँचे नैतिक मानदण्ड के साथ अभेद्य रूप में जुड़े रहते हैं और दोनों को एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता।

इस उपन्यास के अलग-अलग जो व्यक्ति पात्र हैं, वे सब मिलकर जनता की एक विशाल मूर्ति बन जाते हैं और यह कहा जा सकता है कि जनता ही इस उपन्यास की नायक है। पूरे उपन्यास में जनता की सामूहिक कार्रवाइयों के जो चित्र मिलते हैं, उन सबमें जनता का चित्रण बहुत अच्छी तरह किया गया है — जैसे लड़ाई, रेल की पटरियों का बिछाना, पार्टी और कोमसोमोल की मीटिंगें जिनमें त्रात्स्कीपन्थियों को पीछे ढकेला जाता है, सोवियत-पोलिश सीमा पर उत्सव मनाया जाना। ये दृश्य पात्रों के निजी जीवन के साथ जुड़े हुए हैं। इन सभी दृश्यों में वे बड़ी-बड़ी समस्याएँ, जो कि समूचे राष्ट्र के सामने हैं, अपना हल पा लेती हैं। देश से प्रेम, देश के शत्रुओं से दुर्दान्त घृणा, सभी छोटी-बड़ी बातों में वीरता और ऊँचे आदर्श, अन्तर्राष्ट्रीयता की एक

गहरी चेतना जो कि मजदूर वर्ग की अपनी खास चीज है और समाजवादी मानवता — ये सब चीजें ऑस्त्रोवस्की के नायकों के वैयक्तिक गुण या विशेषता न होकर एक समूचे राष्ट्र का गुण बन जाती हैं। यह ध्यान देने की बात है कि जहाँ रेल की पटरी बिछाने का वह कमर-तोड़ काम हो रहा था, वहीं पर ये शब्द बोले गये थे—लोहा इसी तरह आग में तप कर फौलाद बनता है !

कलाकार ऑस्त्रोवस्की जीवन के तीक्ष्ण अन्तर्विरोधों से कन्नी नहीं काटता और न अत्याचार और शोषण से दम तोड़ते हुए संसार के खिलाफ एक नये संसार, रचनात्मक श्रम के संसार के निर्माण के लिए होनेवाले संघर्ष की कठिनाइयों को ही कम करके देखता है। वह इस बात को नहीं छिपाता कि वह पिछला अभिशप्त अतीत किस प्रकार मजदूर वर्ग पर अपना प्रभाव डालता रहता है और किस प्रकार यह प्रभाव नये समाज के निर्माण की क्रिया में ही खतम होता है। वह अपने नायक पावेल कोर्चागिन की कमजोरियों से भी आँख नहीं चुराता। ऑस्त्रोवस्की के उपन्यास की लोकप्रियता का एक बड़ा कारण यह है कि वह जहाँ यह दिखलाता है कि किस प्रकार एक वीर चरित्र का निर्माण होता है, वहाँ साथ ही यह भी दिखलाता है कि व्यक्तियों की चेतना में से पूँजीवाद के अवशेषों को कैसे दूर किया जाता है।

रूसी उपन्यास की यह जो ख्याति रही है कि उसमें भावों की गहराई और सामाजिक अन्तर्विरोधों और सामाजिक संघर्षों के भीतर गहरी अर्न्तदृष्टि मिलती है, रूसी उपन्यास की इस परम्परा को ऑस्त्रोवस्की आगे ले जाता है। रूसी साहित्य में अब तक जितने भी वीर चरित्रों की सृष्टि हुई है, उन श्रेष्ठतम वीर चरित्रों में से पावेल भी एक है। मगर ऑस्त्रोवस्की ने अपने नायक में एक नये गुण का समावेश किया है जो कि पावेल कोर्चागिन के किसी भी पूर्वज में नहीं था। समाजवाद के निर्माण की क्रिया ने, समाजवादी समाज ने उसके अन्दर इस गुण का समावेश किया और वह गुण था एक आगे बढ़े हुए सामाजिक आदर्श के संघर्ष की क्रिया में व्यक्ति का अभिव्यक्ति-स्वातंत्र्य। १९२८-२९ के आसपास से लेकर १९३३-३४ के आसपास तक की जिन्दगी ने ही लेखक को यह बात दिखला दी थी कि सोवियत मनुष्य केवल नेता या सेनापति या संगठनकर्ता नहीं है, बल्कि एक साधारण बोल्शेविक या साधारण कोमसोमोल सदस्य के नाते उसके पास अपनी एक समृद्ध आन्तरिक दुनिया है और अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों के प्रति अपना नया दृष्टिकोण है, और खुद अपनी निजी जिन्दगी है। पावेल कोर्चागिन, जो अपने-आपमें एक बहुत संगठित चरित्र है, सोवियत समाज के विकास के एक पूरे दौर का प्रतिनिधित्व करता है, उस दौर का जिसमें इतिहास के प्रांगण में एक नये मनुष्य का आविर्भाव होता है।

जनता समाजवाद के लिए जो संघर्ष करती है, वही इस उपन्यास के कथानक की पृष्ठभूमि है। लेखक ने जिस प्रकार इस संघर्ष का चित्रण किया है और जिस प्रकार उपन्यास के चरित्रों के अनुभवों, कार्यों और भाग्यों का चित्रण किया है; जिस प्रकार उसने श्रम का चित्रण किया है जो जीवन का रूपान्तर कर देता है और उसके साथ ही श्रम करने वालों का भी रूपान्तर कर देता है; और सबसे अन्त में जिस प्रकार उसने मनुष्यों के पारस्परिक नये सम्बन्धों का चित्रण किया है — उस सब के कारण ऑस्त्रोवस्की का उपन्यास समाजवादी यथार्थवाद की एक सच्ची कृति बन गया है। दूसरे सोवियत लेखकों की तरह निकोलाई ऑस्त्रोवस्की भी गोर्की की परम्परा का लेखक था। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि वह केवल अनुसरण करता था। ऑस्त्रोवस्की ने नई बातों का आविष्कार भी किया और एक नये साहित्यिक नायक की सृष्टि की।

आनेवाली अनेक पीढ़ियों तक पावेल कोर्चागिन नवयुवकों का आदर्श रहेगा। हर पीढ़ी पिछली पीढ़ी से ज्यादा बड़ी संख्या में कोर्चागिन की धातु के नवयुवकों को जन्म देती है। उसके महान शिक्षक मैक्सिम गोर्की में जो अन्तर्दृष्टि थी, वैसी ही अन्तर्दृष्टि ऑस्त्रोवस्की में भी दिखायी देती है जिसके द्वारा उसने अपने काल की वास्तविकता में से आगे आनेवाले सत्य को पहचान लिया। पावेल कोर्चागिन की वीरतापूर्ण विशेषताएँ सोवियत नवयुवकों में अधिकाधिक मिलती हैं। पिछली लड़ाई ने इस बात को दिखलाया कि ऐसे ही गुण लाखों-करोड़ों सोवियत जनता में भी पाये जाते हैं। आज के रोज बहुत से विशाल कारखानों में सबसे अच्छे काम करनेवाले नौजवान मजदूरों की टोलियों ने अपने नाम निकोलाई ऑस्त्रोवस्की और उनके नायक पावेल कोर्चागिन के नाम पर रखे हैं।

निकोलाई ऑस्त्रोवस्की एक सोद्देश्य कलाकार था जो अच्छी तरह इस बात को जानता था कि उसे क्या करना है। वह जानता था कि उसे एक ऐसे युवा सैनिक के चित्र की सृष्टि करनी है, जिसके उदाहरण पर देश के नवयुवक चलें। इस काम को पूरा करने के लिए यह जरूरी था कि उसकी पुस्तक किसी एक सामान्य व्यक्ति का जीवन-चरित्र हो, जो यह दिखला सके कि कोई भी नवयुवक उस रास्ते पर आगे बढ़ सकता है। मगर उसके साथ ही साथ यह भी जरूरी था कि वह एक वीरतापूर्ण जीवन-चरित्र हो, क्योंकि ऑस्त्रोवस्की प्रति-दिन के जीवन में देश की सामान्य मेहनतकश जनता को जिस प्रकार संघर्ष करते देखता था, उसमें उसको एक गहरा रोमानी गुण मिलता था और ऐसी बहुत सी बातें मिलती थीं जो कि अनुकरणीय थीं और यही वह भावना थी जिसे उसने अपने मुख्य नायक और दूसरे पात्रों के अन्दर डाली। कहानी की तफसीली बातों को उसने अपने और अपने साथियों के तजुर्बों से

लिया और उन्हें चित्रित किया।

यह ध्यान देने की बात है कि उसने अपनी जिन्दगी के बहुत से बहादुरी के कारनामों के बारे में सिर्फ इसलिए नहीं लिखा कि उसको डर था कि उनके बारे में लिखते समय वह बात को बढ़ा-चढ़ा देगा। उसने कहीं भी इस बात का उल्लेख नहीं किया कि एक बार जब वह अभी छोटा सा लड़का ही था, तब उसने गुप्त क्रान्तिकारी कमेटी के बहुत से इश्तिहार एक जर्मन सन्तरी के ठीक नाक तले दीवार पर चिपकाये थे, और न इस घटना का कि जब वह पंद्रह साल का छोकरा ही था तभी उसने नोवोग्राद-वोलिन्स्की के पास एक पुल को बारूद से उड़ा दिया था और न यही कहानी उसने कहीं पर लिखी कि कैसे वह एक कुलक गिरोह के कब्जे में आये हुए एक कस्बे के अन्दर गया और वहाँ की सारी बातें, जिनकी क्रान्तिकारी आन्दोलन को जरूरत थी, पता लगाकर लौट आया। एक सच्चे कलाकार की भाँति ऑस्त्रोवस्की ने वे सभी चीजें छोड़ दीं जिनका समावेश करने के कारण उसके नायक के जीवन की कहानी असाधारण बन जाती।

जहाँ यह बात सच है कि ऑस्त्रोवस्की ने अपनी पुस्तक में अपने जीवन के कुछ जोखिम के कारनामे लिये हैं, वहाँ यह भी सच हैं कि उनको लेते समय वह उनके जोखिम को और उनके पीछे काम करनेवाली बहादुरी को कम करके दिखाता है। उदाहरण के लिए जब वह यह वर्णन करता है कि वह कैसे एक जोखिम से भरी हुई सड़क पर होकर बहुत सी बेशकीमत चीजें वेरेजदोव से सूबाई केन्द्र ले गया, तब वह सिर्फ इतना कहता है कि वे चीजें हिफाजत के साथ पहुँच गयीं, जब कि सच बात यह है कि ऑस्त्रोवस्की और उसके साथ के दो सैनिकों के साहस के कारण ही वह यात्रा सफल हुई थी और उन्हें रास्ते में डाकुओं के एक हमले का मुकाबला भी करना पड़ा था।

कोर्चागिन के बाद के जीवन में रेडियो एक बहुत महत्व की चीज हो जाती है। उपन्यास में जो रेडियो सेट शय्या-ग्रस्त पावेल के जीवन में आनन्द का संचार करता दिखलाया गया है, उसके बारे में बताया गया है कि उसके दोस्त वेरसेनेव ने उसको बनाया था। मगर सच बात यह थी कि ऑस्त्रोवस्की ने खुद उसको बनाया था और इस काम में उसको डेढ़-दो महीना लगा था। इस काम को पूरा करने के बाद खुद ऑस्त्रोवस्की ने कहा था:

'जरा सोचो! मैं एकदम अन्धा और उस पर से मैंने एक रेडियो फिट करना शुरू किया और पुर्जे भी मुझे कितने गये-गुजरे मिले कि अच्छी भली आँखवाला आदमी भी पसीने-पसीने हो जाता। कैसा मुश्किल काम था वह! उस समय मुझे केवल स्पर्श ज्ञान का सहारा था! जहन्नुम में जाय! जब यह काम पूरा हुआ और मेरा रेडियो सेट बन कर तैयार हुआ तो मैंने कसम खायी

कि फिर कभी ऐसा कोई काम न करूँगा।'

इसमें सन्देह नहीं कि ऑस्त्रोवस्की के जीवन की सबसे बड़ी वीरता थी उन अत्यन्त कठिन स्थितियों में उपन्यास को लिखना। आज जब हम ऑस्त्रोवस्की के बारे में सोचते हैं तो उसकी इसी वीरता का ध्यान हमको आता है। मगर तब भी उपन्यास में इस वीरता पर जोर नहीं दिया गया है, बल्कि नायक के जीवन की उन बातों पर ही जोर दिया गया है जो कि दूसरों के भी उन्हीं गुणों का प्रतिनिधित्व करती हैं। ऑस्त्रोवस्की के जीवन में जिस चीज को पाने में बरसों का वीरतापूर्ण संघर्ष लगा था, वह सब कोर्चागिन की कहानी में कुछ महीनों में ही पूरा हो जाता है। सच्चे वीर की सहज विनयशीलता से ऑस्त्रोवस्की इस पुस्तक की सृष्टि के बारे में केवल दो-तीन पृष्ठ लिखता है।

□ □ □

१९३५ में जब उसने सुना कि उसको आर्डर आफ लेनिन का पदक मिला है, तब निकोलाई ऑस्त्रोवस्की ने उत्तर में धन्यवाद देते हुए लिखा था :

'मेरा लालन-पालन पार्टी की सच्ची सहायिका कोमसोमोल ने किया है और जब तक मेरी जान है, तब तक मेरा जीवन अपनी समाजवादी मातृभूमि की नयी पीढ़ी की बोल्शेविक शिक्षा-दीक्षा के लिए लगा रहेगा।

इस नौजवान लेखक ने अपने कौल को पूरा किया। जनता के भीतर उसका मान बढ़ा, समाज के निर्माताओं की कतार में वह एक बार फिर और बड़ी शान से शामिल हुआ, उसके उत्साही पाठकों की हजारों चिट्ठियाँ उसके पास आईं और सैकड़ों मिलने-जुलने वाले आये जो उसका परिचय प्राप्त करना चाहते थे, उसके देश ने, सोवियत राज्य ने, कम्युनिस्ट पार्टी और कोमसोमोल ने हर तरह से उसकी देख-रेख की और इन सब चीजों से ऑस्त्रोवस्की के जिन्दगी के आखिरी साल सुखी जीवन की दीप्ति से भर उठे और उन्होंने उसकी प्रतिभा को और भी पैना बनाया।

अभी जब वह अपने पहले उपन्यास के ही एक नये संस्करण पर काम कर रहा था, तभी निकोलाई ऑस्त्रोवस्की ने एक दूसरी पुस्तक की रचना में भी हाथ लगा दिया था। उसका नाम था 'तूफान के बेटे'। उस वक्त क्षितिज पर दूसरे विश्वयुद्ध के काले-काले बादल मँडरा रहे थे। अंग्रेज-अमरीकी साम्राज्यवाद की ओर से प्रोत्साहन पाकर जर्मन और जापानी फासिस्ट समाजवाद के देश के खिलाफ युद्ध की तैयारी कर रहे थे।

निकोलाई ऑस्त्रोवस्की ने लिखा, 'हम सब शान्तिपूर्ण श्रम में लगे हुए हैं। शान्ति ही हमारा झण्डा है। पार्टी और सरकार ने इस झण्डे को ऊपर उठाया है ... हम शान्ति चाहते हैं क्योंकि हम कम्युनिज्म की आधारशिला रख

रहे हैं। मगर हम अपने देश के साथ गद्दारी करेंगे अगर हम उन क्रूर दुश्मनों को भूल जायें जो हमें घेरे हुए हैं।'

ऑस्त्रोवस्की ने अपनी नयी पुस्तक में अपने सामने यही लक्ष्य रखा था कि नयी पीढ़ी को, जो समाजवादी समाज में ही पली और बढ़ी थी, यह दिखलाये कि उसके दुश्मन कौन हैं।

निकोलाई ऑस्त्रोवस्की ने अपने इस उद्देश्य की व्याख्या करते हुए लिखा, 'मैं ऐसा इसलिए कर रहा हूँ ताकि अगर आगे चलकर लड़ाई होती है — यानी अगर हमारे ऊपर लड़ाई थोपी जाती है — तब उस हालत में किसी नौजवान का हाथ अपनी बन्दूक पर काँपे नहीं।'

अपने इस नये उपन्यास में लेखक का ध्यान पोलैंड की उच्च मध्यवर्गीय और जमींदार श्रेणियों पर जाता है और पोलैंड उस समय फासिज्म के रास्ते पर था। वह अपनी इस किताब का केवल पहला ही भाग पूरा कर पाया था जब उसकी मृत्यु हो गयी। निकोलाई ऑस्त्रोवस्की की मृत्यु २२ दिसम्बर १९३६ को हुई, ठीक उसी दिन जिस दिन उसके दूसरे और अन्तिम उपन्यास 'तूफान के बेटे' का पहला भाग प्रकाशित हुआ था।

निकोलाई ऑस्त्रोवस्की ने कहा, 'इससे अच्छी बात किसी आदमी के लिए और क्या हो सकती है कि वह मरने के बाद भी मानवता की सेवा करता रहे।'

इस बोल्शेविक उपन्यासकार की रचनाएँ, उसके उत्साह से भरे हुए लेख और भाषण जो उसने नवयुवकों के सामने दिये थे, आज भी संसार की जनता के उस संघर्ष को उसकी एक अनमोल देन हैं, जो शान्ति और रचनात्मक श्रम के लिए तथा मानवता के सुख के लिए किया जा रहा है।

— एन० वेन्ग्रोव

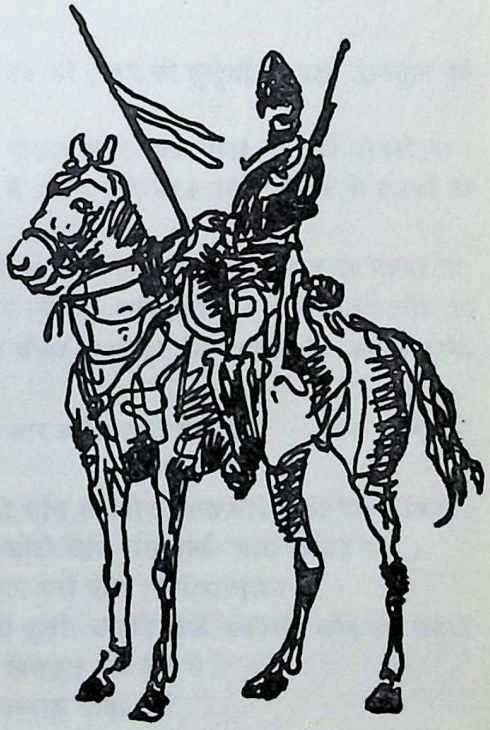

पहला भाग

एक

'खड़े तो हो जाओ तुम सब जो ईस्टर की छुट्टियों के पहले इम्तहान देने मेरे घर पर आये थे !'

बोलने वाला पादरी की पोशाक पहने एक मोटा थुलथुल आदमी था। एक बड़ा सा क्रॉस उसके गले में लटक रहा था। उसने क्लास के लड़कों को गुस्से की निगाहों से देखा।

ऐसा लगता था कि उसकी दो छोटी-छोटी कठोर आँखें उन छः बच्चों को, जिनमें चार लड़के थे और दो लड़कियाँ, आर-पार छेद देंगी। बच्चे सीट पर से उठे और उन्होंने पादरी का चोगा पहने हुए उस आदमी को सहमी-सहमी निगाहों से देखा।

पादरी ने लड़कियों की ओर संकेत करते हुए कहा — 'तुम लोग बैठ जाओ।'

लड़कियों ने इतमीनान की साँस ली और तुरन्त आदेश का पालन किया।

फादर वासिली की छोटी-छोटी आँखें उन बाकी चार पर गड़ गयीं।

'अच्छा भाई जान, अब आप जरा इधर तशरीफ लाइए !'

फादर वासिली उठे, अपनी कुर्सी उन्होंने पीछे सरकाई और उन लड़कों के पास पहुँचे जो एक-दूसरे से बिलकुल सटे खड़े थे।

'तुम में से कौन बदमाश तम्बाकू पीता है ?'

'हम लोग नहीं पीते, फादर' चारों ने डरते-डरते जवाब दिया।

पादरी के चेहरे पर खून उतर आया।

'अच्छा, तो तुम लोग तम्बाकू नहीं पीते, क्यों ? बदमाश कहीं के ! तब फिर मेरे आटे में तम्बाकू किसने मिलायी ? बोलो ! ठहरो अभी पता चल जाता

है कि पीते हो कि नहीं। उलटो, अपनी जेब उलटो ! देर मत करो, मैं कहता हूँ उलटो, फौरन उलटो !'

तीन लड़कों ने अपने-अपने जेब की चीजें निकाल-निकाल कर मेज पर रखना शुरू किया।

पादरी ने तम्बाकू के चूर की तलाश में सीवनों को बड़े गौर से देखा मगर उन्हें कुछ नहीं मिला। और तब वह उस चौथे लड़के की तरफ मुखातिब हुए। इस छोकरे की आँखें काली-काली थीं और वह भूरे रंग की कमीज और नीला पतलून पहने हुए था जिसके घुटने पर थेगड़ा लगा था।

'तुम ऐसे कैसे खड़े हो पुतले की तरह ?'

लड़के ने सवाल करने वाले को खामोश नफरत की आँखों से देखा।

उसने आक्रोशपूर्ण स्वर में जवाब दिया — 'मेरे कोई जेब-वेब नहीं है।'

'जेब नहीं है, क्यों ! तुम समझते हो मुझे मालूम नहीं है कि किसने मेरा आटा खराब किया ? कि यह बदमाशी किसकी है ? तुम समझते हो कि इस बार भी मैं तुमको छोड़ दूंगा ? वह नहीं होने का, तुम्हें इसकी सजा मिलेगी। पिछली बार मैंने तुमको स्कूल में रहने दिया था, क्योंकि तुम्हारी माँ मेरे पास आकर रोयी-गिड़गिड़ायी, मगर अब बस। बाहर निकल जाओ !' उसने लड़के का कान उमेठ कर उसे बरामदे में ढकेल दिया और अन्दर से किवाड़ झटके से बन्द कर लिया।

लड़के खामोश बैठे रहे, सहमे हुए। उन बच्चों में से कोई भी नहीं समझ सका कि क्यों पावेल कोर्चागिन को क्लास से बाहर किया गया। किसी की समझ में यह बात नहीं आयी, एक सर्गेई ब्रुजाक को छोड़ कर जो पावेल का सबसे गहरा दोस्त था। उसने पावेल को पादरी साहब के बावर्चीखाने में ईस्टर के केक के आटे में मुट्ठी भर घर की उगायी तम्बाकू छिड़कते देखा था — वहीं, पादरी साहब के उसी बावर्चीखाने में, जहाँ क्लास के छः पिछड़े हुए लड़के पादरी साहब का इन्तजार कर रहे थे कि वे आयें और उनका सबक सुनें।

क्लास से निकाला जाकर पावेल स्कूल की इमारत की सबसे निचली सीढ़ी पर बैठ गया और परेशान होकर सोचने लगा कि जब वह आज की घटना अपनी माँ को बतायेगा तब वह क्या कहेगी, उसकी गरीब, मेहनती माँ जो सबेरे से लेकर रात तक आबकारी के दरोगा साहब के यहाँ रसोई में बेटे के लिए खटती थी।

आँसुओं से उसका गला रुँध गया।

'मैं क्या करूँ अब ? यह सब उसी कम्बख्त पादरी के कारण हुआ। मगर मुझे भी क्या सूझी कि गया और उसके आटे में तम्बाकू मिला आया। यह सर्योजका की सूझ थी। उसने कहा था, आओ जरा इस बूढ़े खूसट की खबर

ली जाय। और वही हमने किया। मगर सजा तो देखो, सर्योजका तो साफ निकल गया और मेरी शामत आ गयी; ठोकर मारकर मुझे क्लास से बाहर कर दिया गया।'

फादर वासिली से उसका झगड़ा बहुत पुराना था। इसकी शुरुआत उस दिन हुई थी जब मिश्का लेव्चुकोव से उसका झगड़ा हुआ था और सजा के तौर पर स्कूल के बाद उसको रोक लिया गया था। खाली कमरे में लड़का कोई शरारत न करे, इस खयाल से मास्टर साहब उसे दर्जा दो में ले गये जहाँ पढ़ाई चल रही थी।

पावेल पीछे की एक सीट पर बैठ गया। मास्टर साहब, जो दुबले-पतले, चुसे हुए से छोटे से आदमी थे और काला कोट पहने हुए थे, क्लास को पृथ्वी के बारे में और आकाश के ग्रह-नक्षत्रों के बारे में बतला रहे थे; और पावेल ने तब मारे अचरज के मुँह बा दिया जब उसे पता चला कि यह पृथ्वी करोड़ों साल से अस्तित्व में है और ये तारे जो दिखायी देते हैं, ये भी दुनियाएँ हैं। उसने जो कुछ सुना उससे उसे इतना अचम्भा हुआ कि बड़ी मुश्किल से वह यह कहने से अपने को रोक पाया : 'मगर बाइबिल में तो ऐसा नहीं लिखा है।' पर बोला नहीं क्योंकि वह और मुसीबत में नहीं पड़ना चाहता था।

पादरी साहब ने हमेशा पावेल को धर्मशास्त्र में पूरे-पूरे नम्बर दिये थे। उसे प्रार्थना की लगभग पूरी किताब कंठस्थ थी — और बाइबिल के पुराने और नये टेस्टामेन्ट भी। उसे ठीक-ठीक पता था कि सप्ताह के किस दिन परमात्मा ने क्या बनाया था। अब उसने निश्चय किया कि फादर वासिली से इसके बारे में सवाल पूछेगा।

अगले ही दिन क्लास में, इसके पहले कि पादरी साहब ठीक से अपनी कुर्सी पर बैठ पायें, पावेल ने हाथ उठा दिया और बोलने की इजाजत पाते ही सीट पर से उठ खड़ा हुआ।

'फादर ! दर्जा दो के मास्टर साहब यह क्यों कहते हैं कि यह पृथ्वी करोड़ों साल पुरानी है, जब कि बाइबिल में लिखा है कि वह पाँच ह — जा — र ...'

फादर वासिली की भारी चीख ने उसकी बात को बीच ही में काट दिया।

'क्या कहा तुमने ? बदमाश कहीं के ! तो इसी तरह तुम अपनी धर्म-पुस्तक पढ़ते हो !'

इसके पहले कि पावेल समझ पाये कि बात क्या हुई, पादरी साहब ने उसका कान पकड़ा और दीवार से उसका सिर टकराने लगे। कुछ मिनट बाद, दहशत और दर्द से काँपते हुए उसने क्लास के बाहर के बरामदे में अपने आपको खड़ा पाया।

उस बार माँ दूसरे रोज स्कूल गयी थी और फादर वासिली से उसने विनती की थी कि पावेल को फिर से स्कूल में रख लें। उस दिन से पावेल जी-जान से पादरी साहब से घृणा करने लगा था। वह उनसे घृणा करता था और डरता था। उसका बच्चे का हृदय किसी भी अन्याय के खिलाफ, चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो, विद्रोह करता था। वह कभी उस मार के लिए, जो उस पर बेजा पड़ी थी, पादरी साहब को माफ नहीं कर सका और उसका मन गुस्से और नफरत से भर उठा था।

उसके बाद पावेल को बराबर फादर वासिली से द्वेषपूर्ण उपेक्षा ही मिली। पादरी साहब बराबर उसे क्लास के बाहर कर देते थे, जरा-जरा सी गलती के लिए उसे लगभग रोज ही कोने में खड़ा कर देते थे और कभी उससे कोई सवाल नहीं पूछते थे। नतीजा यह कि ईस्टर की छुट्टियों के ठीक पहले पावेल को क्लास के दूसरे पिछड़े हुए लड़कों के साथ पादरी साहब के मकान पर दुबारा इम्तहान देने के लिए जाना पड़ा। और वहीं बावर्चीखाने में उसने उनके आटे में तम्बाकू मिला दिया था।

किसी ने उसको ऐसा करते देखा नहीं था, लेकिन पादरी साहब फौरन ताड़ गये कि यह किसकी करतूत होगी।

आखिरकार क्लास खतम हुआ और बच्चे बाहर निकल कर हाते में आये और पावेल को घेर कर खड़े हो गये। पावेल उदास खामोशी में डूबा खड़ा रहा। सर्गेई ब्रुजाक क्लास में ही रुका रहा। वह महसूस कर रहा था कि वह भी अपराधी है। मगर, वह अपने दोस्त की मदद के लिए कुछ नहीं कर सकता था।

हेडमास्टर, एफ्रेम वासीलियेविच ने मास्टरों के कमरे की खुली खिड़की में से सिर बाहर निकाला और आवाज लगाई :

'कोर्चागिन को फौरन मेरे पास भेज दो।' हेडमास्टर साहब की गहरी भारी आवाज सुन कर पावेल चौंक पड़ा और धड़कते हुए दिल से वह उनके पास चला।

रेलवे स्टेशन रेस्तोराँ के मालिक ने, जो पीला सा अधेड़ आदमी था और जिसकी आँखें बेरंग और बुझी-बुझी सी थीं, कनखियों से पावेल को देखा।

'क्या उम्र है इसकी ?'

'बारह।'

'ठीक है। रह सकता है। इसे महीने में आठ रूबल मिलेंगे। और खाना भी, जिन दिनों काम करेगा। एक दिन छोड़ कर हर दूसरे रोज चौबीस

घंटे काम करना होगा। लेकिन हाँ, एक बात अच्छी तरह समझ लो : चोरी-चमारी नहीं चलेगी।'

'अरे नहीं साहब, कैसी बात कहते हैं। वह चोरी नहीं करेगा। मैं इसका जिम्मा लेती हूँ,' माँ ने डर कर फौरन आश्वस्त करने के लिये कहा।

'तो फिर आज से ही काम शुरू कर दे,' मालिक ने आदेश दिया और काउंटर के पीछे खड़ी औरत की ओर मुड़ते हुए कहा : 'जीना, इस लड़के को बावर्चीखाने में ले जाओ और फ्रोसिया से कहो कि ग्रिश्का की जगह इसको काम पर लगा दे।'

उस औरत ने अपने हाथ की वह छुरी रख दी जिससे वह गोश्त के टुकड़े कर रही थी, पावेल को इशारा किया और आगे-आगे चलते हुए हॉल को पार करके किनारे के दरवाजे पर पहुँची जो बर्तन धोने की कोठरी में खुलता था। पावेल उसके पीछे-पीछे गया। उसकी माँ भागती हुई आयी और जल्दी-जल्दी उसके कान में फुसफुसा कर कहा : 'देखो बेटा पावलुश्का, खूब जी लगा कर काम करना और कभी कोई गन्दी हरकत मत करना।'

उदास आँखों से माँ ने उसे जाते हुए देखा और वापस चली गयी।

भीतर काम जोरों के साथ चल रहा था। रकाबियों, काँटों, छुरियों का ढेर मेज पर लगा हुआ था और बहुत सी औरतें अपने कंधों पर पड़े तौलियों से उन्हें पोंछ रही थीं।

एक लड़का जिसके सिर में बड़े-बड़े लाल-लाल बालों का गुच्छा था, और जो पावेल से थोड़ा बड़ा था, दो बड़े समोवारों[1] को ठीक कर रहा था।

वह जगह बड़े से कंडाल में खौलते हुए पानी की भाप से भरी हुई थी। उसी पानी से रकाबियाँ धुल रही थीं। भाप के कारण पावेल एकाएक उन औरतों के चेहरों को न देख सका। वह अनिश्चय की हालत में खड़ा रहा कि कोई उसे बतलाये कि क्या करना है।

शराबखाने की नौकरानी जीना ने एक रकाबी धोने वाली के पास जाकर उसका कंधा छुआ और बोली :

'देखो फ्रोसिया, मैं तुम्हारे लिए ग्रिश्का की जगह एक नया लड़का ले आयी हूँ। तुम इसको काम बतला दो।'

जिस औरत को उसने फ्रोसिया कह कर पुकारा था, उसकी ओर इशारा करते हुए जीना ने पावेल से कहा, 'यहाँ का इन्तजाम इन्हीं के हाथ में है। यह तुम्हें बतला देंगी कि तुमको क्या करना है।' यह कह कर वह मुड़ी और

---

१. एक खास तरह का बड़ा चूल्हा जिसके ऊपर सोने की भी जगह होती है। — अनु०

वापस अपनी जगह पहुँच गयी।

'अच्छा,' पावेल ने धीरे से कहा और प्रश्न करती हुई आँखों से फ्रोसिया को देखा। फ्रोसिया ने माथे का पसीना पोंछते हुए बड़े गौर से पावेल को सिर से पैर तक देखा जैसे उसे परख रही हो और आस्तीन ऊपर चढ़ाते हुए, जो कुहनी के नीचे आ गयी थी, गहरी और बड़ी प्यारी आवाज में कहा :

'ऐसा कुछ बहुत काम नहीं है, भैया, मगर फँसे रहोगे खूब। वह ताँबे की जो चीज तुम वहाँ देखते हो न, सबेरे से ही उसको सुलगा देना पड़ता है और हमेशा गरम रखना पड़ता है ताकि खौलता हुआ पानी हमेशा तैयार मिले। और फिर लकड़ी चीरनी होती है और समोवार हैं जिनकी फिक्र करनी पड़ती है। कभी तुम्हें छुरी-काँटे भी साफ करने पड़ेंगे और गन्दे पानी की बाल्टी भी बाहर ले जानी पड़ेगी।

'अब मुझे क्या करना है मौसी ?'

'यहाँ आओ, इन काँटों को पोंछो।' एक रकाबी धोने वाली अधेड़ औरत ने कहा।

'यहाँ आओ, यह लो,' कहते हुए उसने पावेल को रकाबी पोंछने का तौलिया दिया, 'इसका एक सिरा अपने दाँत से पकड़ लो और दूसरा सिरा हाथ से पकड़कर कस कर तानो। यह देखो, काँटा है। इसके दाँतों के बीच-बीच तौलिये को अन्दर-बाहर करो और देखो जरा भी मैल न रहने पाये। इन चीजों के मामले में यहाँ बड़ी सख्ती बरती जाती है। गाहक हमेशा काँटों को बड़े गौर से देखते हैं और अगर जरा सा भी मैल मिल जाता है तो बड़ा बावेला मचाते हैं। और तब, मालकिन खड़े-खड़े तुमको निकाल बाहर करेगी।'

'मालकिन ?' पावेल ने उसकी बात को दुहराते हुए कहा, 'मैं तो समझता था कि वह साहब जिन्होंने मुझे रखा वही मालिक हैं।'

रकाबी धोने वाली हँसी और बोली, 'इस मालिक को तो बस यहाँ की एक सजावट समझो। असली मालिक तो है मालकिन। आज वह यहाँ नहीं है। लेकिन अगर कुछ दिन यहाँ टिके तो खुद ही देख लोगे।'

बर्तन धोने की कोठरी का दरवाजा खुला और तीन नौकर बड़ी-बड़ी ट्रे लिये हुए दाखिल हुए जिन पर गन्दी रकाबियों का ढेर लगा हुआ था।

उनमें से एक ने जिसका कंधा बहुत चौड़ा था और जिसकी आँखें तिरपट और जबड़े भारी और चौकोर थे, कहा, 'जरा तेजी से हाथ चलाओ। बारह बजे की गाड़ी आने ही वाली है, और अभी तुम लोग यहाँ खेल ही कर रहे हो।'

उसने पावेल को देखा और पूछा, 'यह कौन है ?'

'अरे वही नयावाला लड़का है,' फ्रोसिया ने कहा ।

वह बोला, 'अच्छा, वह नयावाला लड़का । ... अच्छा जरा सुनो तो,' कहते हुए उसने अपना भारी हाथ पावेल के कंधे पर रखा और उसे ठेल कर समोवार के पास ले जाते हुए बोला : 'तुम्हारा काम इनको सदा खौलाते रखना है । यह देखो, इनमें से एक तो बुझ भी गया और दूसरा किसी तरह आखिरी साँसें गिन रहा है । आज तो तुम्हें माफ किया जाता है, लेकिन कल से ऐसा हुआ तो तुम्हारी मरम्मत होगी ।'

पावेल बिना एक शब्द बोले समोवारों को ठीक करने में जुट गया ।

और इस तरह उसकी मशक्कत की जिन्दगी शुरू हुई । आज पहले रोज उसे जितना काम करना पड़ा था, उतना अपनी जिन्दगी में पावुश्का ने और कभी नहीं किया था । उसने महसूस किया कि यह उसका घर नहीं था जहाँ माँ का हुक्म टाला जा सकता है । उस तिरपट आँख वाले बैरे ने यह बात बिलकुल साफ कर दी थी कि अगर वह कहे मुताबिक ठीक-ठीक काम नहीं करेगा तो उसे इसकी सजा भुगतनी पड़ेगी ।

थोड़ी ही देर में उन बड़े-बड़े मटके जैसे समोवारों से चिनगारियाँ निकलने लगीं । उसने गन्दे पानी की बाल्टी उठायी और जाकर कूड़े की टीन में उलट दी, गरमे में और ईंधन डाल दिया, रकाबी पोंछने वाली गीली तौलियों को गरम समोवार पर सुखाया — गरज, उस नेवह सब कुछ किया जो उसे करने को कहा गया था । बहुत रात बीत जाने पर जब थका हुआ पावेल बावर्चीखाने की तरफ चला तो उस अधेड़ रकाबी धोने वाली ने पावेल के पीछे बन्द होते दरवाजे की ओर देखते हुए कहा :

'उस लड़के में कुछ अजीब सी बात है । देखो, कैसे पागल की तरह दौड़ता है । कौन जाने इसीलिए उसे काम से लगाया गया हो ।'

फ्रोसिया ने कहा : 'अच्छा काम करने वाला है । उसे ठेलना नहीं पड़ता ।'

लूशा की राय थी, 'जल्दी ही उसका जोश ठंडा हो जायगा । शुरू-शुरू में सब इसी तरह जोरों से काम करते हैं ...'

दूसरे रोज सबेरे सात बजे रात भर खड़े रहने के कारण थककर चूर पावेल ने खौलते हुए समोवार को उस लड़के को सँभलवाया जो उसकी जगह लेनेवाला था । इस लड़के ने, जिसके गाल फूले-फूले से थे और आँखों में बड़ी भद्दी-सी चमक थी, खौलते हुए समोवारों का मुआइना किया और इस बात का इतमीनान हो जाने पर कि सब कुछ ठीक है, उसने अपने हाथ जेब में डाल लिये और पावेल को नीची नजर से देखते हुए बड़ी ऐंठ से, दाँत बन्द किये-किये पिच्च से थूका ।

'सुन बे नकचपटे !' उसने चुनौती के स्वर में कहा और पावेल को

अपनी वेरंग आँखों से देखा। 'देखना, कल तुझे ठीक छः बजे सबेरे अपने काम पर हाजिर हो जाना है।'

'क्यों, छः बजे क्यों!' पावेल ने जानना चाहा, 'शिफ्ट तो सात बजे बदलती है न!'

'इसकी फिकर तू छोड़ दे कि शिफ्ट कब बदलती है, तुझे यहाँ पर छः बजे हाजिर हो जाना है। और देख, ज्यादा बकबक मत करना नहीं तो वह झापड़ रसीद करूँगा कि मुँह टेढ़ा हो जायगा। जरा ढिठाई तो देखो, आज ही काम शुरू किया और अभी से दिमाग सिकहर पर।'

रकाबी धोनेवाली औरतें, जिन्होंने अभी-अभी अपनी पाली का काम खतम किया था, दोनों लड़कों की बातचीत बड़ी दिलचस्पी से सुन रही थीं। पावेल को उस लड़के के इस तरह गुंडई ढंग से बात करने पर गुस्सा आ गया। वह उस बदमाश की तरफ एक कदम बढ़ा और करीब था कि उस पर हाथ छोड़ दे। लेकिन, यह सोच कर कि नयी-नयी लगी नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा, वह रुक गया।

उसने गुस्से से स्याह पड़ते हुए कहा : 'बन्द करो यह शोर मचाना और मुझसे जरा दूर ही रहना, नहीं तो ठीक नहीं होगा। मैं यहाँ कल सात बजे आऊँगा। और जहाँ तक झापड़ की बात है, मैं तुमसे कमजोर नहीं हूँ, यह बात याद रखना। या यह चाहते हो कि एक-एक हाथ हो ही जाय? बोलो? मैं इसके लिए भी तैयार हूँ।'

उसका दुश्मन डरकर पीछे हटा और गरमे से लग कर खड़ा हो गया। वह आश्चर्य से क्रोधित होकर पावेल को देख रहा था। उसे उम्मीद नहीं थी कि पावेल इतना तगड़ा प्रतिवाद करेगा।

'अच्छा-अच्छा देखेंगे,' उसने बुदबुदाते हुए कहा।

काम का पहला रोज बिना किसी दुर्घटना के बीत गया था, इसलिए पावेल जल्दी-जल्दी घर की ओर चला। उसके मन में यह भाव था कि उसने ईमानदारी से मेहनत करके अपने विश्राम के इन घंटों को अर्जित किया है। अब वह भी एक मजदूर था। अब कोई उस पर यह तोहमत नहीं लगा सकता था कि वह कुछ नहीं करता और दूसरे पर आश्रित है।

लकड़ी चीरने के कारखाने की छिटपुट फैली हुई इमारतों पर सुबह का सूरज चढ़ने लगा था। थोड़ी ही देर में पावेल का छोटा सा मकान लेशचिन्स्की के बगीचे के पीछे दिखायी देने लगेगा।

उसकी माँ ने, जो आँगन में समोवार सुलगा रही थी, अपने बेटे को आते

हुए देखा तो कुछ चिन्ता के स्वर में पूछा :

'कहो, कैसा रहा ?'

'बहुत अच्छा,' पावेल ने जवाब दिया।

माँ कुछ कहने ही वाली थी कि खुली हुई खिड़की से पावेल को अपने भाई आर्तेम की चौड़ी पीठ दिखायी दी।

'अच्छा, तो आर्तेम आ गया ?' उसने उद्विग्नता से पूछा।

'हाँ, कल आया था। अब वह यहीं रहेगा और रेलवे यार्ड में काम करेगा।'

कुछ झिझकते हुए उसने सामने का दरवाजा खोला।

उस आदमी ने, जो मेज के सामने दरवाजे की ओर पीठ किये बैठा था, कमरे में दाखिल होते हुए पावेल की ओर अपनी विशाल काया को मोड़ा। घनी काली भवों के नीचे उसकी आँखों में कठोरता का भाव था।

'अच्छा, यह आया तम्बाकू वाला लड़का ! कहो क्या हालचाल हैं ?'

अब जो सवालों की झड़ी लगेगी, उससे पावेल को डर मालूम हो रहा था। उसने सोचा, 'आर्तेम को पहले से ही सब बातों का पता है। लगता है अच्छी-खासी झड़प होगी और शायद मरम्मत भी।' पावेल अपने बड़े भाई से कुछ-कुछ डरता हुआ खड़ा रहा।

मगर आर्तेम का कोई इरादा लड़के को डाँटने-डपटने का नहीं था। वह मेज पर कोहनी टेके स्टूल पर बैठा रहा और पावेल के चेहरे को कुछ मनोरंजन और कुछ उपेक्षा के मिले-जुले भाव से ध्यानपूर्वक देखता रहा।

'अच्छा तो तुम युनिवर्सिटी से दीक्षित होकर निकल आये, क्यों ? जो कुछ लिखना-पढ़ना था, लिख-पढ़ चुके और अब रकाबियाँ धोने में लग गये हो, क्यों ?'

नीचे फर्श में एक दरार थी। पावेल उसी पर आँख गड़ाये, एक कील के सिरे को बहुत बारीकी से देख रहा था। आर्तेम उठा और रसोईघर में चला गया।

इतमीनान की साँस लेते हुए पावेल ने सोचा, 'लगता है मार-वार नहीं पड़ेगी।'

बाद में चाय के वक्त 'आर्तेम ने पावेल से स्कूल वाली घटना के बारे में पूछा। पावेल ने सब कुछ बतला दिया।

'बड़े होकर तुम इतने आवारा निकलोगे, तो जिन्दगी में क्या करोगे,' उसकी माँ ने उदास आवाज में कहा। 'हम लोग इसके संग क्या करें ? मेरी समझ में ही नहीं आता कि यह लड़का किस पर गया है ! हे भगवान, इस लड़के के पीछे मुझे क्या-क्या नहीं भोगना पड़ा,' उसने शिकायत के लहजे में कहा।

आर्तेम ने अपना खाली प्याला अलग सरकाया और पावेल की ओर मुड़ा।

'अब तुम मेरी बात सुनो दोस्त,' उसने कहा। 'जो हो गया सो हो गया। उसका कोई इलाज नहीं। हाँ इतना है कि अब आगे से सावधान रहो और जी लगा कर अपना काम करो। और देखो, कोई शरारत न करना। तुम माँ को काफी दुख दे चुके हो। तुम यहाँ साल-छः महीना काम कर लो, फिर मैं कोशिश करके तुमको डिपो में अपरेन्टिसी पर लगवा दूँगा, क्योंकि इस तरह तमाम जिन्दगी गन्दी रकाबियाँ धोते रहने से तो बेड़ा पार नहीं होगा। तुम्हें कोई न कोई धंधा सीखना ही होगा। अभी तुम जरा छोटे हो। मगर साल भर में मैं कोशिश करूँगा कि तुम्हारा कुछ बन्दोबस्त हो जाय और शायद वे लोग तुमको लगा भी लें। अब मैं यहीं काम करूँगा। माँ को अब काम पर नहीं जाना पड़ेगा। सारी जिन्दगी उन्होंने बहुत काफी गुलामी की, एक से एक हरामजादों की। पावका, देखो तुम्हें आदमी बनना है।'

वह उठ खड़ा हुआ। उसकी विशाल काया के आगे आसपास की सारी चीजें बौनी नजर आती थीं। कुर्सी पर लटकते कोट को पहनते हुए उसने अपनी माँ से कहा, 'मुझे घंटे भर के लिए जरा बाहर जाना है,' और बाहर निकल गया। दरवाजे में से निकलने के लिए वह जरा झुका।

बाहर के गेट की ओर बढ़ते हुए वह खिड़की के पास से निकला और अन्दर झाँकते हुए उसने पावेल को आवाज देकर कहा, 'मैं तुम्हारे लिए एक जोड़ा जूता और एक चाकू लाया हूँ। माँ से ले लेना।'

स्टेशन का रेस्तोराँ दिन-रात खुला रहता था।

छः रेलवे लाइनें इस जंक्शन पर मिलती थीं और स्टेशन हमेशा मुसाफिरों से खचाखच भरा रहता था; सिर्फ रात को दो-तीन घंटे के लिए, दो गाड़ियों के दरमियान, वहाँ कुछ शान्ति रहती थी। सभी दिशाओं के लिए सैकड़ों गाड़ियाँ इस स्टेशन से गुजरती थीं। गाड़ियाँ, जो मोर्चे के एक भाग से दूसरे भाग को जाती थीं और एक जैसे भूरे रंग के ओवर कोट पहने हुए नये लोगों को ले जाती थीं और यह आना-जाना अनवरत चलता रहता था।

पावेल ने दो बरस तक उस जगह काम किया—दो बरस, जिनमें उसने सिवाय रकाबी धोने की जगह और बावर्चीखाने के और कुछ नहीं देखा। वे बीस-बाईस लोग जो बावर्चीखाने में काम करते थे, दिन-रात पागलों की तरह जुते रहते थे। रेस्तोराँ और बावर्चीखाने के बीच दस बैरे बराबर दौड़ लगाते रहते थे।

अब पावेल को आठ के बदले दस रूबल मिलने लगे थे। इन दो सालों

में वह और लम्बा और चौड़ा-चकला हो गया था । इन्हीं दो बरसों में उसे बहुत सी परीक्षाओं का सामना भी करना पड़ा था । छः महीने उसने बावर्ची-खाने में काम किया था, मगर फिर उसे गन्दी रकाबियाँ धोने के काम पर भेज दिया गया । बात यह थी कि सर्वशक्तिमान खानसामा उससे रुष्ट था — बड़ा खतरनाक छोकरा है यह, ज्यादा मारते डर लगता है, कौन जाने कब वह छूरा भोंक दे । और इसमें सन्देह नहीं कि अपने गुस्सैल मिजाज के कारण पावेल की नौकरी अब तक न जाने कभी की छूट गयी होती, बशर्ते उसमें कड़ी मेहनत का भी जबरदस्त माद्दा न होता । क्योंकि यह बात सही है कि वह दूसरे किसी आदमी से ज्यादा काम कर सकता था और थकता तो जैसे कभी था ही नहीं ।

जिन घंटों में काम की बहुत भीड़ होती, वह लदी ट्रे लिये बावर्चीखाने की सीढ़ी पर ऊपर-नीचे, चार-चार, पाँच-पाँच सीढ़ियों को एक-एक डग में भरता तूफान की तरह दौड़ता था ।

रात को, जब रेस्तोराँ के दोनों हॉलों में शोर-गुल मद्धिम पड़ जाता, तब बैरे नीचे बावर्चीखाने के भंडारघरों में इकट्ठे होते और सुध-बुध खोकर दीवानों जैसे ताश के जुए खेलने लगते । कई बार पावेल ने बड़ी रकम के नोटों को एक हाथ से दूसरे हाथ में जाते देखा था । उसे इतना ढेर सा पैसा इस तरह पड़े हुए देख कर अचम्भा नहीं होता था, क्योंकि उसे मालूम था कि हर बैरे को रूबल-आधा रूबल की बखशीश से शिफ्ट पीछे तीस-चालीस रूबल मिल जाते थे जिनको वे शराब और जुए में खर्च कर देते थे । पावेल को इनसे नफरत थी ।

'सुअर के बच्चे हैं,' उसने सोचा । 'एक वह आर्तेम है, आला दर्जे का मेकैनिक और उसे महीने में कुल अड़तालीस रूबल मिलते हैं और मुझे मिलते हैं दस । और ये लोग हैं कि दिन भर ही में इतना सारा पैसा बटोर लेते हैं । और किस बात के लिए ? सिर्फ इस बात के लिए कि यहाँ से वहाँ ट्रे लाते-ले जाते हैं । और फिर यह सारा पैसा शराब और जुए में खर्च किया जाता है ।'

पावेल के लिए ये बैरे भी उतने ही बेगाने और दुश्मन जैसे थे जितना कि मालिक । 'ये सुअर यहाँ तो पेट के बल रेंगते हैं मगर वहाँ शहर में इनकी बीवियाँ और बेटे रईसों की तरह इठलाते चलते हैं ।'

पावेल को जिन्दगी की घिनौनी खन्दक की सबसे निचली तहों की एक झलक मिलती थी और वहाँ से एक अजीब खट्टी बदबू निकल रही थी जो कि सड़ते हुए दलदल की बदबू थी । और यह बदबू पहुँची उसके पास जो हर नयी और अनजान चीज को पाने के लिए ललक रहा था ।

आर्तेम अपने भाई को रेलवे यार्ड में अपरेंटिसी पर लगाने में नाकाम

रहा; पन्द्रह साल से कम उम्रवाले की उनको जरूरत नहीं थी। मगर पावेल धुएँ से काली उस ईंट की इमारत की तरफ एक खिंचाव महसूस करता था और उस दिन का इन्तजार कर रहा था जब वह रेस्तोराँ से छुट्टी पा सकेगा।

वह अक्सर आर्तेम से मिलने के लिए यार्ड में जाया करता था और तब उसके संग गाड़ियों की देख-भाल पर निकल जाता और जो मदद बन पड़ती, उसे दे देता था।

फ्रोसिया के चले जाने पर उसने खास तौर से अकेलापन महसूस किया। उस खुशदिल हँसती हुई लड़की के चले जाने पर पावेल को इस बात का और भी पैना एहसास हुआ कि उसके संग उसकी दोस्ती कितनी पक्की हो गयी थी। अब, जब वह सबेरे काम पर आता और स्त्रियों के झगड़ों और तेज चीख-पुकार को सुनता तो उसे अपना अकेलापन, अपना खालीपन और भी शिद्दत से महसूस होता।

एक रात गरमे को सुलगाते हुए वह आतिशदान के सामने बैठा लपटों को देख रहा था। स्टोव की गरमी उसे सुख पहुँचा रही थी। इस वक्त वहाँ पर वह अकेला ही था।

न जाने कैसे अनायास वह फ्रोसिया के बारे में सोचने लगा और हाल ही में उसने जो एक दृश्य देखा था, वह उसके मन की आँखों के आगे घूम गया।

सनीचर की रात को फुर्सत के वक्त पावेल नीचे बावर्चीखाने में जा रहा था, जब कि कुतूहलवश वह लकड़ी के एक ढेर पर चढ़ गया और वहाँ से उसने नीचे भंडारघर को देखा जहाँ जुआड़ी अक्सर इकट्ठा हुआ करते थे।

खेल पूरे जोर पर था। इस वक्त जालीवानोव नाल इकट्ठा कर रहा था। आवेश से उसका चेहरा लाल हो रहा था।

तभी सीढ़ी पर पैरों की आहट सुनायी दी। घूम कर पावेल ने प्रोखोश्का को नीचे उतरते हुए देखा और सीढ़ी के नीचे छुप गया ताकि वह आदमी बावर्चीखाने में चला जाय। सीढ़ी के नीचे अँधेरा था और प्रोखोश्का उसको देख न सका।

प्रोखोश्का ने जैसे ही सीढ़ी के मोड़ को पार किया, पावेल ने उसकी चौड़ी पीठ और बड़े से सिर की एक झलक पायी। ठीक तभी कोई और हलके पैरों से भागता हुआ उस बैरे के पीछे-पीछे आया और पावेल ने एक परिचित आवाज को बोलते सुना।

'रुको प्रोखोश्का !'

प्रोखोश्का रुक गया और पीछे घूम कर सीढ़ी के ऊपर की ओर उसने देखा और गुर्रा कर बोला, 'क्यों क्या चाहिए ?'

कदमों की आहट पास आ गयी और फ्रोसिया दिखायी दी।

उसने बैरे की बाँह पकड़ ली और टूटती सी रुँधती हुई आवाज में बोली :

'प्रोखोश्का ! लेपिटनेन्ट साहब ने तुमको जो पैसा दिया वह कहाँ है ?'

आदमी ने झटक कर लड़की से अपनी बाँह छुड़ा ली ।

'कैसा पैसा ? मैंने तुम्हें दे दिया था न ?' उसकी आवाज तेज और दुष्टता से भरी हुई थी ।

'मगर उसने तो तुम्हें तीन सौ रूबल दिये थे ?' फ्रोसिया की आवाज रुँधी हुई सिसकियों में तबदील हो गयी ।

'कहीं दिया न हो ! तीन सौ, हुँ: !' प्रोखोश्का ने व्यंग्य के स्वर में कहा। 'सबका सब लेना चाहती हो, क्यों ! जरा देखिए तो साहबजादी को, धोती तो हैं आप रकाबियाँ और दिमाग आसमान पर है ! पचास जो मैंने तुमको दिये, बहुत हैं । तुमसे कहीं ज्यादा खूबसूरत और पढ़ी-लिखी लड़कियाँ भी इतना नहीं लेतीं । जो कुछ तुम्हें मिला, उसके लिए तुमको मेरा एहसान मानना चाहिए — एक रात के लिए पचास रूबल बहुत होते हैं । मगर खैर, तुम कहती हो तो तुम्हें दस और दे दूँगा, बीस भी दे सकता हूँ, मगर और नहीं । और, तुम अगर बेवकूफ न होगी तो कुछ और भी कमा लोगी । मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ ।'' यह कह कर प्रोखोश्का घूमा और बावर्चीखाने में पहुँचकर आँख से ओझल हो गया ।

'बदमाश ! सुअर !' फ्रोसिया ने चीखते हुए कहा और लकड़ी के ढेर से टिककर जोर-जोर से सिसकियाँ लेने लगी ।

पावेल के उस वक्त के मनोभावों को शब्द नहीं बयान कर सकते जब सीढ़ी के नीचे अँधेरे में खड़े-खड़े उसने फ्रोसिया को पागलों की तरह लकड़ी के कुन्दों पर सर पटकते देखा । मगर वह सामने नहीं आया; सिर्फ उसकी उँगलियाँ रह-रह कर ज़ीने के लोहे के खम्भों को पकड़ लेती थीं ।

'अच्छा तो उन्होंने इसको भी बेच डाला, खुदा गारत करे ! हाय फ्रोसिया, फ्रोसिया ...'

प्रोखोश्का के लिए उसकी नफरत उसके दिल को पहले से कहीं ज्यादा सुलगाने लगी और अपने चारों तरफ वह जो कुछ भी देखता था, उसी से उसको नफरत और घिन मालूम होती थी । 'अगर मुझ में ताकत होती तो मैं उस हरामजादे को पीट-पीट कर उसका हलुआ बना देता ! मैं आर्तेम की तरह लम्बा-चौड़ा और मजबूत क्यों नहीं हुआ ।'

गरमे के नीचे लपटें उठीं और बुझ गयीं, उनकी काँपती हुई लाल जीभ एक लम्बी नीली रेखा के संग लिपटी हुई थी । पावेल को ऐसा लगा मानों कोई नन्हा सा शरारती भूत उसे जीभ दिखा-दिखाकर उसका मजाक उड़ा रहा हो ।

कमरे में खामोशी थी। सिर्फ आग के चटकने की आवाज सुनायी दे रही थी और बम्बे से पानी रुक-रुक कर टपक रहा था।

क्लिम्का ने आखिरी बर्तन, जो इतना माँजा गया था कि चमक रहा था, आलमारी पर रखा और अपने हाथ पोंछे। बावर्चीखाने में और कोई नहीं था। ड्यूटी पर का रसोइया और उसका मददगार गुसलखाने में सो रहे थे। रात के तीन घंटों के लिए बावर्चीखाने पर खामोशी छा गयी। यह घंटे क्लिम्का, पावेल के संग ऊपर गुजारा करता था क्योंकि उस बावर्चीखाने के छोकरे और इस काली आँख वाले पावेल में, जो गरमे की देख-रेख करता था, गहरी दोस्ती हो गयी थी। ऊपर क्लिम्का ने पावेल को खुले हुए आतिशदान के के आगे पालथी मारे बैठा पाया।

'आग में अपना भाग्य पढ़ रहे हो क्या ?' उसने मुस्कराते हुए पूछा।

पावेल ने जोर लगा कर अपनी दृष्टि लपटों की उन लेलिहान जिह्वाओं से फेरी और क्लिम्का को अपनी उन दो बड़ी-बड़ी चमकती हुई आँखों से देखा जो एक अव्यक्त व्यथा से भरी हुई थीं। क्लिम्का ने कभी अपने दोस्त को इतना उदास नहीं देखा था।

थोड़ी देर की खामोशी के बाद क्लिम्का ने पूछा, 'आज तुम्हें क्या हुआ है पावेल ? कोई खास बात हो गयी है क्या ?'

पावेल उठा और जाकर क्लिम्का के पास बैठ गया।

उसने धीरे से जवाब दिया, 'नहीं, कुछ हुआ नहीं है। बस यह है क्लिम्का कि मेरा यहाँ रहना कठिन है।' और घुटनों पर टिके हुए उसके हाथों की मुट्ठियाँ बँध गयीं।

'क्या हो गया है तुम्हें आज ?' क्लिम्का ने कुहनियों का सहारा लेकर उठते हुए जानने के लिए आग्रह किया।

'आज ? आज की बात नहीं है। जिस दिन से मैं इस काम पर आया, उसी दिन से मुझे ऐसा लग रहा है। जरा देखो कैसी जगह है यह ! हम खच्चरों की तरह काम करते हैं और हमें मिलता क्या है ? शुक्रिया नहीं, लात-घूँसे ! कोई भी तुम्हें मार सकता है, फिर कोई नहीं मिलेगा जो तुम्हारी तरफदारी करे। मालिक लोग हमको रखते हैं नौकरी करने के लिए, मगर कोई भी आदमी जिसके बदन में ताकत हो, बड़े अधिकार के साथ हमको पीट सकता है। भले तुम दौड़-दौड़ कर अपनी जान ही क्यों न दे दो, तुम कभी सबको खुश नहीं कर सकते और जिसको खुश न कर सको, वही तुम्हारी खबर लेने के लिए तैयार रहता है। तुम चाहे कितनी कोशिश इस बात की क्यों न करो कि हर काम ठीक से हो ताकि कोई गलती न निकाल सके, मगर तब भी, कोई न कोई ऐसा आदमी निकल ही आता है जिसका काम उसकी

मनचाही मुस्तैदी से नहीं हो सका और बस, फिर तो तुम्हारी मरन रखी ही है, कुछ भी करो, ऐसे भी, वैसे भी···!'

'इस तरह चिल्लाओ मत, कोई यहाँ चला आयेगा और सुन लेगा !' क्लिम्का ने डरते हुए उसको टोका।

पावेल उछल कर खड़ा हो गया।

'सुनने दो, मैं तो काम छोड़ने जा ही रहा हूँ। यहाँ इस चाँइयों, बदमाशों के अड्डे पर काम करने से अच्छा बेलचा भर-भर कर बरफ फेंकने का काम होगा। देखो तो इनके पास कितना पैसा है। हमको तो वे धूल समझते हैं और लड़कियों के संग जो मन आये करते हैं। भली लड़कियाँ, जो उनके इशारों पर नहीं नाचतीं, ठोकर मारकर बाहर कर दी जाती हैं और उनकी जगह भूख से मरती हुई शरणार्थी औरतें लगा ली जाती हैं जिन्हें दुनिया में और कहीं जगह नहीं है। और फिर वे जरूर यहाँ टिक जाती हैं क्योंकि यहाँ उन्हें कम से कम दोनों वक्त खाने को तो मिल जाता है और इतनी बदहाल होती हैं वे कि एक टुकड़ा रोटी के लिए कुछ भी कर सकती हैं।'

वह इतने आवेश में बोल रहा था कि क्लिम्का को डर लगा कि कहीं कोई सुन न ले। बावर्चीखाने में खुलने वाले दरवाजे को बन्द करने के लिए वह जल्दी से उठ खड़ा हुआ। पावेल बदस्तूर अपनी आत्मा में भरे हुए तीखेपन को उँडेलता रहा।

'और तुम, क्लिम्का, पिटते हो और कभी कुछ नहीं बोलते। यह ठीक नहीं है !'

पावेल मेज के सहारे एक स्टूल पर बैठ गया और थकान के मारे उसने अपना सिर हथेली पर टिका लिया। क्लिम्का ने आग में कुछ लकड़ी डाल दी और वहीं आकर बैठ गया।

उसने पावेल से पूछा, 'आज हम लोग पढ़ेंगे नहीं क्या ?'

'कुछ नहीं है पढ़ने को,' पावेल ने जवाब दिया, 'बुकस्टाल बन्द है।'

क्लिम्का ने आश्चर्य से पूछा, 'क्यों ? आज बन्द क्यों है ?'

पावेल ने जवाब दिया, 'पुलिसवालों ने बुकसेलर को गिरफ्तार कर लिया। उसके यहाँ उनको कुछ मिला है।'

'गिरफ्तार कर लिया ? काहे के लिए ?'

'कहते हैं कोई सियासी बात है।'

पावेल की बात का मतलब समझने में असमर्थ क्लिम्का उसे आँख फाड़े देखता रहा।

'सियासी बात ? वह क्या होती है ?'

पावेल ने कंधे उचका दिये :

'पता नहीं क्या होती है। ज़ार के खिलाफ जाओ, तो वही सियासी बात कहलाती है, ऐसा लोग कहते हैं।'

क्लिम्का अचम्भे से देखता रहा :

'लोग ऐसा क्यों कहते हैं ?'

पावेल ने जवाब दिया, 'मैं क्या जानूं।'

दरवाजा खुला और ग्लाशा कमरे में दाखिल हुई। उसकी आँखें नींद के कारण सूजी हुई थीं।

'तुम दोनों सो क्यों नहीं रहे हो ? अगली गाड़ी आने के पहले घंटे भर की नींद निकाल लेने का वक्त है। तुम जरा आराम कर लो पावेल और मैं तुम्हारी तरफ से अँगीठी को देख लूंगी।'

जितनी जल्दी सोचा था, उससे भी पहले ही पावेल ने काम छोड़ दिया। और इस तरह छोड़ा जिसकी उसने कल्पना भी न की थी।

जनवरी के महीने में एक दिन जब खूब पाला गिर रहा था और पावेल अपना काम खतम करके घर जाने की तैयारी कर रहा था, तो उसने देखा कि उसकी जगह लेने वाला लड़का नहीं आया है। पावेल मालिक की स्त्री के पास गया और उसने उसको बतलाया कि जो भी हो, वह तो घर जायगा ही। मालिक की स्त्री यह सुनने को भी तैयार नहीं थी। लिहाजा पावेल को मजबूरन काम पर लगे रहना पड़ा, गोकि पूरे एक दिन और एक रात की मेहनत के बाद वह थक कर चूर हो गया था। शाम होते-होते उसकी यह हालत हो गयी थी कि लगता था कि थकान के मारे वहीं ढेर हो जायगा। रात में फुर्सत के वक्त उसे गरमे को भरना पड़ा और तीन बजे वाली गाड़ी के लिए समय से पानी खौला कर तैयार रखना पड़ा।

पावेल ने बम्बा खोला मगर उसमें पानी नहीं था। जाहिर था कि पम्प काम नहीं कर रहा है। बम्बे को खुला छोड़ कर वह लकड़ी के ढेर पर लेट गया; मगर थकान ने उस पर काबू पा लिया और थोड़ी ही देर में वह गहरी नींद में डूब गया।

कुछ ही मिनट बाद बम्बे में गुर्र-गुर्र सूं-सूं की आवाज होने लगी और गरमे में पानी भरने लगा। थोड़ी ही देर में गरमा लबालब हो गया और फिर पानी बह कर कोठरी के फर्श पर फैलने लगा। हस्ब मामूल कोठरी इस वक्त वीरान थी। पानी बहता रहा, बहता रहा — यहाँ तक कि फर्श डूब गया और पानी दरवाजे के नीचे से बह कर रेस्तोराँ में पहुँचने लगा।

ऊँघते हुए मुसाफिरों के बिस्तरों और बक्सों के नीचे छोटे-छोटे

चहबच्चे तैयार हो गये, मगर किसी का ध्यान इस चीज की तरफ तब तक नहीं गया जब तक कि पानी फर्श पर सोये हुए एक आदमी के पास नहीं पहुँचा और वह घबरा कर चीख कर जल्दी से उठ नहीं खड़ा हुआ। तब तो फिर सामान को बचाने के लिए बड़ी रेल-पेल मची और गजब का हो-हल्ला हुआ।

पानी बह कर लगातार अन्दर आता रहा।

प्रोखोश्का, जो दूसरे हॉल में मेजों की सफाई कर रहा था, शोर सुन कर अन्दर दौड़ा। पानी के ढेर पर से छलाँग लगाते हुए वह दरवाजे की ओर लपका और तेजी से धक्का देकर उसे खोला। दरवाजे का खुलना था कि वहाँ रुका हुआ पानी तेजी से हॉल में बह निकला।

तब तो फिर और ज्यादा शोर मचा। ड्यूटी पर के बैरे भागकर गन्दे बर्तनोंवाली कोठरी में पहुँचे। प्रोखोश्का सोते हुए पावेल पर टूट पड़ा।

लड़के के सिर पर लात-घूँसे बरसने लगे। वह हक्का-बक्का रह गया।

अभी भी वह आधी नींद में था और उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि यह क्या हो रहा है। उसे सिर्फ आँख के आगे .टूटती हुई बिजलियों की तेज चमक, और जिस्म भर में दौड़ते हुए दर्द की ऐंठन की चेतना थी।

पावेल को तो इस बुरी तरह मार पड़ी थी कि बड़ी मुश्किल से, लड़खड़ाते हुए, वह घर पहुँच पाया।

सबेरे, गुस्से में भरे आर्तेम ने छोटे भाई से पूछा कि क्या बात हुई।

पावेल ने उसे सब कुछ बतला दिया।

आर्तेम ने भारी फटी हुई आवाज में पूछा, 'तुमको किसने मारा ?'

'प्रोखोश्का ने।'

'अच्छा अब तुम चुपचाप पड़े रहो।'

बिना और एक शब्द बोले आर्तेम ने अपना कोट चढ़ाया और बाहर निकल गया।

'बैरा प्रोखोर कहाँ है ?' उसने एक रकाबी धोने वाली से पूछा। ग्लाशा ने अपने सामने खड़े हुए मजदूर की पोशाक पहने इस अजनबी को देखा।

उसने जवाब दिया, 'अभी आता है।'

यह भारी-भरकम आदमी दरवाजे के हैंडिल से टिककर खड़ा हो गया।

'अच्छा, मैं यहीं इन्तजार करता हूँ,' उसने कहा।

एक ट्रे में रकाबियों का पहाड़ लादे प्रोखोर पैर से दरवाजे को धक्का देता हुआ कोठरी में दाखिल हुआ।

ग्लाशा ने बैरे की तरफ इशारा करते हुए कहा, 'यही प्रोखोर है।'

आर्तेम आगे बढ़ा और प्रोखोर के कंधे पर जोर से हाथ मारते हुए उसकी आँखों में आँखें डालकर देखा।

'तुमने मेरे भाई पावका को क्यों मारा ?'

प्रोखोर ने अपने कंधों को उसकी गिरफ्त से छुड़ाने की कोशिश की, लेकिन एक घूंसा जो कसकर पड़ा तो वहीं फर्श पर लम्बा हो गया। उसने उठने की कोशिश की। मगर पहले से भी ज्यादा भयानक दूसरा घूंसा पड़ा तो वह लेटा का लेटा ही रह गया।

डर के मारे रकाबी धोनेवाली औरतें इधर-उधर जा खड़ी हुईं।

आर्तेम घूमा और दरवाजे की तरफ बढ़ा।

प्रोखोश्का फर्श पर पड़ा रहा, उसके घायल चेहरे से खून बह रहा था।

उस शाम आर्तेम रेलवे यार्ड से घर नहीं लौटा।

उसकी माँ को पता चला कि पुलिस ने उसको पकड़ रखा है।

छः दिन बाद बहुत रात गये आर्तेम घर लौटा जब उसकी माँ सो गयी थी। वह पावेल के पास गया जो अपने बिस्तर में बैठा हुआ था और बड़ी नरमी से उसने पूछा :

'अब कैसी तबियत है भैये ?' आर्तेम पावेल के पास बैठ गया। 'मामला और भी बिगड़ सकता था।' फिर एक मिनट की खामोशी के बाद उसने कहा : 'कोई बात नहीं, तुम बिजलीघर में काम करने जाना। मैंने उनसे तुम्हारे बारे में बात की है। वहाँ तुम सचमुच ढंग का काम सीख सकोगे।'

पावेल ने आर्तेम के मजबूत हाथ को अपने दोनों हाथों में थाम लिया।

छत्रपति शाहू जी महाराज प्रबंध कार्यालय

दो

उस छोटे से कस्बे में एक तूफान की तरह यह जबर्दस्त खबर फैल गयी कि 'जार का तख्ता उलट दिया गया !'

कस्बेवालों ने इस खबर को मानने से इनकार किया।

उन्होंने इस खबर को तब माना जब एक गाड़ी तूफान में धीरे-धीरे रेंगती हुई सी स्टेशन में दाखिल हुई और उसमें से फौजी बरानकोट पहने और कंधों पर राइफिलें लटकाये दो विद्यार्थी और लाल-लाल फीते बाँहों में बाँधे हुए क्रान्तिकारी सैनिकों का एक दस्ता प्लेटफार्म पर उतरा और उसने स्टेशन के फौजी सिपाहियों, एक बूढ़े कर्नल और गैरिसन के प्रधान को गिरफ्तार कर लिया। बर्फ से ढँकी सड़कों पर चलते हुए हजारों आदमी कस्बे के चौक में आ पहुँचे।

आजादी, बराबरी और भाईचारा — ये लफ्ज, जो उन्होंने पहले कभी नहीं सुने थे, अब सुने और उन्हें प्यासों की तरह पी गये।

उसके बाद तूफानी दिन आये, हलचल और खुशी से भरे हुए दिन। फिर एक ठहराव-सा आ गया, और उस टाउन हॉल पर लहराता हुआ लाल झंडा ही होनेवाले परिवर्तन की अकेली निशानी रह गया। उसी टाउन हॉल में मेन्शेविकों और बुन्द के माननेवालों ने अपनी किलेबन्दी की थी। उस पर फहराते हुए लाल झंडे के अलावा और सब कुछ ज्यों का त्यों रहा।

जाड़े के अन्त में एक घुड़सवार रेजिमेन्ट उस कस्बे में ठहरायी गई। सवेरे ये घुड़सवार अपने दस्ते बना कर दक्खिनी-पच्छिमी मोर्चे से भागनेवाले सैनिकों की तलाश में रेलवे स्टेशन पहुँचते थे।

ये सैनिक बहुत मोटे-ताजे थे और उनके चेहरों से जाहिर था कि उन्हें खाने-पीने का आराम है। उनके ज्यादातर अफसर बड़े-बड़े काउन्ट और राजकुमार थे; उनके कंधों पर सुनहरी पट्टियाँ थीं और बिरजिसों पर पतली रुपहली गोट लगी हुई थी, ठीक वैसी ही जैसी कि जार के जमाने में — गोया क्रान्ति नाम की कोई चीज हुई ही न हो।

पावेल, क्लिम्का और सर्गेई ब्रुजाक के लिए कुछ भी नहीं बदला था। मालिक लोग अब भी बदस्तूर कायम थे। नवम्बर के महीने में पहुँचकर ही कुछ साधारण बातें शुरू हुईं। स्टेशनों पर एक नयी तरह के लोग नजर आने लगे जिन्होंने व्यवस्था में कुछ हलचल पैदा करनी शुरू की। इनमें से ज्यादातर लोग मोर्चे पर से लौटे हुए सैनिक थे और उन्हीं की संख्या बराबर बढ़ती जा रही थी। उनका नाम कुछ अजीब सा था — 'बोल्शेविक।'

किसी को नहीं मालूम था कि यह तगड़ा और वजनदार लफ्ज कहाँ से आया।

मोर्चे से भागे हुए सैनिकों को रोककर रखना इन सैनिकों के लिए उत्तरोत्तर मुश्किल होता जा रहा था। स्टेशन पर राइफिलें दगने और शीशे टूटने की आवाजें बराबर बढ़ती जा रही थीं। ये लोग दल बाँधकर मोर्चे से आते थे और जब उन्हें रोका जाता, तो संगीनों से लड़ते थे। दिसम्बर के शुरू में गाड़ी भर-भरकर ये लोग आने लगे।

सन्तरी लोग अपनी पूरी ताकत से स्टेशन पर आये, इस इरादे से कि उन सैनिकों को रोक रखेंगे। मगर उन्होंने अपने को मशीनगनों की बौछार का सामना करते पाया। रेल के डिब्बों से निकलनेवाले इन सैनिकों के लिए मौत मानो एक खिलवाड़ थी।

मोर्चे पर से लौटे, भूरे रंग के कोट पहने इन लोगों ने सन्तरियों को वापिस कस्बे के अन्दर ढकेल दिया और फिर स्टेशन पर लौट आये और गाड़ियाँ भर-भर कर अपनी अगली मंजिल के लिए रवाना हो गये।

१९१८ के वसन्त में एक रोज तीन दोस्त सर्गेई ब्रुजाक के घर से लौटते हुए, जहाँ पर वे ताश खेल रहे थे, कोर्चागिन के बागीचे में आये और घास पर लेट गये। वे लोग जिन्दगी से ऊबे हुए थे। अब तक जो काम वे करते आ रहे थे, उनसे उनको उकताहट मालूम हो रही थी और वे अपने दिन ज्यादा उमंग और उत्साह से बिताने का तरीका खोजने के लिए परेशान होने लगे थे और तभी उन्होंने अपने पीछे घोड़ों की टापों की आवाज सुनी और एक घुड़सवार को तेजी से अपनी तरफ आते हुए देखा। एक छलाँग में घोड़े ने सड़क और

बागीचे की नीची सी बाड़ी के बीच का गढ़ा पार कर दिया और घुड़सवार ने अपनी चाबुक से पावेल और क्लिम को इशारा किया।

'ओ छोकरो, जरा यहाँ आओ !'

पावेल और क्लिम उचककर खड़े हो गये और दौड़कर बाड़ी के पास गये। घुड़सवार धूल से भरा हुआ था; धूल की एक मोटी सी परत उसकी टोपी पर जमी हुई थी। उसके खाकी ब्लाउज और बिरजिस पर भी धूल की परत जमी हुई थी। उसके भारी फौजी कमरबन्द से एक रिवाल्वर और दो जर्मन दस्ती बम लटक रहे थे।

घुड़सवार ने उनसे पूछा, 'क्यों लड़को, तुम मुझे पानी पिला सकते हो ?'

पावेल पानी लेने घर की तरफ भागा तो घुड़सवार अपनी ओर घूरते हुए सर्गेई की तरफ मुड़ा। 'बतलाओ तुम्हारा कस्बा किसके कब्जे में है ?'

सर्गेई ने आगन्तुक को एक साँस में सारी मुकामी खबरें सुना डालीं।

'दो हफ्तों से यहाँ पर किसी का कब्जा नहीं है। आजकल तो होमगार्डों की ही सरकार है। यहाँ के सारे रहनेवाले रात को शहर की गश्त करते हैं। मगर तुम कौन हो ?' सर्गेई ने पूछा।

घुड़सवार मुस्कराया और बोला, 'देखो अभी से बहुत ज्यादा जानने की कोशिश मत करो — सब बात अभी से जान जाओगे तो जल्दी बूढ़े हो जाओगे।'

पावेल एक मग्गे में पानी लिये घर से भागता हुआ आया।

घुड़सवार ने एक घूँट में मग्गे को खाली कर दिया और उसे वापस पावेल को पकड़ा दिया। इसके बाद लगाम को झटका देते हुए वह तेजी से चीड़ के जंगलों की तरफ निकल गया।

पावेल ने क्लिम से पूछा, 'वह कौन था ?'

क्लिम ने कंधे उचकाते हुए जवाब दिया, 'मुझे क्या मालूम।'

'लगता है कि फिर सरकार में रद्दोबदल होगी। इसीलिए लेशचिन्स्की परिवार कल ही यहाँ से चला गया। अगर अमीर लोग भाग रहे हैं, तो इसका मतलब होता है कि छापेमार आ रहे हैं।' सर्गेई ने ऐलान किया, और दृढ़ता के साथ इस राजनीतिक सवाल को यूँ हल कर दिया जैसे अब उसमें और कुछ कहने-सुनने को बाकी न रह गया हो।

इस बात का तर्क इतना प्रबल था कि पावेल और क्लिम को झट विश्वास हो गया और उन्होंने फौरन सर्गेई की बात मान ली।

अभी इन लड़कों की बहस खतम भी नहीं हुई थी कि बड़ी सड़क से आती हुई घोड़ों के टापों की आवाज सुनकर वे तीनों फिर दौड़कर बाड़ी के पास आ गये।

उधर जंगल के हाकिम के बँगले के पास, जो पेड़ों की झुरमुट में इस तरह छिपा हुआ था कि मुश्किल से ही दिखायी देता था, उन्होंने जंगल में से आदमियों और गाड़ियों को निकलते देखा और निकटतर, बड़ी सड़क पर, उन्होंने लगभग पन्द्रह घुड़सवारों के एक दल को देखा जिनके घोड़ों की काठी से राइफिलें लटक रही थीं। घुड़सवारों के आगे-आगे एक अधेड़ आदमी अपने घोड़े पर सवार चला आ रहा था। वह खाकी फौजी कोट पहने और अफसरों का कमरबन्द लगाये हुए था। दूरबीन उसके गले से लटक रही थी। उस आदमी के ठीक पीछे था वह जिससे अभी-अभी लड़कों की बात हुई थी। उस अधेड़ आदमी के सीने पर एक लाल फीता टँका हुआ था।

सर्गेई ने पावेल की पसली में उंगली गड़ाते हुए कहा, 'मैंने क्या कहा था तुमसे ? उस लाल फीते को देखते हो ? ये लोग छापेमार हैं, चाहे शर्त बद लो ...।' और खुशी से नाचते हुए वह कूदकर बाड़ी के पार सड़क पर जा खड़ा हुआ।

दूसरों ने भी ऐसा ही किया और तीनों सड़क के किनारे खड़े हो गये और गौर से अपने करीब आते घुड़सवारों को देखते रहे।

जब ये घुड़सवार काफी पास आ गये, तब उस आदमी ने जिससे उनकी मुलाकात पहले हो चुकी थी, उनको इशारा किया और लेशचिन्स्की के मकान को अपनी चाबुक से दिखलाते हुए पूछा :

'उसमें कौन रहता है ?'

पावेल घुड़सवार के संग-संग चलने लगा।

'लेशचिन्स्की वकील। वह कल भाग गया। जरूर आप लोगों का डर लगा होगा उसे...।'

'तुम्हें क्या मालूम कि हम लोग कौन हैं ?' अधेड़ आदमी ने मुस्कराते हुए पूछा।

पावेल ने फीते की ओर इशारा करते हुए कहा, 'क्यों, वह क्या है ? कोई भी बतला सकता है ...।'

शहर में दाखिल होती हुई फौजी टुकड़ी को देखने के लिए कुतूहल के मारे लोगों की भीड़ सड़क पर जमा हो गयी। हमारे ये तीन नौजवान दोस्त भी इन गर्द से ढँके हुए, थककर चूर लाल सैनिकों को वहाँ से गुजरते हुए देखते रहे। और जब उस टुकड़ी की अकेली तोप और मशीनगनों की गाड़ियाँ सड़क के पत्थर पर आवाज करती हुई आगे बढ़ीं तो लड़कों की कतारें भी छापेमारों के पीछे हो लीं और लोग तब तक अपने घर नहीं गये जब तक कि यह टुकड़ी शहर के बीचोबीच रुक नहीं गयी और सिपाहियों को लोगों के घरों पर ठहराने का काम शुरू नहीं हो गया।

उस शाम को लेशचिन्स्की के मकान में, उसके लम्बे-चौड़े बैठकखाने में उस नक्काशीदार पायोंवाली लम्बी-चौड़ी मेज के इर्द-गिर्द चार लोग बैठे हुए थे : टुकड़ी के कमांडर कामरेड बुल्गाकोव, जो एक अधेड़ आदमी थे और जिनके बाल पकने शुरू हो गये थे और उनके तीन सहायक।

बुल्गाकोव ने उस सूबे का नक्शा मेज पर फैला रखा था और उनकी उँगलियाँ उस पर चल रही थीं।

'कामरेड एरमाचेंको, तो तुम्हारा कहना यह है कि हम लोग इस जगह पर पैर जमायें,' उन्होंने अपने सामने बैठे हुए उस आदमी को सम्बोधित करते हुए कहा जिसके गाल की हड्डियाँ बहुत चौड़ी और दाँत बहुत मजबूत थे। 'मगर मेरा तो खयाल है कि सबेरे ही हमें यहाँ से चल देना चाहिए। रात ही को चल दें तो और अच्छा हो। मगर वह शायद मुमकिन न हो, हमारे जवानों को आराम की जरूरत है। हमारा काम है जर्मनों के यहाँ पहुँचने के पहले खुद पीछे हटकर कजातिन पहुँच जाना। अपनी मौजूदा ताकत से उनका मुकाबला करना बेवकूफी की बात होगी, जब कि जर्मन लोग फौलाद का एक पहाड़ लेकर आगे बढ़ रहे हैं। जब तक हम लोग पीछे हटती हुई दूसरी लाल टुकड़ियों के संग मिल नहीं जाते, तब तक हम मोर्चा नहीं ले सकते। इसके अलावा कॉमरेड, हमको यह भी याद रखना चाहिए कि जर्मनों के अलावा दूसरे क्रान्ति-विरोधी दस्ते भी होंगे जिनका मुकाबला हमें करना होगा। मेरा प्रस्ताव है कि हम लोग कल सबेरे स्टेशन के उस पारवाले रेलवे पुल को उड़ाने के बाद पीछे हट जायँ। उसकी मरम्मत करने में जर्मनों को दो-तीन दिन लग जायेंगे और इस बीच रेलवे लाइन से उनका आगे बढ़ना रुक जायगा। क्यों, तुम्हारा क्या खयाल है साथियो ? हम लोगों को ही निश्चय करना है ...।' इतना कह कर वह मेज के चारों ओर बैठे हुए दूसरे लोगों की ओर देखने लगे।

स्त्रुजकोव, जो बुल्गाकोव के ठीक सामने बैठा हुआ था, अपने ओठों को चूस रहा था। उसने पहले नक्शे को और फिर बुल्गाकोव को देखा और अन्त में अपनी राय दी :

'मैं बुल्गाकोव से सहमत हूँ।'

उनमें जो सबसे कम उम्र का आदमी था और जो मजदूरों के कपड़े पहने हुए था, उसने भी अपनी सहमति प्रकट की। बोला :

'बुल्गाकोव ठीक कहते हैं।'

लेकिन एरमाचेंको ने सिर हिलाया। एरमाचेंको वही आदमी था जिसने लड़कों से पहले बात की थी।

'अगर यही था तो हम लोगों ने फिर टुकड़ी बनायी ही क्यों ? बिना लड़े जर्मनों को पीठ दिखाने के लिए ? मैं समझता हूँ कि हम लोगों को इसी जगह

पर जर्मनों से मोर्चा लेना चाहिए। भागते-भागते मैं तो थक गया। अगर मुझे तय करना हो तो मैं जरूर इसी जगह पर उनसे मोर्चा लूँ ...।' उसने तेजी से अपनी कुर्सी पीछे को सरकायी, उठा और कमरे में टहलने लगा।

बुल्गाकोव ने असहमति प्रकट करते हुए उसकी ओर देखा।

'एरमाचेंको ! हमको अपनी अक्ल से काम लेना चाहिए। हम अपने आदमियों को किसी ऐसी लड़ाई में नहीं झोंक सकते जिसका अन्त हार और तबाही में हो। यह भारी बेवकूफी की बात होगी। हमारे ठीक पीछे बड़ी-बड़ी तोपें और बख्तरबन्द गाड़ियों की एक पूरी डिवीजन है ... कामरेड एरमाचेंको, यह लड़कपन का वक्त नहीं है कि हम झूठ-मूठ बहादुरी दिखलायँ ...।' दूसरों की ओर मुड़ते हुए उसने बात जारी रखी : 'अच्छा तो यह तय हो गया; कल सवेरे हम लोग यहाँ से जा रहे हैं ... और अब आइए अगले सवाल को तय करें। दूसरी फौजी टुकड़ियों के साथ अपना सम्बंध कायम करने का सवाल है। ... चूँकि हम लोग इस जगह को छोड़नेवाले आखिरी लोग हैं, इसलिए यहाँ जर्मन पाँतों के पीछे काम के संगठन की जिम्मेदारी हमारी है। यह बहुत बड़ा रेलवे जंकशन है और शहर में दो स्टेशन हैं। रेलवे के काम को जारी रखने के लिए हमें एक बहुत भरोसे का कॉमरेड चाहिए। हमको यहीं पर फैसला करना होगा कि काम को शुरू करने के लिए हम किसको पीछे छोड़ जायें। क्या तुम्हारे जेहन में कोई आदमी है ?'

एरमाचेंको ने मेज के पास आते हुए कहा : 'मेरा खयाल है कि मल्लाह फियोदोर जुखराई को यहाँ पर रहना चाहिए। पहली बात तो यह कि वह यहीं के आदमी हैं। दूसरी बात यह कि वह फिटर और मेकेनिक हैं और उनको स्टेशन पर काम मिल सकता है। और किसी ने फियोदोर को हमारी टुकड़ी के साथ देखा भी नहीं है। आज रात को वह यहाँ पर आयेंगे। वह काफी समझदार आदमी हैं और काम को अच्छी तरह चला सकेंगे। मैं समझता हूँ कि इस काम के लिए वही सबसे माकूल आदमी हैं।'

बुल्गाकोव ने हामी भरते हुए सिर हिलाया :

'ठीक है, मैं तुम से सहमत हूँ एरमाचेंको। साथियो, किसी को कोई आपत्ति तो नहीं है ?' उन्होंने दूसरों की ओर मुड़ते हुए पूछा। 'कोई नहीं। तो यह मामला भी तय। हम लोग जुखराई के लिए कुछ पैसा छोड़ जायेंगे और कुछ परिचय-पत्र जिनकी उसको जरूरत पड़ेगी ...। अच्छा, अब तीसरा और आखिरी सवाल साथियो। इस शहर में जो हथियार जमा हैं, उनका क्या हो ? यहाँ पर हथियारों का अच्छा खासा स्टाक है, बीस हजार राइफिलें, जो जार के खिलाफ लड़ाई के वक्त यहाँ पर छूट गयी थीं और जिनके बारे में सब लोग भूल चुके हैं। वे सब एक किसान के शेड में जमा हैं। शेड के मालिक ने

यह खत मुझे लिखा है। वह जल्दी ही उनसे अपना पीछा छुड़ाना चाहता है। हम लोग खामखा जर्मनों के लिए उनको नहीं छोड़ जायेंगे। मेरी राय में उनको आग लगा देनी चाहिए, और फौरन, ताकि सवेरे तक यह काम खतम हो जाय। डर सिर्फ इस बात का है कि आग कहीं आस-पास के मकानों तक न फैल जाय। गरीब किसान शहर के एक छोर पर रहते हैं।'

स्त्रुजकोव अपनी कुर्सी में हिला। वह बहुत मजबूत, पुख्ता आदमी था और उसके चेहरे पर जंगल की तरह दाढ़ी उगी हुई थी, क्योंकि एक अर्से से उसने उस्तरे की शक्ल नहीं देखी थी।

'मगर राइफलों में आग क्यों लगाई जाय? मेरी राय में तो उन्हें लोगों में बाँट देना चाहिए।'

बुल्गाकोव तेजी से उसकी ओर मुड़ा :

'क्या कहा तुमने, बाँट देना चाहिए?'

एरमाचेंको ने बड़े उत्साह के साथ उस बात की तसदीक करते हुए कहा, 'सचमुच बहुत अच्छा खयाल है। हमें उनको मजदूरों को दे देना चाहिए; और और भी जो लोग लेना चाहें उन सबको। जब जर्मन उनकी जिन्दगी दूभर कर देंगे उस वक्त उनके पास पलटकर हमला करने के लिए कुछ होगा तो। लाजिमी बात है कि वे लोगों को ज्यादा से ज्यादा सतायेंगे। और, जब यह चीज लोगों की बर्दाश्त से बाहर हो जायगी तो प्रतिकार के लिए उनके पास ये हथियार होंगे। स्त्रुजकोव ठीक कहता है; राइफिलें जरूर बाँट देनी चाहिए। उनमें से कुछ को गाँव में ले जाना भी बुरा नहीं होगा। किसान उन्हें छिपा-कर रख सकेंगे और जब जर्मन सभी कुछ हथियाने लगेंगे, उस वक्त राइफिलें बहुत कारगर साबित होंगी।'

बुल्गाकोव मन ही मन मुस्कराया।

'बात तो तुम लोग ठीक कहते हो। मगर भूलो मत कि जर्मन जरूर यह हुक्म निकालेंगे कि सारे हथियार जमा कर दिये जायँ और फिर सभी उनकी आज्ञा का पालन करेंगे।'

एरमाचेंको ने आपत्ति की : 'सब ऐसा नहीं करेंगे। कुछ लोग करेंगे, और बहुत से लोग नहीं करेंगे।'

बुल्गाकोव ने मेज के इर्द-गिर्द बैठे लोगों को प्रश्न करती हुई आँखों से देखा।

'मैं राइफिलों को बाँट देने के पक्ष में हूँ,' जवान मजदूर ने भी एरमाचेंको और स्त्रुजकोव की बात का समर्थन किया।

बुल्गाकोव मान गया। 'अच्छा तो यह बात भी तय हो गई,' अपनी कुर्सी से उठते हुए उसने कहा, 'इस वक्त तो इतने ही सवाल थे। अब हम लोग

सबेरे तक आराम कर सकते हैं। जुखराई आये तो उसे मेरे पास भेजना, मैं उससे बात करना चाहता हूँ। एरमाचेंको, तुम जाकर जरा सन्तरियों की चौकियाँ देख लो।'

जब सब चले गये तो बुल्गाकोव बैठकखाने के बगल में सोने के कमरे में गया, गद्दे पर उसने अपना बरानकोट फैलाया और लेट रहा।

दूसरे रोज सुबह पावेल बिजलीघर से अपने घर लौट रहा था। वह पिछले एक साल से वहाँ फायरमैन के मददगार के रूप में काम कर रहा था।

उसे फौरन पता चल गया कि आज शहर में असाधारण खलबली है। जैसे-जैसे वह आगे बढ़ता गया, उसे और-और लोग मिलते गये जो एक, दो और कोई-कोई तो तीन-तीन राइफिलें लिये चले जा रहे थे। उसकी समझ में नहीं आया कि हो क्या रहा है। वह तेजी से अपने घर की ओर लपका। लेशचिन्स्की के बागीचे के सामने उसे कल के अपने परिचित लोग मिले। ये लोग अपने घोड़ों पर सवार हो रहे थे।

पावेल भागकर घर के अन्दर गया, जल्दी-जल्दी मुँह-हाथ धोया और माँ से यह मालूम करके कि आर्तेम अब तक घर नहीं लौटा है, फिर तेजी से बाहर निकल गया और जल्दी-जल्दी सर्गेई ब्रुजाक के घर की ओर चल दिया जो कि शहर के दूसरे छोर पर था।

सर्गेई का पिता इंजन ड्राइवर का सहायक था और उसका अपना एक छोटा सा मकान और थोड़ी सी जमीन थी।

सर्गेई घर में नहीं था और उसकी माँ ने जो एक मोटी सी पीले चेहरे की स्त्री थी, पावेल को अरुचि की निगाहों से देखा।

'पता नहीं वह कहाँ है! सबेरे-सबेरे जो पहली चीज उसने की वह यही थी कि ऐसे भाग निकला जैसे भूत सवार हो। कहता था, कहीं पर राइफिलें बँट रही हैं। मेरा खयाल है वहीं गया होगा। तुम सब जो चपटी-चपटी नाक वाले योद्धा हो न, उनको जरूरत इस बात की है कि उनकी जरा अच्छी तरह कुन्दी की जाय — बिलकुल कहे में नहीं रहे अब तुम लोग। चले राइफिलों के पीछे। तुम उस आवारे को बतला देना कि अगर घर में एक भी कारतूस लाया तो उसकी खाल उधेड़ लूँगी।

अभी सर्गेई ब्रुजाक की बातूनी माँ अपनी बात खतम भी न कर पायी थी कि पावेल उधर सड़क पर दौड़ता चला जा रहा था।

बड़ी सड़क पर उसे एक आदमी मिला जो दोनों कंधों पर एक-एक राइफिल लिये हुए था। पावेल भागकर उस आदमी के पास पहुँचा।

'काका ! काका ! जरा मुझे भी बता दो कि ये कहाँ से मिली हैं ?'

'वहाँ वेर्खोवीना में लोग बाँट रहे हैं।'

पावेल जितनी तेजी से दौड़ सकता था, दौड़ चला। दो सड़कें पार करने पर वह एक दूसरे लड़के से टकरा गया जो एक भारी सी संगीन लगी राइफिल घसीटता आ रहा था। पावेल ने उसको टोका :

'तुम्हें यह बन्दूक कहाँ से मिली ?'

'वहाँ स्कूल के सामने फौजवाले बाँट रहे हैं। मगर अब तो एक भी नहीं बची। सब खतम। रात भर बाँटते रहे और अब तो सिर्फ खाली बक्से रह गये हैं। यह मेरी दूसरी है।' लड़के ने गर्व के साथ बतलाया।

इस खबर से पावेल को गहरी निराशा हुई।

एकाएक उसके मन में एक विचार आया। घूमकर उसने दो-तीन छलाँगों में उस लड़के को जा पकड़ा और उसके हाथ से राइफिल छीन ली।

'तुम्हारे लिए एक काफी है। यह मेरी है।' उसने अधिकार के स्वर में कहा।

दिन दहाड़े इस डकैती से गुस्सा होकर वह लड़का पावेल पर टूट पड़ा। मगर पावेल कूदकर पीछे हट गया और अपने दुश्मन की ओर संगीन साधकर जोर से चिल्लाया :

'जरा सँभलकर रहना नहीं तो चोट खा जाओगे।'

वह लड़का खींझ के मारे रोने लगा और बेबस गुस्से में बकता-झकता भाग गया। अपने से बेहद खुश पावेल ठाठ से घर आया, छलाँग लगा कर बाड़ी को पार करते हुए भागकर शेड में गया, ऊपर चढ़कर अपनी यह दौलत छत की बल्लियों पर टिकाकर रख दी और खुशी से सीटी बजाता हुआ घर के अन्दर दाखिल हुआ।

उक्रेन की गर्मी की शामें बड़ी प्यारी होती हैं। शेपेतोवका जैसे छोटे शहरों में, जो कि सच पूछिए तो मुफस्सिल के गाँवों जैसे होते हैं, गर्मी की ये स्तब्ध रातें तमाम नौजवानों को जैसे अपने जादू से घर के बाहर आने पर मजबूर कर देती हैं। आप उनको टोलियों में और जोड़ों में देख सकते हैं — मकानों के सायबानों में, घर के सामने की छोटी सी बगिया में, या सड़क के किनारे पड़ी हुई इमारती लकड़ी के ढेरों पर आराम के साथ बैठे हुए। उनकी खुशी से उबलती हुई हँसी और गाने शाम की निस्तब्धता में गूँजते रहते हैं।

हवा फूलों की खुशबू से भारी है और काँप रही है। आसमान की गह-

राइयों में नन्हें-नन्हें तारे चमक रहे हैं और आवाजें हवा के पंखों पर दूर-दूर जा रही हैं ...

पावेल को अपने अकार्डियन से बहुत प्यार था। वह उस सुरीले बाजे को बहुत प्यार से अपने घुटनों पर लिटा लेता और उसके परदों की दोनों पंक्तियों पर बड़ी कोमलता से अपनी उँगलियों को ऊपर-नीचे दौड़ाने लगता। और कभी एक भारी आह और कभी उमंग और खुशी के संगीत का इन्द्रधनुपी झरना उससे ...

जब धौंकनी चल रही हो और अकार्डियन में से नर्म-नर्म संगीत, पागल कर देनेवाले सुर निकल रहे हों, तब भला कोई चुप कैसे बैठ सकता है। इसके पहले कि आप जानें कि क्या हो रहा है, आपके पैर उस संगीत का आदेश मान-कर नाचने लग जाते हैं। आह, जिन्दगी भी कितनी अच्छी चीज है, कितनी प्यारी, कितनी सुन्दर !

आज की शाम खास तौर से खुशी में डूबी हुई है। पावेल के मकान के सामने लकड़ी के मोटे-मोटे कुन्दों का जो ढेर है, उस पर नौजवानों और नव-युवतियों की एक भीड़ इकट्ठी है। और उनमें भी सबसे ज्यादा मस्ती में है गालोचका, पावेल के बगल के मकानवाले राजमिस्त्री की लड़की। गालोचका को लड़कों के संग नाचना-गाना बहुत ही अच्छा लगता है। उसकी अच्छी बुलन्द आवाज बहुत गहरी, मखमली और मीठी है।

पावेल को उससे थोड़ा डर लगता है। वजह यह है कि गालोचका जवान की तेज है। वह पावेल के बगल में बैठ जाती है और हँसते हुए अपनी बाँह उसके गले में डाल देती है।

कहती है : 'कितने सजते हो तुम इस अकार्डियन के साथ ! सचमुच बड़े दुख की बात है कि तुम अभी जरा छोटे हो, वर्ना तुम से अच्छा आदमी मेरे लिए दूसरा न होता। मैं अकार्डियन बजानेवाले आदमियों पर जान देती हूँ। उसके सामने मेरा यह नन्हा दिल जैसे पिघल जाता है।'

पावेल लाज के मारे लाल पड़ जाता है — गनीमत है कि बहुत अँधेरा है और कोई देख नहीं सकता। वह उस चंचल छोकरी से दूर खिसक जाता है, मगर वह उसका पीछा छोड़नेवाली नहीं।

वह हँसते हुए कहती है : 'प्यारे, अब क्या तुम मुझे छोड़ के भाग जाना चाहते हो, कैसे बेदर्दी हो ! तुम तो लड़कियों को भी मात करते हो।'

उसकी अच्छी कसी हुई छातियाँ पावेल के कंधे से छू जाती हैं और वह एक अजीब ढंग से, अनायास अपने को आन्दोलित होता महसूस करता है, और टोली के दूसरे लोगों की जोरदार हँसी खामोशी को तोड़ती है, जो कि उस गली की हमेशा की साथिन है।

पावेल ने उसके कंधे को हल्का सा धक्का देते हुए कहा : 'जरा सरक कर बैठो न, मुझे बजाने में दिक्कत होती है।'

इस पर हँसी का एक और कहकहा फूट पड़ता है, मजाकों के नये तीर छूटने लगते हैं।

मरुसिया पावेल की रक्षा करती है : 'कोई दर्दीली चीज बजाओ पावेल, जो दिल के तारों को खींचकर झनझना दे।'

अकार्डियन की धौंकनी धीरे-धीरे फैलती है। पावेल की उँगलियाँ बड़ी नरमी और बड़े प्यार से परदों को सहलाती हैं और एक बहुत जानी-पहचानी और सबकी प्यारी धुन हवा में भर उठती है। सबसे पहले गालीना गाना शुरू करती है, फिर मरुसिया और फिर बाकी सब :

एक जगह पर जमा हुए मल्लाह सभी मस्ताने
कितने अच्छे, कितने मीठे लगते दुख के गाने ....

गाने वालों की गूँजती हुई जवान आवाजें हवा की लहरों पर दूर जंगलों तक पहुँच रही थीं।

'पावका' — यह आर्तेम की आवाज थी।

पावेल ने अपने अकार्डियन की धौंकनी दबाकर उसकी हवा निकाली और फीता लगा दिया।

'घर पर लोग मुझे बुला रहे हैं। मुझे जाना होगा।'

मरुसिया ने रुकने के लिए आग्रह करते हुए कहा : 'उंह, जाना, मगर थोड़ी देर और बजाओ। ऐसी जल्दी तुम्हें किस बात की है?'

मगर पावेल जाने का निश्चय कर चुका था।

'नहीं, अब और नहीं रुक सकता। कल फिर और गाना-बजाना करेंगे, मगर अब तो मुझे जाना ही होगा। आर्तेम बुला रहा है।' यह कहते हुए वह दौड़कर सड़क के उस पार अपने छोटे से मकान में घुस गया।

उसने दरवाजा खोला और कमरे में आर्तेम के अलावा और भी दो आदमियों को पाया जिनमें से एक आर्तेम का दोस्त रोमान था और दूसरे को पावेल नहीं जानता था। वे सब मेज के सामने बैठे थे।

पावेल ने पूछा : 'तुमने मुझे बुलाया?'

आर्तेम ने सिर हिलाकर हामी भरी और उस नये आदमी की तरफ मुड़ते हुए कहा :

'यही मेरा भाई है, जिसके बारे में अभी हम लोग बातें कर रहे थे।'

उस नये आदमी ने अपना गठीला हाथ पावेल की तरफ बढ़ाया।

आर्तेम ने भाई से कहा : 'सुनो पावका, तुमने मुझे बतलाया था कि

बिजली घर का एलेक्ट्रीशियन बीमार है। अब मैं चाहता हूँ कि तुम कल पता लगाओ कि उन्हें उस आदमी की जगह क्या किसी दूसरे आदमी की जरूरत है। अगर हो तो तुम आकर मुझे बतलाना।'

उस नये आदमी ने आर्तेम को टोकते हुए कहा :

'नहीं, उसकी कोई जरूरत नहीं। ज्यादा अच्छा होगा कि मैं ही खुद इसके साथ चला जाऊँ और बड़े साहब से बातें कर लूँ।'

'यह भी कोई पूछने की बात है। जरूरत तो उन्हें होगी। आज बिजली-घर सिर्फ इसलिए बन्द रहा कि स्टेंकोविच बीमार है। बड़े साहब दो बार आये — उन्हें बड़ी तलाश थी ऐसे आदमी की जो उसकी जगह ले सके। मगर कोई मिला नहीं। सिर्फ एक फायरमैन के भरोसे बिजलीघर चालू करने में उन्हें डर मालूम हुआ। एलेक्ट्रीशियन को टाइफस हुआ है।'

उस नये आदमी ने पावेल से कहा, 'अच्छा तो बात तय हो गयी। मैं कल तुम्हारे पास आऊँगा और फिर हम लोग साथ चलेंगे।'

"अच्छा।"

पावेल की आँखें उस नये आदमी की शान्त भूरी आँखों से मिलीं। वह गौर से पावेल को देख रहा था। उसकी दृढ़ अपलक दृष्टि से पावेल को उलझन सी महसूस हुई। आगन्तुक भूरे रंग का एक कोट पहने था जिसके बटन ऊपर से नीचे तक बन्द थे — जाहिर था, कोट उसके लिए जरूरत से ज्यादा चुस्त था क्योंकि उसकी मजबूत चौड़ी पीठ पर की सीवनें बहुत तनी हुई और उधड़ने के करीब थीं। उसके सिर और कंधों को जोड़नेवाली चीज थी उसकी बैल की जैसी, मोटी, कसी हुई गर्दन। उसके पूरे शरीर को देखकर किसी पुराने याँज के दरख्त की मजबूती का खयाल आता था।

आर्तेम ने दरवाजे तक उनको पहुँचाते हुए कहा, 'अच्छा जुखराई, सलाम, भगवान् तुम्हें कामयाब करे। कल तुम मेरे भाई के साथ जाना और वहाँ उस नौकरी को ठीक कर लेना।'

इस टुकड़ी के जाने के तीन दिन बाद जर्मन शहर में दाखिल हुए। उनके आने की घोषणा काफी दिनों से उजाड़ स्टेशन के एक इंजन की सीटी ने की।

कस्बे भर में खबर फैल गयी कि जर्मन आ रहे हैं।

कस्बे में छेड़े गये दीमक के भिटे जैसी खलबली थी, क्योंकि गो शहरवाले कुछ दिनों से जानते थे कि जर्मन आनेवाले हैं, तब भी उन्हें जैसे इस बात का यकीन न आता था। और अब वे ही भयानक जर्मन रास्ते में नहीं, बल्कि यहीं, इसी कस्बे में थे।

कस्बेवाले अपने बागीचों की बाड़ियों और छोटे-छोटे लकड़ी के फाटकों की हिफाजत में लगे हुए थे। उन्हें बाहर सड़क पर निकलने में डर लगता था।

बड़ी सड़क के दोनों तरफ एक-एक की कतार में मार्च करते हुए जर्मन आये। वे हलके जैतूनी रंग की वर्दी पहने हुए थे और अपनी राइफिलें साधे चल रहे थे। उनकी राइफिलों में चौड़े छुरे जैसी संगीनें लगी हुई थीं। वे भारी-भारी लोहे के टोप लगाये थे और उनकी पीठ पर बड़े-बड़े फौजी थैले लटके थे। एक अनन्त प्रवाह के रूप में वे स्टेशन से कस्बे में आये। वे सतर्क होकर चल रहे थे और किसी भी हमले का जवाब देने के लिए बिलकुल मुस्तैद थे, गोकि उन पर हमला करने की बात किसी की कल्पना में भी न थी।

आगे-आगे माउजर[1] हाथ में लिये दो अफसर चल रहे थे। सड़क के बीचो-बीच दुभाषिया चल रहा था। यह दुभाषिया हेटमैन के नीचे काम करने वाला एक सार्जेन्ट-मेजर था जो नीले रंग का उक्रेनी कोट पहने था और ऊँची-सी फर की टोपी लगाये था।

शहर के बीचोबीच चौक में जर्मन कतार बाँधकर खड़े हो गये। नगाड़े बज रहे थे। कस्बे के कुछ अधिक साहसी लोगों की एक छोटी-सी भीड़ इकट्ठा हो गयी थी। उक्रेनी कोट पहने हुए हेटमैन का वह आदमी दवाइयों की दूकान के सायबान पर चढ़ गया और वहाँ से उसने कमांडैण्ट मेजर कार्फ का जारी किया हुआ हुक्मनामा जोर-जोर से पढ़ना शुरू किया :

१) मैं हुक्म जारी करता हूँ कि

शहर के सारे लोग चौबीस घंटे के अन्दर-अन्दर सारी बन्दूकें और दूसरे खतरनाक हथियार जो उनके पास हों, जमा कर दें। जो इस हुक्म को नहीं मानेगा उसे गोली मार दी जायगी।

२) शहर में मार्शल-लॉ जारी किया जाता है और लोगों को मनाही की जाती है कि आठ बजे रात के बाद सड़कों पर न निकलें।

मेजर कार्फ, शहर कमांडैण्ट।

पहले जिस इमारत में म्युनिसिपैलिटी और क्रान्ति के बाद सोवियत शासन का केन्द्र था, उसी में जर्मन कमांडैण्ट ने अपना क्वार्टर कायम किया। इमारत के फाटक पर एक सन्तरी तैनात था जो सिर पर लोहे का टोप लगाये था। इस टोप पर जर्मनी का राज-चिह्न, एक बड़ा-सा गिद्ध बना हुआ था। उसी इमारत के पीछे वह मालगोदाम था जहाँ शहरवालों को अपने हथियार जमा करने थे।

---

१. एक तरह का पिस्तौल। — अनु०

गोली मारे जाने के डर के मारे सारे दिन शहरवालों ने अपने हथियार ला-लाकर जमा किये। अधेड़ उम्रवाले लोग तो आये नहीं; हथियार लाकर वापिस किये नौजवानों और बच्चों ने। जर्मनों ने किसी को पकड़ा नहीं।

जो लोग खुद नहीं आना चाहते थे, वे रात को अपने हथियार सड़क पर फेंक गये। सबेरे जर्मन सिपाहियों ने उन्हें बटोर लिया, अपनी फौजी गाड़ी में लादा और कमांडैण्ट के दफ्तर ले गये।

एक बजे दोपहर, जब हथियार जमा करने की मियाद खत्म होती थी, जर्मन सिपाहियों ने बन्दूकों की गिनती शुरू की। चौदह हजार राइफिलें। इसका मतलब हुआ कि छः हजार नहीं जमा की गयीं। उनके लिए उन्होंने बड़ी जबर्दस्त तलाशियाँ लीं। मगर कुछ खास माल बरामद नहीं हुआ।

दूसरे रोज सबेरे दो रेलवे मजदूरों को, जिनके घर में छिपाई हुई राइफिलें पायी गयीं, शहर के बाहर पुराने यहूदी कब्रिस्तान के पास गोली मार दी गयी।

कमांडैण्ट के हुक्म के बारे में सुनते ही आर्तेम बड़ी तेजी से घर की ओर चला। बाहर हाते में ही पावेल मिल गया। उसका कंधा पकड़ते हुए उसने धीरे से, मगर मजबूत आवाज में, पावेल से पूछा :

'तुम भी कोई हथियार घर लाये थे ?'

पावेल का इरादा राइफिल के बारे में किसी को कुछ बतलाने का नहीं था, मगर अपने भाई से ही कैसे झूठ बोलता। साफ-साफ सब बात बतला दी।

दोनों साथ-साथ शेड में गये। आर्तेम ने बल्ली पर से, जहाँ वह छिपा कर रखी गयी थी, राइफिल को उतारा, उसके बोल्ट और संगीन को अलग किया और बन्दूक की नली पकड़कर अपनी पूरी ताकत से एक खम्भे पर उसको दे मारा। बन्दूक का कुन्दा चूर-चूर हो गया। और फिर उस राइफिल का अवशेष बागीचे के उस पार, दूर, घूरे में फेंक दिया गया; संगीन और बोल्ट को आर्तेम ने संडास में डाल दिया।

इस काम को खतम करके आर्तेम अपने भाई की तरफ मुड़ा।

'अब तुम बच्चे नहीं रहे पावका, और तुम्हें समझना चाहिए कि बन्दूकों के संग खिलवाड़ नहीं किया जा सकता। तुम्हें घर के अन्दर ऐसी कोई चीज नहीं लानी चाहिए। यह बहुत ही खतरनाक बात है। आजकल ऐसी चीज के लिए तुम्हें अपनी जान तक की कीमत अदा करनी पड़ सकती है। और देखो, कोई चालबाजी करने की भी कोशिश न करना, क्योंकि अगर ऐसी कोई चीज

घर लाये और उनको पता चल गया तो सबसे पहले मुझको गोली मारी जायगी। तुम्हारे जैसे छोकरों को वे हाथ नहीं लगायेंगे। अच्छी तरह समझ लो। यह बहुत ही बुरा जमाना है, बहुत ही बुरा।'

पावेल ने वादा किया।

हाता पार करके जब दोनों भाई घर के अन्दर जा रहे थे, तब एक गाड़ी लेशचिन्स्की के फाटक पर रुकी और उसमें से वह वकील और उसकी बीवी और दो बच्चे, नेली और विक्टर, बाहर निकले।

आर्तेम उनको देखकर गुस्से में बड़बड़ाया, 'अच्छा तो यह नाजुक चिड़ियाँ अपने घोंसले पर वापस आ गयीं। अब असल तमाशा शुरू होगा। खुदा गारत करे इन हरामजादों को!' कहते हुए वह अन्दर चला गया।

सारे दिन पावेल उस राइफिल के बारे में सोच-सोचकर दुखी होता रहा। इसी बीच उसका दोस्त सर्गेई, एक पुरानी वीरान शेड में, दीवाल के पास, जमीन में गड्ढा खोदने में जी-जान से लगा हुआ था। आखिर गड्ढा तैयार हो गया। उसके अन्दर सर्गेई ने तीन चमचमाती हुई नयी राइफिलों को अच्छी तरह चीथड़ों में लपेटकर रख दिया। उसको भी ये राइफिलें उसी वक्त मिली थीं जब लाल सेना ने जनता को राइफिलें बाँटी थीं। उसका इरादा उनको जर्मनों के हवाले करने का कतई नहीं था। रात भर उसने उनको हिफाजत के साथ छिपाने के लिए कड़ी मेहनत की थी।

उसने गड्ढे को पाट दिया; पैर से दाब-दाबकर मिट्टी को बराबर कर दिया और फिर उसके ऊपर बहुत से कूड़े-कचरे का ढेर लगा दिया। अपनी मेहनत के नतीजे को बहुत बारीकी से एक आलोचक की तरह उसने देखा। उसे सन्तोष हुआ। उसने टोपी उतारी और माथे का पसीना पोंछा।

'अब ढूँढ़ने दो उनको, देखें कैसे पाते हैं। मान लो पा भी जायें तो यह नहीं जान सकते कि किसने इनको यहाँ रखा। यह शेड तो लावारिस है।'

पावेल और उस गंभीर चेहरेवाले एलेक्ट्रीशियन में अनजान में ही धीरे-धीरे दोस्ती पैदा हो गयी। बिजली के स्टेशन पर उस आदमी को काम करते अब एक महीना हो गया था।

जुखराई ने आगवाले के सहायक, पावेल को दिखलाया कि डाइनमो कैसे बनता और कैसे चलता है।

उस मल्लाह को इस तेज लड़के से प्यार हो गया। वह अक्सर खाली दिनों में आर्तेम के घर आता और बहुत धीरज के साथ माँ के घरेलू झंझटों और परेशानियों की कहानी सुनता—खास करके तब, जब वह अपने छोटे लड़के

की कारगुजारियों का जिक्र करती। जुखराई चिन्तनशील और गंभीर आदमी था और मारिया याकोवलेवना को उससे बात करके बहुत शान्ति और सांत्वना मिलती। जुखराई की संगत में वह अपनी परेशानियों को भूल जाती और बहुत खुश रहा करती।

एक दिन जब पावेल बिजली स्टेशन के हाते में जलाऊ लकड़ी के ऊँचे-ऊँचे ढेरों के बीच से गुजर रहा था तो जुखराई ने उसको रोका।

मुस्कराते हुए जुखराई ने कहा, 'तुम्हारी माँ ने मुझे बतलाया है कि तुम्हें मार-पीट बहुत पसन्द है। वह कहती हैं, इस मामले में तो वह लड़नेवाले मुर्गे से भी गया-गुजरा है।' यह कहकर जुखराई सहमति-सूचक ढंग से जैसे मन-ही-मन मुस्कराया और बोला, 'सच बात यह है कि लड़ना बुरी बात नहीं है, यदि तुम्हें इस बात का पता हो कि किससे लड़ना है और क्यों लड़ना है।'

पावेल ठीक नहीं समझ सका कि जुखराई मजाक में यह बात कह रहा है या संजीदा तौर पर।

'मैं झूठ-मूठ नहीं लड़ता,' उसने जवाब दिया, 'मैं हमेशा ठीक बात के लिए और इन्साफ के लिए लड़ता हूँ।'

'क्या तुम चाहोगे कि मैं तुम्हें ठीक से लड़ना सिखलाऊँ?' जुखराई ने अप्रत्याशित ढंग से पूछा।

पावेल ने उसकी ओर कुछ आश्चर्य से देखते हुए पूछा, 'ठीक से लड़ने का क्या मतलब?'

'तुम्हें आप मालूम हो जायगा।'

और तब उसने पावेल को घूँसेबाजी पर एक संक्षिप्त लेक्चर दिया।

इस कला में पावेल को दक्षता आसानी से नहीं मिली। कई बार जुखराई के घूँसे से उसके पैर उखड़ गये और उसने अपने को जमीन पर लोटते पाया। मगर जो भी हो, पावेल बहुत मेहनती और धीरजवाला शिष्य सिद्ध हुआ।

एक दिन, जब मौसम गर्म और खुशगवार था और वह क्लिम्का के घर से लौटकर आया था और अपने कमरे में इधर-उधर लुढ़कता फिर रहा था, क्योंकि उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे, तब पावेल ने निश्चय किया कि अपनी प्रिय जगह पर चढ़ेगा। घर के पिछवाड़े के बागीचे के कोने में खड़े हुए शेड की छत उसकी प्रिय जगह थी। पीछे का सहन पार करके वह बाग में आया। वह झोंपड़ी के पास पहुँचा और छत पर चढ़ गया। छप्पर के ऊपर लटकती हुई चेरी वृक्षों की घनी शाखों के बीच से अपना रास्ता बनाता हुआ वह छत के बीचोबीच पहुँच गया और धूप खाने के लिए वहीं लेट गया।

छप्पर का एक हिस्सा लेशचिन्स्की के बागीचे में बढ़ा हुआ था और छत के सिरे से वह सारा बागीचा और मकान का एक हिस्सा दिखाई देता था।

वहाँ, उस किनारे से, अपना सिर बढ़ाकर पावेल ने हाते का एक हिस्सा देखा; एक गाड़ी वहाँ खड़ी हुई थी। लेशचिन्स्की के मकान में टिके जर्मन लेफ्टिनेण्ट का अर्दली अपने मालिक के कपड़ों पर ब्रुश कर रहा था।

पावेल ने अक्सर लेफ्टिनेण्ट को फाटक पर खड़े देखा था। वह चौड़ा-चकला, लाल मुँह का आदमी था। उसके चेहरे पर छोटी-छोटी कतरी हुई मूँछें थीं। वह नाक पर ठहरनेवाला फैशनेबुल चश्मा लगाता था और एक ऐसी टोपी पहनता था जिसकी चोटी पर लाख का चमकदार काम था। पावेल को यह भी मालूम था कि वह उस बगलवाले कमरे में रहता है जिसकी खिड़की बाग में खुलती है और जो छप्पर की छत से दिखायी देता है।

लेफ्टिनेण्ट साहब इस वक्त मेज पर बैठे कुछ लिख रहे थे। फिर, उन्होंने जो कुछ लिखा था उसे उठाया और कमरे के बाहर चले गये। लिखा हुआ कागज उन्होंने अपने अर्दली को पकड़ाया और फाटक को जानेवाले कच्चे रास्ते पर चल दिये। बागीचे के लता-मण्डप में वह किसी से बात करने के लिए रुके। पल भर बाद, नेली लेशचिन्स्की बाहर आयी। लेफ्टिनेण्ट साहब ने उसकी बाँह पकड़ी और फिर दोनों फाटक के बाहर निकल गये।

पावेल अपनी जगह से यह सब कार्रवाई देख रहा था। इस वक्त उस पर आलस्य-सा छा रहा था और वह आँखें बन्द करने वाला ही था कि उसने अर्दली को लेफ्टिनेण्ट साहब के कमरे में घुसते देखा। अर्दली ने एक वर्दी खूँटी पर टाँगी, बाग में खुलनेवाली खिड़की को खोला और कमरे की सफाई की। इसके बाद कमरे को बन्द करता हुआ बाहर निकल गया। दूसरे ही पल पावेल ने उसको अस्तबल के पास खड़े पाया, जहाँ घोड़े बँधे थे।

खुली हुई खिड़की में से पावेल कमरे की हर चीज को अच्छी तरह देख सकता था। मेज पर एक फौजी कमरबन्द और कोई चमकदार चीज पड़ी थी।

प्रबल कुतूहल के मारे, जिस पर उसका कोई बस न था, पावेल धीरे से वहीं छत पर से चेरी के पेड़ पर चढ़ गया और वहाँ से फिसलकर लेशचिन्स्की के बाग में उतर गया। झुके-झुके दौड़कर उसने बागीचे को पार किया और खिड़की से कमरे के अन्दर झाँका। उसके सामने मेज पर एक कमरबन्द शोल्डर-स्ट्रैप समेत पड़ा हुआ था और रिवाल्वर रखने का चमड़े का केस, जिसमें एक लाजवाब, बारह गोलियों वाला मानलिकर रिवाल्वर रखा हुआ था।

पावेल की तो जैसे साँस रुक गयी। कुछ सेकेंड तक उसके भीतर जबर्दस्त अन्तर्द्वन्द्व मचा रहा। मगर, आखीर में जीत साहसिकता की हुई और वह कमरे के अन्दर घुस गया। उसने रिवाल्वर का केस उठाया, उसमें से नीले-नीले लोहे का वह हथियार निकाला और खिड़की से नीचे कूद गया। अपने चारों तरफ तेजी से निगाहें दौड़ाते हुए उसने बहुत सावधानी से पिस्तौल अपनी जेब में

डाली और तेजी से भागकर बागीचे को पार करता हुआ चेरी के पेड़ के पास जा पहुँचा। बन्दर की-सी फुर्ती से वह छत पर चढ़ गया। वहाँ क्षण भर रुक कर उसने पीछे को देखा। अर्दली अब भी आनन्दपूर्वक साईस से बात कर रहा था। बागीचा खामोश और वीरान था। पावेल फिसलकर दूसरी ओर उतरा और घर की तरफ भाग चला।

उसकी माँ चौके में रात का खाना पकाने में तल्लीन थी। उसने पावेल की ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

पावेल ने एक बड़े ट्रंक के पीछे से झटपट एक चीथड़ा उठाया और उसे जेब में डालते हुए फिर से कमरे के बाहर निकल गया, इतने चुपके से कि उसकी माँ को भी उसकी आहट न मिली। वहाँ से उसने दौड़कर सहन को पार किया, बाड़ी को छलाँग लगायी और जंगल को जानेवाली सड़क पर आ निकला। भारी रिवाल्वर को हाथ से पकड़े हुए, ताकि वह जाँघ से न टकराये, वह पास के ही ईंट के भट्ठे के वीरान खंडहर की तरफ अपनी पूरी ताकत से भाग चला।

उसके पैर जैसे जमीन पर पड़ ही नहीं रहे थे और कानों में हवा सनसना रही थी।

पुराने भट्ठे के पास नीरव शान्ति थी। वह दृश्य मन को उदास करने वाला था। लकड़ी की छत जहाँ-तहाँ गिरी हुई थी, एक ईंट-गारे का पहाड़ खड़ा था और टूटी-फूटी भट्ठियाँ मुँह बाये थीं। उस जगह तमाम जंगली घास उगी हुई थी; वहाँ कोई कभी जाता न था, सिवा पावेल और उसके दो दोस्तों के जो कभी-कभी वहाँ खेलने पहुँच जाते थे। पावेल को ऐसी बहुत सी जगहें मालूम थीं जहाँ वह अपने इस चोरी के खजाने को छिपा सकता था।

एक भट्ठी में दरार थी। उसमें से वह ऊपर चढ़ा और आस-पास अपनी सतर्क आँखें दौड़ायीं। कोई दिखायी न दिया। केवल चीड़ के दरख्त हलकी-हलकी आहें भर रहे थे और धीमी-धीमी हवा सड़क पर धूल उड़ा रही थी। हवा चीड़ के गोंद की गंध से भारी थी।

पावेल ने चीथड़े में लिपटा हुआ रिवाल्वर भट्ठी के फर्श के कोने में रख दिया और उसे पुरानी ईंटों के एक छोटे से ढेर से ढक दिया। बाहर आते समय उसने उस पुरानी भट्ठी के दरवाजे को ईंटों से चुन दिया, उस जगह की ठीक स्थिति दिमाग में बिठा ली और धीरे-धीरे घर की ओर चल दिया। उस वक्त उसे अपने घुटने काँपते मालूम हो रहे थे।

'इस सब का अन्त क्या होगा?' — उसने सोचा और उसका हृदय आशंकाओं से भारी हो गया।

वह घर नहीं जाना चाहता था, इसलिए रोज से जल्दी ही बिजली घर के

लिए चल दिया। उसने चौकीदार से चाभी ली और बिजलीघर का विलश दरवाजा खोला। और जब कि वह राख के गड्ढे की सफाई कर रहा था, पम्प से ब्वायलर में पानी पहुँचा रहा था और आग सुलगा रहा था, उस तमाम वक्त उसका ध्यान इसी बात पर अटका हुआ था कि इस वक्त लेशचिन्स्की के यहाँ क्या हो रहा होगा।

उस वक्त करीब ग्यारह बजा था जब जुखराई आया और उसने पावेल को बाहर बुलाया।

'आज तुम्हारे यहाँ तलाशी क्यों हुई थी?' उसने धीमी आवाज में पूछा।

पावेल चौंक पड़ा।

'तलाशी?'

जुखराई ने जरा देर की चुप्पी के बाद फिर कहा, 'मुझे आसार अच्छे नहीं नजर आते। तुम्हें तो कुछ नहीं मालूम कि किस चीज की तलाशी लेने वे लोग आये थे?'

पावेल को अच्छी तरह मालूम था कि उन्हें किस चीज की तलाश थी, मगर वह रिवाल्वर की चोरी के बारे में जुखराई को कुछ नहीं बतलाना चाहता था। चिन्ता के मारे काँपते हुए उसने पूछा :

'उन्होंने आर्तेम को गिरफ्तार कर लिया क्या?'

'नहीं, कोई नहीं पकड़ा गया। मगर, उन्होंने घर की हर चीज उलट-पुलट कर रख दी।'

इससे पावेल के मन को कुछ ढाढ़स हुआ, मगर उसकी चिन्ता मिटी नहीं। कुछ देर वह और जुखराई दोनों अपने-अपने विचारों में डूबे खड़े रहे। उनमें से एक को मालूम था कि तलाशी क्यों हुई थी और वह परेशान था कि इसका जाने क्या नतीजा हो; दूसरे को यह बात नहीं मालूम थी और इसलिए वह चौकन्ना था।

जुखराई ने सोचा : 'नास हो हरामजादों का! लगता है उनको मेरा सुराग मिल गया। आर्तेम तो मेरे बारे में कुछ नहीं जानता, मगर फिर सबों ने उसके घर की तलाशी क्यों ली? जरा और सावधानी बरतनी होगी।'

तीन

तोनिया खुली हुई खिड़की के सामने खड़ी हो गयी और अपने विचारों में डूबे-डूबे उसने अपने परिचित बागीचे को देखा जिसके किनारे-किनारे मजबूत, दैत्यों जैसे ऊँचे पोपलर के दरख्त लगे हुए थे जो इस वक्त धीमी-धीमी हवा में हौले-हौले डोल रहे थे। उसको इस बात का यकीन नहीं आता था कि यह जगह छोड़े, जहाँ उसका बचपन बीता था। पूरा एक साल हो गया था। उसको लगता था जैसे वह कल गयी हो और आज ही सुबह की गाड़ी से लौट आयी हो।

कुछ भी नहीं बदला था : रसभरी की झाड़ियों की कतारें हमेशा की तरह आज भी बहुत सफाई से छँटी हुई थीं और बागीचे के रास्ते अब भी वैसे ही ज्यामिति के अनुसार बाकायदा ठीक-ठीक बने हुए थे और उनके किनारे-किनारे पैन्ज़ी की कतारें लगी हुई थीं जो कि उसकी माँ का बहुत प्यारा फूल था। बागीचे की हर चीज बहुत साफ-सुथरी और बाकायदा थी। हर चीज पर हर जगह वृक्ष-विज्ञान-वेत्ता के शास्त्रीय हाथ की छाप दिखायी देती थी। इन साफ-सुथरे बाकायदा झाड़ू-लगे रास्तों को देखकर तोनिया को बड़ी ऊब मालूम होती थी।

उसने वह उपन्यास उठा लिया जिसे वह पढ़ रही थी, बरामदे में जाने वाला दरवाजा खोला और सीढ़ियाँ उतर कर नीचे बागीचे में पहुँच गयी। लकड़ी के छोटे से रँगे हुए गेट को उसने धक्का देकर खोला और स्टेशन के पम्प हाउस से लगे हुए तालाब की ओर धीरे-धीरे चली।

पुल पार करके वह सड़क पर आ गयी जिसके दोनों ओर पेड़ों की कतारें थीं। उसके दाहिने हाथ पर था तालाब जिसके किनारे-किनारे विलो और ऐल्डर के दरख्त लगे हुए थे और बायें हाथ पर जंगल शुरू हो जाता था।

वह पुरानी पत्थर की खान के पास वाली तलैयों की ओर जा रही थी कि मछली पकड़ने की बंसी को पानी पर डूबते-उतराते देख कर रुक गयी।

एक टेढ़े-मेढ़े विलो के तने के सहारे बाहर को झुकते हुए उसने सामने की शाखों को हाथ से अलग किया और अपने सामने धूप में तपे हुए रंग के, नंगे पैर एक लड़के को देखा जिसने अपने पतलून की टाँगें घुटनों तक मोड़ रखी थी। उसके पास ही एक जंग लगा टीन का डिब्बा रखा था जिसमें मछली का चारा था। यह लड़का अपने काम में इतना डूबा हुआ था कि इस लड़की की ओर उसका ध्यान नहीं गया।

'तुम समझते हो कि यहाँ मछली पकड़ सकते हो ?'

पावेल ने पीछे मुड़ कर गुस्से में देखा।

विलो को पकड़े, पानी पर झुकी हुयी थी एक लड़की जिसे पावेल ने पहले कभी नहीं देखा था। वह मल्लाहों जैसा एक सफेद ब्लाउज पहने हुए थी जिसका कॉलर धारीदार नीला था और एक हलका भूरे रंग का छोटा सा स्कर्ट पहने थी। छोटे-छोटे मोजे, जो सिरों पर रंगीन थे, उसकी खूबसूरत, धूप में तपे हुए रंग की टाँगों पर चिपके हुए थे। उसके सुनहरे बाल मोटी वेणी में गुँथे हुए थे।

बंसी को पकड़े हुए हाथ हलके से काँप गये। बंसी भी काँप गयी और शान्त पानी की सतह पर गोल-गोल घेरे फैल गये।

'देखो-देखो, मछली ने चारा चुगा !' पावेल के पीछे उस आवाज ने आवेश के साथ कहा।

अब वह अपने मन का संतुलन बिल्कुल खो बैठा और उसने इतने जोर से बंसी खींची कि चारा-लगा काँटा पानी में से उछलकर बाहर आ गया।

'जहन्नुम में जाय, कोई उम्मीद नहीं है मछली पाने की। यह लड़की यहाँ क्या करने आयी है,' पावेल ने खीझ के साथ सोचा और अपने फूहड़पन को ढँकने के लिए उसने बंसी के काँटे को और भी दूर फेंका। मगर वह गिरा ठीक वहाँ जहाँ उसे न गिरना चाहिए था, यानी सेवार की दो घनी झाड़ियों के बीच, जहाँ बंसी का फँस जाना लाजिमी था।

उसकी समझ में आ गया कि क्या बात हो गयी है और बिना पीछे मुड़े हुए उसने वहाँ ऊपर बैठी हुई उस लड़की से गुस्से में दाँत पीसते हुए कहा :

'तुमसे चुप नहीं बैठा जाता ? इस तरह तो तुम सब मछलियों को भगा दोगी।'

ऊपर से उसकी व्यंगपूर्ण आवाज आयी :

'तुम्हारी काली शकल देख कर तो मछलियाँ कब की भाग गयी हैं ! इस तीसरे पहर भला कभी कोई अच्छे घर का आदमी मछली पकड़ने निकलता है !'

पावेल अब तक तो पूरी नम्रता बरतने की कोशिश कर रहा था, मगर

यह चीज उसकी बरदाश्त के बाहर थी। वह उठा और उसने अपनी टोपी आँख के ऊपर तक खींच ली, जैसा कि वह हमेशा उत्तेजित होने पर किया करता था।

'बहुत अच्छा हो देवी जी अगर आप यहाँ से अपना रास्ता नापें,' वह दाँत दबाये-दबाये बोला। स्पष्ट ही उसने अपनी शब्दावली के सभ्यतम शब्दों का इस्तेमाल किया।

तोनिया की आँखें जरा छोटी हो गयीं और उनमें हँसी नाचने लगी।

'मैं क्या सचमुच तुम्हारे काम में बाधा पहुँचा रही हूँ ?'

चिढ़ाने का स्वर अब मैत्री और समझौते के स्वर में बदल गया और पावेल जो इन 'देवी जी' के संग, जो न जाने कहाँ से टपक पड़ी थीं, सचमुच रुखाई से पेश आने की सोच रहा था, अब अपने को निरस्त्र होता महसूस कर रहा था।

'तुम चाहो तो रहो और देखो। मेरे लिए सब बराबर है,' उसने अनिच्छापूर्वक कहा और फिर अपनी बंसी में दत्तचित्त हो गया। बंसी सेवार में फँस गयी थी और इसमें शक नहीं कि उसका काँटा सेवार की जड़ों में उलझ गया था। पावेल को बंसी खींचते डर लगता था। अगर कहीं और फँस गयी तो छुड़ाना नामुमकिन हो जायगा। और फिर यह लड़की तो हँसेगी ही। उसकी इच्छा यही थी कि वह चली जाय।

मगर तोनिया तो पानी में हलके-हलके लहराते हुए विलो के तने पर और भी आराम के साथ बैठ गयी थी और अपनी किताब घुटनों पर रख कर इस धूप में तपे हुए रंग के, काली-काली आँख वाले उजड्ड-से किशोर को देख रही थी जिसने उसका ऐसा अजीब-सा रूखा स्वागत किया था और अब जान-बूझकर उसकी उपेक्षा कर रहा था।

पावेल तालाब के दरपन जैसे स्वच्छ पानी में लड़की की छाया साफ-साफ देख रहा था और जब उसे लगा कि वह लड़की अपनी किताब में काफी डूबी हुई है, तो उसने बहुत सावधानी से उलझी हुई बंसी को खींचा। बंसी डूब गयी और उसकी डोरी और भी तन गयी।

'फँस गयी, हरामजादी !' बिजली की तरह यह बात उसके मन में आ कौंधी और तभी उसने कनखियों से उस लड़की के हँसते हुए चेहरे को देखा जो पानी के अन्दर से उसकी ओर ताक रही थी।

उसी वक्त दो लड़के, जो स्कूल में सातवीं जमात में पढ़ते थे, पुल पार करके पम्प हाउस आ रहे थे। उनमें से एक था रेलवे यार्ड के बड़े साहब, इंजीनियर सुखार्को, का सत्रह साल का लड़का। उसके बाल सुनहरे थे और उसकी शक्ल आवारों जैसी थी। उसके चेहरे पर तमाम भूरे-भूरे दाग थे

जिनके कारण उसके स्कूल के साथियों ने उसे 'चेचकरू शुर्का' का नाम दे रखा था। वह एक बड़ी खूबसूरत-सी बंसी लिये था और उसके मुँह के एक कोने में सिगरेट दबी हुई थी। उसके साथ था विक्टर लेशचिन्स्की, जो एक लम्बा सा जनानी-सी शक्ल का लड़का था।

अपने साथी की तरफ झुकते हुए सुखार्को बहुत मानीखेज अन्दाज में उसे आँख मार रहा था, 'यह लड़की तो सचमुच पटाखा है, इसका यहाँ पर जवाब नहीं। मैं तुमसे कहता हूँ कि इसके इश्कों की कोई इन्तहा नहीं। मेरी बात का यकीन करो। वह छठी जमात में पढ़ती है और किएफ के स्कूल में जाती है। आजकल वह गर्मियाँ बिताने अपने बाप के पास आयी है — उसका बाप जंगलात का बड़ा हाकिम है। मेरी बहन लिजा इस लड़की को जानती है। एक बार मैंने उसे बहुत भावुक-सा पत्र भी लिखा था। तुम तो जानते ही हो, वही सब बातें, मुझे तुमसे बेहद प्यार हो गया है और मैं धड़कते हुए दिल से तुम्हारे जवाब का इन्तजार करूँगा!'

'सो तो ठीक, मगर नतीजा क्या निकला?' विक्टर ने कुतूहल से पूछा।

सुखार्को ने झेंप-सी मिटाते हुए धीरे-धीरे बुदबुदाकर कहा, 'अरे क्या पूछते हो, बहुत लगाती है अपने आपको! मुझसे कहने लगी, क्यों खामखा चिट्ठी लिख कर कागज बरबाद करते हो, और भी इसी तरह की बातें। मगर वह तो होता ही है हमेशा शुरू-शुरू में। इस मामले में मैं पुराना घाघ हूँ। और सच बात तो यह है कि मुझे यह सब आशिकी-माशूकी वाली बकवास पसन्द नहीं है—सदियों तक आहें भर रहे हैं, पागलों को तरह घूम रहे हैं। इससे कहीं आसान यह है कि किसी शाम को उठो और मरम्मत करनेवालों के बारकों तक चले जाओ। वहाँ तीन रूबल में तुम्हें ऐसी हसीना मिल जायगी कि देख-कर मुँह में पानी भर आयेगा। और न झंझट, न खिटखिट। मैं वालका तिखोनोव के संग जाया करता था — तुम जानते हो वालका तिखोनोव को? रेलवे में फोरमैन है।'

नफरत से विक्टर का मुँह बिगड़ गया।

उसने कहा, 'सच शुरा, तुम ऐसी गन्दी जगहों में भी जाते हो?'

शुरा सिगरेट चबाता रहा, फिर उसने थूका और मजाक उड़ाने के अन्दाज में कुछ बोलना चाहा :

विक्टर ने उसकी बात काटते हुए कहा :

'तुम अपनी इस सुन्दरी से मेरा परिचय नहीं कराओगे?'

'वाह, यह भी कोई पूछने की बात है। चलो जल्दी चलें, नहीं तो वह हमें बुत्ता देकर निकल जायगी। कल सबेरे वह अकेले ही मछली पकड़ने गयी थी।'

दोनों दोस्त तोनिया के पास पहुँचे तो सुखार्को ने अपने मुँह से सिगरेट

निकाल ली और बड़े बाँके अन्दाज में झुक कर उसका अभिवादन किया।

'कहिए कुमारी तुमानोवा, कैसे मिजाज हैं ? आप भी मछली पकड़ने आयी हैं क्या ?'

तोनिया ने जवाब दिया — 'नहीं, मैं तो सिर्फ देख रही हूँ।'

सुखार्को ने विक्टर की बाँह पकड़ कर उसे आगे करते हुए जल्दी से कहा, 'आपकी इनसे मुलाकात है ? मिलिये, ये हैं मेरे दोस्त विक्टर लेशचिन्स्की।'

विक्टर ने कुछ अचकचाते हुए तोनिया की तरफ हाथ बढ़ाया।

'क्यों आज आप क्यों नहीं मछली पकड़ रही हैं ?' सुखार्को ने बातचीत जारी रखने के खयाल से कहा।

तोनिया ने जवाब दिया, 'मैं अपनी बंसी लाना भूल गयी।'

'तो मैं अभी आप के लिए दूसरी लिये आता हूँ। तब तक के लिए आप यह मेरी बंसी ले लीजिये। मैं अभी एक मिनट में लौट आता हूँ,' सुखार्को ने कहा।

विक्टर से उसने वादा किया था कि उस लड़की से मिला देगा। अपना वादा उसने पूरा कर दिया था और अब दोनों को संग-संग अकेला छोड़ना चाहता था।

तोनिया ने कहा, 'नहीं, कोई जरूरत नहीं, मैं नहीं चाहती। मैं खामखा दूसरे का काम बिगाड़ना नहीं चाहती। देखते नहीं, कोई यहाँ पहले से बैठा मछली पकड़ रहा है !'

सुखार्को ने पूछा, 'कौन ? ओह, आपका मतलब उससे है।' पहली बार उसने पावेल को देखा जो एक झाड़ी तले बैठा था। उसको देखकर सुखार्को ने कहा, 'उँह, उसकी चिन्ता आप न करें, उसको तो मैंने जहाँ दो बार पकड़ कर हिलाया कि वह यहाँ से चलता बनेगा।'

इसके पहिले कि तोनिया उसको रोक सके या कुछ कह सके, वह तेजी से पावेल के पास पहुँचा जहाँ वह बंसी लगाये बैठा था।

सुखार्को ने आदेश के स्वर में पावेल से कहा, 'देखो अपनी बंसी-वंसी समेटो और यहाँ से चलते बनो।'

पावेल पर कोई असर न होता देख कर, क्योंकि पावेल पूर्ववत् बैठा हुआ मछली पकड़ता रहा, सुखार्को ने दुबारा कहा, 'जल्दी करो ...'

पावेल ने आँख ऊपर उठायी और सुखार्को को गुस्से से देखा।

'चुप रहो ! क्या बकबक लगा रखी है !'

यह सुनकर सुखार्को फट पड़ा, 'क्या ! तेरी यह मजाल कि जबान लड़ाता है, बदमाश आवारा कहीं का ! चलो भागो यहाँ से,' यह कहते हुए उसने जोर से उस टीन के डिब्बे में लात मारी जिसमें मछली का चारा रखा हुआ

था। डिब्बा हवा में चक्कर खाता हुआ जाकर तालाब में गिरा जिससे पानी उछलकर तोनिया के चेहरे पर आया।

वह चिल्लायी, 'तुम्हें शर्म आनी चाहिये, सुखार्को !'

पावेल उछलकर खड़ा हो गया। उसे मालूम था कि जहाँ आर्तेम काम करता है, उसी रेलवे यार्ड के बड़े साहब का बेटा है सुखार्को और अगर पावेल ने उसके उस मोटे थुलथुल चूहे जैसे मुँह पर घूँसा मारा तो वह अपने बाप से जाकर शिकायत कर देगा और आर्तेम की मुसीबत होगी। इसी ख्याल ने उसको तुरत-फुरत वहीं मामला तय-तमाम कर डालने से रोका।

सुखार्को को यह अन्दाजा हुआ कि अगले ही क्षण पावेल उस पर वार कर देगा। यह ख्याल करके वह तेजी से आगे बढ़ा और दोनों हाथों से उसने पावेल के सीने में धक्का दिया। पावेल तालाब के किनारे खड़ा था, करीब था कि वह पानी में गिर जाता मगर बड़ी मुश्किल से हाथ हिला कर अपने शरीर को संभालते हुए उसने जैसे-तैसे अपने को पानी में गिरने से रोका।

सुखार्को पावेल से दो साल बड़ा था और गुंडा मशहूर था।

पावेल के सीने में धक्का लगा तो उसकी आँखों में खून उतर आया।

'अच्छा तो तुम यों नहीं मानोगे ! लो फिर !' कहते हुए उसने हाथ घुमाकर एक जोर कर घूँसा सुखार्को के मुँह पर मारा और इसके पहले कि सुखार्को अपने आपको सँभाल सके, पावेल ने मजबूत हाथों से उसका वर्दी का ब्लाउज पकड़ा और खींचता हुआ उसे पानी में ले गया।

ताल में घुटनों तक पानी में वह खड़ा था और उसके पालिश किये हुए जूते और पतलून भीगकर भारी हो रहे थें। सुखार्को ने पावेल की मजबूत पकड़ से अपने आपको छुड़ाने के लिए पूरी कोशिश की। अपने मन की बात कर चुकने पर पावेल कूदकर किनारे पर आ गया। गुस्से से लाल हो रहा सुखार्को उसके पीछे दौड़ा, ऐसा लगता था कि वह पावेल की बोटी-बोटी अलग कर देगा।

अपने दुश्मन का मुकाबला करने के लिए जब पावेल घूमा तो उसे याद आया :

'अपना सारा वजन बायें पैर पर दो और दायाँ पैर कड़ा रखो, दायें पैर का घुटना मुड़ा हो। अपने जिस्म का सारा वजन अपने घूँसे में डालो और ठुड्डी के सिरे पर ऐसा घूँसा मारो जो बिछलता हुआ ऊपर को निकल जाय।'

'कटाक !'

दाँतों के आपस में टकराने की आवाज हुई। फिर उस भयानक दर्द से चिल्लाते हुए, जो उसकी ठुड्डी और दाँतों के बीच दब गयी जीभ में फैल गया था, सुखार्को हाथ फैलाये लड़खड़ाता हुआ वापिस उसी पानी में गिर गया और

जोर का छपाका हुआ।

ऊपर वहाँ किनारे पर तोनिया हँसी के मारे दुहरी हुई जा रही थी।

ताली बजाती हुई चिल्लायी, 'खूब खूब ! खूब किया, हो बहादुर !'

पावेल ने अपनी फँसी हुई बंसी को इतने जोर से खींचा कि वह टूट गयी और भीटे को चढ़कर पार करते हुए वह सड़क पर आ गया।

जाते-जाते उसने विक्टर को तोनिया से कहते हुए सुना, 'यही पावेल कोर्चागिन है, अव्वल नम्बर का बदमाश।'

स्टेशन पर परिस्थिति गंभीर होती जा रही थी। हवा में खबर गर्म थी कि रेलवे मजदूर हड़ताल करने जा रहे हैं। अगले बड़े स्टेशन के यार्ड के मजदूरों ने कोई बड़ी चीज शुरू कर दी थी। जर्मनों ने दो इंजन ड्राइवरों को पकड़ लिया था जिन पर उन्हें शक था कि वे कोई इश्तिहार लिये जा रहे हैं। और उन मजदूरों में भी, जिनका गाँव से सम्बंध था, बड़ी खलबली थी, क्योंकि वसूली की जा रही थी और जागीरदारों को उनकी जागीरें वापिस दी जा रही थीं।

हेटमैन के सन्तरियों के कोड़ों से किसानों की पीठें लहूलुहान हो रही थीं। इस इलाके में छापेमार आन्दोलन बढ़ रहा था; बोल्शेविकों ने अब तक लगभग एक दर्जन छापेमार टुकड़ियाँ संगठित कर ली थीं।

इन दिनों जुखराई के लिए आराम नहीं था। इस शहर में रहते हुए इतने दिनों में उसने बहुत कुछ कर डाला था। उसने बहुत से रेलवे मजदूरों से परिचय किया था, नौजवानों की गोष्ठियों में गया था और रेलवे यार्ड के मैकेनिकों और लकड़ी काटने वाले मजदूरों के बीच एक बहुत मजबूत दल बना लिया था। उसने यह पता लगाने की कोशिश की कि आर्तेम की ठीक स्थिति क्या है और इस सिलसिले में उसने एक बार आर्तेम से पूछा कि बोल्शेविक पार्टी और उसके लक्ष्य के बारे में उसका क्या ख्याल है।

उस तगड़े भारी-भरकम मैकेनिक ने जवाब दिया, 'देखो फियोदोर, मैं यह सब पार्टी-वार्टी ज्यादा नहीं समझता। लेकिन हाँ, अगर तुम्हें मदद की जरूरत हो तो तुम मुझ पर भरोसा कर सकते हो।'

फियोदोर को इससे सन्तोष हो गया, क्योंकि वह जानता था कि आर्तेम सही धात का बना हुआ आदमी है और अपने कौल को पूरा करेगा। जहाँ तक पार्टी का ताल्लुक है, अभी वह इसके लिए तैयार न था। 'मगर कोई बात नहीं,' जुखराई ने सोचा, 'यह जमाना ही ऐसा तूफानी है कि सारी बातें जल्द ही उसकी समझ में आ जायेंगी।'

फियोदोर बिजली घर छोड़कर रेलवे यार्ड में एक नौकरी पर लग गया। रेलवे यार्ड उसने इसलिए ज्यादा पसन्द किया कि वहाँ अपना काम करना

ज्यादा आसान था। बिजलीघर में वह रेलवेवालों से कट गया था।

रेलवे पर आमदरफ्त बहुत ही ज्यादा थी। जर्मन, लूट की हजारों गाड़ियाँ जौ, गेहूँ, मवेशी वगैरह उक्रेन से जर्मनी भेज रहे थे...

एक दिन हेटमैन के सन्तरियों ने स्टेशन के तारघर के पोनोमारेंको को पकड़ लिया। यह बहुत अप्रत्याशित आघात था। उसे चौकी पर ले जाकर बहुत बेदर्दी से पीटा गया। जाहिर है कि उसी ने आर्तेम के मित्र और सहयोगी रोमान सिदोरेंको का नाम बतला दिया।

दो जर्मन और एक हेटमैन का सन्तरी, स्टेशन कमांडैण्ट का सहायक, काम के घंटों में रोमान को पकड़ने के लिए आये। बिना एक शब्द बोले सहायक कमांडैण्ट उस बेंच के पास गया जहाँ रोमान काम कर रहा था और उसने अपनी चाबुक से उसके चेहरे पर चोट की और चाबुक समूचे चेहरे पर एक लकीर बनाती निकल गयी।

उसने कहा, 'जरा हमारे साथ चलो, सुअर का बच्चा कहीं का ! हमें तुमसे कुछ जरूरी बातें करनी हैं।' चेहरे पर बड़ा क्रूर दुष्ट-भाव लिये उसने उस मैकेनिक की बाँह पकड़ी और बड़े जोर से उसे मरोड़ा। 'चलो हम जरा तुम्हें सिखलायें कि कैसे प्रचार किया जाता है, कैसे घूम-घूमकर लोगों को भड़काया जाता है !'

आर्तेम ने, जो रोमान के पास ही खड़ा काम कर रहा था, अपने हाथ की रेती वहीं डाल दी और सहायक कमांडैण्ट के पास आया। उस वक्त उसका विशाल आकार बहुत भयानक दिखायी दे रहा था, जैसे वह कुछ भी कर डालने पर आमादा हो।

आर्तेम ने अपने चढ़ते हुए गुस्से को भरसक संयत करते हुए अपनी भारी फटी हुई आवाज में कहा, 'अबे हरामी के पिल्ले ! अपनी खैरियत चाहता हो तो अब उस पर हाथ न चलाना।'

सहायक कमांडैण्ट पीछे हटा और हटते हुए वह अपना रिवाल्वर रखने का केस खोलने लगा। एक चौड़े-चकले गठीले बदन के जर्मन ने अपने कंधे पर से वह चौड़ी संगीन-लगी भारी राइफिल उतार ली और झट से उसका बोल्ट चढ़ाया और चीखा :

'हॉल्ट !' जाहिर था कि दूसरे आदमी के हिलते ही वह गोली मार देगा।

उस जरा से सिपाही के आगे वह ऊँचा, तगड़ा मैकेनिक असहाय खड़ा था और कुछ नहीं कर सकता था।

रोमान ओर आर्तेम दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया। आर्तेम को घंटे

भर बाद छोड़ दिया गया, मगर रोमान को वहीं एक मालगोदाम में बन्द कर दिया गया।

गिरफ्तारी के दस मिनट बाद एक भी आदमी काम पर नहीं रह गया था। डिपो के मजदूर स्टेशन के पार्क में इकट्ठे हुए और वहीं पर स्विचमैन और सप्लाई गोदाम में काम करनेवाले लोग उनसे आ मिले। लोगों में बड़ा आवेश था और किसी ने रोमान और पोनोमारेंको की रिहाई के लिए एक लिखित माँग का मसविदा तैयार किया।

मजदूरों में गुस्सा और भी बढ़ा जब सहायक कमांडैण्ट सन्तरियों की एक टुकड़ी लेकर, रिवाल्वर चमकाता हुआ पार्क में आया और चिल्लाया :

'सब लोग काम पर वापस जाओ, नहीं तो हम यहीं एक-एक को गिरफ्तार कर लेंगे ! और तुम में से कुछ को गोली मार देंगे।'

गुस्से में भरे हुए मजदूरों ने एक जबर्दस्त हुंकार से उसका जवाब दिया जिसे सुनकर वह स्टेशन की ओर भागा। मगर इसी बीच स्टेशन कमांडैण्ट ने शहर से जर्मन सिपाही बुला लिये थे और उनके ट्रक-के-ट्रक स्टेशन की सड़क पर तेजी से चले आ रहे थे।

मजदूर तितर-बितर हो गये और अपने-अपने घरों की ओर तेजी से चल दिये और एक भी आदमी काम पर नहीं रहा, यहाँ तक कि स्टेशन मास्टर भी नहीं। जुखराई का काम अब अपना असर दिखला रहा था। यह पहला मौका था जब स्टेशन के मजदूरों ने कोई सामूहिक कदम उठाया था।

जर्मनों ने प्लेटफार्म पर एक भारी मशीनगन खड़ी कर दी, वैसे ही जैसे शिकार का पता लगाकर शिकारी कुत्ता खड़ा हो जाता है। मशीनगन के पास ही एक जर्मन कार्पोरल राइफिल के घोड़े पर हाथ रखे बैठ गया।

स्टेशन वीरान हो गया।

रात को गिरफ्तारियाँ शुरू हुईं। पकड़े जानेवालों में आर्तेम भी था। जुखराई बच गया क्योंकि रात को वह घर नहीं गया था।

सभी गिरफ्तार आदमियों को भेड़-बकरियों की तरह मालगोदाम के एक विशाल शेड के नीचे इकट्ठा किया गया और उनसे कहा गया कि या तो काम पर वापस जाओ या कोर्ट-मॉर्शल का सामना करो।

सारी लाइन के लगभग सभी रेलवे मजदूर हड़ताल पर थे। एक दिन और एक रात, एक भी गाड़ी नहीं गुजरी और यह भी पता चला कि वहाँ से करीब अस्सी मील की दूरी पर एक बड़ी छापेमार टुकड़ी से लड़ाई चल रही थी जिसने रेलवे लाइन काट दी थी और पुलों को उड़ा दिया था।

रात को जर्मन सिपाहियों की एक गाड़ी स्टेशन पर आयी मगर और आगे नहीं जा सकी क्योंकि इंजन ड्राइवर, उसके मददगार और फायरमैन तीनों

इंजन छोड़कर गायब हो गये थे। दो और गाड़ियाँ आगे जाने के इन्तजार में स्टेशन की साइडिंग पर खड़ी थीं।

मालगोदाम के शेड का भारी दरवाजा खुला और स्टेशन कमांडैण्ट, एक जर्मन लेफ्टिनैण्ट, उसका सहायक और कुछ और जर्मनों की एक टोली अन्दर दाखिल हुई।

'कोर्चागिन, पोलेनताव्स्की, ब्रुजाक,' कमांडैण्ट के सहायक ने नाम पढ़कर सुनाते हुए कहा, 'तुम्हें आदेश दिया जाता है कि तुम इंजन चलानेवालों का काम करोगे और फौरन एक गाड़ी लेकर चले जाओगे। इनकार करने पर तुम्हें यहीं गोली मार दी जायगी। बोलो, तुम्हें क्या कहना है?'

तीनों मजदूरों ने गुस्से से अन्दर ही अन्दर घुटते हुए सिर हिलाकर अपनी स्वीकृति दी। उन्हें सन्तरियों के पहरे में इंजन तक ले जाया गया और कमांडैण्ट का सहायक अगली गाड़ी के लिए ड्राइवर, उसके मददगार और फायरमैन का नाम पढ़ने लगा।

इंजन ने गुस्से से फुफकार छोड़ी और चिनगारियों का एक फव्वारा-सा ऊपर उठा। भारी-भारी साँस लेता हुआ इंजन रात की गहराइयों में रेलवे लाइन को रौंदता हुआ अँधेरे में आगे बढ़ चला। आर्तेम ने फायर-बाक्स में अभी-अभी कोयला झोंका था। कोयला डालकर उसने उसके दरवाजे को बन्द किया, औजारों के बक्स पर रखे हुए चपटी टोंटी के टी-पॉट से एक घूँट पानी पिया और बुड्ढे इंजन ड्राइवर पोलेनताव्स्की की ओर मुड़ा।

'तो क्यों काका, अब हम लोग इसे ले ही जायेंगे क्या?'

पोलेनताव्स्की ने अपनी घनी पलकों के नीचे अपनी आँखें कुछ खीझ और चिड़चिड़ेपन से मुलमुलायीं।

'और करोगे क्या जब पीठ से संगीन लगी हो!'

ब्रुजाक ने इंजन से लगे हुए कोयले के डिब्बे पर बैठे हुए जर्मन सिपाही को कनखियों से देखते हुए सुझाव दिया, 'हम क्यों न सब कुछ ऐसे ही छोड़कर भाग चलें?'

आर्तेम बुदबुदाया 'मैं भी ऐसा ही सोचता हूँ, मगर मुझे डर बस उस पीठ से लगी संगीन का है।'

'वह तो है,' ब्रुजाक ने खिड़की में से सिर निकालते हुए अनिश्चयपूर्ण ढंग से कहा।

पोलेनताव्स्की आर्तेम के और पास आ गया और फुसफुसाकर बोला, 'गाड़ी लेकर हम नहीं जा सकते, समझते हो न? वहाँ आगे लड़ाई हो रही है। हमारे आदमियों ने रेलवे लाइन उड़ा दी है। और हमको देखो, हम इन सुअर के बच्चों को लेकर जा रहे हैं ताकि वे हमारे आदमियों को गोली से भून दें—

नहीं, यह नहीं हो सकता। सच कहता हूँ बेटा, जार के दिनों में भी मैंने हड़ताल के वक्त इंजन नहीं चलाया था और अब भी नहीं चलाऊँगा, यह मेरा निश्चय है। अगर हम अपने ही लोगों की तबाही का कारण बनें, तो यह एक ऐसा कलंक का टीका होगा जो सारी जिन्दगी नहीं छूटेगा। इंजन चलानेवाले दूसरे लोग भाग गये कि नहीं ? जान का खतरा उनको भी था, मगर तब भी उन्होंने ऐसा किया। हम हरगिज गाड़ी लेकर आगे नहीं जायेंगे। क्यों तुम्हारा क्या ख्याल है ?'

'बात तो तुम ठीक कहते हो काका, मगर उस आदमी का क्या करोंगे !' कहते हुए उसने आँख से उस सिपाही की ओर इशारा किया।

इंजन ड्राइवर का चेहरा चिन्ता से स्याह और भारी हो गया। मुट्ठी भर रद्दी कपड़ा लेकर अपने माथे का पसीना पोंछा और लाल-लाल आँखों से प्रेशर-गेज को घूरा जैसे वहीं उसको उस सवाल का जवाब मिल जायगा जो उसे तंग कर रहा था। फिर गुस्से और मायूसी की हालत में वह कुछ बकने लगा।

आर्तेम ने दुबारा टी-पॉट से पानी पिया। दोनों आदमी एक ही चीज के बारे में सोच रहे थे। मगर कोई उस कठिन चुप्पी को तोड़ने का साहस अपने में नहीं पा रहा था। आर्तेम को जुखराई की बात का ख्याल आया : क्यों भाई, बोल्शेविक पार्टी और कम्युनिस्ट विचार-धारा के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है ! और फिर उसे अपने जवाब का ख्याल आया : 'मैं हमेशा मदद के लिए तैयार हूँ, तुम मुझ पर भरोसा कर सकते हो...'

उसने सोचा, 'क्या खूब मदद...अपने ही लोगों को दबाने के लिए जर्मनों की फौज को ड्राइव करके ले जा रहे हैं...'

पोलेनताव्स्की आर्तेम के करीब रखे हुए औजारों के बक्स के ऊपर इस वक्त झुका हुआ था। उसने भारी आवाज में कहा :

'उस आदमी को देखते हो न, उसका तो काम तमाम करना ही होगा, समझे ?'

आर्तेम चौंक गया। पोलेनताव्स्की ने दाँत पर दाँत जमाये इतना और कहा :

'दूसरा कोई रास्ता नहीं है। यह तो हमें करना ही होगा। हम उसके सिर पर भरपूर वार करके उसको लिटा देंगे और चोक और लिवर को उठा कर फायर-बाक्स में झोंक देंगे और भाग निकलेंगे।''

आर्तेम को ऐसा लगा कि जैसे उसके कंधे से बोझ हट गया हो और वह हल्का हो गया हो। उसने कहा :

'ठीक।'

ब्रुजाक की ओर झुकते हुए आर्तेम ने उसे यह निश्चय बतलाया।

ब्रुजाक ने फौरन जवाब नहीं दिया। ये सभी लोग भारी खतरा उठा रहे हैं। सबके अपने-अपने परिवार थे जिनकी उन्हें चिन्ता करनी थी। पोलेनताव्स्की का कुनबा तो सबसे बड़ा था : उसके घर में नौ प्राणी थे जिनके लिए उसे आहार जुटाना पड़ता था। मगर इस सबके बाद भी उन तीनों को यह बात अच्छी तरह पता थी कि वे किसी सूरत से गाड़ी को अपनी मंजिल तक नहीं ले जा सकते।

ब्रुजाक ने कहा 'मैं भी तुम्हारे साथ हूँ। मगर उसको कौन...' उसने अपना वाक्य पूरा नहीं किया मगर उसका मतलब आर्तेम के लिए बिल्कुल साफ था।

आर्तेम पोलेनताव्स्की की ओर मुड़ा जो इस समय चोक के साथ कुछ कर रहा था। आर्तेम ने उसको जैसे यह बताने के लिए कि ब्रुजाक भी उनसे सहमत है, अपना सिर हिलाया। मगर एक सवाल अब तक तय नहीं हो सका था और आर्तेम को बहुत परेशान कर रहा था। उसी के सम्बंध में जानने को वह उस बुड्ढे के और पास पहुँचा और पूछा :

'मगर कैसे ?'

पोलेनताव्स्की ने आर्तेम की ओर निहारा।

'तुम शुरू करो, तुम्हीं सबसे मजबूत हो। हम इस लोहे के डंडे से उसे ढेर कर देंगे और बस फिर काम तमाम समझो।' वह बुड्ढा बहुत उद्विग्न हो रहा था।

आर्तेम के माथे पर बल पड़ गये और वह किसी गहरे सोच में डूब गया।

'नहीं, नहीं मुझसे यह न होगा। जरा सोचो न, उस आदमी का भी भला क्या दोष है। उसे भी तो संगीन की नोक पर मजबूर किया गया है इस काम के लिए।'

पोलेनताव्स्की की आँखें अंगारों की तरह चमकने लगीं।

'तुम कहते हो कोई दोष नहीं ? तब फिर हम जो यह काम करने जा रहे हैं, हमारा भी इसमें दोष नहीं। मगर एक चीज मत भूलो कि जिस फौजी टुकड़ी को हम लोग ले जा रहे हैं, वह सजा देने के लिए भेजी जा रही है। तुम्हारे ये भोले-भाले लोग छापेमारों को गोलियों से भूनेंगे। तब फिर दोष क्या इसमें छापेमारों का है ? नहीं भाई नहीं, तुम्हारे शरीर में ताकत भले साँड की हो, लेकिन अकल जरा कम ही है...'

आर्तेम ने फटी हुई आवाज में कहा, 'ठीक, ठीक।' उसने लोहे का डंडा उठा लिया मगर पोलेनताव्स्की ने उसके कान में धीरे से कहा :

'यह काम मैं करूँगा, ज्यादा ठीक रहेगा। तुम फावड़ा उठा लो और इंजन से लगी हुई गाड़ी में से कोयला नीचे देने के लिए उस पर चढ़ जाओ।

जरूरी समझना तो उसी फावड़े से तुम भी एक हाथ लगा देना। मैं ऐसा दिखलाऊँगा कि जैसे कोयले के ढेर को हलका कर रहा हूँ।'

ब्रुजाक ने इस बातचीत को सुना और सिर हिलाया। 'बुढ़ऊ ठीक कहते हैं,' उसने कहा और चोक के पास जाकर खड़ा हो गया।

वह जर्मन सिपाही अपनी टोपी लगाये, जिसके चारों तरफ लाल-लाल फीता लगा था, उस इंजन के पासवाले डब्बे के सिरे पर बैठा था। उसकी राइफिल उसके पैरों के बीच पड़ी हुई थी और वह सिगार पी रहा था। बीच-बीच में वह इन इंजन चलानेवालों पर निगाह डाल लेता था।

जब आर्तेम उस डिब्बे पर चढ़ा तो सन्तरी ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया। और जब पोलेनताव्स्की ने इस बहाने से कि वह डब्बे के उस सिरे पर रखे हुए कोयले के बड़े-बड़े ढोंकों के पास पहुँचना चाहता है, सिपाही को रास्ते से हटने के लिए इशारा किया तो सिपाही फौरन इंजन के डब्बे में जानेवाले दरवाजे की ओर हट गया।

लोहे के डंडे से उस जर्मन की खोपड़ी चूर होने की अचानक आवाज आयी तो आर्तेम और ब्रुजाक ऐसे उछल गये जैसे किसी ने उन्हें लाल-लाल लोहे से दाग दिया हो। जर्मन सिपाही का शरीर बेजान होकर इंजन के केबिन और कोयले के डब्बे के बीच के रास्ते में पड़ा था।

खून तेजी से उसकी भूरे रंग की ऊनी टोपी में से होकर चूने लगा था और उसकी राइफिल डब्बे की दीवार से टकराकर बज रही थी।

पोलेनताव्स्की ने लोहे का डंडा फेंकते हुए धीरे से कहा, 'काम तमाम!' और फिर जोड़ा, 'अब हमारे लिए लौटने की राह नहीं है।' उसका चेहरे की नसें तन गयी थीं।

उसकी आवाज भर्रा गयी। मगर फिर उस भारी निस्तब्धता को, जो उन तीनों आदमियों पर छा गयी थी, चीरने के लिए एक बार फिर एक चीख के रूप में उठी।

वह चिल्लाया, 'चोक का पेंच ढीला करो, जल्दी-जल्दी!'

दस मिनट में सारा काम हो गया। इंजन के सारे कल-पुर्जे ढीले कर दिये गये थे, और उसकी रफ्तार धीमी होती जा रही थी।

इंजन के आस-पास रोशनी का जो घेरा था, उसमें रेलवे लाइन के किनारे खड़े हुए पेड़ों की काली-काली, कुछ सोचती हुई-सी आकृतियाँ जैसे आगे बढ़ आती थीं मगर फिर पीछे हटकर उस अभेद्य अंधकार में खो जाती थीं। इंजन की हेडलाइट अपने दस गज आगे भी रात की मोटी चादर चीर नहीं पाती थी और धीरे-धीरे उसका वह भारी-भारी साँस लेना कम होता जा रहा था, जैसे उसने अपनी ताकत का आखिरी अणु भी खर्च कर डाला हो।

'कूदो, बेटा !' आर्तेम ने पीछे से पोलेनताव्स्की की आवाज सुनी और हैंडिल छोड़ दिया। गाड़ी की उस तेज रफ्तार में उसका वह तगड़ा शरीर किसी पत्थर की तरह नीचे गिरने लगा, मगर उसके पैर तभी एक धक्के के साथ जमीन पर लगे। वह एक-दो कदम दौड़ा और फिर इतने जोर से गिरा कि गुलाँट खा गया।

तभी इंजन के डिब्बे के दोनों तरफ से एक-एक छायाकृति कूदी।

ब्रुजाक के घर पर अंधेरा छा गया था। पिछले चार दिनों में सर्गेई की माँ ऐन्तोनीना वासीलिएवना का चिन्ता के मारे बुरा हाल हो गया था। अपने पति का उसे कोई समाचार नहीं मिला था। उसे सिर्फ इतनी ही बात मालूम हो सकी थी कि जर्मनों ने उसे कोर्चागिन और पोलेनताव्स्की के साथ-साथ एक इंजन चलाने पर मजबूर किया था। और कल हेटमैन के तीन सन्तरी आये थे और उससे बहुत गाली-गुफ्ता करके उन्होंने बेहूदा सवाल किये थे।

उन्होंने जो कुछ कहा था उससे उसने अन्दाज लगाया कि कुछ गड़बड़ हो गयी है और जैसे ही सिपाही चले गये उसने बहुत उद्विग्न होकर सिर पर रूमाल डाला और मारिया याकोवलेवना के पास चली गयी, इस उम्मीद में कि शायद उसी से अपने पति के बारे में उसको कुछ खबर मिल जाय।

उसकी सबसे बड़ी लड़की वालिया ने, जो रसोईघर की सफाई कर रही थी, उसे घर से बाहर जाते देखा।

लड़की ने पूछा, 'कहाँ जा रही हो माँ ?'

ऐन्तोनीना वासीलिएवना ने सजल आँखों से अपनी बेटी को देखा और जवाब दिया, 'कोर्चागिन के यहाँ। मुमकिन है उन्हें तुम्हारे पिता का कुछ हाल मालूम हो। अगर सर्गेई घर आये तो उससे कहना कि स्टेशन जाकर पोलेनताव्स्की के घर वालों से मिल लेगा।'

वालिया ने अपनी माँ को बाँहों में भर लिया और उसे दरवाजे तक पहुँचाती हुई बोली, 'घबराओ नहीं, मेरी प्यारी माँ।'

मारिया याकोवलेवना ने हमेशा की तरह जी खोल कर ऐन्तोनीना वासीलिएवना का स्वागत किया। दोनों स्त्रियों को एक-दूसरे से उम्मीद थी कि उन्हें कुछ खबर मिलेगी। मगर बातचीत के दौरान सारी उम्मीदें खत्म हो गयीं।

कोर्चागिन के घर पर भी रात को तलाशी हुई। सिपाही आर्तेम की तलाश में थे और उन्होंने जाते समय मारिया याकोवलेवना से कहा था कि जैसे ही तुम्हारा लड़का घर आये, उससे कहना कि वह फौरन जाकर कमांडैण्ट के दफ्तर में खबर करे।

इन सिपाहियों के आने से कोर्चागिना के होश-हवास गुम हो गये। वह घर पर अकेली थी क्योंकि पावेल रोज की तरह आज भी बिजलीघर में रात की पाली पर काम कर रहा था।

पावेल जब खूब सबेरे काम पर से घर लौटा और माँ से तलाशी की खबर सुनी तो उसे अपने भाई की हिफाजत की गहरी चिन्ता सताने लगी। उसके और आर्तेम के स्वभाव में अन्तर था। आर्तेम ऊपर से बहुत शुष्क था, मगर इसके बावजूद दोनों भाई एक-दूसरे को बहुत चाहते थे। दोनों के बीच एक अजीब कठोर सा प्यार था जिसमें दिखावे के लिए कोई जगह न थी, मगर पावेल जानता था कि अपने भाई के लिए कोई भी कुरबानी करने में वह नहीं हिचकेगा।

आराम के लिए बिना रुके पावेल जुखराई से मिलने के लिए भाग कर स्टेशन गया। जुखराई उसे नहीं मिला और जिन मजदूरों को वह जानता था, वे उसे फरार लोगों के बारे में कुछ नहीं बतला सके। इंजन ड्राइवर पोलेनताव्स्की के घर वाले भी बिल्कुल अंधकार में थे। पोलेनताव्स्की के सबसे छोटे लड़के बोरिस से, जो उसे बाहर हाते में मिला, उससे सिर्फ इतना मालूम हुआ कि कल रात उनके घर पर भी तलाशी हुई थी। सिपाही पोलेनताव्स्की को खोज रहे थे।

पावेल घर लौटा तो अपनी माँ को देने के लिए उसके पास कोई खबर न थी। थक कर चूर, वह बिस्तर पर पड़ा रहा और फौरन उखड़ी-उखड़ी सी नींद में डूब गया।

दरवाजे पर दस्तक पड़ी तो वालिया ने आँख उठाकर देखा।

जंजीर खोलते हुए उसने पूछा, 'कौन है ?'

दरवाजा खुला तो क्लिम्का मारचेंको का लाल-लाल बालोंवाला सर दिखायी दिया जिसके बाल बिखरे हुए थे। स्पष्ट ही वह दौड़ता हुआ आया था, क्योंकि उसकी साँस फूली हुई थी और उसका चेहरा सुर्ख हो रहा था।

उसने वालिया से पूछा, 'तुम्हारी माँ घर पर हैं ?'

'नहीं, वह बाहर गयी हुई हैं।'

'कहाँ ?'

'मेरा ख्याल है, कोर्चागिन के यहाँ,' यह कहते हुए वालिया ने तेजी से लौटते हुए क्लिम्का की आस्तीन पकड़ ली।

क्लिम्का ने संकोचपूर्वक लड़की को देखा, फिर बड़ी हिम्मत करके कहा :

'मुझे उनसे कुछ काम है।'

वालिया उसे जाने नहीं देना चाहती थी, बोली, 'क्या है ? झट से बोलता क्यों नहीं, लाल सिर वाले भालू, बोल झट से बोल और अब मुझे और शशपंज में न रख,' लड़की ने आदेश के स्वर में कहा।

क्लिम्का जुखराई की चेतावनी और उसके इस कठोर निर्देश को कि चिट्ठी एन्तोनीना वासीलिएवना के हाथ में ही देना, भूल गया, और उसने अपनी जेब से एक मैला-कुचैला सा कागज निकाला और उस लड़की को दे दिया। सर्गेई की इस खूबसूरत, सुनहरे बालोंवाली बहन को वह किसी चीज के लिए इनकार नहीं कर सकता था, क्योंकि सच बात यह है कि उसे इस लड़की से प्यार था। यह बात अलग है कि वह इतना झेंपू था कि अपने आप से भी इस बात को नहीं मान पाता था कि उसे वालिया पसन्द है। उस लड़की ने झटपट उस कागज के टुकड़े को पढ़ डाला।

'प्यारी तोनिया, घबराओ मत। सब ठीक है। हम लोग हिफाजत से हैं। जल्दी ही तुम्हें और खबर मिलेगी। दूसरों को भी बता दो कि सब ठीक है। घबराने की कोई बात नहीं है। इस चिट्ठी को नष्ट कर डालना।

—जखार।'

वालिया तेजी से क्लिम्का के पास गयी।

'यह तुम्हें मिला कहाँ पागल राम ? किसने दिया तुमको ?' यह कहते हुए उसने क्लिम्का को इतने जोरों से झकझोरा कि उसकी तो जैसे अकल ही गुम हो गयी और उसने अनजान में ही दूसरी बड़ी भूल कर डाली।

'जुखराई ने मुझे दिया, स्टेशन पर।' फिर उसे खयाल आया कि यह बात उसे नहीं कहनी चाहिए थी। तब उसने जोड़ा : 'मगर उन्होंने मुझे ताकीद की थी कि मैं यह चिट्ठी तुम्हारी माँ के सिवा और किसी को न दूँ।'

वालिया ने हँसते हुए कहा, 'ठीक है। मैं किसी से नहीं कहूँगी। और अब तुम, अच्छे नन्हें भालू की तरह, दौड़ते हुए पावेल के यहाँ जाओ और वहीं तुम्हें माँ मिलेंगी।' यह कहते हुए उसने लड़के को धीरे से पीठ में धक्का दिया।

पल भर बाद क्लिम्का का लाल सर बागीचे के फाटक में से होकर गायब हो गया।

तीनों में से कोई रेलवे मजदूर घर नहीं लौटा। शाम को जुखराई कोर्चागिन के घर आया और उसने मारिया याकोवलेवना को ट्रेन वाली घटना बतलायी। उसने खौफजदा माँ को शान्त करने की पूरी कोशिश की और उसे विश्वास दिलाया कि तीनों ब्रुजाक के चचा के यहाँ दूर के एक गाँव में बहुत हिफाजत से हैं। यह ठीक है कि वे लोग अभी लौट कर घर नहीं आ सकते,

मगर जर्मनों की हालत पतली है और परिस्थिति किसी भी दिन बदल सकती है।

इन तीनों आदमियों के गायब हो जाने से उनके परिवार एक दूसरे के बहुत पास आ गये, जितना पहले कभी नहीं थे। उनकी चिट्ठियाँ जो कभी-कभार मिल जाती थीं, बड़े आनन्द से पढ़ी जाती थीं। उनके बगैर घर सूना और वीरान मालूम होता था।

एक दिन जुखराई पोलेनताव्स्की की बीवी से मिलने के लिए आया, कुछ इस तरह से कि जैसे रास्ते में यह घर पड़ गया हो, और उसे कुछ रुपया दिया।

उसने कहा, 'तुम्हारे पति ने तुमको यह भेजा है, तब तक इसी से घर का खर्च चलाओ। मगर हाँ, देखना, किसी से इसका जिक्र न करना।'

उस बुड्ढी स्त्री ने कृतज्ञतापूर्वक जुखराई का हाथ पकड़ लिया और बोली, 'शुक्रिया! हमें इसकी सख्त जरूरत थी। बच्चों को खिलाने के लिए भी मेरे पास कुछ नहीं था।'

सच बात यह है कि यह पैसा उस फंड में से आया था जो बुल्गाकोव छोड़ गया था।

वहाँ से स्टेशन को लौटते हुए जुखराई सोचने लगा, 'अब देखो आगे क्या होता है। अगर गोली का डर दिखला कर हड़ताल तोड़ भी दी जाती है और मजदूर काम पर भी लौट आते हैं, तब भी यह समझ लो कि आग सुलग गयी है और अब उसे कोई बुझा नहीं सकता। जहाँ तक उन तीनों का ताल्लुक है, वे मजदूर हैं, सच्चे प्रोलितारियन।' मन में यह कहते हुए वह उमंग से भर उठा।

वोरोबिओवा बाल्का नामक गाँव के छोर पर एक पुराने, लोहे के कारखाने में पोलेनताव्स्की सुलगती हुई भट्ठी के आगे खड़ा था। कारखाने का अगवाड़ा सड़क पर पड़ता था और धुएँ से काला हो रहा था। भट्ठी की चमक से उसकी आँखें छोटी हो गयी थीं और वह एक बहुत लम्बे हैन्डिल की संडसी से लोहे के एक लाल-लाल टुकड़े को घुमा रहा था।

आर्तेम धरन से लटकती हुई धौंकनी चला रहा था।

'इन दिनों इन गाँवों में कोई कुशल मजदूर भूखा नहीं मर सकता — जितना काम चाहे पा सकता है,' इंजन ड्राइवर ने अपनी दाढ़ी के भीतर से मुस्कराते हुए कहा। 'इसी तरह एक-दो हफ्ता और चला तो हम लोग अपने घर बहुत काफी आटा और रसद वगैरह भेज सकेंगे। बेटा, किसान लोहारों

की बड़ी इज्जत करते हैं। तू देखना हम लोग धीरे-धीरे खा-पीकर पूँजीपतियों जैसे मोटे हो जायेंगे। जखार हम लोगों से कुछ दूसरी तरह का है — वह किसानों से चिपका हुआ है, अपने उस चाचा के जरिये उसकी जड़ें जमीन में हैं। मैं उसे दोष नहीं देता। तुम्हारे और मेरे पास, आर्तेम, सिवा अपनी मजबूत पीठ और हाथों के क्या है — न हल, न गाड़ी, न और कुछ। हम लोग तो सदा-सदा के प्रोलितारियन हैं, सच्चे सर्वहारा, मगर बुड्ढा जखार, जो है न, वह तो जैसे दो टुकड़ों में बँटा हुआ है। उसका एक पैर तो इंजन में है और दूसरा गाँव में।' हँसते हुए उसने यह बात कही। फिर अपनी संडसी से धातु के उस-लाल-लाल टुकड़े को हिलाया-डुलाया और फिर कुछ गंभीर स्वर में बोला : 'बेटा, जहाँ तक हमारी बात है, लक्षण बहुत अच्छे नहीं हैं। अगर जल्दी ही जर्मनों का सफाया नहीं किया जाता तो फिर जैसे भी हो हमें एकातेरीनोस्लाव या रोस्तोव पहुँचना पड़ेगा, नहीं तो हम लोग पकड़े जायेंगे और इसके पहले कि बात हमारी समझ में आये, लटका दिये जायेंगे।'

आर्तेम ने मुँह-ही-मुँह में कहा, 'यह तो तुम ठीक कहते हो।'

'काश कि मुझे पता होता कि वहाँ पर हमारे लोगों का क्या हाल-चाल है। मैं तो नहीं समझता कि जर्मनों ने उन्हें वैसे ही छोड़ रखा होगा।'

'हाँ काका, हम लोग काफी मुसीबत में हैं और अच्छा हो कि हम लोग घर के बारे में सोचना बन्द कर दें।'

इंजन ड्राइवर ने भट्ठी में से चमकता हुआ गर्म धातु का नीला टुकड़ा निकाला और सधे हुए हाथों से निहाई पर रख दिया।

'बेटा, अब लगे इस पर !'

आर्तेम ने एक भारी-सा हथौड़ा उठाया, घुमाकर उसे अपने सर से ऊपर ले गया और निहाई पर पटक दिया। चिनगारियों का एक फव्वारा हिस् की आवाज के साथ फैल गया जिससे एक पल के लिए उस लोहारखाने के अँधेरे-से-अँधेरे कोने भी आलोकित हो गये।

पोलेनताव्स्की लोहे के उस गर्म लाल टुकड़े को घुमाता रहा, उस पर हथौड़े की जबर्दस्त चोटें पड़ती रहीं और वह गर्म मोम की तरह चपटा हो गया।

लोहारखाने के खुले दरवाजों से अँधेरी रात की गर्म साँस आ रही थी।

नीचे झील फैली हुई थी — अंधेरी, विशाल ! उसके चारों ओर चीड़ के पेड़ खड़े अपने उन्नत शीश हिला रहे थे।

लेशचिन्स्की ने उसे जो किताब दी थी, उसमें वह इतनी डूबी हुई थी कि उसने किसी को काले पत्थर की उस चट्टान पर चढ़ते नहीं देखा जो उसके खाले को चीड़ के जंगल से अलग करती थी। वह तो जब एक ढेला, जो इस

आदमी ने अनजान में लुढ़काया था, आकर तोनिया की किताब पर गिरा तब उसने आँख ऊपर उठायी और पावेल कोर्चागिन को अपने सामने खड़ा पाया। पावेल भी इस मुलाकात से अचकचा गया और अपनी घबराहट में पलटने के लिए मुड़ा।

'तुम डर गयीं क्या ! मुझे नहीं मालूम था कि तुम यहाँ पर हो,' पावेल ने चट्टान के कगार पर हाथ रखते हुए कहा। उसने तोनिया को पहचान लिया था।

'नहीं, ऐसा क्यों कहते हो, तुम्हारे कारण मुझे कोई अड़चन नहीं है। तुम्हारा मन करे तो थोड़ी देर रुको, और फिर हम दोनों बातें करें।'

पावेल ने तोनिया को आश्चर्य से देखा।

'काहें के बारे में बातें करेंगे हम !'

तोनिया मुस्करायी।

एक पत्थर की ओर उंगली से इशारा करते हुए उसने कहा, 'मिसाल के लिए, सबसे पहले यही कि तुम यहाँ पर क्यों नहीं बैठते ? तुम्हारा नाम क्या है ?'

'पावेल कोर्चागिन।'

'मेरा नाम तोनिया है। लो अब हम लोगों ने एक-दूसरे को अपना परिचय दे दिया।'

पावेल अपनी उलझन और परेशानी में अपनी टोपी उमेठ रहा था।

तोनिया ने खामोशी को तोड़ते हुए कहा, 'अच्छा तो तुम्हारा नाम पावेल है, तुम क्या यहाँ अक्सर आते हो···' इसके बाद वह कहना चाहती थी 'तैरने' मगर चूँकि वह यह जाहिर नहीं होने देना चाहती थी कि उसने पावेल को पानी में देखा है, उसने बात बदल कर कहा, 'घूमने ?'

पावेल ने जवाब दिया, 'नहीं, बहुत नहीं। कभी-कभी जब फुरसत होती है।'

'अच्छा तो तुम कहीं काम करते हो ?' तोनिया ने उससे और आगे सवाल किया।

'बिजली के कारखाने में। मैं फायरमैन हूँ।'

पावेल को इस बात का पता भी नहीं चला और यह भूल कर कि वह चला जाना चाहता था, उस लड़की के सवालों का जवाब बड़ी तफसील से देने लगा।

तोनिया ने पूछा, 'तुमने पढ़ाई क्यों छोड़ दी ?'

'स्कूल से निकाल दिया गया।'

'क्यों ?'

पावेल को बताते लाज लगी।

'मैंने पादरी साहब के आटे में थोड़ी तम्बाकू डाल दी थी, इसी से सबों ने निकाल दिया। अजी बड़ा हरामजादा था वह पादरी, सता-सताकर जान मार डालता था।' और पावेल ने उसको पूरी कहानी सुना दी।

तोनिया बहुत दिलचस्पी से सुनती रही। पावेल की आरम्भिक झेंप अब खतम हो गयी थी और अब वह उस लड़की से ऐसे बातें कर रहा था जैसे उसके संग उसकी बहुत पुरानी जान-पहचान हो। और बातों के साथ-साथ उसने उसको अपने भाई के गायब हो जाने की बात भी बतला दी। उस नशेब में बैठ कर दोस्ताना बातचीत में वे इस तरह खो गये थे कि उन दो में से किसी को पता ही न चला कि घंटों पर घंटे बीतते जा रहे थे। एकाएक पावेल उछल कर खड़ा हो गया।

'अब मेरे काम का वक्त है। इस वक्त मुझे ब्वॉयलर में आग डालनी चाहिए थी, न कि यहाँ बैठ कर बकवक करना। दानिलो आज जरूर झंझट करेगा।' कुछ बेचैनी सी महसूस करते हुए उसने एक बार फिर कहा, 'अच्छा तो विदा! अब मुझे भागते हुए शहर जाना पड़ेगा।'

तोनिया भी उछल कर खड़ी हो गयी और अपना जाकेट चढ़ाने लगी।

'मुझे भी अब जाना चाहिए। चलो साथ ही चलेंगे।'

'न भाई, वह नहीं होगा। मुझे तो दौड़ना होगा।'

'वह भी सही। मैं भी तुम्हारे साथ दौड़ लगाऊँगी, देखें कौन वहाँ पहले पहुँचता है।'

पावेल ने उपेक्षा की दृष्टि से देखा।

'मुझसे पहले? मुझसे पहले पहुँचना तुम्हारे लिए नामुमकिन है।'

'अभी तय हुआ जाता है। पहले यहाँ से तो निकलें हम लोग।'

पावेल ने पानी में निकले हुए उस चट्टानी टुकड़े को छलाँगा, फिर तोनिया को अपना हाथ पकड़ाया और फिर दोनों धीरे-धीरे जंगल को पार करके उस चौड़ी समतल पगडंडी पर पहुँच गये जो स्टेशन को जाती थी।

तोनिया सड़क के बीचोबीच रुक गयी।

'अच्छा तो आओ : एक, दो, तीन! दौड़ो! मुझे छूना तो जरा!'

वह आँधी की तरह सड़क पर भागती चली जा रही थी, उसके जूतों के तल्ले चमक रहे थे और उसकी नीली जाकेट का पिछला हिस्सा हवा में उड़ रहा था।

पावेल उसके पीछे भाग रहा था।

'दो छलाँग में अभी मैं उसे पकड़े लेता हूँ।' पावेल ने उसकी उड़ती हुई जाकेट के पीछे भागते हुए अपने मन में कहा। मगर गली के बिल्कुल आखीर

में स्टेशन के काफी पास पहुँच कर ही वह उसे पकड़ पाया। एक आखिरी कोशिश करके वह उसके बराबर हो गया और उसने अपने मजबूत हाथों से उसके कंधों को पकड़ लिया।

'छू लिया ! मगर दौड़ती तुम तेज हो !' वह हाँफते हुए खुशी से चिल्लाया।

'हटो ! तुम तो मेरा मलीदा बनाये डाल रहे हो !' तोनिया ने एतराज किया।

वे वहाँ पर हाँफते खड़े थे, उनकी नाड़ी तेज चल रही थी। इस दौड़ से हाँफते हुए तोनिया ने एक बार बहुत हलके से पावेल का सहारा लिया और उस एक भागते हुए पल में पावेल को उसके स्पर्श से घनिष्ठता की ऐसी मीठी सुखद अनुभूति हुई जिसे वह जल्दी भूलने वाला नहीं था।

'तुम्हारे अलावा और कोई मुझे कभी नहीं छू सका,' उसने पावेल से अलग होते हुए कहा।

इसके बाद वे अलग हो गये और विदा में अपनी टोपी हिलाते हुए पावेल शहर की ओर दौड़ा।

जब पावेल ने ब्वॉयलर रूम का दरवाजा धक्का देकर खोला, उस वक्त वह दूसरा आगवाला दानिलो ब्वॉयलर में आग डाल रहा था।

उसने गुर्राकर कहा, 'इतनी जल्दी कैसे आ गये, कुछ और देर से आते ! चाहते हो कि तुम्हारा काम मैं करूँ, क्यों ?'

पावेल ने अपने साथी को मनाने के अन्दाज से उसके कंधे को थपथपाया।

'हम लोग अभी पलक मारते आग लहका देंगे,' उसने प्रसन्नतापूर्वक कहा और ईंधन को ठीक करने लगा।

आधी रात को जब दानिलो लकड़ी के ढेर पर लेटा जोरों से खर्राटे भर रहा था, तब पावेल ने इंजन में तेल दिया, रद्दी कपड़े से अपना हाथ पोंछा और औजार रखने के बकस में से **गिसेपी गैरिबाल्डी** नाम की किताब का बासठवाँ खंड निकाला और नेपुल्स के 'लाल कुर्ती वालों' के महान नेता की वीरता और साहस के असंख्य कारनामों का मोहक वृतान्त पढ़ने में डूब गया।

'उसने अपनी खूबसूरत नीली आँखों से ड्यूक को निहारा...'

पावेल ने सोचा, 'उसकी भी आँखें नीली हैं, मगर वह दूसरे तरह की हैं, वह अमीर लोगों की तरह जरा भी नहीं है। और दौड़ती कैसे है !'

तोनिया के संग अपनी दिन की मुलाकात की स्मृति में डूबा हुआ पावेल इंजन की तरफ से बिल्कुल बेखबर था। बहुत ज्यादा भाप के दबाव के कारण इंजन सूं-सूं कर रहा था; उसका विशाल फ्लाई-व्हील तेजी से घूम रहा था और इंजन की सीमेंट की नींव भी काँपने लगी थी !

भाप का दबाव बतलाने वाले यन्त्र पर नजर जाते ही पावेल ने देखा कि उसकी सुई खतरा बतलाने वाली लाल रेखा से कई बिन्दु ऊपर है।

'गजब हो गया !' पावेल लपक कर सेफ्टी-वाल्व के पास गया, जल्दी-जल्दी उसे दो बार घुमाया और एकजास्ट पाइप से निकलती हुई भाप तेजी से आवाज करती हुई ब्वॉयलर रूम के बाहर निकली। पावेल ने लिवर खींचते हुए ड्राइव-बेल्ट को पम्प की पुली पर फेंका।

उसने दानिलो को एक नजर देखा, मगर वह गहरी नींद में था, उसका मुँह खुला हुआ था और उसकी नाक डरावनी आवाजें निकाल रही थी।

आधा मिनट बाद भाप का दबाव बतलाने वाले यंत्र की सुई औसत पर आ गयी थी।

इस नयी अपरिचित अनुभूति ने, जिसने अनजान में ही पावेल को पा लिया था, उसके मन में खलबली पैदा कर दी — मगर कुछ इस तरह कि उसकी रेखाएँ मन में स्पष्ट न थीं; वह उसे समझ नहीं पाता था और उसका विद्रोही मन परेशान था।

तोनिया का बाप जंगलात का बड़ा हाकिम था जिसका मतलब पावेल के लिए यह था कि वह भी लेशचिन्स्की वकील के ही वर्ग का आदमी है।

पावेल गरीबी में पला था और शायद इसीलिए जिस किसी को भी वह अमीर आदमी समझता था, उसके प्रति पावेल के मन में दुश्मनी का भाव पैदा हो जाता था और इसीलिए तोनिया के प्रति उसके हृदय में जो भावना थी, उसमें शंका और सन्देह का भाव मिला हुआ था; तोनिया उन्हीं में से एक नहीं थी, वह वैसी सरल और आसानी से समझ में आने वाली लड़की नहीं थी जैसी कि मिसाल के लिए राजगीर की लड़की गालीना थी। तोनिया के संग वह सदा सतर्क रहता कि उसकी तरफ से व्यंग्य और उपेक्षा का हल्का-सा आभास मिलते ही वह तत्काल उसका जवाब दे सके, क्योंकि उसको अपनी जगह यह डर सदा बना रहता था कि उस जैसी सुन्दर और सुसंस्कृत लड़की मुझ जैसे साधारण आगवाले के प्रति व्यंग्य और उपेक्षा नहीं तो और क्या दिखलायेगी।

पूरे एक हफ्ते से उसकी मुलाकात तोनिया से नहीं हुई थी। आज उसने झील किनारे जाने का निश्चय किया। उसने जान-बूझकर तोनिया के मकान के पास से गुजरनेवाला रास्ता पकड़ा, इस उम्मीद से कि मुलाकात हो जायेगी। जब वह बाड़ी के पास से धीरे-धीरे टहलता हुआ चला जा रहा था, उसे बागीचे के उस दूर वाले सिरे पर अपना परिचित वह जहाजियोंवाला ब्लाउज दिखलायी दिया। उसने सड़क पर पड़ा हुआ चीड़ का एक फल उठा लिया और उस

सफेद ब्लाउज का निशाना लेकर फेंका।

तोनिया घूमी और दौड़ती हुई उसके पास आयी और बड़ी मीठी घनिष्ठ मुस्कराहट के साथ अपना हाथ बाड़ी के बाहर निकाला।

'तुम आ गये आखिर,' उसने कहा और उसकी आवाज में खुशी थी। 'इतने तमाम रोज तुम रहे कहाँ ? वह किताब जो मैं भूल आवी थी, उसे लेने मैं झील किनारे गयी थी। मैंने सोचा, शायद तुम भी मिल जाओ। क्यों, अन्दर नहीं आओगे ?'

पावेल ने सिर हिलाया :

'नहीं।'

'क्यों ?' और उसकी भवें कुछ आश्चर्य से खिंच गयीं।

'मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि तुम्हारे बाप को यह चीज पसन्द न आयेगी। मुझे ताज्जुब न होगा अगर वह मुझ जैसे आवारे को बागीचे में ले आने के कारण तुम्हें बुरा-भला कहें।'

तोनिया ने गुस्से से कहा, 'कैसी बच्चों की-सी बातें करते हो, पावेल। फौरन अन्दर आ जाओ। मेरे पिताजी कभी वैसी कोई बात नहीं कहेंगे। तुम खुद देख लोगे। अब आ जाओ अन्दर।'

वह उसके लिए गेट खोलने को दौड़ी और पावेल हिचकते हुए उसके पीछे-पीछे आया।

'तुम्हें किताबें अच्छी लगती हैं ?' तोनिया ने पावेल से पूछा जब दोनों बागीचे में पड़ी हुई गोल मेज के गिर्द बैठ गये।

पावेल ने उत्साह से जवाब दिया, 'बहुत।'

'कौन सी किताब तुमको सबसे अच्छी लगती है ?'

पावेल ने थोड़ी देर तक सवाल पर विचार किया, फिर बोला : 'जीसेपी गैरिबाल्डी।'

तोनिया ने उसका उच्चारण शुद्ध करते हुए कहा, 'गिसेपी गैरिबाल्डी। अच्छा तो वह किताब तुम्हें खास तौर पर अच्छी लगती है ?'

'हाँ, मैं उसके अड़सठों खंड पढ़ चुका हूँ। हर बार जिस दिन तनखाह मिलती है, मैं जाकर पाँच खंड ले आता हूँ। गैरिबाल्डी, वह है एक सच्चा मर्द !' पावेल ने आवेश के स्वर में कहा, 'असल वीर ! मैं तो भाई ऐसी चीज को असल माल कहता हूँ। वाह, कैसी-कैसी लड़ाइयाँ उसे लड़नी पड़ीं और जीत सदा उसके हाथ रही। और फिर यह भी तो देखो, वह सारी दुनिया घूमा था। वह अगर आज जिन्दा होता तो मैं जरूर उसकी सेना में भरती हो गया होता, जरूर। वह नौजवान मजदूरों को अपने दल में लेता था और फिर सब मिल कर गरीबों के लिए लड़ते थे।'

'तुम हमारी लाइब्रेरी देखना चाहोगे ?' तोनिया ने कहा और उसकी बाँह अपनी बाँह में ले ली।

'अरे नहीं, मैं घर के अन्दर नहीं जाऊँगा,' पावेल ने आपत्ति की।

'तुम इतने जिद्दी क्यों हो ? डरने की कौन-सी बात है ?'

पावेल ने अपने नंगे पाँवों को देखा, जिन्हें बहुत साफ नहीं कहा जा सकता था और सिर खुजलाने लगा।

'तुम्हें यकीन है कि तुम्हारी माँ या पिताजी मुझे घर से निकाल नहीं देंगे ?'

यह सुनकर तोनिया बिफर पड़ी, 'अगर तुम ऐसी बातें करना बन्द नहीं करोगे तो मैं सचमुच तुम से नाराज हो जाऊँगी।'

'नाराज मत हो ! लेशचिन्स्की को ही ले लो, लेशचिन्स्की कभी हम जैसों को अपने घर के अन्दर नहीं घुसने देता। वह बावर्चीखाने में ही हमसे बातें करता है। एक बार मुझको किसी चीज के लिए उसके यहाँ जाना पड़ा था और नेली ने मुझे कमरे के अन्दर जाने नहीं दिया — जरूर उसे यही डर होगा कि मैं उसकी कालीनें खराब कर दूँगा या इसी किस्म का और कोई बाँगड़ूपन,' पावेल ने तीखी हँसी के साथ कहा।

'चलो चलो,' तोनिया ने आग्रह किया और उसका कंधा पकड़ते हुए उसे हल्का-सा धक्का देती हुई सायबान की ओर ले चली।

खाने के कमरे में से होकर वह उसे एक कमरे में ले गयी जिसमें ओक की लकड़ी की बनी, किताब रखने की खुली हुई बड़ी-सी आलमारी रखी थी। और जब उसने दरवाजे खोले तो पावेल ने खूबसूरत पांतों में सजी हुयी सैकड़ों किताबें देखीं। उसने अपनी जिन्दगी में ऐसा खजाना नहीं देखा था।

'अच्छा आओ, तुम्हारे लिए एक अच्छी-सी किताब ढूँढ़ी जाय। मगर देखो, तुम्हें वादा करना पड़ेगा कि और किताबों के लिए तुम बराबर आया करोगे। आओगे न ?'

पावेल ने खुशी से सिर हिलाया।

उसने कहा, 'मुझे किताबों से प्रेम है।'

उस दिन दोनों ने कुछ घंटे साथ-साथ बहुत अच्छे गुजारे। तोनिया ने उसका परिचय अपनी माँ से कराया। और वह कोई ऐसी कठिन परीक्षा पावेल को न जान पड़ी। सच तो यह है कि तोनिया की माँ उसे अच्छी लगी।

तोनिया पावेल को फिर अपने कमरे में ले गयी और उसे अपनी किताबें दिखाने लगी।

सिंगार-मेज पर एक छोटा-सा आइना रखा हुआ था। तोनिया पावेल को उसके पास ले गयी और जरा हँसते हुए बोली :

'तुम अपने बालों को ऐसे जंगल की तरह बढ़ने क्यों देते हो ? तुम कभी उन्हें कटाते या उनमें कंघी नहीं करते क्या ?'

पावेल ने सकुचाते हुए कहा, 'बाल जब बहुत बढ़ जाते हैं तो मैं उनमें उस्तरा फिरवा देता हूँ। और करूँ भी क्या ?'

तोनिया हँसी और सिंगार-मेज पर से एक कंघी उठाते हुए उसने कई बार तेजी से उसे पावेल के जंगली बालों में दौड़ाया।

कंघी कर चुकने पर उसने बहुत गौर से अपनी इस कारीगरी को देखा और बोली, 'हाँ, अब कुछ ठीक हुआ। बालों को ठीक से कटाना चाहिए, यह क्या भूतों की तरह शकल बनाये घूमते रहते हो !'

उसने गौर से पावेल की रंग-उड़ी भूरी कमीज और भद्दी पतलून को देखा, मगर और कुछ कहा नहीं।

पावेल ने उसकी निगाह को भाँपा और उसे अपने कपड़ों पर शर्म आयी।

चलते समय तोनिया ने उसे फिर आने की दावत दी। उसने पावेल से वादा करा लिया कि वह दो दिन बाद आयेगा और उसके साथ मछली पकड़ने जायेगा।

पावेल को खिड़की से कूद कर घर के बाहर जाना ज्यादा आसान मालूम हुआ; वह सब कमरों में होकर नहीं जाना चाहता था और न तोनिया की माँ से ही फिर मिलना चाहता था।

आर्तेम के चले जाने से कोर्चागिन परिवार की हालत काफी खराब हो गयी। पावेल की मजदूरी से घर का खर्च पूरा नहीं पड़ता था।

मारिया याकोवलेवना ने पावेल से प्रस्ताव किया कि क्यों न मैं भी कोई काम कर लूँ; और लेशचिन्स्की को एक रसोईदारिन की जरूरत भी है। मगर पावेल ने इस प्रस्ताव का विरोध किया :

'नहीं माँ, मैं ही और कुछ काम कर लूँगा। उन्हें लकड़ी चीरने के कारखाने में शहतीरों को ठीक से जमा कर रखने के लिए आदमी की जरूरत है। आधा दिन मैं वहाँ काम कर लिया करूँगा और फिर उससे हमारा काम चल जायगा। तुम किसी भी हालत में काम पर मत जाना, नहीं तो आर्तेम मुझसे गुस्सा होगा कि मैंने क्यों तुम्हें ऐसा करने दिया और इसकी जरूरत ही क्यों पड़ी ?'

पावेल की माँ ने आग्रह किया, मगर पावेल नहीं माना।

दूसरे दिन से वह लकड़ी चीरने के कारखाने में काम करने लगा, और यह काम था तत्काल कटे हुए लकड़ी के पटरों को सूखने के लिए फैलाना। वहाँ

उसे बहुत से अपने जाने-पहचाने लड़के मिले — जैसे उसका एक पुराना सहपाठी मिशा लेवचुकोव और वालिया कुलेशोव। मिशा और वह मिल कर काम करने लगे और पीस-रेट के हिसाब से उनको खासे अच्छे पैसे मिल जाते थे। पावेल दिन में लकड़ी चीरने के कारखाने में काम करता था और शाम को बिजली-घर में।

दसवें रोज शाम को पावेल ने अपनी मजदूरी के पैसे अपनी माँ को दिये।

माँ के हाथ में पैसे देते हुए उसने थोड़ी परेशानी से जरा इधर-उधर किया, थोड़ा लजाया और आखिरकार बोला :

'बात यह है माँ कि मुझे साटन की एक कमीज खरीद दो, नीली-नीली, जैसी पिछले साल थी मेरे पास, याद है न? इसमें करीब आधा पैसा लग जायगा, मगर तुम कोई चिन्ता न करो; मैं कुछ और कमा लूँगा। मेरी यह कमीज काफी भद्दी है,' उसने ऐसे कहा जैसे अपनी इस इच्छा के लिए माफी माँग रहा हो।

माँ ने कहाँ, 'जरूर-जरूर, यह भी कोई कहने की बात है बेटा, मैं जरूर खरीद दूँगी। मैं आज ही जाकर कपड़ा ले आऊँगी और कल उसे सी दूँगी। तुम्हें सचमुच नयी कमीज की जरूरत है।' यह कह कर माँ ने दुलार भरी आँखों से अपने बेटे को देखा।

पावेल हेयर-कटिंग सेलून के दरवाजे पर रुका और जेब में पड़े हुए रूबल को उंगली से टटोलते हुए दरवाजे में दाखिल हुआ।

हज्जाम बहुत साफ-सुथरा नौजवान आदमी था। उसने पावेल को दूकान में दाखिल होते देखा और सिर के इशारे से उससे खाली कुर्सी पर बैठने के लिए कहा।

'अब आप आइये साहब।'

उस गहरी नर्म गद्देदार कुर्सी में बैठते हुए पावेल ने अपने सामने के आइने में एक घबराया हुआ-सा चेहरा देखा।

हज्जाम ने पूछा, 'छोटे कर दूँ?'

'हाँ, यानी नहीं — बात यह है कि मुझे बाल कटाने हैं। क्या कहते हो तुम लोग इस चीज को!' पावेल ने गले का थूक निगलते हुए जैसे-तैसे अपनी बात कही और अपने आशय को स्पष्ट करने के लिए हाथ से इशारा किया।

'मैं समझ गया,' हज्जाम ने मुस्करा कर कहा।

पन्द्रह मिनट बाद पावेल हज्जाम के यहाँ से निकला, पसीने में नहाया हुआ और इस कठिन परीक्षा से थक कर चूर, मगर बाल साफ-सुथरे कटे हुए और कंघी किये हुए। हज्जाम ने उन विद्रोही बालों को वश में करने के लिए बहुत संघर्ष किया और अन्त में पानी और कंघी की विजय हुई और पहले के

खड़े हुए बाल अब कायदे से अपनी जगह पर जम गये थे।

सड़क पर आकर पावेल ने चैन की साँस ली और अपनी टोपी आँख तक खींची।

उसने अपने मन में कहा, 'माँ मुझे देखेगी तो क्या कहेगी !'

पावेल ने तोनिया के साथ मछली पकड़ने जाने का वादा किया था और जब उसने यह वादा पूरा नहीं किया तो तोनिया बहुत नाराज हुई और उसने अपने मन में कहा, 'इस आगवाले छोकरे को किसी का कोई ख्याल नहीं,' मगर जब कुछ और रोज निकल गये और पावेल नहीं आया तो उसका मन पावेल के साथ के लिए तरसने लगा।

एक रोज जब वह टहलने के लिए निकलने ही वाली थी, उसकी माँ ने आकर कमरे में झाँका और कहा :

'तुमसे मिलने के लिए कोई आया है, तोनिया। अन्दर भेज दूँ ?'

पावेल दरवाजे में दिखायी दिया, मगर वह इतना बदल गया था कि तोनिया एकाएक उसे पहचान नहीं सकी।

वह एकदम नयी नीली साटन की कमीज और काला पतलून पहने हुए था। जूतों में डटकर पालिश हुई थी, इतनी कि वे चमाचम चमकने लगे थे और इसके अलावा तोनिया ने यह भी देखा कि उसके बाल भी छंटे हुए हैं ! धूल और धुएँ से अटा हुआ वह नौजवान आगवाला अब बिलकुल बदल गया था।

तोनिया अपना आश्चर्य व्यक्त करने ही वाली थी, मगर रुक गयी क्योंकि वह उस लड़के को, जो यों भी काफी परेशान था और भी परेशान करना नहीं चाहती थी। इसलिए उसने ऐसा बहाना किया कि जैसे उसके चेहरे-मोहरे की इस जबर्दस्त तब्दीली को उसने देखा ही न हो, और उसे डाँटने लगी।

'तुम मछली पकड़ने के लिए मेरे साथ आने वाले थे, क्यों नहीं आये ? तुम्हें शर्म आनी चाहिए अपने-आप पर ! इसी तरह वादा पूरा किया जाता है ?'

'मैं आज-कल लकड़ी चीरने के कारखाने में काम करने लगा हूँ और सच कहता हूँ आने का वक्त ही नहीं मिला।'

उसने उसको यह नहीं बतलाया कि अपने लिए यह कमीज और पतलून खरीदने के वास्ते वह पिछले कई रोज से बैल की तरह काम करता रहा था।

बहरहाल, तोनिया ने खुद ही सच्चाई को भाँप लिया और पावेल के प्रति उसकी नाराजगी गायब हो गयी।

तोनिया ने प्रस्ताव किया, 'चलो हम लोग तालाब पर घूमने चलें,' और

फिर दोनों बागीचे से निकल कर सड़क पर पहुँच गये।

थोड़ी ही देर में पावेल तोनिया को बतला रहा था कि उसने कैसे लेफ्टिनेण्ट के यहाँ से रिवाल्वर चुराया। उसने अपनी सबसे बड़ी भेद की बात तोनिया को वैसे ही बता दी जैसे कोई अपने बहुत गहरे दोस्त को बतलाये और उससे यह भी वादा किया कि जल्दी ही किसी रोज वे दोनों घने जंगल में जायेंगे और रिवाल्वर चलायेंगे।

'मगर देखना, तुम मेरी यह बात किसी से कहना मत,' पावेल ने एकाएक कहा।

तोनिया ने वचन दिया, 'नहीं मैं कभी तुम्हारी बात किसी से नहीं कहूँगी।'

चार

निर्मम और भयानक वर्ग-संघर्ष ने उक्रेन को जकड़ रखा था। हथियार उठाकर मैदान में उतरने वालों की संख्या रोज-ब-रोज बढ़ती जा रही थी और हर टक्कर से नये लड़ने वाले पैदा हो रहे थे।

भद्र नागरिकों के लिए शान्ति और सुव्यवस्था के दिन हवा हो चुके थे।

तोपों की तूफानी गरज से छोटे-छोटे कच्चे मकान काँप उठते थे और बेचारा भद्र नागरिक अपने तहखाने की दीवार का सहारा लेकर दुबक कर खड़ा हो जाता था या मकान के पिछवाड़े वाली खाईं में आश्रय खोजता था।

पेतल्युरा के सब तरह के, सभी रंगों के, गिरोहों की उस कस्बे भर में बाढ़ सी आयी हुई थी। सभी तरह के छोटे-बड़े सरदार इन गिरोहों के नेता थे, जमाने भर के गोलुब और आर्केन्जिल और एन्जिल और गार्डियस और बीसियों दूसरे लुटेरे!

जारशाही फौज के भूतपूर्व अफसर, उक्रेन के दक्षिण-पंथी और वाम-पंथी सोशलिस्ट-रिवोल्यूशनरी — कहने का मतलब यह कि कोई भी दुस्साहसी आदमी जो थोड़े से खूनियों को जमा कर सकता था, अपने को ऐटमन घोषित कर देता था और फिर उन्हीं में से कोई-कोई पेतल्युरा का पीला-और-नीला झंडा फहराने लगते थे और अपनी ताकत और मौके के हिसाब से जितने इलाके में मुमकिन हो, अपनी सत्ता कायम कर लेते थे।

इन्हीं छिटपुट गिरोहों में से आदमियों को लेकर और उनमें कुलकों और ऐटमन कोनोवालेत्स की फौज में से गैलीशियन रेजिमेण्ट को शामिल करके प्रधान ऐटमन पेतल्युरा ने अपनी रेजिमेण्टें और डिवीजनें बनायी थीं। और जब बोल्शेविक छापेमार टुकड़ियों ने इस सोशलिस्ट-रिवोल्यूशनरी और कुलक भभ्भड़ पर हमला किया तो सैकड़ों-हजारों टापों और तोपों व मशीनगन खींचनेवाली गाड़ियों के पहियों से धरती काँप गयी।

उस तूफानी सन् १९१९ के अप्रैल महीने में भद्र नागरिक, डरा और बौख-

लाया हुआ, सबेरे अपनी खिड़की खोलता था और नींद से भारी आँखें लिये चिन्ताकुल प्रश्न से अपने बगल वाले पड़ोसी का स्वागत करता था, 'क्यों भाई आवतोनम पेत्रोविच, क्या तुमको मालूम है कि आज किसका राज है ?'

और आवतोनम पेत्रोविच अपने पतलून की टाँगें ऊपर उठाते हुए डरी निगाहों से इधर-उधर देखने लगता था।

'पता नहीं, अफानस किरीलोविच। रात को कोई शहर में दाखिल तो हुआ था। वह है कौन, यह अब जल्दी ही मालूम हो जायगा। यहूदियों की लूटपाट शुरू होती है तो हम समझ जायेंगे कि पेतल्युरा के आदमी हैं, और अगर वे 'कामरेड लोग' हुए तो भी झट पता लग जायगा — उनके बातचीत के तरीके से। मैं आँखें खोले हुए हूँ ताकि ठीक समय पर मुझे पता हो जाय कि अब मुझे किसकी तसवीर टाँगनी चाहिए। न बाबा, बगल वाले जेरासिम लियोनतियोविच की तरह आफत में जान फँसाना मुझे मंजूर नहीं। तुम्हें मालूम है न, उस ने जरा सी असावधानी की और आफत में फँस गया। उस ने लेनिन की तसवीर लाकर टाँगी थी, तभी तीन आदमी दौड़े हुए घर के अन्दर आये। जैसा कि जल्दी ही पता चल गया, ये पेतल्युरा के आदमी थे। उन्होंने तसवीर पर एक निगाह डाली और जेरासिम पर कूद पड़े — कम से कम बीस कोड़े लगाये होंगे उन्होंने। चिल्लाकर बोले, 'अबे कम्युनिस्ट सुअर के बच्चे, हम जिन्दा ही तेरी चमड़ी उधेड़ लेंगे।' और बेचारा बहुत चीखा-चिल्लाया, रोया-धोया, सफाई दी, मगर कुछ काम नहीं आया।

हथियारबन्द लोगों के दलों को सड़क पर आता देखकर भद्र नागरिक अपनी खिड़की बन्द कर लेता और छिप जाता है। बचकर रहना अच्छा होगा !

जहाँ तक मजदूरों का ताल्लुक था, वे पेतल्युरा के लुटेरों के पीले और नीले झंडे को दबी नफरत से देखते थे। उक्रेन के पूंजीपतियों की इस साम्राज्यवादी लहर के आगे वे अपने-आपको कमजोर महसूस करते थे, और उनका हौसला तभी बढ़ा जब उधर से गुजरती हुई बोल्शेविक टुकड़ियाँ पीले और नीले झंडेवालों के खिलाफ भीषण लड़ाई लड़ते हुए उनकी पाँतों को चीर कर शहर में दाखिल हुई। एक-दो रोज तक मजदूरों का प्यारा लाल झंडा टाउन-हॉल पर फहराता रहा। मगर फिर टुकड़ी आगे बढ़ गयी और अंधेरा लौट आया।

इस वक्त शहर, ट्रान्सनीपर डिवीजन के 'आशा और गौरव' कर्नल गोलुब के हाथ में था।

अभी एक रोज पहले, दो हजार हत्यारों के उसके गिरोह ने जीत के बाद शहर में कदम रखा था। हुजूर कर्नल साहब सेना के आगे-आगे अपने शानदार काले घोड़े पर चल रहे थे। अप्रैल महीने की धूप के बावजूद उनकी साज-

सज्जा में कोई कमी नहीं थी — काकेशस के लोगों का 'बुर्का', जापोरोजिए के कोसैकोंवाली भेड़ की खाल की टोपी, जिसका ऊपरी हिस्सा रसभरी के रंग जैसा लाल था, 'चेरकेस्का', वह सभी कुछ पहने थे। और इस टीम-टाम के साथ के सब हथियार भी बाकायदा उसके शरीर पर सुसज्जित थे — कटार और तलवार, जिनकी मूँठें चाँदी की थीं। उनके दाँतों के बीच एक मुड़ा हुआ तम्बाकू पीने का पाइप दबा था।

हुजूर कर्नल गोलुब खूबसूरत आदमी थे, काली-काली भवें और पीला-सा रंग, जिसमें अविराम भोग-विलास के कारण कुछ हरापन भी मिला हुआ था।

क्रान्ति के पहले कर्नल गोलुब एक शहर के कारखाने से सम्बद्ध चुकन्दर के खेतों में कृषि-विशेषज्ञ थे। मगर ऐटमन के पद के मुकाबिले में वह एक बिल्कुल ही नीरस जिन्दगी थी। इसीलिए ऐसा हुआ कि जब सारे देश को अपनी लपेट में लेते हुए स्याह लहरें बहीं, तो उन लहरों के शिखर पर सवार होकर कृषि-विशेषज्ञ गोलुब 'हुजूर कर्नल गोलुब' बन गये।

शहर के एकमात्र थिएटर में इन आगन्तुकों के सम्मान में मनोरंजन की तैयारियाँ खूब ठाठ-बाट से की गयी थीं। पेतल्युरा के समर्थक बुद्धिजीवियों की सारी 'विभूतियाँ' अपनी पूरी संख्या से वहाँ उपस्थित थीं : उक्रेनी अध्यापक, पादरी की दोनों लड़कियाँ, सुन्दरी आनिया और उसकी छोटी बहन दीना, कुछ उनसे नीचे स्तर की स्त्रियाँ, काउण्ट पोतोकी के घराने के कुछ पुराने लोग, मुट्ठी भर बड़े व्यापारी और उक्रेनी सोशलिस्ट-रिवोल्यूशनरी पार्टी के कुछ गुंडे जो अपने आप को 'आजाद कोसैक' कहते थे।

थिएटर का हॉल खचाखच भरा था। अध्यापकों के इर्द-गिर्द अफसर घूम रहे थे जो देखने-सुनने में ऐसे नजर आते थे जैसे जापोरोजिए के कोसैकों का पुरानी तसवीरों की हूबहू नकल हों। उनके अलावा पादरी की लड़कियाँ और बड़े व्यापारियों की स्त्रियाँ भी थीं जो चटख रंगों के काढ़े हुए फूलों और रंग-बिरंगे मनकों और फीतों से अलंकृत उक्रेनी जातीय परिधानों में सजी हुई घूम रही थीं।

रेजिमेण्ट का बैण्ड वज रहा था। स्टेज पर **नजर इस्तदोलिया** नामक नाटक की तैयारियाँ जोर-शोर से चल रही थीं। उस शाम यही नाटक खेला जाने वाला था।

मगर हॉल में बिजली नहीं थी, और इस बात की रिपोर्ट कर्नल साहब को उनके सहायक, सब-लैफ्टिनेण्ट पोलियान्त्सेव ने हेडक्वार्टर पर दी। पोलियान्त्सेव ने अब अपने नाम को उक्रेनी रूप देकर अपने-आपको खोरूँजी पालियानित्स्या कहना शुरू कर दिया था। कर्नल साहब ने, जो शाम के थिएटर को अपनी उपस्थिति से सुशोभित करने की सोच रहे थे, पालियानित्स्या की पूरी

बात सुनी और बहुत इतमीनान के साथ, पर आदेश के स्वर में कहा।

'रोशनी जरूर होनी चाहिये। एक एलेक्ट्रीशियन तलाश करो और जैसे भी हो बिजलीघर को चालू करो।'

'बहुत अच्छा, हुजूर कर्नल साहब।'

खोरूजी पालियानित्स्या को आसानी से ही एलेक्ट्रीशियन मिल गये। दो घंटे के भीतर ही भीतर पावेल, एक एलेक्ट्रीशियन और एक मैकेनिक को हथियारबन्द सन्तरियों के पहरे में बिजली घर ले जाया गया।

'अगर सात बजे तक लाइट ठीक नहीं हुई तो तुम तीनों को मैं फाँसी पर लटका दूँगा', पालियानित्स्या ने ऊपर लोहे की एक धरन की ओर इशारा करते हुए उनको जतला दिया।

स्थिति को जिस लट्ठमार तरीके से खोलकर रखा गया था, उसका असर यह हुआ कि ठीक समय पर रोशनी आ गयी।

शाम का उत्सव पूरे रंग पर था जब हुजूर कर्नल साहब अपने साथ एक औरत को लिए हुये पधारे। जिसके घर में कर्नल साहब ठहरे हुए थे, उसी शराबखाने के मालिक की यह लड़की थी। इसका अच्छा गदराया हुआ जिस्म था और बाल पीले थे। लड़की का बाप पैसेवाला था, इसलिए उसकी पढ़ाई सूबे के सबसे बड़े शहर के स्कूल में हुई थी।

जब उन दोनों ने, सम्मानित अतिथि के रूप में, पहली कतार में आसन ग्रहण कर लिया तो कर्नल साहब ने संकेत किया और पर्दा इतनी जल्दी से उठा कि दर्शकों ने मंच से भागते मंच-निर्देशक की पीठ की झलक देखी।

नाटक के दौरान में अफसरों और उनके साथ की स्त्रियों ने अपना वक्त जलपान-गृह में गुजारा और घर खींची हुई कच्ची शराब से, जिसका इन्तजाम सर्वशक्तिमान पालियानित्स्या ने किया था, और वसूली से प्राप्त सुस्वादु खाद्यों से अपना पेट भरा। खेल का अन्त होते-होते उनके ऊपर नशा अच्छी तरह चढ़ गया था।

खेल खतम होने पर पर्दा जब आखिरी बार गिरा, तो पालियानित्स्या लपक कर मंच पर चढ़ गया। बड़े नाटकीय ढंग से बाँह घुमाते हुए उसने ऐलान किया, 'देवियो और सज्जनो, अब फौरन नाच शुरू होगा।'

सबने बहुत हर्ष से इस प्रस्ताव का स्वागत बिया। दर्शक लोग बाहर निकल गये ताकि सम्मानित अतिथियों की सुरक्षा के लिए नियुक्त पेतल्युरा सैनिक कुर्सियों को बाहर करके नाच के फर्श को खाली कर दें।

आध घंटे बाद, थिएटर का हॉल मस्तियों का अखाड़ा बना हुआ था।

पेतल्युरा के अफसर, संयम और मर्यादा को :ताक पर रखकर, स्थानीय सुन्दरियों के साथ बड़े जोशोखरोश से **होपाक** नृत्य कर रहे थे। इस श्रम की

गर्मी से सुन्दरियों के चेहरे लाल हो रहे थे और भारी फौजी बूटों की रौंद से थिएटर की कच्ची दीवारें हिल रही थीं।

ठीक इसी दरम्यान हथियारबन्द घुड़सवारों का एक दस्ता आटे की चक्की की तरफ से शहर की ओर बढ़ रहा था। शहर की सीमा पर तैनात पेतल्युरा सैनिकों की चौकी वाले घबरा कर अपनी मशीनगनों के पास पहुँचे और रात के सन्नाटे में मशीनगनों में गोले भरने की खट-खट सुनायी दी। अँधेरे में तीखी आवाज सुनायी पड़ी ?

'हाल्ट ! कौन जाता है ? कौन है ?'

अंधेरे में से दो काली आकृतियाँ बाहर निकलीं। उनमें से एक आगे बढ़ी और भारी आवाज में गरजकर बोली।

'ऐटमन पावल्युक, अपनी टुकड़ी के साथ। तुम कौन हो ? गोलुब के आदमी ?'

'जी हाँ,' एक अफसर ने आगे बढ़ते हुए कहा।

पावल्युक ने पूछा, 'मैं अपने सिपाहियों को कहाँ ठहराऊँ ?'

'मैं अभी हेडक्वार्टर को फोन करता हूँ,' अफसर ने जवाब दिया और सड़क के किनारे की एक छोटी सी झोंपड़ी में अन्तर्ध्यान हो गया।

एक मिनट बाद वह फिर बाहर निकला और हुक्म देते हुए बोला।

'जवानो, मशीनगन को रास्ते से हटा लो ! हुजूर ऐटमन को गुजरने दो !'

पावल्युक ने अपना घोड़ा जगमगाते हुए थिएटर के सामने, जहाँ बहुत से लोग खुली हवा में घूम रहे थे, रोका।

'देखता हूँ, बड़ी मस्तियाँ चल रही हैं यहाँ,' उसने अपने बगल के एक घुड़सवार की ओर मुड़ते हुए कहा, 'आओ गुकमाक, हम भी उतरें और इस नाच-गाने में शरीक हो जायें। हम लोग अपने लिए दो लड़कियाँ चुन लेंगे — मैं देखता हूँ कि यहाँ लड़कियाँ भरी हुई हैं। अरे एस्तालेज्को,' उसने चिल्लाते हुए कहा, 'तुम हमारे जवानों को शहरवालों के यहाँ ठहरा दो। हम लोग यहाँ रुकेंगे। अर्दली, पीछे-पीछे आओ।' और वह घोड़े से उतर पड़ा।

थिएटर के दरवाजे पर पावल्युक को पेतल्युरा के दो सैनिकों ने रोका।

'टिकट !'

पावल्युक ने उन्हें नफरत से देखा और एक को कंधे से धक्का देता हुआ हॉल में दाखिल हो गया। उसके साथ के एक दर्जन आदमी भी हाल में घुस गये। उन सबके घोड़े बाहर बाड़ी से बंधे खड़े थे।

सब की नजरें नवागन्तुकों की ओर उठीं, विशेष रूप से भीमकाय पावल्युक की ओर। वह एक अच्छे कपड़े का अफसरों का कोट, गार्ड्स वाली नीली बिर्जिस और खूब बालोंवाली फर की टोपी पहने था। कंधे से लटकते हुए फीते

से एक माउजर पिस्तौल लटक रही थी और जेब से एक दस्ती बम झाँक रहा था।

'यह कौन है ?' —यह फुसफुसाहट सारी भीड़ में फैल गयी। गोलुब का नायब होश-हवास खोकर मस्ती में नाच रहा था।

पादरी की बड़ी लड़की उसकी साथिन थी। यह लड़की इतनी मस्त होकर चक्कर खा रही थी कि उसका साया खूब ऊँचे उड़ रहा था, इतने ऊँचे कि उल्लसित योद्धागण उसके रेशमी अंडरवियर को आँखें भर-भर देख रहे थे।

भीड़ को कुहनियों से अलग करते हुए पावल्युक सीधे नाच के फर्श पर जा पहुँचा।

उसने पादरी की लड़की की टाँगों को आँखें फाड़कर देखा, अपने खुश्क ओंठों पर जीभ फेरी, फिर नाच का फर्श पार करके ऑरकेस्ट्रा के प्लेटफार्म पर पहुँचा, रुका और अपनी चाबुक फटकारी।

'सुनो, **होपाक** की धुन बजाओ !'

कंडक्टर ने आदेश की ओर ध्यान नहीं दिया।

पावल्युक का हाथ तेजी से घूमा और चाबुक सटाक से कंडक्टर की पीठ पर पड़ी। कंडक्टर उछल पड़ा, मानो बिच्छू ने काट लिया हो। संगीत भंग हो गया। हॉल निस्तब्धता में डूब गया।

'देखते हो इसकी हिम्मत !' शराबखाने के मालिक की लड़की गुस्से से लाल हो रही थी। उसने अपने बगल में बैठे हुए गोलुब की कुहनी को पकड़ते हुए जोर से कहा, 'तुम उससे कुछ कहते क्यों नहीं ? तुम्हारी आँख के सामने जो जी चाहे कर रहा है और तुम कुछ बोलते नहीं ?'

गोलुब अपना भारी शरीर लिये खड़ा हुआ, ठोकर मारकर एक कुर्सी रास्ते से अलग की, तीन कदम आगे बढ़ा और पावल्युक के सामने जाकर खड़ा हो गया। उसने फौरन इस नये आगन्तुक को पहचान लिया। उसे अपने इस पुराने प्रतिद्वन्दी से, जो स्थानीय तौर पर उसके हाथ से ताकत छीन लेना चाहता था, पुराने झगड़े सुलझाने थे। अभी केवल एक हफ्ता पहले पावल्युक ने हुजूर कर्नल साहब के साथ बड़ी कमीनी हरकत की थी। उस वक्त जब कि एक लाल टुकड़ी के साथ, जिसने अनेक बार गोलुब की टुकड़ी की अच्छी तरह गत बनायी थी, लड़ाई अपने शिखर पर थी, पावल्युक ने पीछे से बोल्शेविकों पर हमला करने के बजाय शहर के अन्दर दाखिल होकर और उन थोड़े से सिपाहियों को हराकर जिन्हें बोल्शेविक छोड़ गये थे, अपनी हिफाजत के लिए कुछ सिपाहियों को तैनात कर दिया और फिर जी खोलकर उस जगह को लूटा। इसमें क्या शक कि सही माने में पेतल्युरा का आदमी होने के नाते उसने यहूदी आबादी को ही अपना खास शिकार बनाया। इस बीच बोल्शेविक गोलुब

के दाहने पार्श्व को चीरकर घेरे के बाहर निकल गये थे।

और अब वह घमंडी, घुड़सवारों का कप्तान यहाँ घुस आया था। और इसकी हिम्मत तो देखो, हुजूर कर्नल के अपने खास बैण्ड-मास्टर को उनकी आँखों के सामने मार रहा था। नहीं, यह तो हद से बाहर की बात हो गयी थी। गोलुब समझ गया कि अगर वह इस घमंडी छुटभैये ऐटमन को ठीक नहीं करता तो रेजिमेण्ट में उसकी धाक खतम हो जायगी।

कई सेकेंड तक दोनों आदमी आमने-सामने, एक-दूसरे को घूरते हुए, खामोश खड़े रहे।

एक हाथ से अपनी तलवार की मूठ पकड़ते हुए और दूसरे से जेब में अपने रिवाल्वर को टटोलते हुए गोलुब ने डपटकर कहा :

'तेरी यह हिम्मत कि हमारे आदमियों पर हाथ छोड़े, हरामजादे !'

पावल्युक का हाथ धीरे-धीरे माउजर के हत्थे की तरफ बढ़ रहा था।

'जरा जबान सँभालकर बातें कीजिए गोलुब साहब, वर्ना मुँह के बल गिरिएगा। मुझसे उलझना नहीं। मैं गुस्से का तेज हूँ।'

गोलुब भला यह कैसे बर्दाश्त कर सकता था।

उसने चिल्लाकर कहा, 'इन सबों को बाहर निकाल दो और एक-एक को पाँच-पाँच कोड़े लगाओ !'

गोलुब के अफसर शिकारी कुत्तों की तरह पावल्युक और उसके आदमियों पर झपट पड़े।

एक गोली छूटी और ऐसी आवाज आयी कि जैसे किसी ने बिजली का बल्ब फर्श पर पटक दिया हो और दोनों दलों के लोग शिकारी कुत्तों की तरह आपस में गुंथ गये। हॉल में तबाही मच गयी। उस मार-धाड़ में सब एक-दूसरे पर तलवारें चला रहे थे, एक-दूसरे के बाल नोच रहे थे और गले दबोच रहे थे। औरतें डर के मारे चीखती हुई लड़ने वालों से छिटक कर दूर चली गयी थीं।

कुछ मिनटों के अन्दर पावल्युक और उसके आदमियों के हथियार छीन लिये गये और उन्हें खूब मारा गया, फिर हॉल से घसीट कर वे लोग बाहर ले जाये गये और सड़क पर ले जाकर खड़े कर दिये गये।

इस लड़ाई में खुद पावल्युक अपनी फर की टोपी से हाथ धो बैठा। उसका चेहरा घायल हो गया था और हथियार छीन लिये गये थे। गुस्से के मारे उसका बुरा हाल था। वह और उसके आदमी उछल कर अपने घोड़ों पर बैठे और तेजी से निकल गये।

वह शाम तो बर्बाद हो गयी। जो कुछ हुआ था, उसके बाद किसी का मन खुशियाँ मनाने का नहीं हो रहा था। स्त्रियों ने नाचने से इनकार कर दिया,

और हठ करने लगीं कि उन्हें घर पहुँचा दिया जाय। मगर गोलुब यह सब सुनने को तैयार न था।

उसने हुक्म दिया, 'सन्तरी खड़े कर दो! कोई हॉल के बाहर नहीं जायगा!'

पालियानित्स्या ने हुक्म पूरा करने में बहुत तेजी दिखलायी।

'देवियो और सज्जनो, नाच सबेरे तक चलेगा।' गोलुब ने तमाम आपत्तियों-प्रतिवादों को दूर ठेलते हुए हठपूर्वक कहा, 'पहला वॉल्ज़ मैं खुद नाचूंगा।'

ऑरकेस्ट्रा फिर बजने लगा। मगर इसके बावजूद, उस रात फिर खुशियाँ न मनायी जा सकीं।

कर्नल ने पादरी की लड़की के संग नाच के फर्श का अभी एक चक्कर भी पूरा न किया था कि सन्तरी दौड़ते हुए हॉल के अन्दर आये और चिल्लाकर बोले :

'पावल्युक थिएटर को घेर रहा है।'

उसी वक्त सड़क के सामने वाली एक खिड़की टूटी और उसके टूटे फ्रेम के अन्दर से एक मशीनगन की नली अन्दर घुसी। वह पागलों की तरह कभी इधर और कभी उधर घूम रही थी, मानो उन भागते हुए लोगों में से किन्हीं खास को चुन रही हो। लोग मशीनगन से घबराकर ऐसे तितर-बितर होकर भाग रहे थे, गोया वह शैतान हो।

पालियानित्स्या ने छत में लगे एक हजार कैण्डिल पावर के लैम्प पर गोली चलायी। वह बम की तरह फूटा। उड़े हुए शीशे के टुकड़े हॉल के अन्दर सभी लोगों पर बरस पड़े।

हॉल अंधेरे में डूब गया। कोई बाहर से चिल्लाया :

'सब लोग बाहर निकलो!' और इसके बाद गोलियों की बौछार।

औरतों का वह पागलों की तरह चिल्लाना, वे तमाम हुक्म जो गोलुब हॉल के अन्दर इधर-उधर भागता हुआ अपने घबराये हुए अफसरों को बटोरने की कोशिश में जारी कर रहा था, सहन में गोली चलने और चीखने-चिल्लाने का शोर — इन सबसे एक अजब जहन्नुमी मंज़र पैदा हो गया था जिसे बयान करना मुश्किल है। इस हंगामे में किसी ने पालियानित्स्या को पीछे के दरवाजे से निकल कर एक वीरान गली में जाते नहीं देखा, जहाँ पहुँचकर वह जी-जान से गोलुब के हेडक्वार्टर की तरफ दौड़ा।

आध घंटे बाद शहर में बाकायदा लड़ाई का मोर्चा जमा हुआ था। अनवरत राइफिलें चलने की आवाजें और उनके बीच-बीच मशीनगनों का भारी शोर रात की निस्तब्धता को चीर रहा था। शहर वाले बिल्कुल हैरान थे कि

यह क्या हो रहा है। अपने गर्म-गर्म बिस्तरों से उठकर वे अपनी खिड़कियों के शीशों में मुँह सटाये खड़े थे।

आखिरकार गोलियों का चलना कम हुआ। कहीं दूर, सिर्फ एक मशीनगन बीच-बीच में गोले छोड़ती रही — उसी तरह जैसे रात की तारीकी में कोई कुत्ता भौंक रहा हो।

उधर क्षितिज पर पौ फट रही थी और इधर लड़ाई खतम हुई ...

शहर में अफवाह फैल गयी कि यहूदियों का सफाया करने की तैयारी हो रही है। आखिरकार यह अफवाह यहूदियों की उन छोटी-छोटी, नीची छत-वाली झोंपड़ियों तक भी पहुँची जिनकी खिड़कियाँ टेढ़ी-मेढ़ी थीं और जो किसी तरह अटकी हुई थीं। इन बुरी तरह गुंजान बस्तियों में, कच्ची खोलाबाड़ियों, में गरीब यहूदी रहते थे।

जिस प्रेस में एक साल से ऊपर से सर्गेई ब्रुजाक काम कर रहा था, उसके कम्पोजीटर और दूसरे मजदूर यहूदी थे। उनके और सर्गेई के दरम्यान दोस्ती के मजबूत रिश्ते पैदा हो गये थे। एक सुसम्बद्ध परिवार की तरह वे अपने मालिक, खुशहाल और अपने में मगन मोटे-ताजे मिस्टर ब्लुमस्टाइन, का मुकाबिला कर रहे थे। मालिक और प्रेस-मजदूरों में लगातार संघर्ष चल रहा था। ब्लुमस्टाइन सदा इसी कोशिश में रहता था कि ज्यादा से ज्यादा खुद हड़प ले और मजदूरों को कम-से-कम पैसा दे। प्रेस के मजदूरों ने कई बार हड़ताल की थी और प्रेस दो-तीन हफ्ते बन्द रहा था। कुल चौदह मजदूर थे। उनमें सबसे छोटा सर्गेई था, जो दिन में बारह घंटे एक हैंड-प्रेस का पहिया घुमाता रहता था।

आज सर्गेई ने मजदूरों में कुछ ऐसी बेचैनी देखी जिससे उसके मन में शंका हुई। पिछले कई गड़बड़ी के महीनों से प्रेस को 'चीफ ऐटमन' की तरफ से जारी किये हुए ऐलानों को छापने के अलावा और कुछ काम नहीं था।

मेण्डेल नाम का एक कम्पोजीटर, जो दिक का मरीज था, सर्गेई को बुला-कर एक कोने में ले गया।

अपनी उदास आँखों से इस लड़के को देखते हुए उसने कहा, 'तुमको मालूम है, हमारे कत्लेआम की तैयारी हो रही है!'

सर्गेई ने आश्चर्य से उसे देखा।

'मुझे तो कुछ भी नहीं मालूम।'

मेण्डेल ने अपना पीला मुरझाया हुआ हाथ सर्गेई के कंधे पर रखा और बड़े-बूढ़ों की तरह, राज़ की बात बतलाने के स्वर में कहा :

'हाँ, कत्लेआम होने वाला है — यह बात सच है। यहूदियों को पीटा जायगा। मैं जानना यह चाहता हूँ कि इस मुसीबत में तुम अपने साथियों का

साथ दोगे या नहीं ?'

'जरूर दूँगा, जहाँ तक मेरे बस में होगा। मगर मैं कर क्या सकता हूँ, मेण्डेल ?'

सारे कम्पोजीटर इस बात को सुन रहे थे।

'तुम बड़े अच्छे लड़के हो, सर्योजा। हमें तुम पर भरोसा हैं। तुम्हारा बाप भी तो आखिर हमारी ही तरह मजदूर है। हम चाहते हैं कि तुम दौड़कर अपने घर जाओ और अपने बाप से पूछो कि क्या वह कुछ बूढ़े-बुढ़ियों को अपने घर में छिपा लेगा। उसका जवाब मिलने पर हम लोग तय करेंगे कि किसको कहाँ रखा जाय। अपने घर में तुम यह भी पूछना कि क्या उनकी जानकारी में ऐसा और कोई मिल सकेगा जो यही काम करे। कम से कम रूसी लोग तो इस वक्त इन डाकुओं के हाथ से बचे ही रहेंगे। फौरन दौड़ जाओ सर्योजा, वक्त बहुत कम है।'

'मेण्डेल' मुझ पर यकीन रखो। मैं फौरन जाकर पावका और क्लिम्का से मिलता हूँ ··· उनके घरवाले जरूर कुछ लोगों को रख लेंगे।'

'जरा रुको,' मेण्डेल ने सर्गेई को रोकते हुए चिन्ता के स्वर में पूछा, 'यह पावका और क्लिम्का कौन हैं ? तुम उन्हें अच्छी तरह जानते हो ?'

सर्गेई ने विश्वास के साथ सिर हिलाया और कहा, 'जरूर। वे मेरे लंगोटिया यार हैं। पावका कोर्चागिन का भाई मैकेनिक है।'

'अरे कोर्चागिन,' मेण्डेल के मन की शंका दूर हो गयी। बोला, 'मैं उसको जानता हूँ — हम लोग साथ-साथ एक ही घर में रहते थे। हाँ, तुम कोर्चागिन के घरवालों से जाकर बातचीत कर सकते हो। जाओ सर्योजा, और जल्द से जल्द जवाब लेकर लौटो।'

सर्गेई बन्दूक से छूटी गोली की तरह सड़क पर जा निकला।

पावल्युक और गोलुब की टुकड़ियों में जो जमकर लड़ाई हुई थी, उसके तीसरे रोज कत्लेआम शुरू हुआ।

शेपेतोवका से खदेड़े जाने पर पावल्युक ने उसके पास-पड़ोस तक की जगह छोड़ दी थी और करीब के एक कस्बे पर दखल कर लिया था। शेपेतोवका की उस रात की लड़ाई में उसके बीस आदमी मारे गये थे। गोलुब के भी इतने ही आदमी मारे गये थे।

मुर्दों को गाड़ियों पर लादकर जल्दी से कब्रिस्तान ले जाया गया और बिना किसी समारोह के उसी दिन दफन कर दिया गया। समारोह होता भी तो किस बात का; इस समूचे कांड में गर्व करने जैसी तो कोई चीज न थी। दो ऐटमनों ने सड़क के कुत्तों की तरह लड़ना शुरू कर दिया था और किसी भी तरह का कोई समारोह बेहूदा मालूम होता।

इस झगड़े से गोलुब की रेजिमेंट के लोग और खासकर उसके अंगरक्षक भुनभुना रहे थे क्योंकि उन्हीं के सबसे ज्यादा आदमी मारे गये थे। इस असंतोष को खतम करने के लिए और उनके अंदर फिर से जोश भरने के लिए, पालियानित्स्या ने कत्लेआम का प्रस्ताव किया और गोलुब से कहा, 'अच्छा रहेगा, इससे सिपाहियों का दिल बहल जायगा।' उसने तर्क पेश किया कि सैनिकों में जो आक्रोश है, उसको देखते हुए यह चीज जरूरी है। और गो, कर्नल साहब शराबखाने वाले की लड़की से अपनी शादी के ठीक पहले शहर की शांति भंग नहीं करना चाहते थे, तो भी आखिरकार उन्होंने अपनी रजामंदी दे दी।

यहूदियों का कत्लेआम खूब सबेरे शुरू हुआ।

शहर अभी पौ फटने के ठीक पहले के धुँधलके में लिपटा हुआ था। यहूदी बस्ती के बेतरतीब बने हुए उन छोटे-छोटे घरों के इर्द-गिर्द गीले कपड़े की चिन्दियों की तरह लटकी हुई सूनी-सूनी सड़कें अभी बेजान थीं। चुस्त पर्दों में से बन्द खिड़कियाँ अपनी अंधी आँखों से घूर रही थीं।

बस्ती को बाहर से देखने से मालूम होता था मानो वह सबेरे की गहरी नींद में हो। मगर, घरों के अन्दर कहीं नींद न थी। समूचे परिवार पूरे-पूरे कपड़े पहने, आपस में सटे एक कमरे में बैठे हुए थे और आने वाली तबाही के लिए अपने आपको तैयार कर रहे थे। सिर्फ बच्चे, जो बहुत छोटे थे और नहीं समझ सकते थे कि यह सब क्या हो रहा है, अपनी माँओं की गोदों में चैन से सो रहे थे।

गोलुब की अंगरक्षक टुकड़ी का प्रधान, सलोमिगा, जिसका जिप्सियों जैसा स्याह रंग था और जिसके गाल पर तलवार के घाव का लाल दाग था, गोलुब के सहचर पालियानित्स्या को जगाने की बड़ी कोशिश कर रहा था और पालियानित्स्या उस दुःस्वप्न की पकड़ से अपने-आपको छुड़ा नहीं पा रहा था जिसने सारी रात उसको सताया था : वह अजीब तरह से मुँह बनाये, दाँत निकाले कूबड़वाला राक्षस अब भी उसकी गर्दन को अपने नाखूनी पंजों से दबोच रहा था। आखिरकार उसने आँखें खोलीं, अपना दर्द से फटता हुआ सिर उठाया और सलोमिगा को देखा।

सलोमिगा ने कंधा पकड़ कर उसको हिलाते हुए कहा, 'उठ भी, अलाल ! काम का वक्त है और तुम पड़े सो रहे हो। लगता है रात को जरा ज्यादा चढ़ा गये थे।'

पालियानित्स्या अब अच्छी तरह जग गया था। वह उठ बैठा था और सीने में जलन होने से मुँह बना रहा था।

सलोमिगा को खाली-खाली निगाहों से घूरते हुए उसने पूछा, 'क्या काम है ?'

'इन यहूदी हरामजादों का सफाया जो करना है ! भूल गये क्या ?'

पालियानित्स्या को सारी बात याद हो आयी । सचमुच, वह भूल गया था । फार्म पर शराब का दौर चला था, जहाँ हुजूर कर्नल अपनी प्रेयसी और कुछ लँगोटिया यारों को लेकर मौज उड़ाने चले गये थे, वहीं वह सचमुच बहुत चढ़ा गया था ।

गोलुब को कत्लेआम के वक्त शहर छोड़कर चले जाना सुविधाजनक मालूम हुआ क्योंकि तब अगर बाद में कोई बात उठती भी, तो वह कह सकता था कि उसकी अनुपस्थिति में किसी गलतफहमी के कारण यह चीज हो गयी है और इस बीच पालियानित्स्या को इस काम मैं खुलकर खेलने का पूरा मौका था । इसमें शक नहीं कि 'तबियत बहलाने' का प्रबन्ध करने में पालियानित्स्या माहिर था !

पालियानित्स्या ने अपने सिर पर एक बाल्टी पानी डाला जिससे उसके होश-हवास लौट आये । तरो-ताजा होकर हुक्म जारी करता हुआ वह हेडक्वार्टर में घूमने लगा ।

अंगरक्षक टुकड़ी के सौ लोग अपने घोड़ों पर सवार हो चुके थे । किसी किस्म की कोई गड़बड़ी न हो, इसका विचार करके दूरदर्शी पालियानित्स्या ने खास शहर और मजदूरों की बस्ती और स्टेशन के बीच सन्तरी तैनात करने का हुक्म दे दिया था । सड़क के सामने लेशचिन्स्की के बगीचे में एक मशीनगन लगा दी गई थी ताकि अगर मजदूर कुछ गड़बड़ी करें तो उन पर गोली की बौछार की जा सके ।

सारी तैयारियाँ पूरी हो जाने पर पालियानित्स्या और सलोमिगा अपने घोड़ों पर सवार हुए ।

पालियानित्स्या ने चलते-चलते कहा, 'रुको, मैं तो भूल ही गया था । गोलुब के लिए विवाह का उपहार लाने को हमें दो गाड़ियाँ भी तो ले लेनी चाहिए । हाः हाः हाः ! हमेशा ही की तरह लूट का पहला माल कमांडर साहब के लिए और पहली लड़की ... हाः हाः हाः ... उनके अनुचर के लिए — यानी मेरे लिए । समझे कि नहीं बुद्धू राम ?'

यह अन्तिम बात सलोमिगा को सम्बोधित करके कही गई थी जो अपनी पीली-पीली आँखों से उसे घूर रहा था ।

'घबराओ मत, लड़कियों की कोई कमी न होगी, सबके लिए इन्तजाम हो जायगा ।'

उन्होंने अपने घोड़ों को एड़ लगायी और घुड़सवारों के बेतरतीब गिरोह को लेकर आगे बढ़े ।

कुहरा साफ हो गया था जब पालियानित्स्या ने एक दुमंजिले मकान के

सामने अपना घोड़ा रोका। मकान पर जंग-लगा साइन-बोर्ड लटक रहा था : 'फुक्स, कपड़े वाला।'

उसकी पतली-पतली टाँगों वाली, भूरे रंग की घोड़ी गली में लगे हुए पत्थरों पर पैर पटकने लगी।

पालियानित्स्या ने घोड़ी पर से नीचे कूदते हुए कहा, 'अच्छा तो अब यहीं से हम शुरू करेंगे, खुदा हाफिज।'

अपने चारों तरफ घिरते हुए सिपाहियों की भीड़ को मुखातिब करते हुए उसने कहा, 'अपने घोड़ों से उतरो, दोस्तो! अब खेल शुरू हो रहा है। मैं पहले ही तुमको बतला देना चाहता हूँ कि मैं नहीं चाहता कि अभी सिर-विर फोड़े जायें, उसका भी वक्त आयेगा। जहाँ तक लड़कियों की बात है, अगर मुमकिन हो तो शाम तक सब्र करो।'

एक आदमी ने अपने मजबूत दाँत दिखलाते हुए आपत्ति की :

'और अगर हुजूर खोरूँजी, यह चीज दोनों की रजामन्दी से हो तब?'

बड़े जोर का कहकहा पड़ा। पालियानित्स्या ने प्रशंसा और समर्थन की दृष्टि से उस आदमी को देखा जिसने यह बात कही थी।

'वह बात अलग है — रजामन्द हों तब फिर क्या बात है! तब फिर कैसा रुकना-रुकाना! इस चीज को कोई मना नहीं कर सकता है!'

पालियानित्स्या ने आगे बढ़कर दूकान के बन्द दरवाजे पर जोर से ठोकर लगाई। मगर दरवाजे के मोटे-मोटे मजबूत ओक के पल्ले हिले तक नहीं।

जाहिर है कि शुरू करने के लिए यह जगह ठीक न थी। पालियानित्स्या घूमकर फुक्स के घर के दरवाजे की ओर बढ़ा। आगे बढ़ते हुए उसने तलवार को अपने हाथ का सहारा दिया। सलोमिगा उसके पीछे-पीछे था।

घर के अन्दर के लोगों ने बाहर पक्की सड़क पर घोड़ों की टाप की आवाज सुनी थी और जब यह आवाज दूकान के सामने आकर रुकी और सिपाहियों की आवाजें दीवार को भेद कर अन्दर पहुँचीं, तो उन्हें ऐसा लगा जैसे उनके दिल की धड़कन रुक गयी हो और उनका शरीर अकड़कर रह गया हो।

अमीर फुक्स एक रोज पहले ही अपनी बीवी और लड़कियों को लेकर शहर के बाहर चला गया था। केवल अपनी नौकरानी रीवा को जायदाद की देखभाल के लिए वह पीछे छोड़ गया था। रीवा बहुत सीधी-सादी, उन्नीस साल की भीरु-सी लड़की थी। यह देख कर कि वह उस सूने मकान में अकेले रहने से डर रही है, फुक्स ने उससे कहा था कि जब तक वे लोग लौट न आवें, तब तक के लिए वह अपने बूढ़े बाप और माँ को अपने साथ रहने के लिए बुला ले।

इस वक्त वे तीनों खड़े हुए डर के मारे काँप रहे थे। कोई आस न थी,

मगर तब भी वे आस लगाये थे कि शायद घुड़सवार आगे निकल जायें; शायद समझने में उनसे भूल हुई थी, शायद यह उनका भ्रम था कि घोड़े उनके मकान के सामने रुके हैं। मगर दूकान के दरवाजे पर जो ठोकर लगी थी, उसकी भारी गूँज ने उनकी उम्मीदों को चूर कर दिया।

बूढ़ा, चाँदी जैसे बालों वाला पेईसाख, दरवाजे के पास खड़ा था। उसकी नीली-नीली आँखें सहमे हुए बच्चे की तरह माथे पर जा लगी थीं। एक कट्टर आस्तिक की तरह पूरे भावावेश से वह सर्वशक्तिमान जेहोवा की बुदबुदाकर प्रार्थना कर रहा था। वह भगवान से प्रार्थना कर रहा था कि इस घर को संकट से बचा लो और उसके पास खड़ी हुई उसकी बूढ़ी स्त्री ने थोड़ी देर को पास आते हुए कदमों की आहट को नहीं सुना क्योंकि वह प्रार्थना के स्वर में खो गई थी।

रीवा भाग कर सबसे दूर वाले कमरे में चली गई थी और वहाँ ओक की लकड़ी के बड़े साइड-बोर्ड के पीछे छिप गयी थी।

दरवाजे पर एक जबर्दस्त, दरवाजे को जैसे तोड़ देने वाली चोट पड़ी, जिससे बूढ़े-बुढ़िया काँप गये।

'दरवाजा खोलो !' और फिर दूसरी चोट, पहले से भी ज्यादा प्रबल, दरवाजे पर पड़ी और फिर गालियों की आवाजें सुनाई दीं।

मगर वे जो अन्दर थे, डर के मारे सुन्न पड़ गये थे और दरवाजे की कुंडी खोलने के लिए हाथ नहीं उठा सके।

बाहर, दरवाजे पर राइफिल के कुन्दे बरस रहे थे। आखिरकार दरवाजा टूट गया।

मकान हथियारों से लैस आदमियों से भर गया। ये लोग मकान के कोने-कोने को छानने लगे। राइफिल के कुन्दे की एक चोट से दूकान के भीतर खुलने वाला दरवाजा टूट गया और फिर बाहर के दरवाजे की कुंडियाँ भीतर से खोल दी गईं।

और फिर लूटपाट शुरू हुई।

जब गाड़ियाँ कपड़े की पेटियों, जूतों और लूट के दूसरे सामान से अच्छी तरह भर गयीं, तो सलोमिगा इनको लेकर गोलुब के क्वार्टर की तरफ रवाना हो गया। वहाँ से लौटने पर उसने घर के अन्दर से एक डरी हुई चीख निकलती सुनी।

पालियानित्स्या ने अपने आदमियों को दूकान लूटने के लिए छोड़ दिया था और खुद मालिक-मकान के घर के भीतर घुस गया था। वहाँ पर उसने उन बूढ़े-बुढ़िया और उनकी लड़की को खड़े पाया। उनको अपनी हरी-हरी बिल्ली जैसी आँखों से देखते हुए उसने बूढ़े दम्पति को डपट कर आदेश दिया :

'तुम लोग यहाँ से बाहर निकल जाओ !'

माँ-बाप दोनों में से कोई भी न हिला।

पालियानित्स्या एक कदम आगे बढ़ा और धीरे-धीरे म्यान से अपनी तलवार निकाली।

'माँ !' वह लड़की दिल को हिला देने वाली आवाज में चिल्लाई। सलोमिगा ने इसी चीख को सुना था।

पालियानित्स्या अपने आदमियों की तरफ मुड़ते हुए, जो इस चीख को सुनकर वहाँ इकट्ठा हो गए थे, उन दोनों बुड्ढों की तरफ इशारा करके भौंक कर बोला :

'इन्हें बाहर फेंक दो !' जब यह काम पूरा हो गया तो उसने वहाँ उपस्थित सलोमिगा से कहा, 'तुम यहाँ दरवाजे पर जरा निगरानी रखो तब तक मैं उस छोकरी से दो बातें कर लूँ !'

लड़की दुबारा चिल्लायी। बूढ़ा पेइसाख कमरे के दरवाजे की तरफ लपका। मगर उसकी छाती पर एक जबर्दस्त चोट लगी और वह पीछे की दीवार से जा टकराया। दर्द से उसका दम घुट रहा था। बूढ़ी माँ तोइबा, जो सदा इतनी शान्त और नम्र रहती थी, अब अपने बच्चे के लिए लड़ती हुई मादा भेड़िये की तरह सलोमिगा पर झपटी।

'मुझे अन्दर जाने दो ! तुम मेरी लड़की को क्या कर रहे हो ?'

वह दरवाजे के पास पहुँचने के लिए जोर लगा रही थी और सलोमिगा अपनी सारी कोशिश के बावजूद अपने कोट को उसकी बूढ़ी उँगलियों की गिरफ्त से छुड़ा नहीं पा रहा था।

पेइसाख, जो अपनी चोट और दर्द के बाद अब तक होश में आ गया था, तोइबा की मदद के लिए आया।

'हमें अन्दर जाने दो ! अन्दर जाने दो ! हाय, मेरी बेटी !'

बूढ़े दम्पति ने अपनी मिली-जुली कोशिश से सलोमिगा को किसी तरह दरवाजे से दूर ढकेल दिया था। सलोमिगा ने गुस्से में आकर झटके के साथ अपना रिवाल्वर कमरबन्द से निकाला और उसके लोहे के हत्थे से बूढ़े के सफेद सिर पर जोर से चोट की। पेइसाख वहीं फर्श पर ढेर हो गया।

कमरे के अन्दर रीवा चीख रही थी।

जब तोइबा घसीट कर घर के बाहर की गई, उसका दिमाग काबू से बाहर था और उसकी पागलों जैसे चीखों और मदद की पुकारों से सड़क गूँज रही थी।

घर के अन्दर पूर्ण शान्ति थी।

पालियानित्स्या कमरे के बाहर आया। सलोमिगा को बिना देखे, जिसका

हाथ दरवाजे के हैण्डिल पर जा चुका था, पालियानित्स्या ने उसको अन्दर जाने से रोका।

'बेकार है — मैंने तकिये से उसका मुँह बन्द करने की कोशिश की तो उसका दम घुट गया।' पेइसाख के जिस्म पर पैर रखते हुए उसको किसी स्याह चिपचिपी चीज का एहसास हुआ। यह और कुछ नहीं, पेइसाख का खून था।

बाहर जाते हुए उसने बुदबुदाकर कहा, 'बोहनी ठीक नहीं हुई।'

दूसरे भी बिना एक शब्द बोले उसके पीछे-पीछे बाहर निकले और फर्श और सीढ़ियों पर अपने खून में डूबे पैरों की छाप छोड़ते गये।

शहर में लूटपाट पूरे जोर पर थी। उसी में कभी-कभी लुटेरे माल के बँटवारे को लेकर जंगली जानवरों की तरह आपस में लड़ पड़ते और यहाँ-वहाँ तलवारें चमक उठतीं। घूँसे तो सभी जगह धड़ल्ले से चल रहे थे। बियर के सेलून में से पच्चीस गैलनवाले पीपे बाहर लुढ़काकर सड़क की पटरी पर इकट्ठे किये जा रहे थे।

फिर लुटेरों ने यहूदियों के घरों में घुसना शुरू किया।

कोई प्रतिरोध नहीं हुआ। वे तमाम कमरों में गये, जल्दी-जल्दी एक-एक कोने को उल्टा-पल्टा और लूट का माल लादकर चलते बने। अपने पीछे वे कुछ छोड़ गये थे तो कपड़ों के बिखरे हुए ढेर और तलवार की नोक से चिरे हुए गद्दों और तकियों के अन्दर से निकले हुए चिड़ियों के पर। पहले रोज तो सिर्फ दो जानें गयीं : रीवा की और उसके बाप की; मगर आनेवाली रात अपने साथ मौत का अनिवार्य आतंक लेकर आयी।

शाम तक भिश्तियों और भंगियों की जमात नशे में धुत पड़ी थी। पेतल्युरा के पागल सिपाही रात का इन्तजार कर रहे थे।

अंधेरे ने उनके रहे-सहे बंधन भी खोल दिये। घुप्प अंधेरे में आदमी को खत्म करना आसान होता है; सियार भी अंधेरे के घंटों को ज्यादा पसन्द करते हैं।

शायद ही कोई कभी इन दो भयानक रातों और तीन दिनों को भूल सके। इस बीच न जाने कितनी जिन्दगियाँ पिसी और लहू-लुहान हुईं, इन खूनी घड़ियों में न जाने कितने जवानों के बाल सफेद हुए, न जाने तीखे दर्द के कितने आँसू बहे! कहना मुश्किल है कि वे जो बच गये थे ज्यादा सौभाग्यशाली थे — वे जो जिन्दा तो बचे थे मगर जिनकी आत्मा लुट गयी थी, वीरान हो गयी थी, जिन्हें अपने अपमान और लुटी हुई इज्जत की शर्म की दारुण यंत्रणा खाये जा रही थी; जिन्हें अवर्णनीय दुःख कीड़े की तरह कुतर रहा था, दुःख अपने उन आत्मीयों और प्रियजनों के लिए जो अब कभी नहीं लौटेंगे। इस

सबसे उदासीन, नौजवान लड़कियों के घायल, सताये हुए, टूटे हुए शरीर यंत्रणा की अनेकानेक मुद्राओं में बाँहें पीछे की तरफ फेंके, सँकरी गलियों में पड़े थे।

सिर्फ एक जगह, नदी के सामनेवाले मकान में जहाँ नाउम लोहार रहता था, उन गीदड़ों को, जो उसकी नौजवान बीवी सारा पर झपटे थे, करारा जवाब मिला। वह लुहार चौबीस साल का मजबूत नौजवान था और उसकी लोहे जैसी मांस-पेशियाँ वैसी ही थीं जैसी कि अपनी जीविका के लिए भारी हथौड़ा चलाने वाले किसी आदमी की होनी चाहिए। उस लुहार ने अपनी बीवी उनके हाथ नहीं पड़ने दी।

उस छोटी-सी झोंपड़ी में संघर्ष हुआ तो थोड़ी ही देर मगर बहुत भयानक। दो पेतल्युरा सिपाहियों का सिर सड़े हुए खरबूजों की तरह भुर्ता हो गया था। निराशा के भयानक क्रोध में वह लुहार दो जानों के लिए सिर पर कफन बाँधकर लड़ रहा था। बड़ी देर तक नदी किनारे से राइफिलें चलने की आवाज आती रही। खतरे का आभास पाकर तमाम लुटेरे वहाँ आ गये थे। जब उस लोहार के पास सिर्फ एक गोली बच रही, तो उसने अपनी बीवी को गोली मार दी और सचमुच उस पर एहसान किया, फिर खुद संगीन हाथ में लेकर अपनी मौत का सामना करने बाहर निकल पड़ा। गोलियों की एक बौछार आई और उसका मजबूत जिस्म अपने सामने वाले दरवाजे के बाहर धरती पर ढेर हो गया।

आसपास के गाँवों के धनी समृद्ध किसान अपनी घोड़ा-गाड़ियों में, जिन्हें अच्छे तगड़े घोड़े खींच रहे थे, शहर के अन्दर आये। उन्होंने अपनी गाड़ियों में जो कुछ अच्छा लगा, लादा और गोलुब की सेना में काम करने वाले अपने बेटों और सम्बंधियों के पहरे में जल्दी-जल्दी घर चले ताकि एक-दो फेरे और कर सकें।

सर्योजा ब्रुजाक जिसने अपने बाप के साथ प्रेस के आधे साथियों को तहखाने में और ऊपर वाली कोठरी में छिपाया था, बागीचा पार करके घर आ रहा था जब उसने एक आदमी को लम्बा-सा, पैबन्द लगा कोट पहने, जोरों से बाँहें हिलाते सड़क पर भागते देखा।

यह एक बूढ़ा यहूदी था और इस नंगे-सिर हाँफते हुए आदमी के पीछे-पीछे, जिसके चेहरे को डर के मारे लकवा-सा मार गया था, एक पेतल्युरा सिपाही अपने भूरे रंग के घोड़े पर सवार सरपट चला आ रहा था। उनके बीच का फासला तेजी से कम होता जा रहा था, यहाँ तक कि घुड़सवार अपने शिकार को तलवार से काट देने के लिए अपनी काठी से आगे की ओर झुका।

अपने पीछे घोड़े की टापें सुनकर बूढ़े ने जैसे चोट रोकने के लिए हाथ ऊपर को उठाया। उसी वक्त सर्योजा कूदकर सड़क पर आ गया और उस बूढ़े को बचाने के लिए उसने खुद को घोड़े के आगे डाल दिया।

'उसे छोड़ दे ! कुत्ता, लुटेरा कहीं का !'

घुड़सवार ने नीचे गिरती हुई तलवार को रोकने की कोई कोशिश न की और तलवार उल्टी तरफ से लड़के के सुनहरे बालों वाले सिर पर गिरी।

पाँच

बोल्शेविक फौजें 'चीफ ऐटमन' पेतल्युरा की टुकड़ियों पर जबर्दस्त दबाव डाल रही थीं और इसलिए गोलुब की रेजिमेन्ट को मोर्चे पर बुला लिया गया। शहर में सिर्फ कुछ रियरगार्ड टुकड़ियाँ और कमांडैण्ट के कुछ खास अपने सिपाही रह गये।

लोगों में हरकत पैदा हुई। इस अस्थायी शान्ति का फायदा उठा कर यहूदी आबादी ने अपने मुर्दा लोगों को दफना दिया और यहूदी बस्ती की छोटी छोटी झोंपड़ियों में जिन्दगी एक बार फिर लौट आयी।

खामोश शामों को गोली-गोले चलने की अस्पष्ट आवाज दूर से सुनाई पड़ती थी; कहीं पास में ही लड़ाई चल रही थी।

स्टेशन पर रेलवे मजदूर अपनी नौकरियों को छोड़ कर काम की तलाश में गाँवों की तरफ जा रहे थे।

हाई स्कूल बंद कर दिया गया था।

शहर में मार्शल-लॉ जारी कर दिया गया था।

यह एक काली वीभत्स डरावनी रात थी, ऐसी रात जब चाहे जितना जोर डालो आँखें अँधेरे को चीर नहीं पातीं, ऐसे में आदमी अँधेरे में राह टटोलता हुआ घूमता है और हर वक्त उसे डर बना रहता है कि वह किसी गड्ढे में जा गिरेगा और उसका काम तमाम हो जायगा।

भद्र लोग जानते हैं कि ऐसे समय अँधेरे में घर पर बैठने में ही खैरियत है ! अगर उसका बस चले तो भद्र नागरिक घर में लैम्प भी न जलायें क्योंकि रोशनी से अनचाहे अतिथि खिंचकर आ सकते हैं। अँधेरा ही अच्छा है, हिफाजत तो रहती है। होने को ऐसे भी लोग होते हैं जो हमेशा अस्थिर रहते हैं — उनका जी चाहे तो वे बाहर निकलें, मगर भद्र नागरिक को इससे बहस नहीं।

वह खुद बाहर जाने का खतरा नहीं उठायेगा — किसी कीमत पर नहीं।

यह ऐसी ही एक रात थी। मगर फिर भी, एक आदमी सड़क पर चला जा रहा था।

कोर्चागिन के मकान पर पहुँचकर उसने सावधानी से खिड़की पर दस्तक दी। कोई जवाब नहीं मिला। उसने दुबारा दस्तक दी — इस बार ज्यादा जोर से और कई बार।

पावेल सपना देख रहा था कि एक अजीब सा प्राणी, जो आदमी तो किसी तरह नहीं है, उसके ऊपर मशीनगन का निशाना साध रहा है; वह भाग जाना चाहता था, मगर भाग कर जाने के लिए कोई जगह न थी और मशीनगन बहुत भयानक स्वर में कड़कड़ा रही थी।

वह जागा तो उसने खिड़की को खड़खड़ाते सुना। कोई दस्तक दे रहा था।

पावेल कूद कर बिस्तर से उतरा और यह देखने के लिए कि कौन है, खिड़की के पास पहुँचा, मगर उसे वहाँ एक धुँधली, काली आकृति के अलावा और कुछ न दिखायी दिया।

वह घर में बिल्कुल अकेला था। उसकी माँ उसकी सबसे बड़ी बहन के यहाँ चली गयी थी, जिसका पति शकर के कारखाने में मैकेनिक था। आर्तेम पास के गाँव में लुहार का काम कर रहा था; अपनी जीविका के लिए हथौड़ा चला रहा था।

मगर फिर भी आर्तेम के अलावा दूसरा हो भी कौन सकता है।

पावेल ने खिड़की खोलने का निश्चय किया।

उसने अंधेरे में कहा, 'कौन है ?'

खिड़की के बाहर कुछ गति हुई और एक रुंधी हुई आवाज ने जवाब दिया :

'मैं हूँ जुखराई।'

खिड़की की देहली पर दो हाथ रखे हुए थे और फिर फियोदोर का सिर ऊपर उठा और पावेल के चेहरे की बराबरी में आ गया।

जुखराई ने फुसफुसाकर कहा, 'मैं तुम्हारे साथ रात गुजारने आया हूँ। तुम्हें कोई आपत्ति तो नहीं, कामरेड ?'

पावेल ने आन्तरिक स्नेह से जवाब दिया, 'कैसी बात करते हो। तुम जानते हो कि यहाँ पर सदा तुम्हारा स्वागत है। कूदकर अन्दर आ जाओ।'

फियोदोर ने थोड़ी सी खुली हुई खिड़की में से सिकुड़ कर अपने विशाल शरीर को अन्दर किया।

उसने खिड़की तो बन्द कर दी, मगर तत्काल वहाँ से हटा नहीं। वह गौर से सुनता खड़ा रहा और जब चाँद बादलों के पीछे से बाहर आया और सड़क

दिखने लगी तो उसने बहुत ध्यान से सड़क को देखा। फिर वह पावेल की तरफ मुड़ा और बोला :

'तुम्हारी माँ को हम लोग न जगायेंगे, है न !'

पावेल ने उसे बतलाया कि घर में उसको छोड़कर और कोई नहीं है। यह सुनकर मल्लाह को और इतमीनान हुआ और वह पहले से कुछ ऊँची आवाज में बोलने लगा।

'अब वे हत्यारे सचमुच जी-जान से मेरे पीछे लगे हैं, दोस्त। स्टेशन पर जो कुछ हुआ था, उसी के बाद से सब मेरे पीछे पड़े हैं। अगर कहीं हमारे लोगों ने जरा और हिम्मत दिखलायी होती तो हमने कत्लेआम के दौरान में उन भूरे कोट वालों को अच्छा मजा चखाया होता। मगर असल बात यह है कि लोग अभी आग में कूदने के लिए तैयार नहीं हैं। इसीलिए, इस सबका कोई नतीजा नहीं निकला। अब सब मेरी तलाश में हैं और मेरे लिए दो बार जाल डाल चुके हैं — आज तो मैं बाल-बाल बचा। पीछे के रास्ते से मैं घर जा रहा था और पीछे मुड़कर देखने के लिए शेड पर रुका ही था कि एक पेड़ के पीछे से एक संगीन निकली हुई मुझे दिखायी दी। मैं लौट पड़ा और सीधे तुम्हारे यहाँ आया। अगर तुम्हें कोई एतराज न हो तो कुछ दिन के लिए मैं यहीं लंगर डाल दूँ। ठीक है न, दोस्त ? बहुत अच्छा।'

अभी भी जुखराई की साँस भारी चल रही थी। उसने अपने कीचड़ में सने जूते उतारने शुरू किये।

पावेल खुश था कि जुखराई आ गया है। पिछले कई दिनों से बिजली-घर काम नहीं कर रहा था और पावेल को अपने वीरान घर में बहुत सूना-सूना लगता था।

दोनों सोने चले गये। पावेल तो फौरन सो गया, मगर फियोदोर बहुत देर तक बिस्तर में लेटा-लेटा सिगरेट पीता रहा। फिर वह उठा और नंगे पैर, पंजों के बल, खिड़की तक गया और बड़ी देर तक सड़क को देखता रहा। आखिरकार थकान से चूर होकर वह लेट गया और सो गया, मगर उसका हाथ अपने भारी 'कोल्ट' पिस्तौल के हत्थे पर ही था जिसे उसने अपने तकिये के नीचे रख लिया था और जिसको उसके शरीर की गरमी मिल रही थी।

जुखराई का उस रात का अप्रत्याशित आगमन और फिर वे आठ दिन जो उसने जुखराई के संग बिताये थे, उन्होंने पावेल की सारी जिन्दगी की धारा पर असर डाला। उस मल्लाह ने उसे सबसे पहले उन अनेक चीजों की अन्त-र्दृष्टि दी जो नयी थी, गतिशील थी, महत्वपूर्ण थी।

जुखराई के लिए दो बार जो घातें लगायी गयी थीं, उन्होंने जुखराई को घर में छिपकर बैठने के लिए मजबूर किया। उसने इस तरह मजबूर होकर बेकार बैठे रहने की स्थिति का सदुपयोग करते हुए, पीले-और-नीले झंडेवाले लुटेरों के खिलाफ, जो सारे इलाके का गला दबोचे हुए थे, अपना सारा गुस्सा और जलती हुई नफरत उत्सुक पावेल के मन में उँडेल दी।

जुखराई जो जबान बोलता था वह सीधी थी, साफ थी और आँखों के सामने चित्र खड़ा कर देती थी। उसके मन में कोई संशय नहीं थे, उसे अपनी राह अपने सामने साफ-साफ फैली दिखायी पड़ती थी और पावेल की समझ में यह बात आ गयी कि यह सब जो बड़े-बड़े नामोंवाली बीसों राजनीतिक पार्टियाँ हैं — सोशलिस्ट रेवोल्यूशनरी, सोशल डेमोक्रैट, पोलिश सोशलिस्ट — सब असल में मजदूरों की जानी दुश्मन ही हैं और अमीरों के खिलाफ मजबूती से लड़नेवाली क्रान्तिकारी पार्टी केवल बोल्शेविक पार्टी है।

पहले पावेल का दिमाग इन सब चीजों के बारे में बुरी तरह उलझा हुआ था।

और इस तरह इस पक्के, मजबूत दिलवाले बाल्टिक सागर के मल्लाह ने, जो समुन्दरी हवाओं पर पला था, जो पक्का बोल्शेविक और १९१५ से बोल्शेविक पार्टी का सदस्य था, पावेल को जीवन के कटु सत्य बतलाये और भट्ठी झोंकनेवाला लड़का पावेल स्तब्ध होकर सब बातें सुनता रहा।

जुखराई ने कहा, 'मैं जब तुम्हारी उम्र का था, दोस्त, तो मैं भी तुम्हारी ही तरह था। मेरी समझ में ही नहीं आता था कि मैं अपनी शक्ति का क्या करूँ, मैं भी एक बेचैन नौजवान था, हर वक्त सरकशी के लिए तैयार। मैं गरीबी ही में पला और बढ़ा। कभी-कभी शहर के रईसों के लाड़ से बिगड़े हुए, मोटे-ताजे लड़कों को देखकर मेरी आँखों में खून उतर आता था। अक्सर मैं उनकी खूब अच्छी तरह मरम्मत करता। मगर इसका नतीजा कुछ और न निकलता सिवा इसके कि घर आने पर पिताजी कसकर मेरी मरम्मत करते। इस तरह से अकेले लड़ने से दुनिया थोड़े ही बदली जा सकती है। तुममें पावलूशा, मजदूर जमात के हक में लड़ने वाले सिपाही के तमाम गुण हैं, बस तुम अभी बहुत छोटे हो और वर्ग-संघर्ष के बारे में ज्यादा नहीं जानते। मगर दोस्त, मैं तुमको ठीक रास्ते पर लगा दूँगा क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम अच्छे लड़ाके निकलोगे। मेरी उन लोगों से नहीं बनती जो अपने तुच्छ सुख के पीछे पागल रहते हैं और बस आराम से दिन गुजार देना चाहते हैं। इस वक्त सारी दुनिया में आग लगी हुई है। अब तक के गुलामों ने सिर उठाया है और पुरानी जिन्दगी का बेड़ा गर्क करना ही होगा। मगर इसके लिए मजबूत इरादे के लोगों की जरूरत है, कमजोर लड़कियों-जैसों की नहीं जो लड़ाई शुरू होने पर

झींगुरों की तरह अपने बिलों में घुस जायेंगे। हमें चाहिए मजबूत लोग जो निर्मम होकर लड़ सकें।'

उसकी बँधी हुई मुट्ठी जोर से मेज पर गिरी।

वह उठ खड़ा हुआ। उसकी त्योरियों में बल पड़ गये और वह जेब में खूब अन्दर तक हाथ डाले कमरे में चहलक़दमी करने लगा।

अपनी बेकारी उसे खल रही थी। उसे इस बात का बड़ा अफसोस था कि वह शहर में रुक गया था। उसे यकीन हो गया था कि शहर में अब और रुकने में कोई तुक नहीं है और उसने पक्का इरादा कर लिया था कि लाल टुकड़ियों से जा मिलने के लिए वह लड़ाई के मोर्चे को पार करेगा।

तय पाया गया था कि नौ पार्टी मेम्बरों का दल काम को जारी रखने के लिए शहर में रहेगा।

'मेरे बगैर उनका काम चल जायगा। मैं अब और बेकार नहीं बैठ सकता। यों ही मैं दस महीने बर्बाद कर चुका हूँ,' जुखराई ने खीझते हुए सोचा।

'सच बतलाओ फियोदोर, तुम क्या हो ?' पावेल ने एक बार उससे पूछा।

जुखराई उठ खड़ा हुआ और हाथ जेब के अन्दर डाल लिये। इस सवाल का मतलब एकाएक उसकी समझ में नहीं आया।

'तुम नहीं जानते ?'

पावेल ने मद्धिम आवाज में कहा, 'मेरे खयाल से तुम बोल्शेविक या कम्युनिस्ट हो।'

जुखराई ठठाकर हँस पड़ा और चुस्त, धारीदार जर्सी से ढँकी अपनी खूब चौड़ी छाती पर हाथ मारा।

'तुमने ठीक कहा, दोस्त ! यह बात उतनी ही ठीक है जितनी यह कि बोल्शेविक और कम्युनिस्ट एक ही होते हैं।' फिर वह एकाएक गंभीर हो गया। 'लेकिन तुमने जब यह बात समझ ली है तो इसे अपने ही तक रखना। अगर तुम यह नहीं चाहते कि मैं पकड़ा जाऊँ तो इसे किसी से या किसी जगह मत कहना। समझे ?'

पावेल ने दृढ़ता से जवाब दिया, 'हाँ, मैं समझ गया।'

बाहर सहन में आवाजें सुनायी दीं और किसी ने बिना पहले दस्तक दिये धक्का देकर दरवाजे को खोला। जुखराई का हाथ झट उसकी जेब में चला गया, मगर फिर बाहर आ गया जब उसने कमजोर और पीले सर्गेई ब्रुजाक को सिर में पट्टी बाँधे कमरे में दाखिल होते देखा। ब्रुजाक के पीछे-पीछे वालिया और क्लिम्का थे।

सर्गेई ने पावेल से हाथ मिलाते हुए मुस्कराकर कहा, 'कहो प्यारे क्या हाल-चाल हैं ? हम तीनों ने तय किया कि चलें, तुमसे मिल आयें। वालिया

मुझे अकेले बाहर निकलने देने के लिए तैयार न थी और क्लिम्का को वालिया के अकेले निकलने से डर लगता है। क्लिम्का का सिर भले लाल हो, मगर वह जानता है कि उसे क्या करना चाहिए !'

वालिया ने खिलण्डरेपन से सर्गेई के मुँह पर हाथ रख दिया और हँसते हुए बोली, 'किस कदर बातूनी है ! आज इसने क्लिम्का को जरा चैन नहीं लेने दिया।'

क्लिम्का भी खुश होकर मुस्कराया और उसके सफेद दाँतों की पाँत दिखायी दी।

'बीमार आदमी के साथ और किया ही क्या जा सकता है ? देखते हो न, दिमाग में जरा खलल है !'

सब हँसने लगे।

सर्गेई, जो तलवार की चोट के असर से अभी पूरी तरह ठीक नहीं हुआ था, पावेल के बिस्तर पर बैठ गया और फिर सब नौजवान दिलचस्प बातचीत में डूब गये। सर्गेई, जो आम तौर पर बड़ा खुशदिल और हँसोड़ था, आज चुप और बुझा-बुझा सा बैठा था। उसने पेतल्युरा सिपाही से अपनी मुठभेड़ की बात जुखराई को बतलायी।

जुखराई इन तीनों नौजवानों को जानता था क्योंकि वह कई बार ब्रुजाक के घर जा चुका था। उसे ये लड़के बहुत पसन्द थे; संघर्ष के भँवर में अभी उन्हें अपनी जगह नहीं मालूम थी, मगर अपने वर्ग की आकांक्षाएँ उनमें अच्छी तरह व्यक्त थीं। उसने बहुत दिलचस्पी से उनके बयानों को सुना कि उन्होंने किस तरह यहूदी परिवारों को मार-काट से बचाने के लिए उन्हें शरण देने में मदद पहुँचायी। उस शाम को जुखराई ने उन लड़कों को बोल्शेविकों और लेनिन के बारे में बहुत कुछ बतलाया और इस तरह होनेवाली घटनाओं को समझने में उन्हें मदद पहुँचायी।

पावेल के अतिथि काफी वक्त गये विदा हुए।

जुखराई हर शाम बाहर निकल जाता था और बहुत रात गये लौटता था। शहर छोड़ने के पहले उसे अपने उन साथियों के साथ बहुत सी बातों का फैसला करना था जो शहर में रुकनेवाले थे, यानी यह कि क्या काम करना होगा और कैसे करना होगा।

इस खास रात को जुखराई वापस नहीं आया। पावेल जब सबेरे उठा तो उसने एक झलक में ही देख लिया कि मल्लाह के बिस्तर पर रात में कोई सोया नहीं था।

पावेल के मन में अस्पष्ट-सी आशंका जगी। उसने जल्दी-जल्दी कपड़े पहने और घर के बाहर निकल गया। दरवाजे में ताला लगाकर और चाभी को

हमेशा की जगह रखकर वह क्लिम्का के घर गया। उसे उम्मीद थी कि क्लिम्का को फियोदोर की कुछ-न-कुछ खबर जरूर होगी। क्लिम्का की माँ, जो एक मोटी-सी स्त्री थी और जिसके चौड़े चेहरे पर चेचक के गहरे-गहरे दाग थे, कपड़े धो रही थी। पावेल ने उससे पूछा : क्या उसे मालूम है कि फियोदोर कहाँ है ?

क्लिम्का की माँ ने चिड़चिड़ाकर जवाब दिया, 'मुझे क्या और कोई काम ही नहीं है कि बस तुम्हारे फियोदोर पर निगाह रखा करूँ ! यह सब उसी के कारण है — नाश हो उसका — उस ज़ोज़ुलिखा ने घर को उलट-पुलट कर रख दिया। उससे तुम्हें क्या काम है ? अजीब ही आदमी है, अगर मेरी राय पूछो तो क्लिम्का और तुम और बाकी सब, तुम सभी एक से हो ...' वह गुस्से के साथ फिर कपड़े धोने में लग गयी।

क्लिम्का की माँ बदमिजाज औरत थी जो काट खाने दौड़ती थी ...

क्लिम्का के घर से पावेल सर्गेई के यहाँ गया। वहाँ भी उसने अपने मन के डर को सामने रखा।

वालिया बोली, 'तुम इतने परेशान क्यों हो ? हो सकता है वह किसी दोस्त के यहाँ रुक गये हों।' मगर उसके शब्दों में स्वयं ही विश्वास की कमी थी।

पावेल बहुत उद्विग्न हो रहा था और ब्रुजाक के घर ज्यादा देर तक ठहरना उसके लिए मुमकिन न था। वे लोग उसे रोकते ही रहे कि खाना खाकर जाओ, मगर वह चला गया।

वहाँ से वह सीधे घर लौटा, इस उम्मीद में कि यहाँ जुखराई मिल जायगा।

दरवाजे में ताला बन्द था। पावेल कुछ देर बाहर खड़ा रहा। उसका दिल भारी था। उस सूने वीरान घर में जाने के खयाल से ही उसे तकलीफ होती थी।

कुछ मिनट तक वह गहरे सोच में डूबा हुआ हाते में खड़ा रहा। फिर एकाएक आवेग से प्रेरित होकर शेड के अन्दर चला गया। वह छप्पर पर चढ़ा और उसके नीचे से मकड़ी के जालों को अलग करते हुए उस गुप्त जगह से चीथड़ों में लिपटा हुआ भारी 'मानलिकर' रिवाल्वर निकाला।

वह शेड से बाहर आया और स्टेशन की तरफ चला। जेब में रखे हुए रिवाल्वर के स्पर्श से उसे एक अजीब सा आनन्द मिल रहा था।

मगर स्टेशन पर जुखराई की कोई खबर न मिली। लौटते हुए जंगलों के हाकिम के बागीचे के पास पहुँचकर, जो कि अब उसका बहुत परिचित था, उसके कदम धीमे हो गये। न जाने किस उम्मीद से उसने आँख उठाकर घर

की खिड़कियों को देखा, मगर यह घर भी बागीचे की ही तरह बेजान था। बागीचा पार कर चुकने पर उसने पीछे मुड़कर उसके रास्तों पर निगाह डाली। रास्ते पिछले साल की झड़ी हुई पत्तियों से ढँके हुए थे। वह जगह उजड़ी हुई और उपेक्षित दिखलायी देती थी — किसी परिश्रमी हाथ की कोई छाप यहाँ पर न थी। उस बड़े से पुराने मकान की मृतवत नीरवता ने पावेल को और भी उदास बना दिया।

तोनिया से उसका आखिरी झगड़ा सबसे तेज रहा था। करीब एक महीने पहले यों ही अप्रत्याशित रूप से सब कुछ हो गया था।

शहर की तरफ धीरे-धीरे लौटते हुए उसने अपने हाथ जेब में डाल लिये। और उस वक्त पावेल को झगड़े की तमाम बातें याद आने लगीं।

सड़क पर अचानक उनकी मुलाकात हो गयी थी और तोनिया ने उसे अपने घर आने की दावत दी थी।

'पिताजी और माँ बोलशान्स्की के यहाँ एक सालगिरह की पार्टी में जा रहे हैं और मैं अकेली रहूँगी। तुम क्यों नहीं आ जाते, पावलूशा ? मेरे पास एक बहुत रोचक किताब है जिसे हम लोग साथ-साथ पढ़ेंगे — लिओनिद आन्द्रीएव की **साश्का जिगुलिओव**। मैं उसे खतम कर चुकी हूँ, मगर तुम्हारे संग बैठ कर दुबारा पढ़ना चाहती हूँ। बड़ी अच्छी शाम रहेगी। आओगे ?'

सुनहरे बालों पर पहनी हुई सफेद टोपी के नीचे से उसकी बड़ी-बड़ी पूरी खुली आँखें आतुरता से उसकी ओर देख रही थीं।

'मैं आऊँगा।'

इसके बाद वे अलग हो गये।

पावेल भाग कर अपनी मशीनों के पास गया और इस ख़याल से ही कि उसकी एक पूरी शाम तोनिया के संग गुजरेगी, आतिशदान की लपटें और तेजी से जलने लगीं और जलती हुई लकड़ी के कुन्दे हमेशा से ज्यादा मस्ती से चिटखने लगे।

उस समय जब पावेल ने तोनिया के मकान के दरवाजे पर दस्तक दी और तोनिया ने दरवाजा खोला, तो पावेल ने उसे कुछ हैरान और परेशान पाया।

तोनिया ने कहा, 'मेरे यहाँ आज मिलने वाले आये हुए हैं। मुझे उनकी उम्मीद नहीं थी, पावलूशा। मगर तुम तो आओ ही।'

पावेल लौट जाना चाहता था और दरवाजे की तरफ मुड़ा।

तोनिया ने उसकी बाँह पकड़ते हुए कहा, चलो न अन्दर। तुमको जानना उनके लिए अच्छा ही साबित होगा, और पावेल की कमर में बाँह डाल कर तोनिया उसको खाने के कमरे से होकर अपने कमरे में ले गयी।

कमरे में दाखिल होते हुए वह वहाँ पर बैठे लोगों की तरफ मुड़ी और

मुस्करायी।

'मैं आप लोगों को अपने दोस्त पावेल कोर्चागिन ले मिलाना चाहती हूँ।'

कमरे के बीचोबीच उस छोटी सी मेज के इर्द-गिर्द तीन लोग बैठे थे : लिजा सुखार्को, एक खूबसूरत, मद्धिम रंग की हाई-स्कूल की छात्रा जिसका मुँह छोटा सा था और ओंठ खूबसूरत अन्दाज में जरा बाहर को निकले हुए थे, बाल खूबसूरती से सँवारे हुए; और एक दुबला पतला नौजवान जो अच्छा सिला हुआ काले रंग का कोट पहने था, उसके बाल तेल से चमक रहे थे और उसकी भूरी आँखों में एक अजीब खालीपन का भाव था; और इन दोनों के बीच स्कूली यूनिफार्म की छैलों जैसी जाकेट पहने विक्टर लेशचिन्स्की बैठा था। तोनिया ने दरवाजा खोला तो पावेल ने सबसे पहले इसी को देखा था।

लेशचिन्स्की ने भी कोर्चागिन को फौरन पहचान लिया और उसकी खूबसूरत कमानीदार भवें कुछ अचरज के साथ उठीं।

कुछ देर तक पावेल दरवाजे पर खामोश खड़ा विक्टर को शत्रुता के भाव से देखता रहा और उसे छिपाने की भी उसने कोई कोशिश नहीं की। तोनिया ने इस भद्दी खामोशी को तोड़ने के खयाल से फौरन पावेल को अन्दर आने के लिए कहा और परिचय कराने के लिए लिजा की तरफ मुड़ी।

लिजा सुखार्को, जो आगन्तुक को बहुत दिलचस्पी से देख रही थी, अपनी कुर्सी से उठी।

मगर पावेल तेजी से घूम पड़ा और अँधेरे-अँधेरे से खाने के कमरे में होता हुआ सामने के दरवाजे की तरफ चल दिया। वह बरसाती तक पहुँचा था कि तोनिया ने जाकर उसका कंधा पकड़ लिया।

'तुम भागे क्यों जा रहे हो? मैं खास तौर पर उनको तुमसे मिलाना चाहती थी।'

पावेल ने अपने कंधों पर से उसके हाथ अलग कर दिये और तेज स्वर में बोला :

'मैं नहीं चाहता कि उस काठ के पुतले के आगे मेरी नुमाइश की जाय। मैं उनमें से नहीं हूँ — तुम्हें भले ही वे अच्छे लगते हों, मुझे तो उनसे नफरत है। अगर मुझे मालूम होता कि ये लोग तुम्हारे दोस्त हैं, तो मैं आता ही नहीं।'

तोनिया ने अपने उठते हुए गुस्से को दबाते हुए उसको टोका :

'इस तरह मुझसे बातें करने का तुम्हें क्या हक है? मैं तो तुमसे नहीं पूछती कि तुम्हारे दोस्त कौन हैं और कौन तुमसे मिलने आता है, और कौन नहीं आता?'

'मुझे इससे कोई बहस नहीं कि तुम किससे मिलती हो। मैं तो बस यह

कह रहा हूँ कि मैं अब यहाँ कभी नहीं आऊँगा,' पावेल ने सामने की सीढ़ियों पर उतरते हुए तड़ाक से जवाब दिया। और दौड़कर वह बागीचे के फाटक पर पहुँच गया।

तभी से तोनिया से उसकी मुलाकात नहीं हुई थी। मार-काट के दिनों में जब एलेक्ट्रीशियन के साथ मिलकर उसने बिजली के कारखाने में यहूदी परिवारों को शरण दी थी, तो उस बीच वह अपने झगड़े की बात भूल गया था और आज उससे मिलना चाहता था।

जुखराई के गायब हो जाने से और इस विचार से कि घर पर कोई नहीं है, पावेल का मन खिन्न और उदास हो गया था। उसके सामने सड़क का पूरा विस्तार फैला हुआ था। बसन्त के दिनों का कीचड़ अभी सूखा नहीं था और सड़क पर तमाम गड्ढे-ही-गड्ढे हो गये थे जिनमें बादामी रंग का कीचड़ भरा था। सामने एक घर था जिसकी दीवारों का पलस्तर झड़ रहा था जिससे वह बहुत खस्ताहाल नजर आता था। वह घर सड़क के पक्के फुटपाथ के सिरे तक आगे को निकला हुआ था। वहीं से सड़क की शाख फूटती थी।

विक्टर लेशचिन्स्की एक टूटी-फूटी दूकान के सामने सड़क के चौराहे पर लिजा से विदा ले रहा था। दूकान के दरवाजे चूर-चूर हो रहे थे और उस पर लेमनेड सोडा का एक साइन-बोर्ड लटक रहा था।

विक्टर ने लिजा का हाथ अपने हाथ में पकड़े हुए और अपनी याचना-भरी आँखों से उसकी आँखों में देखते हुए कहा :

'तुम आओगी न ? धोखा तो नहीं दोगी ?'

लिजा ने नखरे के साथ कहा, 'जरूर आऊँगी। मेरा इन्तजार करना।'

और उससे विदा होते हुए लिजा अपनी धुँधली-धुँधली सुर्खी-मायल बादामी आँखों में वादा भरकर मुस्करायी।

सड़क पर कुछ गज आगे लिजा ने दो आदमियों को एक मोड़ के पीछे से सड़क पर आते देखा। आगेवाला आदमी खूब तगड़ा था, उसका चौड़ा-सा सीना था और वह मजदूरों के कपड़े पहने हुए था, उसकी खुली हुई जाकेट के नीचे धारीदार जर्सी दिखलाई दे रही थी, एक काली टोपी उसके माथे तक नीचे को खिंची हुई थी और उसके पैरों में ब्राउन रंग के जूते थे। उसकी आँख के नीचे एक स्याह दाग था।

वह आदमी मजबूत कदमों से, मगर कुछ लुढ़कता हुआ सा, चल रहा था।

उससे तीन कदम पीछे भूरे रंग का कोट पहने और अपनी पेटी में कारतूस रखने के दो जेब लगाये एक पेतल्युरा सिपाही चला आ रहा था। उसकी संगीन

आगे वाले आदमी की पीठ को लगभग छू रही थी। सिपाही भेड़ के ऊन की खूब बालोंवाली टोपी पहने था और टोपी के नीचे उसकी दो छोटी-छोटी सतर्क आँखें अपने कैदी के सिर के पिछले हिस्से को देख रही थीं। उसके चेहरे पर पीली-पीली मूँछें थीं जिन पर तम्बाकू के धब्बे थे।

लिजा ने अपनी चाल कुछ धीमी कर दी और सड़क पार करके दूसरी तरफ चली गयी। ठीक उसी वक्त उसके पीछे से पावेल निकलकर बड़ी सड़क पर आ गया।

जैसे ही वह उस पुराने घर के पास से गुजरा और वहाँ से दाहिने को मुड़ा, उसने भी उन दोनों आदमियों को अपनी तरफ आते देखा।

पावेल चौंककर रुक गया और ऐसे खड़ा रहा जैसे किसी ने उसे जमीन में गाड़ दिया हो। गिरफ्तार आदमी और कोई नहीं जुखराई था !

'अच्छा, इसीलिए वह घर नहीं लौटा !'

जुखराई अधिकाधिक निकट आता जा रहा था। पावेल का दिल ऐसे धड़कने लगा जैसे अभी फट जायगा। उसका दिमाग, स्थिति को समझने की नाकामयाब कोशिश कर रहा था और इस कोशिश में उसके विचार पागलों की तरह बेतहाशा भाग रहे थे। सोचने के लिए वक्त नहीं था। सिर्फ एक बात साफ थी : जुखराई गया !

स्तब्ध और चकित होकर पावेल ने उन दोनों आदमियों को अपने करीब आते देखा। अब क्या किया जाय ?

आखिरी लमहे में उसे अपनी जेब में पड़ी पिस्तौल की याद आयी। जब वे लोग उसके पास से गुजरेंगे तो वह राइफिलवाले आदमी की पीठ पर गोली मार देगा और फियोदोर आजाद हो जायगा। तत्काल इस निश्चय पर पहुँच जाने से उसके दिमाग की धुन्ध साफ हो गयी। आखिर कल ही तो फियोदोर ने उससे कहा था, 'इसके लिए हमें मजबूत आदमी चाहिए ...'

पावेल ने जल्दी से पीछे मुड़कर देखा। शहर को जानेवाली सड़क सुनसान थी; चिड़िया का पूत भी वहाँ नहीं था। सामने एक औरत हल्का-सा कोट पहने तेजी से सड़क पार कर रही थी। वह कोई गड़बड़ नहीं करेगी। दोराहे की दूसरी सड़क को वह नहीं देख पा रहा था। दूर, स्टेशनवाली सड़क पर जरूर कुछ आदमी दिखायी दे रहे थे।

पावेल आगे बढ़कर सड़क के किनारे पर आ गया। जुखराई ने जब उसे देखा तब दोनों के दरम्यान सिर्फ कुछ कदमों का फासला था।

जुखराई ने उसे अपनी कनखियों से देखा और उसकी घनी भवें काँपीं। इस अप्रत्याशित मुलाकात के कारण उसकी चाल धीमी हो गयी। संगीन उसकी पीठ में चुभी।

'जरा तेजी से, वर्ना मैं इस कुन्दे से तुम्हें खदेड़ूंगा !' सिपाही ने अपनी फटी हुई तेज आवाज में कहा।

जुखराई ने कदम तेज कर दिये। वह पावेल से बात करना चाहता था, मगर रुक गया; उसने सिर्फ अपना हाथ हिलाया, जैसे अभिवादन कर रहा हो।

इस डर से कि कहीं उस पीली मूंछवाले सिपाही का ध्यान उस पर न पड़ जाय, पावेल जुखराई के पास से गुजरने पर अलग हट गया जैसे उसे इस सब से कोई बहस न हो।

मगर उसके दिमाग में यही चिन्ता चक्कर लगा रही थी : 'अगर कहीं मेरा निशाना चूक गया और गोली जुखराई के लगी ...'

वह पेतल्युरा सिपाही अब एकदम उसके पास आ गया था और सोचने के लिए समय नहीं था।

जैसे ही वह पीली मूंछ वाला सिपाही उसके बराबर आया, पावेल झपटकर उस पर कूद पड़ा और राइफिल पकड़कर उसकी नली झटके से नीचे कर दी।

संगीन एक पत्थर से टकराई और रगड़ लगने की आवाज पैदा हुई।

यह हमला एकदम अनचित्ते में हुआ था जिससे थोड़ी देर को तो सिपाही सकते में आ गया। फिर उसने जोर से राइफिल अपनी तरफ खींची। राइफिल पर अपना पूरा वजन डालते हुए पावेल ने उस पर अपनी जकड़ कायम रखी। धाँय से एक गोली छूटी और एक पत्थर से टकराई और छिछलती हुई सूं की आवाज के साथ गड्ढे में जा गिरी।

गोली की आवाज सुनकर जुखराई कूदकर अलग हो गया और घूमा। सिपाही पावेल के हाथ से राइफिल को छुड़ाने के लिए पूरी ताकत लगा रहा था। पावेल की बाँहें बुरी तरह ऐंठ गयी थीं, मगर राइफिल पर अपनी पकड़ उसने नहीं छोड़ी थी। गुस्से से पागल पेतल्युरा सिपाही पावेल पर तेजी से झपटा और उसने उसे जमीन पर गिरा दिया, मगर तब भी राइफिल को वह उसके हाथ से नहीं छुड़ा सका। पावेल गिर पड़ा, मगर वह सिपाही भी उसके संग गिरा और इस नाजुक वक्त में दुनिया की कोई ताकत उसके हाथ से राइफिल नहीं छुड़ा सकती थी।

दो डगों में जुखराई इन एक-दूसरे से गुंथे हुओं के पास पहुँच गया। उसकी फौलादी मुट्ठी उठी और सिपाही के सिर पर जाकर गिरी। एक सेकंड में जुखराई ने उस पेतल्युरा सिपाही को खींच कर पावेल से अलग कर दिया और जब दो सीसे की तरह भारी घूंसे उसके चेहरे पर पड़े तो उसका बेजान शरीर वहीं ढेर हो गया और सड़क के पास के गड्ढे में जा गिरा।

जिन मजबूत हाथों ने वे घूंसे रसीद किये थे उन्होंने पावेल को जमीन से उठाया और उसे अपने पैरों पर खड़ा किया।

विक्टर अभी उस दोराहे से करीब सौ कदम गया था। वह एक फ्रांसीसी गाने की धुन सीटी में बजाता चला जा रहा था। लिजा के संग अपनी इस मुलाकात से और उसके इस वादे से कि कल उस वीरान फैक्टरी में उससे मिलेगी, विक्टर का दिल जोश में था।

स्कूल के छंटे हुए बदमाशों में यह अफवाह गर्म थी कि इश्क के मामलों में लिजा सुखार्को काफी दिलेर है। ढीठ और घमंडी सेमियन जालीवानोव ने तो एक बार यह कहा भी था कि लिजा अपने-आपको उसे समर्पित कर चुकी है और गोकि विक्टर को सेमियन की बात पर यकीन नहीं आता था, तो भी इसमें शक नहीं कि लिजा उसे काफी भेद-भरी मालूम होती थी। कल वह इस बात का पता लगा लेगा कि जालीवानोव की बात सच है या नहीं।

'अगर वह आती है तो मैं व्यर्थ संकोच न करूँगा। और जो हो, इतना तो जरूर है कि वह अपने आपको चूमने तो देती है। और अगर सेमियन सच बोलता है तो ···' यहाँ उसके विचार रुक गये जब वह दो पेतल्युरा सिपाहियों को रास्ता देने के लिए एक तरफ को हटा। उनमें से एक दुमकटे घोड़े पर सवार था और एक जीन की बाल्टी उसके हाथ में लटक रही थी — स्पष्ट ही वह घोड़े को पानी पिलाने ले जा रहा था। दूसरा सिपाही जो एक छोटा-सा कोट और नीले रंग का ढीला-ढाला पतलून पहने था, उसके संग-संग पैदल चल रहा था। उसका हाथ घुड़सवार के घुटने पर था और वह कोई मजेदार कहानी सुना रहा था।

विक्टर ने उन्हें गुजर जाने दिया और वह फिर अपने रास्ते पर बढ़ने ही वाला था कि बड़ी सड़क पर राइफिल दगने की एक आवाज हुई और वह वहीं खड़ा हो गया। वह घूमा और उसने घुड़सवार को गोली की आवाज की दिशा में अपने घोड़े को एड़ लगाते देखा। दूसरा सिपाही अपनी तलवार को हाथ का सहारा दिये उसके पीछे-पीछे दौड़ा।

विक्टर भी उनके पीछे-पीछे भागा। वह बड़ी सड़क पर लगभग पहुँच गया था, जब दूसरी गोली छूटने की आवाज आयी और वह घुड़सवार बेतहाशा सरपट घोड़ा दौड़ाता हुआ आया। वह घोड़े को अपनी एड़ी से और जीन वाली बाल्टी से एड़ लगा रहा था और पहले ही फाटक पर पहुँचकर घोड़े से कूदा और चिल्लाकर हाते के अन्दर के लोगों से बोला :

'दौड़ो, उन्होंने हमारे एक आदमी को मार डाला है!'

मिनट भर बाद कई आदमी अपनी राइफिलों में गोली डाल कर बोल्ट चढ़ाते और दौड़ते हुए हाते से बाहर आये।

विक्टर पकड़ लिया गया।

अब तक बहुत से लोग सड़क पर जमा हो गये थे जिन्हें शहादत देने के

लिए रोक लिया गया था। उनमें विक्टर और लिजा भी थे।

लिजा डर के मारे अपनी जगह पर जम सी गयी थी, इसलिए उसने भागते हुए जुखराई और कोर्चागिन को अच्छी तरह देखा था। और उसे इस बात से बहुत अचम्भा हो रहा था कि जिस लड़के ने सिपाही पर हमला किया था, वह वही था जिससे तोनिया उसे मिलाना चाहती थी।

पावेल और जुखराई बाड़ी फाँदकर एक बागीचे में पहुँचे ही थे कि वह घुड़सवार उधर से सड़क पर सरपट आता दिखायी दिया। उसने जुखराई को हाथ में राइफिल लिये भागते और उस होश-हवास-गुम सिपाही को खड़े होने की कोशिश करते देखा। घुड़सवार ने बाड़ी की तरफ जाने के लिए घोड़े को एड़ लगायी।

जुखराई घूमा। उसने राइफिल उठायी और अपना पीछा करने वाले पर गोली दाग दी। पीछा करने वाला घुड़सवार घूमा और भाग खड़ा हुआ।

वह सिपाही किसी तरह, अपने कटे-फटे लहू-लुहान ओंठों के कारण बहुत मुश्किल से बतला रहा था कि क्या हुआ था।

'अबे गधे, तेरी नाक के नीचे से कैदी भाग गया! क्या मतलब है इसका? तेरे चूतड़ पर पच्चीस कोड़े पड़ेंगे।'

उस सिपाही ने गुस्से से जवाब दिया, 'बड़े होशियार बन रहे हो! मेरी नाक के नीचे से, हुँ: ! मुझे क्या पता था कि वह दूसरा हरामी का पिल्ला पागल की तरह मुझ पर कूद पड़ेगा?'

लिजा से भी पूछ-ताछ की गयी। उसने भी वही कहानी बतायी जो उस सिपाही ने बतायी थी, मगर उसने यह नही बताया कि वह हमला करने वाले को जानती थी। बहरसूरत, उन सबको कमांडैण्ट के दफ्तर ले जाया गया और शाम तक ही कहीं उनको वहाँ से छुट्टी मिली।

कमांडैण्ट साहब ने खुद ही लिजा को घर तक पहुँचाने का प्रस्ताव किया, मगर उसने इन्कार कर दिया। उनके मुँह से वोदका की बू आ रही थी और यह प्रस्ताव खतरे से खाली नहीं था।

विक्टर ने लिजा को घर पहुँचाया।

अभी स्टेशन काफी दूर था और लिजा को बाँह में बाँह डाले चलते हुए, विक्टर इस घटना का भला मना रहा था जिसने उसे यह सुयोग दिया।

अपने घर के काफी पास पहुँचने पर लिजा ने पूछा, 'तुम्हें कुछ मालूम है कि उस कैदी को किसने छुड़ाया?'

'नहीं तो। मैं क्या जानूँ? जान भी कैसे सकता हूँ?'

'तुम्हें याद है उस शाम तोनिया एक लड़के का हमसे परिचय कराना चाहती थी?'

विक्टर रुक गया।

आश्चर्य से उसने पूछा, 'पावेल कोर्चागिन !'

'हाँ, मेरा खयाल है, उसका नाम कोर्चागिन ही था। याद है, कैसे अजीब तरीके से वह बाहर निकल गया था ? वही लड़का था।'

विक्टर ठगा-सा खड़ा था।

उसने लिजा से पूछा, 'पक्की तरह कह सकती हो ?'

'हाँ, मुझे उसका चेहरा अच्छी तरह याद है।'

'तुमने यह बात कमांडैण्ट को क्यों नहीं बतलायी ?'

यह सुनकर लिजा को क्रोध आ गया।

'तुम सोचते हो कि मैं ऐसी कमीनी हरकत कर सकती हूँ !' उसने कहा।

'कमीनी ? सिपाही पर किसने हमला किया, यह बतलाने को तुम कमीनी हरकत कहती हो !'

'और नहीं तो क्या, यह कोई अच्छा काम है। तुम शायद भूल गये हो कि उन्होंने क्या-क्या किया है। तुम्हें कुछ पता है कि स्कूल में कितने यहूदी लड़के हैं जिनके माँ-बाप मार डाले गये हैं और तब भी तुम चाहते हो कि मैं कोर्चागिन के बारे में बतला देती। मुझे दुःख है, मैं तुमको ऐसा नहीं समझती थी।'

लेशचिन्स्की को लिजा के जवाब से बड़ा आश्चर्य हुआ। लेकिन चूँकि उसके संग झगड़ा करना उसकी योजना के अनुकूल नहीं था, इसलिए उसने बात का विषय बदल दिया।

'नाराज न हो लिजा, मैं तो सिर्फ मजाक कर रहा था। मुझे नहीं मालूम था कि तुम इस कदर खरी और सच्ची हो।'

'मजाक बहुत भद्दा था' लिजा ने खुश्की से जवाब दिया।

उससे विदा होते समय विक्टर ने पूछा, 'तो तुम आओगी न लिजा ?'

लिजा ने अस्पष्ट-सा उत्तर दिया, 'कह नहीं सकती।'

शहर वापिस आते हुए विक्टर इस मामले पर गौर करने लगा।

'कुमारी जी, आप भले ही इसे कमीनी हरकत समझें, मगर मेरा तो खयाल कुछ और ही है। यों जहाँ तक मेरा ताल्लुक है, किसने किसको छुड़ाया मेरे लिए सब बराबर है।'

एक पुराने पोलिश परिवार की सन्तान होने के नाते, बहैसियत एक लेशचिन्स्की के, उसको दोनों पक्षों से एक-सी नफरत थी। एकमात्र सरकार जिसे वह मान्यता दे सकता था, पोलिश थैलीशाहों की सरकार थी और वह जल्द ही पोलिश फौजों के साथ आने वाली थी। वह तो खैर जब होगा तब होगा, मगर उस हरामजादे कोर्चागिन से पिंड छुड़ाने का यह अच्छा मौका था। इसमें क्या शक कि उसकी गर्दन तो मरोड़ ही दी जायगी।

विक्टर अपने परिवार का अकेला सदस्य था जो शहर में रुक गया था। वह अपनी एक चाची के साथ रह रहा था जो शकर के कारखाने के सहायक संचालक की पत्नी थी। उसके परिवार के लोग कुछ दिनों से वारसा में रह रहे थे जहाँ उसके पिता, सिगिसमण्ड लेशचिन्स्की, एक ऊँचे पद पर थे।

विक्टर कमांडैण्ट के दफ़्तर तक गया और दरवाजे से अन्दर घुस गया।

थोड़ी देर बाद वह चार पेतल्युरा सिपाहियों के संग कोर्चागिन के मकान की तरफ चला जा रहा था।

उसने एक खिड़की की तरफ, जिससे रोशनी आ रही थी, इशारा करते हुए धीरे से कहा, 'वही जगह है। अब मैं जाऊँ?' उसने अपने बगल में खड़े खोरूँजी से पूछा।

'हाँ, अब तुम जा सकते हो, बाकी बातें सब मैं देख लूँगा। यह खबर देने के लिए तुम्हारा शुक्रिया।'

विक्टर पैदल पटरी पर होकर तेजी से घर की ओर चला।

पावेल की पीठ पर आखिरी प्रहार हुआ जिसने पावेल को ढकेलकर उस अँधेरे कमरे में डाल दिया जहाँ पर वे लोग उसे ले गये थे और उसकी फैली हुए बाँहें सामने की दीवार से जा टकरायीं। अपने आस-पास टटोलते हुए उसको ओठे जैसी कोई चीज मिली और वह बैठ गया। उसका शरीर और उसका मन दोनों घायल थे और दर्द कर रहे थे।

उसकी गिरफ्तारी बिल्कुल अप्रत्याशित थी। आखिर उन पेतल्युरा सिपाहियों को उसका पता कैसे चला? यह बात पक्की है कि किसी ने उसे देखा नहीं था। अब इसके बाद क्या होगा और जुखराई कहाँ है?

उसने जुखराई को क्लिम्का के घर पर छोड़ा था और फिर वहाँ से सर्गेई के यहाँ चला गया था जबकि जुखराई वहाँ पर ठहरकर शाम होने का इन्तजार कर रहा था ताकि चुपके से शहर से बाहर निकल जाय।

पावेल ने सोचा, 'अच्छा हुआ, मैंने रिवाल्वर कौए के घोंसले में छिपा दिया था। अगर कहीं वह चीज उन्हें मिल जाती तो मेरा काम तमाम था। मगर, आखिर उन्हें मेरा पता चला कैसे?' यह सवाल उसे तंग कर रहा था और इसका कोई जवाब उसके पास नहीं था।

पेतल्युरा सिपाहियों ने कोर्चागिन के मकान के कोने-कोने की तलाशी ली थी मगर उन्हें कुछ खास मिला नहीं। आर्तेम अपना सबसे बढ़िया सूट और अकार्डियन बाजा गाँव ले गया था और उसकी माँ अपने साथ एक ट्रंक ले गयी थी। लिहाजा, घर में कोई खास चीज बची न थी जिसे सिपाही ले जाते।

बहरहाल, कोतवाली तक का सफर एक ऐसी चीज थी जिसे पावेल कभी नहीं भूलेगा। रात काजल की तरह काली थी, आसमान पर बादल छाये हुए थे और वह चारों तरफ से बेरहम ठोकरें खाता हुआ अंधे और नीम-पागल आदमी की भाँति किसी तरह लुढ़कता चल रहा था।

अगले कमरे में, जिसमें कमांडैण्ट के सन्तरी रहते थे, दरवाजे के पीछे उसे आवाजें सुनायी दीं। दरवाजे के नीचे से प्रकाश की पतली रेखा दिखायी दे रही थी। पावेल उठ खड़ा हुआ और दीवार के सहारे-सहारे रास्ता पहचानता हुआ कमरे का चक्कर लगा आया। ओठे के सामने उसे एक खिड़की मिली जिसमें ठोस लोहे के नुकीले डंडे लगे हुए थे। उसने उनको अपने हाथ से परखा — वे अपनी जगह पर बहुत मजबूती से मढ़े हुए थे। जाहिर है, यह जगह पहले माल-असबाब रखने के काम आती होगी।

वह दरवाजे तक पहुँचा और वहाँ खड़ा होकर पल भर कान लगाये सुनता रहा। फिर उसने हलके से दरवाजे के हैंडिल को दबाया। दरवाजा चूँ से बोला, जो पावेल को बहुत नागवार मालूम हुआ, और उसने दबी जबान में उसको हजार गालियाँ दीं।

दरवाजे की उस जरा सी सन्ध में से उसे दो रुखड़े पैर जिनके अँगूठे टेढ़े थे, चबूतरे से नीचे झूलते हुए दिखायी दिये। उसने एक बार और हलके से हैंडिल को दबाया, पर दरवाजे ने और भी जोरों से प्रतिवाद किया। तभी एक बिखरे बालों वाली आकृति, जिसका चेहरा नींद के कारण सूजा हुआ था, अपने चबूतरे पर से उठी और अपने गंदे जूँ भरे सिर को पाँचों उँगलियों से खबर-खबर खुजलाती हुई उसको बेतहाशा गालियाँ सुनाने लगी। गालियों का यह वीभत्स प्रवाह बन्द होने पर उस आदमी ने अपने ओठे के सिरे पर रखी हुई राइफिल की तरफ हाथ बढ़ाया और गुस्से से बोला :

'दरवाजा बन्द कर दो और अगर दुबारा फिर मैंने तुम्हें बाहर झाँकते देखा तो मैं तुम्हारा ...'

पावेल ने दरवाजा बन्द कर दिया, बगल के कमरे से हँसी का कहकहा सुनायी दिया।

उस रात वह बहुत कुछ सोचता रहा। लड़ाई में हिस्सा लेने की उसकी पहली कोशिश का नतीजा उसके लिए बुरा ही हुआ था। पहले कदम में ही वह पकड़ा गया था और अब चूहेदानी में फँसे हुए चूहे की तरह वहाँ पड़ा था।

तब भी वह उठकर बैठ गया और धीरे-धीरे बेचैन अर्द्ध-निद्रा की हालत में पहुँच गया और उसकी आँखों के आगे उसकी माँ का हड्डी-हड्डी, झुर्रीदार चेहरा और आँखें आयीं जिन्हें वह प्यार करता था। उसने सोचा, 'अच्छा ही है कि वह यहाँ नहीं है — दर्द कम होगा।'

खिड़की में से रोशनी आ रही थी और फर्श पर एक भूरे रंग का धुंधला चौकोन बना रही थी।

अँधेरा धीरे-धीरे हट रहा था। पौ फट रही थी।

छः

उस पुरानी हवेली की सिर्फ एक खिड़की में रोशनी चमक रही थी; परदे खिंचे हुए थे। बाहर ट्रेसोर, जिसे रात भर के लिए जंजीर लगा दी गयी थी, अचानक अपनी भारी गूँजती हुई आवाज में भूँका।

नींद के कुहासे में तोनिया ने अपनी माँ को मद्धिम आवाज में बोलते हुए सुना।

'नहीं, अभी वह सोयी नहीं है। अन्दर आओ, लिजा।'

उसकी सहेली के हलके-हलके कदमों ने और फिर उसके आवेगपूर्ण गर्म आलिंगन ने उसकी नींद भगा दी।

तोनिया के चेहरे पर जर्द मुस्कराहट थी।

'मुझे बड़ी खुशी हुई कि तुम आयीं, लिजा। पापा का संकट कल टल गया और आज वह पूरे दिन गहरी नींद में सोते रहे। कई रात जागने के बाद आज माँ को और मुझे भी कुछ आराम करने का मौका मिला। मुझे सारी खबरें बतलाओ।' तोनिया ने अपनी सहेली को खींचकर पास ही कौच पर बिठा लिया।

'ओह, तमाम खबरें ही खबरें हैं, मगर उनमें से कुछ ऐसी हैं जो सिर्फ तुम्हारे कानों के लिए हैं।' लिजा एकातेरीना मिखाइलोवना को चंचल मानी-खेज नजरों से देखती हुई मुस्करायी।

तोनिया की माँ भी मुस्करायी। वह छत्तीस साल की प्रौढ़ स्त्री थी, मगर उसकी चाल-ढाल में जवान लड़की का सा फुर्तीलापन था। उसकी भूरी-भूरी समझदार आँखें थीं और उसका चेहरा खूबसूरत तो नहीं, मगर देखने में भला जरूर मालूम होता था।

'मैं दो-चार मिनट में ही बहुत खुशी से तुम लोगों को आपस में बात करने के लिए अकेला छोड़ दूँगी, मगर पहले मैं वे खबरें सुनना चाहती हूँ जो सबके कानों के लिए हैं,' उसने दीवान के पास अपनी कुर्सी खींचते हुए मजाक के स्वर में कहा।

'अच्छा, तो पहली बात तो यह है कि हमारी स्कूल की पढ़ाई खतम। बोर्ड ने सातवीं जमात वालों को ग्रेजुएशन सर्टिफिकेट देने का फैसला किया है। मैं तो सचमुच खुश हूँ। इस अलजेबरा-ज्योमेट्री के मारे तो नाक में दम हो गया था! भला बताओ, इससे किसी का क्या फायदा? लड़के मुमकिन है, आगे भी अपनी पढ़ाई जारी रखें, गोकि उन्हें खुद पता नहीं कि चारों तरफ के इस लड़ाई-झगड़े के चलते वे कहाँ और कैसे आगे बढ़ सकेंगे। सचमुच बड़ी भयानक बात है ... जहाँ तक हमारी बात है, हमारी शादी हो जायगी और बीवियों को अलजेबरा की जरूरत नहीं पड़ती,' कहकर लिजा हँसने लगी।

थोड़ी देर लड़कियों के संग बैठकर एकातेरीना मिखाइलोवना अपने कमरे में चली गयी।

अब लिजा तोनिया के और पास आ गयी और उसे अपनी बाँहों में लेकर धीमे-धीमे फुसफुसाकर उसे चौराहे पर की वारदात सुनायी।

'तोनेच्का, तुम मेरे आश्चर्य की कल्पना कर सकती हो जब मैंने देखा कि वह लड़का जो भागा जा रहा था ... बूझो कौन था?'

तोनिया ने, जो बड़े ध्यान से सुन रही थी, कंधे उचकाकर अपनी असमर्थता बतलायी।

'कोर्चागिन!' लिजा ने अधीर होकर उगल दिया।

तोनिया चौंक गयी और उसे झुरझुरी-सी मालूम हुई।

'कोर्चागिन?'

तोनिया पर उसकी बात का जो असर हुआ था, उसे देखकर लिजा बहुत खुश हुई और विक्टर के संग अपने झगड़े की बात बतलाने लगी।

अपने किस्से की रौ में लिजा ने यह नहीं देखा कि तोनिया का चेहरा पीला पड़ गया था और उसकी उँगलियाँ रह-रहकर बेचैनी से अपने नीले ब्लाउज को पकड़ लेती थीं। लिजा को क्या पता कि कैसे तोनिया का दिल चिन्ता के मारे घुटा जा रहा था और न वह यही समझ सकी कि तोनिया की खूबसूरत आँखों की लम्बी बरौनियाँ क्यों रह-रहकर काँप जाती थीं।

लिजा ने नशे में चूर खोरूँजी का जो किस्सा सुनाया, उसकी तरफ तोनिया ने कोई ध्यान नहीं दिया। सिर्फ एक विचार उसके दिमाग में जैसे कील-सी ठोंक रहा था, 'अच्छा, तो विक्टर लेशचिन्स्की को मालूम है कि उस सिपाही पर किसने हमला किया! ओह लिजा, तूने विक्टर को क्यों बतलाया?' और न चाहते हुए भी यह बात उसके मुँह से निकल ही पड़ी।

'क्या कहा तुमने?' लिजा एकाएक उसका मतलब नहीं समझ सकी।

'तुमने लेशचिन्स्की को पावलूशा ... यानी कोर्चागिन के बारे में क्यों बतलाया? वह जरूर उसके साथ दगा करेगा ...'

'अरे नहीं !' लिजा ने प्रतिवाद किया, 'मैं नहीं समझती कि वह ऐसा नीच काम करेगा। और क्यों करेगा ? उसका फायदा ?'

तोनिया उठकर बैठ गयी और अपने घुटनों को इतने जोर से दबाया कि उनमें दर्द होने लगा।

'तुम नहीं समझतीं लिजा ! उसमें और कोर्चागिन में दुश्मनी है, और इसके अलावा कुछ और भी है ... तुमने विक्टर को पावलूशा के बारे में बतलाकर बहुत बड़ी भूल की।'

अब तोनिया की उद्विग्नता की तरफ लिजा का ध्यान गया और जिस तरह तोनिया अनजाने में ही कोर्चागिन को पावलूशा कह रही थी, उससे लिजा की आँखें एक ऐसी चीज के बारे में खुलीं जिसके सम्बंध में वह अब तक सिर्फ अटकल लगाया करती थी।

उसने अपने आपको मन ही मन अपराधी महसूस किया और चुप्पी में डूब गयी।

उसने सोचा, 'अच्छा तो यह बात सही है। मगर कैसी अजीब बात है कि तोनिया ..... एक मामूली मजदूर से प्रेम करे।' लिजा इस चीज के बारे में बहुत बात करना चाहती थी, मगर अपनी सहेली का खयाल करके रुक गयी। किसी तरह अपने अपराध का मार्जन करने के खयाल से उसने तोनिया के हाथ पकड़ लिये और बोली :

'तुम क्या बहुत चिंतित हो गयीं तोनिया ?'

तोनिया ने खोये-खोये ढंग से जवाब दिया, 'नहीं, हो सकता है मेरा खयाल गलत हो और विक्टर मेरे अनुमान से ज्यादा शरीफ निकले।'

इसके बाद एक भद्दी सी, दम घोटनेवाली खामोशी छा गयी जो उनके एक सहपाठी के आने से टूटी। इस सहपाठी का नाम था देमियानोव। यह एक बहुत झेंपू, हौलू-सा लड़का था।

अपने दोस्तों को विदा करके तोनिया बहुत देर तक फाटक से टिकी शहर को जाने वाली सड़क की काली-काली मिट्टी को देखती रही। वह सदा-सदा की घुमक्कड़ हवा, नम और बसन्त की गीली धरती की सीली हुई बू से लदी हुई, उसके चेहरे में लग रही थी। शहर के मकानों की खिड़कियों से मद्धिम लाल-लाल रोशनी झाँक रही थी। वही था शहर जिसकी जिन्दगी उसकी अपनी जिन्दगी से अलग थी और वहीं पर, उन्हीं में से किसी एक छत के नीचे था अपने ऊपर आने वाले खतरे से बेखबर उसका अक्खड़ और तेजमिजाज दोस्त पावेल। शायद वह उसके बारे में भूल भी गया हो — उस आखिरी मुलाकात के बाद न जाने कितने दिन गुजर गये थे। इस बार वही गलती पर था, मगर वे सब बातें तो आयी-गयी हो गयीं। कल वह उससे जाकर मिलेगी और उनकी

दोस्ती फिर से वापस आ जायगी, ऐसी दोस्ती जिसमें प्राण है, गति है, जो दिल को गरमाती है। वह दोस्ती वापस आयेगी, इसमें तोनिया को जरा भी शक न था — बशर्ते यह रात दगा न करे, यह रात जो तमाम बुराइयों का घर है, जो पावेल की ताक में बैठी हुई जान पड़ती है ... ठंडक बहुत बढ़ गयी थी और सड़क पर आखिरी बार निगाह डालती हुई तोनिया अन्दर चली गयी। 'बशर्ते रात दगा न करे,' यही खयाल उसके दिमाग पर उस समय भी छाया हुआ था जब वह कम्बल में लिपटी-लिपटी नींद में डूब गयी।

तोनिया खूब सबेरे उठी और जल्दी-जल्दी कपड़े पहने। तब तक और कोई नहीं उठा था। वह चुपके से घर से निकल गयी ताकि घर में और कोई न जागे, बड़े-बड़े झबरे बालोंवाले ट्रेसोर की जंजीर खोली और उसे साथ लेकर शहर की ओर चल पड़ी। कोर्चागिन के घर पहुँचकर वह पल भर को उसके दरवाजे पर ठिठकी, मगर फिर उसने ठेल कर दरवाजा खोल दिया और भीतर सहन में चली गयी। ट्रेसोर दुम हिलाता हुआ तेजी से आगे निकल गया ...

आर्तेम उसी सुबह गाँव से लौटा था। जिस लुहार के यहाँ वह काम करता था, वही अपनी गाड़ी पर बिठालकर उसे शहर तक लाया था। घर पहुँचकर उसने अपनी कमाई का आटे का बोरा कंधे पर लादा और अन्दर सहन में चला गया। उसके पीछे-पीछे उसकी बाकी चीजें लिये वह लुहार था। खुले हुए दरवाजे के आगे आर्तेम ने बोरा जमीन पर रख दिया और पुकारा :

'पावका !'

कोई जवाब नहीं मिला।

'क्यों क्या अड़चन है ? सीधे अन्दर क्यों नहीं चले जाते,' लुहार ने उसके बराबर आकर कहा।

अपनी चीजें रसोईघर में रखकर आर्तेम बगलवाले कमरे में गया। वहाँ उसने जो दृश्य देखा, उससे वह बिल्कुल स्तब्ध हो गया; वह सारी जगह उलट-पुलट दी गयी थी और पुराने कपड़े फर्श पर बिखरे पड़े थे।

आर्तेम की समझ में कुछ नहीं आया। वह मुँह ही मुँह में बोला, 'यह मामला क्या है ?'

'कुछ घोटाला जरूर है,' लुहार ने उसकी तसदीक करते हुए कहा।

आर्तेम को अब गुस्सा आ रहा था, बोला : 'मगर यह छोकरा गया कहाँ ?' लेकिन वह जगह वीरान थी और कोई जवाब देने वाला न था।

लुहार ने सलाम किया और चला गया।

आर्तेम बाहर हाते में गया और इधर-उधर देखने लगा।

'कुछ मेरी समझ में नहीं आ रहा है ! सारे दरवाजे खुले हैं और पावका का कहीं पता नहीं।'

तभी उसने पीछे से कदमों की आहट सुनी। घूमकर उसने देखा, एक बड़ा-सा कुत्ता जिसके कान खड़े थे, उसके सामने खड़ा है। एक लड़की दरवाजे में से घर की तरफ आ रही थी।

उसने आर्तेम को गौर से देखते हुए धीमे स्वर में कहा, 'पावेल कोर्चागिन से मुझे एक जरूरी काम के लिए मिलना है।'

'मिलना तो मुझे भी है। मगर वह गया कहाँ, यह किसे मालूम। मैं यहाँ आया तो घर एकदम खुला हुआ था और पावका का कहीं पता न था। अच्छा तो तुम भी उसी की तलाश में हो ?' उसने लड़की से पूछा।

लड़की ने एक और सवाल से जवाब दिया :

'आप कोर्चागिन के भाई आर्तेम हैं ?'

'हाँ। क्यों ?'

जवाब देने के बजाय वह लड़की भयभीत और त्रस्त होकर खुले हुए दरवाजे को देखती रही। उसने सोचा, 'मैं कल रात ही क्यों नहीं आयी ? यह नहीं हो सकता ... यह नहीं हो सकता ...' और उसका दिल और भी भारी हो गया।

'आपने दरवाजे को खुला पाया और पावेल नहीं था ?' अपनी ओर आश्चर्य से देखते हुए आर्तेम से उसने पूछा।

'और क्या ? मैं जान सकता हूँ कि पावेल से तुम्हें क्या काम है ?'

तोनिया आर्तेम के और पास आ गयी और आसपास निगाह दौड़ाते हुए उसने रुक-रुककर कहा :

'मैं ठीक नहीं कह सकती। मगर मेरा ख्याल है कि अगर पावेल घर पर नहीं है तो वह जरूर पकड़ा गया।'

आर्तेम चौंक पड़ा। 'पकड़ा गया ? किस बात के लिए ?'

'चलिए, हम लोग अन्दर चलें,' तोनिया ने कहा।

तोनिया को जो कुछ मालूम था, उसने सब बतला दिया और आर्तेम खामोश सुनता रहा। उसकी कहानी खतम होते-होते आर्तेम बहुत खिन्न और परेशान हो गया था।

उसने निराशा के स्वर में धीमे से बुदबुदाकर कहा, 'क्या मुसीबत है ! जैसे यों ही कम परेशानी थी ! अब समझ में आया कि यह जगह क्यों उलटी-पलटी पड़ी है। इस छोकरे को क्या पड़ी थी कि इस सब बखेड़े में जा कूदा ... वह इस वक्त होगा कहाँ ? और तुम कौन हो ?'

'मैं जंगल के वार्डेन तुमानोव की लड़की हूँ। मैं पावेल की दोस्त हूँ।'

'अच्छा,' आर्तेम ने बिना कुछ ज्यादा समझे, स्वर को खींचकर कहा। 'कहाँ तो मैं इस लड़के को खिलाने के लिए यह आटा लेकर आया और अब

यह देखो ...'

तोनिया और आर्तेम एक-दूसरे को खामोशी से देखते रहे।

'अब मुझे चलना चाहिए,' तोनिया ने जाने के लिए प्रस्तुत होते हुए धीमे से कहा। 'मुमकिन है, वह आपको मिल जाय। मैं शाम को फिर पता लेने आऊँगी।'

आर्तेम ने बिना कुछ बोले सिर हिलाकर हामी भरी।

अपनी जाड़े की नींद से अभी-अभी जागी एक नन्हीं सी मक्खी खिड़की के कोने में भुन-भुन कर रही थी। एक पुराने खस्ताहाल कोच के सिरे पर एक नौजवान किसान औरत बैठी हुई थी। उसकी कुहनियाँ घुटनों पर टिकी थीं और उसकी सूनी आँखें गन्दे फर्श पर जमी थीं।

कमांडैण्ट मुँह के एक कोने में अटकी हुई सिगरेट को चबा रहा था। उसने अभी एक कागज पर बड़े बाँकपन के साथ कुछ लिखकर खतम किया था। और जाहिर था कि वह अपने आपसे बहुत खुश था। उसने 'शेपेतोवका नगर-कमांडैण्ट, खोरूँजी' के नाम से बहुत बना-बनाकर दस्तखत किया था। दरवाजे पर अटेंशन की हालत में बूटों के बजने की आवाज आयी। कमांडैण्ट ने आँखें उठा कर देखा।

उसके सामने बाँह में पट्टी बाँधे सलोमिगा खड़ा था।

'क्यों जी, कौन सी हवा तुमको उड़ा लायी?' कमांडैण्ट ने उसका स्वागत करते हुए कहा।

'अच्छी हवा नहीं है वह। एक **वोगुनेस्त**[1] ने मेरा हाथ चाक कर दिया।'

उस स्त्री की उपस्थिति का कुछ ख्याल न करते हुए सलोमिगा बुरी-बुरी गाली बकने लगा।

'तो फिर तुम यहाँ क्या कर रहे हो? सेहत बनाने आये हो?'

'सेहत बनाने का मौका हमें उस दुनिया में मिलेगा! यहाँ तो उन्होंने मोर्चे पर हमारी नाक में दम कर रखा है।'

कमांडैण्ट ने उसकी बात में बाधा दी और उस औरत को देखकर सिर हिलाया।

'उसके बारे में हम लोग बाद में बातें करेंगे।'

---

१. लाल फौज की वोगुन रेजीमेन्ट के आदमी। १७वीं शताब्दी में उक्रेनी जनता के स्वाधीनता-संघर्ष के नेता वोगुन के नाम पर इस रेजीमेन्ट का नाम वोगुन रेजीमेंट पड़ा था।

सलोमिगा धप्प से स्टूल पर बैठ गया और उसने अपनी टोपी उतारी जिसके माथे पर इनामल का बना एक त्रिशूल टंका हुआ था जो कि उक्रेनी राष्ट्रीय प्रजातंत्र का निशान था।

उसने अपनी मद्धिम आवाज में कहना शुरू किया, 'गोलुब ने मुझे भेजा है। रेगुलर सैनिकों का एक डिवीजन जल्दी ही यहाँ आने वाला है। यहाँ नगर में उसके लिए करने को बहुत कुछ रहेगा और उसके सारे इन्तजाम को ठीक-ठाक करने का जिम्मा मुझे दिया गया है। हो सकता है कि 'चीफ' साहब खुद किसी बड़े विदेशी आदमी के साथ यहाँ पर आयें। इसलिए मेरे 'दिल-बहलाव' की बात मुँह पर भी नहीं लानी होगी। क्या लिख रहे हो ?'

कमांडैण्ट ने सिगरेट मुँह के एक कोने से निकाल कर दूसरे कोने में लगा ली।

यहाँ एक बहुत बदमाश लड़का है। शैतान की आँत ही समझो उसको। तुम्हें उस जुखराई की याद है न ? उसी ने रेलवे मजदूरों को हम लोगों के खिलाफ भड़काया था। हाँ, तो वह स्टेशन पर पकड़ लिया गया।'

'पकड़ा गया ? बड़ी बात ! हाँ, तो फिर क्या हुआ ?' सलोमिगा ने बात में बहुत गहरी दिलचस्पी लेते हुए अपना स्टूल और पास सरका लिया।

'उसके बाद हुआ यह कि उस स्टेशन कमांडैण्ट उल्लू के पट्ठे ओमेल-चेन्को ने एक कौसेक के पहरे में उसको रवाना कर दिया और रास्ते में इस लड़के ने, जो हमारे यहाँ बन्द है, दिन दहाड़े उस कैदी को छुड़ा लिया। उस कौसेक सिपाही के हथियार छीन लिये गये और दाँत तोड़ दिये गये, और कैदी नौ दो ग्यारह हो गया। जुखराई तो भाग गया, मगर इस छोकरे को हमने पकड़ लिया। देखो न, इस कागज में सब कुछ लिखा हुआ है,' कहते हुए उसने कई कागज सलोमिगा की तरफ बढ़ाये।

सलोमिगा बाँयें हाथ से कागज के पन्नों को पलटता हुआ पूरी रिपोर्ट देख गया।

रिपोर्ट खतम करके उसने कमांडैण्ट की तरफ देखा।

'गरज उस लड़के से तुम कुछ मालूम नहीं कर सके ?'

कमांडैण्ट परेशानी से अपनी टोपी के सिरे को खींचने लगा।

'मैं पाँच दिन से उसके पीछे लगा हूँ, मगर वह इसके सिवा कुछ नहीं कहता कि 'मैं कुछ नहीं जानता और मैंने उसे नहीं छुड़ाया।' बड़ा मर्दूद लड़का है साहब ! उस सिपाही ने, जिस पर वह सब गुजरी थी, उसको पहचान लिया — और लड़के को देखते ही वह तो गुस्से से पागल हो गया और उसका बस चलता तो उसने वहीं उसका गला घोंट दिया होता। वह तो बड़ी मुश्किल से मैं उस कौसेक को अलग कर पाया। और भई सच पूछो तो गुस्से के लिए

उसके पास कारण भी था, क्योंकि ओमेलचेंको ने स्टेशन पर, हाथ से कैदी निकल जाने देने के जुर्म में, अपनी राइफिल साफ करने की छड़ी से पच्चीस छड़ियाँ भी तो उसके लगायीं। अब उसको यहाँ और बन्द रखने में कोई तुक नहीं है, इसलिए मैं ये कागजात हेडक्वार्टर भेजकर इजाजत मँगा रहा हूँ ताकि इस हरामजादे को खतम कर दिया जाय।'

सलोमिगा ने नफरत से थूक दिया।

'कहीं मेरे हाथ में होता यह लड़का तो तुम देखते, मैं उससे कबुलवा कर छोड़ता। यह सब पूछ-ताछ वगैरह करने के मामले में तुम कुछ यों ही से हो। और भला कभी किसी ने यह भी सुना है कि धर्मशास्त्र का विद्यार्थी कमांडैण्ट बन जाय! डंडे का इस्तेमाल किया तुमने?'

कमांडैण्ट को गुस्सा आ गया।

'देखो तुम हद से गुजरे जा रहे हो। अपना मजाक अपने ही पास रखो। यहाँ पर मैं कमांडैण्ट हूँ और तुम्हारा कोई हस्तक्षेप नहीं चाहता।'

सलोमिगा ने तैश में आये हुए कमांडैन्ट को देखा और जोर से ठहाका मार कर हँस पड़ा।

'हा हा हा ... देखो तुम पादरी के बेटे हो, इतना मत फूलो नहीं तो पेट फट जायगा। जहन्नुम में जाओ तुम और तुम्हारे मसले। जरा मुझे यह बतलाओ कि समोगन (शराब) की दो बोतलें कहाँ से मिल सकती हैं?'

कमांडैन्ट खिसियानी सी हँसी हँसा और बोला :

'इन्तजाम हो सकता है।'

'जहाँ तक इस चीज का ताल्लुक है,' सलोमिगा ने कागजात पर अपनी उँगली गड़ाते हुए कहा, 'अगर तुम वाकई उसका काम तमाम करना चाहते हो तो सोलह की जगह उसकी उम्र अठारह दिखलाओ। छः को आठ बना दो, नहीं तो मुमकिन है वे लोग पास न करें।'

उस मालगोदाम वाली कोठरी में तीन लोग थे। एक दढ़ियल बुड्ढा तार-तार कोट पहने ओठे पर करवट लेटा हुआ था। उसकी लकड़ी जैसी टाँगें लिनेन के चौड़े-चौड़े पतलूनों से ढँकी थीं जिन्हें उसने ऊपर समेट लिया था। उसे इसलिए गिरफ्तार किया गया था कि उसके यहाँ जिन पेतल्युरा सिपाहियों को टिकाया गया था, उनका घोड़ा उसके शेड से गुम हो गया था। एक अधेड़ औरत जिसकी छोटी-छोटी चपल आँखें थीं और नुकीली-सी ठुड्डी थी, फर्श पर बैठी हुई थी। वह समोगन बेचकर अपनी जीविका चलाती थी और उसको इस अभियोग में यहाँ ला पटका गया था कि उसने एक घड़ी और कुछ दूसरी

बेशकीमत चीजें चुरायी हैं। कोर्चागिन नीमबेहोशी की हालत में खिड़की के नीचे एक कोने में अपनी कुचली हुई टोपी का तकिया लगाये लेटा था।

एक नौजवान स्त्री उसी मालगोदाम में लायी गयी। वह सिर में एक रंगीन रुमाल बाँधे थी और दहशत के मारे उसकी आँखें निकली पड़ रही थीं।

वह एक-दो पल खड़ी रही और फिर शराब बेचनेवाली औरत के बगल में बैठ गयी।

शराब बेचनेवाली ने आगन्तुक स्त्री को कुतूहलपूर्ण आँखों से देखा और जल्दी-जल्दी कहा, 'पकड़ी गयी क्यों ?'

कोई जवाब नहीं मिला। मगर शराब बेचनेवाली स्त्री इतनी जल्दी छोड़ने वाली न थी।

'तुमको क्यों पकड़ा ? समोगन के मामले में तो नहीं ?'

किसान लड़की उठ खड़ी हुई और उसने इस हठीली बुढ़िया को देखा।

उसने धीमे से जवाब दिया, 'मुझे तो मेरे भाई के कारण पकड़ा है।'

'और तुम्हारा भाई कौन है ?' उस बुड्ढी स्त्री ने पूछा। वह तो जैसे उसके पीछे ही पड़ गयी थी।

अब बुड्ढा बोल उठा।

'तुम क्यों खामखा उसे तंग कर रही हो। वह यों ही कुछ कम परेशान नहीं है। उस पर भी तुम बकबक लगाये हुए हो।'

वह स्त्री तेजी से ओठे की तरफ मुड़ी।

'तुम कौन होते हो मुझको बताने वाले कि मैं क्या करूँ, क्या न करूँ ? मैं तुमसे तो बात कर नहीं रही हूँ।'

बुड्ढे ने थूका।

'उसे परेशान मत करो, मैं तुमसे कहता हूँ।'

कोठरी में फिर खामोशी छा गयी। उस किसान लड़की ने एक बड़ा-सा शॉल बिछाया और अपने हाथ का तकिया लगाकर उस पर लेट गयी।

शराब बेचनेवाली ने खाना खाना शुरू किया। बूढ़ा उठकर बैठ गया, फर्श पर पैर रख लिये, धीरे-धीरे अपने लिए एक सिगरेट बनायी और उसे सुलगा लिया। तीखे धुएँ के बादल फैल गये।

'इस बदबू में तो कोई शांति से खा भी नहीं सकता।' औरत बड़बड़ायी, गोकि उसके जबड़े बदस्तूर काम कर रहे थे। 'तुमने तो इस सारी जगह को धुएँ से भर दिया है।'

बूढ़े ने चिढ़ कर मजाक बनाते हुए जवाब दिया :

'क्यों, वजन घटने का डर है क्या ? तुम्हारा यही हाल रहा तो जल्दी ही दरवाजे में से निकलना मुश्किल हो जायगा। तुम इस लड़के को कुछ खाने को क्यों नहीं देतीं। सब का सब अपने ही पेट में ठूँसे जा रही हो !'

उस औरत ने क्रोध का भाव दिखलाया।

'मैंने कोशिश की मगर उसे कुछ चाहिए ही नहीं। मगर तुम्हें इससे क्या बहस। तुम अपना मुँह क्यों नहीं बंद रखते — मैं तुम्हारा खाना तो खा नहीं रही हूँ।'

लड़की उस बूढ़ी स्त्री की तरफ मुड़ी और अपने सिर से कोर्चागिन की ओर इशारा करते हुए उसने पूछा :

'तुम्हें मालूम है कि इसे यहाँ पर क्यों लाया गया है।

बूढ़ी स्त्री इस बात से खुश हो गयी कि उसको सम्बोधित किया गया। उसने झट जवाब दिया :

'यहीं का लड़का है — कोर्चागिन का छोटा लड़का। उसकी माँ रसोई-दारिन है।'

फिर लड़की की तरफ झुकते हुए उसने कान में कहा :

'उसने एक बोल्शेविक को छुड़ाया था — एक मल्लाह को, जो यहीं मेरे पड़ोसी जोजलिखा के यहाँ रहता था।'

उस नौजवान स्त्री को वे शब्द याद आये जो उसने बाहर चोरी से सुन लिये थे, 'मैं इन कागजात को हेडक्वार्टर भेज रहा हूँ ताकि इसका काम तमाम करने की इजाजत मुझे मिल जाय।'

एक के बाद दूसरी फौजी गाड़ी जंक्शन पर आ रही थी और उनमें से रेगुलर सैनिकों की बटालियन पर बटालियन निकलकर भीड़ की तरह फैल रही थीं। **जपोरोजेत्स** नाम की बख्तरबंद गाड़ी बगल की एक रेलवे लाइन पर धीरे-धीरे रेंग रही थी। इस गाड़ी में चार डब्बे थे और उसकी लोहे की दीवारों में तमाम रिबिट लगे हुए थे। खुले हुए डब्बों में से तोपें उतारी गयीं और माल के बंद डब्बों में से घोड़े बाहर निकाले गये। घोड़ों पर वहीं जीन कसी गयी और घुड़सवार, पैदल दस्तों की उस भीड़ में से अपना रास्ता बनाते हुए, स्टेशन के यार्ड में पहुँचे जहाँ घुड़सवारों की टुकड़ी कतार बना रही थी।

अफसरान अपनी टुकड़ियों के नम्बर पुकारते हुए इधर-उधर दौड़ रहे थे।

स्टेशन में बर्र के छत्ते की सी भनभनाहट गूँज रही थी। धीरे-धीरे उस शोर मचाती और भंवर में पड़ी चक्कर सी खाती बेतरतीब भीड़ को ठोंक-पीट कर उसमें से बाकायदा प्लैटून बनाये गये और थोड़ी ही देर में हथियारबद

सिपाहियों का एक रेला नगर की ओर बढ़ चला। काफी रात तक गाड़ियों की चूँ-चरर-मरर सुनायी देती रही और राइफिल डिवीजन के पीछे-पीछे चलने वाले लोग सड़क पर चलते रहे।

पावेल कोर्चागिन खिड़की से बाहर झाँकने के लिए उठा। भोर के धुँधलके में उसने सड़क पर गाड़ियों के खड़खड़ाने और बहुत से पैरों के मार्च करने की आवाज सुनी और सुना बहुत से कंठों को गाना गाते।

उसके पीछे से किसी की नर्म मद्धिम-सी आवाज आयी :

'शहर में फौज आयी है।'

कोर्चागिन घूमा।

बोलनेवाली वही लड़की थी जो एक रोज पहले वहाँ लायी गयी थी।

कोर्चागिन उसकी कहानी सुन चुका था — उस शराब बेचनेवाली औरत ने खोद-खोदकर सारी बातें उससे मालूम कर ली थीं। वह शहर से करीब पाँच मील दूर एक गाँव में रहती थी जहाँ उसका बड़ा भाई ग्रित्स्को, जो अब लाल छापेमार था, गरीब किसानों की एक कमेटी का प्रधान रह चुका था।

जब बोल्शेविक वहाँ से चले तो ग्रित्स्को ने भी मशीनगन की पेटी अपनी कमर में बाँधी और उनके संग चल दिया। अब मौजूदा अधिकारी उसके घर-वालों के पीछे हाथ धोकर पड़े थे। ग्रित्स्को के घर में जो एक अकेला घोड़ा था, वह भी छीन लिया गया था। उसका बाप कुछ दिन जेल में भी रहा और वहाँ उसे बहुत-बहुत तकलीफों का सामना करना पड़ा। गाँव का चौधरी — जो उन लोगों में से था जिन पर ग्रित्स्को ने सख्ती से रोक लगायी थी — अब महज उन्हें सताने के लिए हमेशा उनके घर पर अजनबियों को लादता रहता था। परिवार अब बिल्कुल तबाह हो गया था। और अभी एक रोज पहले जब कमांडैण्ट एक तलाशी के सिलसिले में उस गाँव आया था, तो चौधरी उसे लेकर उस लड़की के घर पहुँच गया। लड़की कमांडैण्ट साहब की आँख पर चढ़ गयी और दूसरे रोज सबेरे वह उसको 'पूछताछ के लिए' अपने संग शहर ले आया।

कोर्चागिन सो नहीं सका। किसी करवट उसे चैन नहीं आ रहा था। उसके दिमाग में एक ही सवाल चक्कर काट रहा था जिसको वह दिमाग से हटा नहीं पा रहा था और वह सवाल था : 'अब इसके बाद क्या होगा?'

उसका घायल जिस्म बुरी तरह दर्द कर रहा था। उस कौसेक सिपाही ने उसे बड़ी बेदर्दी से मारा था।

उसके दिमाग में तमाम बुरे-बुरे विचार भीड़ लगा रहे थे। उनसे बचने के

लिए पावेल दोनों स्त्रियों की फुसफुसाहट सुनने लगा।

बहुत ही धीमी आवाज में, इतनी कि वह मुश्किल ही से सुनायी देती थी, लड़की बतला रही थी कि कैसे कमांडैण्ट ने उसे डराया-धमकाया, फुसलाया-बहलाया और जब इतने पर भी उसने कमांडैण्ट को घुड़क दिया तो वह गुस्से से लाल-पीला होता हुआ बोला : 'मैं तुम्हें एक तहखाने में बन्द कर दूँगा जहाँ तुम मुझसे नहीं बच सकोगी।'

कोठरी के कोनों-अँतरों में अंधकार छुपा बैठा था। और एक रात सामने थी — बेचैन, दम घोंटनेवाली रात। कैद में यह पावेल की सातवीं रात थी। मगर उसको लगता था कि जैसे यहाँ उसे महीनों हो गये हैं। फर्श बहुत सख्त था और उसके शरीर के जोड़-जोड़ में दर्द हो रहा था। अब उस पुराने माल-गोदाम में तीन लोग थे। उस शराबवाली औरत को खोरूँजी साहब ने छोड़ दिया था ताकि वह जाकर कहीं से वोदका ले आये। बूढ़े दादा अपने ओठे पर पड़े इतने इतमीनान से खर्राटे भर रहे थे जैसे वह अपने घर की गर्म अँगीठी के ऊपर सो रहे हों; ख्रिस्तिना और पावेल लगभग अगल-बगल फर्श पर लेटे हुए थे। कल पावेल ने खिड़की में से सर्गेई को देखा था जो बड़ी देर तक सड़क पर खड़ा उदास आँखों से मकानों की खिड़कियों को देखता रहा था।

पावेल ने सोचा था, 'उसे पता है कि मैं यहाँ हूँ।'

लगातार तीन दिन तक कोई उसके लिए खट्टीवाली काली रोटी लाया था — मगर कौन, यह पहरेदार न बतलाते थे। और दो दिन तक कमांडैण्ट ने बार-बार उससे सवाल पूछे थे।

इस सबका क्या मतलब है ?

पूछताछ के दौरान में उसने एक भी बात नहीं बतलायी; उलटे, हर चीज से उसने इनकार किया था। उसे खुद नहीं मालूम था कि वह क्यों चुप रहा। वह उन लोगों की तरह साहसी और मजबूत बनना चाहता था जिनके बारे में उसने किताबों में पढ़ा था। मगर उस रात जब वह जेल ले जाया जा रहा था और उसको कैद करने वालों में से एक ने कहा था, 'हुजूर खोरूँजी, इसको फिजूल अपने साथ घसीटे ले चलने से क्या हासिल होगा ? इसका तो बस एक ही इलाज है : पीठ में एक गोली मारिए और खत्म कीजिए झंझट को,' तो उसे डर लगा था। सचमुच, सोलह साल की उम्र में मरने का खयाल बड़ा भयानक था ! मरने का मतलब होगा कि वह फिर जिन्दा नहीं रहेगा।

ख्रिस्तिना भी सोच रही थी। उसे इस लड़के से ज्यादा बातें मालूम थीं। बहुत मुमकिन है कि इसे अभी मालूम ही न हो कि आगे इस पर क्या गुजरने वाली है ... वही बात जो उसने चुपके से सुन ली थी।

वह रात को बिस्तर में पड़ा बेचैन करवटें बदलता रहा और सो नहीं

सका। ख्रिस्तिना को उस पर दया आ रही थी। उसका मन पावेल के लिए करुणा से भरा हुआ था, गो उसकी अपनी स्थिति भी उसकी छाती पर बोझ बनी हुई थी — कमांडैण्ट के इन शब्दों के भयावने अर्थ को भूलना नामुमकिन था : 'कल मैं तुम्हें ठीक कर दूंगा, अगर तुम मेरे संग नहीं आतीं तो मैं तुम्हें थाने में बन्द करवा दूंगा और फिर वहाँ के कौसेक पहरेदार तुम्हें छोड़ने से रहे। लिहाजा तुम्हारे ही ऊपर है यह चीज, जिसे चाहो चुन लो।'

ओह ! कितनी कठिन बात है यह ! किसी तरफ से रहम की कोई उम्मीद नहीं ! इसमें उसकी क्या गलती थी कि ग्रित्स्को बोल्शेविकों से जा मिला ? जिन्दगी भी कितनी बेदर्द चीज है !

एक भोंथा दर्द उसका गला घोंट रहा था और असहाय निराशा और भय की यंत्रणा में वह बड़े जोर-जोर से, मगर निःशब्द, सिसकियाँ ले रही थी जिससे उसका सारा शरीर काँप-काँप जाता था।

दीवार के पास कोने में एक छाया हिल रही थी।

'तुम क्यों रो रही हो ?'

भरे हुए दिल से ख्रिस्तिना ने दबे स्वर में अपने खामोश साथी को अपने दुःख की कहानी सुनायी। वह कुछ बोला नहीं, बस उसने अपना हाथ हल्के से उसके हाथ पर रख दिया।

अपने आँसुओं को पीते हुए डरे हुए स्वर में फुसफुसाकर लड़की ने कहा, 'वे लोग मुझे सता-सताकर मार डालेंगे। मुझे कोई चीज नहीं बचा सकती !'

पावेल इस लड़की से आखिर क्या कहता ? कहने के लिए कुछ भी नहीं था। जिन्दगी दोनों को अपने फौलादी शिकंजे में लेकर पीसे डाल रही थी।

एक चीज यह हो सकती है कि कल जब वे लोग इसको लेने के लिए आयें, तो वह डट कर उनका मुकाबिला करे। मगर उससे होगा क्या ? वे लोग मार-मारकर उसका भुर्ता बना देंगे या सिर पर तलवार का एक वार होगा जो काम तमाम कर देगा। मगर इस दुखी लड़की को, चाहे जैसे हो, वह आराम पहुँचाना चाहता था और शायद इसीलिए बड़े प्यार से उसके हाथ को थपथपा रहा था। लड़की का सिसकना बन्द हो गया। बीच-बीच में फाटक पर के सन्तरी का उधर से गुजरने वाले आदमी से घुड़ककर पूछना सुनायी दे जाता, 'कौन जा रहा है ?' और फिर खामोशी छा जाती। बूढ़े दादा गहरी नींद में सो रहे थे। नातमाम मिनट धीरे-धीरे रेंग रहे थे। फिर पावेल ने उस लड़की की बाँहों को अपने इर्द-गिर्द लिपटता महसूस किया और महसूस किया कि वह लड़की उसे अपनी तरफ खींच रही है। पावेल को बड़ा ताज्जुब हुआ।

'सुनो,' उसके गर्म ओंठ धीरे-धीरे कह रहे थे, 'मेरे लिए कोई बचत नहीं है। अगर यह अफसर नहीं तो थाने पर के वे पहरेदार कोई-न-कोई मुझे

जरूर खराब करेगा। मैं तुमसे विनती करती हूँ मेरे प्यारे, कि तुम मुझे ले लो ताकि वह कुत्ता मेरे शरीर को लेनेवाला पहला व्यक्ति न हो।'

'यह तुम क्या कह रही हो, ख्रिस्तिना !'

मगर उन मजबूत बाँहों ने उसे छोड़ा नहीं। उसके भरे-भरे गदराये हुए जलते हुए ओंठ उसके ओठों से जा लगे — उनसे बचना मुश्किल था। लड़की के शब्द सरल थे, कोमल थे, प्यार में डूबे हुए थे और पावेल को पता था कि वह क्यों ऐसे शब्द बोल रही है।

फिर उसके लिए उसके परिवेश का अस्तित्व मिट गया। दरवाजे पर का ताला, लाल बालों वाला कौसेक, कमांडैण्ट, वह बेरहम मार-पीट, वे सात दम घोंटनेवाली बेचैन निद्रा-विहीन रातें — सब कुछ भूल गयीं और क्षण भर के लिए केवल वे जलते हुए ओंठ और वह आँसुओं से भीगा हुआ चेहरा रह गया।

तभी एकाएक उसे तोनिया की याद आयी।

'उसको मैं कैसे भूल गया ? उसकी वे प्यारी-प्यारी आँखें जिनका कहीं कोई जवाब नहीं।'

उसने अपनी इच्छाशक्ति का सारा जोर लगाया और अपने को ख्रिस्तिना के आलिंगन से छुड़ा लिया। शराब पिये हुए आदमी की तरह वह लड़खड़ाते पैरों पर खड़ा हुआ और जाकर सींखचे को पकड़ लिया। ख्रिस्तिना के हाथों ने वहाँ भी उसे पा लिया।

'क्यों, क्या बात है ?'

उसके मन का सारा आवेग इस सवाल में भरा हुआ था ! पावेल उसकी ओर झुका और उसके हाथों को दबाते हुए बोला :

'नहीं ख्रिस्तिना, मैं नहीं ... तुम इतनी ... अच्छी हो।' उसे खुद नहीं पता कि इसके अलावा उसने और क्या-क्या कहा।

इस असह्य शान्ति को तोड़ने के लिए वह फिर तनकर खड़ा हुआ और अपने ओठे पर चला गया। उसके सिरे पर बैठते हुए उसने बुड्ढे को जगा दिया।

'दादा, एक सिगरेट दो मुझे।'

वह लड़की अपने शॉल में लिपटी हुई कोने में बैठी रोती रही।

दूसरे रोज कमांडैण्ट कुछ कौसेक सिपाहियों के साथ आया और ख्रिस्तिना को पकड़ ले गया। जाते-जाते उसकी आँखों ने पावेल की आँखों को खोजा और पावेल ने पाया कि उन आँखों में शिकायत है। और जब वह चली गयी और दरवाजा बन्द हो गया तो उसकी आत्मा पहले से कहीं ज्यादा उदास और सूनी हो गयी।

सारे दिन बूढ़े दादा पावेल के मुँह से एक शब्द नहीं निकलवा सके। सन्तरी और कमांडैण्ट के गार्ड दोनों बदल गये थे। शाम होते-होते एक नया

कैदी लाया गया। पावेल ने उसे पहचान लिया। वह दोलिनिक था, शकर के कारखाने का एक बढ़ई। वह बहुत ठोस, मजबूत, चौड़ा-चकला आदमी था। एक पुराने तार-तार हो रहे कोट के नीचे वह उड़े-उड़े से पीले रंग की कमीज पहने हुए था। उसने गौर से कोठरी का मुआइना किया।

पावेल ने १९१७ के फरवरी महीने में उसे देखा था, जब क्रांति की थर-थरी उनके शहर में पहुँची थी। उन दिनों जो शोर-गुल से भरे प्रदर्शन हुए थे, उनमें उसने सिर्फ एक बोल्शेविक को बोलते सुना था, और वह बोल्शेविक था यही दोलिनिक। वह सड़क से लगी हुई एक बाड़ी पर चढ़ गया था और वहाँ से उसने सैनिकों को सम्बोधित करते हुए भाषण दिया था। पावेल को अब भी उसके अन्तिम शब्द याद थे :

'फौजी भाइयो, बोल्शेविकों के पीछे-पीछे चलो, वे तुम्हारे साथ दगा नहीं करेंगे !'

तब से उसने उस बढ़ई को नहीं देखा था।

बूढ़े दादा बड़े खुश थे कि उन्हें इस कोठरी में नया साथी मिला, क्योंकि जाहिर है कि दिन भर चुपचाप बैठे रहना उन पर बहुत भारी गुजरता था। दोलिनिक ओठे के किनारे पर उनकी बगल में बैठ गया, उनके संग एक सिग-रेट पी और सभी चीजों के बारे में उनसे पूछ डाला।

इसके बाद आगन्तुक कोर्चागिन के पास आया और उसने पूछा, 'कहो मेरे नन्हें दोस्त, तुम यहाँ कैसे आये ?'

पावेल ने एक-एक शब्द में जवाब दिया और दोलिनिक ने देखा कि पावेल के मन का सन्देह ही इसका कारण है। दोलिनिक को जब पावेल पर लगाये गये अभियोग की बात मालूम हुई, तो उसकी तीक्ष्ण आँखें आश्चर्य से फैल गयीं और वह उस लड़के की बगल में जाकर बैठ गया।

'तो तुम्हारा कहना है कि तुमने जुखराई को छुड़ाया ? बड़ी दिलचस्प बात है। मुझे नहीं मालूम था कि उन्होंने तुमको पकड़ लिया है।'

पावेल को दोलिनिक की बात से अचरज हुआ और वह अपनी कोहनी के सहारे उठ बैठा।

'मैं किसी जुखराई को नहीं जानता। इन लोगों को क्या, ये जिसको चाहे जो नाम लगा दें।'

दोलिनिक मुस्कराता हुआ उसके और पास आ गया।

'ठीक है, ठीक है, दोस्त। मगर मेरे संग इतना चौकन्ना होने की जरूरत नहीं। मुझे तुमसे ज्यादा बातें मालूम हैं।'

बहुत धीरे से ताकि वह बूढ़ा उनकी बात न सुन सके, दोलिनिक ने कहा :

'मैंने खुद जुखराई को विदा किया है, गालिबन वह अपनी मंजिल पर

पहुँच भी गया होगा। फियोदोर ने मुझे उस घटना के बारे में सब कुछ बतला दिया है।'

क्षण भर चुपचाप विचार करने के बाद दोलिनिक ने अपनी बात में इतना और जोड़ा :

'मैं देखता हूँ कि तुम ठीक धात के बने हो, दोस्त। गोकि यह बहुत बुरा हुआ कि उन्होंने तुमको पकड़ लिया और तुम्हारे बारे में उन्हें सब कुछ मालूम है। यह बुरा हुआ, बहुत बुरा, मैं तो यही कहूँगा।'

उसने अपना कोट उतारा और उसे जमीन पर बिछा कर उस पर दीवाल के सहारे टिककर बैठ गया और अपने लिए एक और सिगरेट बनाने लगा।

दोलिनिक की आखिरी बात से पावेल के आगे पूरी स्थिति स्पष्ट हो गयी। इसमें कोई शक नहीं कि दोलिनिक ठीक बात कह रहा है। उसने जुखराई को विदा किया था और इसका मतलब है ... !

उस शाम को उसे पता चला कि दोलिनिक को पेतल्युरा के कौसेकों के बीच प्रचार करने के जुर्म में पकड़ा गया है। इतना ही नहीं, उसे सूबाई इंकलाबी कमेटी की तरफ से जारी की हुई एक अपील बाँटते पकड़ा गया था जिसमें सैनिकों से कहा गया था कि हथियार डाल दें और बोल्शेविकों से मिल जायें।

दोलिनिक ने सावधानी के खयाल से पावेल को ज्यादा बातें नहीं बतलायीं।

उसने अपने मन में कहा, 'कौन जाने ? सबों ने अगर कहीं इसे डंडे लगाये तो न जाने क्या हो ? आखिर लड़का ही तो है अभी।'

बहुत रात गये जब वे लोग सोने की तैयारी कर रहे थे, तो उसने अपने मन की आशंका इस प्रकार संक्षेप में व्यक्त की :

'तो कोर्चागिन, हम लोग खासे बुरे फँसे हैं, देखें कहाँ जाकर हमारा पानी मरता है।'

दूसरे रोज एक और नया कैदी लाया गया — बड़े-बड़े कानों और दुबली-पतली मरियल सी गर्दनवाला हज्जाम श्ल्योमा जेल्टसर जिसे शहर में हर कोई जानता था।

वह दोलिनिक को बहुत आवेश और भाव-भंगिमा के साथ बतला रहा था, 'फुक्स, ब्लुवस्टाइन और ट्रेक्टेनबर्ग नमक-रोटी से उसका स्वागत करने जा रहे थे। मैंने उनसे कहा कि अगर तुम्हारा जी हो तो करो, मगर बाकी यहूदी लोग तुम्हारा साथ देंगे क्या ? नहीं देंगे, मैं तुमसे कहता हूँ। उनको अपना भी तो नफा-नुकसान देखना है। फुक्स के पास अपनी दूकान है और ट्रेक्टेनबर्ग के पास आटे की चक्की है। मगर मेरे पास क्या है ? और बाकी भूखे लोगों के पास क्या है ? कुछ नहीं — भिखमंगे हैं हम सब और क्या ! तुम तो जानते ही हो कि मुझे

अपनी जबान पर काबू नहीं, और आज जब मैं एक अफसर की दाढ़ी बना रहा था — और कौन, वही जो नये आये हैं उनमें से एक — तो मैंने कहा : आपका क्या खयाल है, ऐटमन पेतल्युरा को इस सब मारकाट के बारे में पता है या नहीं ? क्या वे डेपुटेशन से मिलेंगे ? अरे बाप रे बाप, कितनी बार मैं अपनी इस निगोड़ी जबान के कारण मुसीबत में न फँसा होऊँगा ! तो जब मैं बहुत करीने से उस अफसर की दाढ़ी बना चुका और ढंग से चेहरे पर पाउडर-साउ-डर लगा दिया तो जानते हो उस अफसर ने क्या किया ? वह उठा और मुझे पैसा देना तो दूर रहा, अधिकारियों के खिलाफ प्रचार करने के जुर्म में मुझे गिरफ्तार कर लिया ।' जेल्टसर ने अपनी छाती ठोंकी और बोला, 'अब तुम्हीं बताओ कि यह भी भला कोई प्रचार था ? आखिर मैंने क्या कह दिया ? मैंने उस आदमी से सिर्फ एक बात ही तो पूछी और ... इसके लिए उन्होंने मुझे यहाँ लाकर बन्द कर दिया, वाह रे .... !'

अपने आवेश में जेल्टसर दोलिनिक की कमीज के एक बटन को मरोड़ने लगा और उसका हाथ पकड़ कर खींचने लगा ।

दोलिनिक को बेसाख्ता मुस्कराहट आ गयी जब उसने गुस्से में भरे श्ल्योमा की बात सुनी ।

हज्जाम की बात खतम होने पर दोलिनिक ने बड़ी गंभीरता से कहा, 'हाँ श्ल्योमा, तुम जैसे होशियार आदमी से ऐसी बेवकूफी की उम्मीद नहीं थी। तुमने बड़े बेमौके अपनी जबान की लगाम ढीली कर दी । मैं कभी तुम्हें यहाँ आने की सलाह न देता !'

जेल्टसर ने बात को समझने के अन्दाज में सिर हिलाया और हाथ से निराशा की मुद्रा व्यक्त की । तभी दरवाजा खुला और वह शराबवाली अन्दर ढकेली गयी । वह लड़खड़ाती और अपने पहरेदार कौसेक सिपाही पर गालियों की बौछार करती हुई कोठरी में घुसी ।

सन्तरी ने जोर से फाटक बन्द किया । अन्दर के लोगों ने उसको बाहर ताला बन्द करते सुना ।

वह औरत ओठे के सिरे पर बैठ गयी तो उस बूढ़े ने खुश-खुश उससे कहा : 'अच्छा तो तुम फिर हमारे संग आ गयीं ।'

उस शराबवाली ने बूढ़े को गुस्से से तरेरा और अपनी पोटली उठा कर दोलिनिक के बगल में फर्श पर बैठ गयी ।

मालूम यह हुआ कि उसको सिर्फ इतनी देर के लिए छोड़ा गया था कि वह अपने कैद करने वालों के लिए समोगन शराब की कुछ बोतलें ले आये ।

एकाएक बगलवाले सन्तरियों के कमरे से चीख-पुकार और भागते हुए पैरों की आवाज सुनायी दी । कोई कुत्ते की तरह भूँक-भूँककर हुक्म दे रहा था ।

कैदियों ने उस आवाज को ठीक से सुनने के लिए अपनी बात बन्द कर दी।

पुराने घंटाघर वाले उस बदसूरत गिर्जे के सामने फैले मैदान में कुछ अजीब कार्रवाइयाँ हो रही थीं। चौक के तीन तरफ फौजें आयताकार खड़ी थीं। ये रेगुलर पैदल फौज के डिवीजन की टुकड़ियाँ थीं, जो अपने लड़ाई के पूरे साज-सामान के साथ इकट्ठा की गयी थीं।

गिर्जाघर के फाटक के सामने पैदल फौजों की तीन रेजिमेण्टें शतरंज के मोहरों की तरह वर्गाकार खड़ी थीं। उनके पीछे स्कूल की चहारदीवारी थी।

पेतल्युरा सैनिकों का यह भूरा-भूरा, गन्दा-सा समूह आराम की मुद्रा में राइफिलें लिये खड़ा था। ये सैनिक सिर पर लोहे के अजीब बेहूदा-से टोप औंधाये हुए थे जो देखने में ऐसे लगते थे कि मानो कुम्हड़े के दो बराबर-बराबर हिस्से हों। सैनिक अपनी कारतूस की पेटियों से बुरी तरह लदे हुए थे। डाइ-रेक्टरी के पास सबसे अच्छी डिवीजन यही थी।

ये लोग अच्छी वर्दियाँ पहने थे और पुरानी जारशाही सेना के साज-सामान से लैस थे। इनमें खास तौर पर धनी किसान थे जो हर बात को अच्छी तरह समझ-बूझकर सोवियत सत्ता के खिलाफ लड़ रहे थे। फौजी दृष्टि से इस अत्यंत महत्वपूर्ण रेलवे जंक्शन की रक्षा के लिए यह डिवीजन यहाँ लायी गयी थी। शेपेतोवका से पाँच दिशाओं में रेलवे लाइनें फूटती थीं जो देखने में लोहे के चमकदार फीते जैसी जान पड़ती थीं। पेतल्युरा के लिए इस जंक्शन के हाथ से निकल जाने का मतलब था, सब कुछ हाथ से निकल जाना। यों भी स्थिति यह थी कि 'डाइरेक्टरी' के हाथ में अब बहुत थोड़ा सा इलाका बचा था और विनित्सा नाम का कस्बा ही अब पेतल्युरा की राजधानी थी।

'चीफ ऐटमन' साहब ने खुद फौजों का मुआइना करने का फैसला किया था और इस वक्त हर चीज उनके आने के इन्तजार में तैयार खड़ी थी।

पीछे दूर पर एक कोने में, जहाँ उन पर निगाह पड़ने की सबसे कम उम्मीद थी, नये रंगरूटों की एक रेजिमेण्ट खड़ी थी। ये नंगे पैर नौजवान तरह-तरह के बेमेल और भद्दे कपड़े पहने हुए थे। ये सब किसानों के लड़के थे जिन्हें भरती करने वाले दस्तों ने आधी रात को उनके बिस्तरों से उठा कर भरती कर लिया था या जिन्हें राह चलते पकड़ लिया था। उनमें से किसी का भी लड़ने का कोई इरादा नहीं था।

वे लोग आपस में कहते, 'हमारा सिर नहीं फिर गया है।'

पेतल्युरा के अफसर ज्यादा से ज्यादा यही कर सकते थे कि इन रंगरूटों को फौजी पहरे में शहर लायें, उनकी कम्पनियां और बटालियनें बनायें और

उनको हथियार दें। इससे ज्यादा तो वे कुछ नहीं कर सकते थे। मगर होता यह था कि दूसरे ही रोज इनमें से एक-तिहाई रंगरूट, जो भेड़-बकरियों की तरह इकट्ठा किये गये थे, अचानक गायब हो जाते थे और इस तरह उनकी तादाद रोज-ब-रोज कम होती जाती थी।

ऐसी हालत में उन्हें बूट देना तो नासमझी की बात होती और खास तौर पर ऐसी हालत में जब कि बूटों का स्टाक कम ही था। तो भी हुक्म जारी किया गया कि भर्ती किये हुए सब लोग बूटों के लिए अपने-आपको रिपोर्ट करें। फलस्वरूप धागों और तारों से बाँधे गये फटे-पुराने जूतों की एक अजीबो-गरीब बारात लग गयी।

उन्हें परेड के लिए नंगे पाँव बाहर निकाला गया।

पैदल सिपाहियों के पीछे गोलुब की घुड़सवार रेजिमेन्ट खड़ी थी।

शहर के तमाम लोग मारे कुतूहल के परेड देखने आये थे। उनकी भीड़ को घुड़सवार रोके हुए थे।

आखिरकार खुद 'चीफ ऐटमन' साहब तशरीफ लाने वाले थे, कोई ऐसी-वैसी बात थोड़े ही थी। इस तरह की घटनाएँ शहर में बहुत कम ही होती थीं। इसलिए कोई भी आदमी इस फोकट के मनोरंजन को हाथ से नहीं जाने देना चाहता था।

गिर्जाघर की सीढ़ियों पर तमाम कर्नल और कप्तान, पादरी की दोनों लड़कियां, मुट्ठी भर उक्रेनी स्कूल मास्टर, थोड़े से 'आजाद कोसैक' और मेयर साहब जिनकी कूबड़ निकली हुई थी—कहने का मतलब यह कि शहर के सभी धनी-मानी लोग जनता के रूप में वहाँ खड़े थे और उन्हीं में थे पैदल सेना के इन्स्पेक्टर जनरल, जो काकेशस वालों की पोशाक चेरकेस्का पहने हुए थे। वही परेड के आला अफसर थे।

गिर्जे के अन्दर पादरी वासिली साहब अपने ईस्टर के कपड़े पहन रहे थे।

पेतल्युरा का स्वागत करने की बड़ी धूम-धाम के साथ तैयारियाँ हो रही थीं। नये भरती रंगरूटों को स्वामिभक्ति की शपथ लेनी थी और इसके लिए एक पीला और नीला झण्डा बाहर लाया गया था।

डिवीजन कमांडर एक पुरानी जर्जर फोर्ड मोटर में बैठ कर पेतल्युरा से मिलने के लिए स्टेशन चले।

उनके चले जाने पर पैदल सेना के इन्स्पेक्टर ने कर्नल चेर्नायक को बुलाया। यह एक लम्बा-तगड़ा अफ़सर था और बहुत बाँकपन से उसने मूँछें ऐंठ रखी थीं।

'किसी को अपने साथ ले लो और जाकर देखो कि कमांडैण्ट का दफ्तर और हज्जाम-अर्दली वगैरह सब ठीक हैं या नहीं। अगर तुम्हें वहाँ कुछ कैदी

मिलें तो उन्हें देख लेना और उनमें जो एकदम बेकार हों उनसे छुट्टी पा लेना।'

चेर्नायक ने अटेन्शन की मुद्रा में खड़े होते हुए सलाम किया, ठक्क से उसके बूटों की एड़ियाँ बोलीं। सबसे पहले जिस कोसैक कप्तान पर उसकी निगाह पड़ी, उसी को लेकर चेर्नायक सरपट घोड़े पर निकल गया।

इन्स्पेक्टर साहब बड़े तकल्लुफ से पादरी की बड़ी लड़की की ओर मुड़े।

'दावत की सब तैयारी ठीक है न ?'

'जरूर, जरूर। कमांडैण्ट साहब जान लड़ाये दे रहे हैं,' लड़की ने खूबसूरत इन्स्पेक्टर को उत्सुकता से एकटक देखते हुए जवाब दिया।

एकाएक भीड़ में खलबली मच गयी। एक घुड़सवार, अपने घोड़े की गर्दन पर झुका हुआ, सरपट भागा चला आ रहा था। हाथ हिलाते हुए चिल्लाकर उसने कहा :

'वे लोग आ रहे हैं !'

'फॉल इन !' इन्स्पेक्टर चिल्लाया।

सब अफसर अपनी-अपनी जगह के लिए दौड़ पड़े।

फोर्ड मोटर घड़र-घड़र करके गिर्जाघर तक पहुँची ही थी कि बैण्ड ने धुन बजानी शुरू कर दी : **उक्रेन सदा जिन्दा रहेगा।'**

डिवीजन कमांडर के बाद 'चीफ ऐटमन' बड़ी मशक्कत से गाड़ी से बाहर निकले। पेतल्युरा मझोले कद का आदमी था। उसका नुकीला सिर बहुत मजबूती से जमा कर उसकी लाल, साँड़ जैसी गर्दन पर रखा हुआ था। वह बहुत अच्छे ऊनी कपड़े की नीली ट्यूनिक पहने था जिस पर एक पीली पेटी लगी हुई थी। एक छोटा सा ब्राउनिंग रिवाल्वर साबड़ के केस में रखा इस पेटी में लगा हुआ था। उसके सिर पर खाकी रंग की छज्जेदार टोपी थी जिसके ऊपर इनेमल का त्रिशूल बना हुआ था।

साइमन पेतल्युरा की आकृति में कोई खास फौजी बात न थी। सच बात तो यह है कि वह फौजी आदमी मालूम ही नहीं होता था।

उसने इन्सपेक्टर की पूरी रिपोर्ट सुनी। उस वक्त उसके चेहरे पर ऐसा भाव था मानो वह चीज उसे बहुत अप्रिय लग रही हो। उसके बाद मेयर ने उसके स्वागत में भाषण दिया।

पेतल्युरा ने उड़े-उड़े ढंग से उसको सुना और मेयर के सिर के पीछे से, सामने खड़ी रेजिमेंटों को देखता रहा।

उसने इन्सपेक्टर को इशारा किया, 'अब हमें शुरू करना चाहिए।'

झंडे के पास के छोटे-से मंच पर खड़े होकर अपने सिपाहियों के सामने पेतल्युरा ने दस मिनट की तकरीर की।

इस तकरीर से किसी पर कोई असर नहीं पड़ा। सफर की थकान के

कारण पेतल्युरा के बोलने में कोई जोश न था। तकरीर खतम होने पर सिपाहियों ने 'स्लावा ! स्लावा !' के नारे लगाये और पेतल्युरा रूमाल से माथे का पसीना पोंछता हुआ मंच से उतरा। फिर, इन्सपेक्टर और डिवीजन कमांडर को साथ लेकर उसने फौजी दस्तों का मुआइना किया।

नये-नये भर्ती रंगरूटों की सफों के पास से गुजरने पर उसके माथे पर बल पड़ गये और उसकी आँखों में उपेक्षा और घृणा का भाव दिखायी दिया। चिढ़ के मारे वह अपने होंठ चबाने लगा।

जब मुआइना खतम होने आ रहा था और नये रंगरूटों की एक के बाद दूसरी प्लैटून झंडे तक मार्च करके — जहाँ पादरी वासिली बाइबिल हाथ में लिये खड़े थे — पहले बाइबिल को और बाद में झंडे को चूम रही थी, एक अप्रत्याशित घटना घटी।

किसी को नहीं मालूम कि ये लोग किस तरह चौक तक पहुँचे जहाँ परेड हो रही थी। मगर सबने देखा कि कुछ लोगों का एक प्रतिनिधि-मंडल पेतल्युरा के पास पहुँचा। इस दल के आगे-आगे लकड़ी का धनी व्यापारी ब्लुवस्टाइन था जो रस्मिया तौर पर रोटी और नमक हाथ में लिये हुए था। उसके पीछे और चार लोग थे जिनमें कपड़े का व्यापारी फुक्स भी था।

गुलामों की तरह झुक कर सलाम बजाते हुए ब्लुवस्टाइन ने तश्तरी पेतल्युरा की तरफ बढ़ायी। पेतल्युरा के संग खड़े एक अफसर ने तश्तरी ले ली।

'राज्याधीश, यहाँ की यहूदी आबादी आपके प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता और सम्मान व्यक्त करती है। कृपया इस अभिनन्दन-पत्र को स्वीकार करें।'

तेजी से उस कागज पर निगाह दौड़ते हुए पेतल्युरा ने धीमे से कहा, 'अच्छा।'

फुक्स आगे बढ़ा।

'हम आपसे विनती करते हैं कि आप हमें अपना कारबार चालू करने दें। हम आपसे विनती करते हैं कि आप मारकाट से हमारी रक्षा करें।' 'मारकाट' शब्द पर फुक्स थोड़ा लड़खड़ाया।

गुस्से में पेतल्युरा की त्योरियों में बल पड़ गये।

'मेरी फौज मारकाट नहीं करती, यह बात तुम्हें याद रखनी चाहिए।'

फुक्स ने यों बाँहें फैला दीं जैसे कह रहा हो कि आप जो कहते हैं वही ठीक है।

पेतल्युरा के कंधे हिले। इस प्रतिनिधि-मंडल के असमय आगमन से उसे चिढ़ मालूम हो रही थी। वह गोलुब की ओर मुड़ा जो पीछे खड़ा अपनी काली मूँछें चबा रहा था।

'कर्नल साहब, यह आपके कौसेकों के खिलाफ शिकायत है,' पेतल्युरा ने

कहा। 'इस मामले की छानबीन कीजिये और माकूल कार्रवाई कीजिये।' फिर इन्स्पेक्टर की तरफ मुड़ते हुए उसने खुश्क ढंग से कहा :

'अब तुम परेड शुरू कर दो।'

इस अभागे प्रतिनिधि-मंडल को सपने में भी गुमान नहीं था कि उन्हें गोलुब का सामना करना पड़ेगा। लिहाजा अब उन्होंने पीछे हटने की जल्दी दिखायी।

दर्शकों का सारा ध्यान अब मार्च-पास्ट की तैयारियों पर केन्द्रित था। सैनिकों को तेज स्वर में दिये गये आदेश गूंज रहे थे।

गोलुब का चेहरा ऊपर से बहुत शान्त दिख रहा था। वह ब्लुवस्टाइन की ओर बढ़ा और फुसफुसाकर ही, मगर काफी जोर से, कहा :

'काफिरो, यहाँ से भाग जाओ नहीं तो अभी तुम्हारा कीमा बना दूँगा।'

बैंड बजने लगे और पहली टुकड़ियाँ स्क्वायर में मार्च करने लगीं। पेतल्युरा के पास पहुँचने पर सैनिकों ने बेजान मशीनों की तरह 'स्लावा' का नारा लगाया और बड़ी सड़क पर आगे बढ़ते हुए गलियों में गुम हो गये। कम्पनियों के आगे-आगे नयी खाकी वर्दी पहने अफसर इस तरह चल रहे थे मानो हवाखोरी के लिए निकले हों। उनके हाथ की छड़ियाँ भी इसी तरह हिल रही थीं। सैनिकों के क्लीनिंग-रॉड की ही तरह अफसरों की इन छड़ियों का भी चलन अभी हाल में शुरू हुआ था।

नये रंगरूटों को अफसर लोग बहुत कोंच रहे थे कि कुछ तो अनुशासन उनके अन्दर दिखायी दे, मगर बेसूद। ये रंगरूट जब गुजरे तो उनके नंगे पैरों की धीमी सरसराहट सुनायी दी। जिस वक्त दूसरी कम्पनी गुजर रही थी, सूती कमीज पहने एक किसान लड़का सलामी लेने के चबूतरे के पास ऐसे आश्चर्य से आँख फाड़कर 'चीफ' ऐटमन को देखने लगा कि उसका एक पैर सड़क के एक गड्ढे में घुस गया और वह मुँह के बल गिर पड़ा। उसकी राइफिल जोर से आवाज करके सड़क के पत्थर पर लुढ़क गयी। उसने उठने की कोशिश की, मगर पीछे से सिपाहियों के धक्के से वह फिर गिर पड़ा।

दर्शकों में से कुछ खिलखिलाकर हँस पड़े। कम्पनी की कतारें टूट गयीं और वह बिल्कुल बदअमली की हालत में स्क्वायर में से गुजरी। उस बद-किस्मत लड़के ने अपनी राइफिल उठायी और दूसरों के पीछे-पीछे दौड़ा।

पेतल्युरा ने इस भद्दे दृश्य से आँखें फेर लीं और परेड के खातमे का इन्तजार किये बगैर अपनी मोटर की तरफ चल दिया। इन्स्पेक्टर ने, जो ऐटमन के पीछे-पीछे चला आ रहा था, कुछ सहमे हुए स्वर में पूछा :

'क्या हुजूर ऐटमन साहब डिनर तक नहीं रुकेंगे ?'

'नहीं,' पेतल्युरा ने तमाचा-सा मारते हुए जवाब दिया।

सर्गेई ब्रुजाक, वालिया और क्लिम्का, दर्शकों की भीड़ में, गिर्जे की चहारदीवारी से लगे हुए परेड देख रहे थे। सर्गेई छड़ पकड़े हुए, आँखों में नफरत भरे, नीचे खड़े लोगों के चेहरे देख रहा था।

'चलो चलें वालिया, ये लोग अब अपनी दूकान उठा रहे हैं,' उसने जान-बूझकर तेज और उद्दंड स्वर में कहा और चलने के लिए मुड़ा। लोग हैरत से उसकी तरफ देखने लगे।

किसी की कुछ परवाह न करते हुए वह फाटक की ओर चल दिया। उसके पीछे-पीछे उसकी बहन और क्लिम्का भी चले गये।

कर्नल चेर्नायक और कप्तान साहब घोड़े को सरपट दौड़ाते हुए कमांडैंट के दफ्तर तक आये और अपने घोड़ों से उतर पड़े। अपने घोड़ों को फौज की डाक ले जानेवाले सवार को पकड़ाकर वे तेजी से संतरियों के कमरे में चले गये।

चेर्नायक ने तेज आवाज में डाक ले जानेवाले सवार से पूछा : 'कमांडैंट साहब कहाँ हैं।'

उस आदमी ने हकलाते हुए कहा, 'पता नहीं। कहीं चले गये हैं।'

चेर्नायक ने उस गन्दे कमरे में इधर-उधर नजर दौड़ायी और उन बिस्तरों को देखा जो अभी उठाये नहीं गये थे और जिन पर कमांडैंट के अंगरक्षक कोसैक सैनिक इतमीनान के साथ लेटे हुए पड़े थे। अफसरों के कमरे में दाखिल होने पर भी उन्होंने उठने की कोशिश न की।

चेर्नायक ने गरजकर कहा, 'यह क्या सुअरों का सा बाड़ा बना रखा है? और तुमको किसने इस तरह लेटने की इजाजत दी है?' उसने चित लेटे हुए उन सिपाहियों को कसकर डाँट बतायी।

एक कोसैक उठ बैठा, डकार ली और गुर्राता हुआ बोला :

क्यों टर्र-टर्र कर रहे हो? इस काम के लिए हमारा अपना आदमी है जो काफी टर्रा लेता है!'

'क्या कहा!' चेर्नायक लपककर उस आदमी की तरफ बढ़ा, 'अबे हरामी के बच्चे, जानता है किससे बातें कर रहा है? मैं कर्नल चेर्नायक हूँ। सुना, सुअर कहीं के। फौरन उठकर बैठो तुम सब लोग, वर्ना अभी मैं तुम सबों को कोड़े लगवाता हूँ!' तैश खाया हुआ कर्नल सन्तरियों के कमरे में इधर-उधर तेजी से टहलने लगा। 'मैं तुमको एक मिनट देता हूँ, यहाँ की सारी गलाजत साफ करो, बिस्तरों को ठीक करो और अपने इन सुअर जैसे चेहरों को भी जरा ठीक करो। तुम कोसैक सिपाही थोड़े ही मालूम होते हो,

बिल्कुल लुटेरे मालूम होते हो, लुटेरे !'

गुस्से के मारे कर्नल साहब पागल हो रहे थे और उन्होंने रास्ते में पड़ी हुई गन्दे पानी की एक बाल्टी को जोर से एक ठोकर लगायी।

कप्तान साहब भी कुछ कम जोश में न थे और वह अपने गाली-गुफ्ते को अपना तीन तस्मेवाला चाबुक घुमा-घुमाकर और प्रभावशाली बना रहे थे। इस तरह उन्होंने सिपाहियों को अपनी जगहों पर से उठा दिया।

'चीफ ऐटमन साहब परेड का मुलाहिजा कर रहे हैं। किसी भी मिनट वह यहाँ आ सकते हैं। जल्दी ! जल्दी करो, जल्दी !'

यह देखकर कि मामला संगीन होता जा रहा है और कहीं ऐसा न हो कि उनको वाकयी कोड़े पड़ने लगें—चेर्नायक की शोहरत उन्हें अच्छी तरह मालूम थी—कोसैक सिपाही दौड़-दौड़कर काम करने लगे।

पलक मारते ही काम पूरे जोर-शोर से होने लगा।

कप्तान ने सुझाव दिया, 'हमें जरा एक नजर कैदियों पर भी डालनी चाहिए। पता नहीं किस-किस को यहाँ बन्द कर रखा हो। कहीं चीफ ऐटमन ने आकर देखा तो हमारी आफत आ जायगी।'

'चाभी किसके पास है ?' चेर्नायक ने संतरी से पूछा। 'फौरन दरवाजा खोलो !'

एक सार्जेन्ट कूदकर खड़ा हुआ और फौरन उसने जाकर ताला खोला।

'कमांडैंट कहाँ है ? तुम समझते हो कि मैं कयामत के रोज तक उसका इन्तजार करता रहूँगा ? फौरन उसका पता लगाओ और यहाँ भेजो।' चेर्नायक ने हुक्म दिया, 'तमाम संतरियों को बाहर चौक में जमा करो ! राइफिलों में संगीनें क्यों नहीं लगी हैं ?'

'अभी कल ही तो हम लोग आये हैं,' सार्जेन्ट ने सफाई देने की कोशिश की और तेजी से कमांडैंट की तलाश में चला गया।

कप्तान ने पैर की ठोकर से मालगोदाम का दरवाजा खोला। अन्दर के कई लोग फर्श से उठकर खड़े हो गये। पर बाकी लोगों में कोई हरकत नहीं हुई।

चेर्नायक ने हुक्म दिया, 'दरवाजों को और अच्छी तरह खोल दो। यहाँ तो काफी रोशनी भी नहीं है।'

उसने कैदियों के चेहरों को गौर से देखा।

'क्यों जी, तुम यहाँ पर क्यों बन्द हो ?' उसने ओठे के सिरे पर बैठे बुड्ढे आदमी से तड़ाक से पूछा।

बुड्ढा आधा उठा और अपने पतलून को ऊपर चढ़ाते हुए इस तेजी से पूछे गये सवाल से डरकर धीरे से बुदबुदाया :

'मुझे खुद नहीं मालूम। उन्होंने मुझे यहाँ बन्द कर दिया और तब से बन्द हूँ। हाते में न जाने कैसे एक घोड़ा गायब हो गया था। मेरा उसमें कोई कसूर नहीं।'

'किसका घोड़ा?' कप्तान ने उसकी बात को बीच में काटा।

'फौज का घोड़ा, और किसका! मेरे यहाँ जो सिपाही टिकाये गये थे, उन्होंने उसको बेचकर सारी रकम पी डाली और अब मुझे दोष लगाते हैं।'

चेर्नायक ने तेजी से उस बुड्ढे पर निगाह दौड़ायी और अधीरता प्रकट करते हुए कंधे को उचकाकर जोर से चीखा: 'उठाओ अपनी चीजें और यहाँ से नौ दो ग्यारह हो जाओ!' फिर वह शराबवाली औरत की तरफ घूमा।

बुड्ढे को अपने कानों पर यकीन नहीं आया। अपनी आँखें, जो दूर की चीजें नहीं देख सकती थीं, मुलमुलाते हुए वह कप्तान की तरफ मुड़ा और बोला:

'क्या सचमुच चला जाऊँ मैं?'

कोसैक सिपाही ने सिर हिलाकर बतलाया कि वह जितनी जल्दी जा सके, अच्छा है।

जल्दी-जल्दी बुड्ढे ने ओठे के सिरे से झूलती हुई अपनी पोटली उठायी और तेजी से दरवाजे से बाहर हो गया।

'और तुम यहाँ क्यों बन्द हो?' चेर्नायक शराबवाली औरत से पूछ रहा था।

मिठाई के गस्से को निगलते हुए, जिसे वह कुछ देर से चुभला रही थी, औरत ने अपना पहले से ही तैयार जवाब झटपट पेश कर दिया:

'हुजूर, बड़ी बेइन्साफी की बात है जो मुझे यहाँ बन्द कर रखा है। जरा सोचिए तो, एक गरीब बेवा की शराब भी पी गये और उसे खामखा यहाँ बन्द भी कर दिया!'

चेर्नायक ने पूछा, 'तुम्हीं तो नहीं हो वह शराब बेचनेवाली?'

'बेचनेवाली? आप भी कैसी बात करते हैं,' उस औरत ने आहत अभिमान के स्वर में कहा, 'कमांडैंट साहब आये, चार बोतलें लीं और एक धेला भी नहीं दिया। यह तो हाल है, आपकी शराब पी जायें और पैसा भी न दें। यह भला बेचना कहलाता है?'

'अच्छा-अच्छा, बहुत हो गया। अब दफा हो यहाँ से!'

उस औरत ने हुक्म के दोहराये जाने का भी इन्तजार नहीं किया। अपनी टोकरी उठायी और बड़ी कृतज्ञता से झुककर सलाम करती हुई पीछे हटते-हटते दरवाजे से बाहर हो गयी।

'खुदा आपको सलामत रखे, हुजूर!'

दोलिनिक आँखें फाड़े उस मजाक को देख रहा था। किसी कैदी की समझ

में न आ रहा था कि आखिर यह माजरा क्या है। बस, एक बात साफ थी, यानी यह कि ये लोग जो आये हैं, कोई बड़े अफसर हैं और उनकी किस्मत का वारा-न्यारा कर सकते हैं।

'और तुम ?' चेर्नायक ने दोलिनिक से पूछा।

'जब हुजूर कर्नल बात करें तो खड़े हो जाया करो !' कप्तान ने कुत्ते की तरह भूँककर कहा।

दोलिनिक धीरे-धीरे फर्श पर से उठकर खड़ा हो गया।

'तुम यहाँ पर क्यों बन्द हो ?' चेर्नायक ने अपना सवाल दोहराया।

कुछ क्षण तक दोलिनिक की आँखें कर्नल की बाँकी अदा से ऐंठी मूँछों पर और उनके अच्छी तरह हजामत किये साफ चेहरे पर, फिर उनकी नयी टोपी के छज्जे पर जिसमें इनेमल का बिल्ला लगा हुआ था, ठहरी रहीं। और तभी यह पागल विचार उसके दिमाग में कौंध गया : कौन जाने यह तरीका कारगर हो जाय।

'मुझे आठ बजे के बाद सड़क पर पाये जाने के जुर्म में पकड़ा गया था,' पहली बात जो उसके मन में आयी उसने कह दी।

जवाब के इन्तजार में उसका दिल जोर से धड़क रहा था।

'रात को तुम बाहर कर क्या रहे थे ?'

'रात कहाँ थी, बस करीब ग्यारह बजे थे।'

बोलते-बोलते ही उसको जैसे यह विश्वास न रह गया कि अँधेरे में छोड़ा हुआ उसका यह तीर कारगर होगा।

उसके घुटने काँप गये जब उसने यह संक्षिप्त सा आदेश सुना :

'बाहर निकल जाओ !'

दोलिनिक जल्दी-जल्दी दरवाजे में से बाहर निकल गया। हड़बड़ी में वह अपना कोट लेना भी भूल गया। कप्तान अब दूसरे कैदी से बात कर रहा था।

कोर्चागिन से सबसे बाद में पूछा गया। वह फर्श पर बैठा इस सारी कार्रवाई को स्तब्ध होकर देख रहा था। पहले उसे यकीन ही नहीं हुआ कि दोलिनिक को रिहा कर दिया गया है। वे लोग सबको इस तरह से छोड़ क्यों रहे हैं ? मगर दोलिनिक...दोलिनिक तो कहता था कि उसे करफ्यू तोड़ने के जुर्म में पकड़ा गया है...। तब यकायक उसे भी कोई बात सूझी।

कर्नल ने दुबले-पतले जेल्टसर से अपना वही हर बार का सवाल दुहराया, 'तुम यहाँ पर क्यों बन्द हो ?'

हज्जाम, जो घबराहट के मारे पीला पड़ गया था, बोल पड़ा :

'वे लोग कहते हैं कि मैं आंदोलन कर रहा था, लेकिन मेरी कुछ समझ में नहीं आता कि मैं काहे का आंदोलन कर रहा था।'

चेर्नायक के कान खड़े हो गये।

'क्या कहा ? आंदोलन ? तुम किस चीज का आंदोलन कर रहे थे ?'

जेल्टसर ने अपनी हैरानी बतलाने के लिए बाँहें फैला दीं। बोला, 'मैं खुद नहीं जानता। मैंने सिर्फ यह कहा था कि चीफ ऐटमन साहब के पास भेजने के लिए लोग एक अर्जी पर यहूदियों से दस्तखत ले रहे थे।'

'किस तरह की अर्जी ?' चेर्नायक और कप्तान दोनों बहुत डरावने तरीके से जेल्टसर की तरफ बढ़े।

'अर्जी यही थी कि मार-काट पर रोक लग जाय। आपको तो मालूम ही है कि पिछले दिनों हमारे यहाँ बहुत भयानक मार-काट हुई। सारे लोग डरे हुए हैं।'

चेर्नायक ने उसकी बात को बीच में काटते हुए कहा, 'बस, बस ! इतना काफी है ! अबे ग़लीज़ यहूदी, हम लोग अभी तेरी सारी अर्जी निकाले देते हैं !' फिर कप्तान की तरफ घूमकर उसने तेज आवाज में कहा, 'इसको ले जाकर ठीक से बन्द कर दो। इसको हेडक्वार्टर पर ले जाने का बन्दोबस्त करो, वहीं पर मैं इससे खुद बातें करूँगा : देखेंगे इस अर्जीवाले मामले के पीछे कौन लोग हैं।'

जेल्टसर ने प्रतिवाद करने की कोशिश की, मगर कप्तान ने अपनी चाबुक से उसकी पीठ पर ज़ोर का वार किया।

'चुप, हरामज़ादे !'

दर्द से उसका चेहरा ऐंठ गया और वह लड़खड़ाता हुआ एक कोने में पहुँच गया। जेल्टसर के ओंठ फड़क रहे थे और वह अपने अन्दर से उठती हुई सिसकियों को बड़ी मुश्किल से दबा पा रहा था। सिसकियों से उसका गला रुंधा हुआ था।

अभी यह सब हो ही रहा था कि पावेल उठकर खड़ा हो गया। अब मालगोदाम में जेल्टसर के अलावा वही अकेला कैदी बचा था।

चेर्नायक लड़के के सामने खड़ा था और अपनी तेज काली आँखों से गौर से उसके चेहरे को देख रहा था।

'और तुम यहाँ क्या कर रहे हो ?'

कर्नल को सवाल का तुरत-फुरत जवाब मिला :

'मैंने घोड़े की जीन से थोड़ा-सा चमड़ा अपने जूते के तल्ले के लिए काट लिया था।'

'किसके घोड़े की ज़ीन थी वह ?' कर्नल ने पूछा।

'हमारे यहाँ दो कोसैक सिपाही ठहराये गये थे। मैंने उन्हीं की एक पुरानी जीन से कुछ चमड़ा अपने जूतों के तल्ले के लिए काटा था। इसीलिए कोसैक

मुझे यहाँ पकड़ लाये।' शायद मैं रिहा हो सकता हूँ, यह पागल आशा उसमें जागी। उसने इतना और जोड़ दिया, 'मुझे मालूम नहीं था कि इसकी मनाही है...।'

कर्नल ने पावेल को चिढ़कर देखा।

'इस कमांडैण्ट को क्या-क्या सूझता है, बड़ा मरदूद है! देखो तो कैसे-कैसे लोगों को उसने कैद कर रखा है!' दरवाजे की ओर मुड़ते हुए उसने चिल्ला कर कहा, 'तुम घर जा सकते हो, मगर अपने बाप से कहना कि वह जरा तुम्हारी कुंदी कर दे। निकलो बाहर!'

अब भी पावेल को अपने कानों पर यकीन नहीं आ रहा था। उसका दिल ऐसे धड़क रहा था जैसे अभी फट जायगा। पावेल ने जल्दी से फर्श पर से दोलिनिक का कोट उठाया और दरवाजे की ओर भागा। भागकर संतरियों के कमरे में से होता हुआ वह कर्नल की पीठ-पीछे हाते की खुली हवा में निकल गया। पलक मारते पावेल छोटे फाटक से होकर सड़क पर पहुँच गया था।

बदनसीब जेल्टसर मालगोदाम में अकेला रह गया। उसने परेशान आँखों से अपने इर्द-गिर्द देखा, अनायास दरवाजे की तरफ कुछ कदम बढ़ाये, मगर तभी एक संतरी आ गया। उसने दरवाजा बन्द कर दिया, ताला लगा दिया और दरवाजे के पास ही एक स्टूल पर बैठ गया।

बाहर बरसाती में अपने आपसे बहुत मगन चेर्नायक ने कप्तान से कहा :

'बड़ा अच्छा हुआ कि हमने इन लोगों को एक नजर देख लिया। जरा सोचो तो कि इस कमांडैण्ट ने कैसा-कैसा कूड़ा-करकट भर रखा था यहाँ— लगता है इसको दो-एक हफ्तों के लिए हमें बन्द करना पड़ेगा। अच्छा चलो, अब हम लोगों को यहाँ से चलना चाहिए।'

सार्जेन्ट ने अपने सिपाहियों को हाते में जमा कर लिया था। उसने कर्नल को देखा तो दौड़कर आया और रिपोर्ट दी :

'सब कुछ ठीक है, हुजूर कर्नल साहब।'

चेर्नायक ने रकाब में एक बूट डाला और बड़ी सफाई से कूदकर घोड़े पर जा बैठा। कप्तान को उसका बददिमाग घोड़ा कुछ तंग कर रहा था। अपने घोड़े की रास खींचते हुए कर्नल ने सार्जेन्ट से कहा :

'कमांडैण्ट से बतला देना कि उसने जो तमाम कूड़ा-करकट यहाँ भर रखा था, मैंने उस सबको हटा दिया है। और यह भी बतला देना कि उसने यहाँ का काम जिस बेहूदगी से चलाया है, उसके लिए मैं उसे दो हफ्ते गार्ड-हाउस में बन्द रखूँगा। और वह आदमी जो अन्दर है, उसे फौरन हेडक्वार्टर भेजो। पहरेदारों से कहना होशियार रहें।'

'बहुत अच्छा, हुजूर कर्नल साहब,' सार्जेन्ट ने सलाम किया।

अपने घोड़ों को एड़ लगाते हुए कर्नल और कप्तान सरपट उस स्क्वायर में पहुँचे जहाँ अब परेड खत्म होने आ रही थी।

पावेल ने कूदकर सातवीं बाड़ी पार की और थककर खड़ा हो गया। अब उससे और नहीं चला जाता था। उस दमघोंटू मालगोदाम में बगैर खाये बन्द-बन्द उसकी सारी ताकत खतम हो गयी थी।

अब कहाँ जाऊँ? घर जाने का सवाल नहीं उठता। ब्रुजाक के यहाँ जाने पर अगर किसी ने वहाँ मुझे देख लिया, तो सारे घरवालों के सिर पर विपत्ति फट पड़ेगी।

उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। वह फिर अंधे की तरह दौड़ने लगा। शहर के छोर पर के साग-भाजी के खेत और मकानों के पिछवाड़े के बागीचे सब पीछे छूट गये। यकायक वह एक बाड़ी से जोर से जा टकराया, और तब जैसे उसे सहसा होश आया और उसने अपने आस-पास हैरान निगाहों से देखा — उस ऊँची बाड़ी के पीछे जंगलात के वार्डन का बागीचा था। अच्छा तो मेरी थकी हुई टाँगें मुझे यहाँ ले आयी हैं! वह कसम खाकर कह सकता था कि उसका कोई इरादा इधर आने का नहीं था। तब फिर वह इधर आ कैसे गया? इस सवाल का उसके पास कोई जवाब नहीं था।

मगर फिर भी कुछ देर उसे आराम तो करना ही है; सारी परिस्थिति पर उसे गौर करना था और अपने अगले कदम के बारे में तय करना था। उसे याद आया कि बाग के छोर पर एक ग्रीष्म-कुंज है। वहाँ पर उसे कोई नहीं देख सकेगा।

जोर लगाकर वह बाड़ी पर चढ़ा और दूसरी तरफ नीचे बाग में कूद गया। मकान पर उड़ती-उड़ती सी निगाह डालते हुए, जो पेड़ों के बीच से मुश्किल से दिखायी दे रहा था, वह ग्रीष्म-कुंज की तरफ बढ़ चला। उसे यह देखकर बड़ी परेशानी हुई कि वह जगह लगभग सभी तरफ से एकदम खुली हुई थी। जंगली अंगूर की बेल, जो गरमी के दिनों में घनी होकर उस पर छा जाती थी, सूखकर झड़ चुकी थी और अब वह जगह एकदम नंगी थी।

वह वापस जाने के लिए मुड़ा, मगर इसके लिए अब बहुत देर हो गयी थी। उसके पीछे से कुत्ते के जोर-जोर से भूँकने की आवाज आ रही थी। वह घूमा और उसने घर से इधर को आनेवाले पत्तियों से ढँके रास्ते में एक बड़े से कुत्ते को देखा जो उसी पर झपटा आ रहा था।

पावेल ने अपने को बचाने की तैयारी की। कुत्ते के पहले हमले को उसने एक जोर की ठोकर से बेकार कर दिया। मगर वह जानवर उस पर दुबारा

झपटने की तैयारी कर रहा था। कहा नहीं जा सकता कि इस लड़ाई का क्या अन्त होता, अगर उसी वक्त एक परिचित कंठ ने पुकार कर यह न कहा होता, 'इधर आओ ट्रेसोर ! इधर आओ !'

तोनिया भागती चली आ रही थी। उसने ट्रेसोर के गले का पट्टा पकड़कर उसे पीछे खींचा और बाड़ी के पास खड़े नौजवान से कुछ कहने के लिए उसकी तरफ मुड़ी।

'तुम यहाँ क्या कर रहे हो ? इस कुत्ते ने अभी तुम्हें बुरी तरह जख्मी कर दिया होता। वह कहो मैं ...'

वह बीच ही में रुक गयी। अचम्भे से उसकी आँखें फटी की फटी रह गयीं। यह अजनबी, जो उसके बागीचे में चला आया था, कोर्चागिन से कितना ज्यादा मिलता था !

बाड़ी के पास खड़ी हुई वह आकृति हिली।

'तोनिया !' उस नौजवान ने धीमे से कहा, 'क्या तुम मुझे पहचानती नहीं ?'

'पावेल, तुम ?' तोनिया चीख पड़ी और आवेग से उसकी तरफ बढ़ी।

ट्रेसोर ने तोनिया के चिल्लाने को अपने लिए हमले का सिगनल समझा और तेजी से आगे लपका।

'ट्रेसोर, ट्रेसोर, चुप रहो !' तोनिया ने उसे दो-चार थप्पड़ लगाये और वह आहत अभिमान की मुद्रा में, जैसे उसके साथ बड़ा अन्याय किया गया हो, अपनी दुम टाँगों के बीच दबाये, सिर नीचा किये, धीरे-धीरे मकान की तरफ लौट गया।

पावेल के हाथों को बहुत प्यार से पकड़े हुए तोनिया ने कहा, 'अच्छा, तो तुम छूट गये ?'

'तो तुम्हें सब पता था ?'

'मुझे सब पता है,' तोनिया ने साँस रोके-रोके कहा, 'लिजा ने मुझको बतलाया था। मगर तुम यहाँ आये कैसे ? क्या उन लोगों ने तुम्हें रिहा कर दिया ?'

'हाँ, मगर गलती से,' पावेल ने थके हुए अन्दाज में जवाब दिया, 'मैं भाग आया। मेरा खयाल है, अब वे मुझे ढूँढ़ रहे होंगे। मुझे खुद नहीं मालूम कि मैं यहाँ कैसे आ गया। मैंने सोचा कि मैं तुम्हारे ग्रीष्म-कुंज में कुछ देर आराम करूँगा। मैं बेहद थका हुआ हूँ,' उसने माफी माँगने के अन्दाज में कहा।

तोनिया ने दो-एक पल उसकी ओर एकटक देखा और उसका मन पावेल के प्रति करुणा और प्यार तथा चिन्ता और खुशी से भर उठा, जैसे एक लहर

सी आयी और उसके ऊपर होकर बह गयी।

'पावेल, मेरे प्यारे पावेल,' पावेल के हाथों को मजबूती से अपने हाथों में थामे-थामे तोनिया ने कहा, 'मैं तुम्हें प्यार करती हूँ ... सुना तुमने ? मेरे हठीले दोस्त, तुम उस बार चले क्यों गये थे ? अब तुम हमारे हो, मेरे हो। मैं तुम्हें किसी तरह जाने न दूँगी। हमारा घर अच्छा है और शान्त है और तुम जितने दिन चाहो हमारे पास रह सकते हो।'

पावेल ने सिर हिलाया।

'अगर उन लोगों ने मुझे यहाँ ढूँढ़ निकाला तो ? नहीं, मैं तुम्हारे घर नहीं ठहर सकता।'

तोनिया के हाथ उसकी उँगलियों को दबा रहे थे, तोनिया की पलकें फड़क रही थीं और उसकी आँखों में चमक थी।

'अगर तुमने इनकार किया तो मैं तुमसे कभी नहीं बोलूँगी। आर्तेम यहाँ नहीं है, पुलिस के पहरे में उसे इंजन चलाने के लिए ले जाया गया है। सारे रेलवे मजदूर बटोरे जा रहे हैं। तुम जाओगे कहाँ ?'

पावेल को भी यही चिन्ता थी। मगर यह डर कि वह उस लड़की को, जिसे वह इतना प्यार करने लगा था, खतरे में डाल देगा, उसको वहाँ ठहरने से रोक रहा था। लेकिन आखिर उसने तोनिया की बात मान ली, क्योंकि अपने भयानक तजुर्बों के कारण वह बहुत थक गया था और भूखा था।

जिस वक्त वह तोनिया के कमरे में सोफे पर बैठा हुआ था, उस वक्त माँ-बेटी के दरम्यान बावर्चीखाने में यह बातचीत चल रही थी :

'सुनो माँ, कोर्चागिन मेरे कमरे में है। तुम्हें याद है न, मैं उसे पढ़ाती थी। मैं तुमसे कुछ नहीं छिपाना चाहती। उसने एक बोल्शेविक मल्लाह को भाग निकलने में मदद दी थी और इसीलिए उसे गिरफ्तार कर लिया गया था। अब वह कैद से भाग आया है। मगर उसके पास कहीं जाने को जगह नहीं है।' तोनिया की आवाज काँप रही थी। 'मेरी प्यारी माँ, उसे कुछ समय तक यहाँ ठहर जाने दो।'

माँ ने अपनी बेटी की याचना भरी आँखों को गौर से देखा जैसे उनमें कुछ पढ़ना चाहती हो।

'बहुत अच्छा, मुझे कोई एतराज नहीं है। मगर तुम उसे ठहराओगी कहाँ ?'

तोनिया लाज के मारे लाल हो गयी, 'वह मेरे ही कमरे में सोफे पर सो सकता है,' उसने बहुत घबराये-से स्वर में कहा, 'फिलहाल हम पापा को कुछ भी नहीं बतलायेंगे।'

माँ ने उसकी आँखों में आँखें डालकर देखा।

'क्या इसी के लिए तुम इधर इतनी परेशान थीं ?' उसने पूछा।

'हाँ।'

'मगर अभी तो वह बिल्कुल छोकरा है।'

'मैं जानती हूँ।' तोनिया ने घबराहट में अपने ब्लाउज की आस्तीन पर हाथ फेरते हुए जवाब दिया। 'लेकिन अगर वह भाग न आया होता, तो उसे जरूर गोली मार दी गयी होती।'

एकातेरीना मिखाइलोवना को स्पष्ट ही अपने घर में कोर्चागिन के रहने से डर मालूम हो रहा था। उसकी गिरफ्तारी और फिर अपनी बेटी का एक ऐसे लड़के से स्पष्ट ही इतना प्यार जिसे वह ठीक से जानती भी नहीं, दोनों ही बातों से उसका मन अस्थिर हो रहा था।

मगर तोनिया, मसले को तय समझकर, अब यह सोच रही थी कि मेहमान के आराम के लिए क्या करना चाहिए।

'माँ, पहले तो उसे नहाना जरूरी है। मैं अभी इसका इन्तजाम करती हूँ। बहुत गंदा हो रहा है वह — जैसे चिमनी साफ करनेवाला हो। उसको नहाये जमाना बीत गया होगा।'

यह कहकर वह नहाने के घर में पानी गरम करने और पावेल के पहनने के लिए साफ कपड़े निकालने चली गयी। जब सब कुछ ठीक हो गया तो वह तेजी से कमरे में आयी, पावेल की बाँह पकड़ी और कुछ समझाने-बुझाने में वक्त बरबाद किये बिना तेजी से उसे गुसलखाने में ले गयी।

'तुम्हें अपने कपड़े बिल्कुल बदल डालने चाहिए। तुम्हारे पहनने के लिए यह एक सूट रखा है। तुम्हारे कपड़ों को धोना होगा, तब तक तुम इसको पहन सकते हो,' कहकर उसने कुर्सी की तरफ इशारा किया जिस पर एक नीले रंग का सफेद भारी वाला जहाजी ब्लाउज और पतलून रखा हुआ था।

पावेल ने अचम्भे से देखा। तोनिया मुस्करायी।

बात को साफ करते हुए उसने कहा, 'मैंने उसे एक बार एक फैन्सी-ड्रेस नाच में पहना था। तुम्हारे लिए बिल्कुल ठीक रहेगी वह चीज, कोई बुराई नहीं। अच्छा अब जल्दी करो। जब तक तुम नहाते हो, मैं तुम्हारे लिए खाने को कुछ ले आती हूँ।'

वह बाहर चली गयी और दरवाजे को बन्द कर दिया। अब पावेल के लिए इसके सिवा कोई चारा न था कि कपड़े उतारे और टब में जा बैठे।

घंटे भर बाद माँ, बेटी और पावेल, तीनों रसोई में खाना खा रहे थे।

पावेल को बुरी तरह भूख लगी थी और इसके पहले कि उसे इस बात का ख्याल भी आये, वह तीन बार रकाबी में से खाना ले-लेकर खा चुका था। पहले उसे एकातेरीना मिखाइलोवना के सामने कुछ झिझक मालूम हो रही

थी, मगर जब उसने उनके बर्ताव में भी सगापन पाया तो पिघल गया और उसकी झिझक दूर हो गयी।

खाना खाने के बाद वे तीनों तोनिया के कमरे में आये और एकातेरीना मिखाइलोवना के कहने पर पावेल ने अपनी कहानी सुनायी।

'अब तुम्हारा क्या करने का इरादा है?' पावेल की कहानी खत्म होने पर एकातेरीना मिखाइलोवना ने पूछा।

पावेल ने थोड़ी देर तक सवाल पर विचार किया, फिर बोला, 'सबसे पहले मैं आर्तेम से मिलना चाहता हूँ और फिर मुझे यहाँ से चले जाना होगा।'

'मगर तुम जाओगे कहाँ?'

'मेरा ख्याल है, मैं उमान या हो सकता है कीव पहुँच सकता हूँ। मुझे खुद कुछ ठीक नहीं मालूम। मगर इतना जानता हूँ कि यहाँ से मुझे जल्द से जल्द चले जाना चाहिए।'

पावेल को यकीन नहीं आ रहा था कि इतनी जल्दी सब कुछ बदल सकता है। अभी सुबह वह गन्दी कोठरी में था और अब यहाँ साफ-साफ कपड़े पहने तोनिया के पास बैठा था। सबसे बड़ी बात यह कि वह आजाद था।

उसने सोचा, जिन्दगी क्या-क्या अजीब मोड़ लेती है। क्षण भर पहले आसमान रात की तरह अंधेरा नजर आता है और फिर तभी दूसरे ही क्षण सूरज चमकने लग जाता है। अगर उसे फिर पकड़े जाने का डर न होता, तो इस वक्त वह दुनिया का सबसे खुश आदमी होता।

मगर वह जानता था कि इस वक्त भी, जब वह इस बड़े और शान्त घर में बैठा हुआ है, उसके फिर पकड़ लिये जाने का अन्देशा है। उसे यहाँ नहीं रहना चाहिए, यहाँ से चले जाना चाहिए—चाहे जहाँ। फिर भी, वहाँ से चले जाने का ख्याल उसे जरा भी अच्छा नहीं मालूम हो रहा था। बहादुर गैरिबाल्डी के बारे में पढ़ने में कितना रोमांच मालूम होता था। मन ही मन वह उससे कितनी ईर्षा करता था। मगर जरा गौर करो तो मालूम होता है कि गैरिबाल्डी की जिन्दगी कितनी कठिन थी, हर समय यहाँ से वहाँ भागते रहना। उसे, पावेल को, सिर्फ सात दिन मुसीबत और तकलीफ में गुजारने पड़े थे। मगर ऐसा मालूम होता था कि साल भर हो गया।

नहीं-नहीं, वीरों की धात कुछ और ही होती है, उस जैसे नहीं होते वे।

'क्या सोच रहे हो तुम?' तोनिया ने उसकी तरफ झुकते हुए पूछा। उसकी नीली आँखों की गहराई पावेल को असीम मालूम हुई।

'तोनिया, तुम्हें ख्रिस्तिना के बारे में बतलाऊँ?'

'हाँ-हाँ, जरूर,' तोनिया ने आग्रह करते हुए कहा।

उसने तोनिया को अपने साथ की कैदी की दर्दनाक कहानी सुनायी।

पावेल ने जव अपनी कहानी खतम की, तो निस्तब्धता में दीवार-घड़ी की टिक्-टिक् और जोर से सुनायी देने लगी। पावेल के शब्द बड़ी मुश्किल से निकल रहे थे, '...हमारी उससे वही आखिरी मुलाकात थी। उसके वाद फिर हमने उसे नहीं देखा।' तोनिया का सिर एक ओर को झूल गया और उसने अपने गले को रूँधने वाले आँसुओं को रोकने के लिए अपने ओंठ को कसकर दबाया।

पावेल ने उसको देखा और अन्तिम निश्चय के स्वर में कहा, 'मुझे आज रात चले ही जाना होगा।'

'नहीं, नहीं, आज रात मैं तुम्हें कहीं नहीं जाने दूँगी।'

वह उसके रूखे कड़े बालों को अपनी नाजुक, नरम उँगलियों से बड़े प्यार से सहला रही थी...

'तोनिया, तुम्हें मेरी मदद करनी होगी। किसी को स्टेशन जाना चाहिए और पता लगाना चाहिए कि आर्तेम का क्या हुआ। और सर्योजा के पास एक चिट्ठी भी ले जानी है। एक कौए के घोंसले में मैंने एक रिवाल्वर छिपाकर रखा है। मैं उसे जाकर लाने की हिम्मत नहीं कर सकता, मगर सर्योजा उसे लाकर मुझे दे सकता है। मेरा इतना काम कर सकोगी?'

तोनिया उठ खड़ी हुई।

'मैं अभी, इसी वक्त, लिजा सुखार्को के पास जाऊँगी। हम दोनों साथ स्टेशन चले जायेंगे। तुम चिट्ठी लिख डालो, मैं उसे सर्योजा के पास ले जाऊँगी। कहाँ रहता है वह? मान लो वह तुमसे मिलना चाहे, तो क्या मैं उसे बतला दूँगी कि तुम कहाँ हो?'

पावेल ने जवाब देने के पहले क्षण भर विचार किया। 'उससे कहना कि आज शाम को तुम्हारे बागीचे में ले आये।'

तोनिया को लौटने में बहुत देर हो गयी। पावेल गहरी नींद में सो रहा था। उसके हाथ के स्पर्श से वह जाग गया और उसने आँखें खोलीं तो तोनिया को खुशी से मुस्कराते हुए अपने पास खड़ा पाया।

'आर्तेम जल्दी ही यहाँ आयेगा। वह अभी-अभी लौटकर आया है। लिजा के बाप ने उसका जामिन होना कबूल कर लिया है और वे लोग आर्तेम को घंटे भर के लिए छोड़ रहे हैं। इंजन स्टेशन पर खड़ा है। मैं उसे यह तो बतला नहीं सकती थी कि तुम यहाँ हो। मैंने बस इतना कहा कि उससे मुझे कोई बहुत जरूरी बात कहनी है। लो, वह आ भी गया!'

तोनिया दरवाजा खोलने के लिए लपकी। आर्तेम जैसे अपनी आँखों का यकीन न करते हुए, स्तब्ध और मूक, दरवाजे पर खड़ा था। उसके अन्दर आ जाने पर तोनिया ने दरवाजा बन्द कर दिया ताकि उसके पिता, जो कि

अपने पढ़ाई के कमरे में टाइफस से बीमार पड़े थे, उन लोगों की बातचीत न सुन सकें।

एक क्षण और गुजरा कि आर्तेम पावेल को अपनी बाँहों में भरकर कस कर छाती से लगाये हुए था और जोर-जोर से कह रहा था, 'पावेल ! मेरे नन्हें पावेल ! मेरे छोटे भाई !' भारी-भरकम आर्तेम के उस भालू-जैसे आलिंगन-पाश में पावेल की तो हड्डियाँ चरमरा रही थीं।

तो यह बात तय हो गयी; पावेल को अगले रोज ही वहाँ से चले जाना था। आर्तेम ब्रुजाक से कह देगा कि वह कज़ातिन जानेवाली एक गाड़ी में उसको अपने साथ लेता जाय।

आर्तेम जो अमूमन बड़ा गम्भीर और खामोश आदमी था, अपने भाई के लिए इतने दिनों तक चिन्तित और परेशान रहने के बाद इस वक्त उसको पाकर खुशी से पागल हो रहा था।

'अच्छा, तो यह बात तय हो गयी। कल सबेरे पाँच बजे तुम माल-गोदाम के पास रहना। जिस वक्त वे लोग ईंधन लाद रहे हों, तुम चुपचाप घुस जाना। मेरी बड़ी इच्छा थी कि मैं रुकूँ और तुमसे बातचीत करूँ। मगर मुझे लौटना है, जरूरी काम है। मैं कल जाते समय तुमसे मिलूँगा। वे लोग रेलवे मजदूरों की एक बटालियन बना रहे हैं। हम लोग सशस्त्र पहरे में लाये और ले जाये जाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे जर्मनों के दिनों में।'

आर्तेम ने अपने भाई से छुट्टी ली और चला गया।

साँझ तेजी से घिरती आ रही थी। सर्गेई थोड़ी देर में पिस्तौल लेकर आता होगा। उसका इन्तजार करते हुए पावेल अँधेरे कमरे में बेचैनी से टहल रहा था। तोनिया और उसकी माँ जंगलों के वार्डन के साथ थीं।

पावेल बाड़ी के पास अँधेरे में सर्गेई से मिला और दोनों दोस्तों ने कसकर एक-दूसरे से हाथ मिलाया। सर्गेई अपने साथ वालिया को भी लाया था। वे लोग धीमे-धीमे बात कर रहे थे।

सर्गेई ने कहा, 'मैं अपने साथ रिवाल्वर नहीं लाया। तुम्हारे पिछवाड़े वाले हाते में पेतल्युरा के तमाम सिपाही भरे हुए हैं। सब जगह गाड़ियाँ खड़ी हैं और उन्होंने बड़ी-सी आग-वाग भी जला रखी है। इसलिए मैं रिवाल्वर उतारने के लिए पेड़ पर नहीं चढ़ सका। बड़ी शर्म की बात है।' सर्गेई बहुत उदास था।

पावेल ने उसे ढाढ़स बँधाते हुए कहा, 'कोई बात नहीं, शायद अच्छा ही हुआ कि तुम उसे नहीं लाये। अगर मैं रिवाल्वर के साथ कहीं रास्ते में पकड़ा जाता तो और भी बुरा होता। मगर तुम उसे ले जरूर आना।'

वालिया पावेल के और पास आ गयी।

'तुम कब जा रहे हो ?'

'कल, भोर होते ही।'

'तुम छूट कैसे आये, यह तो बताओ !'

जल्दी-जल्दी, मगर उसी मद्धिम आवाज में, पावेल ने उनको अपनी कहानी सुनायी। उसके बाद उसने अपने साथियों से छुट्टी ली। सर्गेई का असाधारण रूप से गम्भीर चेहरा उसके मन की हलचल का पता दे रहा था।

'खुदा हाफ़िज़ पावेल, हम लोगों को भूलना मत,' वालिया ने रुंधी हुई आवाज में कहा।

और इसके बाद वे लोग चले गये। पलक मारते अँधेरा उन्हें निगल गया।

घर के अन्दर पूर्ण शांति थी। उस निस्तब्धता में सिर्फ घड़ी की नियमित टिक-टिक सुनायी दे रही थी।

उस घर के दो रहनेवालों के लिए उस रात नींद का कोई जिक्र न था। वे सो भी कैसे सकते थे जब कि छः घंटों में उन्हें एक-दूसरे से अलग हो जाना था — और कौन जाने फिर कभी मुलाकात ही न हो। उस थोड़े से वक्त में उनके मन के भीतर जो असंख्य भावनाएँ हलचल मचा रही थीं, उसको वाणी भी कोई कैसे देता !

यौवन, उदात्त यौवन, जब मन की वासना का पता भी ठीक से नहीं होता और खून की धड़कन में ही उसका धुँधला-सा आभास मिलता है; जब तुम्हारा हाथ प्रेयसी की छाती से अकस्मात् छू जाने पर काँप जाता है, जैसे सहम गया हो, और जब तुम्हारे यौवन की पवित्र मैत्री ही तुम्हें आखिरी कदम उठाने से रोक लेती है ! जब उसकी बाँहें तुम्हारे गले में हों और उसका जलता हुआ चुम्बन तुम्हारे ओठों पर — इससे मीठा भला और क्या हो सकता है।

अपनी तमाम दोस्ती के दौरान में इन दोनों ने दूसरी बार एक-दूसरे को चूमा था। इसके पहले पावेल का दिल बहुत बार धड़का था, मगर अपनी माँ को छोड़कर और किसी के आलिंगन का स्पर्श उसे नहीं मिला था। और जब यह चीज मिली, तो जैसे उसे अन्दर-बाहर से समूचा झकझोर गयी। अब तक उसे जीवन ने अपना कठोर निर्मम पहलू ही दिखलाया था और उसे नहीं मालूम था कि जीवन इतना रंगीन, इतना मधुर, इतना प्राणदायी भी हो सकता है। अब इस लड़की ने उसे सिखलाया कि सुख किसे कहते हैं।

पावेल ने उसके बालों की सुगंधि साँस के साथ खींची और उसे लगा कि वह उस अंधेरे में भी उसकी आँखों को देख रहा है।

'मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ, तोनिया ! तोनिया, मैं तुमसे बतला नहीं सकता कि मैं तुमसे कितना प्यार करता हूँ—बतला नहीं सकता, क्योंकि जानता

नहीं कि कैसे बतलाऊँ।'

उसका दिमाग चक्कर खा रहा था। उसका वह लचीला शरीर जो बीन के कसे हुए तार की तरह उसके हलके से स्पर्श से बज सकता था ...। मगर जवानी की दोस्ती बड़े पवित्र विश्वास की चीज होती है।

'तोनिया, जब यह तूफान खतम होगा, जब ये उलझनें सुलझ जायेंगी, तो जरूर मुझे मेकैनिक का काम मिलेगा। और अगर तुम्हें सचमुच मेरी जरूरत है, अगर तुम सचमुच मुझे चाहती हो और सिर्फ मेरे संग खेल नहीं कर रही हो, तो मैं तुम्हारे लिए अच्छा पति बन सकूँगा। मैं कसम खाता हूँ कि मैं कभी तुम्हें नहीं मारूँगा और न कभी कोई ऐसी बात करूँगा जिससे तुम्हारे दिल को चोट लगे।'

कहीं दोनों एक-दूसरे की बाँहों में पड़े-पड़े सो न जायें, कहीं तोनिया की मां उन्हें देख न ले और उनके बारे में कुछ बुरा खयाल दिल में लाये, इस डर से दोनों अलग हो गये।

पौ फटने ही वाली थी जब उन्होंने एक-दूसरे से वादा किया कि वे कभी एक-दूसरे को न भूलेंगे और फिर वे सो गये।

एकातेरीना मिखाइलोवना ने पावेल को जल्दी ही जगा दिया। वह बिस्तर छोड़कर उछलकर खड़ा हो गया। जब वह गुसलखाने में अपने कपड़े और बूट पहन रहा था और अपने कपड़ों पर दोलिनिक का कोट चढ़ा रहा था, तभी एकातेरीना मिखाइलोवना ने तोनिया को जगाया।

सबेरे के भूरे-भूरे से कुहासे में वे लोग जल्दी-जल्दी स्टेशन की ओर चले। जब वे पिछवाड़े के रास्ते से उस जगह पहुँचे जहाँ लकड़ियाँ रखी हुई थीं, उन्होंने आर्तेम को लदे हुए टेंडर के पास बेचैनी से अपना इंतजार करते पाया।

एक बहुत भारी और मजबूत इंजन भाप के बादल में घिरा हुआ सी-सी करता हुआ धीरे-धीरे पास आया। इंजन में से ब्रुजाक ने सिर निकालकर देखा।

पावेल ने जल्दी से तोनिया और आर्तेम से विदा ली, लोहे का खंभा पकड़ा और कूदकर इंजन में चढ़ गया। पीछे मुड़ कर उसने क्रासिंग पर दो परिचित आकृतियों को देखा — आर्तेम की लम्बी आकृति और उसके बगल में तोनिया की छोटी सी सुकुमार आकृति। हवा जैसे गुस्से में उसके ब्लाउज के कॉलर को फाड़े डाल रही थी और उसके सुनहले बाल उड़ रहे थे। तोनिया ने हाथ हिलाकर उसको इशारा किया।

आर्तेम ने अपनी आँख की कोर से तोनिया को देखा और यह देखकर कि वह रोने ही वाली है, उसने लम्बी साँस ली।

उसने अपने मन में कहा, 'मुझे पचास कोड़े मारो, अगर इन दोनों के बीच कोई मामला न हो। और मैं सोचता था कि पावेल अभी बच्चा ही है!'

आगे मोड़ पर पहुँचकर जब गाड़ी आँखों से ओझल हो गयी तो आर्तेम तोनिया की तरफ मुड़ा और बोला : 'क्यों, मुझसे दोस्ती करोगी ?' और तोनिया का नन्हा-सा हाथ उसके बड़े-बड़े हाथों में खो गया।

दूर, गाड़ी के तेज रफ्तार पकड़ने की आवाज सुनायी दे रही थी।

सात

पूरे एक हफ्ते तक शहर, खाइयों से घिरा और कँटीले तारों में उलझा हुआ, तोपों की गड़गड़ाहट और राइफिलों की तड़तड़ की आवाज में ही रात को सोता था और उन्हीं की आवाज में सबेरे जागता था। सिर्फ बहुत भोर ही, बल्कि यूँ कहिए कि जब रात खतम होने को होती थी, तभी यह शोर जरा कम होता था। मगर फिर भी, बीच-बीच में जब चौकियाँ एक-दूसरे का पता लगाने की गरज से गोले छोड़तीं तो वह निस्तब्धता भंग हो जाती थी। सबेरे-सबेरे लोग रेलवे स्टेशन के पासवाली बैटरी में व्यस्त हो जाते थे। तोप का लम्बा स्याह थूथन भयावने तरीके से आग उगलता था और फिर लोग जल्दी-जल्दी उसमें दुबारा लोहा और बारूद भर देते थे। हर बार जब तोपची तोप के पीछेवाली रस्सी को खींचता, तो पैरों के नीचे की धरती काँप जाती। शहर से दो मील दूर एक गाँव पर, जो बोल्शेविकों के कब्जे में था, तोप के गोले डरावनी आवाज करते हुए बरसते रहते थे। उनकी आवाज में दूसरी सारी आवाजें डूब जाती थीं और गोले जहाँ गिरते, वहाँ धरती में से मिट्टी के फव्वारे फूट निकलते थे।

बोल्शेविकों की तोपें गाँव के बीचोंबीच एक ऊँची पहाड़ी पर जमी हुई थीं जहाँ पहले एक पोलिश मठ था।

इस तोपची टुकड़ी के फौजी कमिसार कामरेड जमोस्तिन उचककर खड़े हो गये। वह एक तोप से अपना सिर टिकाये सो रहे थे। अब उन्होंने अपनी पेटी को कसते हुए, जिससे एक भारी माउज़र पिस्तौल झूल रही थी, उड़ते हुए गोले की साँय-साँय को सुना और धड़ाके का इन्तजार करने लगे। और हाता उनकी भारी आवाज से गूँज उठा :

'साथियो, हम लोग कल अपनी नींद पूरी कर लेंगे। अब उठने का वक्त हो गया है।'

तोपची, जो अपनी-अपनी तोपों के पास सो रहे थे, कमिसार की तरह ही

जल्दी से उछलकर खड़े हो गये। सिर्फ सिदोरचुक ने अनमने ढंग से सिर उठाया और नींद से भारी आँखों से इधर-उधर देखा।

'सुअर कहीं के — अभी रोशनी भी नहीं हुई और हरामजादों ने गोलाबारी फिर शुरू कर दी। बदमाश चिढ़ाने के लिए ऐसा करते हैं!'

जमोस्तिन हँसा।

'ये सब समाज-विरोधी लोग हैं सिदोरचुक, और नहीं तो क्या! इनको इतना भी खयाल नहीं रहता कि कोई सोना चाहता है!'

सिदोरचुक बड़बड़ाता हुआ उठा।

कुछ मिनट बाद मठ के हाते की तोपें भी अपना काम करने लगीं। शहर पर गोले बरसने लगे।

शकर के कारखाने की ऊँची चिमनी पर लकड़ी के पटरों का एक चबूतरा बनाया गया था और उस पर पेतल्युरा का एक अफसर और एक टेलीफोन-वाला बिठाला गया था। चिमनी के भीतर-भीतर लोहेवाली सीढ़ी से वे लोग ऊपर चढ़े थे।

इस जगह से, जहाँ से उनको सारा शहर अच्छी तरह दिखायी देता था, वे तोप चलानेवालों को आदेश दे रहे थे। अपनी दूरबीनों से वे बोल्शेविक सिपाहियों की सारी गतिविधि को देख सकते थे। बोल्शेविक शहर का घेरा डाले हुए थे। आज वे विशेष रूप से सक्रिय थे। एक बख्तरबंद गाड़ी धीरे-धीरे पोडोल्स्क स्टेशन में दाखिल हो रही थी। वह बराबर गोली बरसा रही थी। उसके उस पार पैदल दस्ते दिखायी दे रहे थे। कई बार बोल्शेविक फौजों ने शहर पर कब्जा करने की कोशिश की। मगर पेतल्युरा के सिपाही शहर जाने-वाले रास्तों पर मजबूती से जमे हुए थे। खाइयाँ आग उगल रही थीं, जिसके कारण हवा में बेपनाह शोर था और यही शोर हमलों के वक्त अनवरत गर्जन का रूप ले लेता था। गोलियों के इस तूफान के आगे बोल्शेविक पाँतें न ठहर सकीं और मैदान में निर्जीव शरीरों को छोड़कर पीछे हटने पर मजबूर हुईं। उस तूफान को झेलना इंसान की ताकत के बाहर की चीज थी।

आज शहर पर पहले से ज्यादा और लगातार हमले किये जा रहे थे। हवा गोलाबारी की गूँज से काँप रही थी। चिमनी की उस ऊँचाई से बोल्शेविकों की पाँतें बराबर आगे बढ़ती हुई देखी जा सकती थीं। लोग जमीन पर लेट जाते थे, फिर उठते थे और फिर पूरी ताकत से आगे बढ़ने लगते थे। अब उन्होंने स्टेशन को करीब-करीब ले ही लिया था। पेतल्युरा डिवीजन के पास जो रिजर्व टुकड़ियाँ थीं, उन्हें मैदान में भेजा गया। मगर वे भी उस दरार को न भर सकीं जो बोल्शेविकों ने पैदा कर दी थी। बोल्शेविक सैनिक अब उस संकल्प से काम कर रहे थे जिसमें आगा-पीछा सोचने की गुंजाइश नहीं होती।

उनके हमलावर दस्ते स्टेशन के पासवाली सड़कों पर बाढ़ के पानी की तरह भर उठे थे। स्टेशन की रक्षा करनेवाली पेतल्युरा की डिवीजन की तीसरी रेजिमेन्ट शहर के छोर पर के उद्यानों और फलों के बागीचों की अपनी आखिरी जगह से निकाली जाकर शहर भर में बिखर गयी थी। यह आखिरी लड़ाई, जिसने उनको वहाँ से निकाल बाहर किया था, बहुत छोटी मगर अत्यंत भयानक थी। इसके पहले कि वे लोग दुबारा अपने पैर जमा सकें, लाल सेना के सैनिक बड़ी तादाद में सड़कों पर भर उठे और उन्होंने अपनी संगीनों की मार से पेतल्युरा के उन सिपाहियों का सफाया कर दिया जिन्हें उनकी पीछे हटती सेना इसलिए छोड़ गयी थी कि वह निर्विघ्न पीछे हट सके।

सर्गेई ब्रुजाक को उस तहखाने में रोक रखना नामुमकिन था जिसमें उसके घरवालों और करीब के पड़ोसियों ने पनाह ली थी। सर्गेई की माँ उससे चिरौरी-विनती करती ही रही, मगर वह उस सर्द तहखाने में से कूदकर बाहर आ गया। एक बख्तरबन्द गाड़ी अंधाधुंध गोलियाँ बरसाती हुई उसके घर के पास से गुजरी। उसके पीछे-पीछे डरे और घबराये हुए पेतल्युरा सिपाही सिर पर पैर रखकर भाग रहे थे। उनमें किसी तरह की कोई शृंखला बाकी नहीं बची थी। उनमें से एक सर्गेई के हाते में घुस आया। उसने जल्दी-जल्दी अपनी कारतूस की पेटी, अपने सिर पर का हेलमेट और राइफिल नीचे फेंकी और बाड़ी फाँदकर गायब हो गया। सर्गेई ने सड़क पर निगाह दौड़ायी। पेतल्युरा के सिपाही दक्खिन-पश्चिमी स्टेशनवाली सड़क पर भागे आ रहे थे और एक बख्तरबन्द गाड़ी पीछे से उनकी हिफाजत कर रही थी। शहर को आनेवाली बड़ी सड़क वीरान थी। तभी एक लाल सेना का आदमी दिखायी दिया। वह फुर्ती से जमीन पर लेट गया और सड़क पर गोली चलाने लगा। उसके पीछे एक के बाद एक लाल सेना के दो-एक और सिपाही दिखायी दिये ...। सर्गेई ने उनको आते, लेटते, और फिर उठकर भागते हुए गोली छोड़ते देखा। एक काँसे के रंग का चीनी, जिसकी आँखें लाल-लाल थीं और जो सिर्फ एक बनियान पहने हुए था और जिसकी कमर में मशीनगन की पेटी लगी हुई थी, दोनों हाथों में एक-एक दस्ती बम लिये सीधा दौड़ रहा था। और उन सबके आगे एक लाल सेना का आदमी था जिसके हाथ में एक हल्की मशीनगन थी। आदमी भी उसे कैसे कहें, लड़का ही था। शहर में दाखिल होनेवाले इन पहले लाल सैनिकों को देखकर सर्गेई का दिल खुशी से भर उठा। वह लपककर सड़क पर पहुँचा और अपनी पूरी ताकत से चिल्लाकर बोला :

'जिन्दाबाद साथियो !'

इतने अप्रत्याशित रूप से वह भागकर सड़क पर पहुँचा था कि उस चीनी से टकराकर गिरते-गिरते बचा। उस लाल सैनिक की पहली प्रतिक्रिया यह

हुई कि झपटकर उस लड़के का काम तमाम कर दे। मगर लड़के के चेहरे पर खुशी का जो भाव था, उसे देखकर वह रुक गया।

'पेतल्युरा कहाँ है ?' उस चीनी ने जोर से हाँफते हुए चिल्लाकर उससे पूछा।

मगर सर्गेई ने उसकी बात नहीं सुनी। वह दौड़कर फिर अपने हाते में गया, पेतल्युरा सैनिक द्वारा फेंकी गयी कारतूसों की पेटी और राइफिल उठायी और लाल सेना के सैनिकों के पीछे-पीछे दौड़ चला। दक्खिन-पश्चिमी स्टेशन पर कब्जा कर लेने के बाद ही उन्होंने इस लड़के को देखा। यहाँ, हथियारों और दूसरे रसद के सामानों की कई गाड़ियों को रोककर और दुश्मन को जंगल में ठेलकर लाल सेना के सिपाही थोड़ा आराम करने और अपनी टुकड़ियों को ठीक करने के लिए रुके। वह नौजवान तोपची सर्गेई के पास आया और उसने अचरज से पूछा :

'कामरेड, तुम कहाँ के रहनेवाले हो ?

'मैं इसी शहर का हूँ। मैं तुम लोगों के आने का इन्तजार कर रहा था।'

देखते-देखते लाल सेना के तमाम सिपाही सर्गेई को घेरकर खड़े हो गये।

'मैं इसे जानता हूँ,' कहते हुए वह चीनी मुस्कराया और अपना सद्भाव दिखलाते हुए उसने सर्गेई के कंधों को थपथपाया।

सर्गेई का दिल खुशी से बल्लियों उछल रहा था। उसको उन लोगों ने तत्काल अपने में शरीक कर लिया और वह भी संगीनों के उस हमले में उनके साथ था जिसके बाद स्टेशन पर कब्जा हुआ।

शहर में बड़ी हलचल थी। शहर के लोग, जो अब तक की अपनी मुसीबतों से थक चुके थे, अपनी कोठरियों और तहखानों से निकले और अपने फाटकों पर खड़े होकर शहर में दाखिल होती हुई लाल फौज की टुकड़ियों को देखने लगे। तभी सर्गेई की माँ और बहन वालिया ने सर्गेई को लाल सेना के सिपाहियों के साथ मार्च करते देखा। उसके सिर पर टोप नहीं था, मगर कमर में कारतूसों कीं पेटी बंधी थी और एक राइफिल कंधे से लटक रही थी।

एन्तोनीना वासीलिएवना को बहुत गुस्सा आ रहा था।

अच्छा, तो उसका सर्योजा जाकर इस सब लड़ाई-दंगे में फँस गया ! चुकानी पड़ेगी इसकी कीमत। जरा इसका कलेजा तो देखो, सारे शहर के सामने राइफिल लेकर परेड कर रहा है ! जरूर आगे चलकर मुसीबत होगी। एन्तोनीना वासीलिएवना अपने को और काबू में न रख सकी और चिल्लायी :

'सर्योजा ! चल, इसी वक्त घर चल। आवारा कहीं का ! मैं अभी तुझे बतलाती हूँ। अभी तेरी सारी लड़ाई निकाले देती हूँ !' और वह इस पक्के इरादे से सड़क पर पहुँची कि लड़के को लौटा लायेगी।

मगर इस बार सर्गेई — उसका सर्योजा जिसे कई बार उसने थप्पड़ लगाये थे — दूसरा ही आदमी था। उसने कठोर आँखों से माँ को देखा और अन्दर ही अन्दर शर्म और ज़िल्लत से जलते हुए पलटकर माँ को जवाब दिया :

'चीखो मत ! मैं जहाँ हूँ वहीं रहूँगा,' और बिना रुके आगे बढ़ गया।

गुस्से के मारे एन्तोनीना वासीलिएवना का बुरा हाल था।

'इसी तरह तुमको अपनी माँ से बोलना चाहिए, क्यों ? अच्छा ! मगर अब घर आने की हिम्मत मत करना।'

सर्गेई बिना पीछे मुड़े चिल्लाकर बोला, 'नहीं आऊँगा।'

एन्तोनीना वासीलिएवना परेशानी की हालत में सड़क पर खड़ी रह गयी। उसके पास से मौसम की मार खाये हुए, गर्द से ढँके हुए सैनिकों की कतारें गुजरती रहीं।

'रो मत माँ ! हम तुम्हारे बेटे को कमिसार बनाएँगे', एक तगड़े, हँसोड़ गले से निकली हुई आवाज सुनायी दी। प्लैटून के तमाम सिपाहियों में हँसी की एक लहर-सी दौड़ गयी। कम्पनी के आगे-आगे चलने वाले लोगों ने कोरस गाना शुरू किया।

'सुनो साथियो बिगुल बज उठा, अब अपनी बन्दूक सम्हालो
आजादी के देश बढ़ चलो, मिलकर अपनी राह निकालो !'

सिपाही बड़ी बुलन्द आवाज में यह समवेत गान गा रहे थे और सर्गेई की गूजती हुई आवाज भी संगीत की इस लहर में मिली हुई थी। उसे एक नया परिवार मिल गया था। इनमें एक संगीन उसकी भी थी, सर्गेई की।

लेशचिन्स्की के मकान के फाटक पर एक छोटी सी सफेद तख्ती लटक रही थी, जिस पर सिर्फ इतना लिखा था : 'रेवकोम'[1] उसके बगल में एक बड़ा आकर्षक पोस्टर था जिसमें से एक लाल सैनिक तुम्हें अपनी ओर देखता नजर आता था और तुम्हारी ओर उँगली से इशारा करता हुआ कह रहा था : 'बोलो, तुम लाल सेना में भरती हुए हो या नहीं ?'

राजनीतिक विभाग के लोग तमाम शहर में यह पोस्टर लगाने के सिलसिले में रात भर काम करते रहे थे। वहीं पास में शेपेतोवका की मेहनतकश जनता के नाम इन्कलाबी कमेटी का पहला घोषणापत्र भी टंगा हुआ था।

'साथियो ! सर्वहारा फौजों ने इस शहर पर कब्जा कर लिया है। सोवियत सत्ता फिर से कायम हो गयी है। हम आपसे अनुशासन की माँग करते हैं। जनता को चूसनेवाले खूनियों को निकाल बाहर किया गया है। लेकिन, अगर आप चाहते हैं कि वे फिर कभी न आयें, अगर आप उन्हें

---

१. रेवोल्यूशनरी कमेटी, अर्थात् इन्कलाबी कमेटी।

हमेशा के लिए खतम करना चाहते हैं, तो लाल सेना में भरती होइए। मेहनतकशों की राजसत्ता को अधिक से अधिक ताकत पहुँचाइए। इस शहर की फौजी व्यवस्था गैरिसन के प्रधान के हाथ में है। गैर-फौजी शहर मामलों का प्रबन्ध इन्कलाबी कमेटी करेगी।'

द : **दोलिनिक**

'अध्यक्ष, इन्कलाबी कमेटी।'

लेशचिन्स्की के मकान में अब एक नयी तरह के लोग दिखायी देने लगे। एक शब्द 'कामरेड' — जिसके लिए कल तक लोगों को अपनी जान की कीमत अदा करनी पड़ती थी — आज चारों तरफ सुनायी दे रहा था; अनोखा, मर्मस्पर्शी शब्द, 'कामरेड !'

दोलिनिक के लिए इन दिनों न नींद थी, न आराम। वह बढ़ई इन्कलाबी सरकार कायम करने में लगा हुआ था।

एक छोटे से कमरे में कामरेड इग्नातियेवा बैठी हुई थीं। इस कमरे के दरवाजे पर कागज का एक छोटा सा टुकड़ा लगा था, जिस पर पेंसिल से लिखा हुआ था : 'पार्टी कमेटी'। वह हमेशा की तरह शांत और अनुद्विग्न थीं। राजनीतिक विभाग ने उनको और दोलिनिक को सोवियत सत्ता कायम करने का भार सौंपा था।

एक दिन और गुजरा और आफिस में काम करनेवाले अपनी-अपनी मेजों पर बैठ गये और टाइपराइटर जोर-जोर से खटकने लगा। रसद पहुँचाने की एक कमिसारियट, जोशीले मगर कुछ बौखलाये हुए से पिजीकी के नेतृत्व में कायम की गयी। पिजीकी पहले शहर की चीनी मिल में मेकैनिक का सहायक था। मगर अब उसने चीनी के कारखाने के मालिकों के खिलाफ जी-जान से कार्रवाई शुरू कर दी। कारखाने के ये मालिक बोल्शेविकों से बेइन्तहा नफरत करते थे और इस वक्त सिर झुकाये आनेवाले समय का इन्तजार कर रहे थे।

कारखाने के मजदूरों की एक सभा में पिजीकी ने कठोर और निर्मम शब्दों में स्थिति पर प्रकाश डाला।

पोलिश जबान में बोलते हुए, अपने शब्दों को अच्छी तरह लोगों के दिमाग में बिठलाने के लिए मेज पर जोर-जोर से मुट्ठी पटकते हुए, उसने कहा :

'कितने बरसों तक पोटोकी के काउंटों और सानगुजको के राजकुमारों ने हमारी पीठ पर सवारी की ? न जाने कितने पोलिश मजदूर होंगे जिन्हें पोटोकी ने उसी तरह रौंदा जिस तरह उसने रूसियों और उक्रेनियों को रौंदा। कोई उनकी तादाद बतला सकता है ? मगर फिर भी उनकी ढिठाई तो देखो, काउंट के दलाल मजदूरों के बीच यह अफवाह फैला रहे हैं कि सोवियत शासन उन सबको अपने फौलादी हाथों से दबा कर रखेगा।

साथियो ! उन छिपे हुए साँपों की जहरीली फुफकारों पर कान मत दो ! आओ, हम सब मेहनतकशों के अंतिम लक्ष्य में अपना विश्वास रखें और इसमें संदेह नहीं कि हम दुनिया भर की जनता में भाईचारा कायम कर लेंगे !'

ये बातें उस सीधे-सादे मजदूर के दिल की गहराइयों से निकल रही थीं, इसलिए उनके शब्द-शब्द में सच्चाई थी, ईमानदारी थी, जोश था । श्रोताओं में जो ज्यादा नौजवान थे, उनके बुलंद नारों के बीच पिजीकी प्लेटफार्म से उतरा । जो जरा अधेड़ उम्र के मजदूर थे, वे कुछ बोलने में हिचक रहे थे । कौन जाने कल फिर बोल्शेविकों को शहर छोड़ना पड़े और तब तो भाई हम लोग जो पीछे छूट जायेंगे, उन्हें एक-एक लफ्ज की कीमत अदा करनी पड़ेगी । उस वक्त फाँसी से चाहे बच भी जाओ, मगर नौकरी तो हाथ से गयी ही समझो ।

कामरेड इग्नातियेवा ने हेडक्वार्टर की ओर जाते हुए दो संतरियों में से एक से, जो नौजवान लाल सैनिक था, पूछा :

'तुम्हारी कितनी उम्र है, कामरेड ?'

'सत्रहवाँ चल रहा है ।'

'तुम यहीं रहते हो ?'

लाल सैनिक मुस्कराया और बोला, 'हाँ, मैं परसों ही लड़ाई के दौरान फौज में दाखिल हुआ हूँ ।'

इग्नातियेवा ने गौर से उसके चेहरे का अध्ययन किया और पूछा :

'तुम्हारे पिता क्या करते हैं ?'

'इंजन ड्राइवर के असिस्टेंट हैं ।'

उसी वक्त दोलिनिक वर्दी पहने एक आदमी के साथ वहाँ आया ।

इग्नातियेवा ने दोलिनिक की तरफ मुड़ते हुए कहा, 'अच्छा हुआ तुम आ गये । मुझे कोमसोमोल की जिला कमेटी का चार्ज देने के लिए ठीक वह लड़का मिल गया जिसकी मुझे तलाश थी । यहीं का रहनेवाला है ।'

दोलिनिक ने तेजी से सर्गेई पर नजर डाली—सर्गेई ही था यह ।

'हाँ, बहुत अच्छा है । तुम जखार के लड़के हो न ? बहुत अच्छा ! डटकर काम करो और नौजवानों में, अपने बराबरवालों में, आन्दोलन करो ।'

सर्गेई ने आश्चर्य से उन लोगों की ओर देखा, 'मगर कम्पनी का क्या होगा ?'

'वह सब ठीक है, उसकी तुम फिक्र न करो,' दोलिनिक ने सीढ़ियाँ चढ़ते हुए मुड़कर जवाब दिया ।

दो दिन बाद शाम होते-होते उक्रेन की नौजवान कम्युनिस्ट लीग की नगर कमेटी बन गयी थी ।

सर्गेई इस नयी जिन्दगी के भंवर में जी-जान से कूद पड़ा—उस नयी जिन्दगी के भँवर में जो शहर में एकाएक और इतनी तेजी से शुरू हो गयी थी। इस काम में सर्गेई ऐसा डूबा कि अपने घरवालों को भूल ही गया, गोकि वे लोग इतने पास थे।

हाँ! वह, सर्गेई ब्रुजाक, अब एक बोल्शेविक था। सौवीं बार उसने अपनी जेब से वह कागज निकाला जो उक्रेन की कम्युनिस्ट पार्टी की कमेटी ने उसे दिया था। यह कागज इस बात का सर्टिफिकेट था कि वह, सर्गेई, कोमसोमोल है और कोमसोमोल कमेटी का मंत्री है। और अगर इसमें किसी को कोई शक-शुबहा हो तो उसके पास उसके प्यारे दोस्त पावेल का उपहार वह शानदार मानलिकर पिस्तौल भी था जो जीन के केस में बन्द उसकी ट्यूनिक की पेटी से लटक रहा था। उससे ज्यादा अच्छा सर्टिफिकेट और क्या हो सकता है! कितने अफसोस की बात है कि पावलुश्का यहाँ नहीं है।

इन्कलाबी कमेटी जो काम उसे देती थी, उन्हीं में सर्गेई के दिन गुजर रहे थे। आज भी इग्नातियेवा उसका इन्तजार कर रही थी। वे लोग डिवीजन के राजनीतिक विभाग से इन्कलाबी कमेटी के लिए अखबार और किताबें लाने के लिए स्टेशन जानेवाले थे। सर्गेई तेजी से इमारत में से निकलकर सड़क पर आया जहाँ राजनीतिक विभाग का एक आदमी मोटर लिये उसका इन्तजार कर रहा था।

स्टेशन तक के अपने लम्बे सफर में, जहाँ पहली सोवियत उक्रेनी डिवीजन का राजनीतिक विभाग और उसका हेडक्वार्टर रेल के डब्बों में कायम किया गया था, इग्नातियेवा ने सर्गेई से बहुत से सवाल पूछे।

'तुम्हारा काम कैसे चल रहा है? तुम्हारा संगठन बना कि नहीं? तुम्हें अपने दोस्तों से, दूसरे मजदूरों के लड़कों से कहना चाहिए कि कोमसोमोल में आयें। हमें जल्दी ही कम्युनिस्ट नौजवानों के एक दल की जरूरत होगी। कल हम लोग कोमसोमोलों के लिए एक पर्चा छापेंगे। उसके बाद थिएटर हॉल में नौजवानों की एक बड़ी-सी रैली करेंगे। राजनीतिक विभाग में पहुँचकर मैं उस्तिनोविच से तुम्हारा परिचय कराऊँगी। अगर मेरा खयाल गलत नहीं है, तो वह नौजवानों में ही काम कर रही है।'

उस्तिनोविच अठारह साल की एक लड़की निकली जिसके बाल काले-काले और बॉब किये हुए थे और जो एक नयी-सी खाकी ट्यूनिक पहने थी जिसमें चमड़े की एक पतली सी पेटी लगी थी। इस लड़की ने सर्गेई को उसके काम के बारे में बहुत-सी बातें बतलायीं और उसके काम में मदद देने का वादा किया। वहाँ से चलने के पहले उसने सर्गेई को किताबों और अखबारों का एक बड़ा-सा बंडल दिया जिसमें एक खास अहमियत की चीज थी—कोमसो-

मोल के नियमों और उद्देश्यों के बारे में एक पुस्तिका।

उस रोज बहुत रात गये जब सर्गेई इन्कलाबी कमेटी के हेडक्वार्टर पर लौटा, तो उसने वहीं बाहर वालिया को अपना इन्तजार करते पाया।

उसको देखते ही वह चिल्ला पड़ी, 'तुम्हें शर्म आनी चाहिए अपने ऊपर! इसका क्या मतलब कि इस तरह घर से अलग-अलग रहते हो? माँ का रोते-रोते बुरा हाल है, और पिता जी तुमसे बहुत गुस्सा हैं। घर चलोगे तो देखोगे कैसा झगड़ा होता है।'

'नहीं, कुछ नहीं होगा,' उसने वालिया को समझाते हुए कहा। 'सच कहता हूँ, मुझे घर जाने का वक्त ही नहीं मिलता। आज रात भी नहीं आऊँगा। लेकिन मुझे बड़ी खुशी है कि तुम आ गयीं। मुझे तुमसे कुछ बात करनी है। चलो, अन्दर चलें।'

वालिया अपने भाई को पहचान ही न पा रही थी। वह बिल्कुल बदल गया था। उसके अन्दर जोश उबला पड़ता था।

वालिया के बैठते ही सर्गेई ने फौरन काम की बात शुरू कर दी।

'वालिया, स्थिति यह है: तुम्हें कोमसोमोल में दाखिल होना है। तुम नहीं जानती कि कोमसोमोल क्या है? नौजवान कम्युनिस्ट लीग। यहाँ पर मैं ही उसका काम चला रहा हूँ। मेरी बात का यकीन नहीं आता तुम्हें? अच्छा तो, यह देखो।'

वालिया ने उस कागज को पढ़ा और अपने भाई की तरफ हैरत भरी निगाहों से देखा।

'मैं कोमसोमोल में क्या करूँगी?'

सर्गेई ने अपने हाथ फैलाते हुए कहा, 'अरे पगली लडकी, करने को काम ही काम है! मुझी को देखो। मैं काम में इतना फँसा रहता हूँ कि रात को सोने का वक्त भी नहीं मिलता। हमें प्रचार करना है। इग्नातियेवा कहती हैं कि जल्दी ही थिएटर हॉल में एक मीटिंग होगी और उसमें सोवियत सत्ता के बारे में बतलाया जायेगा। वे कहती हैं, मुझे भाषण देना होगा। मैं सोचता हूँ, उनकी यह बात गलत है, क्योंकि मुझे भाषण देना आता नहीं और मैं सब घोटाला कर दूँगा। अच्छा, अब बताओ, कोमसोमोल में दाखिल होने के बारे में तुम्हारा क्या खयाल है?'

'मेरी समझ में नहीं आ रहा, क्या कहूँ। अगर मैंने ऐसा किया तो माँ बहुत नाराज होंगी।'

सर्गेई ने जोर देते हुए कहा, 'माँ की चिन्ता मत करो, वालिया। वह समझती नहीं हैं। उनको बस एक बात की फिक्र है, उनके बच्चे उनके पास रहें। मगर सोवियत सत्ता के खिलाफ वह नहीं हैं। उल्टे वह पूरी तरह उसके

साथ हैं। लेकिन वह चाहती हैं कि सारी लड़ाई-भिड़ाई दूसरों के लड़के लड़ें। अब तुम्हीं बताओ, क्या यह बात ठीक है? याद है, जुखराई ने हमने क्या कहा था? और पावेल को देखो। वह अपनी माँ के बारे में सोचने के लिए नहीं रुका। वक्त आ गया है कि हम सब नौजवान अपने हक के लिए लड़ें ताकि हमारी जिन्दगी बेहतर बने। मुझे पूरा यकीन है कि तुम इससे इन्कार नहीं करोगी, क्यों वालिया? जरा सोचो, यह कितना अच्छा होगा। तुम लड़कियों में काम करना और मैं लड़कों में। हाँ, मुझे एक बात याद आ गयी। आज ही जाकर मैं उस लाल-लाल बालों वाले बदमाश क्लिम्का से बात करूँगा। हाँ तो वालिया, क्या कहती हो? तुम हमारे साथ हो या नहीं? यह देखो मेरे पास यह एक छोटी सी पुस्तिका है जिससे तुम्हें इस चीज के बारे में सारी बातें मालूम हो जायेंगी।'

कोमसोमोल के नियमों की वह पुस्तिका उसने अपनी जेब से निकाली और वालिया को पकड़ा दी।

'लेकिन अगर पेतल्युरा लौट आया?' वालिया ने अपने भाई के चेहरे पर आँखें गड़ाये धीमी आवाज में पूछा।

इस चीज का खयाल अब तक सर्गेई को नहीं आया था और वह क्षण भर के लिए सोच में डूब गया।

'उस हालत में दूसरों के साथ मुझे भी चले जाना होगा, और क्या,' उसने कहा, 'मगर, तुम्हारा क्या होगा? हाँ, इसमें तो शक नहीं कि इससे माँ को बड़ा दुःख होगा।' और वह खामोशी में डूब गया।

'सर्योजा, क्या तुम मुझे इस तरह मेम्बर नहीं बना सकते कि माँ को या किसी और को कुछ पता न चले? बस, तुमको और मुझको यह बात मालूम हो? मदद तो मैं तब भी उतनी ही कर सकूँगी। वही सबसे अच्छा तरीका होगा।'

'तुम शायद ठीक कहती हो, वालिया।'

उसी वक्त इग्नातियेवा कमरे के अन्दर दाखिल हुई।

'कामरेड इग्नातियेवा, यह मेरी छोटी बहन वालिया है। अभी मैं इससे कोमसोमोल में दाखिल होने की बात कह रहा था। यह बड़ी योग्य सदस्य होगी। लेकिन देखिए, बात यह है कि मुमकिन है, हमारी माँ अड़चन डालें। क्या ऐसा हो सकता है कि हम वालिया को दाखिल तो कर लें, मगर किसी को कुछ पता न चले? बात यह है कि हो सकता है हमें फिर शहर छोड़ना पड़े। तो उस हालत में मैं तो फौज के साथ चला ही जाऊँगा, मगर वालिया डरती है कि अगर वह भी चली गयी तो माँ की जिन्दगी पहाड़ हो जायगी।'

इग्नातियेवा एक कुर्सी के सिरे पर बैठी बड़े गौर से सर्गेई की बात सुन

रही थी।

उसने अपनी सहमति देते हुए कहा, 'हाँ, वही सबसे अच्छा तरीका होगा।'

शहर भर में जो तमाम इश्तहार चिपके हुए थे, उनको देखकर शहर के नौजवान थिएटर हॉल में भर उठे थे और एक-दूसरे से बड़े जोश में बातें कर रहे थे। शकर के कारखाने के मजदूरों का एक बैण्ड बज रहा था। श्रोताओं में ज्यादातर शहर के हाई स्कूल और कालेज के विद्यार्थी थे और उन्हें मीटिंग से ज्यादा दिलचस्पी उस संगीत-नृत्य में थी जो मीटिंग के बाद होनेवाला था।

आखिरकार, परदा उठा और उएज्द कमेटी के मंत्री कामरेड राजिन, जो अभी-अभी शहर में आये थे, मंच पर दिखायी दिये।

सब की आँखें इस नाटे से, दुबले-पतले और छोटी-सी नुकीली नाकवाले आदमी की ओर मुड़ गयीं। सबने उनके भाषण को बड़े ध्यान से सुना। उन्होंने लोगों को उस संघर्ष के बारे में बतलाया जो सारे देश में तूफान की तरह चल रहा था और तमाम नौजवानों को कम्युनिस्ट पार्टी में आने के लिए कहा। उनका भाषण जब खतम हुआ, तो सबने बड़े जोर से तालियाँ बजायीं। अपना भाषण खतम करने पर उन्होंने अगले वक्ता यानी सर्गेई का परिचय दिया और हट गये।

सर्गेई ने बिना किसी भूमिका के फौरन ही काम की बात शुरू कर दी।

'हाँ तो साथियो, जो सारी बातें कहने की थीं, आपने सुन ली हैं। अब करने की बात यह है कि हमें पार्टी का एक ऐसा केन्द्र संगठित करना है जिसके इर्द-गिर्द तमाम लोगों को बटोरा जा सके। कौन लोग इससे सहमत हैं?'

उपस्थित लोगों में सन्नाटा छा गया। जो खाई बन गयी थी, उसको उस्तिनोविच ने भरा। वह उठ खड़ी हुई और उसने लोगों को बतलाया कि किस तरह मास्को में नौजवानों का संगठन हो रहा है। इस बीच सर्गेई बौखलाया हुआ सा अलग खड़ा रहा।

अन्दर ही अन्दर वह तैश खा रहा था कि सेल के संगठन के सवाल पर मीटिंग की प्रतिक्रिया कितनी खराब है। उसे श्रोताओं पर मन ही मन बड़ा गुस्सा आ रहा था। सर्गेई ने जालीवानोव को उस्तिनोविच की ओर घृणा से देखते हुए लिजा सुखार्को के कान में कुछ कहते देखा। सामने की कतार में कालेज की बड़ी लड़कियाँ बैठी थीं। उनके चेहरे पाउडर से पुते थे और वे बड़ी अदा से अपने इर्द-गिर्द देख रही थीं और आपस में फुसफुसा रही थीं। वहाँ उस कोने में दरवाजे के पास नौजवान लाल सैनिकों की एक टोली बैठी हुई थी। उनमें सर्गेई ने अपने परिचित तोपची को देखा। वह स्टेज के सिरे पर बैठा बेचैनी से अपने शरीर को तोड़-मरोड़ रहा था और खुली नफरत

से, भड़कीले कपड़ों में सजी लिजा सुखार्को और ऐना ऐदमोवस्काया को देख रहा था। मगर उनको किसी बात की कोई शर्म नहीं थी और वे अपने नौजवान दोस्त लड़कों से बड़ी चुहल के साथ बातचीत कर रही थीं।

यह देखकर कि कोई उसकी बात नहीं सुन रहा है, उस्तिनोविच ने जल्दी से अपनी तकरीर खतम की और बैठ गयी। उसके बाद इग्नातियेवा बोलने के लिए उठीं और उनके शांत, गंभीर अंदाज ने अस्थिर श्रोताओं को अपने वश में कर लिया।

उन्होंने कहा, 'साथियो, मैं आप से कहना चाहती हूँ कि आज रात यहाँ जो कुछ कहा गया है, उस पर आप गौर करें। मुझे इस बात का पक्का यकीन है कि आप में से कुछ लोग क्रांति में सक्रिय भाग लेनेवाले बन जायेंगे — केवल दर्शक ही नहीं बने रहेंगे। आपके लिए दरवाजे खुले हुए हैं, बाकी बातों का निश्चय आपको करना है। मैं चाहूँगी कि आप लोग अपनी राय दें। जो कोई भी कुछ कहना चाहे, मैं उसको दावत देती हूँ कि यहाँ आकर कहे।'

एक बार फिर हॉल में सन्नाटा छा गया। फिर पीछे से एक आवाज सुनायी दी :

'मैं बोलना चाहता हूँ।'

मिशा लेव्चुकोव, जो भेंगेपन के कारण आँख से जरा तिरछा देखता था और भालू की तरह भारी-भरकम था, मंच की ओर बढ़ा।

'जो मौजूदा हालत है,' उसने कहा, 'उसमें हमें बोल्शेविकों की मदद करनी ही होगी। मैं इसके हक में हूँ। सर्योजका मुझको जानता है। मैं कोमसोमोल में दाखिल हो रहा हूँ।'

सर्गेई का चेहरा खुशी से चमकने लगा। वह लपक कर मंच के बीचोबीच पहुँचा और चिल्लाकर बोला, 'देखा साथियो! मैं हमेशा कहता था कि मिशा हमीं में से एक है। इसका पिता स्विचमैन था और मोटर से कुचलकर मर गया था और इसीलिए मिशा की पढ़ाई नहीं हो सकी। मगर आज जैसे वक्त में किस चीज की जरूरत है, यह जानने के लिए उसे किसी कालेज में जाने की जरूरत नहीं पड़ी।'

हॉल में बड़ा शोर मचा। एक नौजवान ने, जिसके बाल बड़े करीने से कढ़े हुए थे, बोलने की इजाजत माँगी। यह ओकूशेव था। वह कालेज में पढ़ता था और नगर के दवाफरोश का लड़का था। अपनी ट्यूनिक को तानते हुए उसने कहना शुरू किया :

'आप लोग मुझे माफ करेंगे, साथियो। मेरी समझ में नहीं आता कि हमसे क्या चाहा जा रहा है? क्या हमसे यह उम्मीद की जाती है कि हम राजनीति में हिस्सा लें? अगर ऐसी बात है, तो मैं पूछता हूँ, हम लोग पढ़ेंगे

कब ? हमें कालेज की पढ़ाई खतम करनी ही है। अगर यह कोई खेल-कूद की सोसायटी या ऐसे क्लब के संगठन की बात होती जहाँ हम लोग इकट्ठा हो सकते और पढ़ सकते तो बात दूसरी थी। मगर राजनीति में हिस्सा लेने का तो मतलब है आगे चलकर फाँसी पर टँगने के खतरे को भी उठाना। न भाई, मैं नहीं समझता कि कोई इस बात से सहमत होगा।'

हॉल में लोग हँस रहे थे। ओकूशेव मंच से कूदकर अपनी जगह पर जा बैठा। उसके बाद वह नौजवान तोपची बोलने के लिए खड़ा हुआ। उसने क्रुद्ध भंगिमा से अपनी टोपी माथे पर और नीची खींच ली और श्रोताओं को तीखी नजरों से देखता हुआ गरजकर बोला :

'तुम लोग हँस किस चीज पर रहे हो, कीड़ो !'

उसकी आँखें दो जलते हुए अंगारे थे और वह गुस्से से काँप रहा था। एक गहरी साँस खींचकर उसने कहना शुरू किया :

'मेरा नाम इवान जार्की है। मैं यतीम हूँ। मैंने कभी अपने माँ-बाप को नहीं देखा और न उनके बारे में मुझे कुछ मालूम है। न कभी मेरा कोई अपना घर रहा। मैं सड़कों पर पला और बढ़ा हूँ। मैं रोटी के एक-एक टुकड़े के लिए भीख माँगता था और अक्सर मुझे भूखे पेट सो जाना पड़ता था। मैं तुम्हें बतला सकता हूँ कि मैं एक कुत्ते की जिंदगी बिता रहा था। तुम सब, जो अपनी माँओं के लाड़ले यहाँ इकट्ठा हुए हो, तुम्हें इसके बारे में कुछ भी पता न होगा। तब सोवियत सत्ता आयी और लाल सेना के लोगों ने मुझे सड़क पर से उठाया और मेरी देख-भाल की। उनकी एक पूरी प्लैटून ने मुझे गोद लिया। उन्होंने मुझे कपड़े दिये। उन्होंने मुझे लिखना-पढ़ना सिखलाया। मगर इन सबसे बड़ी चीज यह कि उन्होंने मुझको सिखाया कि इंसान बनना किसे कहते हैं। उन्हीं के कारण मैं बोल्शेविक बना और अपनी आखिरी साँस तक बोल्शेविक रहूँगा। मैं खूब अच्छी तरह जानता हूँ कि हम लोग किस चीज के लिए लड़ रहे हैं। हम लोग लड़ रहे हैं अपने ही जैसे गरीबों के लिए। हम लोग मजदूरों की हुकूमत के लिए लड़ रहे हैं। तुम लोग यहाँ पर बैठे चबर-चबर बातें कर रहे हो। मगर, तुम्हें नहीं मालूम कि इसी शहर के लिए लड़ते हुए हमारे दो सौ साथी मारे गये हैं। उन्होंने अपने जीवन को बलिदान कर दिया ...' जार्की की आवाज खिंचे हुए तार की तरह गूँज रही थी। 'उन्होंने हमारे लिए, हमारे सुख के लिए, हमारी खुशी के लिए हँसते-हँसते अपनी जान दे दी ...। देश भर में, तमाम मोर्चों पर, लोग मर रहे हैं और तुम लोग यहाँ बैठे गाल बजा रहे हो !' 'साथियो,' सभापति मंडली की ओर तेजी से मुड़ते हुए उसने कहा, 'आप लोग खामखा इन लोगों से बात करने में अपना वक्त जाया कर रहे हैं,' और फिर हॉल की तरफ उँगली से इशारा करते हुए बोला, 'आप समझते हैं

कि ये लोग आप की बात समझेंगे ? नहीं ! भरा पेट कभी खाली पेट का साथी नहीं होता। इनमें से सिर्फ एक आदमी आगे आया और वह इसलिए आगे आया कि वह भी गरीब है, यतीम है। मगर कोई बात नहीं,' उसने उपस्थित लोगों पर गुस्से से गरजते हुए कहा, 'हम लोग तुम्हारे बिना भी अपना काम चला लेंगे। हम लोग तुमसे भीख नहीं माँगेंगे कि आइए और हममें शरीक होइए। जहन्नुम में जाओ तुम लोग ! तुम लोगों से बात करने का अकेला तरीका मशीनगन है !' और इसके बाद वह मंच पर से उतरा और बिना दाँयें-बाँयें देखे सीधे दरवाजे की तरफ बढ़ा।

मीटिंग की सदारत जिन लोगों ने की थी उनमें से कोई भी संगीत-नृत्य के लिए नहीं रुका।

इंकलाबी कमेटी के हेडक्वार्टर को लौटते हुए रास्ते में सर्गेई ने आक्रोश से कहा, 'कैसी मुसीबत है ! कैसे अजीब लोग हैं ! जार्की बिल्कुल ठीक कहता है। यह कालेज की भीड़ किसी काम की नहीं। उनके बारे में सोचकर दिमाग गरम हो जाता है।'

इग्नातियेवा ने उसको बीच में टोकते हुए कहा, 'इसमें अचरज की कोई बात नहीं है। ये तमाम लोग जो इकट्ठा हुए थे, शायद ही इनमें मजदूर जमात का कोई नौजवान रहा हो। इनमें ज्यादातर या तो निचले मध्यम वर्ग के लड़के थे या नगर के बुद्धिजीवियों के। गरज सब लोग ऐसे थे जो अपने स्वार्थ से आगे नहीं देख पाते। तुम्हें लकड़ी और चीनी के कारखाने के मजदूरों के बीच काम करना होगा। मगर तुम यह न समझना कि मीटिंग एकदम बेकार थी। आगे चलकर तुम देखोगे कि इन्हीं विद्यार्थियों में से कुछ बड़े अच्छे साथी निकलेंगे।'

उस्तिनोविच ने इग्नातियेवा की बात का समर्थन किया।

वह बोली, 'सर्योजा, हमारा काम अपने विचारों को, अपने नारों को, सब लोगों तक पहुँचाना है। पार्टी हर नयी घटना पर सभी मेहनतकशों का ध्यान केन्द्रित करेगी। हम लोग बहुत-सी सभाएँ, सम्मेलन, और कांग्रेसें करेंगे। राजनीतिक विभाग गर्मियों के दिनों के लिए स्टेशन पर एक नाटक शाला खोल रहा है। कुछ ही दिनों में एक प्रचार-वैन आनेवाली है और तब हमारा काम जोर-शोर से चलेगा। याद है, लेनिन ने क्या कहा था — जब तक हम लोग जनता को, करोड़ों मेहनतकशों को, अपनी लड़ाई में नहीं ले आते, तब तक हम कभी नहीं जीत सकते।'

उसी शाम, काफी देर हो जाने पर, सर्गेई उस्तिनोविच को पहुँचाने स्टेशन तक गया। उससे अलग होते समय उसने उस्तिनोविच के हाथों को मजबूती से अपने हाथों में लिया और जितनी देर एकदम जरूरी था, उससे ज्यादा देर

तक उसके हाथों को अपने हाथों में लिये रहा। उस्तिनोविच के चेहरे पर एक हल्की-सी मुस्कराहट आयी।

लौटते समय सर्गेई रास्ते में अपने घरवालों से मिलने के लिए चला गया। उसने खामोशी से अपनी माँ की फटकार को सुन लिया। मगर, जब पिता ने शुरुआत की, तो सर्गेई ने जवाबी हमला किया और जखार वासीलिएविच की हालत खराब कर दी।

'बापू, आपने जर्मनों के कब्जे के दिनों में जब हड़ताल की थी और इंजन पर के उस संतरी को मार डाला था, उस वक्त आपको अपने घरवालों का खयाल आया था न? जरूर आया था। मगर तब भी आपने उस काम को किया, क्योंकि यही आपके मजदूर के अन्तःकरण का आदेश था। मैंने भी अपने घरवालों के बारे में सोचा है। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि अगर हमें पीछे हटना पड़ा तो मेरे कारण आप लोगों को सताया जायेगा। और फिर, मैं घर पर बैठ भी तो नहीं सकता था। आप तो खुद सब बातों को जानते हैं, बापू। तो फिर, यह फिजूल का हो-हल्ला क्यों? मैं एक अच्छे लक्ष्य के लिए काम कर रहा हूँ। आपको मुझे सहारा देना चाहिए, न कि इस तरह मेरी टाँग घसीटना। आइये, हम लोग समझौता कर लें बापू, और तब माँ भी मुझे डाँटना बंद कर देंगी।' उसने अपने पिता को अपनी साफ, नीली-नीली आँखों से देखा और प्यार से मुस्कराया। उसे इस बात का विश्वास था कि वह ठीक बात कह रहा है।

जखार वासीलिएविच अपनी बेंच पर जरा बेचैनी से हिला और उसकी घनी कड़ी मूछों और छोटी-सी उलझी-पुलझी दाढ़ी के बीच से उसके पीले से दाँत मुस्कराने पर दिखलायी दिये।

'वर्ग चेतना की बात ला रहे हो, क्यों? बदमाश कहीं का! तुम सोचते हो कि यह जो रिवाल्वर लिये तुम घूम रहे हो, वह मुझको तुम्हारी मरम्मत करने से रोक लेगा?'

मगर अब उसकी आवाज में गुस्सा नहीं था, उसका हल्का-सा आभास भी नहीं। और उसने अपने मन के आवेग को वश में करते हुए अपना सख्त, गठीला हाथ अपने बेटे की तरफ बढ़ाया। 'ठीक है सर्योजा, करते चलो। एक बार जब तुमने शुरू कर दिया है तो मैं ब्रेक नहीं लगाऊँगा। मगर हाँ, हम लोगों को एकदम भूल मत जाना, बीच-बीच में आया जरूर करना।'

रात का वक्त था। जरा से खुले हुए दरवाजे में से रोशनी की किरण अन्दर आकर सीढ़ियों पर लेट गयी थी। उस बड़े-से कमरे में, वकील साहब

की बड़ी-सी मेज के पीछे पाँच आदमी बैठे हुए थे—दोलिनिक, इग्नातियेवा, खुफिया विभाग के अध्यक्ष तिमोशेंको, जो कोसैकों जैसी फर की टोपी के कारण किरगिज नजर आते थे, वह दैत्याकार रेलवे मजदूर शूदिक और रेलवे के हाते का चपटी नाक वाला ओस्तापचुक। इंकलाबी कमेटी की मीटिंग जारी थी।

दोलिनिक ने मेज पर झुकते हुए और इग्नातियेवा को कठोर आँखों से देखते हुए भर्रायी हुई आवाज में कहा :

'मोर्चे पर रसद पहुँचाना जरूरी है। मजदूरों के लिए खाना जरूरी है। जैसे ही हम लोग आये, दूकानदारों और बाजार के मुनाफाखोरों ने दाम चढ़ा दिये। आज हम लोगों को बैठकर चीजों के दाम तय कर देने चाहिए। हम अच्छी तरह जानते हैं कि कोई भी मुनाफाखोर तय किये हुए दामों पर अपना माल नहीं बेचेगा। उनके पास जो कुछ है, उसे वे छिपा लेंगे। उस सूरत में हम लोग तलाशियाँ लेंगे और इन खून चूसनेवालों के माल को जब्त कर लेंगे। यह शराफत बरतने का वक्त नहीं है। हम मजदूरों को अब और भूखों नहीं मरने दे सकते। यह छोटे-मोटे दूकानदारों का मामला नहीं है। आज मुझे खबर मिली है कि सराय के मालिक बोरिस जोन के घर में एक गुप्त तहखाना है। पेतल्युरा की फौजों के आने से पहले ही बड़े-बड़े दूकानदारों ने वहाँ अपने माल के बड़े-बड़े स्टॉक छिपा दिये हैं।' वह रुका और मखौल उड़ाती हुई शरीर आँखों से तिमोशेंको को देखा।

तिमोशेंको ने सकपकाकर पूछा, 'तुम्हें इस चीज का पता कैसे चला?' उसे यह बात बुरी लगी कि एक ऐसी खबर जिसे हासिल करने का काम खुद उसका था, दोलिनिक को पहले ही मालूम हो गयी।

दोलिनिक ने मगन होते हुए कहा, 'मुझे सब बात मालूम रहती है, भाई। तहखाने के बारे में जानने के अलावा मुझे यह भी मालूम है कि कल तुमने और डिवीजन कमांडर के मोटर ड्राइवर ने मिलकर आधी बोतल समोगन उड़ायी थी।'

तिमोशेंको अपनी कुर्सी में अस्थिर हुआ और उसका पीला चेहरा शर्म से लाल हो गया।

'खूब!' उसने बेमन से प्रशंसा करते हुए कहा।

दोलिनिक कह रहा था, 'सर्गेई ब्रुजाक ने मुझे यह सब बतलाया। वह किसी को जानता है जो वहीं रेस्तोरां में काम करता था। वहीं रसोइयों से इस लड़के को मालूम हुआ कि जिस चीज की भी जरूरत होती थी और जितनी भी जरूरत होती थी, जोन उसे सप्लाई किया करता था। कल सर्गेई ने तहखाने के बारे में पक्की तरह पता लगा लिया। बस अब मालूम यह करना है कि यह तहखाना ठीक है किस जगह पर। तिमोशेंको, फौरन अपने आदमियों को

इस काम पर लगा दो ! सर्गेई को अपने साथ लेते जाओ । अगर हमारा मामला बैठ गया और हमने काम ठीक से किया, तो हम मजदूरों को और डिवीजन को चीजें दे सकेंगे ।'

आधे घंटे बाद आठ सशस्त्र आदमी सराय के मालिक के घर में घुसे । दो बाहर फाटक पर पहरा देने के लिए रुक गये ।

मालिक नाटा-सा, शराब के पीपे की तरह गोल-मटोल आदमी था । उसकी एक टांग लकड़ी की थी और चेहरे पर लाल-लाल बाल थे । उसने अतिरिक्त नम्रता से आगन्तुकों का स्वागत किया । अपनी मोटी भारी आवाज में उसने पूछा :

'क्या बात है, साथियो ! इतनी रात गये कैसे आये ?'

जोन के पीछे उसकी लड़कियाँ जल्दी में अपने ड्रेसिंग गाउन पहने, तिमोशेंको की टार्च की रोशनी में आँखें मुलमुलाती हुई खड़ी थीं । दूसरे कमरे से जोन की भरे बदन की सुन्दर पत्नी की आहों और कराहों की आवाज सुनायी दे रही थी । वह भी जल्दी-जल्दी कपड़े पहन रही थी ।

'हम लोग मकान की तलाशी लेने आये हैं,' तिमोशेंको ने संक्षेप में अपनी बात कह दी ।

फर्श की एक-एक इंच जमीन का अच्छी तरह मुआइना किया गया, मगर गुप्त तहखाने का कहीं पता न चला ।

रसोई से हटकर एक छोटी सी कोठरी थी जिसमें नौकरानी सोयी हुई थी । वह इतनी गहरी नींद में सो रही थी कि उसको इन लोगों के आने की आहट भी नहीं मिली । सर्गेई ने उसको बहुत हल्के से जगाया ।

'तुम यहाँ काम करती हो ?' उसने पूछा । उस भौंचक लड़की ने, जिसकी आँखें नींद से भारी हो रही थीं, कम्बल को अपने कंधे तक खींच लिया और अपनी आँखों को रोशनी से बचाने के लिए आड़ की ।

'हाँ,' लड़की ने जवाब दिया । 'तुम कौन हो ?'

सर्गेई ने उसको बतलाया कि वह कौन है और यह कहकर कि जल्दी से कपड़े पहन लो, वह कमरे से बाहर आ गया ।

खाना खाने के बड़े से कमरे में तिमोशेंको सराय के मालिक से सवाल कर रहा था और मालिक बहुत परेशान होकर बड़बड़ा रहा था :

'आप मुझसे चाहते क्या हैं ? मेरे पास और कोई तहखाने नहीं हैं । मेरी बात का यकीन कीजिये, आप फिजूल अपना वक्त बरबाद कर रहे हैं । हाँ, यह सही है कि कभी मैं सराय का मालिक था । लेकिन, अब मैं एक गरीब आदमी हूँ । पेतल्युरा के लोगों ने मेरे पास से सब कुछ झाड़ लिया और वह तो कहिए मैं बच गया, नहीं तो उन्होंने मुझे मार ही डाला था । मुझे बड़ी खुशी है कि सोवियत राज कायम हो गया है । लेकिन मेरे पास जो कुछ है, वह तो आपके

सामने है, आप देख सकते है, कहते हुए उसने अपने छोटे-छोटे मोटे-ताजे हाथ फैला दिये। पूरे वक्त उसकी लाल-लाल आँखें तिमोशेंको के चेहरे से सर्गेई के चेहरे पर और सर्गेई के चेहरे से कोने में और छत पर दौड़ती रहीं।

तिमोशेंको ने अपने ओठों को चबाते हुए कहा :

'तो तुम बतलाओगे नहीं ? आखिरी बार मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ कि तुम हमें अपना गुप्त तहखाना दिखलाओ।'

सराय के मालिक की बीवी ने रोते हुए कहा, 'मगर कामरेड अफसर, हमारे पास खुद अपने खाने के लिए नहीं है। हमारे पास जो कुछ था, सब उन लोगों ने छीन लिया।' उसने रोने की कोशिश की, मगर बेसूद।

सर्गेई ने कहा, 'तुम कहती हो कि तुम भूखों मर रही हो। फिर यह नौकरानी तुमने कैसे रखी है ?'

'वह नौकरानी नहीं है। एक गरीब लड़की है जो हमारे साथ रहती है, क्योंकि उसका और कहीं कोई ठिकाना नहीं है। खुद ख्रिस्तिना से पूछकर देख सकते हो।'

अब तिमोशेंको के धीरज का अन्त हो गया और उसने चिल्लाकर कहा, 'अगर यही तुम्हारी मर्जी है, तो हम भी अच्छी तरह अपना काम करेंगे !'

सुबह हुई, मगर तलाशी अब भी जारी थी। तेरह घंटे की बेकार कोशिश से तंग आकर तिमोशेंको ने अब तलाशी को खतम करने का फैसला कर लिया था जब कि सर्गेई ने, जो कि नौकरानी की कोठरी की जाँच के बाद बाहर निकलने ही वाला था, अपने पीछे से उस लड़की की धीमी फुसफुसाहट सुनी : 'रसोईघर में अँगीठी के पीछे देखो।'

दस मिनट बाद, उस अँगीठी के तोड़े जाने पर लोहे का एक चोर दरवाजा दिखायी दिया। और घंटे भर के अन्दर दो टन माल ढोनेवाली एक भारी ट्रक पीपे और बोरे लादकर सराय से चली जहाँ बहुत से लोगों की भीड़ आश्चर्य से आँखें फाड़े, मुँह बाये खड़ी थी।

एक रोज जब बहुत गरमी पड़ रही थी, मारिया याकोवलेवना कोर्चागिना अपने सामान की एक छोटी-सी पोटली लिये घर आयी। जब आर्तेम ने उसे पावेल के बारे में बतलाया, तो वह जार-जार रोने लगी। अब उसे अपनी जिंदगी खोखली और नीरस मालूम पड़ती थी। उसे अपने काम की तलाश थी और कुछ दिन बाद उसने लाल सेना के लोगों के कपड़े धोना शुरू कर दिया जिसके बदले में, मजदूरी के तौर पर, उसे सैनिकों का राशन मिल जाता था।

एक शाम उसने खिड़की के बाहर आर्तेम के पैरों की आहट सुनी। आज आर्तेम और रोज से ज्यादा जल्दी-जल्दी आ रहा था। उसने धक्का देकर दर-

वाजा खोला और देहलीज पर से ही ऐलान किया, 'मैं पावका की एक चिट्ठी लाया हूँ।'

पावेल ने लिखा था :

'प्यारे भाई आर्तेम, यह मैं तुम्हें यह बतलाने के लिए लिख रहा हूँ कि मैं जिंदा हूँ, हालांकि मेरा हाल बहुत अच्छा नहीं है। मेरे कूल्हे में गोली लगी थी, लेकिन अब मैं अच्छा हो रहा हूँ। डाक्टर का कहना है कि हड्डी में चोट नहीं लगी है। इसलिए मेरे बारे में परेशान मत होना, मैं ठीक हो जाऊँगा। अस्पताल से रिहा होने पर शायद मुझे छुट्टी मिल जायेगी, और मैं कुछ रोज के लिए घर आऊँगा। मैं माँ के पास तक नहीं पहुँच सका। हुआ यह कि मैं कामरेड कोतोव्स्की की घुड़सवार ब्रिगेड में भरती हो गया। मैं समझता हूँ, कामरेड कोतोव्स्की के बारे में तुमने जरूर सुना होगा क्योंकि वह अपनी बहादुरी के लिए बहुत मशहूर हैं। मैंने उनके जैसा आदमी पहले कभी नहीं देखा। अपने कमांडर के लिए मेरे मन में बहुत श्रद्धा है। क्या माँ घर लौट आयीं ? अगर लौट आयी हों तो उन्हें मेरा प्यार देना। मैंने तुम्हें जो भी तकलीफ दी हो, उसके लिए मुझे माफ करना। तुम्हारा भाई : पावेल।'

'आर्तेम, जरा जंगल के वार्डन के यहाँ चले जाना और वहाँ लोगों को इस खत के बारे में बतला देना।'

पावेल की चिट्ठी सुनकर मारिया याकोवलेवना बहुत रोयी। कैसा पागल लड़का है, उसने अपने अस्पताल का पता भी नहीं दिया।

सर्गेई अब स्टेशन की उस हरी रेलवे कोच में अक्सर आया-जाया करता था जिस पर लिखा था : 'राजनीतिक विभाग का प्रचार दफ्तर।' इसी आंदोलन और प्रचार वाली गाड़ी के एक डब्बे में उस्तिनोविच और इग्नातियेवा का दफ्तर था। सर्गेई को देखकर इग्नातियेवा, जिसके मुँह में सदा सिगरेट लगी रहती थी, इस अंदाज से मुस्कराती थी कि मुझे सब कुछ मालूम है।

कोमसोमोल जिला कमेटी का मंत्री सर्गेई इधर रिता उस्तिनोविच का बड़ा दोस्त हो गया था और जब वह वहाँ से लौटता, तो किताबों और अखबारों के बंडल के अलावा एक अव्यक्त सुख की अनुभूति भी सदा अपने साथ ले आता था।

हर रोज राजनीतिक विभाग के ओपन एयर थिएटर को देखने बहुत से मजदूर और लाल सैनिक आया करते थे। बारहवीं सेना की प्रचार-वैन रंग-बिरंगे पोस्टरों से ढँकी साइडिंग में खड़ी रहती थी और उसमें चौबीसों घंटे

जोर-शोर से काम होता रहता था। उसके अन्दर एक छोटा-सा प्रेस भी लगा दिया गया था और अखबार, पर्चे, घोषणाएँ बराबर छपकर वहाँ से निकलती रहती थीं। मोर्चा करीब ही था।

एक शाम संयोग से सर्गेई भी थिएटर में पहुँच गया और वहाँ उसने रिता को लाल सैनिकों की एक टोली के साथ पाया। उसी रात जब वह उसे पहुँचाने के लिए स्टेशन जा रहा था — वहीं राजनीतिक विभाग के कर्मचारियों को रहने के लिए जगह दी गयी थी — तो उसने कह डाला : 'कामरेड रिता, ऐसा क्यों है कि मुझे हमेशा तुमसे मिलने की चाह रहती है ?' फिर बोला, 'कितना अच्छा लगता है, तुम्हारे साथ रहना ! तुमसे मिलने के बाद मुझे हमेशा ऐसा लगता है कि मैं बिना थके काम करता रह सकता हूँ।'

रिता रुक गयी। 'देखो कामरेड ब्रुजाक,' उसने कहा, 'अभी इसी वक्त हमें यह बात तय कर लेनी चाहिए कि फिर कभी तुम ऐसी शायरी की बातें मुझसे न करोगे। मुझे यह पसंद नहीं है।'

सर्गेई शर्म के मारे उसी तरह लाल हो आया जैसे स्कूल का लड़का डाँट खाने पर।

'मेरा कोई बुरा मतलब नहीं था,' उसने कहा, 'मैंने सोचा था कि हम लोग दोस्त तो हैं ही...मैंने कोई क्रांति-विरोधी बात तो नहीं कही थी ! या कही थी ? अच्छा कामरेड उस्तिनोविच, अब मैं एक भी शब्द और न कहूँगा !'

उसने जल्दी-जल्दी उससे हाथ मिलाया और लगभग दौड़ता हुआ शहर की ओर लौट गया।

सर्गेई कई दिन तक स्टेशन के पास भी नहीं फटका। इग्नातियेवा ने उससे वहाँ आने के लिए कहा, तो वह यह कहकर टाल गया कि काम बहुत है, फुरसत नहीं मिलती और सच बात तो यह थी कि उसे था भी बहुत काम।

एक रात जब शूदिक एक ऐसी सड़क से घर आ रहा था जिसमें ज्यादातर चीनी के कारखाने में मैनेजरी करनेवाले पोल रहा करते थे, तो उस पर गोली चलायी गयी। उसके बाद जो तलाशियाँ हुईं उनमें बहुत सी बन्दूकें और 'स्त्रेलेत्स' नामक एक पिल्सुद्स्की संगठन के कागजात मिले।

इन्कलाबी कमेटी में एक सम्मेलन बुलाया गया। उस्तिनोविच, जो वहाँ मौजूद थी, सर्गेई को एक तरफ ले गयी और शान्त गम्भीर स्वर में बोली, 'लगता है तुम्हारे अहम् को ठेस लगी है, है न ? तुम्हारी इन व्यक्तिगत चीजों से काम को तो नुकसान नहीं पहुँच रहा है ? नहीं कामरेड, इस तरह से तो काम नहीं चलेगा।'

इसके बाद सर्गेई ने फिर से स्टेशन जाना शुरू कर दिया।

वह एक जिला सम्मेलन में शरीक हुआ और दो दिन तक जारी गरमा-गरम बहसों में उसने हिस्सा लिया। तीसरे रोज सम्मेलन के अन्य प्रतिनिधियों के साथ-साथ वह भी नदी पार के जंगल में गया और जारूदनी के डाकुओं से लड़ते एक दिन और एक रात बितायी। यह लुटेरों का सरदार जारूदनी पहले पेतल्युरा का एक अफसर था।

लौटने पर वह इग्नातियेवा से मिलने के लिए गया और उस्तिनोविच को भी वहाँ बैठे पाया। बाद में वह उसे घर पहुँचाने के लिए स्टेशन तक गया और विदा होते समय उसके हाथों को जोर से अपने हाथों में ले लिया। उस्तिनोविच ने गुस्से से अपना हाथ छुड़ा लिया। उसके बाद फिर कई रोज तक सर्गेई प्रचार की गाड़ी में नहीं गया और काम होने पर भी रिता से मुलाकात टालता रहा। और जब रिता उससे पूछती कि ऐसा क्यों है, तो वह बेरुखी से जवाब देता : 'आपसे बात करने से फायदा? आपसे कोई क्या कहे? आप मुझ पर यही अभियोग लगायेंगी कि मैं व्यक्तिवादी हूँ या मजदूर वर्ग के साथ विश्वासघात कर रहा हूँ या इसी तरह की कोई और बात!'

काकेशस की लाल झण्डा डिवीजन को लेकर आयी रेलगाड़ी स्टेशन पर रुकी। तीन स्याहफाम कमांडर इन्कलाबी कमेटी में आये। उनमें से एक लम्बा छरहरा आदमी था जो नक्काशी की हुई चाँदी की पेटी लगाये हुए था। वह सीधे दोलिनिक के पास गया और ऐसे स्वर में अपनी माँग रखी कि जैसे वह इनकार की बात भी सुनने के लिए तैयार न हो। बोला, 'बहस की जरूरत नहीं। मुझे फौरन सौ गाड़ी सूखी घास चाहिए। मेरे घोड़े मर रहे हैं।'

लिहाजा सर्गेई को दो लाल सैनिकों के साथ सूखी घास बरामद करने के लिए जाना पड़ा। एक गाँव में कुलकों के एक गिरोह ने उन पर हमला किया। लाल सेना के लोगों के हथियार छीन लिये गये और उन्हें बहुत बेरहमी से पीटा गया। छोटा होने के कारण सर्गेई पर मार कम पड़ी। गरीब किसानों की कमेटी ने उनको गाड़ी पर लादकर शहर पहुँचाया।

फिर एक सशस्त्र टुकड़ी उसी गाँव में भेजी गयी और अगले रोज सूखी घास आ गयी।

उसके घरवालों को कोई घबराहट या परेशानी न हो, इस ख्याल से सर्गेई अपनी चोट ठीक होने तक इग्नातियेवा के यहाँ ठहरा रहा। रिता उस्तिनोविच वहाँ उससे मिलने के लिए आयी और पहली बार उसने ऐसे प्यार से सर्गेई का हाथ दबाया जिसकी वह हिम्मत भी नहीं कर सकता था।

एक दिन तीसरे पहर जब खासी गरमी पड़ रही थी, सर्गेई रिता से मिलने के लिए प्रचार की गाड़ी में गया। उसने रिता को पावेल का खत सुनाया और उसे अपने दोस्त के बारे में कुछ बातें बतलायीं। डब्बे में से बाहर आते हुए उसने गर्दन मोड़कर कहा, 'मैं जंगल में जाकर झील में नहाने की सोच रहा हूँ।'

रिता ने अपने काम पर से आँख उठाते हुए कहा, 'मेरे लिए रुको। मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगी।'

झील दर्पण की तरह चिकनी और शान्त थी। उसके साफ नीले पानी में एक ऐसी ताजगी थी जो दावत सी देती जान पड़ती थी।

रिता ने उससे आदेश के स्वर में कहा, 'वहाँ सड़क पर मेरा इन्तजार करो। अब मैं नहाऊँगी।'

सर्गेई पुल के पास एक बड़े पत्थर पर बैठ गया और सूरज की तरफ देखने लगा। उसको पीछे से पानी में छप-छप की आवाज सुनायी दे रही थी।

तभी उसने दरख्तों के बीच से तोनिया, तुमानोवा और चुजानिन को हाथ में हाथ डाले सड़क पर आते देखा। चुजानिन प्रचार की गाड़ी का फौजी कमिसार था। अपनी अच्छी सिली हुई अफसर की वर्दी में, जिसमें बड़ी खूब-सूरत चमड़े की पेटी और न जाने कितने फीते लगे हुए थे, और चरमर करते हुए अपने क्रोम के जूतों में चुजानिन बड़ा बाँका जवान मालूम हो रहा था। वह तोनिया के साथ बातचीत में डूबा हुआ था।

सर्गेई ने तोनिया को पहचान लिया। वही पावेल का खत उसके पास ले गयी थी। पास आने पर तोनिया ने भी सर्गेई को गौर से देखा। वह भी उसे पहचानने की कोशिश कर रही थी। वे दोनों बराबर पर आ गये तो सर्गेई ने अपनी जेब में से पावेल का आखिरी खत निकाला और तोनिया की तरफ आगे बढ़ा।

'एक मिनट, कामरेड! यह मेरे पास एक खत है जिसका कुछ सम्बन्ध आपसे भी है।'

अपना हाथ छुड़ाते हुए तोनिया ने वह खत लिया। उसे पढ़ते वक्त कागज का वह टुकड़ा उसके हाथ में थोड़ा सा काँपा।

सर्गेई को खत वापिस देते हुए तोनिया ने पूछा, 'तुम्हारे पास पावेल की और भी कोई खबर है?'

सर्गेई ने कहा, 'नहीं।'

उसी वक्त रिता के पैरों तले कंकड़ों के दबने की आवाज सुनायी दी और

चुजानिन ने, जिसे रिता की उपस्थिति का कोई भान नहीं था, झुककर धीरे से तोनिया के कान में कहा, 'हम लोगों को यहाँ से चले जाना चाहिए।'

मगर रिता की मखौल उड़ाती हुई थोड़ी नफरत मिली आवाज ने उसको रोका :

'कामरेड चुजानिन ! आज सारे दिन लोग आपको गाड़ी में तलाश करते रह गये।'

चुजानिन ने चिढ़कर उसे देखा और बदमिजाजी से जवाब दिया, 'कोई बात नहीं, मेरे बिना भी वे लोग अपना काम चला लेंगे।'

रिता ने तोनिया और फौजी कमिसार को जाते हुए देखा।

खुश्की से उसने कहा, 'जितनी जल्दी इस बेमसरफ आदमी को यहाँ से भगाया जाय उतना ही अच्छा !'

हवा ओक की डालों को हिला रही थी और जंगल में मरमर की आवाज गूँज रही थी। झील से हवा के पंखों पर चढ़कर बड़ी प्यारी ताजगी आ रही थी। सर्गेई ने पानी में घुसने की सोची।

जब वह तैरकर लौटा तो उसने सड़क के पास एक पेड़ के तने पर रिता को बैठे पाया। वे दोनों बात करते हुए घने जंगल में घूमने चले गये। जंगल के बीच एक खुले मैदान में, जहाँ ऊँची-ऊँची घनी घास उगी थी, वे आराम करने के लिए रुके। जंगल में बड़ी शान्ति थी। ओक के दरख्त आपस में सरगोशियाँ कर रहे थे। रिता नर्म घास पर लेट गयी और अपने हाथ बाँधकर सिर के नीचे रख लिये। पुराने टाँके-लगे जूतों में उसकी खूबसूरत टाँगें ऊँची-ऊँची घास में छिपी हुई थीं।

सर्गेई की आँखें इत्तफाक से उसके पैरों पर पड़ीं। उसने उसके सफाई से मरम्मत किये हुए जूते को देखा और फिर अपने जूते को देखा जिसके सूराख में से उसका अंगूठा झाँक रहा था। वह हँस पड़ा।

'क्यों, किस बात पर हँस रहे हो ?' रिता ने पूछा।

सर्गेई ने अपने जूते की तरफ इशारा किया और कहा, 'ऐसे जूतों में भला हम कैसे लड़ेंगे ?'

रिता ने कोई जवाब नहीं दिया। वह दूब का एक छोटा सा टुकड़ा मुँह में डाले चबा रही थी और स्पष्ट ही उसके विचार कहीं और दौड़ रहे थे।

आखिरकार उसने कहा, 'चुजानिन बहुत जलील पार्टी मेम्बर है, दो कौड़ी का। हमारे दूसरे राजनीतिक कार्यकर्ता तो चीथड़े पहने घूमते हैं, मगर इसको बस अपनी फिक्र रहती है। सही बात यह है कि पार्टी में उसके लिए जगह नहीं है ...। जहाँ तक मोर्चे की बात है, वहाँ हालत सचमुच बहुत संगीन है। हमारे देश को अभी बहुत लम्बी और कठिन लड़ाई लड़नी है।' वह रुकी और

फिर बोली, 'हमें शब्दों से लड़ना होगा और राइफिलों से भी, सर्गेई। तुमने केंद्रीय समिति के फैसले के बारे में सुना है कि कोमसोमोल के एक-चौथाई सदस्यों को फौज में भरती कर लिया जाय? सर्गेई, अगर तुम मुझसे पूछो तो मेरा खयाल है कि अब हमें और ज्यादा दिन यहाँ नहीं रहना है।'

उसकी बात सुनते हुए सर्गेई ने कुछ आश्चर्य के साथ यह लक्ष्य किया कि रिता की आवाज में आज कोई नया ही सुर है। रिता की काली-काली, पानी की तरह साफ आँखें उसको देख रही थीं और उसके मन में आया कि वह बेखटके उससे कह दे कि उसकी आँखें दर्पण की तरह हैं। मगर उसने अपने आपको रोक लिया।

रिता ने कोहनी के बल टिकते हुए कहा, 'तुम्हारा पिस्तौल कहाँ है?'

सर्गेई ने बड़े दुःख से अपनी पेटी पर उँगली दौड़ायी और कहा, 'उन कुलकों ने छीन लिया।'

रिता ने अपनी ट्यूनिक की जेब में हाथ डाला और एक चमचमाता हुआ ऑटोमैटिक पिस्तौल निकाला।

'उस ओक को देख रहे हो, सर्गेई?' कहते हुए उसने पिस्तौल की नली से एक बहुत पुराने पेड़ के तने की ओर इशारा किया जो कि वहाँ से लगभग पच्चीस कदम पर था। फिर आँख की सीध में पिस्तौल को ले आकर उसने बगैर निशाना साधे गोली दाग दी। गोली तने में लगी और छिलके जमीन पर बरस गये।

'देखा?' अपने-आप पर बहुत मगन होते हुए उसने कहा। उसने दुबारा गोली दागी और फिर वही हुआ — पेड़ के छिलके घास पर बरस गये।

'यह लो,' उसने व्यंगपूर्ण ढंग से मुस्कराते हुए पिस्तौल सर्गेई को पकड़ाया और कहा, 'अब तुम्हारा निशाना देखें।'

तीन निशानों में से सर्गेई का एक निशाना चूका। रिता शाबाशी देने के अन्दाज में मुस्करायी और बोली, 'मैं तो सोचती थी कि तुमसे इतना भी नहीं बनेगा।'

उसने पिस्तौल को नीचे रख दिया और फिर घास पर लेट गयी। उसकी ट्यूनिक तनने से उसकी कसी हुई छाती का उभार दिखलायी दे रहा था।

'सर्गेई,' उसने धीरे से कहा, 'यहाँ आओ!'

सर्गेई और पास खिसक गया।

'आसमान को देखो। देखो कैसा नीला है। तुम्हारी आँखें भी इसी रंग की हैं। और यह ठीक नहीं। उन्हें भूरा होना चाहिए, फौलाद की तरह। नीला रंग बहुत कोमल होता है।'

एकाएक उसने सर्गेई के सुनहरे बालोंवाले सिर को अपनी बाँहों में भर

लिया और उसके ओंठों पर अपने ओंठ रख दिये।

दो महीने गुजर गये। पतझड़ के दिन आ गये।

पेड़ों को अपनी काली चादर में छिपाती हुई रात दबे पैरों से आयी। डिवीजन हेडक्वार्टर्स का तार बाबू अपने टिक्-टिक् टिक्-टिक् करते हुए यंत्र पर झुका हुआ था और कागज के लम्बे पतले फीते साँप की तरह उसकी उँगलियों के इर्द-गिर्द लिपटते जा रहे थे और वह जल्दी-जल्दी उनके डाटों और डैशों को रूपांतरित करके शब्दों और वाक्यांशों में बदलता जा रहा था :

'चीफ आफ स्टाफ, पहली डिवीजन। नकल शेपेतोवका इंकलाबी कमेटी के चेयरमैन को। इस तार को पाने के दस घंटे के अन्दर-अन्दर सारे सरकारी दफ्तर शहर से हटा दो। शहर में एक बटालियन न. रेजिमेंट के कमांडर के चार्ज में छोड़ दो। वही इस मोर्चे के कमांडर हैं। डिवीजन हेडक्वार्टर्स, राजनीतिक विभाग, सारी फौजी संस्थाएँ बरांचेव स्टेशन में ले जाओ। डिवीजन कमांडर को रिपोर्ट करो कि हुक्म पूरा किया गया। (दस्तखत)'

दस मिनट बाद एक मोटर साइकिल शहर की सोती हुई सड़कों पर दौड़ती जा रही थी। उसकी हेडलाइट अंधेरे को चीर रही थी। मोटर साइकिल इंकलाबी कमेटी के फाटक के सामने रुकी। उसका सवार जल्दी से अंदर गया और उसने यह तार चेयरमैन दोलिनिक के हाथ में दिया। फौरन उस जगह हलचल शुरू हो गयी। स्पेशल ड्यूटी कम्पनी को कतार में खड़ा किया गया। एक घंटे बाद इंकलाबी कमेटी के माल-असबाब से लदी हुई गाड़ियाँ शहर के बीच होकर पोडोल्स्क स्टेशन की ओर चल पड़ीं। वहाँ इस सारे माल-असबाब को रेल के डब्बों में लादा गया।

तार में लिखी बातों का सर्गेई को पता चला तो वह मोटर साइकिल वाले के पीछे भागा।

'कामरेड, तुम मुझे स्टेशन तक पहुँचा दोगे ?' उसने सवार से पूछा।

'कूदकर पीछे चढ़ जाओ, मगर जरा जोर से पकड़े रहना।'

प्रचार का डब्बा गाड़ी में लगाया जा चुका था। उससे दस-बाहर कदम पर ही सर्गेई ने रिता को देखा। उसने रिता के कंधों को पकड़ लिया और इस बात को समझते हुए कि अभी जरा ही देर में वह चीज, जो उसके लिए इतनी अनमोल थी और जिसे वह इतना प्यार करने लगा था, बिछुड़ जायगी, उसने धीरे से कहा, 'अलविदा रिता, मेरी प्यारी कामरेड ! हम लोग फिर कभी मिलेंगे। मुझे भूलना मत।'

उसे इस बात से बड़ी घबराहट हुई कि आँसुओं से उसका गला रुंधा जा रहा है। उसे फौरन यहाँ से चले जाना चाहिए। उसे अपने पर भरोसा न था कि अगर बोला, तो न जाने क्या बक दे, इसलिए उसने रिता के हाथ को इतने जोर से दबाया कि रिता का हाथ दर्द करने लगा।

सबेरा हुआ तो शहर और स्टेशन वीरान और उजड़े हुए थे। आखिरी गाड़ी जैसे अपनी सीटी से अलविदा कहती हुई स्टेशन के बाहर जा चुकी थी और अब सिर्फ पीछे छोड़ दी गयी बटालियन रेलवे लाइन के दोनों तरफ मुस्तैद खड़ी थी।

पेड़ों से पीली-पीली पत्तियाँ झड़कर नीचे आ रही थीं और शाखें नंगी हो रही थीं। हवा गिरती हुई पत्तियों को पकड़ लेती थी और अपने साथ उड़ा ले जाती थी।

सर्गेई लाल सेना का बरानकोट पहने, कारतूसों की किरमिच की बनी पेटी कन्धे पर लटकाये, लाल सेना के बारह सिपाहियों के साथ चीनी के कारखाने के सामने वाले चौराहे पर तैनात था। पोल लोग करीब थे।

आवतोनम पेत्रोविच ने अपने पड़ोसी जेरासिम लियोनतियोविच के दरवाजे पर दस्तक दी। जेरासिम ने अभी कपड़े नहीं पहने थे, लिहाजा उसने दरवाजे में से सिर निकालकर पूछा :

'क्या बात है ?'

आवतोनम पेत्रोविच ने सड़क पर जाते हुए लाल सेना के लोगों की ओर इशारा किया और आँख मारकर कहा, 'ये लोग भाग रहे हैं।'

जेरासिम लियोनतियोविच ने चिंतित मुद्रा से उसकी ओर देखा और बोला, 'तुम्हें मालूम है पोलों का कैसा चिह्न है ?'

'मेरा खयाल है, उनका चिह्न वही एक सिर वाला ईगल है।'

'कहाँ मिलेगा ?'

आवतोनम पेत्रोविच ने परेशानी से अपना सिर खुजलाया और दो-एक पल विचार करने के बाद कहा, 'उनके लिए तो यह सब ठीक है, बस उठे और चल दिये। मगर मुसीबत तो हम लोगों की होती है जिन्हें नये मालिकान के के साथ मेल बैठाना पड़ता है।'

एक मशीनगन की आवाज ने खामोशी को भंग कर दिया। अचानक स्टेशन से एक इंजन की सीटी सुनायी दी और उसके ठीक बाद वहीं से तोप दगने की आवाज आयी। एक भारी बमगोला जोर से सूँ करता हुआ हवा में उड़ा और कारखाने के उस पार सड़क पर गिरा जिससे सड़क के आस-पास

की झाड़ियाँ नीले धुएँ के बादल में ढँक गयीं। पीछे हटते हुए लाल सैनिक एकदम चुपचाप और गम्भीर, किसी कठोर संकल्प की मूर्ति बने, सड़क पर मार्च करते चले जा रहे थे और रह-रह कर पीछे मुड़कर देखते जाते थे।

सर्गेई की आँख से गिरा आँसू वर्फ जैसी सर्द राह बनाता उसके गाल पर से लुढ़ककर नीचे आ रहा था। उसने जल्दी से उसे पोंछ डाला और चोरी-चोरी अपने साथियों की ओर देखा, कहीं किसी ने देख तो नहीं लिया। सर्गेई के बगल में लकड़ी के कारखाने का एक दुवला-पतला मजदूर आन्तेक क्लोपोतोव्स्की चल रहा था। उसकी उंगली अपनी राइफिल के घोड़े पर ठहरी हुई थी। आन्तेक उदास और अपने-आप में खोया हुआ था। उसकी आँखें सर्गेई की आँखों से मिलीं तो उसने उन विचारों को, जो उसे सता रहे थे, सर्गेई के साथ बाँटा।

'वे लोग हमारे घरवालों की बड़ी मुसीबत करेंगे, खास कर मेरे क्योंकि हम लोग पोल हैं। वे कहेंगे, तुम पोल होकर पोलिश लीजन का विरोध कर रहे हो! मुझे तो इसमें जरा भी शक नहीं कि मेरे बुड्ढे बाप को ठोकर मारकर वे लोग कारखाने से निकाल देंगे और कोड़े भी लगायेंगे। मैंने उनसे कहा कि चलिए, हमारे साथ चले चलिए, मगर घरवालों को छोड़ने को उनका जी न हुआ। जहन्नुम में जायें हरामजादे, मैं तो बेताब हो रहा हूँ कि कितनी जल्दी उनको पाऊँ,' कहते हुए आन्तेक ने अपने टोप को, जो उसकी आँखों पर झुक आया था, गुस्से से पीछे सरकाया।

... अलविदा मेरे प्यारे शहर, तुम जो अपनी सारी बदसूरती और गंदगी के बावजूद, अपने बदसूरत छोटे-छोटे घरों और टेढ़ी-मेढ़ी सड़कों के बाद भी हमें इतने प्यारे लगते हो। विदा, मेरे प्यारे विदा। विदा वालिया और मेरे साथियो, जो गुप्त रूप से काम करने के लिए रुक रहे हो। बेरहम, क्रूर, विदेशी पोलिश ह्वाइट गार्ड दस्ते पास आ रहे हैं।

रेलवे मजदूरों ने, जो अपनी तेल के धब्बे लगी कमीजें पहने हुए थे, उदास आँखों से लाल फौज के सैनिकों को जाते हुए देखा।

सर्गेई ने दुखते हुए दिल से चिल्लाकर कहा, 'हम लोग लौटकर आयेंगे, साथियो!'

आठ

चपटी सी थूथन वाली मैक्सिम तोप नदी के किनारे एक छोटी सी खाई में रखी हुई थी और पाँच आदमी उसके पास लेटे हुए थे। यह सातवीं राइफिल

डिवीजन की एक अगली चौकी थी। तोप के सबसे पास, नदी के ठीक सामने, सर्गेई ब्रुजाक लेटा हुआ था।

परसों लड़ाई से थककर और पोलिश तोपों की तूफानी मार से पीछे ढकेले जाकर उन्होंने कीव छोड़ दिया था; वे पीछे हटकर नदी के बायें किनारे पर आ गये थे और वहीं उन्होंने अपने पैर जमा लिये थे।

पीछे हटना, जान का इतना नुकसान और फिर कीव का दुश्मन के हाथ में चले जाना, इन सारी चीजों से सैनिकों को बड़ा गहरा धक्का लगा था। सातवीं डिवीजन दुश्मन के घेरे में पड़ जाने पर भी बड़ी वीरता से लड़ती हुई दुश्मन की पाँतों को चीरकर बाहर निकल आयी थी और मालिन स्टेशन की रेलवे लाइन पर पहुँच गयी थी। उसने बड़ा तेज हमला करके पोलिश फौजों को पीछे ढकेल दिया था और कीव का रास्ता साफ कर दिया था।

मगर उनको वह प्यारा शहर छोड़ना पड़ा था और इसका लाल सेना के सैनिकों को बड़ा दुख था।

लाल टुकड़ियों को दारनित्सा से बाहर खदेड़कर पोल फौजें अब रेल के पुल के बगल में नदी के बायें किनारे पर एक छोटी-सी पुलिया पर मोर्चा जमाकर बैठ गयी थीं। मगर इधर के तेज जवाबी हमलों ने उस जगह से आगे बढ़ने की उनकी सारी कोशिशों को नाकाम कर दिया था।

नदी को बहते हुए देखकर कैसे मुमकिन था कि सर्गेई को अभी पिछले रोज की बात याद न आती।

कल दोपहर उसकी टुकड़ी ने सख्त जवाबी हमले से पोलों का सामना किया था; कल दुश्मन से पहली बार उसका गुत्थमगुत्था हुआ था। बिना दाढ़ी का एक पोलिश सिपाही अपनी राइफिल और उसमें लगी हुई लम्बी नुकीली तलवार जैसी फ्रेंच संगीन लगाकर सर्गेई के ऊपर झपटा था। वह जाने क्या चिल्लाता हुआ खरगोश की तरह सर्गेई पर लपका। क्षण भर को सर्गेई ने अपनी आँखों को बेपनाह गुस्से से फैलते देखा। दूसरे क्षण सर्गेई की संगीन उस पोल की संगीन से बजी और वह चमकती हुई फ्रेंच संगीन एक ओर को हट गयी। पोल गिर पड़ा...

सर्गेई का हाथ नहीं काँपा। वह जानता था कि उसे मारते जाना होगा — उसे, सर्गेई को, जिसमें इतने गहरे प्यार का माद्दा था, इतनी पक्की दोस्ती का माद्दा था। वह स्वभाव से दुष्ट या क्रूर नहीं था। मगर वह जानता था कि उसे इन भटके हुए सिपाहियों से लड़ना ही होगा जिन्हें दुनिया भर की जोंकों ने उनके अन्दर हैवानी नफरत का जोश भरकर उसकी मातृभूमि पर हमला करने के लिए भेजा था। और वह, सर्गेई, कत्ल करेगा ताकि वह दिन करीब आये जब आदमी आदमी का कत्ल नहीं करेगा।

पावेल कोर्चागिन को अपने देश भर में चक्कर लगाते अब एक साल हो गया था। कभी वह मशीनगन की गाड़ियों पर या तोप की गोला-बारूद की गाड़ियों पर सवार होता, तो कभी एक छोटी-सी घोड़ी पर जिसके कान पर एक निशान था। अब वह एक जवान आदमी था, जिसे तकलीफों और परेशानियों ने अपनी आग में तपाकर सख्त और पक्का बना दिया था। कारतूस की भारी पेटी की वजह से उसकी मुलायम खाल कभी छिल गयी थी, पर उसका घाव कब का भर चुका था और राइफिल के पट्टे के नीचे उसके कंधे पर का चमड़ा सख्त हो गया था।

पावेल ने उस साल बहुत सी भयानक चीजें देखी थीं। अपने ही जैसे दूसरे हजारों सैनिकों के साथ, जो सब उसी की तरह रद्दी-सद्दी कपड़े पहने हुए थे, मगर जिन सबमें अपने वर्ग की सत्ता कायम करने के लिए लड़ने का अजेय संकल्प था, वह अपनी मातृभूमि पर उत्तर-दक्खिन-पूरब-पश्चिम सभी ओर गया था और इस दौरान वह सिर्फ दो बार तूफान के साथ नहीं रहा था — एक तो तब, जब उसके कूल्हे में चोट लगी थी और दूसरी बार तब जब सन् १९२० की कड़कड़ाती सर्दी में फरवरी के महीने में वह टाइफस बुखार की चुभती गरमी से परेशान पड़ा था।

बारहवीं फौज की रेजिमेंटों और डिवीजनों का संहार पोलिश मशीनगनों से कहीं ज्यादा टाइफस ने किया। तब तक बारहवीं फौज बहुत बड़े इलाके में, लगभग पूरे उत्तरी उक्रेन में, काम करने लगी थी और पोलों को आगे बढ़ने से रोके हुए थी।

पावेल अपनी बीमारी से बिल्कुल ठीक भी नहीं हुआ था कि वह अपनी टुकड़ी में लौट आया। उसकी टुकड़ी उस वक्त कजातिन-उमान ब्रांच लाइन के फ्रोन्तोवका स्टेशन में अपने पैर जमाये हुए थी।

फिर से कुछ बड़ी घटनाओं की तैयारी हो रही थी। बारहवीं फौज के बहुत से आदमी मारे गये थे और वह कमोबेश असंगठित हो गयी थी। जिस वक्त वह पोलिश फौजों के दबाव के कारण पीछे हटकर कीव पहुँच रही थी, तभी मेहनतकशों की सरकार विजय के मद से चूर पोलिश फौजों पर करारा हमला करने के लिए अपनी सारी ताकत संचित कर रही थी।

पहली घुड़सवार फौज की लड़ाई की आग में तपी हुई डिवीजनें उत्तरी काकेशस से उक्रेन भेजी जा रही थीं और वह एक ऐसी लड़ाई थी जिसकी मिसाल फौजी इतिहास में नहीं मिलती। एक के बाद एक चौथी, छठीं, ग्यारहवीं, और चौदहवीं घुड़सवार डिवीजनें उमान के इलाके में पहुँच रही थीं। वे मोर्चे

की पिछली पाँतों पर अपना सारा जोर लगा रही थीं और निर्णायक लड़ाइयों के घटनास्थल के रास्ते में माखनो के लुटेरों का सफाया करती जा रही थीं।

साढ़े सोलह हजार तलवारें, साढ़े सोलह हजार सैनिक जिन्हें स्तेपी के जलते सूरज ने तपाया और पकाया था।

इस वक्त दक्खिन-पच्छिमी मोर्चे की कमान और लाल फौज की सर्वोच्च कमान को सबसे ज्यादा फिक्र इस बात की थी कि दुश्मन लाल फौज के इस निर्णायक हमले को रोकने के लिए कुछ न कर सके। ये सारी घुड़सवार फौजें कामयाबी के साथ एक जगह जमा हो जायें, इसी के लिए सब कुछ किया जा रहा था। उमान के इलाके में सक्रिय कार्रवाई रोक दी गयी थी। मास्को से खारकोव के मोर्चे के हेडक्वार्टर और वहाँ से चौदहवीं और बारहवीं फौजों के हेडक्वार्टर के बीच की सीधी तार की लाइनें अनवरत काम कर रही थीं। तार के आपरेटर फौजी कोड में दिये गये हुक्मनामे बराबर टपटपाते जा रहे थे : 'पोलों का ध्यान घुड़सवार फौज इकट्ठा करने की हमारी कार्रवाई की तरफ से हटाओ।' दुश्मन से लड़ाई सिर्फ उसी वक्त की जाती जब यह खतरा होता कि पोलिश फौजों के आगे बढ़ने से बुद्यौनी की घुड़सवार डिवीजनों के के लिए खतरा पैदा हो जायगा।

कैम्प फायर की आग की लाल-लाल लपटें निकल रही थीं। आग से धुएँ के घुँघराले बादल उठते और भन-भन करते हुए बेचैन कीड़ों की भीड़ें छँट जातीं। सैनिक आग के इर्द-गिर्द अर्द्ध-गोलाकार लेटे हुए थे और आग की ताँबे जैसी छाया उनके चेहरों पर पड़ रही थी। हल्की नीली-भूरी राख पर रखे हुए मेसटिनों में पानी बुदबुदा रहा था।

एकाएक एक जलते हुए कुन्दे के नीचे से लपट की एक अकेली जीभ निकली और उसने किसी के बिखरे हुए बालों वाले सिर को छुआ। उस आदमी ने झट से अपना सिर हटा लिया और गुर्राया : 'धत्तेरे की! क्या मुसीबत है!' और आग के इर्द-गिर्द बैठे हुए लोगों की टोली ने कहकहा लगाया।

एक अधेड़ आदमी, जिसकी मूँछें छँटी हुई थीं और जो सर्ज का ट्यूनिक पहने हुए था, आग की रोशनी में अपनी राइफिल की नली का मुआइना कर रहा था। वह बोला :

'इस लड़के के दिमाग में किताबी ज्ञान इतना भरा हुआ है कि इसे आग की गरमी नहीं मालूम होती।'

'कुछ हमें भी तो बतलाओ कि क्या पढ़ रहे हो, कोर्चागिन!' किसी ने कहा।

नौजवान लाल सैनिक ने अपने जले हुए बालों पर उँगली फेरी और मुस्कराया।

'सचमुच बहुत अच्छी किताब है, कामरेड अन्द्रोश्चुक। कोशिश करके भी इसे छोड़ नहीं पाता।'

'काहे के बारे में है?' कोर्चागिन के बगल में बैठे हुए एक चपटी नाक वाले लड़के ने पूछा जो जी-जान से अपने थैले के फीते की मरम्मत में लगा हुआ था। उसने दाँत से वह मोटा तागा कुतरा, बाकी को सुई के इर्द-गिर्द लपेट दिया और फिर उसे अपने हेलमेट में खोंस लिया। 'भाई, अगर इश्क के बारे में हो, तो मुझे जरूर बताना।'

लड़के की इस बात पर जोर का कहकहा पड़ा। मातवेइचुक ने अपना छोटे-छोटे बालोंवाला सिर उठाया और उस चपटी नाकवाले लड़के को शरारत से आँख मारी, 'इश्क बड़ी अच्छी चीज होती है, सेरेदा,' उसने कहा, 'और तुम इतने खूबसूरत हो कि तुमको देखना गोया किसी तसवीर को देखना है। जहाँ कहीं हम लोग जाते हैं, तुम्हारे पीछे भागते-भागते लड़कियों के जूते घिस जाते हैं। कितनी बुरी बात है कि तुम्हारे जैसे खूबसूरत आदमी में सिर्फ एक नुक्स है कि नाक की जगह पाँच कोपेक का सिक्का लटका हुआ है। मगर इसका इलाज आसान है। रात को नाक से एक दस पाउंड का लोविस्की हथगोला लटका दो। सवेरे सब ठीक हो जायगा।'

इस मजाक पर जो जोर का कहकहा पड़ा, तो मशीनगन की गाड़ियों में जुते हुए घोड़े डरकर हिनहिनाने लगे।

सेरेदा ने बोलनेवाले की ओर लापरवाही से देखा और कहा, 'अजी, चेहरे से कुछ नहीं आता जाता, असल चीज तो दिमाग है,' कहते हुए उसने इशारतन अपने माथे को ठकठकाया और कहा, 'जहाँ तक तुम्हारी बात है, तुम्हारी जबान तो बड़ी तीखी है, मगर किसी भी तरह तुम गधे से अच्छे नहीं हो और तुम्हारे कान ठण्डे हैं।'

इन दोनों को, जो एक दूसरे से गुथने ही वाले थे, डाँटते हुए सेक्शन कमांडर ततारिनोव ने कहा, 'अरे क्यों झगड़ रहे हो तुम लोग? इससे अच्छा यह है कि कोर्चागिन से कहो कि अगर सचमुच कुछ सुनने लायक चीज हो तो सुनाये।'

'बिलकुल ठीक है। शुरू करो, पावलुश्का।' सभी तरफ से लोगों ने आग्रह किया।

पावेल आग के कुछ और पास सरक आया और अपने घुटनों पर पड़ी हुई छोटी-सी मोटी किताब उसने खोल ली।

'इस किताब का नाम द गैड-फ्लाई है, साथियो। बटालियन कमिसार ने

मुझे दी है। मुझे तो इस किताब ने बाँध लिया है, साथियो। तुम लोग खामोशी से बैठो तो सुनाऊँ।'

'शुरू भी करो ! और फिकर न करो, हम किसी प्रकार की गड़बड़ न होने देंगे।'

कुछ देर बाद रेजिमेंट के कमांडर कामरेड पुजीरेव्स्की चुपके से अपने घोड़े पर सवार कैम्प फायर के पास आये। उनके आने का किसी को कुछ पता ही न चला। उन्होंने देखा कि ग्यारह जोड़ा आँखें किताब पढ़नेवाले के चेहरे पर टिकी हुई हैं। उनके साथ कमिसार भी था। कमिसार की ओर मुड़ते हुए उन्होंने कहा :

'ये देखो रेजिमेंट के आधे स्काउट हैं,' और आग के गिर्द बैठे हुए उन लोगों की तरफ इशारा किया। 'इनमें से चार नये-नये कोमसोमोल हैं, मगर सब के सब बहुत अच्छे सिपाही हैं। वह जो पढ़ रहा है उसका नाम कोर्चागिन है। और वह जो दूसरा है, जिसकी आँखें भेड़िये के बच्चे जैसी हैं, उसका नाम जार्की हैं। वे दोनों दोस्त हैं, मगर चुपके-चुपके उनमें आपस में होड़ लगी रहती है। पहले कोर्चागिन मेरा सबसे अच्छा स्काउट था। लेकिन अब उसका एक तगड़ा प्रतिद्वन्द्वी पैदा हो गया है। इस वक्त ये लोग जो काम कर रहे हैं, यह भी राजनीतिक काम है और बड़ा उपयोगी काम है। मैंने सुना है कि इन नौजवानों को 'यंग गार्ड' कहते हैं। मेरा ख्याल है कि यह बहुत मुनासिब नाम है।

कमिसार ने पूछा, 'जो किताब पढ़ रहा है, क्या वही राजनीतिक शिक्षक है ?'

'नहीं, राजनीतिक शिक्षक तो क्रेमर है।' पुजीरेव्स्की ने अपने घोड़े को एड़ लगायी।'

बाहर ही से बोला, 'मुबारकबाद साथियो !'

सब लोगों के सिर कमांडर की ओर मुड़े जब वह घोड़े से उतर रहा था। उतरकर वह सीधे टोली के पास गया।

'आग ताप रहे हो दोस्तो, क्यों ?' खूब मुस्कराते हुए उसने कहा। उस वक्त उसकी छोटी-छोटी, कुछ-कुछ मंगोलों जैसी आँखों वाले मजबूत चेहरे पर कठोरता नहीं थी। सिपाहियों ने दिल खोलकर अपने कमांडर का स्वागत किया, वैसे ही जैसे वे अपने किसी अच्छे दोस्त या साथी का करते। कमिसार अपने घोड़े से नहीं उतरा, क्योंकि वह और आगे जाना चाहता था।

अपने पिस्तौल को पीछे सरकाते हुए पुजीरेव्स्की कोर्चागिन के बगल में बैठ गया।

'सिगरेट पी जाय तो कैसा रहे ?' उसने कहा, 'मेरे पास बहुत अच्छी

तम्बाकू है।'

उसने एक सिगरेट बनायी, जलायी और कमिसार की ओर मुड़कर बोला, 'तुम जाओ दोरोनिन, मैं यहाँ कुछ देर रुकूँगा। हेडक्वार्टर में अगर मेरी जरूरत हो तो मुझे खबर कर देना।'

दोरोनिन के चले जाने पर पुजीरेव्स्की ने कोर्चागिन से कहा, 'पढ़ो पढ़ो, मैं भी सुनूँगा।'

पावेल ने अन्त तक पढ़ा, फिर किताब अपने घुटनों पर रख ली और आग की ओर देखते हुए किसी सोच में डूब गया। कुछ क्षणों तक कोई कुछ नहीं बोला। सभी लोग गैंड-फ्लाई के दर्दनाक नसीब के बारे में मन ही मन सोच रहे थे। पुजीरेव्स्की बहस शुरू होने का इन्तजार करते हुए सिगरेट के कश खींचता रहा।

खामोशी को तोड़ते हुए सेरेदा ने कहा, 'बड़ी भयानक और दिल हिला देनेवाली कहानी है। इसका मतलब यह है कि दुनिया में इस तरह के लोग भी हैं। जो कुछ उसने बर्दाश्त किया उसे कम ही लोग बर्दाश्त कर सकते थे। लेकिन जब आदमी के पास कोई ऐसा विचार होता है जिसके लिए वह लड़े, तो उसमें सब कुछ सहने की ताकत आ जाती है।' स्पष्ट ही सेरेदा पर किताब का बहुत असर पड़ा था। उसके चेहरे से यह बात जाहिर थी।

'अगर मैं कहीं उस हरामजादे पादरी को पा जाऊँ जिसने उसके गले के नीचे क्रास उतारने की कोशिश की थी,' बेलाया सेरकोव के एक जूता बनाने-वाले के अपरेंटिस आन्द्रीयूशा फोमीचेव ने बुलन्द आवाज में गुस्से से कहा, 'तो वहीं उस सुअर को खतम कर दूँ।'

आन्द्रोश्चुक ने एक छड़ी से एक मेसटिन को आग के और पास ठेलते हुए दृढ़ विश्वास के स्वर में कहा, 'आदमी को मरना बुरा नहीं मालूम होता, अगर उसके पास ऐसी कोई चीज है जिसके लिए वह मरे।'

कैम्प के लोगों के सोते-सोते बहुत रात जा चुकी थी। खामोशी में सेरेदा की नाक बजने की आवाज सुनायी दे रही थी। पुजीरेव्स्की अपने घोड़े की जीन का तकिया लगाये सो रहा था। राजनीतिक शिक्षक क्रेमर बैठा हुआ अपनी नोटबुक में तेजी से कुछ लिख रहा था।

अगले रोज स्काउटिंग की एक गश्त से लौटकर पावेल ने अपना घोड़ा एक पेड़ से बाँधा और क्रेमर के पास गया जिसने अभी-अभी अपनी चाय खत्म की थी।

'सुनो क्रेमर, कैसा रहे अगर मैं पहली घुड़सवार फौज में चला जाऊँ? क्यों? देखने से लगता है कि वहाँ कुछ बड़ी-बड़ी चीजें होनेवाली हैं। इतनी फौजों को जो इकट्ठा किया जा रहा है, बड़ी संख्या में, तो क्या यों ही मजाक

के लिए ? और यहाँ तो लगता है कि कुछ खास लड़ाई-वड़ाई देखने को मिलेगी नहीं ।'

क्रेमर ने उसकी ओर आश्चर्य से देखा ।

'चला जाऊँ से क्या मतलब ? क्या तुम्हारा खयाल है कि सिनेमा की सीट की ही तरह अपनी फौज की टुकड़ी भी जब चाहे बदल सकते हो ?'

'मगर इससे फर्क क्या पड़ता है, लड़ना यहाँ भी है वहाँ भी,' पावेल ने कहा, 'मैं भागकर पीछे तो जा नहीं रहा हूँ, मोर्चे को छोड़कर ?'

मगर क्रेमर इस बात के बिल्कुल खिलाफ था । बोला :

'अनुशासन भी तो कोई चीज है ! कुल मिलाकर तुम बुरे लड़के नहीं हो पावेल; मगर कुछ बातों में तुम थोड़े से अराजकतावादी हो । तुम्हारा खयाल है कि तुम मनमानी कर सकते हो, जो तुम्हारे जी में आये ? तुम भूल जाते हो मेरे दोस्त कि पार्टी और कोमसोमोल की आधार-शिला लौह अनुशासन है । पार्टी का हित सबसे पहले देखना होगा । और हममें से हर एक को वहाँ होना चाहिए जहाँ उसकी जरूरत है, वहाँ नहीं जहाँ वह रहना चाहता है । पुजीरेव्स्की ने तुम्हारी बदली की अर्जी रद्द कर दी कि नहीं ? बस, तो यही तुम्हारी बात का जवाब है ।'

क्रेमर इतने आवेश में बोल रहा था कि उसे खाँसी का दौरा पड़ गया । यह लम्बा दुबला-पतला आदमी प्रेस में काम करता था और सीसे की चूर उसके फेफड़ों पर जम गयी थी और अक्सर उसके मोम जैसे फीके जर्द गालों पर बुखार की सी ललाई दिखायी देती थी ।

क्रेमर के शान्त होने पर पावेल ने धीमी, मगर दृढ़ आवाज में कहा :

'तुम जो कहते हो वह ठीक है, मगर फिर भी मैं बुद्यौनी की फौज में जा रहा हूँ ।'

उसके अगले रोज शाम को पावेल कैम्प फायर में नहीं था ।

पास के एक गाँव में बुद्यौनी की घुड़सवार टुकड़ी के लोग स्कूल की इमारत के उस पार एक पहाड़ी पर बड़ा-सा घेरा बनाये बैठे थे । एक भीमकाय सिपाही, मशीनगन को खींचनेवाली गाड़ी के पीछे बैठा हुआ था । उसने अपनी टोपी पीछे की ओर सरका दी थी और अकार्डियन बाजा बजा रहा था । वह बाजा उसकी अनाड़ी उँगलियों के निर्देश से बिना किसी ताल-सुर के शोर मचा रहा था जैसे उसे गहरी यातना मिल रही हो और वह रो रहा हो । उसके इस गलत-सलत बाजा बजाने से वह बाँका घुड़सवार, जो खूब ही चौड़ी बिर्जिस पहने हुए घेरे के बीचोबीच बड़ी मस्ती से होपाक नाच रहा था, परेशानी में

पड़ जाता था।

गाँव के लड़के-लड़कियाँ अपनी उत्सुक आँखें लिये इन सिपाहियों की उछल-कूद को, जिनकी ब्रिगेड अभी-अभी गाँव में दाखिल हुई थी, देखने के लिए तोप खींचनेवाली गाड़ी और आसपास की बाड़ियों पर चढ़ गये थे।

'हाँ, तोप्तालो ! यह रही ! जमीन खोदकर रख दो ! हाँ भाई, यह चीज है। अजी ओ, तुम जो अकार्डियन लिये खड़े हो, जरा जोर से बजाओ, क्या पीं-पीं कर रहे हो !'

मगरे बजानेवाले की मोटी-मोटी उँगलियाँ, जो निहायत आसानी से घोड़े की नाल को पकड़कर मोड़ दे सकती थीं, परदे पर भद्दे तरीके से धप्प-धप्प कर रही थीं।

'कितना बुरा हुआ कि माखनो आफानासी कुल्यावका को ले बीता,' काँसे के रंग के एक घुड़सवार ने दुख के साथ कहा, 'वह लड़का बहुत अच्छा अकार्डियन बजाता था। अपने घोड़े पर सवार होकर वह हमारे दस्ते के दाँयें चला करता था। बहुत बुरा हुआ कि वह मारा गया। वह सिपाही भी बहुत अच्छा था और हमारा सबसे अच्छा अकार्डियन बजानेवाला भी था !'

पावेल ने, जो उसी घेरे में खड़ा था, इस आखिरी बात को पीछे से सुन लिया था। वह लोगों को हटाता हुआ मशीनगन खींचनेवाली गाड़ी के पास पहुँच गया और उसने अपना हाथ अकार्डियन की धौंकनी पर रख दिया। संगीत थम गया।

'क्यों क्या बात है ?' अकार्डियन बजानेवाले ने त्यौरी चढ़ाते हुए पूछा।

तोप्तालो रुक गया और भीड़ में से गुस्से की एक भुनभुनाहट उठी : 'किस बात का झगड़ा है ?'

पावेल ने बाजे के लिए हाथ बढ़ाते हुए कहा, 'जरा मुझे बजाने दो !'

बुद्योनी के घुड़सवार ने इस बोल्शेविक पैदल सिपाही की ओर अविश्वास से देखा ओर फिर बेमन से अकार्डियन का पट्टा अपने कंधे पर से उतार दिया।

पावेल ने जानकार अंदाज से बाजे को अपने घुटने पर रख लिया, धौंकनी को पंखे की तरह फैला दिया और अकार्डियन अपने पूरे जोशोखरोश से संगीत की खूब ही मस्त धुन निकालने लगा :

ओरी नन्हीं छबीली
किधर चली ? ओ री .....
बाँके सिपहिया से नैना लड़े तोरे
तू उसके ही प्रेम रली ! ओ री ...

तोप्तालो ने इस परिचित धुन को उठा लिया और किसी बड़ी चिड़िया की तरह अपनी बाँहों को झुलाता हुआ, झूमता हुआ घेरे के अन्दर जा पहुँचा

और अपने जिस्म को अजीब-अजीब तरह से तोड़-मरोड़ कर और अपनी जाँघों, घुटने, सिर, माथे, जूते के तल्लों और यहाँ तक कि अपने मुँह पर कस-कस के हाथ मारता हुआ संगीत की ताल देने लगा।

अकार्डियन की गति तेज से तेज होती जा रही थी और उससे एक बेहद नशीली, पागल कर देनेवाली स्वर-लहरी निकल रही थी। तोप्तालो जोर-जोर से अपनी टाँगों को फटकारकर पूरे घेरे में लट्टू की तरह नाच रहा था —यहाँ तक कि उसकी साँस फूल गयी।

५ जून, १९२० को बुद्यौनी की पहली घुड़सवार फौज दो-चार छोटी, मगर भयानक, लड़ाइयों के बाद तीसरी और चौथी पोलिश फौजों के बीच के पोलिश मोर्चे को चीरने में कामयाब हुई। उसने जेनरल साविकी की घुड़सवार ब्रिगेड को, जो उसके रास्ते में पड़ी, चकनाचूर कर दिया और सैलाब की तरह रुजीनी की तरफ बढ़ी।

पोलिश फौज की कमान ने जल्दी-जल्दी अपनी कुछ फौज जमा की और उससे अपने मोर्चे की दरार को भरने की कोशिश की। पोगरेबिश्चे स्टेशन से पाँच टैंक झटपट लड़ाई के मुकाम पर भेजे गये। पोलिश फौज का इरादा जारुदनित्सी से हमला करने का था, मगर यह घुड़सवार फौज उसको बचाकर बगल से निकल गयी और पोलिश फौजों के पिछाये में जा पहुँची।

पहली घुड़सवार फौज का पीछा करने के लिए जेनरल कौर्निकी की घुड़-सवार डिवीजन भेजी गयी। पोलिश कमान को यकीन था कि बुद्यौनी की घुड़सवार फौज कजातिन की तरफ बढ़ रही है। पोलिश फौजों के पिछाये में कजातिन एक सबसे अहम जंगी मुकाम था। लिहाजा जेनरल कौर्निकी की घुड़सवार डिवीजन को बुद्यौनी की फौज पर पीछे से हमला करने का आदेश दिया गया। मगर इस चाल से पोलों की हालत सुधरी नहीं। यह सही है कि उन्होंने उस दरार को पूर दिया और बुद्यौनी की घुड़सवार फौज को पीछे से काट दिया, मगर यह चीज अपने आप में काफी परेशान करनेवाली थी कि एक मजबूत घुड़सवार फौज उनकी पाँतों के पीछे है और उससे उनके पिछाये के अड्डों को खतरा है। इतना ही नहीं, इस बात का भी खतरा था कि वह फौज पोलों की कीव-स्थित फौजी टुकड़ी पर टूट पड़ेगी। आगे बढ़ते हुए लाल घुड़-सवार डिवीजनों ने पोलों के लौटने का रास्ता बंद करने के लिए छोटे-छोटे रेल के पुलों को उड़ा दिया और रेलवे लाइनों को उखाड़ फेंका।

कैदियों से यह बात मालूम होने पर कि पोलों का एक फौजी हेडक्वार्टर जिटोमीर में है (और सच बात तो यह थी कि पूरे मोर्चे का उनका हेडक्वार्टर

वहीं था), पहली घुड़सवार फौज के कमांडर ने जिटोमीर और बर्डीचेव पर कब्जा करने का फैसला किया। ये दोनों महत्वपूर्ण रेलवे जंक्शन और शासन केन्द्र थे। ७ जून को सवेरे, भोर में, चौथी घुड़सवार डिवीजन पूरे वेग से जिटोमीर की तरफ बढ़ी जा रही थी।

अब कोर्चागिन एक दस्ते के बायें बाजू में अपने घोड़े पर सवार चल रहा था; सभी सिपाहियों के सम्मिलित अनुरोध पर पावेल को उस दस्ते में रखा गया था। वे लोग इतने अच्छे अकार्डियन बजानेवाले से हाथ नहीं धोना चाहते थे।

उनके घोड़ों के मुँह से फेचकुर छूट रहा था, मगर रुकने की ताब उनमें नहीं थी। जिटोमीर के पास पहुँचकर वे पंखे की तरह फैल गये और अपनी नंगी, धूप में चमकती तलवारें लिये उन्होंने शहर पर हमला बोल दिया।

घोड़े हाँफ रहे थे, उनकी टापों से धरती कराह रही थी और घुड़सवार अपनी रकाबों में पैर दिये खड़े थे।

उनके पैरों के नीचे जमीन तेजी से उल्टी तरफ भागती चली जा रही थी और उनके सामने वह बागीचों और पार्कोंवाला बड़ा शहर था जो तेजी से पास आता जा रहा था। घुड़सवारों का यह तूफान बागीचों के बगल से होता हुआ शहर के बीचोबीच जा पहुँचा। लड़ाई के खौफनाक नारे और आवाजें हवा को चीरने लगीं और एक ऐसा समाँ बँध गया जो मौत की तरह ही भयावना था।

पोल ऐसे किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गये थे कि वे कुछ भी मुकाबला न कर सके। उस शहर की उनकी फौज को कुचल दिया गया।

अपने घोड़े की गर्दन पर झुका हुआ कोर्चागिन तेजी से तोप्तालो के बगल में चला जा रहा था। तोप्तालो अपने काले घोड़े पर सवार था जिसकी टाँगें पतली थीं। पावेल ने देखा कि कैसे अचूक निशाने से उस बाँके घुड़सवार ने एक पोलिश सिपाही को, इसके पहले कि वह अपनी राइफिल उठाकर कंधे से लगा सके, चीरकर रख दिया।

घोड़ों की नालें सड़क के पत्थरों पर बज रही थीं। तभी एक दुराहे पर उन्होंने अपने ठीक सामने सड़क के बीचोबीच एक मशीनगन को देखा। तीन पोलिश सिपाही अपनी नीली वर्दियाँ और आयताकार टोपियाँ लगाये मशीनगन पर झुके हुए थे। एक चौथा आदमी भी था जिसके कॉलर पर सुनहले गोटे का काम था और जो इन घुड़सवारों पर अपना माउज़र ताने हुए था।

न तोप्तालो, न पावेल, दोनों में से कोई भी अपने घोड़े को नहीं रोक सका और वे सरपट मशीनगन की तरफ, सीधे मौत के जबड़ों में, भागते चले गये। उस अफसर ने कोर्चागिन पर गोली चलायी, मगर निशाना चूक गया। गोली

पावेल के गाल के पास से सन्न से निकल गयी और दूसरे ही क्षण उस लेफ्टिनेंट का सिर सड़क के पत्थर से जा टकराया। घोड़े की टाप ने उसके पैर उखाड़ दिये और उसका निर्जीव शरीर चित्त होकर सड़क पर बिछ गया।

उसी वक्त मशीनगन पाशविक डरावनी तेजी से कड़कड़ायी और गोले के एक दर्जन छर्रे आकर तोप्तालो और उसके काले घोड़े को लगे और दोनों वहीं जमीन पर ढेर हो गये।

पावेल का घोड़ा डरकर हिनहिनाता हुआ अपनी पिछली टाँगों पर खड़ा हो गया और अपने सवार को लिये हुए, जमीन पर पड़ी लाशों को फाँदता हुआ मशीनगन चलानेवालों पर जा कूदा। पावेल की तलवार हवा में एक अर्धवृत्त बनाती हुई चमकी और एक सिपाही की नीली टोपी को चीरती हुई अन्दर घुस गयी।

दूसरे के सिर पर टूटने के लिए तलवार दुबारा चमकी, मगर बौखलाया हुआ घोड़ा दूसरी ओर बहक गया।

एक पहाड़ी तूफानी नदी की तरह हरहराता हुआ घुड़सवार दस्ता अब सड़क के दोराहे पर आ गया था और हवा में बीसों तलवारें चमक रही थीं।

जेल के तंग लम्बे गलियारों में आवाजें गूँज रही थीं।

जेलखाने की कोठरियों में एक अजीब परेशानी का आलम था। उनमें बंद मर्दों और औरतों के दुबले, सूखे, मुरझाये हुए, परेशान चेहरे कुछ समझ नहीं पा रहे थे कि आगे क्या होनेवाला है। उनको यह मालूम था कि शहर के अन्दर लड़ाई जारी है, लेकिन इस बात का यकीन उन्हें मुश्किल से आ रहा था कि इस चीज का मतलब उनकी आजादी होगी, कि ये हमला करनेवाले, जो अचानक ही शहर पर टूट पड़े थे, उनके अपने आदमी हैं।

जेल के हाते में गोली चल रही थी। लोग गलियारों में भाग रहे थे। और फिर वे सदा-सदा के पहचाने, प्यारे, मर्मस्पर्शी शब्द : 'अब तुम आजाद हो, साथियो !'

पावेल एक बंद कोठरी की तरफ दौड़ा जिसमें ताला लगा हुआ था। इस कोठरी की नन्हीं सी खिड़की में से दर्जनों आँखें बेताबी से झाँक रही थीं, मानो किसी ने उन्हें वहाँ चिपका दिया हो। पावेल अपनी राइफिल के कुंदे से बार-बार ताले पर चोट मार रहा था।

मिरोनोव ने पावेल को एक तरफ हटाते हुए अपनी जेब से एक दस्ती बम निकाला और बोला, 'रुको, मैं अभी इसे एक बम से तोड़े देता हूँ।'

प्लैटून कमांडर जिगारचेंको ने लपककर उसके हाथ से बम छीन लिया। 'रुको भी, कैसे गधे हो, पागल हो गये हो क्या ! अभी पलक मारते ताली आयी जाती है। जो कुछ हम तोड़ नहीं सकेंगे, उसे ताली से खोलेंगे।'

जेल के संतरी पीछे से रिवाल्वर से ठेल-ठेलकर ले जाये जा रहे थे। उसके बाद रास्ते भर में तमाम मर्द और औरतें भर उठे जो चीथड़े लगाये थे, जिन्होंने न जाने कब से मुँह-हाथ भी नहीं धोया था, मगर जो खुशी से पागल हो रहे थे।

कोठरी के दरवाजे को धक्का देकर खोलते हुए पावेल अन्दर पहुँचा।

'साथियो, तुम लोग आजाद हो ! हम लोग बुद्यौनी के आदमी हैं — हमारे डिवीजन ने शहर पर कब्जा कर लिया है !'

एक औरत, जिसकी आँखों में आँसू छलक रहे थे, दौड़कर पावेल के पास पहुँची और उसे अपनी बाँहों में भरकर सिसकने लगी जैसे उसे कोई अपना सगा मिल गया हो।

इन पाँच हजार एकहत्तर बोल्शेविकों और लाल सेना के दो हजार राजनीतिक कर्मियों की — जिन्हें पोलिश क्रांति-विरोधियों ने इन पत्थर के तहखानों में गोली मारने या फाँसी पर चढ़ाने के लिए बंद कर रखा था — आजादी ही इस डिवीजन के सैनिकों के लिए सबसे बड़ा पुरस्कार था, जीत से भी बड़ा पुरस्कार। उन सात हजार क्रांतिकारियों के लिए रात्रि का अभेद्य अंधकार दिन के सुनहले प्रकाश में बदल गया।

एक कैदी, जिसकी खाल नीबू की तरह पीली थी, खुशी से पागल होकर पावेल की ओर दौड़ा। यह था सैमुअल लेखर — शेपेतोवका के प्रेस का एक कम्पोजीटर।

सैमुअल के मुँह से अपने शहर की खून में डूबी हुई कहानी सुनकर पावेल का चेहरा मुरझा गया; सैमुअल के शब्द पिघले हुए सीसे की बूंदों की तरह उसके दिल को जला रहे थे।

'उन्होंने हम सबको एक साथ रात के वक्त पकड़ लिया। किसी हरामजादे ने हमारे साथ गद्दारी की और फौजी पुलिस को हमारे बारे में बतला दिया। एक बार हमें अपने पंजों में पाकर उन्होंने हमारे साथ फिर किसी तरह का रहम नहीं किया। हमें उन्होंने बहुत बुरी तरह मारा, पावेल। मुझे औरों से कम यातना सहनी पड़ी क्योंकि दो ही चार वारों के बाद मैं बेहोश होकर गिर पड़ा। लेकिन, दूसरे मुझ से ज्यादा मजबूत थे।

'हमारे पास छिपाने को कुछ भी नहीं बचा था। उन सिपाहियों को हमसे ज्यादा अच्छी तरह हमारी बातें मालूम थीं। उनको पता था हमने कब-कब कौन से कदम उठाये। और यह कोई ताज्जुब की बात नहीं थी क्योंकि हमारे बीच एक गद्दार था ! उन दिनों के बारे में मैं तुमको नहीं बतला सकता, पावेल। जो पकड़े गये, उनमें से तुम बहुतों को जानते हो। वालिया ब्रुजाक और रोजा ग्रित्समान, कैसी प्यारी लड़कियाँ थीं। अभी मुश्किल से

सत्रह की हुई थीं और कैसा विश्वास झलकता था उनकी आँखों में, पावेल ! साशा बुनशाफ्ट भी तो पकड़ा गया। उसे तो तुम जानते होगे, कम्पोजीटर था। कैसा मस्त लड़का था ! हमेशा मालिक के कार्टून बनाया करता था। उसे और कालेज के दो लड़कों, नोवोसेल्स्की और तुजित्स को वे पकड़ ले गये। इन लड़कों की भी तुम्हें याद होगी ही। बाकी लोग भी शहर के या जिले के ही थे। कुल मिलाकर उन्तीस लोग पकड़े गये थे, जिनमें छः औरतें थीं। उन सभी को एक से एक अमानुषिक यातनाएँ दी गयीं। वालिया और रोज़ा के साथ पहले ही रोज बलात्कार किया गया। उन सुअरों ने क्या नहीं किया उन लड़कियों के साथ और फिर उन्हें लाकर कोठरी में डाल गये, ज़िन्दा से ज्यादा मुर्दा। उसके बाद रोज़ा पागलों की तरह बातें करने लगी और कुछ दिन बाद बिल्कुल ही पागल हो गयी।

'उनको यकीन न आता था कि वह पागल है। उनका कहना था कि वह बन रही है और हर बार जब वे उससे सवाल-जवाब करते, तो बड़ी बेरहमी से उसे मारते। कैसी हौलनाक शक्ल हो गयी थी उसकी जब उसे गोली से मारा गया ! उसका चेहरा जख्मों से स्याह हो रहा था, उसकी आँखों में दहशत थी और वह बिलकुल बूढ़ी नजर आती थी।

'वालिया ब्रुजाक ने अन्त तक बड़ी वीरता से काम लिया। वे सब सच्चे सैनिकों की तरह मरे। मैं नहीं जानता कि यह सब सहने की ताकत उनमें कहाँ से आ गयी थी। आह पावेल, उनकी मौत की कहानी मैं तुम्हें कैसे सुनाऊँ ? बड़ी भयानक मौत थी वह।

'वालिया सबसे खतरनाक काम कर रही थी। वही पोलिश हेडक्वार्टर के वायरलेस आपरेटरों के साथ सम्पर्क बनाये थी और हमारे जिला केन्द्र के लोगों के सम्पर्क में भी थी। इसके अलावा उन्होंने जब उसके घर की तलाशी ली तो उन्हें दो बम और एक पिस्तौल भी मिला। वे बम उसे उसी खुफिया के आदमी ने दिये थे। सारी योजना इस तरह बनायी गयी थी जिससे कि उन लोगों पर यह इलजाम लगाया जा सके कि वे हेडक्वार्टर को बम से उड़ाने का इरादा रखते थे।

'पावेल, उन आखिरी दिनों के बारे में बात करने से बड़ा दर्द होता है। मगर तुम कहते हो तो मैं तुम्हें सब बतलाऊँगा। फौजी अदालत ने वालिया और दो लोगों को फाँसी की और बाकी को गोली से उड़ाने की सजा दी। उन पोलिश सिपाहियों पर, जो हमारे संग काम कर रहे थे, दो दिन पहले ही मुकदमा चलाया जा चुका था। कारपोरल स्नेगुर्को पर, जो एक नौजवान वायरलेस आपरेटर था और लड़ाई के पहले लोड्ज में बिजली का काम करता था, राजद्रोह का जुर्म लगाया गया और कहा गया कि वह सिपाहियों के

बीच कम्युनिस्ट प्रचार करता है। इस इलजाम में उसे गोली से उड़ाने की सजा सुनायी गयी। उसने अपील नहीं की और सजा सुनाये जाने के चौबीस घंटे बाद उसे गोली से उड़ा दिया गया।

'उसके मुकदमे में शहादत देने के लिए वालिया को बुलाया गया। उसने बाद में हमें बतलाया कि स्नेगुर्को ने इस बात का इकबाल कर लिया था कि उसने कम्युनिस्ट प्रचार किया है, मगर इस बात को मानने से इनकार कर दिया था कि उसने देशद्रोह किया है। उसने कहा, 'मेरी पितृभूमि पोलिश सोवियत समाजवादी प्रजातंत्र है। हाँ, मैं पोलैंड की कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य हूँ। मुझे मेरी इच्छा के खिलाफ फौज में भरती किया गया और जब मैं फौज में पहुँच ही गया तो मैंने अपनी ही तरह के उन दूसरे सिपाहियों की आँखें खोलने के लिए, जिन्हें जबरन मोर्चे पर भेजा गया था, भरसक प्रयत्न किया। आप इस जुर्म में चाहें तो मुझे फाँसी पर लटका सकते हैं, मगर यह जुर्म आप मुझ पर नहीं लगा सकते कि मैंने अपनी पितृभूमि के साथ गद्दारी की है, क्योंकि अपनी पितृभूमि के साथ न तो मैंने कभी गद्दारी की है और न कभी करूँगा। आपकी पितृभूमि मेरी पितृभूमि नहीं है। आपकी पितृभूमि रईसों और नवाबों की पितृभूमि है, मेरी पितृभूमि मजदूरों और किसानों की पितृभूमि हैं। मेरी पितृभूमि में, जो कि अस्तित्व में आयेगी — जरूर आयेगी, इसका मुझे पक्का विश्वास है — कोई मुझे इसके लिए कभी देशद्रोही नहीं कहेगा।

'मुकदमे के बाद हम सब लोगों को साथ रखा गया। मौत की सजा देने के ठीक पहले हमें जेल भेजा गया। जेल के ठीक सामने, अस्पताल के बगल में उन्होंने रात को फाँसी की टिकिटियाँ खड़ी कीं। गोली मारने के लिए उन्होंने सड़क से थोड़ी ही दूर पर जंगल में एक बड़े से गढ़े के पास जगह चुनी। हम सब लोगों के लिए एक बड़ी सी कब्र खोदी गयी।

'हमारी सजा की बात शहर भर में इश्तहार की शकल में दीवारों पर चिपका दी गयी ताकि सबको उसका पता हो जाय। पोलों ने हमको खुलेआम, पब्लिक के सामने, मौत की सजा देने का फैसला किया था ताकि शहरवाले डर जायें। बहुत सबेरे से उन्होंने शहरवालों को ठेल-ठेल कर उस जगह भेजना शुरू किया जहाँ हम मौत के घाट उतारे जानेवाले थे। बड़ी भयानक बात है, मगर यह सही है कि कुछ लोग कुतूहल के मारे भी आ गये थे। जरा ही देर में जेल की दीवार के बाहर बहुत बड़ी भीड़ जमा हो गयी थी। अपनी कोठरियों से हम आवाजों की भनभन सुन सकते थे। उन लोगों ने सड़क पर भीड़ के पीछे मशीनगनें खड़ी कर दी थीं और आस-पास के सारे इलाके से घुड़सवार और पैदल सिपाही बटोर लाये थे। उनकी एक पूरी की पूरी बटालियन सड़कों और उनके पार साग-भाजी के खेतों को घेरे हुए थी। जिन्हें फाँसी दी जाने-

वाली थी उनके लिए टिक्टी के पास ही एक गढ़ा खोद रखा था।

'हम लोग खामोशी के साथ अपनी मौत का इन्तजार कर रहे थे। बीच-बीच में दो-एक शब्द आपस में बोल लेते थे। पिछली रात ही हमने तमाम बातें कर ली थीं और एक-दूसरे से विदा भी कह ली थी। सिर्फ कोठरी के एक कोने में रोज़ा अपने-आप कुछ बुदबुदा रही थी। तमाम मारपीट और जुल्मों को सहने के बाद, वालिया अब इतनी कमजोर हो गयी थी कि हिल सकना भी उसके लिए मुमकिन नहीं था और वह ज्यादा वक्त बिना हिले-डुले निश्चेष्ट पड़ी रहती थी। शहर की ही दो कम्युनिस्ट लड़कियाँ, जो बहनें थीं, जब अन्तिम वार एक-दूसरे से गले मिलीं तो अपने आँसुओं को नहीं रोक सकीं। उन्हें रोता देखकर गाँव के एक नौजवान स्तेपानोव ने, जो अच्छा गबरू जवान था और जिसने दो सिपाहियों को, जो उसको पकड़ने आये थे, ढेर कर दिया था, उन लड़कियों को मना करते हुए कहा, 'आँसू नहीं गिरना चाहिए, साथियो! यहाँ चाहे रो लो, लेकिन बाहर नहीं। हम उन हरामजादों को गाल बजाने का मौका नहीं देना चाहते। और रहम तो हम पर किसी भी हालत में किया जायगा नहीं। मरना हमें है ही तो क्यों न शान से मरें। हम अपने घुटनों के बल घिसटेंगे नहीं। याद रखो साथियो, हमें अच्छी तरह मरना है।'

'उसके बाद वे हम लोगों को लेने आये। आगे-आगे था ज्वारकोव्स्की, उनके खुफिया विभाग का सबसे बड़ा अफसर। दूसरे को यातना पाते देखकर उसे खुशी होती थी और इस मासले में तो शायद कोई उससे आगे नहीं जा सकता था। जब वह खुद लड़कियों से बलात्कार न करता, तो अपने सिपाहियों से करवाता था और देख-देखकर खुश होता। सड़क के दोनों ओर सिपाहियों की कतारें खड़ी थीं और उनके बीच से हम लोग फाँसी के तख्ते की तरफ ले जाये गये। उन सिपाहियों की वर्दी के कंधे पर पीले रंग का झब्बा था, जिसके कारण हम लोगों ने उन्हें केनेरी[1] नाम दे रखा था। वे लोग अपनी नंगी तलवारें लिये खड़े थे।

'उन्होंने हमारी चार-चार की टोलियाँ बना दी थीं — दो आदमी आगे, दो आदमी पीछे। अपनी राइफिलों के कुन्दों से ठेल-ठेलकर वे हमें तेजी से जेल के हाते के बीच से ले चले। फिर, उन्होंने फाटक खोल दिये और सड़क पर लाकर फाँसी के तख्ते के सामने हमें खड़ा कर दिया ताकि हम अपने साथियों को मरते देखें और खुद अपनी बारी का इन्तजार करें। मोटे-मोटे शहतीरों की खूब ऊँची-सी टिक्टियाँ खड़ी थीं। मोटी रस्सी के फंदे उनमें लटक रहे थे और हर फन्दे के नीचे सीढ़ियों समेत एक तख्ता था जिसे ठोकर मारकर अलग किया जा सकता था। आदमियों का वह समुन्दर, जो मचलता और लहरें लेता

---

१. पीले रंग के परोंवाली एक चिड़िया।

खड़ा था, उसमें से हल्की मरमर ध्वनि की एक तरंग उठी। सब लोगों की आँखें हमारे ऊपर जमी हुई थीं। हमने उस भीड़ में से अपने कुछ लोगों को देखा और उन्हें पहचान गये।

'थोड़ी दूर पर कुछ पोलिश रईस और अफसर अपनी दूरबीन लिये खड़े थे। वे बोल्शेविकों को फाँसी लगते देखने आये थे।

'हमारे पैरों के नीचे मुलायम बरफ थी। बरफ के ही कारण जंगल सफेद हो रहा था, पेड़ों पर रुई के गालों की तरफ बरफ की मोटी-मोटी परतें जमी हुई थीं। बरफ धीरे-धीरे गिर रही थी और हमारे जलते हुए चेहरों पर आकर पिघल जाती थी। फाँसी के तख्ते की सीढ़ियों पर भी बरफ की कालीन बिछी हुई थी। हम लोग बहुत थोड़े कपड़े पहने हुए थे, मगर किसी को सर्दी नहीं मालूम हो रही थी। स्तेपानोव को इस बात का भी ध्यान नहीं आया कि वह अपने मोजे पहने-पहने चल रहा था।

'टिक्टियों के पास फौज का सरकारी वकील और बड़े-बड़े अफसर खड़े थे। आखिरकार वालिया तथा दो और साथी जिन्हें फाँसी दी जानेवाली थी, जेल से बाहर लाये गये। वे तीनों बाँह में बाँह डाले चल रहे थे, बीच में वालिया थी जिसे बाकी दोनों सहारा दिये हुए थे, क्योंकि खुद चलने की ताकत उसमें नहीं रह गयी थी। मगर वह अच्छी तरह तनकर चलने की पूरी कोशिश कर रही थी। उसे स्तेपानोव के ये शब्द याद थे : 'हमें अच्छी तरह मरना है, साथियो !' वह एक ऊनी जाकट पहने थी, मगर उस पर कोट नहीं था।

'ज्वारकोव्स्की को स्पष्ट ही यह बात अच्छी नहीं लग रही थी कि वे लोग एक दूसरे की बाँह में बाँह डालकर चलें और वह उन्हें पीछे से धक्का दे रहा था। वालिया ने कुछ कहा और उसके मुँह से बात निकलते ही एक घुड़सवार सिपाही ने जोर से उसके मुँह पर अपनी चाबुक मारी। भीड़ की एक औरत के मुँह से भयानक चीख निकली और वह घेरे को तोड़कर कैदियों के पास पहुँचने के लिए पागलों की तरह जोर लगाने लगी। मगर उसे पकड़ लिया गया और घसीटकर पीछे कर दिया गया। जरूर वह वालिया की माँ रही होगी। फाँसी के तख्ते के पास पहुँचकर वालिया ने गाना शुरू किया। मैंने कभी ऐसी आवाज नहीं सुनी थी — जो आदमी मौत से गले मिलने जा रहा हो, वही इतनी मार्मिक अनुभूति से गा सकता है। वह वार्जावियान्का का गाना गा रही थी और बाकी दो ने भी उसके साथ गाना शुरू कर दिया। घुड़सवार सन्तरियों ने गुस्से से अंधे होकर उन पर चाबुक चलानी शुरू की, मगर उन तीनों को चोट का कोई एहसास नहीं होता था। मारते-मारते उन्हें वहीं ढेर कर दिया गया और फिर बोरों की तरह घसीटकर टिक्टी तक पहुँचाया गया। जल्दी-जल्दी उन्हें सजा सुनायी गयी और फाँसी का फन्दा उनके गले में डाल दिया गया। उसी

वक्त हम लोगों ने गाना शुरू किया :

उठो — जागो भूखे बन्दी ... !

'सब ओर से सन्तरी हमारे ऊपर लपके और मुझे सिर्फ इतना मौका मिला कि मैं राइफिल के कुन्दों से फाँसी के तख्ते को हटाये जाते और उन तीनों को फाँसी के फन्दे में झटका खाते देखूँ ...

'हम में से बाकी लोग दीवार के सहारे खड़े कर दिये गये थे, गोली खाने के लिए, जब कि यह मालूम हुआ कि हममें से दस लोगों की मौत की सजा घटाकर बीस साल कैद की सजा कर दी गयी थी। बाकी सोलह को गोली मार दी गयी।'

सैमुअल अपनी कमीज के कॉलर को बार-बार खींच रहा था जैसे उसका गला घुटा जा रहा हो।

'तीन दिन तक लाशें अपने फन्दों में फँसी झूलती रहीं। दिन-रात टिक्टी पर पहरा रहता था। उसके बाद कैदियों का एक नया जत्था जेल लाया गया और उन्होंने हमें बतलाया कि जिस फन्दे में कामरेड तोबोल्दिन को, जो उन तीनों में सबसे भारी थे, लटकाया गया था, उसकी रस्सी टूट गयी। तब उन्होंने बाकी दो को भी उतारा और तीनों को दफन कर दिया।

'मगर टिक्टियाँ ज्यों-की-त्यों खड़ी रहने दी गयीं। हम लोग जब इस जगह लाये गये तब भी वे खड़ी थीं। वे खड़ी हैं और उनके फन्दे अपने ताजे शिकारों का इन्तजार कर रहे हैं।'

सैमुअल चुप हो गया और आगे की ओर घूरता बैठा रहा, गो उसकी आँखें कुछ देख नहीं रही थीं। पावेल को इस बात का पता न चला कि कहानी खत्म हो गयी है। उसकी आँखों के सामने वे ही तीनों शरीर झूल रहे थे जिनका सिर एक ओर को लटक गया था।

जब सिपाहियों को बाहर जमा करने के लिए बिगुल बजा, तभी यकायक पावेल होश में आया।

उसने बहुत धीमे से कहा, 'आओ चलें सैमुअल।'

सड़क पर दोनों ओर घुड़सवार खड़े थे और उनके बीच से पोलिश कैदी ले जाये जा रहे थे। जेल के फाटक पर खड़ा रेजीमेंटल कमिसार अपने पैड पर कोई आदेश लिख रहा था।

कागज के उस टुकड़े को एक लम्बे-तगड़े, दस्ते के कमांडर को पकड़ाते हुए उसने कहा, 'कामरेड एन्तिपोव, यह लो और इन तमाम कैदियों को घुड़सवारों के पहरे में नोवगोरोद-वोलिन्स्की ले जाओ। जो घायल हैं, उनकी मरहम-पट्टी और डाक्टरी जाँच करवाने का खयाल रखना। फिर उनको

गाड़ियों में डालकर शहर से पन्द्रह मील ले जाकर छोड़ देना। उनके साथ माथापच्ची करने का हमारे पास वक्त नहीं है। मगर हाँ, एक बात का खयाल रखना कि कैदियों के साथ कोई बदसलूकी न हो।'

अपने घोड़े पर सवार होते हुए पावेल सैमुअल की ओर मुड़ा और बोला, 'सुनते हो ? वे तो हमारे आदमियों को फाँसी पर लटकायें और हम उन्हें हिफाजत से साथ ले जाकर खुद उनके आदमियों के बीच पहुँचा दें। और इतना ही नहीं — उनके संग सलूक भी अच्छा करें ! कैसे हो सकता है हमसे यह ?'

रेजीमेंटल कमांडर मुड़ा और बोलनेवाले की तरफ कठोर आँखों से देखते हुए बोला, 'निहत्थे कैदियों के साथ क्रूरता का बर्ताव करनेवाले को मौत की सजा दी जायेगी। हम लोग क्रान्ति-विरोधी ह्वाइट लोग नहीं हैं !'

वहाँ से जब पावेल चला तो उसे क्रान्तिकारी फौजी काउंसिल के हुक्मनामे के आखिरी शब्द याद आये जिन्हें रेजीमेंट को पढ़कर सुनाया गया था :

'मजदूरों और किसानों का देश अपनी लाल सेना को प्यार करता है। उसके ऊपर देश को गर्व है। और उस सेना के फरहरे पर एक भी धब्बा न रहे, यह हमारा व्रत है।'

पावेल के होठों ने दुहराया, 'एक भी धब्बा नहीं।'

जिस वक्त चौथी घुड़सवार डिवीजन ने ज़िटोमीर पर कब्जा किया, सातवीं, राइफिल डिवीजन की बीसवीं ब्रिग्रेड, जो कामरेड गोलिकोव की सेना का ही अंग थी, ओकूनिनोवो गाँव के इलाके में नीपर नदी पार कर रही थी।

कामरेड गोलिकोव की फौज में २५वीं राइफिल डिवीजन और एक बाश्कीर घुड़सवार ब्रिगेड थी। उसको आदेश था कि नीपर नदी पार करे और इरशा स्टेशन पर कीव-कोरोस्तेन रेलवे को अपनी ज़द में ले ले। इस कार्रवाई से कीव से पीछे हटने का पोलों का आखिरी रास्ता भी कट जायगा।

इस नदी को पार करने के समय शेपेतोवका के कोमसोमोल संगठन का सदस्य मिशा लेन्चुकोव मारा गया। वे लोग उस हिलते-डुलते पीपे के पुल पर भागे जा रहे थे कि इधर से ऊँचे कगार पर से एक गोला छूटा और आकर इन लोगों के पास पानी में गिरा और पानी के चिथड़े-चिथड़े कर दिये। उसी वक्त मिशा कहीं किसी पीपे के नीचे चला गया और गायब हो गया। नदी उसको निगल गयी और फिर उसने उसको लौटाया नहीं। याकिमेंको ने, जिसके बाल सुनहले और टोपी टूटी हुई थी, चिल्लाकर कहा : 'मिश्का ! अरे यह तो मिश्का था ! बेचारा ऐसे डूबा जैसे पत्थर डूब जाय !' क्षण भर वह सिपाही

डरी और घबरायी हुई आँखों से उस स्याह पानी को देखता रहा, मगर उसके पीछे आते हुए आदमियों ने उसे आगे को धक्का देते हुए कहा, 'क्या मुँह बाये खड़े हो, तुम्हारी मत मारी गयी है क्या ! भागो-भागो, दौड़ो !' किसी के लिए शोक मनाने या चिन्ता करने का वक्त नहीं था। यह ब्रिगेड उन दूसरी ब्रिगेडों से पीछे रह गयी थी जिन्होंने अब तक नदी के दाहिने किनारे पर कब्जा कर लिया था।

चार रोज बाद ही कहीं सर्गेई को मिशा की मृत्यु का पता चला। तब तक ब्रिगेड ने बुचा स्टेशन पर कब्जा कर लिया था और घूमकर कीव का सामना करती हुई खड़ी हो गयी थी ताकि वह पोलों के जबर्दस्त हमले का मुकाबला कर सके। पोल फौजें घेरे को तोड़कर कोरोस्तेन पहुँचने की कोशिश कर रही थीं।

गोली चलानेवालों की कतार में याकिमेंको सर्गेई के बगल में आकर पड़ गया। वह काफी देर से गोली चला रहा था जिससे उसकी राइफिल बहुत गरम हो गयी थी और उसे बोल्ट चढ़ाने में कठिनाई महसूस हो रही थी। दुश्मन की मार से बचने के लिए अपने सिर को सावधानी से झुकाये-झुकाये वह सर्गेई की तरफ मुड़ा और बोला, 'इसको थोड़ा सुस्ताने का मौका देना होगा। एकदम अंगारा हो रही है।'

गोली-गोले छूटने के उस शोर में सर्गेई ने शायद ही उसकी बात सुनी।

जब शोर कुछ थमा तो याकिमेंको ने बात-बात में कहा, 'तुम्हारा साथी नीपर में डूब गया। इसके पहले कि मैं कुछ कर सकूँ — वह आँख से ओझल हो चुका था।' बस इतनी ही बात उसने कही। फिर उसने अपनी राइफिल का बोल्ट चढ़ाने की कोशिश की, और देखा कि हाँ, अब वैसा करना मुमकिन है, कारतूसों की नयी पेटी निकाली और अपनी राइफिल में उसे डालने लगा।

बर्डीचेव लेने के लिए जो ग्यारहवीं डिवीजन भेजी गयी थीं, उसे पोलों के जबर्दस्त मुकाबले का सामना करना पड़ा। शहर की सड़कों पर बहुत खूनी लड़ाई लड़ी गयी। मशीनगन के गोलों की बौछार में बोल्शेविकों की घुड़सवार फौज आगे बढ़ी। शहर पर कब्जा कर लिया गया और हारी हुई पोलिश फौजों के बाकी लोग भाग गये। मगर पोलिश फौजों के लिए सबसे आफत की बात यह हुई कि उनके गोले-बारूद के एक बड़े से गोदाम में, जिससे सारे मोर्चे को सामान पहुँचता था, विस्फोट हो गया। लाखों गोले धड़ाके के साथ हवा में उड़े। उस धड़ाके से खिड़कियों के शीशे चूर-चूर हो गये और मकान ऐसे हिलने लगे जैसे वे दफ़्ती के बने हों।

ज़िटोमीर और बर्डीचेव पर कब्जा हो जाने से लाल फौजें पोलिश फौजों की पाँतों के पीछे जा पहुँचीं और पोलिश फौजों को मजबूर होकर उस लोहे

के घेरे में से बाहर निकलने के लिए कीव से दो धाराओं में निकलकर अपनी जान की बाजी लगाकर लड़ना पड़ा।

लड़ाई के तूफानी भँवर में बहते हुए पावेल को इस बात का एहसास ही न रहा कि दिन कैसे आता है और कैसे बीत जाता है। उसका व्यक्तित्व समूह में खो गया और दूसरे सिपाहियों की ही तरह उसके लिए भी 'मैं' शब्द बाकी नहीं बचा। उनके लिए बस एक शब्द था, 'हम,' हमारी रेजीमेंट, हमारा दस्ता, हमारी ब्रिगेड।

घटनाएँ तूफानी वेग से घटित हो रही थीं। हर रोज कोई न कोई नयी बात हुआ करती थी।

बुद्यौनी की घुड़सवार फौज बरफ की चट्टान की तरह आगे बढ़ रही थी और हमलों पर हमले करती जा रही थी, यहाँ तक कि पोलिश फौजों की पिछली पाँतें तहस-नहस हो गयी थीं। अपनी विजयों के उल्लास में चूर ये घुड़सवार डिवीजनें बेइन्तहा जोश और गुस्से से नोवोग्राद-वोलिन्स्की पर टूटीं। पोलिश फौजों के पिछाये में यही सबसे अहम जगह थी। जिस तरह समुन्दर की लहरें चट्टानी साहिल से आकर टकराती हैं, पीछे हटती हैं और फिर आकर टकराती हैं, उसी तरह यह फौजें आगे बढ़ती थीं, पोलिश फौजों से टकराती थीं और लौटकर फिर दूने वेग से आगे बढ़ती थीं। उनके लबों पर बस यही एक आवाज थी : 'आगे बढ़ो, आगे बढ़ो !'

पोलों को कोई भी शक्ति बचा न सकी — न तो उनके कंटीले तारों के घेरे और न शहर में तैनात उनकी फौज का जान पर खेलकर मुकाबला करना। २७ जून को सबेरे बुद्यौनी की घुड़सवार फौज ने बिना घोड़ों से उतरे स्लुच नदी को पार किया और नोवोग्राद-वोलिन्स्की में दाखिल हुई और पोलों को मारकर शहर के बाहर कोरेत्स की तरफ भगा दिया। उसी वक्त पैंतालीसवीं डिवीजन ने नोवी मिरोपोल में स्लुच को पार किया और कोतोव्स्की की घुड़-सवार ब्रिगेड ल्युबार की बस्ती पर टूटी।

पहली घुड़सवार फौज के रेडियो स्टेशन को मोर्चे के प्रधान सेनापति का आदेश मिला कि अपनी सारी घुड़सवार शक्ति को रोवनो पर कब्जा करने के लिए जमा करो। लाल डिवीजनों के जबर्दस्त हमलों के आगे पोलिश फौजें टिक न सकीं और हिम्मत हारकर, आतंकित होकर छोटी-छोटी टोलियों में इधर-उधर बिखर गयीं।

इन्हीं तूफानी दिनों में पावेल कोर्चागिन की एक ऐसी मुलाकात हुई जिसकी उसे कोई आशा न थी। ब्रिगेड के कमांडर ने उसे स्टेशन भेजा था जहाँ एक बख्तरबन्द गाड़ी खड़ी हुई थी। दुलकी चाल से घोड़े को दौड़ाते हुए पावेल ने रेल के ढलुआ बाँध को पार किया और इस्पात के रंग की भूरी गाड़ी के पास

जाकर घोड़े की लगाम खींची और खड़ा हो गया। बख्तरबन्द गाड़ी के दोनों ओर तोपों के काले-काले थूथन निकले हुए थे जिनके कारण गाड़ी बड़ी भयानक दीख रही थी। तेल के धब्बे लगे कपड़े पहने कई लोग उसके बगल में खड़े उसके पहियों पर भारी लोहे का बख्तर खड़ा करने का काम कर रहे थे।

पावेल ने चमड़े की जाकेट पहने हुए एक लाल सैनिक से, जो पानी की बाल्टी लेकर जा रहा था, पूछा, 'इस गाड़ी के कमांडर कहाँ हैं ?'

उस आदमी ने इंजन की तरफ इशारा करते हुए कहा, 'वहाँ।'

पावेल अपने घोड़े पर सवार इंजन तक गया और वहाँ पहुँचकर बोला, 'मैं कमांडर से मिलना चाहता हूँ।' एक चेचकरू आदमी, जो सिर से पैर तक चमड़े के कपड़े पहने हुए था, उसकी तरफ मुड़ा और बोला, 'मैं ही कमांडर हूँ।'

पावेल ने अपनी जेब से एक लिफाफा निकाला।

'यह लीजिए, यह ब्रिगेड कमांडर का हुक्मनामा है। लिफाफे पर दस्तखत कर दीजिए।'

कमांडर ने लिफाफे को अपने घुटने पर रखा और अपने दस्तखत घसीट दिये। उधर रेलवे लाइन पर एक आदमी तेल की कुप्पी लिये इंजन के बिचले पहिये पर काम कर रहा था। पावेल को सिर्फ उसकी चौड़ी पीठ और उसकी कपड़े की पतलून की जेब से बाहर को निकला हुआ पिस्तौल का हत्था दिखायी दे रहा था।

दल के कमांडर ने लिफाफा पावेल को वापस दे दिया और पावेल अपने घोड़े की रास हाथ में लेकर चलने ही वाला था कि तेल की कुप्पीवाला आदमी उठकर सीधा खड़ा हुआ और पावेल की ओर मुड़ा। दूसरे ही क्षण पावेल घोड़े से कूद पड़ा, जैसे हवा के तेज झोंके ने उसे नीचे पटक दिया हो।

'आर्तेम !'

उस आदमी के हाथ से तेल की कुप्पी छूट पड़ी और उसने इस नौ-उम्र लाल सिपाही को अपनी बाँहों में इस तरह भर लिया जैसे कोई बड़ा-सा भालू किसी को अपनी बाँहों में भर ले।

'पावका ! बदमाश ! तू है !' आर्तेम चिल्लाया, जैसे उसे अपनी आँखों पर यकीन ही न आ रहा हो।

बख्तरबन्द गाड़ी के कमांडर और कई तोपची वहीं पास ही खड़े उनको देख रहे थे और खूब प्रसन्न होकर मुस्करा रहे थे।

'जरा सोचो ! दो भाइयों की ऐसी अचानक मुलाकात ! क्या खूब !' वे कह रहे थे।

यह घटना लवोव के इलाके में हुई एक लड़ाई के दौरान १९ अगस्त को घटी। लड़ाई के वक्त पावेल की टोपी गायब हो गयी और उसने अपने घोड़े की रास खींची। अगले दस्ते पोलिश फौजों को काटते हुए उनकी पाँतों में धँस चुके थे। उसी वक्त नदी की ओर जाने के अपने रास्ते में झाड़ियों के बीच से घोड़े को सरपट दौड़ाता हुआ देमीदोव आया। पावेल के बगल से हवा की तेजी से गुजरते हुए उसने चिल्लाकर कहा :

'डिवीजन कमांडर मारे गये !'

पावेल चौंक पड़ा। लेतुनोव, उसका बहादुर कमांडर, वह अनोखा वीर मारा गया ! पावेल गुस्से से पागल हो उठा।

अपनी तलवार की उल्टी तरफ से उसने अपने थके हुए घोड़े की गर्दन को कोंचा। घोड़े के मुँह की लगाम से खून मिली झाग गिर रही थी। पावेल ने उसको एड़ लगायी और सबको चीरता हुआ उस जगह जा पहुँचा जहाँ लड़ाई सबसे गर्म थी।

'मार डालो इन घिनौने कीड़ों को, मार डालो ! इन पोलिश नवाबों को काटकर रख दो ! इन्होंने लेतुनोव को मार डाला है !' चिल्लाते हुए उसने हरी वर्दी पहने एक आदमी पर जोर से तलवार का वार किया। अपने डिवीजन कमांडर की मौत से गुस्से में आकर उन घुड़सवारों ने पोलिश सिपाहियों की एक पूरी प्लैटून का सफाया कर दिया।

दुश्मन का पीछा करते हुए वे लड़ाई के मैदान पर सरपट आगे भागे जा रहे थे, तभी एक पोलिश तोप आग उगलने लगी। उसके गोलों ने हवा को चीर दिया और चारों तरफ मौत की बरसात होने लगी।

एकाएक पावेल की आँखों के आगे कोई हरी सी चीज इतने जोर से चमकी कि उसने पावेल को अंधा कर दिया; उसके कानों में बिजली की कड़क का सा शोर हुआ और लाल-लाल लोहा उसकी खोपड़ी को चीरता हुआ अन्दर चला गया। धरती एक अजीब और भयानक तरीके से घूमने लगी और फिर उसे ऐसा लगा जैसे वह धीरे-धीरे नीचे से ऊपर हुई जा रही हो।

फूस के एक तिनके की तरह पावेल घोड़े की पीठ पर से नीचे आ गिरा। गोले की मार से वह घोड़े के सिर के ऊपर से धरती पर बोरे की तरह भद्द से गिर पड़ा।

तभी काली रात घिर आयी।

नौ

केकड़े की आगे को निकली हुई बिल्ली के सिर के बराबर एक आँख है। यह चिकनी, लाल-लाल सी आँख बीच में हरी है और उसमें मद्धिम प्रकाश दमक रहा है। केकड़ा छोटी-छोटी टाँगों का एक घिनौना ढेर है। उसकी टाँगें एक-दूसरे में उलझी हुई साँपों की तरह ऐंठती और बल खाती हैं और उस वक्त उनकी रूखी खाल से बड़ी डरावनी सरसराहट होती है। केकड़ा हिलता है। वह उसे अपनी आँखों के ठीक बगल में पाता है। और अब वह उसकी टाँगों को अपने शरीर पर रेंगता हुआ महसूस करता है। ये टाँगें ठंडी हैं और काँटों की तरह उसके शरीर में चुभती हैं। केकड़ा डंक मारता है और जोंक की तरह उसके सिर के भीतर धँसता है। ऐंठन और मरोड़ के साथ आगे बढ़ते हुए वह उसके खून को चूसने लगता है। उसे लगता है कि उसके शरीर का खून निकल-निकलकर केकड़े के फूलते हुए शरीर में पहुँचता जा रहा है। केकड़ा उसका खून पीता रहता है। उसकी पीड़ा असह्य है।

कहीं दूर, बहुत दूर से उसे आदमियों की आवाजें सुनायी देती हैं :

'अब इसकी नाड़ी कैसी है ?'

और एक दूसरी आवाज, किसी औरत की आवाज, धीमे से जवाब देती है :

'इसकी नाड़ी की गति इस समय १३८ है। टेम्परेचर १०३.१ है। पूरे वक्त इसकी सरसाम की हालत है।'

केकड़ा गायब हो गया, मगर दर्द जारी है। पावेल ने महसूस किया कि किसी ने उसकी कलाई छुई। उसने आँखें खोलने की कोशिश की। मगर पलकें इतनी भारी थीं कि उनको उठाने की ताकत उसमें नहीं थी। इतनी गरमी क्यों लग रही है ? जरूर माँ ने अँगीठी जलायी है। और फिर उसे वे आवाजें सुनायी देती हैं :

'अब इसकी नाड़ी की गति १२२ है।

वह पलकें खोलने की कोशिश करता है। मगर उसके अन्दर एक आग सी जल रही है। उसका दम घुट रहा है।

उसे सख्त प्यास लगी है। उसे फौरन उठकर पानी पीना होगा। मगर वह उठता क्यों नहीं ? वह उठने की कोशिश करता है, मगर उसके हाथ-पैर हिलने से इनकार कर देते हैं। उसका अपना शरीर उसके लिए अजनबी हो

गया है। माँ इसी वक्त उसके लिए पानी लायेगी। वह उससे कहेगा, 'मैं पानी पीना चाहता हूँ।' कोई चीज उसके बगल में हिलती है। कहीं यह वही केकड़ा तो नहीं जो फिर से उस पर रेंगने की तैयारी कर रहा हो? वह देखो ... वह आ रहा है! उसे उसकी लाल-लाल आँखें दिखायी देती हैं....

दूर से नर्म मद्धिम आवाज आती है।

'फ्रोसिया, थोड़ा पानी लाओ!'

'यह किसका नाम है?' मगर यह याद करने की शक्ति उसके अन्दर नहीं रह गयी है और अँधेरा एक बार फिर उसे अपनी चादर में ढाँक लेता है। फिर तत्काल अँधेरे से बाहर निकलने पर उसे याद आता है, 'मैं प्यासा हूँ!'

और आवाजें कहती सुनायी देती हैं:

'लगता है इसे होश आ रहा है।'

वह कोमल प्यारी आवाज उसे अब अपने पास और स्पष्ट सुनायी देती है:

'तुम पानी पीना चाहते हो, कामरेड?'

'क्या मुझसे यह बात कह रही है? क्या मैं बीमार हूँ? अरे हाँ, मुझे टाइफस है। वही तो बात है।' और वह तीसरी बार अपनी पलकों को उठाने की कोशिश करता है। आखिरकार उसे सफलता मिलती है। अपनी जरा सी खुली हुई आँखों के संकीर्ण दृष्टिपथ से जो पहली चीज उसकी चेतना में पहुँचती है, वह उसके सिर पर टँगी हुई एक लाल-लाल गेंद है। मगर उस लाल गेंद को एक काली चीज पोंछकर अलग कर देती है — वह काली चीज जो उसके ऊपर झुकी हुई है। और उसके ओंठ गिलास के कठोर स्पर्श को और पानी की तरी को, उस प्राणदायिनी तरी को, महसूस करते हैं। उसके अन्दर की आग ठंडी हो जाती है। सन्तुष्ट होकर वह धीरे से बुदबुदाता है, 'अब कुछ अच्छा है।'

'तुम मुझे देख सकते हो, कामरेड?'

यह उसके पास खड़ी हुई आकृति है जो बोली है और बेहोशी की धुंध में डूबने के पहले वह किसी तरह इतना कह पाता है, 'मैं देख नहीं सकता, सुन सकता हूँ ...'

'भला बताओ, कौन सोच सकता था कि यह बच जायगा? मगर देखो कैसे इसकी जिन्दगी लौटी आ रही है! बड़ी मजबूत काठी का आदमी है! नीना व्लादीमिरोवना, यह तुम्हारे लिए गर्व की बात है। सचमुच तुमने इसकी जान बचा ली है।'

और उस औरत की आवाज, कुछ-कुछ काँपती हुई जवाब देती है:

'कितनी खुश हूँ मैं आज!'

तेरह दिन की बेहोशी के बाद पावेल कोर्चागिन को होश आया। उसका

नौजवान शरीर मरना नहीं चाहता था और धीरे-धीरे उसकी ताकत लौट आयी। यह पुनर्जन्म से कम न था, जैसे वह दुबारा पैदा हुआ हो। हर चीज नयी और विलक्षण जान पड़ती थी। सिर्फ उसका सिर निश्चेष्ट और प्लास्टर में बंधे होने के कारण, असह्य रूप से भारी हो रहा था। उसको हिलाने की ताकत उसके अन्दर नहीं थी। मगर बाकी शरीर में चेतना लौट आयी और जल्दी ही वह अपनी उँगलियों को मोड़ने के योग्य हो गया।

फौजी अस्पताल की छोटी डॉक्टर नीना व्लादीमिरोवना अपने कमरे में एक छोटी मेज के सामने बैठी हुई थी और अपनी मोटी, हल्के गुलाबी और पीले रंग की नोटबुक के पन्ने उलट रही थी। उसमें साफ-सुथरी तिरछी लिखावट में यह लिखा हुआ था :

२६ अगस्त, १९२०

आज ऐम्बुलेंस की गाड़ी कुछ संगीन केस लायी। उनमें से एक के सिर में बहुत बुरी चोट है। हमने उने खिड़की के पास कोने में लिटा दिया। अभी वह केवल सत्रह साल का है।

१९ अगस्त को उसको गोले के छर्रे लगे थे। तबसे वह बराबर बेहोश है। कल अनातोली स्तेपानोविच उसको देखेंगे।

२७ अगस्त

आज हमने कोर्चागिन के जख्म की जाँच की। जख्म बहुत गहरा है, सिर की हड्डी टूट गयी है और सिर के पूरे दाहिने हिस्से को लकवा मार गया है। दाहिनी आँख की एक रग फट गयी है जिसके कारण आँख बुरी तरह सूजी हुई है।

अनातोली स्तेपानोविच आँख निकाल देना चाहते थे ताकि सूजन और न बढ़े। मगर मैंने उन्हें ऐसा करने से रोका, क्योंकि अब भी उम्मीद है कि सूजन कम हो जायगी। ऐसा करने में मुझे बस लड़के के चेहरे के बिगड़ने का खयाल था। लड़का ठीक हो सकता है, मगर बड़े दुख की बात होगी अगर उसका चेहरा बिगड़ गया।

३० अगस्त

कोर्चागिन अब भी बेहोश है। अब उसे उस वार्ड में भेज दिया गया है जहाँ ऐसे लोग रखे जाते हैं जिनके बचने की उम्मीद नहीं होती। नर्स फ्रोसिया प्रायः पूरे वक्त उसके पास रहती है। लगता है कि वह उसे जानती है। कभी

दोनों ने साथ-साथ काम किया था। उसके साथ वह कितनी नरमी से पेश आती है। अब मुझे भी ऐसा लगने लगा है कि उसके बचने की उम्मीद नहीं है।

२ सितम्बर, ११ बजे रात

आज मेरे लिए यह बेहद खुशी का दिन था। मेरे मरीज कोर्चागिन को होश आ गया। खतरा टल गया है। पिछले दो रोज से मैं घर गयी ही नहीं, अस्पताल में ही रही।

१० सितम्बर

आज मैंने कोर्चागिन का पहला खत उसके घरवालों के लिए लिखा। उसने लिखवाया है कि उसका जख्म संगीन नहीं है और वह जल्द ही ठीक हो जायेगा और घर आयेगा। उसके शरीर का बहुत सा खून निकल गया है और वह प्रेत की तरह पीला हो गया है और अब भी बहुत कमजोर है।

१४ सितम्बर

आज पहली बार कोर्चागिन मुस्कराया। उसकी मुस्कराहट बड़ी प्यारी है। अक्सर वह अपनी उम्र से कहीं ज्यादा गंभीर बना रहता है। उसके स्वास्थ्य में आश्चर्यजनक तेजी से सुधार हो रहा। कल उसने पूछा :

'डाक्टर, तुम्हारी बाँहों पर ये काले-काले निशान किस चीज के हैं ?'

मैंने उसे यह नहीं बतलाया कि सरसाम की हालत में जब वह कसकर मेरी बाँहों को पकड़े हुए था, तो उसकी उँगलियों से ही वह जगह छिल गयी थी, और ये निशान बन गये थे।

१७ सितम्बर

कोर्चागिन के माथे का घाव बहुत अच्छी तरह भर रहा है। जिस अनोखी हिम्मत से यह लड़का घाव की मरहम-पट्टी, धोने-धाने वगैरह की तकलीफ को बर्दाश्त करता है, उसको देखकर हम सभी डाक्टर हैरान हैं।

जब उसके जख्म को खोलकर उसमें आइडिन लगायी जाती है, तो वह अपने पर इस कदर जब्त रखता है जैसे वायलिन के तार को खूब कस दिया गया हो। अक्सर वह बेहोश हो जाता है, मगर एक बार भी उसके मुँह से कराह निकलती नहीं सुनायी दी।

अब हम इस बात को जान गये हैं कि जब कोर्चागिन कराहता है तो इसका मतलब यह है कि वह होश में नहीं है। ताज्जुब है, उसमें इतनी ताकत, इतनी सहन-शक्ति, आती कहाँ से है ?

२१ सितम्बर

आज पहली बार हम लोग कोर्चागिन को उस बड़े वाले बारजे पर ले गये थे। उसका चेहरा कैसा चमक उठा जब उसने बागीचे को देखा! कैसे भूखे की तरह वह ताजी हवा को जल्दी-जल्दी अपने फेफड़ों में भरने की कोशिश कर रहा था! उसका तमाम सिर पट्टियों से ढँका हुआ है। सिर्फ एक आँख खुली है। और वह जानदार चमकती हुई आँख दुनिया को ऐसे देख रही थी जैसे पहली बार उसे देख रही हो।

२६ सितम्बर

आज दो युवतियाँ कोर्चागिन को पूछती हुई अस्पताल आयीं। मैं उनसे बातें करने के लिए नीचे वेटिंग रूम में गयी। उनमें से एक बहुत खूबसूरत थी। उन्होंने तोनिया तुमानोवा और तातियाना बुरानोव्स्काया के नाम से अपना परिचय दिया। मैंने तोनिया का नाम सुना था। सरसाम की हालत में कोर्चागिन ने तोनिया का नाम लिया था। मैंने उनको कोर्चागिन से मिलने की इजाजत दे दी।

८ अक्टूबर

कोर्चागिन अब अकेले बागीचे में टहलता है। वह अक्सर मुझसे पूछता रहता है कि अस्पताल से उसे कब छुट्टी मिलेगी। मैं उसको बतलाती हूँ — जल्दी ही। वे दोनों लड़कियाँ हर मुलाकात के दिन उसको देखने आती हैं। अब मुझे मालूम हो गया कि वह क्यों कभी नहीं कराहता। मैंने उससे पूछा तो उसने जवाब दिया। 'द गैड-फ्लाई पढ़ो, सारी बात मालूम हो जायगी।'

१४ अक्टूबर

आज कोर्चागिन को अस्पताल से छुट्टी दे दी गयी। उसने बड़े स्नेही और आत्मीय व्यक्ति की तरह मुझसे विदा ली। उसकी आँख पर से पट्टी अलग कर दी गयी है और अब सिर्फ उसका सिर बंधा हुआ है। उस आँख में रोशनी नहीं है, मगर देखने में उसमें कोई गड़बड़ी नजर नहीं आती। ऐसे प्यारे नौजवान साथी से विदा होते समय बहुत दुख हुआ। मगर यही तो हमेशा होता है — ठीक होते ही वे लोग हमें छोड़कर चल देते हैं और फिर शायद ही कभी मुलाकात होती है।

जाते-जाते वह बोला : 'कितने दुख की बात है कि चोट बाँयीं आँख में नहीं लगी। अब मैं गोली कैसे चलाऊँगा?'

वह अब भी मोर्चे के बारे में सोचता रहता है।

अस्पताल से निकलने पर पावेल कुछ रोज बुरानोव्स्की के यहाँ रहा जहाँ तोनिया ठहरी हुई थी।

पावेल ने फौरन तोनिया को कोमसोमोल के काम-काज में खींचने की कोशिश की। इसकी शुरुआत उसने तोनिया को शहर के कोमसोमोल की एक मीटिंग में आने के लिए दावत देकर की। तोनिया राजी हो गयी। मगर जब वह उस कमरे से निकली जहाँ वह मीटिंग के लिए कपड़े पहन रही थी और श्रृंगार कर रही थी, तो पावेल ने उसे देखकर मारे क्षोभ के अपने ओंठ काट लिये। वह बहुत ही ठाट के कपड़े पहने हुए थी और उन कपड़ों की अपनी एक खास शान थी जो पावेल को कोमसोमोल की मीटिंग के लिए, वहाँ पर इकट्ठा हुए लोगों के खयाल से, बिलकुल नामुनासिब मालूम हुई।

यही उनके पहले झगड़े का कारण था। जब उसने तोनिया से पूछा कि उसने इस तरह के कपड़े क्यों पहने, तो तोनिया को बुरा लगा।

'मेरी समझ में नहीं आता कि मैं भी दूसरों ही की तरह क्यों लगूँ। लेकिन अगर मेरे कपड़े तुम्हें नहीं भाते तो मैं नहीं जाऊँगी।'

क्लब में उन फटे-पुराने ट्यूनिकों और मैले-कुचैले ब्लाउजों के बीच तोनिया के अच्छे-अच्छे कपड़े इतने भिन्न दिखायी दे रहे थे कि पावेल को बड़ी उलझन मालूम हुई। वे नौजवान अपने बीच तोनिया को गैर समझ रहे थे। और तोनिया ने उन लोगों की असहमति देखकर ऐसा रुख अख्तियार कर लिया जैसे उसे किसी की परवाह ही न हो और ये सारे लोग उससे हीन हों।

जहाज पर माल लादने के घाटों का जो कोमसोमोल संगठन था, उसके मंत्री पांक्रातोव ने, जो मोटे मारकीन की कमीज पहने हुए चौड़े कंधों का एक जहाजी था, पावेल को अलग ले जाकर, आँख से तोनिया की ओर इशारा करके, नाराजगी के स्वर में कहा :

'इस गुड़िया को तुम्हीं यहाँ लाये हो ?'

'हाँ,' पावेल ने छोटा-सा रूखा जवाब दिया।

पांक्रातोव ने कहा, 'हूँ...उसे देखकर तो ऐसा नहीं लगता कि वह कभी भी यहाँ खप सकती है। उसके रंग-ढंग तो बहुत पैसेवालों जैसे हैं। वह यहाँ आयी कैसे ?'

पावेल की कनपटियाँ फड़कने लगीं।

'वह मेरी दोस्त है। मैं उसे यहाँ लाया हूँ। समझे ? वह हमारे खिलाफ नहीं है, जरा भी नहीं, भले उसने बहुत अच्छे कपड़े पहन रखे हों। किसी के

कपड़े देखकर ही उसके बारे में फैसला नहीं दिया जा सकता। कामरेड, आप ही को नहीं, मुझको भी यह बात मालूम है कि किसे यहाँ लाना चाहिए और किसे नहीं। इसलिए आप इतने अफसरी अन्दाज में बात मत कीजिये।'

वह और भी तीखी और लगनेवाली बात कहना चाहता था। मगर यह देखकर कि पांक्रातोव जो बात कह रहा है, उसमें बाकी सब लोगों की राय मिली हुई है, वह रुक गया और उसने अपना सारा गुस्सा तोनिया पर उतारा।

'मैंने कहा था न उससे कि यही बात होगी! भगवान जाने यह तड़क-भड़क उसे क्यों अच्छी लगती है?'

वह शाम उनकी दोस्ती के खात्मे की शुरुआत की शाम थी। पावेल ने बहुत पीड़ा और मन की कडुवाहट से तोनिया के साथ अपने उस सम्बंध को टूटते देखा जो उसे इतना चिरस्थायी मालूम हो रहा था।

कुछ दिन और गुजरे। और फिर, हर मुलाकात, हर बातचीत के साथ वे दोनों एक-दूसरे से दूर होते चले गये। तोनिया की यह घटिया ढंग की खुदपरस्ती पावेल के लिए असह्य हो गयी।

दोनों ने समझ लिया कि सम्बंध-विच्छेद अब अनिवार्य है।

आज वे कुपेचेस्की बाग में आखिरी बार एक-दूसरे से मिले थे। रास्ते मुरझायी हुई पत्तियों से ढँके थे। वे पहाड़ की चोटी पर जँगले से टिके खड़े थे और नीचे नीपर के मटमैले नीले पानी को देख रहे थे। उस ऊँचे बेडौल पुल के पीछे से दो बड़े-बड़े बजरे खींचकर लाये जाते दिखायी दिये। डूबते हुए सूरज ने त्रुखानोव टापू पर जैसे सुनहरी कूँची फेर दी थी और मकानों की खिड़कियों में आग लगा दी थी।

तोनिया ने सूरज की सुनहरी किरणों को देखा और गहरी व्यथा के स्वर में कहा :

'हमारी दोस्ती क्या इसी डूबते हुए सूरज की तरह डूब जायेगी?'

पावेल जो तोनिया के चेहरे पर आँख गड़ाये उसकी रूप-सुधा का पान कर रहा था, कठोरता से भवें चढ़ाकर जवाब देते हुए धीमी आवाज में बोला :

'तोनिया, हम लोग पहले भी इस बारे में बात कर चुके हैं। तुम्हें मालूम है कि मैं तुमको प्यार करता था और अब भी मेरा प्यार लौटकर आ सकता है। मगर उसके लिए तुमको हमारे साथ आना होगा। मैं अब पहले का पावलुशा नहीं रहा हूँ। और मैं तुम्हारे लिए अच्छा पति भी नहीं हो सकूँगा अगर तुम मुझसे यह उम्मीद करती हो कि मैं तुमको पार्टी के ऊपर तरजीह दूँगा। वजह यह है कि मैं सबसे पहले पार्टी को देखूँगा और तुमको और उन दूसरे लोगों को, जिनसे मैं प्यार करता हूँ, बाद में।'

तोनिया उदासी से नदी के गहरे नीले पानी को एकटक देख रही थी।

उसकी आँखें डबडबायी हुई थीं।

पावेल ने तोनिया की उस पार्श्व छवि को देखा जिसे वह इतनी अच्छी तरह पहचानता था, उसने उसके घने सुनहले बालों को देखा और उसका मन उस लड़की के लिए दुख से कातर हो उठा जो कभी उससे इतने पास थी और उसे इतनी प्यारी थी।

उसने बड़ी कोमलता से उसके कंधे पर अपना हाथ रखा।

'तोनिया, तुम अपने पुराने वातावरण से नाता तोड़कर हम लोगों के साथ आ जाओ। आओ, हम लोग साथ मिलकर इन पूँजीशाहों के खात्मे के लिए काम करें। हमारे साथ बहुत-सी अच्छी-अच्छी लड़कियाँ हैं जो इस कठिन लड़ाई का बोझ उठा रही हैं, जो सारी तकलीफों और मुसीबतों को सह रही हैं। हो सकता है, वे तुम्हारी तरह सुशिक्षित न हों। लेकिन बताओ, तुम क्यों हमारे साथ शरीक नहीं होना चाहतीं, आखिर क्यों? तुम कहती हो कि चुजानिन ने तुमको फुसलाने और खराब करने की कोशिश की। मगर वह तो पतित है ही। वह सैनिक थोड़े ही है। तुम कहती हो कि मेरे साथियों का बर्ताव तुम्हारे साथ दोस्ताना नहीं था। मगर तुम्हीं बताओ कि तुम वहाँ पर ऐसे कपड़े पहनकर क्यों गयीं जैसे तुम अमीर लोगों के किसी नाच में जा रही हो? दोष तुम्हारे इस अहंकार का है : मैं वैसा ही गन्दा फटा-पुराना फौजी ट्यूनिक क्यों पहनूँ जैसा सब लोग पहनते हैं, सिर्फ इसीलिए कि दूसरे लोग पहने हुए हैं? तुममें एक मजदूर से प्रेम करने का साहस था, मगर तुम एक विचारधारा से प्रेम नहीं कर सकतीं। मुझे तुमसे अलग होने का दुख है, और मैं तुम्हारी स्मृति को संजोकर रखना चाहूँगा।'

पावेल ने और कुछ नहीं कहा।

दूसरे रोज उसने एक हुक्मनामा सड़क पर चिपका हुआ देखा जिस पर प्रादेशिक चेका के चेयरमैन जुखराई का दस्तखत था। उसको देख कर पावेल का दिल बल्लियों उछल पड़ा। बड़ी मुश्किल से वह जुखराई के दफ्तर में घुसने की इजाजत पा सका। सन्तरी उसे अन्दर जाने नहीं देते थे। और उसने इतना हंगामा खड़ा किया कि यह नौबत आ गयी कि उसे पकड़ लिया जाता। मगर अन्त में उसे कामयाबी मिली।

फियोदोर दिल खोलकर उससे मिला। उसकी एक बाँह कटी हुई थी; तोप के एक गोले से वह उड़ गयी थी।

बातचीत फौरन काम के ऊपर आ गयी। जुखराई ने कहा, 'जब तक तुम मोर्चे पर जाने के लिए फिर से ठीक नहीं हो जाते, तब तक तुम यहाँ पर क्रान्ति के दुश्मनों को कुचलने में मेरी मदद कर सकते हो। कल से ही काम शुरू कर दो।'

पोलिश क्रान्ति-विरोधियों के साथ लड़ाई खतम हो गयी।

खून में भीगी हुई धरती कुछ विश्राम चाहती थी।

पावेल अपने घरवालों से नहीं मिल सका क्योंकि शेपेतोवका फिर पोलिश फौजों के हाथ में आ गया था और फिलहाल अस्थायी रूप से उनकी सरहदी चौकी बना हुआ था। सुलह की बातचीत चल रही थी।

पावेल काम के सिलसिले में दिन-रात चेका में रहता था। उसे यह जानकर बड़ी परेशानी हुई कि उसके शहर पर पोलों का कब्जा हो गया है।

'क्या इसका मतलब यह है कि अगर संधि-पत्र पर दस्तखत हो जाते हैं, तो मेरी माँ सरहद के उस पार रहेगी ?' उसने जुखराई से पूछा।

मगर फियोदोर ने उसे दिलासा दी।

'बहुत करके सीमा-रेखा नदी के साथ-साथ चलकर गोरिन के बीच से गुजरेगी जिसका मतलब यह है कि तुम्हारा शहर हमारी तरफ होगा। बहरहाल जो भी हो, जल्द ही हमें इस बात का पता चल जायगा,' जुखराई ने कहा।

पोलिश मोर्चे से दक्खिन को डिवीजनें भेजी जा रही थीं। क्योंकि जिस वक्त जनतंत्र पोलिश मोर्चे पर अपनी सारी ताकत लगा रहा था, उसी वक्त रैंगेल परिस्थिति का फायदा उठाकर क्रीमिया की अपनी खोह से निकल आया और नीपर नदी के किनारे-किनारे उत्तर की ओर बढ़ने लगा। उस वक्त उसकी निगाह येकातेरीनोस्लाव प्रदेश पर थी।

अब चूँकि पोलों के संग लड़ाई खतम हो गयी थी, अतः जनतंत्र ने अपनी फौजों को क्रान्ति-विरोधियों के इस अन्तिम अड्डे को खतम करने के लिए क्रीमिया भेज दिया।

रेलगाड़ियाँ भर-भर कर सैनिक, गाड़ियाँ, मैदानी बावर्चीखाने और तोपें दक्खिन के रास्ते में कीव से होकर गुजर रही थीं। इस इलाके के ट्रान्सपोर्ट विभाग का चेका इन दिनों भूत की तरह काम कर रहा था क्योंकि उसे आमद-रफ्त की बाढ़ से पैदा होनेवाली तमाम कठिनाइयों का हर वक्त सामना करना पड़ता था। स्टेशनों पर रेलगाड़ियाँ अटी पड़ी थीं और अक्सर आमद-रफ्त रोकनी पड़ती थी क्योंकि रेलवे लाइन खाली न मिलती थी। तार के ऑपरेटर अनगिनत परवाने टपटपाकर खबर देते कि किस डिवीजन के लिए लाइन खाली हो गयी है। उनको डिवीजनों से आये हुए सन्देशों का भी भाष्य करना पड़ता, जो सब इस बात की माँग करते कि सबसे पहले उनकी जरूरत को पूरा किया जाय : 'सबसे पहले हमें लाइन दीजिए ... यह फौजी हुक्म है ... फौरन

लाइन खाली कीजिए ...।' और हर सन्देश के साथ यह चेतावनी रहती कि अगर हुक्म पूरा नहीं किया गया तो क्रान्तिकारी फौजी अदालत के सामने मामला पेश किया जायगा।

आमद-रफ्त को बगैर किसी रोक-टोक के चालू रखने की जिम्मेदारी शहर के यातायात के चेका की थी।

फौजी टुकड़ियों के कमांडर अपनी पिस्तौल चमकाते हुए चेका के हेडक्वार्टर में आते और माँग करते कि तार नम्बर फलाँ-फलाँ के अनुसार, जिस पर फौज के कमांडर के दस्तखत हैं, फौरन उनकी गाड़ी रवाना की जाय। संगीन मामलों में जुखराई को फौरन बुलाया जाता और तब फिर वे आवेश से पागल आदमी, जो एक-दूसरे को गोली से उड़ा देने के लिए तैयार खड़े रहते, शान्त हो जाते। इस लोहे के आदमी को देखकर, जिसकी आवाज धीमी और ठंडी थी और जो किसी तरह के बहस-मुबाहसे को पसन्द नहीं करता था, पिस्तौलें वापिस अपनी जगह पहुँच जातीं।

एक दिन पावेल ने गोले-बारूद से लदे मालगाड़ी के खुले डब्बे पर सर्गेई ब्रुजाक को देखा। सर्गेई डब्बे से कूदकर पावेल की ओर आया, इतनी तेजी से कि पावेल के पैर उखड़ते-उखड़ते बचे, और अपने दोस्त को बाँहों में भर लिया।

'पावका, बदमाश ! देखते ही मैं पहचान गया कि तुम्हीं होगे।'

इन दोनों लड़कों के पास एक-दूसरे को बतलाने के लिए इतनी खबरें थीं कि उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि शुरू कहाँ से करें। उनकी आखिरी मुलाकात के वक्त से अब तक दोनों के संग बहुत सारी बातें गुजरी थीं। वे एक-दूसरे से सवाल पर सवाल किये जा रहे थे और जवाब का इन्तजार किये बिना बोलते चले जा रहे थे। अपनी बातचीत में वे इतने डूबे हुए थे कि उन्होंने इंजन की सीटी भी नहीं सुनी। जब गाड़ी स्टेशन से बाहर जाने लगी तब कहीं जाकर दोनों एक-दूसरे से अलग हुए।

अब भी उन्हें एक-दूसरे से बहुत सी बातें करनी थीं। मगर रेल की रफ्तार तेज होती जा रही थी और सर्गेई चिल्लाकर अपने दोस्त से कुछ कहता हुआ प्लेटफार्म पर दौड़ा और माल के एक डब्बे के खुले दरवाजे को पकड़कर गाड़ी पर चढ़ गया। डब्बे के अन्दर के बहुत से हाथों ने उसे पकड़कर अन्दर खींच लिया। पावेल ने उसको जाते देखा तो यकायक उसे ध्यान आया कि सर्गेई को वालिया की मृत्यु के बारे में कुछ भी मालूम नहीं क्योंकि शेपेतोवका छोड़ने के बाद फिर वह वहाँ नहीं गया था और यह मुलाकात ऐसी अचानक थी कि पावेल यह बात बताना भी भूल गया।

'अच्छा ही है कि उसे नहीं मालूम, दिमाग पर कोई बोझ न रहेगा,'

पावेल ने सोचा। उसे नहीं मालूम था कि अब वह फिर कभी अपने दोस्त को नहीं देख सकेगा। न ही सर्गेई को यह मालूम था कि वह अपनी मौत के पास जा रहा है। उस वक्त वह डब्बे की छत पर खड़ा हुआ था और पतझड़ की हवा आकर उसके खुले हुए सीने से टकरा रही थी।

'वहाँ से उतर आओ सर्योजा,' दोरोशेंको ने कहा। दोरोशेंको लाल सेना का आदमी था और उसके कोट के पीछे एक सूराख था जो जलने से बन गया था।

'ठीक है, घबराने की कोई बात नहीं,' सर्गेई ने हँसते हुए कहा, 'हवा की और मेरी बड़ी दोस्ती है।'

एक हफ्ते बाद अपनी पहली ही लड़ाई में उसको गोली लगी। वह लड़-खड़ाता हुआ आगे बढ़ा, उसके सीने में भयंकर दर्द हो रहा था जैसे अन्दर से उसे कोई चीरे डाल रहा हो। उसने हवा को पकड़ने की कोशिश की और अपने सीने को बाँहों से कसकर दबाये, लड़खड़ाया और वहीं जमीन पर ढेर हो गया। उसकी बुझी हुई नीली आँखें उक्रेन के स्तेपी के अनन्त विस्तार को एकटक देखती रह गयीं।

चेका का काम पावेल को बहुत ही कमजोर करता जा रहा था। उसकी तन्दुरुस्ती पर इसका बहुत बुरा असर पड़ रहा था। उसके सिर में तेज दर्द अब ज्यादा बार होने लगा। मगर उसने जुखराई से इस चीज के बारे में तब तक कुछ नहीं कहा जब तक कि एक रोज दो विनिद्र रातों के बाद वह बेहोश नहीं हो गया।

'फियोदोर, तुम्हारे ख्याल से क्या यह अच्छा न होगा कि मैं कुछ और काम करूँ? सबसे ज्यादा पसन्द तो मुझे कारखाने में अपने पुराने धंधे पर काम करना है। मुझे लगता है कि मेरे सिर में कुछ गड़बड़ी है। मेडिकल कमीशन के लोगों ने मुझे बतलाया था कि अब मैं फौजी सर्विस के अयोग्य हूँ। मगर इस तरह का काम तो मोर्चे पर के काम से भी बुरा है। दो दिन जो हम लोग सुतिर के गिरोह के लोगों को पकड़ते रहे, उसने मेरा बिलकुल पटरा कर दिया है। मुझे इन लड़ाइयों से विश्राम लेना ही होगा। देखो न फियोदोर, अगर मैं ठीक से अपने पैरों पर खड़ा भी न हो सका, तो तुम्हारे किस काम का।'

जुखराई ने चिन्तित होकर पावेल के चेहरे को गौर से देखा।

'हाँ, तुम्हारा हाल अच्छा नहीं नजर आता। यह सब मेरी ही गलती है। मुझे बहुत पहले ही तुम्हें छुट्टी दे देनी चाहिए थी। मगर मैं काम में इस

तरह डूबा रहा कि मुझे इस बात का ख्याल ही नहीं आया।'.

इस बातचीत के बाद पावेल ने कोमसोमोल की प्रादेशिक कमेटी के सामने अपने-आपको इस सर्टिफिकेट के साथ पेश किया कि उसे कमेटी के काम के लिए भेजा जा रहा है। एक अफसरी ढंग के लड़के ने, जिसने बड़ी बाँकी अदा से अपनी टोपी नीचे नाक तक खींच रखी थी, जल्दी-जल्दी उस कागज को देखा और पावेल को आँख मारते हुए बोला :

'चेका से आ रहे हो, क्यों ? बड़ा मजेदार संगठन है वह भी। हम लोग अभी पलक मारते तुम्हारे लिए कोई काम ढूँढ़ निकालेंगे। हमें जितने लोग भी मिल सकें सबकी जरूरत है। कहाँ जाना चाहोगे तुम ? कमिसारी विभाग में ? नहीं ? अच्छा। नीचे घाट पर का प्रचार विभाग कैसा रहेगा ? नहीं। तब तो बहुत बुरा हुआ। काम तो अच्छा है, ज्यादा काम भी नहीं है और खास राशन भी मिलता है।'

पावेल ने उसको बीच में ही टोका।

उसने कहा, 'मैं तो कारखाने में काम करना पसन्द करूँगा, लोको में।' लड़के ने आश्चर्य से उसकी तरफ देखा और कहा, 'लोको में ? हूँ...वहाँ तो शायद हमें किसी की जरूरत नहीं है। मगर तुम उस्तिनोविच के पास जाओ। वह किसी जगह तुम्हें काम पर लगा देगी।'

गन्दुमी रंग की उस्तिनोविच के साथ थोड़ी देर की मुलाकात के बाद यह फैसला किया गया कि पावेल को रेल के कारखाने में, जहाँ पर वह काम करनेवाला था, कोमसोमोल के संगठन का मंत्री बनाया जाय।

इस बीच क्रान्ति-विरोधी फौजें क्रीमिया के प्रवेश-मार्ग की किलेबन्दी कर रही थीं और अब जमीन के इस छोटे से टुकड़े पर, जहाँ पहले कभी क्रीमिया के तातारों और जापोरोजिये के कोसैकों की बस्तियों की सरहदें मिलती थीं, पेरेकोप की आधुनिक किलेबन्दी की कतारें खड़ी थीं।

और यहाँ क्रीमिया में, पेरेकोप के पीछे, पुरानी दुनिया देश के कोने-कोने से खदेड़ी जाकर शराब के दौरों और नाच-रंग में मस्त थी। उसे आने वाले विनाश का कोई पता न था और नाच-रंग में वह अपने को बहुत महफूज़ समझ रही थी।

पतझड़ की एक बेहद सर्द, नम रात को हजारों मेहनतकशों के बेटे रात के अंधेरे में पार उतरकर किले में बन्द दुश्मन पर पीछे से हमला करने के लिए, सिवाश के बर्फानी पानी में खाड़ी पार करने के लिए उतरे। उन हजारों लोगों में इवान जार्की भी था जो अपनी मशीनगन को सिर पर उठाये हुए

था ताकि वह भीगे नहीं।

और जब सबेरे किलेबन्दियों पर सामने से हमला हुआ और पेरेकोप में खलबली मची तो उसी वक्त उन पहले दस्तों ने, जो सिवाश नदी में उतरे थे, लितोव्स्की प्रायद्वीप पर नदी के पार उतरकर पीछे से दुश्मन पर हमला किया। और उस चट्टानी साहिल पर चढ़नेवाले पहले आदमियों में इवान जार्की भी था।

बड़ी खूंखार लड़ाई हुई। नदी से बाहर निकलते हुए लाल सैनिकों पर दुश्मन की घुड़सवार फौज ने जोरों से हमला किया। जार्की की मशीनगन मौत उगलने लगी, उसकी मौत की बरसात करनेवाली कड़कड़ाहट पल भर को भी न थमती थी। उसकी गोलियों की बौछार से दुश्मन के सिपाही और घोड़े ढेर होते जा रहे थे। जार्की बला की तेजी से अपनी मशीनगन में कारतूसों की नयी-नयी पेटियाँ लगाता जा रहा था।

पेरेकोप ने सैकड़ों तोपों की गरज से जवाब दिया। उस वक्त लगता था जैसे धरती रसातल को चली जा रही है और हजारों तोप के गोले कान को फाड़नेवाली चीखों से आसमान को चीर रहे थे। कान के पर्दे फाड़ देनेवाले गोलों के धड़ाके हो रहे थे, उनके अनगिनत छर्रे दूर-दूर तक फैल रहे थे और लाशें गिर रही थीं। घायल और विदीर्ण धरती की छाती से काले-काले बादलों के फव्वारे छूट रहे थे जिन्होंने सूरज को भी ढंक लिया था।

दैत्य का सिर कुचल दिया गया था और पहली घुड़सवार फौज की लाल बाढ़ दुश्मन पर आखिरी हमला करने के लिए क्रीमिया में दाखिल हो गयी। दहशत के मारे दुश्मन के सिपाही बन्दरगाहों से छूटते हुए जहाजों पर चढ़ने के लिए आपस में धक्कम-धक्का कर रहे थे।

जनतंत्र ने उन मैली-कुचैली ट्यूनिकों पर, जिनके नीचे भी कभी मर्दों के मजबूत दिल धड़कते थे, 'आर्डर आफ द रेड बैनर' का सुनहला पदक लगा दिया और इन ट्यूनिकों में से एक कोमसोमोल के तोपची इवान जार्की की थी।

पोलों से संधि हुई, और जैसा कि जुखराई ने कहा था, शेपेतोवका सोवियत उक्रेन में रहा। शहर से लगभग तीस मील दूर की एक नदी विभाजन रेखा बनी।

दिसम्बर १९२० की एक कभी न भूलनेवाली सुबह को पावेल अपने शहर में आया। वह बरफ से ढँके हुए प्लेटफार्म पर उतरा, स्टेशन का नाम पत्थर की पटिया पर पढ़ा, बाँयी ओर मुड़ा और सीधे डिपो में जाकर आर्तेम का पता लगाया। लेकिन उसका भाई वहाँ नहीं था। अपने फौजी कोट को और भी कसकर बदन में लपेटता हुआ पावेल लम्बे-लम्बे कदमों से जंगल के बीच से होकर शहर को चला।

दरवाजे पर दस्तक पड़ी तो मारिया याकोवलेवना मुड़ी और बोली, 'चले आओ।' बरफ से ढँकी एक आकृति घर के अन्दर दाखिल हुई और माँ ने अपने प्यारे बेटे के चेहरे को देखा। उसका हाथ अपने सीने पर गया और उसके अन्दर जो खुशी का जोश उमड़ रहा था, उसने उसकी वाणी छीन ली।

वह अपने बेटे के सीने पर गिर पड़ी और उसके चेहरे को अपने चुम्बनों से नहला दिया। खुशी के आँसू उसके गालों पर बह रहे थे। पावेल ने उस दुबले-पतले छोटे से शरीर को कसकर अपने सीने से लगा लिया और खामोशी से अपनी माँ के परेशान चेहरे को देखा जिस पर पीड़ा और चिन्ता की गहरी लकीरें थीं, और माँ के शान्त होने का इन्तजार करने लगा।

एक बार फिर माँ की आँखों में, जिसने इतनी मुसीबतें देखी थीं, खुशी की रोशनी चमकने लगी। मालूम होता था कि अपने बेटे को देखते रहने से, जिसको दुबारा फिर कभी देखने की उसे उम्मीद नहीं थी, उसका जी ही नहीं भरेगा। उसकी खुशी का ठिकाना न रहा जब तीन दिन बाद बहुत रात गये आर्तेम भी अपना थैला कंधे पर डाले उस छोटी सी कोठरी में आ पहुँचा।

कोर्चागिन परिवार के लोग फिर मिल गये। दोनों भाई मौत के मुँह से बचकर निकल आये थे और एक से एक भयानक अग्नि-परीक्षाओं के बाद वे फिर मिल रहे थे।

'अब तुम लोग क्या करने जा रहे हो ?' माँ ने अपने बेटों से पूछा।

आर्तेम ने खुश-खुश जवाब दिया, 'मेरे लिए तो फिर वही रेल का कारखाना है, माँ !'

जहाँ तक पावेल की बात थी, दो हफ्ते घर पर गुजारकर वह वापिस कीव लौट गया। उसका काम वहाँ उसकी राह देख रहा था।

दूसरा भाग

दस

जलते हुए सूरज की तपन से धरती कुम्हलायी जा रही थी। रेलवे प्लेटफार्म के पुल की रेलिंग इतनी गर्म हो रही थी कि उसको छूते हाथ जलता था। गरमी से थके हुए लोग-बाग धीरे-धीरे पुल पर चढ़ रहे थे। उनमें से ज्यादातर मुसाफिर नहीं थे, बल्कि वहीं आस-पास के रहनेवाले लोग थे जो शहर पहुँचने के लिए पुल पार करके जाया करते थे।

पुल से नीचे उतरने पर पावेल ने रिता को देखा। वह उससे पहले ही स्टेशन पहुँच गयी थी और पुल पर से उतरते हुए लोगों को देख रही थी।

पावेल उससे लगभग तीन गज की दूरी पर रुक गया। रिता ने उसको नहीं देखा और पावेल एक नयी ही दिलचस्पी से उसको देखता रहा। वह धारीदार ब्लाउज़ और किसी सस्ते कपड़े का छोटा सा नीला स्कर्ट पहने हुए थी। उसके कंधे पर एक मुलायम चमड़े का जाकट पड़ा हुआ था। उसका धूप से तपा हुआ चेहरा था और उस चेहरे को जैसे फ्रेम में जकड़े हुए उसके रूखे बाल उड़ रहे थे। वह अपने सिर को जरा पीछे फेंककर खड़ी हुई थी और सूरज की चमक के कारण उसकी आँखें चौंधिया रही थीं। उसको वैसे खड़ा देखकर कोर्चागिन को पहली बार महसूस हुआ कि उसकी शिक्षक और मित्र रिता कोमसोमोल प्रादेशिक कमेटी के ब्यूरो की मेम्बर ही नहीं, बल्कि ...। अपने मन में आये हुए उन 'पापपूर्ण' विचारों के कारण खीझ अनुभव करते हुए उसने रिता को आवाज दी।

'मैं पूरे एक घंटे से तुम्हें अपलक देख रहा हूँ मगर तुमने मुझे देखा ही नहीं,' वह हँसा, 'चलो हमारी गाड़ी आ गयी है।'

वे प्लेटफार्म के दरवाजे पर पहुँचे।

रेलगाड़ी रेंगती हुई आगे बढ़ती जा रही थी। रेलवे लाइन में हर जोड़ पर रेलगाड़ी के पुराने, टूटे-फूटे और जरूरत से ज्यादा लदे हुए डब्बे चरमरा रहे थे, कराह रहे थे और बड़े जोर से हिल रहे थे। गहरी नीली गोधूलि खिड़की में से अन्दर झाँक रही थी। फिर रात आयी और गाड़ी को उसने अंधेरे की चादर से ढँक दिया।

रिता थकी हुई थी और अपने बैग का तकिया लगाये ऊँघ रही थी। पावेल बर्थ के सिरे पर बैठा सिगरेट पी रहा था। वह भी थका हुआ था,

मगर लेटने की जगह नहीं थी। रात की ताजी हवा खुली हुई खिड़की से अन्दर आ रही थी। अचानक हिचकोले से जागकर रिता ने अंधेरे में पावेल के सिगरेट की चमक देखी। यह हमेशा से उसकी आदत रही है कि बैठा-बैठा रात गुजार देता है, मगर रिता को किसी तरह की तकलीफ नहीं होने देता।

रिता ने धीमे स्वर में कहा, 'कामरेड कोर्चागिन ! उन बुर्जुआ तौर-तरीकों को छोड़ो और लेट जाओ।'

पावेल उसकी बात मानकर उसके बगल में लेट गया और उसने अपनी अकड़ी हुई टाँगों को आराम के साथ फैला लिया।

'कल हमें बहुत सा काम करना है, इसलिए पागलराम जरा नींद ले लेने की कोशिश करो।' उसने बड़े विश्वास से पावेल के गले में अपनी बाँहें डाल दी और पावेल ने अपने गालों पर उसके बालों का स्पर्श अनुभव किया।

पावेल के लिए रिता एक पवित्र चीज थी। वह उसकी दोस्त थी, कामरेड थी, राजनीतिक पथ-प्रदर्शिका थी। मगर इसके साथ ही साथ वह औरत भी थी। इसकी चेतना उसे सबसे पहले वहाँ पुल पर हुई थी और इसलिए अब उसके आलिंगन ने पावेल को इतना चंचल कर दिया। उसने रिता की गहरी सम-चाल से चलती हुई साँस को महसूस किया; उसके पास ही कहीं रिता के होंठ थे। इस सामीप्य से उसके अन्दर उन ओंठों को पाने की लालसा जगी और मन का बहुत जोर लगाकर ही वह इस लालसा को दबा पाया।

जैसे पावेल के मन के भावों को ताड़ते हुए रिता अंधेरे में मुस्करायी। वह इस लालसा के सुख और वियोग की पीड़ा दोनों को जान चुकी थी। उसने दो बोल्शेविकों को अपना प्यार दिया था। ह्वाइट-गार्ड की गोलियों ने दोनों को उससे छीन लिया था। उसमें से एक बड़ा शानदार डील-डौल का आदमी था, जो ब्रिगेड कमांडर था; दूसरा साफ नीली आँखों वाला एक छोकरा था।

थोड़ी ही देर में पहियों की ताल ने थपकी दे-देकर पावेल को सुला दिया। सुबह को जब इंजन ने जोर से सीटी दी तभी जाकर उसकी आँख खुली।

एक रोज जब पावेल रेल के कारखाने में काम कर रहा था, तो उसे टेलीफोन पर बुलाया गया। यह रिता थी। उस शाम वह खाली थी और उसने प्रस्ताव किया कि पैरिस कम्यून की पराजय के कारणवाले अध्याय को खतम कर डाला जाय, जिसे वे दोनों मिलकर पढ़ रहे थे।

उस शाम को जब पावेल यूनिवर्सिटी स्ट्रीट पर रिता के मकान के पास पहुँचा तो उसने ऊपर नजर उठायी और खिड़की में रोशनी देखी। वह दौड़कर सीढ़ियों पर चढ़ा, हमेशा की तरह दरवाजे पर दस्तक दी और अन्दर चला गया।

वहाँ पलंग पर, जहाँ किसी नये साथी को क्षण भर बैठने की भी इजाजत नहीं थी, वर्दी पहने एक आदमी लेटा हुआ था। मेज पर एक रिवाल्वर, किटबैग और लाल तारे वाली टोपी रखी हुई थी। रिता उस अजनबी की वगल में उसे कसकर अपनी बाँहों में भरे बैठी हुई थी। दोनों अपनी बातचीत में डूबे हुए थे और पावेल के अन्दर दाखिल होने पर रिता ने मुस्कराते हुए चेहरे से उसको देखा।

उस आदमी ने रिता के बाहुपाश से अपने को मुक्त किया और पलंग पर से उठा।

रिता ने पावेल से हाथ मिलाते हुए कहा, 'पावेल, यह है ...'

उस आदमी ने कसकर कोर्चागिन से हाथ मिलाते हुए रिता के वाक्य को पूरा किया, 'डेविड उस्तिनोविच।'

'अचानक ही आ गया,' रिता ने खुशी से हँसते हुए बतलाया।

पावेल ने बहुत सर्द तरीके से इस आगन्तुक से हाथ मिलाया और उसकी आँखों में क्षोभ की चमक दिखलायी दी। उसने उस आदमी की वर्दी की आस्तीन पर चार क्रास देखे जो कि एक कम्पनी के कमांडर की पहचान थी।

रिता कुछ कहने ही वाली थी कि पावेल बीच में बोल पड़ा, 'मैं आपसे सिर्फ यह कहने आया था कि आज शाम को मैं घाट पर जहाज में लकड़ी लादने के काम में फँसा रहूँगा। और फिर आपके यह अतिथि भी आये हुए हैं। अच्छा तो अब मैं चलूँगा, लड़के नीचे खड़े मेरा इन्तजार कर रहे हैं।'

और वह वैसे ही एकाएक दरवाजे में से बाहर निकल गया जैसे अन्दर आया था। उन्होंने उसको तेजी से सीढ़ी पर से नीचे उतरते सुना। फिर वाहर का दरवाजा फटाक से बन्द हुआ और खामोशी छा गयी।

'आज उसका हाल कुछ ठीक नहीं था। जरूर कोई बात है,' रिता ने डेविड की सवाल करती हुई आँखों के जवाब में अटकते हुए कहा।

पुल के नीचे एक इंजन ने गहरी साँस ली और अपने जबर्दस्त फेफड़ों से सुनहली चिनगारियों की फुहार छोड़ी। चिनगारियाँ अजीब तरीके से नाचती हुई ऊपर को उठीं और धुएँ में खो गयीं।

पावेल रेलिंग से टिका खड़ा था और सिगनल की रंगीन रोशनियों का जलना और बुझना एकटक होकर देख रहा था। उसने अपनी आँखें सिकोड़ीं।

'कामरेड कोर्चागिन, यह बात मेरी समझ में नहीं आती कि तुम्हें इस बात से इतनी चोट क्यों लगती है कि रिता का कोई पति है? क्या उसने कभी तुमसे कहा कि उसका कोई पति नहीं है? और अगर उसने कभी ऐसा कहा भी हो तो क्या? तुमको यह चीज इतनी बुरी क्यों लगती है? तुमने सोचा था कामरेड कि यह सब खालिस रूहानी दोस्ती है और कुछ नहीं...।

तुमने यह चीज कैसे होने दी ?' उसने तीखे व्यंग्य के स्वर में अपने-आपसे सवाल किया, 'और अगर वह उसका पति नहीं हो तो ? डेविड उस्तिनोविच उसका भाई भी हो सकता है, चाचा भी हो सकता है...लेकिन अगर ऐसी बात हो तो तुमने अपने गदहेपन में उस बेचारे के साथ बड़ा अन्याय किया है। तुम किसी से कुछ अच्छे थोड़े ही हो। यह पता लगाना तो काफी आसान है कि वह उसका भाई है या नहीं। मान लो कि वह उसका भाई या चाचा निकला तो अपने आज के बेहूदा बर्ताव के बाद तुम फिर कैसे रिता से आँख मिला सकोगे ? नहीं, अब तो तुम्हें उससे मिलना बन्द करना पड़ेगा !'

एक इंजन की सीटी ने उसके विचारों की धारा भंग की।

'बहुत देर हो रही है। घर चलने का वक्त हुआ। काफी फ़िजूलियात हो लीं।'

जिस इलाके में रेलवे मजदूर रहते थे, उसका नाम सोलोमेंका था। वहीं पाँच नौजवानों ने एक छोटा सा कम्यून कायम किया। ये पाँच थे—जार्की, पावेल, सुनहले बालोंवाला खुश चेक नौजवान जिसका नाम क्लावीचेक था, रेलवे यार्ड के कोमसोमोल का मंत्री निकोलाई ओकुनेव और स्तेपान आर्त्युखिन जो ब्वॉयलर सुधारने का काम करता था और आजकल रेलवे चेका के लिए काम कर रहा था।

उन्होंने एक कमरा ढूँढ़ा और तीन दिन तक अपना सारा खाली वक्त उसको साफ करने, उनमें रंग-रोगन करने और उसकी दीवारों की सफेदी करने में लगाया। वे बाल्टियाँ लिये हुए तेजी से इतनी बार इधर-उधर आये और गये कि पड़ोसी लोग सोचने लगे कि घर में आग लग गयी है। उन्होंने अपने लिए ओठे तैयार किये और पार्क से बटोरी हुई शहतूत की पत्तियाँ भरकर गद्दे तैयार किये। इस सब के बाद चौथे रोज वह कमरा, जिसकी दीवार पर पेत्रोव्स्की की एक तस्वीर और एक बड़ा सा नक्शा टंगा था, सफाई से चमक रहा था।

खिड़कियों के बीच में एक आलमारी थी जिसमें ऊपर तक किताबों का ढेर लगा हुआ था। दो बक्सों को दफ्ती से ढँककर उनसे कुर्सी का काम लिया जा रहा था और एक ओर बड़ा बक्स बर्तनों की आलमारी का काम दे रहा था। कमरे के बीचोबीच एक बड़ी सी बिलियर्ड की मेज थी जिसमें बस यह कमी थी कि उसमें कपड़ा नहीं लगा था। इसको कमरे के निवासी मालगोदाम से अपने कंधों पर उठाकर लाये थे। दिन को उससे मेज का काम लिया जाता था और रात को उस पर क्लावीचेक सोता था। पाँचों लड़के अपनी तमाम चीजें उठा लाये और व्यवहारकुशल क्लावीचेक ने कम्यून की जायदाद की

फेहरिस्त बनायी। वह उस फेहरिस्त को दीवार पर टाँगना चाहता था, मगर दूसरों ने आपत्ति की। कमरे की हर चीज सबकी मिली-जुली सम्पत्ति घोषित कर दी गयी। कमाई, राशन और बीच-बीच में घर से आनेवाले पार्सल, सबका बराबर-बराबर बंटवारा हो जाता था; निजी सम्पत्ति की बस एक चीज थी — उनके अपने-अपने हथियार। सर्वसम्मति से यह निश्चय किया गया कि कम्यून का जो सदस्य साझे की सम्पत्ति के नियम का उल्लंघन करेगा या अपने साथियों के साथ विश्वासघात करेगा, उसे कम्यून से निकाल बाहर किया जायगा। ओकुनेव और क्लावीचेक ने आग्रह किया कि कम्यून से निकाले जाने के बाद अगली कार्रवाई यह होनी चाहिए कि उसे कमरे से निकाल बाहर किया जाय और यह प्रस्ताव पास हो गया।

जिले की कोमसोमोल के सभी सक्रिय सदस्य कम्यून के गृह-प्रवेश की पार्टी में आये। बगल के पड़ोसी से एक विशाल समोवार उधार लिया गया। चाय पार्टी में कम्यून की सारी शकर खर्च हो गयी। चाय के बाद उन्होंने कोरस गाना शुरू किया और उनकी जवानी की बुलन्द आवाजों से दीवार के पटरे हिल उठे :

सारी दुनिया भीग गयी आँखों के जल से,
दुख से कड़वे कैसे ये दिन बीत रहे हैं
पर उगता है नव प्रभात नभ के अंचल से

तम्बाकू के कारखाने की लड़की तालिया लगुतिना गाने का नेतृत्व कर रही थी। उसके सिर पर का लाल रूमाल एक ओर को खिसक गया था और उसकी आँखें, जिनकी गहराई की थाह अब तक किसी ने नहीं पायी थी, शरारत से नाच रही थीं। तालिया की हँसी बहुत ही संक्रामक थी और वह अपने अठारह सालों की रौशन ऊँचाई से दुनिया को देखती थी। अब उसकी बाँह लहर की तरह ऊपर को उठी और नक्कारों की आवाज की तरह गाने की धारा बह चली :

उमड़ो मेरे गीत, विश्व पर छा जाओ;
विजय गर्व से उन्नत निज केतन लहराओ !
हृदय रक्त की अग्नि-शिखा में जलकर तपकर;
रहो प्रज्वलित जगती के उन्मुक्त गगन पर !

बहुत रात गये पार्टी खत्म हुई और उनकी बुलन्द जवान आवाजों की गूँज से खामोश सड़कें जाग पड़ीं।

टेलीफोन की घंटी बजी और जार्की ने रिसीवर की तरफ हाथ बढ़ाया।

'चुप रहो, मैं कुछ सुन नहीं पाता !' उसने शोर मचाते हुए कोमसोमोलों से, जो मंत्री के दफ्तर में भीड़ लगाये थे, चिल्लाकर कहा।

हंगामा कुछ कम हो गया।

'हलो ! अच्छा तुम हो। हाँ, अभी अभी। एजेंडे पर क्या-क्या है ? ओ वही पुरानी चीज, घाट से ईंधन की लकड़ी घसीटकर लाना। क्या कहा, नहीं, उसे कहीं नहीं भेजा गया है। वह यहीं है। उससे बात करना चाहती हो ? एक मिनट रुको।'

जार्की ने पावेल को बुलाया।

'कामरेड उस्तिनोविच तुमसे बात करना चाहती हैं,' उसने कहा और रिसीवर पावेल के हाथ में पकड़ा दिया।

पावेल ने रिता की आवाज को कहते सुना, 'मैं सोचती थी तुम शहर में नहीं होगे। आज शाम मैं खाली हूँ। तुम आ क्यों नहीं जाते ? मेरा भाई चला गया है। वह इस शहर से गुजर रहा था और मुझसे मिलने चला आया। हमने एक-दूसरे को दो साल से नहीं देखा था।'

उसका भाई !

पावेल ने और कुछ नहीं सुना। उसको उस बदनसीब शाम की याद आ रही थी और अपने उस निश्चय की याद आ रही थी जो उसने उसी रात को पुल के नीचे किया था। हाँ, उसे आज ही शाम को रिता के पास जाना चाहिए और इस मामले को खत्म कर देना चाहिए। प्रेम के संग पीड़ाएँ और दुश्चिन्ताएँ भी बहुत सी लगी रहती हैं। यह क्या ऐसी चीजों का वक्त है ?

उस आवाज ने पावेल के कान में कहा, 'तुम मुझे सुन नहीं पा रहे हो क्या ?'

'हाँ, हाँ, मैं सुन रहा हूँ। बहुत अच्छा। मैं ब्यूरो की मीटिंग के बाद आऊँगा,' कहते हुए पावेल ने रिसीवर रख दिया।

उसने रिता की आँखों में आँखें डालकर देखा और बाँज की लकड़ी की बनी मजबूत मेज के सिरे को पकड़ते हुए बोला, 'मैं अब शायद तुमसे मिलने न आ सकूँगा।'

पावेल ने रिता की घनी बरौनियों को उसकी बात सुनकर ऊपर खिंचते देखा। कागज पर उसकी पेन्सिल, जो दौड़ रही थी, रुक गयी और खुले हुए पैड पर निश्चेष्ट खड़ी रही।

'क्यों ?'

'वक्त नहीं निकल पाता। तुम्हें तो खुद मालूम है कि हम काफी मुश्किलों

से गुजर रहे हैं। मुझे अफसोस है, मगर शायद यह चीज हमें बन्द करनी ही पड़ेगी ...।'

पावेल को लग रहा था कि उसके आखिरी शब्द कुछ बहुत दृढ़ न लगे होंगे।

'यह द्रविड़ प्राणायाम तुम क्यों कर रहे हो ?' वह भीतर ही भीतर तैश खा रहा था। 'सीधे-सीधे हमला करने की हिम्मत तुममें नहीं है।'

प्रकट उसने कहा : 'इसके अलावा मैं कई दिन से तुमसे यह कहना चाह रहा था कि तुम बात को जिस तरह से समझाती हो, उसे समझने में मुझे कठिनाई होती है। जब हम लोग सेगल के संग पढ़ते थे, उस वक्त हमने जो कुछ सीखा था, वह न जाने कैसे मेरे सिर में टिक गया। मगर तुमसे जो कुछ सीखा, उसके बारे में मैं यह बात नहीं कह सकता। मुझे हर बार सबक के बाद तोकारेव के पास जाना पड़ा है, चीज को दुबारा ठीक से समझने के लिए। मैं जानता हूँ कि यह मेरी ही गलती है — मेरे सिर में बात घुसती ही नहीं। तुम्हें दूसरा कोई शिष्य ढूँढ़ना पड़ेगा, जिसमें कुछ ज्यादा बुद्धि हो।'

उसने रिता की तेज निगाहों से अपनी निगाहें फेर लीं और फिर समझ-बूझ कर, साहस बटोरकर उसने कह ही डाला : 'इसलिए मैं तो समझता हूँ कि हमारा इस चीज को जारी रखना वक्त की बरबादी ही है।'

फिर वह उठा, संभालकर पैर से कुर्सी सरकायी और रिता के झुके हुए सिर और चेहरे को देखा जो लैम्प की रोशनी में पीला नजर आ रहा था। उसने अपनी टोपी सिर पर लगा ली।

'अच्छा, चलूँ कामरेड रिता। मुझे दुख है कि मैंने तुम्हारा इतना वक्त बर्बाद किया। मुझे बहुत पहले ही तुमको यह बात बतला देनी चाहिए थी। मुझसे यही गलती हुई।'

रिता ने यंत्रवत् अपना हाथ उसकी तरफ बढ़ा दिया, मगर उसके इस अचानक रूखेपन से वह इतनी स्तब्ध हो गयी थी कि दो-एक शब्दों से ज्यादा नहीं बोल सकी।

'मैं तुम्हें दोष नहीं देती, पावेल। अगर मैं चीजों को तुम्हें ठीक से समझाने का कोई ढंग नहीं निकाल सकी, तो दरअसल मुझे यही पुरस्कार मिलना चाहिए था।'

पावेल भारी कदमों से दरवाजे की तरफ चला। बाहर निकलकर उसने धीरे से दरवाजा बन्द किया। सीढ़ी से नीचे उतरकर वह पल भर को रुका और सोचने लगा — अभी भी देर नहीं हुई है, जाकर बात की सफाई की जा सकती है ...। मगर फायदा ? ऐसा करने से क्या हासिल ? उसका उपेक्षापूर्ण जवाब पाकर फिर बाहर चले आने के लिए ! नहीं।

साइडिंगों पर बेकार इंजनों और रेल के टूटे-फूटे डिब्बों का कब्रिस्तान बढ़ चला। लकड़ी के वीरान कारखाने में हवा लकड़ी के सूखे बुरादे को इधर-उधर बिखेर रही थी।

और शहर के चारों ओर जंगल की झाड़ियों और गहरे-गहरे नालों में ओर्लिक के गिरोह के लोग छिपे हुए थे। दिन को वे लोग आस-पास के गाँवों और जंगली इलाकों में चुपचाप पड़े रहते थे, मगर रात को धीरे से रेल की लाइनों पर निकल आते थे, बेदर्दी से उन्हें उखाड़कर फेंक देते थे और अपना यह दुष्ट काम करके वापस अपनी माँद में पहुँच जाते थे।

रेल की लाइनें उखड़ जाने से न जाने कितने इंजन, लोहे के घोड़े, रेलवे के बाँध पर से लुढ़कते हुए नीचे पहुँच जाते थे। और नतीजा यह होता था कि डिब्बे टूटकर चकनाचूर हो जाते, जिन्दा लोग मलबे के नीचे पिस जाते और बेशकीमती अनाज खून और मलबे में लिथड़ जाता।

यह गिरोह अचानक किसी छोटे से कस्बे पर टूट पड़ता और डरी हुई मुर्गियाँ कुड़कुड़ करती हुई सब तरफ भागने लगतीं। यों ही कुछ गोलियाँ इधर-उधर चला दी जातीं। वोलोस्त सोवियत की इमारत के सामने राइफलें थोड़ी देर कड़कड़ातीं और ऐसी आवाज होती जैसे सूखी झाड़ी पैर के नीचे दबने से होती है और वे डाकू अपने मोटे-ताजे घोड़ों पर सवार गाँव में यहाँ से वहाँ दौड़ लगाते और जो भी रास्ते में पड़ जाता उसे काटकर रख देते। वे अपने शिकारों को इतने इतमीनान से तलवार चलाकर काटते जैसे लकड़ी को चीर रहे हों। गोलियाँ वे लोग कम ही चलाते थे क्योंकि गोलियों की कमी थी।

जिस तूफानी तेजी से ये डाकू आते उसी तेजी से लौट भी जाते। डाकुओं के इस गिरोह की आँखें और कान सब जगह थे। वे आँखें उस छोटे से सफेद मकान की दीवारों को भेदकर, जिसमें वोलोस्त सोवियत था, अन्दर देख लेती थीं क्योंकि पादरी के मकान और कुलकों के घरों से जंगल की झाड़ियों तक अदृश्य सूत्र मौजूद थे। गोले-बारूद के डिब्बे, सुअरों के ताजे गोश्त के ढेर, नीले रंग की कच्ची शराब की बोतलें — सब उसी रास्ते जंगल पहुँच जाती थीं। उसी सूत्र से खबरें भी पहुँच जाती थीं, जो पहले छोटे ऐटमनों के कान में फुसफुसाकर कही जातीं और फिर नाना मार्गों से होकर खुद ओर्लिक के पास पहुँच जातीं।

इस गिरोह में दो-तीन सौ खूनियों से ज्यादा न रहे होंगे, मगर अब तक उन्हें पकड़ा न जा सका था। वे छोटी-छोटी कई टुकड़ियों में बँट जाते और फिर एक साथ दो-तीन इलाकों में अपनी कार्रवाई करते। उन सबको पकड़ना असंभव था। पिछली रात का डाकू अगले दिन बहुत शान्तिप्रिय किसान की शकल में दिखायी देता। वह अपने बागीचे में काम करता होता या अपने घोड़े

को रातिब देता होता या अपने दरवाजे पर खड़ा इतमीनान से पाइप पी रहा होता और एकदम शून्य आँखों से घुड़सवार दस्तों को अपने पास से गुजरते हुए देखता। उस वक्त उसे देखकर कौन कह सकता था कि कल रात यही आदमी डाकू का काम कर रहा था।

अपनी रेजीमेंट लेकर अलेक्जेंडर पुजीरेव्स्की जान लगाकर इन डाकुओं के पीछे लगा हुआ था और तीनों जिलों में उन्हें यहाँ से वहाँ खदेड़ता फिर रहा था। कभी-कभी उसे डाकुओं का सुराग भी मिल जाता। एक महीने बाद ओर्लिक को मजबूर होकर अपने बदमाशों को दो जिलों से हटाना पड़ा और अब वह बहुत छोटे से इलाके में घिर गया था।

पेतल्युरा के गिरोहों को लाल फौज ने श्वेत पोलैंड में खदेड़ दिया था। उन्हीं के अवशेष वारसा के विदेशी मिशनों के साथ मिलकर इस विद्रोह में हिस्सा लेने की तैयारी कर रहे थे। पेतल्युरा की रेजीमेंटों के बचे-खुचे लोगों को इकट्ठा करके एक हमलावर दस्ता तैयार किया जा रहा था।

विद्रोहियों की केन्द्रीय कमेटी का एक संगठन शेपेतोवका में भी था। उसमें सैंतालीस सदस्य थे जिनमें से ज्यादातर पुराने सक्रिय क्रान्ति-विरोधी लोग थे। उन्हें नगर की चेका ने उनका विश्वास करके छोड़ दिया था।

फादर वासिली, एन्साइन विनिक और पेतल्युरा अफसर कुजमेंको इस संगठन के नेता थे। पादरी की लड़कियाँ, विनिक के बाप और भाई तथा समोतिन्या नाम का एक आदमी, जो तिकड़म से कार्यकारिणी के दफ्तर में घुस गया था, जासूसी किया करते थे।

योजना यह थी कि रात को दस्ती बमों से सरहद पर के स्पेशल डिपार्टमेंट पर हमला किया जाय, कैदियों को छुड़ा लिया जाय और अगर मुमकिन हो तो रेलवे स्टेशन पर कब्जा कर लिया जाय।

इसी बीच अफसर गुप्त रूप से शहर में जमा किये जा रहे थे, क्योंकि वही विद्रोह का केन्द्र था और लुटेरों के गिरोहों को आसपास के जंगलों में भेजा जा रहा था। यहाँ से विश्वसनीय दलालों के जरिये रूमानिया और खुद पेतल्युरा से सम्पर्क रखा जाता था।

फियोदोर जुखराई स्पेशल डिपार्टमेंट के अपने दफ्तर में छः रात से सोया नहीं था। वह उन पाँच बोल्शेविकों में से था जिन्हें दुश्मनों की इस साजिश के बारे में मालूम था। उस पुराने मल्लाह जुखराई को उस शिकारी की सी अनु-

भूति हो रही थी जिसने अपने शिकार को घेर लिया हो और अब उस जानवर के उछलकर हमला करने का इन्तजार कर रहा हो।

शोर मचाने और दूसरे लोगों को इस खतरे की बात बताने की भी उसे हिम्मत न होती थी। खून के प्यासे इस राक्षस को मारना ही होगा। तभी, केवल तभी, शान्ति के साथ काम करना मुमकिन हो सकेगा और हर वक्त डर-डरकर हर झाड़ी के पीछे नहीं देखना होगा। मगर ऐसा नहीं करना चाहिए कि जानवर चौकन्ना होकर भाग जाय। जीवन-मरण के ऐसे संघर्षों के अन्त में सहन-शक्ति और दृढ़ता की ही जीत होती है।

कदम उठाने की अब घड़ी आ गयी। शहर में षड्यंत्रकारियों के तमाम गुप्त अड्डों में ही कहीं पर बगावत की घड़ी भी तय हो गयी थी : कल की रात।

मगर जिन पाँच बोल्शेविकों को इस चीज का पता था उन्होंने पहले ही हमला करने का फैसला किया। उन्होंने कहा : नहीं, हमें तो आज ही रात कदम उठाना है।

उसी शाम एक बख्तरबन्द गाड़ी चुपके से रेलवे यार्ड से बाहर निकली। उसके बाहर निकलते ही बड़ा सा फाटक उतने ही चुपके से बन्द हो गया।

कोड की भाषा में दिये गये तार उड़ चले और उनकी माँग के जवाब में उन मुस्तैद और चौकन्ने आदमियों ने, जिनके हाथों में जनतंत्र की सुरक्षा सौंपी गयी थी, षड्यंत्रकारियों के अड्डों का सफाया करने के लिए फौरन कदम उठाये।

अकिम ने ज़ार्की को टेलीफोन किया।

'सेल मीटिंग ठीक चल रही है ? बहुत अच्छा। यहाँ पर एक कान्फ्रेंस हो रही है, उसके लिए फौरन यहाँ चले आओ और पार्टी की जिला कमेटी के मंत्री को भी अपने साथ लेते आओ। ईंधन की समस्या, हमने जितनी सोची थी, उससे भी ज्यादा गंभीर है। तुम्हारे यहाँ आ जाने पर हम लोग विस्तार से बातें करेंगे।' अकिम दृढ़ आवाज में जल्दी-जल्दी बोल रहा था।

ज़ार्की ने गुर्राकर रिसीवर के अन्दर कहा, 'यह ईंधन की समस्या तो हम सबको पागल कर देगी।'

लित्के बेतहाशा तेजी से दोनों मंत्रियों को हेडक्वार्टर में ड्राइव कर ले गया। दूसरी मंजिल की सीढ़ियों पर चढ़ते हुए उन्होंने फौरन इस बात को भाँप लिया कि उन्हें ईंधन की समस्या के बारे में बात करने के लिए नहीं बुलाया गया है।

दफ्तर के मैनेजर की मेज पर एक हल्की मशीनगन रखी हुई थी और उसके बगल में स्पेशल टास्क फोर्स के तोपची काम कर रहे थे। नगर की पार्टी और कोमसोमोल संगठनों से आये खामोश सन्तरियों से गलियारे भरे हुए थे। मंत्री के दफ्तर में पार्टी की प्रादेशिक कमेटी के ब्यूरो की खास जरूरी

मीटिंग खत्म होनेवाली थी।

दरवाजे के ऊपर खिड़की में से दो तार निकले हुए थे जो मैदानी टेलीफोनों से जुड़े हुए थे। कमरे में बातचीत की धीमी भुनभुनाहट थी। वहाँ अकिम, रिता और मिखाइलो मौजूद थे। रिता लाल सेना के लोगों की हेलमेट लगाये थी, खाकी स्कर्ट और चमड़े की जाकेट पहने थी जिसकी पेटी से एक भारी माउज़र पिस्तौल झूल रहा था — यह वही वर्दी थी जो वह मोर्चे पर पहना करती थी जब वह कम्पनी की राजनीतिक शिक्षक थी।

'यह सब क्या हो रहा है ?' ज़ार्की ने आश्चर्य से पूछा।

'अलर्ट ड्रिल, वानिया। हम लोग अभी तुम्हारे इलाके में जा रहे हैं। पाँचवें इन्फैंट्री स्कूल में प्रैक्टिस रैली है। कोमसोमोल अपनी सेल मीटिंगों से सीधे वहाँ पहुँचेंगे। खास बात यह है कि हम लोग वहाँ पहुँच तो जायें, मगर किसी का ध्यान हमारी ओर आकर्षित न हो।'

पुराने फौजी स्कूल का मैदान जिसमें बाँज के पुराने विशाल पेड़ खड़े थे और जिसके ठहरे हुए पानी की तलैया में सेवार ही सेवार उगी हुई थी और जिसके चौड़े-चौड़े रास्तों की सफाई नहीं हुई थी — सब खामोशी में डूबे थे।

मैदान के बीचोबीच एक ऊँची सी सफेद दीवार के पीछे स्कूल की इमारत थी जिसमें अब लाल फौज के कमांडरों के लिए पाँचवाँ इन्फैंट्री स्कूल था। बहुत रात बीत चुकी थी। इमारत की ऊपरी मंजिल पर अंधेरा था। बाहर से सब कुछ खामोश था और उधर से गुजरनेवाला आदमी यही सोचता कि स्कूल के सारे लोग सो रहे हैं। मगर लोहे के फाटक खुले क्यों थे और वे दो अंधेरी आकृतियाँ बड़े-बड़े मेंढकों की तरह वहाँ फाटक पर खड़ी क्या कर रही थीं ? रेलवे इलाके के तमाम हिस्सों के लोग, जो यहाँ इकट्ठे हुए थे, अच्छी तरह जानते थे कि रात का अलर्ट हो जाने पर स्कूल के लोग सो नहीं सकते। उन्होंने अपनी कोमसोमोल और पार्टी सेल की मीटिंगें उस छोटे से ऐलान के बाद फौरन छोड़ दी थीं। वे खामोशी से चले आ रहे थे, कभी अकेले, कभी दो, मगर कभी तीन से ज्यादा नहीं और उनमें से हर एक के पास कम्युनिस्ट पार्टी या कोमसोमोल की सदस्यता का कार्ड था। उसके बिना कोई भी लोहे के फाटक में नहीं घुस सकता था।

सभा भवन, जिसमें काफी बड़ी भीड़ इकट्ठी हो चुकी थी, रोशनी से जगमग कर रहा था। खिड़कियों पर तम्बू बनाने में इस्तेमाल होनेवाले किरमिच के मोटे-मोटे पर्दे टाँग दिये गये थे। बोल्शेविक, जो यहाँ बुलाये गये थे, घर की बनी सिगरेटें खामोशी से पी रहे थे और आपस में दिल्लगी कर रहे थे कि देखो ड्रिल के लिए भी कितनी एहतियात बरती जा रही है। कोई भी यह नहीं महसूस कर रहा था कि यह सचमुच का अलर्ट है। लोग समझते

थे कि स्पेशल ड्यूटी की टुकड़ियों में अनुशासन कायम रखने के लिए यह चीज की जा रही है। मगर तपा हुआ सिपाही स्कूल के कम्पाउंड में दाखिल होते ही सच्चे अलर्ट के लक्षणों को पहचान लेता था। बहुत ही ज्यादा सावधानी बरती जा रही थी। विद्यार्थियों के कानों में आदेश कहे जा रहे थे और उनकी प्लैटूनें बाहर कतार बनाती जा रही थीं। मशीनगनें कम्पाउंड के भीतर खामोशी से लायी जा रही थीं और इमारत की किसी भी खिड़की से रोशनी की एक हलकी सी किरण भी बाहर झाँकती नहीं दिखायी देती थी।

'मितियाई, मामला कुछ संगीन मालूम होता है ?' पावेल कोर्चागिन ने दुबावा से पूछा जो एक खिड़की की चौखट पर एक लड़की के बगल में बैठा था और जिसे दो दिन पहले पावेल ने जार्की के घर पर देखा था।

दुबावा ने खुशदिली से पावेल के कंधे पर हाथ मारा।

'डर रहे हो, क्यों ? मगर कोई बात नहीं, हम तुम लोगों को लड़ना सिखा देंगे। तुम दोनों एक-दूसरे को नहीं जानते। या जानते हो ?' कहते हुए उसने उस लड़की की ओर इशारा किया। 'इसका नाम 'आना' है, नाम का दूसरा हिस्सा मुझे नहीं मालूम, मगर इसका पद मैं जानता हूँ, यह आन्दोलन और प्रचार केन्द्र की इन्चार्ज है।'

वह लड़की, जिसका दुबावा ने ऐसे मजाक के ढंग से परिचय दिया था, कोर्चागिन को दिलचस्पी से देख रही थी और अपने बालों के एक गुच्छे को पीछे फेर रही थी जो उसके चमकीले गुलाबी रंग के रूमाल के नीचे से खिसककर बाहर आ गया था। कोर्चागिन की आँखें उसकी आँखों से मिलीं और दो-एक क्षण के लिए दोनों में एक मूक प्रतियोगिता सी जारी रही। बड़ी-बड़ी पलकों के नीचे से उसकी चमकती हुई काली-काली आँखें पावेल की आँखों को चुनौती दे रही थीं। पावेल ने उधर से दृष्टि हटायी और दुबावा को देखने लगा। यह महसूस करके कि शर्म के मारे उसका मुँह लाल हुआ जा रहा है, उसे कुछ चिढ़ सी आयी और मुँह कुछ बन गया।

उसी क्षण हॉल में हलचल हुई। एक कम्पनी कमांडर कुर्सी पर चढ़ गया और चिल्लाया : 'पहली कम्पनी के लोगो, इधर आकर खड़े हो जाओ ! जल्दी करो साथियो, जल्दी।'

प्रादेशिक कार्यसमिति के अध्यक्ष और अकिम के साथ जुखराई अन्दर दाखिल हुआ। वे लोग अभी-अभी आये थे। हॉल के एक सिरे से दूसरे सिरे तक लोगों की कतारें खड़ी थीं।

प्रादेशिक कार्यसमिति के अध्यक्ष एक ट्रेनिंग मशीनगन पर चढ़ गये और उन्होंने अपना हाथ उठाया।

उन्होंने कहा : 'साथियो, आपको एक बहुत ही जरूरी और संगीन मसले

के लिए यहाँ बुलाया गया है। इस वक्त मैं आपको जो कुछ बतलाने जा रहा हूँ, वह कल तक सुरक्षा के खयाल से नहीं बतलाया जा सकता था। कल रात को यहाँ पर और उक्रेन के दूसरे शहरों में एक क्रान्ति-विरोधी विद्रोह शुरू होनेवाला है। शहर में ह्वाइट-गार्ड अफसर भरे हुए हैं। लुटेरों की टुकड़ियाँ शहर के चारों तरफ जमा कर दी गयी हैं। इन षड्यंत्रकारियों में से कुछ लोग बख्तरबन्द गाड़ियों की टुकड़ी में घुस गये हैं और वहाँ पर ड्राइवरों का काम कर रहे हैं। मगर चेका ने समय रहते इस साजिश का पता पा लिया है। हम सभी पार्टी और कोमसोमोल संगठनों को हथियार दे रहे हैं। पहली और दूसरी कम्युनिस्ट बटालियनें फौजी स्कूल की टुकड़ियों और चेका के साथ मिलकर काम करेंगी। फौजी स्कूल की यूनिटों ने मोर्चा लेना शुरू भी कर दिया है। अब तुम्हारी बारी है, साथियो! अपने हथियार लेकर पन्द्रह मिनट के अन्दर-अन्दर मोर्चे पर जाने के लिए तैयार हो जाओ! कामरेड जुखराई इस फौजी कार्रवाई का नेतृत्व करेंगे। यूनिट कमांडर उनसे आदेश लेंगे। परिस्थिति कितनी गंभीर है, इसके बारे में ज्यादा जोर देना मेरे लिए जरूरी नहीं है। कल की बगावत को आज ही कुचल देना होगा।'

पन्द्रह मिनट बाद हथियारों से लैस बटालियन स्कूल के अहाते में कतार बाँधे खड़ी थी।

जुखराई ने निश्चल खड़े सैनिकों की कतारों पर निगाह दौड़ायी। उनके सामने तीन कदम पर दो आदमी चमड़े की पेटी कमर में बाँधे खड़े थे। एक था बटालियन कमांडर मिनिआइलो जो लोहे के कारखाने का एक मजदूर था। वह यूराल का रहनेवाला और बहुत हट्टा-कट्टा आदमी था। और उसके बगल में खड़ा था कमिसार अकिम। उसके बायीं तरफ पहली कम्पनी की प्लैटूनें थीं और उनके आगे दो कदम पर कम्पनी के कमाँडर और राजनीतिक शिक्षक खड़े थे। उनके पीछे कम्युनिस्ट बटालियन की खामोश कतारें खड़ी थीं। इस बटालियन में तीन सौ आदमी थे।

फियोदोर ने सिगनल दिया, 'कार्रवाई शुरू करने का वक्त हो गया।'

वे तीन सौ आदमी उजड़ी हुई वीरान सड़कों पर मार्च करने लगे।

शहर सो रहा था।

दिकाया के सामने, लवोव्स्काया सड़क पर बटालियन ने कतार तोड़ी। यहीं पर उसे अपनी कार्रवाई शुरू करनी थी।

खामोशी से, बिना कोई भी आवाज किये उन्होंने इमारतों को घेर लिया। एक दूकान की सीढ़ी पर हेडक्वार्टर कायम किया गया।

शहर के चौक की तरफ से एक मोटर लवोव्स्काया सड़क पर तेजी से इधर आ रही थी और उसकी हेडलाइटों से सामने का रास्ता चमक रहा था।

बटालियन की कमांड चौकी के सामने पहुँचकर वह झटके से रुक गयी।

इस बार ह्यूगो लित्के अपने पिता को साथ लाया था। कमांडेंट कूदकर गाड़ी से बाहर आया और उसने गर्दन मोड़कर अपनी लेटिश भाषा में कुछ छोटे-छोटे जुमले अपने लड़के से कहे। मोटर तेजी से आगे बढ़ी और पलक मारते सड़क के मोड़ पर जाकर आँख से ओझल हो गयी। लित्के भूत की तरह गाड़ी चला रहा था। उसकी आँखें सड़क पर चिपकी हुई थीं और उसके हाथ इस तरह कसकर स्टियरिंग ह्वील को पकड़े थे जैसे वह उसका ही एक अंग हो।

हाँ, आज रात लित्के के तूफानी रफ्तार से गाड़ी चलाने की जरूरत थी। इस वक्त तेज भगाने के लिए उसको हरगिज गार्ड हाउस में दो रात बन्द रहने की सजा न मिलेगी!

और ह्यूगो उल्का की तरह सड़क पर तेजी से भागा जा रहा था।

जुखराई को, जिसे नौजवान लित्के पलक मारते शहर के एक छोर से दूसरे छोर पर पहुँचा रहा था, लित्के की प्रशंसा करनी ही पड़ी, 'आज रात अगर तुमने किसी को कुचला नहीं, तो कल तुम्हें सोने की एक घड़ी इनाम में मिलेगी।'

ह्यूगो बड़ा खुश था और बोला, 'मैं तो सोचता था कि उस मोड़ पर इतनी तेजी से गाड़ी मोड़ने के लिए मुझे दस दिन जेल में रहना पड़ेगा...।'

पहले वार षड्यंत्रकारियों के हेडक्वार्टर पर किये गये। थोड़ी ही देर में कैदियों की बड़ी-बड़ी टोलियाँ और कागजात के गट्ठर स्पेशल डिपार्टमेंट के हवाले किये जा रहे थे।

दिकाया सड़क पर मकान नम्बर ११ में जुर्बर्ट नाम का एक आदमी रहता था जिसने चेका को मिली हुई सूचना के अनुसार, इस ह्वाइट गार्ड विद्रोह में बहुत आगे बढ़कर हिस्सा लिया था। उन अफसर यूनिटों की, जो पोडोल के इलाके में काम करनेवाली थीं, फेहरिस्तें जुर्बर्ट के पास थीं।

लित्के का पिता खुद गिरफ्तारी करने के लिए दिकाया सड़क पर पहुँचा। जुर्बर्ट के मकान की खिड़कियाँ एक बागीचे में खुलती थीं, और इस बागीचे और पहले के एक स्त्रियों के मठ के बीच सिर्फ एक ऊँची दीवार थी। जुर्बर्ट मकान पर नहीं था। उसके पड़ोसियों ने बतलाया कि सारे दिन किसी ने उसे नहीं देखा था। तलाशी ली गयी और नाम तथा पतों की फेहरिस्तें और उनके साथ-साथ दस्ती बमों का एक बक्सा भी मिला। लित्के ने जुर्बर्ट को पकड़ने के लिए अपने आदमियों को गुप्त जगहों पर बिठलाने का हुक्म दे दिया और उसके बाद उन कागजात का मुआइना करने के लिए कमरे में थोड़ी देर ठहरा रहा।

फौजी स्कूल का वह नौजवान विद्यार्थी जिसे नीचे बागीचे में पहरे पर

खड़ा किया गया था, बागीचे के उस कोने से जहाँ वह था, खिड़की की रोशनी को देख सकता था। वहाँ उसे अँधेरे में अकेले रहना अच्छा नहीं लग रहा था। कुछ डर भी लग रहा था। उसे दीवार पर निगाह रखने के लिए कहा गया था। मन को ढाढ़स देनेवाली वह रोशनी उसकी जगह से बहुत दूर मालूम होती थी। और उससे भी बुरी बात यह हुई कि कमबख्त चाँद बादलों के पीछे छिप जाता था। रात के अंधेरे में उन झाड़ियों में जैसे अपनी एक अलग डरावनी जिन्दगी आ जाती हो। वह नौजवान सिपाही अपनी संगीन से अपने चारों ओर के अँधेरे को भोंक रहा था। कुछ नहीं, कहीं कुछ नहीं।

'इन लोगों ने यहाँ मुझे क्यों खड़ा किया? दीवार बहुत ऊँची है, उस पर कोई चढ़ तो सकता नहीं। मैं सोचता हूँ कि खिड़की के पास जाकर अन्दर झाँकूँ।' दीवार पर दुबारा निगाह दौड़ाते हुए वह अपने उस नम और अँधेरे और सड़ी-गली घास और काई की बदबू से भरे हुए कोने से बाहर आया। खिड़की के पास पहुँचकर उसने देखा कि उसी वक्त लित्के ने मेज पर से काग-जात उठाये। उसी क्षण दीवार के ऊपर एक छायाकृति आयी। उस दीवार पर से खिड़की के पास का सन्तरी और कमरे में अन्दर का आदमी दोनों साफ दिखायी देते थे। बिल्ली जैसी फुर्ती से वह छायाकृति पेड़ की एक शाख पकड़कर झूली और नीचे जमीन पर कूद पड़ी। वह चुपके-चुपके पैर दबाकर अपने शिकार तक आयी। एक वार हुआ और सन्तरी जमीन पर ढेर हो गया। जहाजियों वाली छुरी सन्तरी की गर्दन में पूरी मूठ तक भुंकी हुई थी।

बागीचे में एक गोली की आवाज हुई जिससे इमारत के चारों ओर खड़े हुए लोगों में हरकत आ गयी। उनमें से छः लोग मकान की तरफ दौड़े। रात की निस्तब्धता में उनके पैरों की आवाज जोर से सुनायी दे रही थी। लित्के मुँह के बल मेज पर गिरा पड़ा था और उसके सिर के घाव से खून बह रहा था। वह मर चुका था। खिड़की के शीशे चकनाचूर हो गये थे। मगर कातिल को कागजात हथियाने का वक्त नहीं मिला था।

मठ की दीवार की तरफ और कई गोलियों की आवाजें सुनायी दीं। खूनी सड़क की ओर की दीवार पर चढ़ गया था और अब लुकियानोव मैदान के रास्ते से भाग जाने की कोशिश कर रहा था। वह भागते-भागते गोली चलाता जा रहा था। मगर एक गोली ने आकर उसका काम तमाम कर दिया।

रात भर तलाशियाँ चलती रहीं। सैकड़ों लोग जिनके नाम मकान कमिटियों की किताबों में दर्ज नहीं थे और जिनके पास संदिग्ध कागजात और हथियार पाये गये थे, उन्हें चेका में भेज दिया गया। वहाँ एक कमीशन संदिग्ध लोगों की छानबीन कर रहा था।

यहाँ-वहाँ षड्यंत्रकारियों ने मुकाबला करने की कोशिश की। जिलिया-

न्स्काया स्ट्रीट के एक मकान की तलाशी लेते वक्त एन्टन लेबेदेव दो कदम नजदीक से छोड़ी गयी एक गोली से मारा गया।

उस रात सोलोमेंका बटालियन के पाँच आदमी मारे गये और चेका ने उस पक्के बोल्शेविक और जनतंत्र के वफादार पहरुए जान लित्के से हाथ धोया।

मगर क्रान्ति-विरोधी ह्वाइट गार्ड विद्रोह को उभरने के पहले ही कुचल दिया गया।

उसी रात फादर वासिली, उसकी लड़कियों और उनके गिरोह के दूसरे लोगों को शेपेतोवका में गिरफ्तार कर लिया गया।

तनाव कम हो गया। मगर जल्द ही एक नया दुश्मन शहर के लिए खतरा बन गया। वह खतरा था रेलवे का बेकार हो जाना — मानो उसे लकवा मार गया हो। इसका मतलब यह था कि लोग भूख से और आनेवाले जाड़े में सर्दी से मरते।

अब सब कुछ गल्ले और ईंधन पर निर्भर था।

ग्यारह

फियोदोर ने मुँह से अपना छोटी डंडीवाला पाइप निकाला और कुछ सोचते हुए सतर्कतापूर्वक उँगली से उसकी राख को दबाया : पाइप बुझ चुका था।

एक दर्जन सिगरेटों से निकले हुए भूरे धुँए का एक घना बादल छत के नीचे और उस कुर्सी के ऊपर मंडरा रहा था, जिस पर प्रादेशिक कार्यसमिति के अध्यक्ष बैठे हुए थे। कमरे के कोनों में मेज के इर्द-गिर्द बैठे हुए लोगों के चेहरे, धुएँ के उसे कुहासे में धुँधले नजर आ रहे थे।

अध्यक्ष के बगल में तोकारेव आगे को झुका हुआ बैठा था। वह खीझा हुआ-सा अपनी छोटी दाढ़ी को बार-बार नोच रहा था और जब-तब आँख के कोने से उस नाटे गंजे आदमी को देख लेता था जो अपनी बुलन्द आवाज में बराबर बोलता चला जा रहा था जैसे उसकी बात का कोई अन्त ही न हो। मगर उसकी बात खाली अंडे की तरह बेमतलब और खोखली थी।

अकिम ने उस बूढ़े मजदूर की आँख के भाव को भाँपा और उसे गाँव में अपने बचपन के दिनों में देखे हुए उस मुरगे की याद हो आयी जिसकी आँखों में भी अपने दुश्मन पर हमला करने के पहले यही भाव होता था।

पार्टी की प्रादेशिक कमेटी की बैठक को एक घंटे से ज्यादा हो गया था। वह गंजा आदमी रेलवे की ईंधन कमेटी का अध्यक्ष था।

अपने सामने पड़े हुए कागजात के ढेर में अपनी सुबुक उँगलियाँ दौड़ाता हुआ वह गंजा आदमी बोलता चला जा रहा था :

'... ऐसी हालतों में प्रादेशिक कमेटी और रेलवे की प्रबंध समिति के फैसले को पूरा करना, साफ ही बिलकुल नामुमकिन है। मैं फिर अपनी बात को दुहराता हूँ कि अब से एक महीने बाद भी हम चार सौ क्यूबिक मीटर से ज्यादा ईंधन नहीं दे सकेंगे। जहाँ तक दस लाख अस्सी हजार क्यूबिक मीटर की माँग की बात है, वह तो सरासर ...' वक्ता ठीक शब्द के लिए अटका, 'सरासर ... खयाली पुलाव है।' उसने अपनी बात खत्म की और उसका छोटा-सा मुँह कुछ इस भाव से लटक गया मानो उसे चोट लगी हो।

बड़ी देर तक खामोशी रही।

फियोदोर ने नाखून से अपने पाइप को खोदा और उसकी राख को गिरा दिया। आखिरकार तोकारेव ने खामोशी तोड़ी।

'फिजूल बकवास करने से कोई फायदा नहीं,' उसने अपनी गूँजती हुई भारी आवाज में शुरू किया, 'रेलवे की ईंधन कमेटी के पास ईंधन नहीं है, कभी नहीं था और आगे भी होने की उसे उम्मीद नहीं ... ठीक ?'

गंजे आदमी ने अपना कंधा उचकाया।

'माफ कीजिए कामरेड, हमने काफी ईंधन इकट्ठा किया था लेकिन यातायात के साधनों की कमी के कारण ...' उसने अपना थूक निगला और अपनी चमकती हुई खोपड़ी को एक चारखाने के रूमाल से पोंछा। उसने अपने रूमाल को जेब में डालने की कई बार कोशिश की और आखिरकार परेशान होकर और घबराकर उसे अपने पोर्टफोलियो के नीचे घुसा दिया।

'आखिर आपने ईंधन की सप्लाई के सिलसिले में क्या किया ? उन बड़े-बड़े विशेषज्ञों को, जिनका षड्यंत्र में कुछ हाथ था, गिरफ्तार हुए भी तो कई रोज हो गये,' देनेको ने कोने की अपनी जगह से कहा।

वह गंजा आदमी उसकी ओर मुड़ा और बोला, 'मैंने रेलवे के प्रबंधकर्ताओं को तीन बार लिखा कि जब तक हमें यातायात की उचित सुविधाएँ नहीं मिलतीं, कुछ भी करना असंभव ...'

तोकारेव ने उसको बीच में ही टोका, 'हम इस बात को कई बार सुन चुके हैं,' उसने खुश्क आवाज में कहा और उस गंजे आदमी को शत्रुता की आँखों से देखा। 'आप क्या हम लोगों को बिलकुल बेवकूफ समझते हैं ?'

इन शब्दों को सुनकर तो जैसे गंजे आदमी की रीढ़ की हड्डी में एक सुरसुरी दौड़ गयी।

उसने धीमी आवाज में जवाब दिया, 'क्रान्ति के दुश्मनों की हरकतों के लिए मैं जवाबदेही नहीं ले सकता ।,

'मगर आपको पता था या नहीं कि लकड़ी रेलवे लाइन से बहुत दूर काटकर गिरायी जा रही है ?'

'मैंने इस चीज के बारे में सुना था, मगर मैं अपने बड़े अफसरों का ध्यान ऐसी गड़बड़ियों की तरफ नहीं दिला सकता था, क्योंकि वे मेरे क्षेत्र से बाहर हो रही थीं ।'

'इस काम के लिए तुम्हारे पास कितने आदमी हैं ?' ट्रेड यूनियन काउंसिल के अध्यक्ष ने पूछा ।

'करीब दो सौ,' गंजे आदमी ने जवाब दिया ।

'इसका मतलब है, हर हरामखोर के पीछे एक साल में एक क्यूबिक मीटर !' तोकारेव ने साँप की तरह फुफकारते हुए कहा ।

'रेलवे की ईंधन कमेटी को खास राशन दिया जाता है । उन्हें वह खाना दिया जाता है जो मजदूरों को मिलना चाहिए और जरा देखिए कि आप काम क्या कर रहे हैं ? वह दो गाड़ी आटा जो आपको मजदूरों के लिए मिला था, क्या हुआ उसका ?' ट्रेड यूनियन के अध्यक्ष ने अपनी बात पर जोर देते हुए कहा ।

इसी तरह के तेज-तीखे सवाल हर तरफ से उस गंजे आदमी पर बरस रहे थे और वह उनका जवाब उसी घबराये हुए अन्दाज में दे रहा था, जिस अन्दाज में कि कर्ज में डूबा हुआ कोई आदमी तंग करनेवाले लेनदारों से अपना पीछा छुड़ाने की कोशिश करता है । सीधा-सादा जवाब देने से बचने के लिए वह अपने आपको बहुत तोड़-मरोड़ रहा था, मगर उसकी घबरायी हुई आँखें इधर-उधर दौड़ रही थीं । उसे खतरा दिखायी दे रहा था और उसकी कायर आत्मा में सिर्फ एक चीज की चाह थी : कैसे जल्द से जल्द यहाँ से भाग जाय और जाकर अपने आरामदेह घोंसले में मुँह छुपा ले और इतमीनान से खाना खाये और अपनी बीवी से, जो अब भी जवान थी और जो शायद इस वक्त पॉल द कॉक का उपन्यास लिये उसमें रम रही होगी, अपना जी बहलाये ।

उस गंजे आदमी के जवाबों को ध्यान से सुनते हुए फियोदोर ने अपनी नोटबुक में जल्दी-जल्दी लिखा : 'मैं समझता हूँ कि इस आदमी की ठीक से जाँच होनी चाहिए । यह सिर्फ अयोग्यता की बात नहीं है, बल्कि उससे कुछ ज्यादा गहरा मामला है । मुझे इसके बारे में एक-दो बातें मालूम हैं ... बहस को बन्द करो और इस आदमी को जाने दो ताकि हम लोग काम की बातें कर सकें ।'

अध्यक्ष ने नोट पढ़ा और फियोदोर को देखकर सिर हिलाया ।

जुखराई उठा और किसी से टेलीफोन पर बात करने के लिए गलियारे में निकल गया। वह लौटकर आया तो अध्यक्ष प्रस्ताव पढ़ रहे थे।

'... हम प्रस्ताव करते हैं कि रेलवे ईंधन कमेटी की प्रबंध समिति को, काम को जान-बूझ कर बिगाड़ने के जुर्म में, तोड़ दिया जाय और ईंधन के इस सारे मामले को छानबीन के लिए अधिकारियों के हाथ में दे दिया जाय।'

उस गंजे आदमी को इससे भी बड़ी सजा पाने का डर था। यह सही है कि तोड़-फोड़ के जुर्म में पद से अलग किये जाने का मतलब होगा कि समग्र रूप से उसकी विश्वसनीयता के बारे में भी सवाल उठेगा। मगर वह छोटी बात है। जहाँ तक उस बोयार्का वाले मामले की बात है, उसकी उसे कोई परेशानी नहीं थी क्योंकि वह उसका कोई इलाका नहीं था। उसने अपने मन में कहा, 'मगर बहुत बाल-बाल बचे! मैंने तो समझा था कि उन्होंने सचमुच मेरे बारे में कोई बात खोद निकाली ...।'

अब प्रायः आश्वस्त होकर उसने अपने कागजात को पोर्टफोलियो में रखते हुए कहा, 'स्पष्ट ही मैं एक गैर-पार्टी विशेषज्ञ हूँ और आप जितना चाहें मेरा अविश्वास कर सकते हैं। मगर मेरा अन्तःकरण साफ है। अगर मैं वह सब काम नहीं कर सका जो मुझे करना चाहिए था, तो इसकी वजह यही थी कि ऐसा करना नामुमकिन था।'

किसी ने कोई टिप्पणी नहीं की। वह गंजा आदमी कमरे से बाहर निकल गया, जल्दी-जल्दी सीढ़ियों से नीचे उतरा और चैन की साँस लेते हुए उसने बाहर सड़क पर खुलनेवाला दरवाजा खोला।

'आपका शुभनाम, जनाब ?' फौजी कोट पहने एक आदमी ने उससे पूछा।

डूबते हुए दिल से उस गंजे आदमी ने हकलाते हुए जवाब दिया, 'चेर ... विन्स्की ...।'

इस बाहरी आदमी के हटते ही ऊपर तेरह लोग बड़ी सी कान्फ्रेंस टेबिल पर एक-दूसरे के और करीब सरक आये।

जुखराई ने खुले हुए नक्शे पर उँगली गड़ाते हुए कहा, 'देखो, यह बोयार्का स्टेशन है। यहाँ से पाँच मील पर पेड़ गिराये जा रहे हैं। इस जगह पर बीस लाख दस हजार क्यूबिक मीटर लकड़ी का ढेर लगा है। एक पूरी फौज ने इस लकड़ी को जमा करने के लिए आठ महीने तक दिन-रात काम किया। और इस सबका नतीजा ? गद्दारी। रेलवे के लिए और शहर के लिए ईंधन नहीं है। इस तमाम लकड़ी को पाँच मील दूर स्टेशन तक ढोने के लिए पाँच हजार गाड़ियाँ लगेंगी और एक महीना लगेगा—वह भी तब जब वे दिन में दो खेप करें। वहाँ से सबसे पास जो गाँव है वह दस मील दूर है। और

इतना ही नहीं, ओर्लिक और उसके गिरोह के लोग इसी इलाके में घूम रहे हैं। तुम समझते हो इसका क्या मतलब है?'

जुखराई की बन्द मुट्ठी जोर से नक्शे के ट्रेसिंग पेपर पर गिरी। उन तेरहों लोगों ने परिस्थिति के उन और भी भयानक पहलुओं को समझ लिया जिनका उल्लेख जुखराई ने नहीं किया था। जाड़ा आ रहा था। उन्होंने अपनी मन की आँखों से अस्पतालों, स्कूलों, दफ्तरों और लाखों लोगों को जाड़े-पाले की सर्द गिरफ्त में पड़ते हुए देखा। उनकी आँखों के आगे नाच गया कि कैसे रेलवे स्टेशनों पर भीड़ लगी है और इस तमाम भीड़ को ले जाने के लिए हफ्ते में सिर्फ एक गाड़ी है।

हर आदमी इस गंभीर परिस्थिति पर विचार कर रहा था और कमरे में गहरी खामोशी थी।

आखिरकार फियोदोर ने अपनी मुट्ठी ढीली की और कहा :

'साथियो, बचत की अब सिर्फ एक राह है। हमें तीन महीने के अन्दर-अन्दर स्टेशन से जंगल तक, जहाँ लकड़ी कटी पड़ी है, पाँच मील लम्बी छोटी रेलवे लाइन बनानी है। जहाँ वह इलाका शुरू होता है, वहाँ तक पहुँचने के लिए रेलवे लाइन का पहला हिस्सा छः हफ्ते के अन्दर तैयार हो जाना चाहिए। मैं पिछले एक हफ्ते से इस चीज के बारे में सोच रहा हूँ और ताल-मेल बैठा रहा हूँ।' जुखराई का गला सूख रहा था और उसकी आवाज भर्रा रही थी, 'इसके लिए हमें तीन सौ पचास मजदूरों और दो इंजीनियरों की जरूरत होगी। पुश्चावोदित्सा में काफी पटरियाँ और सात इंजन हैं। कोमसोमोलों ने मालगोदामों में से उन्हें ढूँढ़ निकाला है। लड़ाई से पहले पुश्चावोदित्सा से शहर तक छोटी रेलवे लाइन बिछाने की योजना थी। मुश्किल यह है कि बोयार्का में मजदूरों के रहने के लिए जगह नहीं है, वह जगह बिलकुल खंडहर हो रही है। हमें हर बार पन्द्रह-पन्द्रह दिन के लिए छोटी-छोटी टोलियों में लोगों को वहाँ भेजना ठीक होगा क्या, अकिम?' और जवाब का इंतजार किये बगैर उसने अपनी बात जारी रखी, 'कोमसोमोल संगठन अपने ज्यादा से ज्यादा सदस्यों को उस जगह पहुँचायेगा। शुरुआत सोलोमेंका के संगठन से होगी। और कुछ लोग शहर के भी रहेंगे। काम मुश्किल है, बहुत मुश्किल; लेकिन मैं समझता हूँ कि अगर इन लड़कों को यह बतला दिया जाय कि दाँव पर क्या चीज लगी हुई है और हालत कितनी संगीन है, तो यकीनी वे लोग इस काम को पूरा करेंगे।'

रेलवे के चीफ ने सन्देह से अपना सिर हिलाया।

'मैं समझता हूँ यह कोशिश बेकार है। ऐसी हालत में जब कि पतझड़ की बारिश शुरू होनेवाली है और पाले के दिन आ रहे हैं, जंगल में पाँच मील

लम्बी रेलवे लाइन बिछाना...' उसने थके हुए स्वर में कहना शुरू किया। मगर जुखराई ने उसकी बात बीच में ही काट दी।

'आन्द्रेई वासीलिएविच, आपको ईंधन के मसले पर और ज्यादा ध्यान देना चाहिए था। वह लाइन तो बनानी ही है, और हम लोग उसे बनाकर रहेंगे। यह तो होगा नहीं कि हम लोग हाथ समेटे बैठे रहें और ठिठुरकर मर जायें। आप क्या यह चाहते हैं?'

रेलगाड़ी पर औजारों के आखिरी बक्से लाद दिये गये। रेलगाड़ी चलाने-वाले अपनी-अपनी जगहों पर पहुँच गये। हल्की-सी बूँदाबाँदी हो रही थी। पानी की छोटी-छोटी पारदर्शक बूँदें रिता के चमकते हुए चमड़े के जाकट पर फिसल रही थीं।

रिता ने बड़ी आजिजी से तोकारेव से हाथ मिलाया और धीमे से कहा, 'हमारी शुभकामनाएँ आपके साथ हैं।'

उस बुड्ढे ने अपनी घनी-घनी सफेद बरौनियों के नीचे से रिता को प्यार से देखा।

'हाँ, अच्छी-खासी मुसीबत में डाल दिया उन्होंने हमें, खुदा गारत करे उन लोगों को,' उसने अपने ही विचारों का जवाब देते हुए भारी आवाज में कहा, 'तुम लोग जो यहाँ पर हो, जरा खयाल रखना ताकि वहाँ पर अगर कोई अड़चन हो तो तुम लोग जहाँ जरूरत हो, दबाव डाल सको। यहाँ पर ये सब जो नाकारे इकट्ठा हैं, बगैर नौकरशाही के कुछ कर-धर नहीं सकते। अच्छा बेटी, अब मैं चलूँ।'

उस बुड्ढे आदमी ने अपनी जाकट के बटन लगाये। ठीक चलते वक्त उससे रिता ने यों ही पूछा, 'कोर्चागिन नहीं जा रहा है क्या? मैंने इन लड़कों में उसको देखा नहीं।'

'नहीं, वह और जॉब-सुपरिटेंडेंट कल ही ट्राली से वहाँ चले गये, हम लोगों के आने की तैयारी करने के लिए।'

उसी वक्त जार्की, दुबावा और अपने कंधों पर लापरवाही से अपनी जाकट डाले और अपनी पतली-पतली उँगलियों में एक सिगरेट दबाये आना बोर्हार्ट प्लेटफार्म पर जल्दी-जल्दी उनकी तरफ आये।

औरों के आने से पहले रिता को तोकारेव से बस एक और सवाल करने का वक्त मिला।

'कोर्चागिन के साथ आपकी पढ़ाई कैसी चल रही है?'

बूढ़े ने आश्चर्य से रिता की ओर देखा।

'कैसी पढ़ाई ? वह लड़का तो तुम्हारी निगरानी में है न ? उसने मुझे तुम्हारे बारे में बहुत-सी बातें बतलायी हैं। तुमको तो वह न जाने क्या समझता है, तुम्हारी तारीफ के पुल बाँधा करता है।'

रिता के चेहरे से सन्देह झलक रहा था, 'कामरेड तोकारेव, क्या आप ठीक कह रहे हैं ? क्या वह मेरे साथ सबक लेने के बाद चीज को और सफाई से समझने के लिए आपके पास हमेशा नहीं जाया करता था ?'

बुड्ढा जोर से हँस पड़ा और बोला, 'मेरे पास ? मुझसे समझने के लिए तो कभी उसकी परछाईं भी नहीं आयी।'

इंजन ने सीटी दी। क्लावीचेक एक डब्बे में से चिल्लाया :

'ओ कामरेड उस्तिनोविच, हमारे बुढ़ऊ को हमें वापस दे दो। उनके बिना हम लोग क्या करेंगे ?'

वह चेक नौजवान और भी कुछ कहनेवाला था। मगर बाद में आनेवाले उन तीन लोगों को देखकर रुक गया। क्षण भर को उसने आना की आँखों के चिन्तित भाव को देखा, फिर दिल मसोसकर दुबावा से अलग होते समय आना के चेहरे पर छायी मुस्कान को देखा और तेजी से खिड़की पर से हट गया।

पतझड़ की बारिश मुँह पर तमाचा-सा मार रही थी। सीसे के रंग के और नमी से भारी, झुके हुए बादल धीरे-धीरे उड़ते चले जा रहे थे। यह पतझड़ का अन्त था और चाँदी के रंग की पत्तियाँ तमाम झड़ गयी थीं। और पुराने पेड़ ठठरियों की तरह और सिर झुकाये खड़े थे।

जंगल के बीचोबीच स्टेशन की छोटी-सी इमारत अकेली खड़ी थी। ताजी खोदी हुई मिट्टी की एक पट्टी माल लादने के प्लेटफार्म से जंगल तक चली गयी थी। इस पट्टी के चारों तरफ चींटियों की तरह आदमियों के झुंड खड़े थे।

पैर के नीचे दबने पर मिट्टी का वह कीचड़ बहुत बुरा मालूम होता था। बाँध के पास, जहाँ आदमी बेतहाशा मिट्टी खोदे जा रहे थे, फावड़ों और कुदालों की आवाज सुनायी दे रही थी।

बारिश जैसे किसी बड़ी बारीक चलनी में से होकर गिर रही थी और पानी की ठंडी बर्फीली बूंदें लोगों के कपड़ों में घुस रही थीं। इस बात का डर था कि बारिश उनकी मेहनत के सारे फलों को, उनके काम को बहा ले जायेगी, क्योंकि बाँध पर की मिट्टी पानी में भीगकर धसकती जा रही थी।

काम करनेवाले ऊपर से नीचे तक पानी में भीगे हुए थे। उनके कपड़े इतने ठंडे थे कि सर्दी मालूम होती थी और इसी तरह वे लोग अँधेरा हो जाने के भी बहुत बाद तक काम करते रहते थे।

और इस तरह हर रोज खुदी हुई जमीन की यह पट्टी जंगल की तरफ बराबर बढ़ती जा रही थी।

स्टेशन के पास ही एक डरावना-सा कंकाल खड़ा था जो कभी ईंट की एक इमारत थी। हर चीज जो हटायी जा सकती थी, उखाड़ी जा सकती थी या गोले से उड़ायी जा सकती थी, उसे लुटेरे कभी के ले जा चुके थे। खिड़कियों और दरवाजों की जगह बड़े-बड़े सूराख थे और जहाँ कभी अँगीठी के दरवाजे थे, वहाँ अब काले दाग थे। टूटे-फूटे छप्पर के सूराखों के बीच से छप्पर में लगी हुई शहतीरें कंकाल की पसलियाँ जैसी नजर आती थीं।

सिर्फ चार बड़े कमरों का सीमेंट का फर्श अभी तक साबूत था। रात को चार सौ आदमी अपने गीले और कीचड़ में लिथड़े हुए कपड़े पहने इसी फर्श पर सोते थे। अपने कपड़ों को जब वे दरवाजे पर गारते तो उसमें से कीचड़ मिला पानी निकलता। और वे लोग बारिश और दलदली मिट्टी पर हजार लानतें भेजते। वे लोग सीमेंट की फर्श पर, जिस पर पुआल की एक पतली सी चादर भर बिछी हुई थी, एक-दूसरे से सटे हुए कई कतारों में सोते थे, सटे हुए ताकि उन्हें उतनी ठंड न मालूम हो। उनके कपड़ों से भाप उठती थी मगर कपड़े सूखते न थे। खिड़की के नंगे चौखटों पर बोरे कील से जड़ दिये गये थे। उन बोरों में से होकर बारिश का पानी अन्दर आता था और फर्श पर टपकता था। छप्पर में लोहे के जो बचे-खुचे टुकड़े थे, उन पर बारिश का पानी गिरता था तो जोरों से तड़तड़ की आवाज होती थी और दरवाजे की बड़ी-बड़ी दरारों में से अन्दर आती हुई हवा सांय-सांय करती थी।

सबेरे उन्होंने उस खंडहर बारक में, जो रसोईघर का काम देती थी, चाय पी और काम पर चले गये। रात के खाने में रोज-रोज वही उबली हुई मसूर खाते-खाते उनकी तबीयत उकता गयी थी। उसके अलावा उन्हें कोयले की तरह काली तीन पाव रोटियाँ भी मिलती थी।

इससे ज्यादा देने की सामर्थ्य शहर में न थी।

जॉब-सुपरिटेंडेंट वालेरियन निकोदिमोविच पतोश्किन, जो एक लम्बा, दुबला-पतला बूढ़ा आदमी था और जिसके मुँह पर दो गहरी रेखाएँ थीं, और टेकनीशियन वाकुलेंको, जो एक दोहरे बदन का, गँवार से चेहरे का और भद्दी मोटी नाक का आदमी था — ये दोनों स्टेशन मास्टर के घर पर रहते थे।

तोकारेव स्टेशन के चेका में काम करनेवाले खोलिआवा की कोठरी में रहता था। खोलिआवा नाटा सा तेज-मिजाज आदमी था।

ये लोग बड़ी हिम्मत, सब्र और धीरज से तमाम कठिनाइयाँ झेल रहे थे और रेल का बाँध हर रोज जंगल की तरफ बढ़ता जा रहा था।

यह सच है कि कुछ लोग भाग भी गये थे : पहले नौ लोग और उसके

कुछ रोज बाद और पाँच लोग।

पहली बड़ी दुर्घटना काम शुरू होने के एक हफ्ते बाद हुई जब कि रात की गाड़ी से रोटी की सप्लाई नहीं आयी।

दुबावा ने तोकारेव को जगाया और उसे यह खबर दी। पार्टी ग्रुप के मंत्री ने बिस्तर पर बैठे-बैठे अपनी घने बालोंवाली टाँगें झुलायीं और बगल को जोर-जोर से खुजलाने लगा।

'तमाशा अब शुरू हो रहा है !' उसने भारी आवाज में कहा और जल्दी-जल्दी कपड़े पहनने लगा।

खोलिआवा अपनी छोटी-छोटी टाँगें लिये लुढ़कता हुआ अन्दर आया।

'जरा टेलीफोन पर जाकर स्पेशल डिपार्टमेंट को तो बुला लो,' तोकारेव ने उसको आदेश दिया और दुबावा की तरफ मुड़ते हुए उससे कहा, 'और देखो, किसी से इस चीज के बारे में एक लफ्ज मत कहना।'

रेलवे के टेलीफोन ऑपरेटरों के साथ पूरा एक घंटा झगड़ा करने के बाद कहीं जाकर अदम्य खोलिआवा को स्पेशल डिपार्टमेंट का उप-प्रधान जुखराई फोन पर मिला और इस बीच पूरे वक्त तोकारेव पास ही खड़ा बेचैनी से छटपटाता रहा।

'क्या कहा ! रोटी नहीं पहुँची ? मैं अभी पता लगाता हूँ कि उसके लिए कौन जिम्मेदार है !' जुखराई की आवाज टेलीफोन पर सुनायी दी और उस आवाज में एक गंभीर गूँज थी।

इसके बाद बड़ी देर तक खामोशी रही। स्पष्ट ही जुखराई कोई तदबीर सोच रहा था।

आखिरकार उसने कहा, 'तुम्हें आज रात को ही रोटी मिलेगी। मैं लित्के को गाड़ी के साथ भेजूँगा। उसे रास्ता मालूम है। सबेरे तक तुम्हें रोटी जरूर मिल जायगी।'

बड़े सबेरे कीचड़ में सनी हुई एक मोटर रोटी के बोरों से लदी हुई स्टेशन पर आयी। लित्के थका हुआ मोटर में से बाहर निकला। रात भर मोटर चलाने के कारण नींद और थकान से लित्के का चेहरा खड़िये जैसा हो रहा था।

रेलवे लाइन पर काम करना, बराबर बढ़ती जा रही कठिनाइयों के खिलाफ एक अविराम संघर्ष था। रेलवे के प्रबंधकों ने कहा कि उनके पास रेल के स्लीपर नहीं हैं। शहर के अधिकारियों के पास कोई जरिया नहीं था कि वे रेल की पटरियों और इंजनों को वहाँ पर ले जा सकते, जहाँ पर काम लगा हुआ था। और बाद को मालूम हुआ कि खुद इंजनों को भी काफी मरम्मत की जरूरत है। पहली टोली की जगह लेने के लिए नये मजदूर नहीं आ रहे थे और पहली टोली ने अपने हिस्से का काम कर लिया था और अब

वे इतनी बुरी तरह थक चुके थे कि उनको और रोक रखने का सवाल ही पैदा नहीं होता था।

इस परिस्थिति पर विचार करने के लिए पार्टी के पुराने और आगे बढ़े हुए मेम्बर उस खंडहर शेड में मिले, जिसमें बस तेल की ढिबरी का मद्धिम प्रकाश था।

उसके अगले दिन सबेरे तोकारेव, दुबावा और क्लावीचेक शहर गये। इंजनों की मरम्मत और रेल की पटरियाँ लाने के काम को तेज करने की गरज से वे छः आदमियों को अपने साथ लेते गये। क्लावीचेक को, यों जिसका पेशा केक-बिस्कुट बनाना था, इंस्पेक्टर बनाकर सप्लाई विभाग में भेजा गया और बाकी लोग पुश्चावोदित्सा चले गये।

उधर उस जगह, जहाँ काम लगा हुआ था, बारिश थमने का नाम ही न लेती थी।

पावेल कोर्चागिन ने जोर लगाकर चिपचिपे कीचड़ में से अपना पैर खींचकर निकाला। उसे अपने पैरों में जोर से सर्दी मालूम हुई जिससे उसने समझा कि उसके जूते का घिसा हुआ तल्ला आखिरकार अलग हो ही गया। जबसे पावेल यहाँ काम पर आया था, उसे अपने फटे जूतों के कारण सख्त तकलीफ होती थी। वे कभी सूखे न रहते और उनमें कीचड़ भर जाती और वह चलता तो कीचड़ पिच्च-पिच्च करती। अब एक तला बिलकुल चला गया था और बर्फ की तरह ठंडा कीचड़ उसके नंगे पैरों को जैसे छुरी से काटता जान पड़ता। पावेल ने तल्ले को कीचड़ में से निकाला और बहुत मायूसी से उसको देखा और अपनी कसम को भूलकर उसने मुँह से उसके लिए गाली भी निकाली। अब उसका एक पैर बिलकुल नंगा था और इस तरह वह कैसे काम कर सकता था। लिहाजा वह भचकता हुआ बारक में आया, रसोईघर के पास बैठ गया, पैर में लिपटा हुआ कीचड़ से सना कपड़ा अलग किया और सर्दी से सुन्न अपने पैरों को सेंकने के लिए आग की तरफ बढ़ाया।

लाइनमैन की बीवी, जो रसोइये के सहायक के रूप में काम करती थी और जिसका नाम ओदार्का था, रसोईघर की मेज पर चुकन्दर काटने में मशगूल थी। यह अच्छे डीलडौल की औरत थी। अभी जवानी उससे रुखसत नहीं हुई थी। उसके कंधे बहुत चौड़े, करीब-करीब मर्दों जैसे थे, वक्ष भरा-पूरा था, और नितम्ब चौड़े और भारी थे। वह बड़े जोश से छुरी चला रही थी और उसकी फुर्तीली उँगलियों तले कटी हुई सब्जियों का एक पहाड़ तेजी से ऊँचा होता जा रहा था।

ओदार्का ने लापरवाही से पावेल को देखा और डपटकर बोली :

'अगर खाने की तलाश में तुम यहाँ मंडरा रहे हो, तो मैं तुम्हें बतला दूँ कि अभी देर है। समझे ? काम छोड़कर इस तरह भागे चले आ रहे हो, तुम्हें अपने ऊपर शर्म आनी चाहिए ! अंगीठी से अपने पैर हटा लो। यह रसोईघर है, कोई नहानघर तो है नहीं !'

उसी वक्त रसोइया अन्दर आया।

'मेरा यह जूता चिथड़े-चिथड़े हो गया है,' पावेल ने रसोईघर में अपनी उस असमय उपस्थिति की सफाई देते हुए कहा।

अधेड़ रसोइये ने पावेल के टूटे हुए जूते को देखा और ओदार्का की तरफ सिर हिलाकर इशारा करते हुए बोला, 'इसका आदमी, मुमकिन है, तुम्हारे जूतों की मरम्मत कर सके, उसे मोची का काम थोड़ा-बहुत आता है। इसका इन्तजाम करो वरना परेशानी में पड़ोगे — जूतों के बगैर तुम्हारा काम चलने से रहा।'

ओदार्का ने यह सुना तो दुबारा पावेल को देखा और तब उसने महसूस किया कि पावेल के बारे में फैसला करने में उसने जल्दबाजी की थी।

उसने अपनी गलती मानते हुए कहा, 'मैंने तुम्हें कोई आवारा समझा था।'

पावेल मुस्कराया, जैसे वह कह रहा हो कि कोई बात नहीं, मुझे बुरा नहीं लगा। ओदार्का ने विशेषज्ञ की आँखों से जूते का मुआइना किया और फिर बोली, 'इसमें थेगड़े लगाने की कोशिश बेकार है। मगर मैं एक बात कर सकती हूँ। हमारे यहाँ घर पर एक पुराना बरसाती बूट पड़ा हुआ है, मैं उसे लाकर तुम्हें दे सकती हूँ और तुम उसे अपने जूतों के ऊपर से पहन लेना। तुम्हारे पैर तो कम से कम बचे रहेंगे। इस तरह तुम थोड़े ही घूम सकते हो, मर जाओगे ! अब पाला पड़ना शुरू होने ही वाला है, जिस दिन भी शुरू हो जाय !'

और ओदार्का ने, जिसके मन में पावेल के लिए अब सहानुभूति ही सहानुभूति थी, अपनी छुरी रख दी और तेजी से बाहर निकल गयी और थोड़ी ही देर बाद एक बड़ा सा बरसाती बूट और मजबूत कपड़े की एक पट्टी लेकर लौट आयी।

पावेल के पैर अब सूखे हुए और गर्म थे। उसने उस मोटे कपड़े को अपने पाँवों में लपेटते और पाँवों को बरसाती बूट में डालते हुए ओदार्का को कृतज्ञ भाव से देखा।

तोकारेव गुस्से से उबलता हुआ शहर से लौटा। उसने आगे बढ़े हुए कम्युनिस्टों की एक मीटिंग खोलिआवा की कोठरी में बुलायी और उन्हें यह बुरी खबर सुनायी। वह बोला :

यहाँ से वहाँ तक अड़चनें ही अड़चनें हैं। जहाँ भी जाओ, पहिये घूमते तो नजर आते हैं मगर पहुँचते कहीं नहीं। मैं तुमको बतलाता हूँ लड़को, कि लक्षण अच्छे नहीं हैं। अभी तक हमारी जगह लेनेवाले लोग कहीं नजर नहीं आते और यह भी पता नहीं कि आयेंगे भी तो कितने आयेंगे। पाला गिरना शुरू होने ही वाला है और उसके पहले चाहे जैसे हो, हमें दलदल के पार हो जाना है क्योंकि जमीन जब बर्फ से जम जायगी तो फिर कुछ करते-धरते न बनेगा। लिहाजा जब तक कि वे लोग वहाँ गड़बड़ पैदा करनेवालों की अक्ल ठीक कर रहे हैं, तब तक हमको यहाँ अपने काम की रफ्तार दुगनी कर देनी चाहिए। वह लाइन हमें बनानी ही है और उसे हम बनाकर रहेंगे चाहे हम मर ही क्यों न जायें। अगर हम ऐसा नहीं कर सकते तो हम बोल्शेविक नहीं, मिट्टी के लोंदे होंगे।' तोकारेव की फटी हुई भारी आवाज में इस्पात की सी गूंज थी और उसकी घनी बरौनियों के नीचे उसकी आँखें पक्के निश्चय से चमक रही थीं।

'आज हम लोग एक बन्द मीटिंग करेंगे और यह खबर अपने पार्टी मेम्बरों को दे देंगे और कल से हम सब काम पर जुट जायेंगे। सबेरे हम लोग गैर-पार्टी लोगों को छुट्टी दे देंगे। वे लोग चले जायेंगे और हम लोग रह जायेंगे। यह देखो प्रादेशिक कमेटी का फैसला है,' कहते हुए तोकारेव ने चार परत किया हुआ एक कागज पांक्रातोव के हाथ में दिया। कंधे के ऊपर से उस कागज को देखते हुए पावेल कोर्चागिन ने पढ़ा :

'परिस्थिति की गंभीरता को देखते हुए कोमसोमोल के सारे सदस्य अपने काम पर जमे रहेंगे और उन्हें तब तक छुट्टी नहीं मिलेगी जब तक कि ईंधन का का पहला चलान आ नहीं जाता। दस्तखत : रिता उस्तिनोविच, प्रादेशिक कमेटी के मंत्री की ओर से।'

रसोई की बारक में भीड़ लगी हुई थी। उस छोटी सी तंग जगह में एक सौ बीस आदमी संकसे हुए खड़े थे। उनमें से कुछ दीवार का सहारा लिये हुए खड़े थे, कुछ मेजों पर चढ़कर बैठ गये थे और कुछ तो रसोई के ऊपर तक जाकर बैठ गये थे।

पांक्रातोव ने मीटिंग की कार्रवाई शुरू की। तब तोकारेव ने एक छोटी सी तकरीर की और इस ऐलान के साथ अपनी बात खतम की, जिसका असर सुननेवालों पर बम के गिरने जैसा हुआ :

'कम्युनिस्ट और कोमसोमोल कल काम नहीं छोड़ेंगे।'

बूढ़े ने अपनी बात के साथ-साथ मुख की एक ऐसी भंगिमा भी बनायी

जिसका मतलब था कि यह फैसला अन्तिम है और इसमें कोई रद्दोबदल मुमकिन नहीं है। इस चीज ने शहर लौटने की उनकी सारी उम्मीदों पर पानी फेर दिया — शहर लौटने की, अपने घर जाने की, इस मनहूस जगह से भाग जाने की।

क्रुद्ध आवाजों का एक शोर उठा जिसमें थोड़ी देर के लिए सभी कुछ डूब गया। लोगों के हिलते हुए शरीर से ढिबरी की बत्ती काँप-काँप जाती थी। उस अर्द्ध-अंधकार में शोर-गुल बढ़ता जा रहा था। वे लोग अपने घर लौटना चाहते थे। वे बहुत क्षोभ के साथ कह रहे थे कि अब हमको यहाँ पर रोकने की बात क्यों की जा रही है, हम जितना कर सकते थे, हमने किया। कुछ ने खामोशी से इस खबर को सुन लिया। और सिर्फ एक आदमी ने काम छोड़कर भाग जाने की बात कही।

मुँह से गालियाँ निकालते हुए एक आदमी अपने कोने में से जोर से चिल्लाया, 'जहन्नुम में जाय यह काम ! मैं तो अब यहाँ एक दिन भी नहीं ठहर सकता। हाँ कोई जुर्म किया हो तो आप कड़ी मशक्कत की सजा दीजिए। मगर हमने कौन सा जुर्म किया है ? अब और ठहरना बेवकूफी होगी। हमने दो हफ्ते तक काम किया और वह काफी है। अब उन लोगों से कहिए जिन्होंने यह फैसला किया है, कि वे अपने कमरों से निकलकर खुद यहाँ आयें और काम करें। हो सकता है कि कुछ लोगों को इस गन्दगी और इस कीचड़ में ही मजा आता हो। मगर भाई, मेरे पास तो जीने के लिए सिर्फ एक जिन्दगी है, मैं कल जा रहा हूँ।'

ओकुनेव के पीछे से आवाज आ रही थी और उसने यह देखने के लिए कि वह कौन है, दियासलाई जलायी। दियासलाई की रोशनी ने एक क्षण के लिए बोलनेवाले के गुस्से से विकृत चेहरे और खुले हुए मुँह को चमका दिया। मगर उस एक क्षण में ही ओकुनेव ने प्रादेशिक खाद्य कमिसारियट के एक क्लर्क के उस बेटे को पहचान लिया।

वह बनैले सुअर की तरह बिफरते हुए बोला, 'पता लगा रहे हो कि कौन है, क्यों ? उँह, मुझे कोई डर नहीं, मैंने क्या कोई चोरी की है !'

दियासलाई बुझ गयी। पांक्रातोव उठा और अच्छी तरह तनते हुए बोला :

'यह किस किस्म की बात है ? कौन है जो पार्टी के काम की तुलना जेल की कड़ी मशक्कत से कर रहा है ?' उसने गरजते हुए और सामने की कतार में बैठे लोगों पर अपनी कठोर दृष्टि डालते हुए कहा, 'नहीं साथियो, हम शहर नहीं जा सकते, हमारी जगह यहीं है। अगर हम लोग दुम दबाकर यहाँ से चले जाते हैं, तो हमारे भाई ठिठुरकर मर जायेंगे। जितनी ही जल्दी हम अपना काम खतम कर लें उतनी ही जल्दी हम अपने घर पहुँच सकते हैं।

वहाँ वह पीछे बैठा हुआ झींखनेवाला जिस तरह भाग जाने की बात कर रहा है, वह चीज हमारे विचारों या हमारे अनुशासन से कतई मेल नहीं खाती।'

पांक्रातोव जहाज पर काम करनेवाला आदमी था। उसे लम्बी-लम्बी तकरीर करना अच्छा नहीं लगता था। मगर उसकी इस छोटी सी तकरीर को भी उसी तैश खायी हुई आवाज ने बीच में टोका।

'गैर-पार्टी लोग तो जा रहे हैं न ?'

'हाँ।'

छोटा सा ओवरकोट पहने एक लड़का कुहनियों से रास्ता बनाता हुआ सामने आया। कोमसोमोल की सदस्यता का एक कार्ड चमगादड़ की तरह उड़ता हुआ जाकर पांक्रातोव के सीने से टकराया, मेज पर गिरा और सीधा खड़ा हो गया।

'यह रहा, अपना कार्ड रख लीजिए। मैं दफ्ती के इस टुकड़े के लिए अपनी तन्दुरुस्ती खतरे में नहीं डाल सकता !'

उसके आखिरी शब्द क्रुद्ध स्वरों के गर्जन में डूब गये :

'कुछ खबर है क्या चीज तुम फेंक रहे हो !'

'गद्दार, दोगला !'

'कोमसोमोल में यह समझकर आया था कि यहाँ लड्डू-पेड़े बँटते हैं।'

'उठा के फेंक दो बाहर साले को !'

'जरा मुझे तो पहुँचने दो इस गीदड़ के पास !'

वह भगोड़ा, सिर झुकाये, दरवाजे की तरह बढ़ा। उन्होंने उसे निकल जाने दिया कि जैसे उससे अपना दामन बचा रहे हों, गोया वह कोढ़ी हो। उसके बाहर निकलने पर दरवाजा चूँ करके बन्द हो गया।

पांक्रातोव ने फेंके हुए मेम्बरी के कार्ड को उठाया और ढिबरी की बत्ती से लगा दिया।

दफ्ती ने आग पकड़ ली और ऐंठ-ऐंठकर जलने लगी।

जंगल में एक गोली की गूँज सुनायी दी। एक घुड़सवार उस खंडहर बारक से मुड़ा और जंगल के अँधेरे में घुस गया। क्षण भर बाद लोग बारक और स्कूल की इमारत में से दौड़ते हुए बाहर आये। किसी ने दरवाजे के पाखे पर टँगा हुआ प्लाइवुड का एक टुकड़ा देखा। एक दियासलाई जली और उसकी काँपती हुई लौ को हवा से बचाते हुए उन्होंने घसीटकर लिखी हुई उस इबारत को पढ़ा : 'यहाँ से चले जाओ। जहाँ से आये हो वहीं लौट जाओ। अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो हम तुम्हारे एक-एक आदमी को गोली

से उड़ा देंगे। भागने के लिए मैं तुम्हें कल रात तक का वक्त देता हूँ। एटमन चेस्नोक।'

चेस्नोक ओर्लिक के गिरोह का आदमी था।

घोड़े थके हुए, धीरे-धीरे, नर्म बर्फ पर चले जा रहे थे और उनकी टापें बर्फ के अन्दर घुस-घुस जाती थीं। जब-तब बर्फ के नीचे पड़ी हुई कोई टहनी किसी घोड़े की टाप से टूट जाती और घोड़ा हिनहिनाता और अड़ जाता। मगर तभी उसके कानों पर तेजी से एक चाबुक पड़ता और चाबुक खाकर वह भी दूसरे घोड़ों के पीछे सरपट भाग चलता।

करीब एक दर्जन घुड़सवारों ने उस पहाड़ी टीले को पार किया जिसके उस पार काली मिट्टी का मैदान था और जिस पर अभी बर्फ की चादर नहीं पड़ी थी। यहाँ पहुँचकर घुड़सवारों ने अपने घोड़े रोके। रकाब से रकाब मिली तो धीमी-सी आवाज हुई। सरदार के घोड़े ने जोर से हिनहिनाकर अपने जिस्म को हिलाया। इस लम्बी दौड़ के बाद पसीने से उसका जिस्म चमक रहा था।

आगे-आगे चलनेवाले घुड़सवार ने उक्रेनी जबान में कहा, 'बहुत बड़ी जमात में हैं ये बदमाश यहाँ। मगर कोई बात नहीं, अभी हम ऐसा कर देंगे कि डर के मारे उनकी बोटी-बोटी काँपने लगेगी। एटमन का आदेश है कि कल तक इन हरामजादों को यहाँ से खदेड़ ही देना है। ईंधन के बहुत करीब पहुँचे जा रहे हैं ये लोग। ऐसे नहीं चलेगा।'

वे स्टेशन तक छोटी लाइन की पटरी पकड़े-पकड़े घोड़े पर सवार एक के पीछे एक चले जा रहे थे। पुरानी स्कूल की इमारत के पास के मैदान को देखकर उन्होंने अपनी रफ्तार बहुत धीमी कर दी और पेड़ों के पीछे पहुँचकर रुक गये। आगे खुले मैदान में जाने की उनकी हिम्मत नहीं पड़ी।

गोली की एक बौछार ने रात की निस्तब्धता को चीर दिया। चाँदनी में चाँदी की तरह चमकते हुए बर्च के एक पेड़ की शाख से बर्फ के गाले गिलहरी की तरह गिर रहे थे। पेड़ों के बीच गोलियाँ चलने की रोशनी हो रही थी और गोलियाँ टूटते पलस्तर को चीरकर अन्दर चली जाती थीं। पांक्रातोव की खिड़कियों के शीशे चूर-चूर होकर जमीन पर गिरते थे, तो झन्न-झन्न की आवाज होती थी।

कंकरीट की फर्श पर सोये हुए लोग गोली की आवाज सुनकर हड़बड़ा उठे। लेकिन जब गोलियाँ कमरे भर में उड़ने लगीं तो वे झट एक-दूसरे पर गिर पड़े।

दुबावा ने पावेल के कोट के पिछले दामन को पकड़ते हुए कहा, 'कहाँ जा रहे हो ?'

'बाहर ।'

दिमित्री ने दाँत पीसते हुए साँप की तरह फुफकारकर कहा, 'लेट जाओ, गधे कहीं के ! तुम्हारा सिर बाहर निकला नहीं कि काम तमाम समझो ।'

वे दोनों दरवाजे के अगल-बगल लेटे हुए थे। दुबावा फर्श पर चिपका हुआ लेटा था और उसके रिवाल्वर का मुँह दरवाजे की तरफ था। पावेल उकड़ूँ बैठा बेचैनी से अपने रिवाल्वर की नली पर उँगलियाँ दौड़ा रहा था। उसमें पाँच गोलियाँ थीं, एक घर खाली था। उसने सिलिंडर को एक बार और घुमाया।

गोली चलना एकाएक बन्द हो गया। उसके बाद जो निस्तब्धता आयी, तो उसमें तनाव का बोझ था।

दुबावा ने फटी हुई आवाज में धीमे से कहा, 'वे सब जिनके पास हथियार हों, इधर आयें।'

पावेल ने बहुत सावधानी से दरवाजा खोला। मैदान खाली था। बर्फ के गाले धीरे-धीरे गिर रहे थे।

जंगल में दस घुड़सवार अपने घोड़ों को सरपट भगाने के लिए उनको चाबुक लगा रहे थे।

बोयार्का स्टेशन से करीब चार मील पर कुछ लोगों की एक टोली रेलवे लाइन के रास्ते में पड़नेवाले एक टीले को जी-जान से खोदे जा रही थी। सात आदमी अपनी टुकड़ी के तमाम हथियारों से लैस होकर पहरा दे रहे थे। हथियारों में उनके पास खोलियावा की राइफिल और कोर्चागिन, पांक्रातोव, दुबावा और खोमुतोव की रिवाल्वरें थीं।

पतोश्किन उस टीले पर चढ़ा हुआ अपनी नोटबुक में कुछ लिख रहा था। इस काम पर वह अकेला इंजीनियर था। टेकनीशियन बाकुलेंको उसी सुबह भाग गया था। उसे भगोड़ेपन के जुर्म में अपने ऊपर मुकदमा चलाया जाना मंजूर था, पर डाकुओं के हाथों मरना नहीं।

'इस टीले को रास्ते से हटाने में दो हफ्ता लगेगा। जमीन जमकर एकदम पत्थर हो गयी है।' पतोश्किन ने अपने बगल में खड़े उदास खोमुतोव से धीमी आवाज में कहा।

'हमें लाइन पर का पूरा काम करने के लिए पच्चीस रोज मिला है और उसमें से पन्द्रह रोज तुम इसी के लिए लगा रहे हो,' खोमुतोव ने अपनी मूँछ

चबाते हुए गुर्राकर कहा।

'मैं तो समझता हूँ कि हो नहीं सकता। हाँ, यह जरूर है कि इसके पहले ऐसी हालतों में और ऐसे काम करनेवालों के साथ मैंने कभी कोई चीज नहीं बनायी है। इसलिए हो सकता है कि मैं गलती कर रहा होऊँ। और सच बात तो यह है कि इसके पहले दो बार मैं गलती कर चुका हूँ।'

उसी वक्त जुखराई, अकिम और पांक्रातोव ढलान के करीब आते दिखलायी दिये।

'वह देखो कौन है नीचे ?' रेलवे वर्कशाप के नौजवान मेकैनिक ने, जो पुरानी और कुहनियों पर फटी हुई स्वेटर पहने था, चिल्लाकर कहा। उसने कोर्चागिन को उँगली गड़ायी और आनेवालों की तरफ इशारा किया। दूसरे ही क्षण कोर्चागिन हाथ में फावड़ा लिये पहाड़ी के नीचे बेतहाशा दौड़ा जा रहा था। उसके सिर पर हेलमेट था और हेलमेट के नीचे उसकी आँखें मुस्कराकर प्यार से फियोदोर का स्वागत कर रही थीं और फियोदोर ने भी उससे हाथ मिलाया तो बड़ी देर तक उसके हाथों को पकड़े ही रहा।

'अरे तुम हो पावेल ! इस पोशाक में तो तुम्हें पहचान ही न सका।'

पांक्रातोव सूखी सी हँसी हँसा और बोला, 'इसको पोशाक कहना ठीक न होगा। बहरसूरत हवा की आमद के लिए इसमें तमाम छेद ही छेद हैं। भगोड़ों ने उसका ओवरकोट चुरा लिया, यह जाकेट जो यह पहने हुए है, ओकुनेव ने उसको दी है — इन लोगों का अपना एक कम्यून है। मगर पावेल बिलकुल ठीक है, उसकी रगों में गर्म खून है। कंकरीट के फर्श पर — उस पर बिछी हुई पुआल से कुछ खास फर्क नहीं पड़ता — वह एक-दो हफ्ते और अपने को गरमा लेगा और उसके बाद चीड़ की लकड़ी के एक अच्छे से ताबूत में लिटाये जाने के लिए तैयार हो जायगा,' उस जहाजी मजदूर ने अपने रूखे और गंभीर मजाक के साथ अपनी बात खत्म की।

काली-काली भवों और चपटी सी नाक वाले ओकुनेव ने अपनी शरारत भरी आँखें और छोटी कर लीं और आपत्ति करते हुए कहा : 'कोई बात नहीं, पावलुश्का का इन्तजाम हम लोग कर देंगे। हम सब मिलकर उसे रसोईघर में ओदार्का की मदद करने का काम दिला देंगे। और अगर वह एकदम गधा नहीं बने, तो खाने के लिए भी कुछ ज्यादा पा जाया करेगा। जहाँ तक शरीर को गरमाने की बात है, तो अंगीठी से या खुद ओदार्का से सटकर बैठ जाया करेगा।'

इस बात पर एक जोर का कहकहा पड़ा। उस दिन यह पहली मर्तबा वे लोग हँसे थे।

पतोश्किन ने नम्रता मगर दृढ़ता से फियोदोर को यह बात बतला दी कि

दो हफ्ते से कम में इस पहाड़ी को नहीं काटा जा सकता। फियोदोर अपने किसी खयाल में डूबा हुआ उसकी दलीलों को सुनता रहा। उसका दिमाग स्पष्ट ही अपनी किसी दूसरी समस्या में उलझा हुआ था।

'पहाड़ी काटने का काम बन्द कर दो और पहाड़ी के उस पार पटरियाँ बिछाने का काम शुरू कर दो। इस पहाड़ी का हम दूसरा ही कुछ इलाज करेंगे,' उसने आखिरकार अपनी बात कही।

स्टेशन पर उसका बहुत सा वक्त टेलीफोन पर बीतता था। खोलियावा जो बाहर दरवाजे पर खड़ा पहरा देता था, अन्दर से आती फियोदोर की फटी हुई भारी आवाज को सुनता था।

'मिलिटरी एरिया के चीफ आफ स्टाफ को फोन करो और मेरा नाम लेकर उनसे कहो कि पुजीरेन्स्की की रेजिमेंट को फौरन यहाँ के लिए बदली करें। इस इलाके से जल्द-से-जल्द लुटेरों का सफाया करना है। उनसे यह भी कहो कि एक बख्तरबंद गाड़ी यहाँ भेजें और उसके साथ पहाड़ी को डाइनामाइट से उड़ाने के लिए आदमी भी भेजें। बाकी सारा इन्तजाम मैं कर दूंगा। मुझे लौटने में देर होगी। लित्के से कहो कि आधी रात के आसपास मोटर लेकर स्टेशन पर रहे।'

बारक में, अकिम की छोटी सी तकरीर के बाद जुखराई ने बोलना शुरू किया और एक घंटा, साथियों की आपस की बहस में, पलक मारते उड़ गया। फियोदोर ने उन लोगों को बतलाया कि काम को खतम करने के लिए पहली जनवरी जो आखिरी तारीख मुकर्रर की गयी है, उसको और आगे बढ़ाने का सवाल नहीं पैदा होता।

जुखराई ने कहा, 'अब से हम इस काम को फौजी बुनियाद पर खड़ा कर रहे हैं। पार्टी मेम्बरों की एक स्पेशल टास्क कम्पनी होगी जिसके कमांडर कामरेड दुबावा होंगे। छः टीमों को खास-खास काम दिया जायगा। जो काम बाकी बच जायगा, उसे छः बराबर हिस्सों में बाँट कर एक-एक टीम को दे दिया जायगा। पहली जनवरी तक काम खतम होना ही है। जो टीम अपना काम पहले खतम कर लेगी उसे शहर वापिस जाने की इजाजत मिल जायगी। इसके अलावा सूबे की कार्यकारिणी का सभापति-मंडल सरकार से दरख्वास्त कर रहा है कि सबसे पहले काम खतम करनेवाली टीम के सबसे अच्छे मजदूर को 'ऑर्डर आफ द रेड बैनर' दिया जाय।'

अलग-अलग टीमों के ये लीडर मुकर्रर किये गये : नं. १. कामरेड पांक्रातोव; नं. २. कामरेड दुबावा; नं. ३. कामरेड खोमुतोव; नं. ४. कामरेड लगुतिन; नं० ५. कामरेड कोर्चागिन; नं. ६. कामरेड ओकुनेव।

'इस तामीरी काम के प्रधान, इसके राजनीतिक और व्यवस्था-सम्बंधी

नेता पूर्ववत एंटन निकिफोरोविच तोकारेव रहेंगे,' जुखराई ने अपनी बात खतम करते हुए कहा।

चिड़ियों के गोल के अचानक उड़ने की तरह तालियाँ बजने लगीं और कठोर चेहरों पर मुस्कराहट और शांति फैल गयी। जिस झक्की मगर आत्मीय ढंग से भाषण समाप्त हुआ था, उससे मीटिंग का तनाव खुशी के कहकहे में डूब गया।

अकिम और फियोदोर को विदा करने के लिए करीब बीस लोग स्टेशन पर आये।

कोर्चागिन से हाथ मिलाते हुए फियोदोर ने पावेल के बर्फ से भरे हुए बरसाती बूटों को देखा।

उसने धीमे से कहा, 'मैं तुम्हें एक जोड़ा जूते भेज दूँगा। उम्मीद करता हूँ कि कम से कम अभी तो तुम्हारे पैर सलामत होंगे, जम तो नहीं गये ?'

'कुछ-कुछ सूजने लगे हैं,' पावेल ने जवाब दिया। फिर एक चीज की याद करके जो उसने बहुत पहले माँगी थी, पावेल ने फियोदोर की बाँह पकड़ ली और कहा, 'मेरे रिवाल्वर के लिए आप कुछ कारतूस दे सकेंगे ? मेरा खयाल है कि मेरे पास अब सिर्फ तीन अच्छी कारतूसें बची हैं।'

जुखराई ने निषेधसूचक सिर हिलाया, मगर पावेल की निराश मुद्रा को देखकर अपनी माउज़र का फीता जल्दी से खोल दिया।

'यह लो, तुम्हारे लिए यह एक तोहफा है।'

पावेल को एकाएक यकीन नहीं आया कि उसे सचमुच वह चीज मिल रही है जिसके लिए वह इतने दिनों से लालायित था, मगर जुखराई ने अपनी माउज़र का फीता उसके कंधे पर डालते हुए कहा :

'ले लो, ले लो ! मैं जानता हूँ कि बहुत दिनों से तुम्हारी निगाह इस पर है। मगर देखना, कहीं अपने ही किसी आदमी पर इसका इस्तेमाल न कर बैठना। इसके साथ ये तीन सेट कारतूस हैं।'

पावेल ने अपने ऊपर गड़ी हुई दूसरों की ललचायी आँखों को महसूस किया।

कोई चिल्लाया, 'ए पावका, अदला-बदली करते हो ? इसके बदले में मुझ से एक जोड़ा जूते ले लो और एक कोट भी। है सौदा मंजूर !'

पांक्रातोव ने पीछे से पावेल की पीठ को कोंचा और कहा, 'चलो, मैं इसके बदले में तुम्हें एक जोड़ा फेल्ट के जूते दूँ। मुझसे सौदा कर लो। क्योंकि अगर यही हाल रहा तो क्रिसमस के पहले तो तुम अपने इन बरसाती बूटों में यों भी मर चुके रहोगे।'

रेलगाड़ी के फुटबोर्ड पर एक पैर रखकर उसके सहारे जुखराई ने रिवाल्वर

के लिए एक परमिट लिख दिया।

दूसरे दिन बड़े तड़के एक बख्तरबन्द गाड़ी आकर स्टेशन पर रुकी। इंजन बगुले के पर जैसी सफेद भाप छोड़ रहा था जो उस साफ-शफ्फाफ बर्फानी हवा में खो जाती थी। चमड़े के कपड़े पहने हुए लोग लोहे के डिब्बे में से निकले। कुछ घंटे बाद तीन लोग, जो पुल-पहाड़ी वगैरह उड़ाने का काम करते थे और गाड़ी में आये थे, उन्होंने पहाड़ी की जड़ में दो बड़ी-बड़ी, काली-काली, कुम्हड़े जैसी चीजें गाड़ दी थीं। उन चीजों में से लम्बे-लम्बे पलीते निकले हुए थे। लोगों को सावधान करने के लिए उन्होंने कुछ गोलियाँ हवा में छोड़ीं और लोग अब इस घातक पहाड़ी से दूर-दूर चारों तरफ बिखर गये। पलीते के सिरे में आग लगा दी गयी। पलीता नीली-नीली लौ देने लगा।

कुछ देर तक लोग साँस रोके खड़े रहे। उद्विग्न प्रतीक्षा के दो-एक क्षण, और फिर धरती काँप उठी और एक भयंकर ताकत ने उस पहाड़ी को उड़ा दिया और मिट्टी के बड़े-बड़े ढोंके आसमान की तरफ उड़े। दूसरा धड़ाका पहले से भी ज्यादा जबर्दस्त था। उसकी गरज चारों ओर के जंगल में गूँज गयी और आवाजों का एक हंगामा सा छा गया।

जब धुआँ और धूल साफ हुई तो दिखायी दिया कि जहाँ अभी वह पहाड़ी खड़ी थी, वहाँ पर अब एक गहरा सा गढ़ा था और आसपास की शकर जैसी सफेद बर्फ में मिट्टी मिल गयी थी।

धड़ाके से पैदा होनेवाले इस गढ़े की तरफ लोग अपने फावड़े और कुदाल लेकर दौड़े।

जुखराई के चले जाने के बाद काम करनेवालों में इस बात की जबर्दस्त होड़ लगी कि कौन सबसे पहले अपना काम खत्म करता है।

भोर के बहुत पहले कोर्चागिन चुपके से उठा ताकि दूसरे लोग न जगें और अपने ठिठुरे हुए पैरों को दबा-दबाकर उस बर्फ जैसे ठंडे फर्श पर चलता हुआ रसोईघर तक पहुँचा। वहाँ उसने चाय का पानी गरम किया और फिर अपनी टीम के लोगों को जगाने के लिए गया।

दूसरे लोगों के जागते-जागते दिन अच्छी तरह निकल आया था।

उसी सुबह पांक्रातोव गुंजान बारक में कुहनियों से अपना रास्ता बनाता हुआ वहाँ पहुँचा जहाँ दुबावा और उसके दल के लोग नाश्ता कर रहे थे।

उसने आवेश में कहा, 'सुनते हो मितियाई! पावका ने अपने लड़कों को दिन निकलने के पहले ही जगा दिया और काम पर निकल गया। मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि अब तक उन्होंने बीस गज पटरियाँ बिछा ली होंगी।

सब कहते हैं कि उसने अपने रेलवे वर्कशाप के लड़कों को जोश दिला-दिला-कर अपने हिस्से का काम पच्चीस तारीख तक खतम करने के लिए तैयार कर लिया है। इस तरह तो हम कहीं के न रहेंगे, वह हमको पटरा कर देगा। मगर मैं कहता हूँ यह नहीं होने का !'

दुबावा उदास ढंग से मुस्कराया। वह समझ सकता था कि नदी के किनारेवाले शहर के कोमसोमोल-मंत्री को रेलवे वर्कशाप के लोगों का ऐसे आगे बढ़कर काम करना क्यों इतना बुरा लग रहा है। सच बात तो यह थी कि उसके दोस्त पावेल ने दुबावा को भी पीछे छोड़ दिया था। बिना किसी से एक शब्द कहे उसने सारी कम्पनी को चुनौती दे दी थी।

पांक्रातोव ने कहा, 'दोस्त होने न होने से कुछ फर्क नहीं पड़ता। जीतेगा वही जो सबसे अच्छा काम करेगा।'

दोपहर को जब कोर्चागिन की टीम जोर-शोर से काम कर रही थी, तब एक अप्रत्याशित बाधा उपस्थित हुई। वह सन्तरी जो राइफलों पर पहरा दे रहा था, उसने दरख्तों के बीच से कुछ घुड़सवारों के एक दल को करीब आते देखा और चेतावनी देने के लिए एक गोली छोड़ी।

'दोस्तो, हथियार उठा लो ! लुटेरे !' पावेल चिल्लाया। उसने अपना फावड़ा फेंक दिया और पेड़ की तरफ दौड़ा जहाँ उसकी माउज़र लटक रही थी।

झटपट अपनी राइफिलें उठाकर दूसरे भी लाइन के किनारे के पास ही बर्फ पर लेट गये। आगे-आगे चलनेवाले घुड़सवारों ने अपनी टोपियाँ हिलायीं।

उनमें से एक चिल्लाया, 'साथियो, रुको रुको, गोली मत चलाओ !'

बुद्योनी की फौज की टोपियाँ लगाये करीब पचास घुड़सवार रास्ते पर चले आ रहे थे। उनकी टोपियों पर लाल तारे चमक रहे थे।

पुजीरेव्स्की की रेजीमेंट की एक टुकड़ी देख-भाल के लिए आयी थी। पावेल ने देखा कि कमांडर जिस पर सवार था, वह एक खूबसूरत भूरे रंग की घोड़ी थी। उसके माथे पर एक सफेद दाग था और उसके एक कान का थोड़ा-सा हिस्सा गायब था। वह बेचैनी से जस्त कर रही थी और जब पावेल ने तेजी से आगे बढ़कर उसकी रास को पकड़ा तो वह उछल पड़ी।

'अरे क्यों, लिश्का, मेरी प्यारी लिश्का, मैंने कब सोचा था कि फिर कभी हमारी मुलाकात होगी ! अच्छा, गोलियाँ तो तुझे छू नहीं पायीं !'

पावेल ने उसकी पतली गर्दन को प्यार से गले लगाया और उसके फड़-कते हुए नथने को थपथपाया।

कमांडर क्षण भर के लिए एकटक पावेल को देखता रहा, फिर आश्चर्य से चीख पड़ा : 'अरे, कहीं यह कोर्चागिन तो नहीं ! मगर तुम भी कैसे हो, तुमने अपनी घोड़ी को तो पहचान लिया मगर अपने पुराने दोस्त सेरेदा को

नहीं देख रहे हो। सलाम दोस्त !'

इस बीच शहर में सभी तरफ इस बात के लिए जोर लगाया जा रहा था कि रेलवे लाइन बिछाने के काम को और तेज किया जाय और जहाँ काम चल रहा था, वहाँ इस चीज का असर फौरन दिखायी देता था। जार्की ने कोमसोमोल की जिला कमिटी के एक-एक आदमी को बीन-बीनकर बोयार्का भेज दिया था। सोलोमेंका में अब सिर्फ लड़कियाँ बची थीं। उसने जोर लगाकर रेलवे स्कूल को विद्यार्थियों की एक और टोली भेजने के लिए तैयार किया।

अपने काम के नतीजों की रिपोर्ट अकिम को देते हुए उसने मजाक में कहा, 'मेरे पास अब सिर्फ प्रोलितारियत औरतें बच गयी हैं। मैं सोचता हूँ कि अपनी जगह पर तालिया लगुतिना को रखकर दरवाजे पर 'महिला विभाग' का साइनबोर्ड लगा दूँ और खुद भी बोयार्का चला जाऊँ। मुझे बड़ा अटपटा लगता है यहाँ, इतनी तमाम औरतों के बीच मैं अकेला आदमी हूँ। तुम जरा देखते कि किस नफरत से ये लड़कियाँ मुझको देखती हैं। जरूर वह कहती होंगी, 'देखो, यह कैसा चंट आदमी है, इसने औरों को तो रवाना कर दिया, मगर खुद यहीं जमा हुआ है।' या मुमकिन है इससे भी कोई बुरी बात कहती हों। तुम्हें मुझको यहाँ से जाने देना ही होगा।'

मगर अकिम केवल हँसा।

बोयार्का में नये काम करनेवाले बराबर आते रहे। उनमें रेलवे स्कूल के साठ विद्यार्थी भी थे।

जुखराई ने रेलवे अधिकारियों को इस बात के लिए भी राजी किया कि नये पहुँचनेवालों के रहने के लिए वे चार डब्बे बोयार्का भेज दें।

दुबावा की टीम को काम से छुट्टी देकर उन्हें पुश्चावोदित्सा से इंजन और छोटी लाइन के मालगाड़ी के खुले हुए पैंसठ डब्बे लाने के लिए भेजा गया। इस काम को उनके दूसरे काम का एक हिस्सा माना गया।

जाने के पहले दुबावा ने तोकारेव को सलाह दी कि क्लावीचेक को शहर से बुलाकर उसे बोयार्का में उन नयी संगठित टीमों में से एक का चार्ज दे दिया जाय। तोकारेव ने ऐसा नहीं किया। उसे यह नहीं मालूम था कि दुबावा के इस अनुरोध के पीछे असली कारण क्या है। इसका असली कारण था आना की एक चिट्ठी जो सोलोमेंका से आनेवाले लोग अपने साथ लाये थे।

आना ने लिखा था :

'दिमित्री ! क्लावीचेक और मैंने मिलकर तुम्हारे लिए किताबों का एक

गट्ठर तैयार किया है। हम तुमको और बोयार्का के दूसरे काम करनेवालों को अपना हार्दिक अभिवादन भेजते हैं। तुम सब बहुत गजब के हो ! हम तुम्हारे लिए शक्ति और उत्साह की कामना करते हैं। कल लकड़ी का शेष स्टाक बाँट दिया गया, अब कुछ नहीं बचा। क्लावीचेक तुमको अपना नमस्कार भेज रहा है। वह बहुत अच्छा काम करनेवाला है। बोयार्का के लिए सारी रोटियाँ वह खुद ही सेंकता है, आटा भी खुद ही सानता है और उसे गूँधता भी खुद ही है। बेकरी के दूसरे किसी आदमी पर उसे भरोसा नहीं है। उसने कहीं से बहुत अच्छा आटा पा लिया है। और उसकी रोटी अच्छी होती है, कम-से-कम उस रोटी से कहीं अच्छी होती है, जो मुझे मिलती है। शाम को हमारे सब दोस्त मेरे घर पर इकट्ठा होते हैं — लगुतिना, आर्त्युखिन, क्लावीचेक और कभी-कभी जार्की। हम लोग कभी-कभी साथ-साथ कुछ-कुछ पढ़ते भी हैं। मगर अक्सर हम लोग बातें ही करते हैं, दुनिया के हर आदमी और हर चीज के बारे में और खासकर बोयार्का में काम करते हुए तुम लोगों के बारे में। यहाँ की लड़कियाँ तोकारेव से बेहद नाराज हैं क्योंकि उन्होंने लड़कियों को इस काम पर लगाने से इनकार कर दिया। वे कहती हैं कि कठिनाइयाँ झेलने में वे किसी से कम थोड़े ही हैं। तालिया ने ऐलान किया है कि वह अपने बाप के कपड़े पहनकर अकेले बोयार्का चली जायगी। 'देखूँ वह कैसे मुझे वहाँ से बाहर करते हैं,' वह कहती है।

'मुझे कोई ताज्जुब न होगा अगर वह सचमुच अपनी बात पूरी कर डाले। मेरा नमस्कार काली-काली आँखोंवाले अपने दोस्त से कह देना। — आना'

बर्फ का तूफान अचानक ही उन पर टूट पड़ा। झुके हुए भूरे बादल आसमान भर में फैल गये और ढेर-ढेर सी बर्फ गिरने लगी। रात आयी तो हवा चिमनियों में हरहरा रही थी और पेड़ों में सिसक रही थी। उड़ते हुए बर्फ के गालों को उसने खदेड़कर भगा दिया और जंगल की गूँजों को अपनी तेज-तीखी आवाज से जगा दिया।

सारी रात तूफान तेजी से चलता रहा और गोकि रात भर अंगीठियाँ सुलगी रहीं, तब भी लोग काँपते रहे। स्टेशन की वह टूटी हुई इमारत अन्दर की गरमी को सँजोकर नहीं रख पाती थी।

सबेरे उन्हें गहरी बर्फ के बीच जैसे हल चलाकर अपने-अपने हिस्सों पर पहुँचना पड़ा। मगर दरख्तों के बहुत ऊपर सूरज नीले आसमान में चमक रहा था और कहीं पर एक भी बादल का टुकड़ा नहीं था।

कोर्चागिन और उसके साथी अपने हिस्से में गिरी हुई बर्फ की सफाई

करने के लिए गये। तभी पावेल को इस बात का एहसास हुआ कि सर्दी कितनी तकलीफदेह चीज हो सकती है। ओकुनेव की जाकट एकदम तार-तार हो गयी थी और उससे किसी किस्म का बचाव नहीं होता था। उसके रबड़ के बड़े जूतों में बराबर बर्फ भरी रहती थी। जब देखो तब वह बरफ में फँसकर निकल जाते थे। और अब उसके दूसरे जूते के तल्ले निकलने की भी बारी आ गयी थी। उसकी गर्दन में दो बड़े-बड़े फोड़े निकल आये थे। ठंडे फर्श पर सोने के कारण ऐसा हुआ था। गुलूबन्द की जगह लगाने के लिए तोकारेव ने उसको अपना तौलिया दे दिया था।

पावेल का चेहरा मरियल और उसकी आँखें लाल हो रही थीं और वह भूत की तरह बर्फ में अपना बेलचा चला रहा था। तभी एक मुसाफिर-गाड़ी भक-भक करती हुई धीरे-धीरे स्टेशन में दाखिल हुई। उसके इंजन की जान अब-तब हो रही थी और वह बड़ी मुश्किल से गाड़ी को इस जगह तक खींचकर ला सका था। लकड़ी का एक भी कुन्दा इंजन के पासवाले कोयले के डब्बे में नहीं बचा था। और फायर-बाक्स में आखिरी अंगारे बुझने की तैयारी में थे।

इंजन ड्राइवर ने चिल्लाकर स्टेशन मास्टर से कहा, 'हमें ईंधन दो तो हम और आगे जायँ, वरना अभी जब तक इंजन में दम है, हमें गाड़ी को शण्ट करके साइडिंग में ले जाकर डाल देने दो, नहीं तो और मुसीबत होगी।'

रेलगाड़ी को साइडिंग में ले जाकर डाल दिया गया। गाड़ी को रोक देने की वजह नाराज मुसाफिरों को समझायी गयी और डब्बों से शिकायतों और गालियों का एक तूफान सा उठा।

'जाओ, उस बुड्ढे आदमी से बात करो,' स्टेशन मास्टर ने तोकारेव की तरफ इशारा करते हुए, जो प्लेटफार्म पर चला आ रहा था, रेलगाड़ी के गार्डों से कहा। 'यहाँ पर जो तामीरी काम चल रहा है, उसके प्रधान वही हैं। हो सकता है वह स्लेज में रखकर कुछ लकड़ी इंजन के लिए पहुँचा सकें। वे लोग स्लीपरों के लिए लकड़ी के कुन्दे इस्तेमाल कर रहे हैं।'

जब कंडक्टरों ने तोकारेव के सामने अपनी माँग रक्खी तो उसने कहा, 'मैं तुम्हें लकड़ी दूँगा, मगर इसके लिए तुम्हें दाम देना पड़ेगा। आखिर यह हमारे तामीरी काम का मसाला है। इस वक्त बर्फ के कारण हमारा काम रुका हुआ है। तुम्हारी गाड़ी में करीब छः-सात सौ मुसाफिर जरूर होंगे। औरतें और बच्चे गाड़ी में रह जायँ। और मर्द बाहर आकर शाम तक बर्फ की सफाई में हमारी मदद करें, यही हमारा कहना है। यह दाम चुकाने के लिए अगर तैयार हो तो मैं तुम्हें जलाने के लिए लकड़ी दे सकता हूँ। अगर यह बात उन लोगों को मंजूर न हो तो ठीक है, नये साल के पहले दिन तक

वे आराम से उसी जगह पर पड़े रह सकते हैं !'

'जरा इस भीड़ को तो देखो जो इधर आ रही है। अरे, इनमें तो औरतें भी हैं !' कोर्चागिन ने अपनी पीठ पीछे किसी की आश्चर्य से कही गयी यह बात सुनी। वह पीछे मुड़ा। तोकारेव वहाँ पहुँचा।

उसने कहा, 'ये लो मैं तुम्हारे लिए एक सौ मददगार लाया हूँ। इन सबको काम दो और देखना कोई कामचोरी न करने पाये।'

कोर्चागिन ने इन नये आनेवालों को काम पर लगा दिया। रेलवे की ठाटदार साफ-सुथरी वर्दी पहने एक लम्बे आदमी ने, जिसकी वर्दी में फर का कालर लगा था और सर पर ऊनी कराकुल टोपी थी, नाराजगी से फावड़े को घुमाया और एक नौजवान औरत की तरफ मुड़ा जो उसकी साथिन थी। यह औरत सील मछली के चमड़े का हैटलगाये थी, जिसके सिरे पर एक भारी सा फुँदना लगा हुआ था।

'मैं इस तरह फावड़ा भर-भरकर बर्फ नहीं फेंकूँगा और किसी की मजाल नहीं कि मुझे इस काम के लिए मजबूर करे। रेलवे इंजीनियर की हैसियत से मैं इस काम का चार्ज ले सकता था अगर मुझसे कहा जाता। लेकिन इसकी कोई जरूरत नहीं कि तुम या मैं, यहाँ इस तरह हाथ में फावड़ा लेकर बर्फ की सफाई करें। यह कायदे के खिलाफ बात है। यह बुड्ढा आदमी कानून तोड़ रहा है। मैं चाहूँ तो उसका चालान करवा सकता हूँ। तुम्हारा फोरमैन कहाँ है ?' उसने अपने पास खड़े हुए एक मजदूर से आदेश के स्वर में पूछा।

कोर्चागिन वहाँ आ गया।

'आप काम क्यों नहीं कर रहे हैं, जनाब ?'

उस आदमी ने उपेक्षा के साथ पावेल को ऊपर से नीचे तक देखा।

'मगर आप कौन हैं ?'

'मैं एक मजदूर हूँ।'

'तब मुझे आपसे कुछ नहीं कहना है। मेरे पास अपने फोरमैन को या जिस भी नाम से आप उसे पुकारते हों, उसको भेज दीजिए ...'

कोर्चागिन के माथे में बल पड़ गये।

'अगर आप काम नहीं करना चाहते, तो मत करिए। मगर आप वापिस अपनी गाड़ी में नहीं पहुँच सकते जब तक कि आपके टिकट पर हमारे दस्तखत न हों। यह हमारे प्रधान का आदेश है।'

'और आप ?' पावेल ने उस औरत की तरफ मुड़ते हुए कहा। और उस ओर नजर पड़ते ही उसे तो जैसे काठ-सा मार गया। उसके सामने तोनिया

तुमानोवा खड़ी थी।

तोनिया को यकीन नहीं आ रहा था कि यह आवारा सा आदमी, जो फटे-पुराने कपड़े और सड़े-गले जूते पहने खड़ा था, जिसके गले में एक गंदी-सी तौलिया बँधी थी और जिसने शायद कई दिन से मुँह भी नहीं धोया था, वही कोर्चागिन था जिसे वह कभी जानती थी। सिर्फ उसकी आँखें अब भी अंगारों की तरह चमक रही थीं, जैसी कि तब चमकती थीं। उसे पावेल की आँखों की याद थी। उसे देखकर वह शर्म से गड़ गयी कि अभी कुछ ही साल पहले उसने इस आवारा शकल के आदमी को अपनी मुहब्बत दी थी। हर चीज कैसी बदल गयी थी।

उसने हाल में शादी की थी और वह अपने पति के साथ शहर जा रही थी, जहाँ वह रेलवे विभाग में ऊँचे पद पर था। भला किसने सोचा था कि अपने कैशोर्य का प्रेमपात्र उसे यहाँ इस रूप में मिल जायगा! उससे हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ बढ़ाने में भी उसे झिझक हुई। वासिली क्या सोचेगा? कितनी बुरी बात है कि कोर्चागिन का ऐसा पतन हो गया है। जाहिर है कि इस फायरमैन को मजदूर की हैसियत से ऊपर उठने का मौका नहीं मिला।

वह हिचकिचाती हुई खड़ी रही। उसके गाल जल रहे थे। इसी बीच रेलवे इंजीनियर ने, जो इस आवारे की ढिठाई पर तैश खाता खड़ा था क्योंकि वह उसकी बीवी को घूर रहा था, अपने हाथ का बेलचा फेंक दिया और अपनी बीवी के बगल में जाकर खड़ा हो गया।

'चलो तोनिया चलें, मैं इस लात्सरोनी[1] की सूरत अब और नहीं बर्दाश्त कर सकता।'

कोर्चागिन ने जिसेपी गैरिबाल्डी पढ़ा था और उसे इस शब्द का मतलब मालूम था।

'मैं भले लात्सरोनी होऊँ, मगर तुम तो एक गलीज बुर्जुआ हो,' उसने फटी हुई आवाज में कहा और तोनिया की तरफ मुड़ते हुए रूखे अन्दाज में कहा, 'कामरेड तुमानोवा, बेलचा ले लो और काम शुरू कर दो। इस बैल के उदाहरण पर मत चलो ... माफ करना अगर तुम्हारा इससे किसी तरह का सम्बन्ध हो।'

पावेल ने तोनिया के फर के जूतों पर निगाह डाली और मुस्कराते हुए कहा :

---

१. नेपुल्स शहर का रहने वाला आवारागर्द लड़का जो छोटे-मोटे काम करके और भीख माँगकर जीवन निर्वाह करता है।

'मैं तुम्हें यहाँ रुकने की सलाह न दूँगा। कल रात लुटेरों ने हम पर हमला किया था।'

यह कहकर वह घूमा और चल पड़ा, उसके रबड़ के बड़े जूते फटाफट बज रहे थे।

उसके आखिरी शब्दों का रेलवे इंजीनियर पर असर हुआ और तोनिया ने उसे रुकने और काम करने के लिए राजी कर लिया।

उसी शाम को, दिन का काम खत्म हो जाने पर, काम करनेवालों की भीड़ स्टेशन वापस आयी। तोनिया का पति बड़ी जल्दी कर रहा था ताकि सबसे आगे पहुँच जाय और रेलगाड़ी में उसे अच्छी सीट मिल जाय। तोनिया ने, जो मजदूरों की एक टोली को रास्ता देने के लिए रुक गयी थी, पावेल को दूसरे सब काम करनेवालों के पीछे-पीछे थके हुए कदमों से, अपने बेलचे का सहारा लेकर धीरे-धीरे चलते देखा।

'हलो पावलूशा,' उसने कहा और उसके साथ हो ली और उसके बगल-बगल चलने लगी। 'मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं तुमको यहाँ ऐसी हालत में पाऊँगी। अधिकारियों को इतना तो मालूम होगा ही कि तुम्हारी योग्यता इससे ज्यादा है कि तुम बस एक मजदूर बनाकर छोड़ दिये जाओ? मैंने तो सोचा था कि तुम कबके कमिसार या ऐसे ही किसी दूसरे पद पर पहुँच गये होगे। बड़े अफसोस की बात है कि जिन्दगी ने तुम्हारे साथ ऐसी बेरहमी की।'

पावेल रुका और उसने कुछ आश्चर्य से तोनिया को देखा।

'और न मैंने कभी ,समझा था कि तुम्हारा नज़रिया इतना तंग होगा,' उसने अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए सभ्य से सभ्य शब्द तलाश करते हुए कहा।

तोनिया के कान की लवें जल रही थीं।

'तुम अब भी हमेशा ही की तरह बदजबान हो!'

कोर्चागिन ने अपना बेलचा उठाकर कंधे पर रख लिया और आगे बढ़ता रहा। कुछ कदम जाकर वह रुका।

'कामरेड तुमानोवा' उसने कहा, 'मेरी बदजबानी तुम्हारी सभ्यता से कहीं अच्छी है। और जहाँ तक मेरी जिन्दगी का ताल्लुक है, उसकी फिक्र न करो। उसमें कोई गड़बड़ी नहीं है। गड़बड़ी तुम्हारी जिन्दगी में है, जैसा मैंने सोचा था उससे कहीं ज्यादा। दो साल पहले तुम बेहतर थीं, तब तुम्हें एक मजदूर से हाथ मिलाने में कम से कम शर्म तो नहीं मालूम होती थी। मगर अब तुमसे कपूर की गोलियों की बदबू आती है। सच बात यह है कि तुम्हारे और मेरे बीच अब कुछ भी कहने-सुनने को बाकी नहीं बचा।'

पावेल को आर्तेम की एक चिट्ठी मिली थी जिसमें लिखा था कि वह शादी करने जा रहा है और पावेल से जोर देकर उसने कहा था कि हर हालत में वह शादी में शरीक हो।

हवा का एक झोंका पावेल के हाथ से कागज के उस टुकड़े को उड़ा ले गया। यह सब शादी-बारात उसके लिए नहीं है। इस वक्त भला वह कैसे जा सकता है ? अभी कल ही वह भालू पांक्रातोव उसकी टीम से आगे बढ़ गया था और इतनी तेजी से काम कर रहा था कि सबको देखकर हैरत होती थी। वह जहाजी मजदूर प्रतियोगिता में पहला स्थान पाने के लिए जान लगा-कर कोशिश कर रहा था। यों वह लापरवाह सा आदमी था और इन बातों की उसे फिक्र नहीं रहती थी। मगर अब उस लापरवाही की उसके यहाँ कोई जगह न थी और वह जैसे चाबुक मार-मारकर अपने साथी जहाजियों को बेहद तेज रफ्तार से आगे लिये चला जा रहा था।

पतोश्किन उस खामोश तेजी को देख रहा था जिससे कि सब लोग काम कर रहे थे और वह परेशान होकर सिर खुजलाते हुए मन ही मन आश्चर्य से सोचता था, 'ये आदमी हैं या देव ? ऐसी असंभव शक्ति इनके अन्दर कहाँ से आती है ? अगर सिर्फ आठ दिन तक मौसम साफ रहा तो हम कटी हुई लकड़ियों तक पहुँच जायँगे ! ठीक है, देखो, अभी तुम्हें जिन्दगी में बहुत कुछ देखना और सीखना है ! ये लोग सारे रेकार्ड और सारे तख़मीने तोड़कर रखे दे रहे हैं।'

क्लावीचेक अपनी तैयार की हुई आख़िरी रोटियाँ लेकर शहर से आया। उसने तोकारेव से बात की और फिर कोर्चागिन की तलाश में निकल गया। दोनों आदमियों ने बड़ी मुहब्बत से एक-दूसरे से हाथ मिलाया। क्लावीचेक ने खुलकर मुस्कराते हुए थैले में हाथ डाला और स्वीडन की बनी हुई चमड़े की एक बड़ी खूबसूरत जाकट निकाली जिसमें फर का अस्तर लगा हुआ था।

'यह तुम्हारे लिए है !' उस नर्म चमड़े को थपथपाते हुए उसने कहा। 'बूझो तो किसने भेजा है ? क्या, तुम्हें नहीं मालूम ? हो यार तुम सचमुच बड़े बुद्धू ! कामरेड उस्तिनोविच ने भेजा है इसे, ताकि तुम्हें सर्दी न लग जाय। उसको यह चीज ओलशिन्स्की से मिली थी। उससे लेकर उस्तिनोविच ने सीधे मेरे हाथ में पकड़ा दिया ताकि मैं तुम्हें लाकर दे दूँ। अकिम ने उसको बताया था कि तुम्हारे पास बस एक पतली सी जाकट है जिसे पहनकर तुम जाड़े-पाले में घूमते रहते हो। ओलशिन्स्की बड़ा दुखी हुआ। उसने कहा, 'मैं इस साथी को एक फौजी कोट भेज दूँगा।' मगर रिता इसको सुनकर हँस पड़ी और बोली, 'फिक्र न करो, इस जाकट में वह ज्यादा अच्छा काम करेगा।'

आश्चर्यान्वित पावेल ने उस शानदार जाकट को लिया और फिर कुछ हिचकिचाते हुए उसे अपने सर्दी से जकड़े हुए बदन पर चढ़ा लिया। पहनने के साथ ही उसको उन नर्म-नर्म बालों से, जो उसके सीने और कंधों पर फैले हुए थे, अपने जिस्म के अन्दर गर्मी मालूम हुई।

मंजिल अब दिखायी दे रही थी, मगर उसकी तरफ बढ़ने की रफ्तार इतनी धीमी थी कि तकलीफ होती थी। हर रोज टाइफाइड दर्जनों काम करनेवालों को छीन लेता था।

एक रोज कोर्चागिन, काम पर से स्टेशन लौटते हुए, शराबी की तरह लड़खड़ाता चला आ रहा था। उसकी टाँगें टूटी जा रही थीं। कई रोज से उसे हरारत रहती थी, मगर आज बुखार की तेजी बहुत बढ़ गयी थी।

टाइफाइड बुखार काम करनेवालों की संख्या बराबर घटाता जा रहा था और अब उसे यह एक नया शिकार मिला। मगर पावेल के तगड़े जिस्म ने रोग का बहुत मुकावला किया और लगातार पाँच रोज तक उसके अन्दर इतनी ताकत रही कि वह कंकरीट के फर्श पर बिछे हुए अपने पुआल के बिस्तरे से उठा और दूसरे काम करनेवालों के संग-संग काम में शरीक हुआ। मगर अब बुखार ने उसके ऊपर काबू पा लिया था। और अब न तो गरम जाकट, न फियोदोर के उपहार के फेल्ट जूते, जिन्हें वह पाले के मारे हुए पैरों में पहने था, कुछ भी काम आये।

हर कदम के साथ उसके सीने में बड़ा तेज दर्द होता था। उसके दाँत बज रहे थे, और उसकी आँखों के आगे धुँधलका-सा छाया हुआ था जिससे तमाम पेड़ उसे घूमते नजर आते थे।

बड़ी मुश्किल से वह किसी-किसी तरह अपने पैरों को घसीटता हुआ स्टेशन पहुँचा। वहाँ पर उसे असाधारण हलचल दिखायी दी जिससे कि वह रुक गया और अपनी बुखार से भारी आँखों पर जोर देते हुए उसने देखा कि माल के खुले हुए डब्बों की एक लम्बी गाड़ी यहाँ से वहाँ तक प्लेटफार्म पर खड़ी है। गाड़ी में जो लोग आये थे, वे उन डब्बों से छोटी लाइन के इंजन, रेल की पटरियाँ और स्लीपर उतार रहे थे। पावेल लड़खड़ाते कदमों से आगे बढ़ा और भहराकर गिर पड़ा। उसका सिर जमीन से जा टकराया और उसे भयानक दर्द महसूस हुआ और उसके जलते हुए गालों को बर्फ की ठंडक मिली जो उसे अच्छी मालूम हुई।

कई घंटे बाद लोगों ने उसे वहाँ पड़े देखा और उठाकर बारक में ले आये। उसकी साँस भारी चल रही थी और उसे अपने आसपास की चीजों का

कोई होश न था। बख्तरबन्द गाड़ी में से एक कम्पाउंडर को बुलाया गया और उसने बतलाया कि पावेल को निमोनिया और टाइफाइड है। उसे एक सौ छः डिग्री बुखार था। कम्पाउंडर ने उसके जोड़ों की सूजन और गर्दन पर के उसके जख्मों को भी देखा, मगर उसने कहा कि निमोनिया और टाइफाइड के मुकाबले में वे कुछ भी नहीं हैं। मरीज की जान लेने के लिए यह निमोनिया और टाइफाइड काफी हैं।

पांक्रातोव और दुबावा ने, जो शहर से आ गये थे, पावेल को बचाने के लिए कोई भी कोशिश उठा न रखी।

अल्योशा कोखान्स्की को, जो पावेल के ही शहर का आदमी था, यह भार सौंपा गया कि वह पावेल को उसके घरवालों के पास ले जाय।

कोर्चागिन की टीम के तमाम काम करनेवालों की मदद से और खास तौर से खोलियावा की मदद से पांक्रातोव और दुबावा ने किसी तरह अल्योशा और बेहोश कोर्चागिन को भरे हुए रेलगाड़ी के डब्बे में घुसाया। मुसाफिरों को शक हो गया कि टाइफस का मामला है और उन्होंने इस बात के लिए बहुत जोर लगाया कि उन लोगों को अन्दर न आने दें। और यह भी धमकी दी कि वे रास्ते में ही मरीज को उठाकर रेलगाड़ी से बाहर फेंक देंगे।

खोलियावा ने अपनी बन्दूक उनकी नाक से अड़ा दी और गरजकर बोला : 'इसकी बीमारी छुतही नहीं है ! और यह इस गाड़ी पर जायगा ही, चाहे इसके लिए तुम लोगों को इसमें से उठाकर बाहर फेंक देना पड़े ! और याद रखना जानवरो, अगर तुममें से किसी ने इसको हाथ भी लगाया तो मैं लाइन को खबर भेज दूंगा और तुम सबको गाड़ी से उतारकर जेल में डाल दिया जायगा। लो, अल्योशा, पावका की यह माउज़र लो और जो भी आदमी कुछ गड़बड़ करे, उसे गोली से उड़ा दो,' खोलियावा ने जोर देते हुए अपनी बात खतम की।

रेलगाड़ी भक-भक भाप छोड़ती हुई स्टेशन से रवाना हुई। पांक्रातोव दुबावा के पास गया जो वीरान प्लेटफार्म पर खड़ा था।

'तुम्हारा क्या खयाल है, यह बच जायगा ?'

सवाल का कोई जवाब नहीं मिला।

'चलो मितियाई, इसका कोई इलाज नहीं है। अब हमीं को हर चीज की जवाबदेही करनी पड़ेगी। हमें रात भर में इन इंजनों को उतार लेना है और सबेरे हम उनको गरमाने की कोशिश करेंगे।'

खोलियावा ने लाइन पर के अपने तमाम चेका के दोस्तों को टेलीफोन किया और उनसे जोर देकर यह कहा कि वे इस बात का खयाल रखें कि बीमार कोर्चागिन को कहीं पर कोई गाड़ी से उतार न सके। उसे जब इस

बात का पूरा आश्वासन मिल गया तभी वह सोने के लिए गया।

लाइन पर और आगे चलकर एक रेलवे जंकशन पर सुनहरे बालोंवाले एक अपरिचित नौजवान का शरीर स्टेशन से गुजरती हुई एक मुसाफिर-गाड़ी के डब्बे से उतारकर प्लेटफार्म पर रख दिया गया। वह कौन था और काहे से मरा, यह किसी को मालूम न था। स्टेशन के चेका के लोग खोलियावा के अनुरोध की याद कर भागे हुए डब्बे के पास गये, मगर जब उन्होंने देखा कि वह नौजवान मर चुका है, तो उन्होंने कहा कि लाश को मुर्दाघर पहुँचाया जाय और फौरन खोलियावा को बोयार्का टेलीफोन किया कि उसके उस दोस्त की मौत हो गयी, जिसकी जान बचाने के लिए वह इतना चिन्तित था।

बोयार्का से कोमसोमोल की सूबा कमेटी के पास एक छोटा-सा तार कोर्चागिन की मौत की खबर देते हुए लिखा गया।

मगर इसी बीच अल्योशा कोखान्स्की ने बीमार कोर्चागिन को उसके घर-वालों के हवाले किया और खुद बुखार का शिकार हो गया।

'मेरे दिल में इतना दर्द क्यों होता है? लिखने के लिए बैठने के पहले मैं जार-जार रोयी। कौन इस बात का यकीन करेगा कि रिता रो भी सकती है और इतनी असह्य व्यथा से? मगर क्या आँसू सदा कमजोरी की निशानी होते हैं। आज मेरे आँसू दिल को झुलसा देनेवाले दर्द के हैं। आज इस विजय के दिन यह शोक क्यों आया — जबकि जाड़े-पाले की भयानक मुसीबतों पर जीत हासिल कर ली गयी है, जब कि रेलवे स्टेशन उस अनमोल चीज, जलाने की लकड़ी, से अटे हुए हैं, जब कि मैं अभी-अभी इस विजय के उत्सव से लौटी हूँ, शहर की सोवियत की बड़ी मीटिंग से जिसमें इस तामीरी काम के वीरों का सम्मान किया गया। यह विजय तो है, मगर इसके लिए दो आदमियों ने अपनी जानें दी हैं—क्लावीचेक और कोर्चागिन ने।

'पावेल की मौत ने मेरी आँखें खोल दी हैं और मैं इस सचाई को देख रही हूँ कि वह मेरा इतना प्रिय था जितना कि मैंने कभी नहीं सोचा था।

'और अब मैं इस डायरी को बन्द करती हूँ। मुझे शक है कि मैं फिर शायद कभी शुरू न कर सकूँगी। आज खारकोव एक चिट्ठी भेज रही हूँ, जिसमें मैं उक्रेन के कोमसोमोल की केन्द्रीय कमेटी वाले काम के लिए अपनी स्वीकृति लिख दूँगी।'

बारह

मगर जवानी की जीत हुई। टाइफाइड पावेल का काम तमाम नहीं कर सका। चौथी बार उसने मौत की सरहद पार की और जिन्दगी को लौट आया। मगर अपने बिस्तर से उठने में उसे पूरा एक महीना लग गया। वह बिल्कुल पीला और कंकाल की तरह हड्डी-हड्डी हो गया था और काँपती हुई टाँगों से, बेहद कमजोरी से लड़खड़ाता हुआ कमरे को पार करता था और सहारे के लिए दीवार पकड़ लेता था। अपनी माँ की मदद से वह खिड़की के पास पहुँचा और बड़ी देर तक वहाँ पर खड़ा-खड़ा सड़क को देखता रहा जहाँ पिघली हुई बर्फ के गाले शुरुआती वसन्त की धूप में चमक रहे थे। बर्फ का पिघलना अभी शुरू हो ही रहा था।

खिड़की के ठीक सामने भूरे पेट की एक गोरैया चेरी के पेड़ की एक शाख पर बैठी हुई अपने पंख फुला रही थी और पावेल को घबरायी हुई आँखों से जल्दी-जल्दी और चुपके-चुपके देख लेती थी।

'अच्छा तो तुम और मैं आखिर जाड़े को पार कर ही आये ?' पावेल ने कहा और खिड़की के शीशे पर धीरे से उंगली मारी।

उसकी माँ ने चौंक कर निगाह उठायी।

'वहाँ बाहर कौन है जिससे तुम बातें कर रहे हो ?'

'एक गोरैया...और लो अब वह उड़ भी गयी, शैतान कहीं की।' और थकी सी मुस्कराहट पावेल के चेहरे पर खेल गयी।

वसन्त के उभार पर आते-आते पावेल शहर वापिस जाने की बात सोचने लगा। अब उसमें चलने-फिरने लायक ताकत आ गयी थी, मगर कोई अज्ञात बीमारी उसको घुन की तरह खाये जा रही थी। एक रोज जब वह बागीचे में घूम रहा था, तो उसकी रीढ़ की हड्डी में ऐसा भयानक दर्द उठा कि उसके लिए खड़ा रहना मुश्किल हो गया। बड़ी मुश्किल से वह किसी तरह अपने पाँव घसीटकर कमरे में वापिस पहुँचा। दूसरे रोज उसकी पूरी डाक्टरी जाँच हुई। पावेल की पीठ की जाँच करने पर डाक्टर को उसकी रीढ़ में एक गहरा गड्ढा मिला जिसे देखकर आश्चर्य से उसने कहा :

'यह घाव तुम्हें कहाँ लगा ?'

'रोवनो की लड़ाई में। हमारे पीछे की बड़ी सड़क को एक तीन इंची

तोप ने फोड़कर रख दिया था और तभी एक पत्थर आकर मेरी पीठ पर लगा था।'

'मगर तुम चलते-फिरते कैसे थे ? क्या इससे कभी तुम्हें कोई परेशानी नहीं हुई ?'

'नहीं। चोट लगने के एक-दो घंटे तक तो मैं नहीं उठ सका, मगर फिर सब ठीक हो गया और मैं अपने घोड़े पर सवार हो गया और मजे में मेरा काम चलता रहा। तब से यह पहली मर्तबा मुझे तकलीफ हुई है।'

उस गड्ढे की जाँच करते वक्त डाक्टर का चेहरा बहुत गंभीर हो गया था।

'न भाई, यह बहुत बुरी चीज है। रीढ़ को इस तरह अपना झकझोरा जाना पसन्द नहीं। अच्छा हो कि यह कोई गड़बड़ी न करे और मामला खैरियत से गुजर जाय।'

डाक्टर ने अपने मरीज को कपड़ा पहनते समय हमदर्दी से और पीड़ा से देखा, जिसे छिपाना उसके बस में न था।

आर्तेम अपनी बीवी के घरवालों के यहाँ रहता था। उसकी बीवी स्त्योशा मामूली रूप-रंग की एक गरीब परिवार की किसान औरत थी। एक रोज पावेल अपने भाई से मिलने के लिए गया। एक धूल में लिथड़ा हुआ तिरपट आँख का लड़का उस छोटे-से गन्दे हाते में खेल रहा था। उसने पावेल को बड़ी देर तक घूरा और फिर नाक पोंछते हुए जवाब तलब करने के स्वर में बोला :

'क्या चाहिए ? कौन जाने तुम चोर होओ ! फौरन यहाँ से चलते बनो, नहीं तो माँ तुम्हारी अच्छी तरह खबर लेगी !'

उस गन्दी सी पुरानी झोपड़ी की एक छोटी खिड़की खुली और आर्तेम ने बाहर झाँका।

उसने पुकारकर कहा, 'अन्दर चले आओ पावेल !'

एक बुड्ढी स्त्री जिसका चेहरा बहुत पुराने कागज की तरह पीला-पीला था, अंगीठी के पास काम कर रही थी। पावेल उसके पास से गुजरा तो उसने पावेल को ऐसी निगाहों से देखा जिसमें दोस्ती नहीं थी और वह अपने बर्तनों की खटर-पटर में फिर लग गयी।

दो लड़कियाँ, जिनकी रस्सी-जैसी चोटियाँ थीं, अंगीठी पर चढ़ गयीं और वहाँ से हब्शियों की तरह कुतूहल से मुँह फाड़कर इस आगन्तुक को देखने लगीं।

आर्तेम मेज से लगी कुर्सी पर बैठा था और उसके चेहरे से जाहिर था कि उसे कुछ-कुछ परेशानी महसूस हो रही है। उसे यह बात मालूम थी कि न तो उसकी माँ को यह शादी पसन्द थी और न उसके भाई को। उन लोगों की समझ में नहीं आता था कि क्यों आर्तेम, जिसका परिवार कई पीढ़ियों से मजदूरों का परिवार था, राजगीर की उस खूबसूरत लड़की गालिया से, जो दर्जीगीरी करती थी और जिससे तीन साल तक उसका इश्क चला था, सम्बंध तोड़कर स्त्योशा जैसी एक ठस, नासमझ औरत के साथ रहने लगा और क्यों उसने पाँच जनों के कुनबे का रोटी कमानेवाला बनना मंजूर किया। अब उसकी हालत यह थी कि दिन भर रेलवे के कारखाने में खटने के बाद उसे उजड़े हुए खेत में फिर से जान डालने के लिए हल लेकर जुटना पड़ता था।

आर्तेम को पता था कि पावेल, इस तरह मजदूरों की जमात छोड़कर उसके शब्दों में 'मध्यवर्गी' लोगों के साथ आर्तेम के जा मिलने से असहमत था और इस वक्त वह गौर से देख रहा था कैसे उसका भाई उसके वातावरण और परिवेश का जायजा ले रहा है।

कुछ देर तक वे बैठे वैसी ही बेमानी-सी बातें करते रहे, जो अचानक मिल जानेवाले दो लोगों में यों ही हुआ करती हैं। थोड़ी ही देर बाद पावेल जाने के लिए उठा। मगर आर्तेम ने उसे रोक लिया।

'थोड़ी देर रुको, हमारे साथ खाना खाना। स्त्योशा जरा देर में दूध लेकर आयेगी। अच्छा तो तुम कल फिर चले जा रहे हो? अच्छा पावका, यह तो बताओ, क्या तुम्हें इस बात का पूरा यकीन है कि तुम्हारे अन्दर काफी ताकत आ गयी है?'

स्त्योशा अन्दर आयी। उसने पावेल का अभिवादन किया। और आर्तेम से कहा कि उसके साथ खलिहान तक चले और वहाँ से कोई चीज उठाकर लाने में उसकी मदद करे। अब पावेल उस कमरे में उस चिड़चिड़ी बुढ़िया के साथ अकेला रह गया। खिड़की में से गिर्जाघर की घंटियों की आवाज आ रही थी। बुढ़िया ने अपने हाथ की सँडसी रख दी और चिड़चिड़े स्वर में बड़बड़ाने लगी :

'हे भगवान, आग लगे इस घर के खटराग को, भगवान के स्मरण के लिए भी दो छन नहीं मिले!' उसने अपना शाल उतार लिया और इस आगन्तुक को उड़ती निगाहों से देखती हुई उस कोने में गयी जहाँ देवी-देवताओं के चित्र वगैरह टँगे हुए थे, जिन पर वक्त ने कालिख पोत दी थी और जिन

पर एक अजीब मुर्दनी सी छायी हुई थी। अपनी लकड़ी जैसी तीन उँगलियों से उसने अपने ऊपर सलीब का निशान बनाया।

और अपने मुर्झाये हुए होठों से बुदबुदाकर कहा, 'ऐ हमारे बाप, तू जो आसमान पर है, तेरा नाम पाक माना जाय !'

वह आवारा छोकरा बाहर हाते में एक काले, लटके हुए कान वाले सुअर पर सवार उचक रहा था। अपनी छोटी-छोटी नंगी एड़ियाँ उसने चुस्ती से सुअर के बगल में गड़ा रखी थीं और उसके खड़े हुए बालों से चिपटा हुआ चीख-चीखकर उस दौड़ते और हाँफते हुए जानवर से कह रहा था : 'हाँ पट्ठे, बढ़ा चल, बढ़ा चल !'

वह सुअर पागल की तरह हाते में दौड़ रहा था और जी-तोड़ कोशिश कर रहा था कि किसी तरह उस लड़के को गिरा दे। मगर वह तिरपट छोकरा मजबूती से उस पर सवार था।

बुढ़िया ने अपनी प्रार्थना बन्द की और खिड़की में से सिर निकाला।

'अरे चांडाल, उतर उस सुअर पर से, नहीं तो मैं मारते-मारते तेरी चमड़ी उधेड़ लूँगी ! तेरी ठठरी बंधे नासपीटे !'

आखिरकार सुअर को कामयाबी मिली और उसने लड़के को, जिसने उसकी नाक में दम कर दिया था, अपनी पीठ पर से गिरा दिया और तब बुढ़िया सन्तुष्ट होकर अपनी मूर्तियों के पास लौटी और अपने चेहरे पर पवित्र धार्मिक भाव लाते हुए कहने लगी :

'तेरी बादशाहत ज़मीन पर हो ...'

उसी वक्त लड़का दरवाजे की देहलीज़ पर दिखायी दिया। आँसुओं से उसका चेहरा गंदा हो रहा था। आस्तीन से अपनी बराबर बहती हुई नाक को पोंछते और दर्द के मारे सिसकते हुए उसने रोने के स्वर में कहा :

'नानी, मिठा-आ-आ-ई !'

बुढ़िया गुस्से से लाल होकर उसकी तरफ मुड़ी।

'अरे हरामजादे, तिरछी आँख के भूत, देखता नहीं कि मैं प्रार्थना कर रही हूँ ? अभी देती हूँ मैं तुझे मिठाई, शैतान की औलाद ... !' कहते हुए उसने बेंच पर से कोड़ा उठाया। मगर देखते-देखते लड़का नौ-दो-ग्यारह हो गया। अँगीठी पर बैठी हुई दोनों नन्हीं-नन्हीं लड़कियाँ गुपचुप हँसने लगीं।

और बुढ़िया ने तीसरी बार प्रार्थना में अपना मन लगाया।

पावेल उठ खड़ा हुआ और बिना अपने भाई का इन्तजार किये बाहर निकल गया। बाहर का फाटक बन्द करते हुए उसने देखा कि बुढ़िया मकान की आखिरी खिड़की में से बड़ी शक की निगाहों से उसे देख रही है।

'पता नहीं आर्तेम के सिर पर कौन भूत सवार था जो उसे यहाँ घसीट

लाया ! अब जिन्दगी भर के लिए वह यही बंध गया। स्त्योशा के हर साल एक बच्चा होगा और आर्तेम यहाँ पर वैसे ही चिपका रहेगा जैसे घूर पर गोबरैला चिपका रहता है। यह भी मुमकिन है कि वह रेल के कारखाने का काम छोड़ दे।' उस छोटे से कस्बे की उजड़ी हुई सड़कों पर चलते हुए पावेल के मन में यही उदास विचार आ रहे थे। 'और मुझे देखो कि मैं अपनी जगह पर यह उम्मीद लिये बैठा था कि सियासी काम में उसकी दिलचस्पी पैदा करूँगा।'

पावेल को इस खयाल से बड़ी खुशी हो रही थी कि कल वह इस जगह को छोड़कर बड़े शहर में चला जायगा जहाँ उसके तमाम वे दोस्त और साथी मिलेंगे जिन्हें वह इतना प्यार करता है। बड़े शहर की जिन्दगी की हलचल, आदमियों का अन्तहीन ताँता, उसकी ट्रामों और मोटरगाड़ियों की आवाजें, अपनी इन सब चीजों समेत शहर उसे चुम्बक की तरह अपनी तरफ खींचता था। मगर सबसे ज्यादा चाह उसके दिल में कारखाने की उन बड़ी-बड़ी ईंट की इमारतों की थी—कालिख से भरी हुई वर्कशाप, मशीनें, ट्रांसमिशन बेल्टों की धीमी गूँज। उसके मन में दैत्याकार फ्लाई ह्वीलों को बेतहाशा घूमते देखने की, मशीन के तेल की गंध सूँघने की, तीव्र लालसा थी। ये सारी चीजें उसके व्यक्तित्व का अंग बन चुकी थीं। इसलिए स्वभावतः उसे उन चीजों की तलाश होती थी। यह छोटा सा, खामोश सा कस्बा, जिसकी सड़कों पर वह इस वक्त घूम रहा था, उसके मन को एक अजीब तरीके से उदास कर देता था। उसे अब इस बात पर हैरत नहीं होती थी कि अब वह इस जगह पर अजनबी सा महसूस करता है।

अपने विचारों में डूबा-डूबा बेखबर-सा वह चीड़ के जंगलों में पहुँच गया और दोराहे पर थोड़ी देर के लिए खड़ा हो गया। उसके दाहिने हाथ पर वह पुराना जेलखाना था जिसे एक ऊँची सी, लोहे के नुकीले डण्डे निकली हुई चहारदीवारी जंगल से अलग करती थी। जेलखाने के और आगे अस्पताल की सफेद इमारतें थीं।

यही वह जगह थी जहाँ जल्लाद के फंदे ने वालिया और उसके साथियों की जिन्दगी का गला घोंट दिया था। पावेल उस जगह पर खामोश खड़ा रहा, जहाँ पर फाँसी की टिकटी रह चुकी थी। फिर धीरे-धीरे चढ़ाई तक गया और चढ़ाई पार कर नीचे उतरा और उस छोटे से कब्रिस्तान पर पहुँच गया जहाँ क्रांति के दुश्मनों के आतंक राज के शिकार अपनी सामूहिक समाधियों में पड़े हुए थे।

प्यार भरे हाथों ने कब्रों पर सनोवर की शाखें बिछा रखी थीं और कब्रिस्तान के चारों तरफ एक साफ-सुथरी हरी सी बाड़ी बना दी थी। चढ़ाई

की चोटी पर खड़े हुए चीड़ के दरख्त सीधे और छरहरे थे और नये-नये घास ने ढलान पर एक हरी सी रेशमी कालीन बिछा रखी थी।

इसी जगह पर पावेल के साथियों ने बहादुरी के साथ मौत का सामना किया था ताकि गरीबी में पैदा हुए लोगों की जिन्दगी खूबसूरत हो सके, उन लोगों की जिन्दगी जिनकी गुलामी पैदाइश के रोज से ही शुरू होती थी।

पावेल ने धीरे-धीरे अपना हाथ उठाया और टोपी उतार ली और एक गहरी उदासी उसके भीतर-बाहर व्याप गयी।

आदमी की सबसे बड़ी दौलत उसकी ज़िन्दगी होती है, और जीने के लिए आदमी को बस एक ही ज़िन्दगी मिलती है। उसे इस तरह अपनी ज़िन्दगी जीनी चाहिए कि उसे मन-ही-मन इस दुख की यंत्रणा को न सहना पड़े कि उसने अपनी ज़िन्दगी के साल यों ही गुजार दिये हैं, ताकि उसे इस ज़िल्लत की आग में न जलना पड़े कि उसका बीता हुआ ज़माना घटिया और ओछा था। उसे इस तरह जीना चाहिए ताकि मरते वक्त वह यह कह सके कि मैंने अपनी सारी ज़िन्दगी, अपनी सारी शक्ति संसार के उस पवित्रतम कार्य, मानव जाति की आज़ादी की लड़ाई में लगायी है। और आदमी को अपनी ज़िन्दगी के एक-एक क्षण का इस्तेमाल करना चाहिए क्योंकि कौन जाने कब कोई अचानक बीमारी या करुण दुर्घटना बीच ही में उसकी ज़िन्दगी के सूत को काट दे।

यही बातें सोचता-सोचता कोर्चागिन मुड़कर कब्रिस्तान से चल दिया।

घर पर उसकी माँ दुखी मन से अपने बेटे के जाने की तैयारी कर रही थी। पावेल ने देखा कि वह उससे अपने आँसू छिपाने की कोशिश कर रही है।

आखिरकार उसने बड़ी हिम्मत करके कहा, 'पावलुशा, फिर सोच देखो, शायद तुम यहाँ रुक सको? मैं बुड्ढी हुई, इस तरह से अकेले रहना मुझसे बर्दाश्त नहीं होता। देखो न, चाहे कितने बच्चे किसी के हों, वे सब बड़े होकर छोड़कर चले जाते हैं। भला बताओ तुम्हें शहर भागने की क्या जरूरत है? यहाँ पर भी तो तुम रह सकते हो या कहीं ऐसा तो नहीं है कि शहर की किसी छोकरी से तुम्हारा मन लग गया हो? तुम सब कभी अपनी बुड्ढी माँ को कुछ नहीं बताते। तमाम लड़कों का यही हाल होता है। आर्तेम ने कभी मुझ से एक शब्द नहीं कहा और जाकर शादी करके बैठ रहा। तुम तो उससे भी गये-गुजरे हो। मैं तो तुम्हें तभी देखती हूँ जब तुम बीमार या घायल होते हो,' उसकी माँ ने एक साफ-सुथरे झोले में उसका थोड़ा-सा सामान रखते हुए धीमे से शिकायत के लहजे में कहा।

पावेल ने माँ के कंधे पकड़कर उसे अपनी तरफ खींचा और कहा :

'माँ, मेरे लिए किसी छोकरी से मन लगाने का सवाल नहीं पैदा होता ! क्या तुम नहीं जानतीं कि चिड़िया अपनी जाति का ही साथी ढूँढ़ती है ? और क्या तुम कहोगी कि मैं उस तरह का लड़का रहा हूँ जो तितलियों के पीछे भागता है ?'

उसकी माँ बरबस मुस्करा पड़ी।

'नहीं माँ, मैंने वचन दिया है कि जब तक दुनिया के तमाम थैलीशाहों का नाश नहीं हो जाता, मैं लड़कियों से दूर ही रहूँगा। शायद तुम कहोगी कि यह तो जरा लम्बी प्रतीक्षा है। मगर नहीं माँ, अब इन थैलीशाहों के दिन गिने हुए हैं।'

'बेटा, यह एक अच्छी परियों की कहानी है, मगर मैं शायद वह दिन देखने के लिए जिन्दा नहीं रहूंगी। ... तुम बिलकुल अपने दादा की तरह हो। वह जहाज पर काम करते थे और उनके भी दिमाग में हमेशा तरह-तरह के खयालात भरे रहते थे। बिलकुल आवारा आदमी थे वह, भगवान उनकी आत्मा को शान्ति दे।

'वह सब तो ठीक है माँ, मगर क्या हम लोग ऐसे उदास ढंग से विदा होंगे एक-दूसरे से ? मुझे मेरा अकार्डियन तो दे। मैंने बहुत दिनों से उसे नहीं छुआ।'

पावेल ने बाजे के सीप के बने पर्दे पर सिर झुका लिया और बजाने लगा। उसकी माँ सुनती रही और हैरान होकर उसके संगीत के अन्दर पैदा होनेवाले उस नये गुण के बारे में सोचती रही, वह गुण जो पहले नहीं था और अब पता नहीं उसमें कहाँ से आ गया था। पहले वह इस तरह कभी नहीं बजाता था। पहले उसकी धुनों में बेहद मस्ती रहती थी, एक तरह का मतवालापन, एक नशा सा जिसके लिए पावेल कस्बे भर में मशहूर था। वह चीज अब चली गयी थी। उसकी उँगलियों में अब भी वही ताकत और वही सफाई थी, मगर वह जो संगीत निकालती थीं, वह कहीं ज्यादा गहरा और भावों के ऐश्वर्य से भरपूर होता था।

पावेल अकेला ही स्टेशन गया।

उसने अपनी माँ को घर पर ही रुकने के लिए राजी कर लिया क्योंकि वह जानता था कि स्टेशन पर की विदाई उसके लिए असह्य हो जायगी।

गाड़ी का इन्तजार करती हुई भीड़ बेतहाशा गाड़ी के अन्दर घुसी और एक रेलपेल सी मच गयी। पावेल चढ़कर एक सबसे ऊँची बर्थ पर बैठ गया

और वहाँ से नीचे के मुसाफिरों का चीखना-चिल्लाना और बेहद आवेश में बहस-मुबाहसा करना और हाथों से इशारा करना देखता रहा।

हस्बेमामूल आज भी गठरी-मुटरी के अम्बार लगे हुए थे, मगर जल्दी-जल्दी उन्हें सीटों के नीचे सरकाकर नजर की ओट कर दिया गया।

रेलगाड़ी ने जब कुछ रफ्तार पकड़ी तो शोरगुल थोड़ा थमा और मुसाफिरों ने दत्तचित होकर पेट-पूजा शुरू की।

पावेल थोड़ी देर में सो गया।

कीव पहुँचकर पावेल फौरन शहर के बीचोबीच क्रेश्चातिक स्ट्रीट की तरफ चल दिया। धीरे-धीरे उसने पुल को पार किया। सब कुछ पहले ही जैसा था, कुछ भी नहीं बदला था। चिकनी-चिकनी रेलिंगों को हाथ लगाते हुए उसने पुल को पार किया। पुल से नीचे उतरने के पहले वह जरा देर तक थमा। पुल पर चिड़िया का पूत भी नहीं था। रात का असीम विस्तार उसकी मुग्ध आँखों के सामने बड़ा शानदार दृश्य उपस्थित कर रहा था। क्षितिज अँधेरे के मखमली पर्दों में लिपटा हुआ था और तारे जलते-बुझते जलते-बुझते चमक रहे थे। और नीचे, जहाँ धरती किसी अदृश्य विन्दु पर आकाश से मिलती थी, शहर की लाखों रोशनियाँ अँधेरे में चमक रही थीं। ...

बहस के दौरान लोगों की आवाजें चढ़ जाती थीं जिससे रात की निस्तब्धता भंग होती थी और पावेल का ध्यान टूट जाता था। कोई इधर आ रहा था। पावेल ने बलात् अपनी आँखें शहर की रोशनियों से हटायीं और सीढ़ियाँ उतरने लगा।

एरिया स्पेशल डिपार्टमेंट में ड्यूटी पर तैनात आदमी ने पावेल को बताया कि जुखराई को शहर छोड़े बहुत दिन हो गये।

उस आदमी ने इस बात का निश्चय करने के लिए कि यह नौजवान वाकई जुखराई का दोस्त है, पावेल से बहुत खोद-खोदकर सवाल किये और अन्त में उसे बतलाया कि फियोदोर को तुर्किस्तान के मोर्चे पर काम करने के लिए ताशकन्द भेजा गया है। इस खबर से पावेल को इतनी उलझन हुई कि वह और भी तफ़सील की बातें पूछे बगैर फौरन मुड़ा और चल दिया। उसके ऊपर थकान का एक दौरा सा पड़ा जिसने उसे ड्योढ़ी पर बैठकर सुस्ताने के लिए मजबूर दिया।

एक ट्राम घड़घड़ाती हुई गुजर गयी और सड़क उसकी आवाज़ से गूँज उठी। न जाने कितने लोग उसके पास से गुज़रे। पावेल ने औरतों की मस्त हँसी के कहकहे सुने, तरह-तरह की आवाज़ें सुनीं — गूँजती हुई भारी आवाज़,

किसी नौजवान की तेज़ पतली आवाज़ और किसी बुड्ढे की घरघराती हुई आवाज़। तेज़ी से भागती हुई भीड़ का यह ज्वार थमने में नहीं आता था। तेज रोशनी से चमकती हुई ट्रामें, आँख को चौंधिया देनेवाली मोटरों की हेडलाइट की तेज़ रोशनियाँ, पास के किसी सिनेमा के फाटक पर तेजी से चमकती हुई बिजली की रोशनियाँ ... और सब जगह लोग ही लोग जिनकी बातचीत की अनवरत गूँज से सड़क भरी हुई थी। यह था एक बड़ा शहर रात के वक्त !

फियोदोर के चले जाने की खबर से उसने अपने दिल में जो दर्द महसूस किया था, वह सड़क के इस शोरशराबे में हलका पड़ गया। अब वह कहाँ जाय ? सोलोमेंका में उसके दोस्त रहते थे, मगर सोलोमेंका बहुत दूर था। यहाँ से पास ही यूनिवर्सिटी स्ट्रीट पर के उस मकान की एक झलक उसे मिली थी। वह क्यों न वहीं चला जाय ? जरूर, यही ठीक होगा। आखिरकार फियोदोर के बाद जिस कामरेड को देखने की उसके दिल में सबसे ज्यादा चाह थी, वह रिता थी। और शायद अकिम के यहाँ रात गुजारने का भी कोई बन्दोबस्त हो जाय।

उसने दूर से ही मकान के सिरे वाली खिड़की में रोशनी देखी। अपने आवेग को दबाते हुए उसने मकान का भारी बाँज की लकड़ी का बना दरवाजा खोला। कुछ पल वह वहीं ड्योढ़ी पर खड़ा रहा। रिता के कमरे से आवाजें आ रही थीं और कोई गिटार बजा रहा था।

'ओ हो, तो अब वह गिटार की इजाजत देती है, इसका मतलब है कि अब उतनी सख्ती नहीं है,' उसने अपने मन में कहा। फिर धीमे से दरवाजे पर दस्तक दी और अपने मन के आवेग को दबाने के लिए होंठ काटने लगा।

घुँघराली लटों वाली एक नौजवान औरत ने दरवाजा खोला। उसने सवाल करती हुई आँखों से कोर्चागिन को देखा।

'आप किसको चाहते हैं ?'

वह दरवाजा खोले खड़ी रही और कमरे के अन्दर की एक झलक पावेल को मिली जिससे उसको लगा कि आना बेकार हुआ।

'क्या मैं उस्तिनोविच से मिल सकता हूँ ?'

'वह यहाँ नहीं हैं। पिछली जनवरी में वह खारकोव चली गयीं और सुनती हूँ कि अब वह मास्को में हैं।'

'कामरेड अकिम यहाँ रहते हैं या वह भी चले गये ?''

'कामरेड अकिम भी अब यहाँ नहीं हैं। अब वह ओडेसा के कोमसोमोल के मंत्री हैं।'

अब पावेल के पास इसके सिवा कोई चारा न था कि लौट पड़े। शहर

लौटने का उसका सारा उत्साह और खुशी अब ठंडी पड़ गयी थी।

अब फौरी सवाल यह था कि रात कहाँ गुजारी जाय।

'चाहो तो ऐसे दोस्तों की तलाश में, जो अब यहाँ नहीं हैं, तुम अपनी टाँगों को थका-थकाकर चूर कर डालो,' उसने अपनी निराशा की घूंट पीते हुए बड़बड़ाकर अपने मन में कहा। फिर भी उसने एक बार और अपनी किस्मत आजमाने का फैसला किया। देखूँ, पांक्रातोव अब यहाँ रहता है या नहीं! वह जहाजी मजदूर घाट के पास रहता था जो कम से कम सोलोमेंका से तो ज्यादा पास पड़ता था।

पांक्रातोव के घर पहुँचते-पहुँचते वह थककर चूर हो गया था। पावेल ने उस दरवाजे पर, जिस पर कभी पीला रोगन पोता गया था, दस्तक देते हुए अपने मन में इस बात का पक्का निश्चय किया, 'अगर वह भी यहाँ नहीं हो, तो फिर मैं और किसी की तलाश नहीं करूँगा। मैं किसी किश्ती के नीचे घुसकर वहीं रात गुजार दूँगा।'

दरवाजा एक बूढ़ी औरत ने खोला जिसने ठुड्डी के नीचे अपने सिर की रूमाल की गाँठ लगा रखी थी। यह पांक्रातोव की माँ थी।

'इग्नात घर पर है माँ?'

'अभी-अभी आया है।'

उसने पावेल को नहीं पहचाना और पीछे मुड़कर आवाज दी, 'इग्नात, तुमसे कोई मिलने आया है।'

पावेल उसके पीछे-पीछे कमरे में गया और अपने सामान का थैला फर्श पर रख दिया। पांक्रातोव ने जो मेज पर बैठा खाना खा रहा था, जल्दी से गर्दन मोड़कर आनेवाले को देखा।

उसने कहा, 'अगर तुम्हें मुझसे काम है, तो कुछ देर बैठो। तब तक मैं कुछ पेट-पूजा कर लूँ। सबेरे से मैंने कुछ नहीं खाया है,' कहते हुए उसने लकड़ी का एक बड़ा चमचा उठाया।

पावेल एक तरफ एक टूटी कुर्सी पर बैठ गया। उसने अपनी टोपी उतार ली और अपनी पुरानी आदत के अनुसार उसी टोपी से माथा पोंछा।

'क्या सचमुच मैं इतना बदल गया हूँ कि इग्नात भी मुझे नहीं पहचान पाता?' उसने अपने आपसे सवाल किया।

पांक्रातोव ने एक-दो चमचा खाना मुँह में डाला मगर चूँकि आगन्तुक कुछ बोला नहीं, उसने गर्दन मोड़कर उसको देखा।

'कहो-कहो, किस परेशानी में हो?'

उसके हाथ में रोटी का टुकड़ा था और उसको पकड़े-पकड़े उसका हाथ हवा में टँगा रह गया। उसने अपने मिलनेवाले को अचरज से आँखें मुल-

मुलाते हुए घूरा।

'अरे...यह क्या ?...जरा सोचो तो आज यह कौन...!'

पांक्रातोव के सुर्ख चेहरे पर उस घबराहट और हैरत को देखकर पावेल से न रहा गया और वह जोर से हँस पड़ा।

पांक्रातोव जोर से चीखा, 'पावका ! मगर हम तो सोचते थे कि तुम्हारा टिकट कट गया। एक मिनट रुको तो, जरा फिर से अपना नाम बतलाना ?'

पांक्रातोव की चीखों को सुनकर उसकी बड़ी बहन और माँ बगल के कमरे से दौड़ी हुई आयीं, उन तीनों ने पावेल के ऊपर सवालों की तब तक झड़ी लगा दी, जब तक कि उन्हें पूरी तरह इस बात का सन्तोष नहीं हो गया कि यह और कोई नहीं, पावेल कोर्चागिन ही है।

घर के सब लोगों के सो जाने के बहुत बाद तक पांक्रातोव पिछले चार महीने की घटनाओं का खुलासा पावेल को देता रहा।

'जार्की और मितियाई पिछले जाड़े में खारकोव चले गये। और जानते हो कहाँ गये दोनों ? कम्युनिस्ट यूनिवर्सिटी में। हाँ-हाँ कम्युनिस्ट यूनिवर्सिटी में ! उसके तैयारी कोर्स में उनको जगह मिली। पहले हम लोग पन्द्रह जन थे। तुम्हारे इस खादिम ने भी दाखिले के लिए एक अर्जी दे दी थी। मैंने सोचा कि अच्छा रहेगा, दिमाग में पड़ा हुआ कुछ भूसा खारिज होगा। और क्या तुम इस बात का यकीन करोगे कि परीक्षा बोर्ड ने मुझे फेल कर दिया !'

इस चीज की याद करके पांक्रातोव ने गुस्से से उँह किया और अपनी बात जारी रखी :

'पहले तो सब कुछ बड़े मजे में चलता रहा। मेरी सभी बातें ठीक थीं : मेरे पास पार्टी कार्ड था, काफी दिन मैं कोमसोमोल में रह चुका था, मेरे पिछले जमाने के रेकार्ड में कोई बुरी बात न थी। मगर जब सियासी जानकारी की बात आयी तो मैं मुसीबत में पड़ गया।

'मेरे और परीक्षा बोर्ड के एक दूसरे कामरेड के बीच बहस छिड़ गयी। जरा सोचो तो उसने यह कैसा छोटा-सा बेहूदा सवाल मुझ से कर दिया : बतलाओ कामरेड पांक्रातोव, दर्शन-शास्त्र के बारे में तुम क्या जानते हो ? भाई, सच बात तो यही थी कि मुझे दर्शन के बारे में खाक-बला कुछ भी नहीं मालूम था। लेकिन हमारे साथ घाट पर एक लड़का काम किया करता था। वह व्याकरण के स्कूल का विद्यार्थी था और आगे चलकर आवारा हो गया था और यों ही मजे के लिए उसने घाट पर मजदूरी करनी शुरू कर दी थी। हाँ, तो उसने मुझे ग्रीस के कुछ अक्लमन्द लोगों की जो बात बतलायी थी मुझे याद थी। उसने मुझे बतलाया था कि वे लोग हर चीज का जवाब जानते थे और उन्हें दार्शनिक कहा जाता था। कोई एक आदमी था जिसका

नाम ठीक से याद नहीं, डियोजिनीज़ या ऐसा ही कुछ नाम था, सारी जिन्दगी वह एक पीपे में रहता आया ... उनमें सबसे तेज आदमी था वह जो चालीस बार इस बात को साबित कर सकता था कि काला सफेद होता है और सफेद काला। जमाने के ठग थे सब, घाघ, समझे न ? हाँ तो मुझे उस विद्यार्थी की बात याद थी और मैंने अपने मन में कहा : 'अच्छा तो यह मुझे लंगी लगाने की कोशिश कर रहा है।' मैंने परीक्षक को चमकती हुई आँखों से अपनी तरफ देखता पाया और मैंने उसको अच्छी डाँट पिलायी। मैंने कहा, 'दर्शनशास्त्र बिलकुल धोखाधड़ी है और मैं उसके साथ बिलकुल समझौता करने के लिए तैयार नहीं हूँ। हाँ पार्टी का इतिहास हो तो उसकी बात और है, उसमें जरूर मुझे बहुत दिलचस्पी होगी।' मेरा कहना था कि उन्होंने मुझको वो-वो लगायी कि मैं क्या बताऊँ। उन्होंने मुझसे पूछा कि दर्शनशास्त्र के बारे में ये सब बेसिरपैर की बातें किसने मेरे दिमाग में घुसेड़ दीं। तब मैंने उनको उस विद्यार्थी की बात बतलायी और कुछ बातें जो उसने मुझसे कही थीं, मैंने उगल दीं। फिर तो भाई कमीशन के सारे लोगों के पेट में हँसते-हँसते बल पड़ गये। वे लोग मुझ पर ही तो हँस रहे थे। लिहाजा मुझे बहुत बुरा मालूम हुआ। मैंने कहा, 'तुम मुझे बेवकूफ समझते हो क्या ?' और कमरे के बाहर निकल गया।

'बाद में उस परीक्षक ने सूबा कमेटी में जाकर मुझे पकड़ा और पूरे तीन घंटे तक मुझे लेक्चर पिलाया। गरज मालूम यह हुआ कि उस विद्यार्थी के दिमाग में तमाम बातें उल्टी-पुल्टी भरी थीं। अब मुझे ऐसा लगता है कि दर्शनशास्त्र बिलकुल ठीक चीज है और बहुत जरूरी है।

'दुबावा और जार्की इम्तहान में पास हो गये। मितियाई पढ़ाई में हमेशा बहुत अच्छा था मगर जार्की मुझसे कुछ ज्यादा अच्छा नहीं। जरूर उसके वीरता के पदक ने उसका बेड़ा पार कर दिया होगा। बहरहाल, मैं तो यहीं का यहीं रह गया। उन लोगों के चले जाने के बाद मुझे यहीं घाट पर प्रबंध का काम दे दिया गया—मुझे माल के घाटों का सहायक प्रधान बना दिया गया। मैं हमेशा मजदूर जवानों की तरफ से मैनेजरों से झगड़ा किया करता था और अब मैं खुद मैनेजर हूँ।

'अब अगर मुझे कोई आलसी या सनकी आदमी मिलता है, तो मैं मैनेजर और कोमसोमोल के मंत्री दोनों की हैसियत से उसकी मुसीबत कर देता हूँ। मेरी आँख में वह धूल नहीं झोंक सकता। अच्छा अपने बारे में तो अब मैं बस करता हूँ। तुम्हें बतलाने को और अब रहा ही क्या ? अकिम के बारे में तुम्हें मालूम ही है, पुराने लोगों में अब सिर्फ तुफ्ता ही सूबा कमेटी में बाकी बचा है। अब भी वह अपना वही पुराना काम कर रहा है। तोकारेव

सोलोमेंका की पार्टी की जिला कमेटी का मंत्री है। तुम्हारा कम्यून का साथी ओकुनेव कोमसोमोल की जिला कमेटी में है। तालिया राजनीतिक शिक्षा विभाग में काम करती है। स्वेतायेव कारखाने में तुम्हारा वाला काम करता है। मैं उसे बहुत अच्छी तरह नहीं जानता। बस सूबा कमेटी में जब-तब हमारी मुलाकात हो जाती है। वह काफी दिमाग वाला आदमी मालूम होता है। मगर सबसे जरा अलग-थलग रहता है। आना बोर्हार्ट की याद तुम्हें है? वह भी सोलोमेंका में है। वह पार्टी की जिला कमेटी की महिला विभाग की प्रधान है। बाकी लोगों के बारे में मैंने तुम्हें बतला दिया है। हाँ पावलुशा, पार्टी ने बहुत से लोगों को पढ़ने के लिए भेजा है। सारे पुराने काम करनेवाले सूबे के सोवियत और पार्टी स्कूल में पढ़ने जाते हैं। मुझको उन्होंने अगले साल भेजने का वादा किया है।'

आधी रात कब की बीत चुकी थी जब वे सोने गये। दूसरे रोज पावेल के उठने के पहले पांक्रातोव धाट पर चला गया था। उसकी बहिन दुसिया ने, जो बड़ी खूबसूरत लड़की थी और अपने भाई से बहुत मिलती-जुलती थी, पावेल को चाय दी और उसका जी बहलाने के लिए पूरे वक्त बात करती रही। पांक्रातोव का बाप, जो जहाज का इंजीनियर था, घर पर नहीं था।

पावेल ने बाहर निकलने का इरादा किया तो दुसिया ने उसे याद दिलाया: 'भूलना मत, रात के खाने पर हम लोग तुम्हारा इन्तजार करेंगे।'

पार्टी की सूबा कमेटी में हमेशा की तरह खूब हलचल थी। सामने का दरवाजा पूरे वक्त खुलता और बन्द होता रहता। गलियारों और दफ्तरों में भीड़ लगी हुई थी और प्रबंध विभाग के दरवाजे के भीतर से टाइपराइटरों के खटखटाने की मद्धिम आवाज आ रही थी।

पावेल किसी पहचानी हुई शक्ल की तलाश में गलियारे में कुछ देर यों घूमता रहा। मगर जब उसे कोई भी अपना परिचित न मिला, तो वह सीधे मंत्री से मिलने के लिए चला गया। मंत्री नीली सी रूसी कमीज पहने एक बड़ी सी मेज के पीछे बैठा हुआ था। पावेल के अन्दर दाखिल होने पर उसने एक बार नजर उठाकर देखा और फिर से लिखने लगा।

पावेल उसके सामने एक कुर्सी पर बैठ गया और अकिम के उत्तराधिकारी की रूप-रेखा को परखने लगा।

'मुझसे क्या काम है?' मंत्री ने, जो ऊँचे गले की कमीज पहने हुए था, अपना लिखना खतम करके उससे पूछा।

पावेल ने उसको अपनी कहानी सुनायी।

'कामरेड, करना अब यह है कि सदस्यता की सूची में मुझे एक बार फिर से जिन्दा करना है। और फिर मुझे रेलवे के कारखाने में भेज दिया जाय,' उसने अपनी बात खतम करते हुए कहा, 'उचित आदेश आप दे दीजिए।'

मंत्री अपनी कुर्सी पर पीछे की ओर झुका।

उसने कुछ हिचकिचाते हुए जवाब दिया, 'हम तुमको सदस्यों की सूची में फिर से रख तो लेंगे, इसमें तो कोई कहने की बात ही नहीं। मगर तुम्हें कारखाने में भेजने में जरा दिक्कत होगी। वहाँ पर स्वेतायेव है। वह सूबा कमेटी का मेम्बर है। तुम्हारे लिए हमको कुछ और काम ढूँढ़ना होगा।'

कोर्चागिन ने अपनी आँखें छोटी करते हुए कहा :

'मैं स्वेतायेव के काम में कोई दखलन्दाज़ी नहीं करना चाहता। मैं अपने पेशे का काम करना चाहता हूँ, कोई पार्टी मंत्री का काम तो चाहता नहीं। और चूँकि मेरी सेहत अब भी जरा खराब है, इसलिए मैं आप से दरखास्त करूँगा कि मुझे और कोई काम न दें।'

मंत्री ने उसकी बात मान ली। कागज के एक टुकड़े पर उसने कुछ शब्द घसीटकर लिखे।

'इसे कामरेड तुफ्ता को दे देना, वह सारा बन्दोबस्त कर देंगे।'

कार्यकर्ता विभाग में पावेल ने तुफ्ता को अपने सहायक को डाँटते पाया। पावेल एक-दो मिनट तक उन दोनों की गरमा-गरम बातचीत सुनता खड़ा रहा। मगर जब उसने देखा कि उसके जल्दी खत्म होने के कोई आसार नहीं हैं, तो उसने बीच ही में उसकी वक्तृता को काट दिया।

'अपनी बहस फिर खत्म कर लेना तुफ्ता। मेरे कागजात ठीक करने के लिए यह देखो तुम्हारे लिए एक पत्र है।'

तुफ्ता बात को न समझते हुए कभी उस कागज को देखता और कभी कोर्चागिन को। आखिरकार बात उसकी समझ में आयी।

'ओह जरा रुकना तो! तो तुम मरे नहीं? वाह रे, मगर बताओ किया क्या जाय? सदस्यों की सूची में से तुम्हारा नाम काट दिया गया। मैंने खुद तुम्हारा कार्ड केन्द्रीय कमेटी को लौटा दिया। इतना ही नहीं, पार्टी की मर्दुमशुमारी में से भी तुम बाहर रहे हो और कोमसोमोल की केन्द्रीय कमेटी के सरकुलर के अनुसार वे लोग जो मर्दुमशुमारी में नहीं आये, उन्हें कोमसोमोल के बाहर समझ लिया गया। इसलिए अब अकेली सूरत यह है कि तुम फिर नये सिरे से बाकायदा सदस्यता के लिए अर्जी दो।' तुफ्ता ने ऐसे लहजे में बात कही जैसे वह किसी की बात सुनने के लिए तैयार न हो।

पावेल की त्योरी चढ़ गयी।

'अब भी तुम्हारे वही पुराने ढंग हैं? तुम हो तो नौजवान आदमी, मगर

बूढ़े से बूढ़े, खूसट से खूसट कानूनी चूहे से भी गये-गुजरे हो। वोलोदका, कब तुम्हें समझ आयेगी !'

तुफ्ता ऐसे उछल पड़ा जैसे किसी पिस्सू ने उसे काट लिया हो।

'बराय मेहरबानी मुझे लेक्चर न दीजिए। यहाँ का चार्ज मेरे जिम्मे है। सरकुलर में जो आदेश दिये जाते हैं, वह उनका पालन करने के लिए, उल्लंघन करने के लिए नहीं। और तुम चूहा कहकर मेरा अपमान कर रहे हो, इसका मजा मैं तुम्हें चखाऊँगा।'

तुफ्ता ने बहुत धमकी के लहजे में अपनी बात कही थी, जैसे वह अभी कुछ कर गुजरेगा। अपनी बात कहकर उसने ऐसा इशारा किया कि जैसे मुलाकात अब खतम हो गयी और फिर सामने की बन्द डाक के ढेर को अपनी तरफ खींचा।

पावेल धीरे-धीरे दरवाजे की तरफ बढ़ा, मगर फिर कुछ याद करके वापिस लौटा और तुफ्ता के सामने पड़े हुए मंत्री के पत्र को उठा लिया। तुफ्ता ने उसे गौर से देखा। कार्यकर्ता विभाग के इस क्लर्क में अजीब कोई बात थी जो उतनी ही नाखुशगवार थी जितनी कि बेवकूफी से भरी हुई। वह बूढ़े आदमी की तरह बदमिजाज और छोटी-छोटी बातों को लेकर अड़नेवाला था। उसके बड़े-बड़े कान जैसे हरदम खड़े रहते थे कि कब कोई बात हो और वह उलझ पड़े।

पावेल ने शान्त मगर मजाक उड़ाती हुई आवाज में कहा, 'अच्छा तुम मुझको इसके लिए दोष दे सकते हो कि मैंने मेम्बरी के तुम्हारे तमाम आँकड़े उलट-पुलट दिये हैं। मगर जरा मुझको बतलाओ कि तुम ऐसे लोगों को कैसे डाँट सकते हो जो पहले से बिना बाकायदा नोटिस दिये मर गये हों ? आखिर को कोई आदमी चाहे तो बीमार पड़ सकता है, या मर सकता है, अगर उसके जी में आये। और मैं तो शर्त बद सकता हूँ कि तुम्हारे सरकुलर में इसके बारे में कुछ भी नहीं लिखा होगा ?'

तुफ्ता का सहायक अपनी तटस्थता को अब और कायम नहीं रख सका और हो-हो-हो करके जोर से हँस पड़ा।

तुफ्ता की पेन्सिल की नोक टूट गयी और उसने उसे उठाकर फर्श पर फेंक दिया। मगर इसके पहले कि वह अपने प्रतिपक्षी को कोई जवाब दे सके, बहुत से लोग बातें करते और हँसते हुए कमरे में घुस आये। उनमें ओकुनेव भी था। लोगों ने जब पावेल को पहचाना, तो सब में बड़ी खलबली मची और फिर पावेल से सवाल पर सवाल होने लगे। चन्द मिनट बाद नौजवानों की एक दूसरी टोली आयी। उनमें ओल्गा यूरेनेवा भी थी। पावेल को फिर से देखने का उसे ऐसा झटका लगा और इतनी खुशी हुई कि वह जैसे बेसुध होकर

बड़ी देर तक उसके हाथ को पकड़े खड़ी रही।

और पावेल को दुबारा अपनी कहानी नये सिरे से सुनानी पड़ी। अपने साथियों की सच्ची खुशी, उनकी खुली हुई दोस्ती और सहानुभूति, आजिजी से उनका हाथ मिलाना और दोस्ताना अन्दाज में उसकी पीठ को थपथपाना — इस सबसे पावेल थोड़ी देर के लिए तुफ्ता को भूल गया।

मगर जब उसने अपनी कहानी खतम की और तुफ्ता के साथ हुई बातचीत का हाल साथियों को बतलाया तो सब बहुत बिगड़ उठे। ओल्गा प्रलयंकर आँखों से तुफ्ता को देखती हुई मंत्री के दफ्तर में चली गयी।

'चलो हम लोग नेज्दानोव के यहाँ चलें,' ओकुनेव ने जोर से कहा, 'वह इसकी अकल ठिकाने लगा देगा।' और यह कहते हुए उसने पावेल का कन्धा पकड़ा और इन नौजवान दोस्तों की पूरी टोली ओल्गा के पीछे-पीछे मंत्री के दफ्तर में जा पहुँची।

'इस तुफ्ता को यहाँ के काम पर से हटाकर वहाँ घाट पर पांक्रातोव के नीचे कुली का काम देना चाहिए, साल भर के लिए। बड़ा जलील नौकरशाह है!' ओल्गा ने बिफरते हुए कहा।

सूबा कमेटी का मंत्री मुस्कराता हुआ ओकुनेव, ओल्गा और दूसरों की इस बात को सुनता रहा कि तुफ्ता को कार्यकर्ता विभाग से अलग कर देना चाहिए।

उसने ओल्गा को आश्वासन दिया, 'इसमें तो कोई बहस ही नहीं कि कोर्चागिन को फिर से सूची में शामिल कर लिया जायगा। अभी इसी वक्त उसे एक नया कार्ड दे दिया जायगा। मैं तुम से सहमत हूँ कि तुफ्ता कानून की लकीर का फकीर है। वही उसकी खास कमजोरी है। मगर यह मानना होगा कि उसने अपना काम बुरा नहीं किया है। जहाँ-जहाँ मैंने काम किया है, मैंने देखा है कि कोमसोमोल के कार्यकताओं के काम के आँकड़े भयंकर गड़बड़ी में रहे हैं, वे कतई ऐसे नहीं रहे हैं कि उनकी किसी भी एक संख्या पर भरोसा किया जा सके। हमारे कार्यकर्ता विभाग में आँकड़े काफी अच्छी तरह रखे गये हैं। तुम लोग खुद जानते हो कि तुफ्ता अक्सर बैठा रात की रात काम करता रहता है। मैं इस सवाल को ऐसे देखता हूँ: तुफ्ता को अलग करना आसान है लेकिन अगर उसकी जगह कोई मस्त लापरवाह आदमी ले लेता है, जिसे आँकड़े-वाकड़े रखने का हाल कुछ भी नहीं मालूम, तो नौकरशाहियत से तो हमें छुटकारा मिल जायगा, मगर फिर कोई नियम या व्यवस्था भी नहीं रहेगी। उसे अपनी जगह पर रहने दो। मैं उसे अच्छी तरह डाँट दूँगा। फिलहाल इससे काम चल जायगा और आगे चलकर देखा जायगा।'

ओकुनेव ने बात मानते हुए कहा, 'अच्छा, ठीक कहते हो, उसको रहने ही

दो। चलो पावलुशा, हम लोग सोलोमेंका चलें। वहाँ पर आज रात क्लब में पार्टी की मीटिंग है। किसी को अभी यह नहीं मालूम कि तुम लौट आये हो। सोचो, सबको कितनी हैरानी होगी जब हम ऐलान करेंगे — अब कोर्चागिन तकरीर करेगा। सचमुच पावलुशा, तुम बड़े गजब के आदमी हो जो नहीं मरे। भला बताओ, तुम मर गये होते तो मजदूर वर्ग के किस काम के होते!' कहते हुए ओकुनेव ने अपने दोस्त को अपनी बाँह में भर लिया और गलियारे में उसे ले चला।

'तुम चलोगी ओल्गा?'

'जरूर, जरूर।'

कोर्चागिन पांक्रातोव के यहाँ रात के खाने पर नहीं लौटा। सच बात तो यह है कि सारे दिन वह वहाँ नहीं गया। ओकुनेव सोवियत की इमारत में अपने कमरे में उसे ले गया। अच्छा से अच्छा खाना जो वह इकट्ठा कर सकता था, उसने पावेल को दिया और फिर अखबारों का एक ढेर और जिला कोम-सोमोल ब्यूरो की मीटिंगों की कार्यवाही की रिपोर्ट की दो मोटी-मोटी फाइलें उसके सामने रखते हुए बोला :

'ये सब देख जाओ। तुम जब टाइफस लिये पड़े थे और अपना वक्त खराब कर रहे थे, उस बीच बहुत-सी बातें हो गयी हैं। मैं शाम को लौटूँगा और तब हम लोग साथ-साथ क्लब चलेंगे। अगर थक जाओ तो लेट जाना और थोड़ा सो लेना।'

अपनी जेबों में तमाम कागजात और जरूरी दस्तावेज भरते हुए (ओकुनेव को सिद्धान्ततः पोर्टफोलियो के इस्तेमाल से नफरत थी और वह उसके बिस्तर के नीचे उपेक्षित पड़ा था) जिला कमेटी के मंत्री ने उससे विदा ली और बाहर निकल गया।

जब वह शाम को लौटा तो कमरे के फर्श पर तमाम अखबार बिखरे हुए थे और ढेर भर किताबें बिस्तर के नीचे से बाहर निकालकर रखी हुई थीं। पावेल बिस्तर पर बैठा हुआ केन्द्रीय कमेटी की आखिरी चिट्ठियों को पढ़ रहा था। ये चिट्ठियाँ उसे अपने दोस्त की तकिया के नीचे मिली थीं।

ओकुनेव ने बनावटी गुस्से से चिल्लाते हुए कहा, 'क्या हालत कर रखी है तुमने मेरे कमरे की! ऐ कामरेड! जरा रुको तो! यह तुम क्या कर रहे हो! ये गुप्त कागजात हैं जो तुम पढ़ रहे हो! यही होता है, मैंने खामखाह तुम जैसे लम्बी नाक वाले आदमी को अपने कमरे में घुसने दिया।'

पावेल ने मुस्कराते हुए खत उठाकर अलग रख दिया और बोला, 'यह खत गुप्त नहीं था मगर वह वाला जिसे तुम लैम्प के ऊपर लगाये हुए हो, उस पर जरूर 'गोपनीय' लिखा हुआ है। यह देखो, सिरे के आस-पास वह

तमाम जल गया है।'

ओकुनेव ने कागज के जले हुए टुकड़े को लैम्प पर से निकाला, उसके शीर्षक को देखा और माथा ठोंक लिया।

'तीन दिन से मैं इस कम्बख्त के पीछे हैरान हो रहा हूँ। समझ ही में नहीं आता था कि कहाँ चला गया। अब मुझे याद आया। वोलिन्तसेव ने इसी कागज से अभी उस रोज लैम्प का शेड बनाया था और फिर खुद ही तमाम जगह उसको तलाश करता फिरा था।' ओकुनेव ने बहुत सावधानी से उस कागज को मोड़ा और गद्दे के नीचे ठूँस दिया और पावेल को जैसे विश्वास दिलाते हुए कहा, 'थोड़ी देर बाद हम सब ठीक-ठाक कर लेंगे, अभी चलो जल्दी-जल्दी कुछ खा लें और भागकर क्लब चलें। अपनी कुरसी मेज के और पास खींच लो पावेल।'

एक जेब में से उसने अखबार में से लिपटी हुई एक लम्बी-सी सूखी मछली निकाली और दूसरी जेब से डबलरोटी के दो टुकड़े। अखबार उसने मेज पर बिछा दिया, मछली का सिर पकड़ा और मेज के सिरे पर उसे अच्छी तरह ठोंका।

मेज पर बैठकर, अपने जबड़ों का इस्तेमाल बहुत जोश के साथ करते हुए, खुशमिजाज ओकुनेव ने पावेल को तमाम खबरें सुनायीं। वह बीच-बीच में मजाक भी करता जाता था।

क्लब में ओकुनेव कोर्चागिन को पिछले दरवाजे से स्टेज पर ले गया। उस बड़े हॉल के एक कोने में, स्टेज के दाहिनी तरफ पियानो के पास, तालिया लगुतिना और आना बोर्हार्ट रेलवे बस्ती के कुछ कोमसोमोलों के साथ बैठी हुई थीं। रेलवे कारखाने का कोमसोमोल मंत्री वोलिन्तसेव आना के सामने बैठा हुआ था। उसका चेहरा अगस्त महीने के सेब की तरह सुर्ख था और उसके बाल और भवें पके हुए धान के रंग की थीं। उसकी बहुत ही फटी-पुरानी चमड़े की जाकट किसी जमाने में काली थी।

उसकी बगल में पियानो के ढक्कन पर लापरवाही से कुहनी टिकाये हुए स्वेतायेव बैठा था। वह एक खूबसूरत नौजवान था जिसके बादामी रंग के बाल और बहुत ही खूबसूरत तराशे हुए ओंठ थे। उसकी कमीज गले पर खुली हुई थी।

उस टोली के पास पहुँचते हुए ओकुनेव ने आना को कहते सुना :

'कुछ लोग हैं जो इस बात के लिए अपना एड़ी-चोटी का जोर लगा रहे हैं कि नये मेम्बरों का दाखिला मुश्किल से मुश्किल होता जाय। उन्हीं लोगों

में स्वेतायेव भी है।'

'कोमसोमोल कोई सैर-सपाटे का मैदान नहीं है, वह कोई पिकनिक की जगह नहीं है,' स्वेतायेव ने किसी की कुछ परवाह न करते हुए कहा।

'वह देखो निकोलाई!' ओकुनेव को देखकर तालिया चिल्लायी, 'आज रात वह कैसा चमक रहा है जैसे पालिश किया हुआ समोवार।'

ओकुनेव को सबों ने खींचकर अपने घेरे में ले लिया और उस पर सवालों के गोले दागने लगे।

'तुम कहाँ रहे?'

'अब मीटिंग की कार्रवाई शुरू करनी चाहिए।'

ओकुनेव ने सबको खामोश करने के लिए हाथ उठाया।

'और कुछ देर इन्तजार करो दोस्तो। तोकारेव के आते ही हम लोग मीटिंग शुरू कर देंगे।'

'वह लो, वे भी आ गये,' आना ने कहा।

पार्टी की जिला कमेटी के मंत्री तोकारेव चले आ रहे थे। उनसे मिलने के लिए ओकुनेव दौड़कर उनकी तरफ बढ़ा: 'आओ काका, चलकर स्टेज के पीछे मेरे एक दोस्त से मिलो। मगर एक झटके के लिए अपने को तैयार कर लो!'

'क्या मामला है?' बुड्ढे ने अपने सिगरेट का कश लेते हुए अपनी भारी आवाज में गुर्राकर कहा, मगर ओकुनेव तो आस्तीन पकड़कर उन्हें खींचे लिये जा ही रहा था।

... ओकुनेव ने चेयरमैन की घंटी इतने जोर से बजायी कि मीटिंग में आये हुए सबसे बातूनी लोग भी चुप हो गये।

तोकारेव के पीछे, सदाबहार लताओं के फ्रेम में से **कम्युनिस्ट घोषणापत्र** की रचना करनेवाली महान प्रतिभा मार्क्स का शेर बबर जैसा सिर सभा को देख रहा था। ओकुनेव मीटिंग की कार्यवाही शुरू कर रहा था। और इस बीच तोकारेव की आँखें बराबर कोर्चागिन पर लगी हुई थीं जो बगल में खड़ा हुआ अपने बुलाये जाने का इन्तजार कर रहा था।

'साथियो! इसके पहले कि हम एजेंडे पर के संगठनात्मक सवालों पर बहस करें, यहाँ पर एक साथी ने बोलने की इजाजत माँगी है। मेरा और तोकारेव का प्रस्ताव है कि उस साथी को बोलने का मौका दिया जाय।'

हॉल में से श्रोताओं की सहमति का स्वर उठा और तब ओकुनेव ने कहा:

'मैं पावका कोर्चागिन को तकरीर करने के लिए बुलाता हूँ!'

हॉल के सौ लोगों में से कम से कम अस्सी लोग कोर्चागिन को जानते थे और जब उसकी वह परिचित आकृति फुटलाइट के सामने आकर खड़ी हुई

और उस लम्बे पीले नौजवान ने बोलना शुरू किया, तो श्रोताओं ने बेइन्तहा खुशी से आवाजें करना और जोर-जोर से तालियाँ बजाना शुरू किया।

'प्यारे साथियो !'

कोर्चागिन की आवाज सधी हुई थी, मगर वह अपने भावावेश को छिपा नहीं पा रहा था।

'अच्छा तो दोस्तो, मैं तुम लोगों की कतार में अपनी जगह लेने के लिए फिर लौट आया हूँ। मुझे बड़ी खुशी है कि मैं एक बार फिर तुम्हारे बीच आ सका। मैं यहाँ अपने बहुत से दोस्तों को देख रहा हूँ। मेरा खयाल है कि सोलोमेंका की कोमसोमोल में अब पहले से तीस फीस दी ज्यादा लोग हैं। अब वर्कशापों और यार्डों में सिगरेट लाइटर बनना बन्द हो गया है और रेलवे की कब्रिस्तान में से मशीनों की बड़ी-बड़ी लाशें मरम्मत के लिए आने लगी हैं। इसका मतलब है कि हमारे देश की नयी जिन्दगी शुरू हो रही है और वह अपनी सारी ताकत को इकट्ठा कर रहा है। यह सचमुच एक ऐसी चीज है जिसके लिए जीने में भी मजा है ! ऐसे वक्त भला मैं कैसे मर सकता था !' खुशी की मुस्कराहट से कोर्चागिन की आँखें चमकने लगीं।

लोगों की तालियों और प्यार के बोलों के तूफान के बीच पावेल मंच से उतरा और आना व तालिया के पास चला गया। अपनी तरफ बढ़े हुए हाथों से उसने हाथ मिलाया और फिर तमाम दोस्तों ने सरककर अपने बीच उसके लिए जगह बना ली। तालिया ने अपना हाथ उसके हाथ पर रख दिया और कसकर दबाया। आना की आँखें अब भी हैरत से फैली हुई थीं, उसकी बरौनियाँ धीमे-धीमे फड़क रही थीं और जिन आँखों से वह पावेल को देख रही थी, उनमें हार्दिक स्वागत का भाव था।

तेजी से दिन बीतते जा रहे थे। मगर उनके बीतने में कोई एकरसता न थी क्योंकि हर दिन अपने साथ कोई नयी चीज लाता था और सबेरे अपने दिन के काम की योजना बनाते वक्त पावेल कुछ क्षोभ से इस बात को लक्ष्य करता था कि सचमुच दिन बहुत छोटा होता है और बहुत कुछ जो करने का उसने इरादा किया था, उसे वह नहीं कर सका।

पावेल ओकुनेव के साथ रहने चला गया था। वह रेलवे के कारखाने में असिस्टेंट इलेक्ट्रिक फिटर का काम कर रहा था।

पावेल कोमसोमोल के नेतृत्व से कुछ दिन के लिए हटना चाहता था और इस सवाल को लेकर ओकुनेव से उसकी बड़ी बहस हुई और उस लम्बी बहस के बाद ही ओकुनेव इस चीज के लिए राजी हुआ।

ओकुनेव ने आपत्ति की थी, 'हमारे पास यों भी बहुत कम आदमी हैं और तुम वर्कशाप में जाकर पड़े रहने की बात करते हो। मुझे यह न बतलाओ कि तुम बीमार हो। टाइफस के बाद मैं खुद एक महीने तक छड़ी लेकर लँगड़ाता घूमा था। पावका, तुम मुझे बेवकूफ नहीं बना सकते, मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूँ, जरूर इसमें कोई बात है। बताओ क्या बात है, झट बोल दो,' ओकुनेव ने आग्रह करते हुए कहा।

'तुम ठीक कहते हो कोलिया, है, और भी कोई बात। मैं पढ़ना चाहता हूँ।'

ओकुनेव आवेश में आकर चिल्लाया, 'मैंने कहा था न! मैं समझ गया था कि जरूर कोई बात है! तुम क्या यह सोचते हो कि मेरे दिल में पढ़ने की ख्वाहिश नहीं है। मगर यह सरासर तुम्हारा स्वार्थीपन होगा। तुम चाहते हो कि हम लोग तो पहिये को अपना कंधा लगायें और तुम बैठकर पढ़ो! न भाई यह नहीं होगा, कल से तुम्हें संगठनकर्ता का काम शुरू करना होगा।'

मगर खैर एक लम्बी बहस के बाद ओकुनेव मान गया।

'ठीक है, मैं दो महीने तुमसे कुछ नहीं बोलूँगा। मगर मेरी भलमनसाहत, मेरी उदारता की दाद तुम्हें देनी होगी। मगर मेरा खयाल है कि स्वेतायेव से तुम्हारी नहीं बनेगी, वह जरा ज्यादा घमंडी है।'

पावेल के वर्कशाप में आ जाने से स्वेतायेव चौकन्ना हो गया था। उसे इस बात का पूरा यकीन था कि कोर्चागिन के आते ही नेतृत्व के लिए संघर्ष शुरू हो जायगा। उसके अहंकार को चोट लगी और उसने डटकर पावेल का मुकाबला करने का फैसला किया। मगर जल्दी ही उसने यह बात देख ली कि पावेल के बारे में ऐसा सोचना उसकी गलती थी। जब कोर्चागिन को मालूम हुआ कि उसको कोमसोमोल ब्यूरो का सदस्य बनाने की योजना है, तो वह सीधे कोमसोमोल के मंत्री के दफ्तर में गया और उसको इस बात के लिए राजी कर लिया कि इस सवाल को एजेंडे पर से हटा दे। ओकुनेव से उसकी जो बात हुई थी, उसी को उसने कारण के रूप में पेश किया। वर्कशाप के कोमसोमोल की सेल में पावेल राजनीतिक अध्ययन का एक क्लास लेता था। मगर ब्यूरो में काम करने की उसने कोई ख्वाहिश नहीं दिखलायी। सरकारी काम के बाकायदा नेतृत्व में चाहे उसका हिस्सा रहा हो या न रहा हो, लेकिन पावेल का असर सभी कामों में दिखायी दे रहा था। कई मौकों पर उसने अपने दोस्ताना, साथियों जैसे, सीधे-सरल ढंग से स्वेतायेव को मुसीबतों में से निकाला भी था।

एक रोज कारखाने में आकर स्वेतायेव को यह देखकर बहुत हैरत हुई कि कोमसोमोल सेल के तमाम मेम्बर और कोई तीन दर्जन गैर-पार्टी लड़के खिड़-

कियों को धोने में लगे हैं और मशीनों पर बरसों से जमी गन्दगी को साफ कर रहे हैं और गाड़ी भर-भर के कूड़ा-करकट बाहर यार्ड में फेंक रहे हैं। पावेल के हाथ में एक बड़ा-सा कूंचा था और उससे वह बेतहाशा सीमेंट के फर्श की सफाई किये जा रहा था जिस पर तमाम मशीन के तेल और ग्रीस के धब्बे थे।

स्वेतायेव ने पावेल से पूछा, 'कहो, यह कैसी सफाई हो रही है? यह कौन सा मौका है?'

कोर्चागिन ने संक्षेप में जवाब दिया, 'हम इस तमाम गन्दगी से हैरान आ गये हैं। बीस बरस से इस जगह की सफाई नहीं हुई, अब हम लोग हफ्ते भर में इसे चमकाकर एकदम नया कर देंगे।'

स्वेतायेव ने अपने कंधे उचकाये और चला गया।

अपने वर्कशाप की सफाई से एलेक्ट्रीशियनों का जी नहीं भरा, तो उन्होंने कारखाने के हाते की भी सफाई में हाथ लगाया। बरसों से उस लम्बे-चौड़े हाते का इस्तेमाल कूड़े के ढेर की शक्ल में हो रहा था जहाँ पर तमाम इस्तेमाल से खारिज सामान फेंक दिया जाया करता था। गाड़ी के सैकड़ों पहिये और ऐक्सेल, जंग लगे लोहे के पहाड़, रेल की पटरियाँ, ऐक्सेल बॉक्स — हजारों टन लोहा वहाँ खुले आसमान के नीचे पड़ा जंग खा रहा था। मगर कारखाने के व्यवस्थापकों ने इन नौजवानों के काम को रोक दिया।

उन्होंने कहा, 'हमारे सामने ज्यादा अहम मसले हैं। हाते की सफाई अभी कुछ दिन तक रुक सकती है।'

लिहाजा एलेक्ट्रीशियनों ने वर्कशाप के दरवाजे के सामने की थोड़ी सी जगह को पक्का कर दिया, दरवाजे के बाहर तार का एक पाँव-पोश रख दिया और फिलहाल बात इतने पर ही छोड़ दी। मगर वर्कशाप के अन्दर काम के घंटों के बाद सफाई का काम बदस्तूर चलता रहा। जब एक हफ्ते बाद चीफ इंजीनियर स्त्रिज आया तो उसने वर्कशाप को खूब रोशन पाया। लोहे के डण्डे लगी बड़ी-बड़ी खिड़कियों से अब खूब रोशनी आ रही थी क्योंकि उन पर से धूल और तेल की मोटी-मोटी परतें अलग कर दी गयी थीं। खिड़की से आती हुई रोशनी डीजल इंजनों के पालिश किये हुए तांबे के हिस्सों पर चमक रही थी। मशीनों के भारी-भारी पुरजों पर हरे रोगन की पुताई चमक रही थी और किसी ने पहियों की तीलियों पर रोगन से पीले-पीले तीर भी बना दिये थे।

'अच्छा अच्छा ...' स्त्रिज ने आश्चर्य से बुदबुदाकर कहा।

वर्कशाप के दूर के एक कोने में कुछ लोग अपना काम पूरा कर रहे थे। स्त्रिज उनके पास गया। रास्ते में उसे रंग का टिन ले जाते कोर्चागिन मिला।

इंजीनियर ने उसको रोककर कहा, 'जरा एक मिनट रुकना दोस्त। तुमने यहाँ जो कुछ किया है, मैं उससे पूरी तरह सहमत हूँ। मगर तुम्हें यह रंग

कहाँ से मिला ? मैंने तो इस बात का कड़ा हुक्म दे रखा है कि मेरी इजाजत के बिना रंग इस्तेमाल न किया जाय ? ऐसे कामों के लिए हम रंग बरबाद नहीं कर सकते। हमारे पास जितना कुछ है, उसकी जरूरत हमें अपने इंजनों के लिए है।'

'यह रंग हमने फेंके हुए डब्बों में से खुरच-खुरचकर निकाला है। इसमें हमारे दो दिन लगे, मगर हमने करीब पच्चीस पौंड रंग निकाल लिया। कामरेड इंजीनियर, हम लोग किसी भी नियम को तोड़ नहीं रहे हैं।'

इंजीनियर ने अब भी गुस्से का इजहार किया, मगर बात बदल गयी थी। उसके चेहरे से जाहिर था कि कहने को उसके पास कुछ खास है नहीं।

'अच्छा, तो करो जो कर रहे हो। ठीक है। मगर यह वाक़ई बड़ी दिलचस्प बात है। इसका तुम्हारे पास क्या जवाब है ... क्या नाम ... इस बात का कि वर्कशाप में सब लोग अपनी मरजी से सफाई में दिलोजान से लगे हुए हैं ? मैं समझता हूँ यह सब काम के घंटों के बाद ही हुआ होगा ?'

कोर्चागिन ने इंजीनियर की आवाज में सच्ची हैरानी को लक्ष्य किया।

उसने कहा, 'इसमें शक क्या है, काम के घंटों के बाद ही सब काम हुआ है। आपने क्या समझा था ?'

'हाँ मगर ...'

'कामरेड स्त्रिज, इसमें अचम्भे की ऐसी कोई बात नहीं है। आपसे यह किसने कहा कि बोल्शेविक गन्दगी को हाथ नहीं लगायेंगे और जैसा का तैसा पड़ा रहने देंगे ? जरा रुकिए कुछ दिन और, जब तक कि हमारा यह मामला ठीक से चल नहीं निकलता, फिर आपको और भी बहुत-सी अचम्भे की चीजें देखने को मिलेंगी।'

और फिर इंजीनियर से अपने आपको बचाते हुए, ताकि रंग उछलकर उसके ऊपर न जा पड़े, कोर्चागिन आगे बढ़ गया।

पावेल हर शाम को पब्लिक लाइब्रेरी जाता था और बड़ी रात तक वहीं रहता था। तीनों लाइब्रेरियनों से उसकी दोस्ती हो गयी थी और समझाने-बुझाने की अपनी तमाम काबलियत का इस्तेमाल करके उसने आजादी के साथ किताबों को लेने और पढ़ने का हक पा लिया था। वह ऊँचे-ऊँचे टाँडों में सीढ़ी लगाकर वहाँ पर घंटों अपने पढ़ने की सामग्री की तलाश में एक के बाद दूसरी किताब के पन्ने पलटता रहता था। ज्यादातर किताबें पुरानी थीं। आधुनिक साहित्य सिर्फ एक छोटी सी अलमारी में था। कुछ थोड़े से गृह-युद्ध के पैम्फलेट, मार्क्स का 'कैपिटल', जैक लंडन का 'आयरन हील' और ऐसी ही कुछ और। पुरानी किताबों को टटोलते हुए उसे 'स्पार्टाकस' नाम की किताब मिली। उसने दो रात में उसको पढ़ डाला और पढ़कर मैक्सिम गोर्की की

किताबों की बगल में रख दिया। कुछ दिनों तक यही सिलसिला चलता रहा — धीरे-धीरे ऐसी अच्छी किताबों के चुनाव करने का सिलसिला जिनमें कोई आधुनिक क्रांतिकारी सन्देश हो।

लाइब्रेरियनों ने कोई आपत्ति नहीं की : उनके लिए सब कुछ बराबर था।

रेलवे वर्कशाप में कोमसोमोल की जिन्दगी शांत ढंग से चली जा रही थी कि अचानक एक ऐसी घटना हुई जिसे पहले लोगों ने महत्वहीन समझा। मरम्मत का काम करने वाले काहिल, चेचक-रू, चपटी नाक के कोस्त्या फिदिन ने, जो सेल की ब्यूरो का मेम्बर था, एक बहुत कीमती विदेशी ड्रिल तोड़ दी थी, लोहे के टुकड़े पर चलाकर। यह दुर्घटना सरासर लापरवाही का नतीजा थी। इतना ही नहीं, कभी-कभी तो यह भी लगता था कि जैसे फिदिन ने जान-बूझ कर बदमाशी की हो।

सबेरे के वक्त यह घटना हुई थी। मरम्मत के बड़े फोरमैन खोदोरोव ने लोहे की एक पट्टी में कई सूराख करने के लिए कोस्त्या से कहा था। कोस्त्या ने पहले तो इनकार किया, मगर जब फोरमैन ने बहुत इसरार किया तो उसने लोहा उठा लिया और उसमें सूराख करने लगा। खोदोरोव ने देखा कि कोस्त्या अपनी ड्रिल में तेल डाले बगैर उसको सूखा ही चला रहा है। उसने जल्दी से मशीन के पास जाकर कोस्त्या को रोका।

'तुम अंधे हो क्या ? इसी तरह ड्रिल इस्तेमाल करनी चाहिए ?' उसने कोस्त्या को डांटते हुए कहा, क्योंकि उसे मालूम था कि इस तरह ड्रिल ज्यादा दिन नहीं चलेगी।

कोस्त्या ने पलटकर उसको जवाब दिया और फिर से लेथ को चालू कर दिया। डिपार्टमेंट के प्रधान से शिकायत करने के लिए खोदोरोव उसके पास गया। इसी बीच कोस्त्या, मशीन को चलता हुआ छोड़कर, जल्दी से तेल की कुप्पी लाने के लिए भागा ताकि प्रधान के आते-आते सब कुछ एकदम ठीक हो जाय। तेल लेकर लौटने-लौटने तक में ड्रिल टूट चुकी थी। प्रधान ने फिदिन की रिपोर्ट की और माँग की कि उसको बर्खास्त कर दिया जाय। मगर कोमसोमोल की सेल ब्यूरो ने यह कहकर फिदिन का साथ दिया कि खोदोरोव सभी सक्रिय कोमसोमोल सदस्यों से चिढ़ता है। मैनेजमेंट ने फिदिन के बर्खास्त किये जाने पर जोर दिया और मामला वर्कशापों की कोमसोमोल ब्यूरो के सामने रखा गया। लड़ाई शुरू हो गयी।

ब्यूरो के पाँच में से तीन सदस्य इस राय के थे कि कोस्त्या को सरकारी तौर पर चेतावनी देकर दूसरे किसी काम पर लगा दिया जाय। स्वेतायेव उन

तीन में से एक था। बाकी दो का खयाल था कि फिदिन को कोई भी सजा न मिलनी चाहिए।

स्वेतायेव अब पूरे वक्त कोमसोमोल का काम करता था। पेशे से वह खरादघर का आदमी था मगर अपनी संगठनात्मक योग्यता के कारण वह कोमसोमोल के एक ऊँचे पद पर पहुँच गया था। अब वह कोमसोमोल की जिला कमेटी की ब्यूरो का मेम्बर था और साथ ही सूबा कमेटी का भी मेम्बर था। एक मशीन के कारखाने के खरादघर में उसने काम किया था और रेलवे के कारखाने के लिए नया था। शुरू से ही उसने प्रबंध की बागडोर मजबूती से अपने हाथों में ले ली थी। स्वभाव से वह जरा ज्यादा आत्म-विश्वासी था और फैसले बहुत जल्दी दे देता था। इस कारण, उसने शुरू से ही कोमसोमोल के दूसरे सदस्यों की स्वतंत्र काम करने की योग्यता को मार दिया था। वह सब काम अपने ही हाथों से करने पर जोर देता था और जब नहीं कर पाता था तो अपने सहायकों को सुस्त और कामचोर कहकर उनकी लानत-मलामत करता था।

यहाँ तक कि दफ्तर की सजावट भी उसकी निजी निगरानी में हुई थी।

मीटिंग की कार्यवाही वह कमरे में रखी हुई अकेली गद्देदार आरामकुर्सी पर बैठा हुआ चला रहा था। यह कुर्सी क्लब से उठाकर लायी गयी थी। यह एक बन्द मीटिंग थी। पार्टी संगठनकर्ता खोमुतोव ने अभी-अभी बोलने की इजाजत माँगी थी जब कि भीतर से दरवाजे पर दस्तक पड़ी। इस आवाज से स्वेतायेव के माथे पर बल पड़ गये। दुबारा दस्तक पड़ी। कात्या जेलेनोवा उठी और उसने दरवाजा खोला। देहलीज पर कोर्चागिन खड़ा था। कात्या ने उसे अन्दर आने दिया।

पावेल एक खाली सीट की तरफ बढ़ता जा रहा था कि स्वेतायेव ने उससे कहा :

'कोर्चागिन, यह ब्यूरो की बन्द मीटिंग है जिसमें सबको आने की इजाजत नहीं है।'

पावेल के चेहरे पर खून उतर आया और वह धीरे-धीरे घूमकर मेज के सामने खड़ा हो गया।

'मुझे मालूम है। फिदिन के मामले में आपकी क्या राय है, मुझे यह सुनने में दिलचस्पी है। मैं इस सिलसिले में कुछ कहना चाहता हूँ। क्यों, क्या मामला है ? क्या आपको मेरे यहाँ रहने में आपत्ति है ?'

'मुझे आपत्ति नहीं है, मगर तुमको जानना चाहिए कि बन्द मीटिंगें सिर्फ ब्यूरो मेम्बरों के लिए ही होती हैं। जितने ही ज्यादा लोग हो जाते हैं, मसले पर ठीक से बहस करके किसी नतीजे पर पहुँचना उतना ही मुश्किल हो जाता

है। मगर जब तुम आ ही गये हो, तो यहाँ बैठ सकते हो।'

कोर्चागिन को कभी ऐसी उपेक्षा नहीं मिली थी। उसके माथे पर एक और शिकन पड़ गयी।

'यह सब शिष्टाचार किसलिए?' खोमुतोव ने अपनी नाराजगी जाहिर करते हुए कहा। मगर कोर्चागिन ने हाथ के इशारे से उसे चुप कर दिया और बैठ गया। खोमुतोव ने फिर अपना कहना शुरू किया, 'हाँ तो जो बात मैं कहना चाह रहा था, वह यह है। यह सच है कि खोदोरोव पुराने विचारों का आदमी है, मगर अनुशासन के लिए हमें कुछ न कुछ करना ही होगा। अगर तमाम कोमसोमोल वाले इसी तरह ड्रिलें तोड़ते रहे तो हमारे पास काम करने के लिए ड्रिलें रहेंगी ही नहीं। और इससे भी बड़ी बात यह है कि इस तरह हम पार्टी के बाहर के मजदूरों के सामने बुरा उदाहरण रखेंगे। मेरी राय में उस लड़के को सख्त चेतावनी देनी चाहिए।'

स्वेतायेव ने उसको बात खतम करने का मौका नहीं दिया और अपनी दलीलें देनी शुरू कर दी। दस मिनट गुजर गये। इस बीच कोर्चागिन ने भांप लिया कि हवा का रुख किस तरफ है। आखिरकार जब मामला वोट के लिए पेश किया गया, तो कोर्चागिन ने उठकर बोलने की इजाजत माँगी। स्वेतायेव ने बहुत अनिच्छा से उसको बोलने की इजाजत दी।

'साथियो, फिदिन के मामले में मैं आपको अपनी राय देना चाहता हूँ,' पावेल ने बोलना शुरू किया। न चाहते हुए भी उसकी आवाज रूखी और कठोर सुनायी पड़ रही थी।

'फिदिन का मामला एक सिगनल है और हमको यह देखना है कि सबसे अहम चीज कोस्त्या की, अकेले उसकी, हरकत नहीं है। मैंने कल कुछ तथ्य इकट्ठा किये हैं।' पावेल ने अपनी जेब से एक नोटबुक निकाली। 'ये आँकड़े मुझे हाजिरी का रजिस्टर रखनेवाले से मिले। अब जरा गौर से सुनिए: हमारे कोमसोमोलों में तेईस फीस दी लोग पाँच से लेकर पन्द्रह मिनट तक की देरी करके काम पर आते हैं। यह रोज का सिलसिला है। नियम सा बन गया है। सत्रह फीस दी लोग हर महीने एक या दो रोज बिलकुल काम पर आते ही नहीं। गैर-पार्टी मजदूरों में काम पर न आनेवाले चौदह फीस दी हैं। साथियो, ये आँकड़े चाबुक की तरह हमारी पीठ पर पड़ते हैं। मैंने और भी कुछ आँकड़े जमा किये हैं। हमारे पार्टी मेम्बरों में चार फीस दी लोग महीने में एक रोज काम पर नहीं आते और चार फीस दी देर से आते हैं। गैर-पार्टी मजदूरों में ग्यारह फीस दी लोग महीने में एक रोज नहीं आते हैं और तेरह फीस दी लोग हर रोज देर से पहुँचते हैं। नब्बे फीस दी टूट-फूट के लिए नौजवान मजदूर जिम्मेदार होते हैं जिनमें सात फीस दी बिलकुल नये लोग हैं। इन

आँकड़ों से यह निष्कर्ष निकलता है कि हम कोमसोमोल के लोग पार्टी मेम्बरों और वयस्क मजदूरों के मुकाबले में बहुत बुरा काम कर रहे हैं। मगर सब जगह यही हालत नहीं है। खरादघर के काम का रेकार्ड बहुत अच्छा है, बिजली-वाले भी कुछ खास बुरे नहीं हैं, मगर बाकी लोग ज्यादातर एक ही सतह पर हैं। मेरी राय में कामरेड खोमुतोव ने अनुशासन के बारे में जितना कहना चाहिए, उसका शतांश ही कहा है। तात्कालिक समस्या यह है कि इन टेढ़े-मेढ़े मामलों को कैसे सीधा किया जाय। मैं आप लोगों को जोश दिलाने के लिए यहाँ पर कोई तकरीर नहीं करना चाहता, मगर इतना जरूर कहूँगा कि इस लापरवाही और ढीलढाल को हमें वन्द करना ही होगा। पुराने मजदूर ईमान-दारी से इस बात को मान रहे हैं कि वे अपने पूँजीपति मालिकों के लिए ज्यादा अच्छा काम किया करते थे। मगर अब तो हम खुद अपने मालिक हैं और बुरा काम करने के लिए कोई कारण नहीं है। बात सिर्फ एक कोस्त्या और दूसरे किसी मजदूर की नहीं है जिसे दोष देकर हम छुट्टी पा लें। हम सभी लोगों की गलती है कि हम ठीक से इस बुराई से लड़ने के बदले किसी न किसी बहाने से कोस्त्या जैसे मजदूरों की वकालत करते हैं।

'समोखिन और बुतिलियाक ने अभी-अभी यहाँ पर कहा है कि फिदिन अच्छा लड़का है, हमारे बेहतरीन लोगों में से है, आगे बढ़कर कोमसोमोल का काम करता है, वगैरह-वगैरह। क्या हुआ अगर उसके हाथ से एक ड्रिल टूट गयी, किसी के भी हाथ से टूट सकती थी। खास बात यह है कि कोस्त्या हममें से एक है और फोरमैन नहीं है...मगर क्या कभी किसी ने खोदोरोव से बात करने की कोशिश की। इस बात को न भूलिए कि वह चाहे जितना बड़बड़ाये, उसके पीछे काम का तीस साल का तजुर्बा है! हम उसकी राजनीति की चर्चा नहीं करना चाहते। पर इस खास मामले में उसी का पक्ष मजबूत है, क्योंकि वह पार्टी के बाहर का होते हुए भी सरकारी जायदाद की फिक्र करता है और हम हैं कि कीमती-कीमती औजारों को तोड़े डाल रहे हैं। ऐसे सूरते हाल को आप क्या कहोगे? मैं समझता हूँ कि हमें अभी पहला वार करना चाहिए और इस मोर्चे पर हमला बोल देना चाहिए।

'मैं प्रस्ताव करता हूँ कि फिदिन को काम से जी चुराने और उत्पादन में अव्यवस्था फैलाने के अभियोग में कोमसोमोल से निकाल दिया जाय। दीवार के अखबार में इस मामले पर बहस होनी चाहिए और बिना इस बात से डरे कि इसका क्या नतीजा होगा, सारे तथ्य सम्पादकीय में दे देने चाहिए। हम मजबूत हैं, हमारे पास ऐसी शक्तियाँ हैं जिन पर हम भरोसा कर सकते हैं। कोमसोमोल के अधिकांश सदस्य अच्छे काम करनेवाले हैं। उनमें से

साठ बोयार्का में रह चुके हैं और वह बड़ी कठिन परीक्षा थी। उनकी मदद और उनके सहयोग से हम तमाम कठिनाइयों को सुलझा लेंगे। जरूरत सिर्फ इस बात की है कि हम इस मसले पर अपने रवैये को बिलकुल बदल दें।'

कोर्चागिन आमतौर पर बहुत खामोश और चुप रहनेवाला आदमी था, मगर इस वक्त वह इतने जोश से बोल रहा था कि स्वेतायेव को अचम्भा हुआ। असली पावेल को वह आज पहली बार देख रहा था। उसने इस बात को समझा कि पावेल ठीक बात कह रहा है, मगर सावधानी बरतने के खयाल से वह खुलेआम अपनी सहमति नहीं दिखलाना चाहता था। उसने कोर्चागिन के भाषण को इस रूप में लिया कि जैसे वह पूरे संगठन की सामान्य दशा की बड़ी कठोर आलोचना हो, मानो वह स्वेतायेव की शक्ति को कम करने की कोशिश हो और इसलिए उसने अपने प्रतिद्वन्दी को कुचल देने का फैसला किया। उसने अपना भाषण कोर्चागिन पर यह अभियोग लगाते हुए शुरू किया कि कोर्चागिन मेन्शेविक खोदोरोव का पक्ष ले रहा है।

यह तूफानी बहस-मुबाहसा तीन घंटे तक चला। बहुत रात गये आखिरी बात पर लोग पहुँचे। तथ्यों के निर्मम तर्क से हारकर और यह देखकर कि बहुमत कोर्चागिन के साथ हो गया है, स्वेतायेव ने एक गलत कदम उठाया। उसने जनवाद के नियमों का उल्लंघन करते हुए, वोट लेने के ठीक पहले, कोर्चागिन को कमरे से निकल जाने का आदेश दिया।

'बहुत अच्छा, मैं चला जाऊँगा मगर स्वेतायेव, तुम्हारा यह आचरण ठीक नहीं। मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ कि अगर तुम अपनी बात पर अड़े रहे तो कल मैं इस मामले को जनरल मीटिंग के सामने रखूँगा और मुझे इस बात का पक्का यकीन है कि वहाँ पर तुम बहुमत को अपने साथ न ले जा सकोगे। स्वेतायेव, तुम्हारी बात ठीक नहीं है। कामरेड खोमुतोव, मेरा खयाल है कि यह आपका कर्तव्य है कि आप इस मामले को जनरल मीटिंग में पार्टी-ग्रुप के सामने उठायें।

स्वेतायेव ने उद्दण्डता से चीखते हुए कहा, 'मुझे डराने की कोशिश मत करो। मैं खुद पार्टी-ग्रुप के सामने जा सकता हूँ और मैं तुम्हें बतला दूँ कि उनको तुम्हारे बारे में बतलाने के लिए भी मेरे पास कुछ बातें हैं। अगर तुम खुद काम नहीं करना चाहते, तो कम-से-कम दूसरों के काम में अड़ंगा तो न लगाओ।'

पावेल बाहर निकल गया। बाहर निकलकर उसने कमरे का दरवाजा बन्द किया और अपने जलते हुए माथे पर हाथ फेरा और खाली दफ्तर में से होता हुआ बाहर के दरवाजे की तरफ बढ़ा। सड़क पर पहुँचकर उसने एक गहरी साँस ली, एक सिगरेट जलायी और बातियेवा पहाड़ी के उस छोटे से घर की

तरफ चल दिया जहाँ तोकारेव रहता था।

उस बुड्ढे मेकैनिक को उसने खाना खाते पाया।

तोकारेव ने पावेल को खाने के लिए बुलाते हुए कहा, 'आओ, कहो क्या खबर है। दार्या, इस लड़के के लिए एक रकाबी में खिचड़ी ले आओ।'

तोकारेव की बीवी दार्या फोमीनिचना अच्छी लम्बी-तगड़ी औरत थी जब कि उसका पति नाटा और दुबला सा आदमी था। उसने एक रकाबी में ज्वार की खिचड़ी लाकर पावेल के सामने रख दी और अपने गीले होंठों को अपने सफेद एप्रन के छोर से पोंछती हुई बड़े प्यार से बोली, 'शुरू करो बेटा!'

उन दिनों जब बूढ़ा तोकारेव रेलवे के कारखाने में काम करता था, पावेल अक्सर उनके यहाँ जाया करता था और इस बूढ़े दम्पति के साथ उसने बहुत सी अपनी अच्छी शामें गुजारी थीं। मगर इस बार शहर में लौटने पर वह पहली मर्तबा तोकारेव के यहाँ गया था।

बुड्ढे मेकैनिक ने बड़े ध्यान से पावेल की कहानी सुनी। कहानी सुनते समय वह बराबर चम्मच से खाना खाता जा रहा था और बीच-बीच में बस थोड़ा सा हाँ-हूँ कर लेता था। इससे ज्यादा कोई टीका-टिप्पणी उसने नहीं की। अपनी खिचड़ी खतम करके उसने अपनी मूँछ रूमाल से पोंछी और खखार-कर गला साफ किया।

उसने कहा, 'तुम्हारी बात बिल्कुल ठीक है, इसमें जरा भी सन्देह नहीं। इस सवाल को ठीक से उठाने का यही मौका है, अब और देर करना अच्छा न होगा। कारखाने में हमारे इलाके भर में दूसरी किसी भी जगह से ज्यादा कम्युनिस्ट हैं और हमें अपनी बात की शुरुआत इसी जगह से करनी चाहिए। अच्छा तो तुम में और स्वेतायेव में ठन गयी? बहुत बुरी बात है। इसमें तो खैर शक नहीं कि उसमें जरा प्यादे से फरजी बननेवाले का घमंड है। मगर उससे क्या, तुम तो पहले सबके साथ निभा लिया करते थे? अच्छा यह तो बताओ कि कारखाने में तुम क्या काम करते हो?'

'मैं एक डिपार्टमेंट में काम कर रहा हूँ और आम तौर पर जहाँ भी कोई काम होता रहता है मैं उसमें जरूर रहता हूँ। अपने सेल में मैं एक राजनीतिक स्टडी सर्किल चलाता हूँ।'

'तुम ब्यूरो में नहीं हो!'

कोर्चागिन ने कुछ हिचकते हुए जवाब दिया :

'मैंने सोचा कि जब तक मेरी टाँगों में ठीक से ताकत नहीं आ जाती, और इस खयाल से भी कि मैं कुछ पढ़ना-लिखना चाहता था, मैं अभी कुछ दिन

बाकायदा नेतृत्व में कोई हिस्सा न लूंगा ।'

'अच्छा तो यह बात है !' तोकारेव ने बात बुरी लगने के अन्दाज में कहा । 'भाईजान, अगर आपकी तन्दुरुस्ती की बात न होती, तो मैंने आज आपकी खबर ली होती । मगर यह तो कहो कि अब कैसे हो ? पहले से कुछ ज्यादा ताकत महसूस करते हो ?'

'हाँ ।'

'अच्छा, अब तुम जरा जी लगाकर काम में जुट जाओ । इधर-उधर की बात करने से कोई फायदा नहीं । और न इस तरह अलग-थलग बैठे रहना ही ठीक होगा । तुम अपनी जिम्मेदारी से मुँह चुराते हो और खुद भी इस बात को जानते हो । बात और कुछ नहीं है । अब कल से ही तुम्हें चीजों को ठीक करने में लग जाना होगा । ओकुनेव को मैं इसकी खबर दे दूंगा ।' तोकारेव के स्वर से उसकी खीझ साफ व्यक्त हो रही थी ।

'न बाबा, आप उससे कुछ न कहियेगा,' पावेल ने जल्दी से आपत्ति करते हुए कहा, 'मैंने खुद ही उससे कहा था कि मुझे कोई काम न दे ।'

तोकारेव ने कुछ नाराजगी से सीटी बजायी ।

'अच्छा तो तुमने कहा और उसने तुम्हें छोड़ भी दिया ? खैर जो है ठीक है, तुम कोमसोमोलों के साथ हम कर ही क्या सकते हैं ... अच्छा बेटा तुम जरा मुझे अखबार पढ़कर सुनाओगे, जैसे पहले सुनाया करते थे ? मेरी आँखें अब उतनी ठीक नहीं ।'

कारखानों की पार्टी ब्यूरो ने कोमसोमोल की ब्यूरो के बहुमत के फैसले की तसदीक की और पार्टी और कोमसोमोल के ग्रुप मजदूरों के अनुशासन का उदाहरण रखने के महत्वपूर्ण और मुश्किल काम में लग गये । स्वेतायेव पर ब्यूरो में बहुत कसकर डाँट पड़ी । उसने पहले तो बहुत बढ़-बढ़कर बात की, मगर मंत्री लोपाखिन ने उसे बिल्कुल पस्त कर दिया । आखिरकार मजबूर होकर स्वेतायेव ने अंशतः अपनी गलती कबूल की ।

अगले रोज दीवार के अखबारों में कई लेख थे जिनसे रेलवे कारखानों में अच्छी-खासी सनसनी फैल गयी । वे लेख जोर-जोर से पढ़े गये और उन पर गरमागरम बहसें हुईं और उसी शाम को नौजवानों की जो मीटिंग हुई उसमें हमेशा से कहीं ज्यादा उपस्थिति रही और सारी बातचीत लेखों में उठायी गयी समस्याओं के सम्बंध में ही हुई ।

फिदिन को कोमसोमोल से निकाल दिया गया और ब्यूरो में एक नये मेम्बर को लिया गया और उसे राजनीतिक शिक्षा का भार दे दिया गया ।

यह नया मेम्बर था कोर्चागिन।

जिस वक्त मीटिंग में नेज्दानोव, इस नयी परिस्थिति में रेलवे के कारखानों के सामने आये हुए नये कामों की रूपरेखा बतला रहा था, उस समय हॉल में असाधारण शान्ति थी।

मीटिंग के बाद स्वेतायेव ने कोर्चागिन को बाहर अपना इन्तजार करते हुए पाया।

पावेल ने कहा, 'चलो हम लोग साथ-साथ चलें। मुझे तुमसे कुछ कहना है।'

'किस चीज के बारे में?' स्वेतायेव ने अप्रिय ढंग से पूछा।

पावेल ने उसकी बाँह अपनी बाँह में ले ली और चार-छः गज आगे जाकर एक बेन्च के पास रुक गया।

'आओ बैठें थोड़ी देर,' कहते हुए वह बैठ गया।

स्वेतायेव की सिगरेट का जलता हुआ सिरा कभी जोर से जल उठता था और कभी बुझने सा लगता था।

'स्वेतायेव, मुझसे तुम्हें क्या शिकायत है?'

कुछ मिनट तक खामोशी रही।

'ओह, तो यह बात है? मैंने सोचा था कि तुम मुझसे कुछ काम की बात करना चाहते होगे?' स्वेतायेव ने आश्चर्य दिखाते हुए कहा, मगर उसकी आवाज काँप रही थी।

पावेल ने मजबूती से अपना हाथ स्वेतायेव के घुटने पर रख दिया।

'दिमका, जरा अपना यह नखरा छोड़कर सीधे से बात करो। तुम जिस तरह बातें कर रहे हो न, वैसे बड़े-बड़े कूटनीतिज्ञ किया करते हैं। तुम मुझको यह बतलाओ कि तुम्हें मुझसे इस कदर चिढ़ क्यों है?'

स्वेतायेव को बेचैनी महसूस हो रही थी और वह बार-बार उसके पहलू बदलने से प्रकट हो रही थी।

'तुम काहे के बारे में बात कर रहे हो? मुझे तुमसे चिढ़ क्यों होने लगी। मैंने खुद तुम्हें काम दिया था कि नहीं? तुमने वह काम करने से इनकार किया और अब तुम मुझ पर यह दोष लगाते हो कि मैं तुम्हें काम से बाहर रखने की कोशिश करता हूँ।'

मगर उसके शब्दों में वह आत्मविश्वास नहीं था जो दूसरों के अन्दर विश्वास जगाता है। पावेल का हाथ अब भी स्वेतायेव के घुटने पर टिका हुआ था और उसने मार्मिक स्वर में कहा :

'अगर तुम वह बात नहीं कहोगे, तो मैं कहूँगा। तुम सोचते हो कि मैं तुम्हारे काम करने के ढंग पर शिकंजा चढ़ाना चाहता हूँ। तुम्हारा खयाल है

कि मैं तुमसे तुम्हारा काम छीन लेना चाहता हूँ। अगर तुम ऐसा न सोचते तो उस कोस्त्या वाले मामले में हमारे बीच ऐसा झगड़ा न हुआ होता। इस तरह के आपसी सम्बन्ध हमारे काम को तबाह करके रख देंगे। अगर यह सिर्फ हम दोनों के बीच की बात होती तो कोई बात न थी, मुझे इसकी खाक परवाह न होती कि तुम मेरे बारे में क्या सोचते हो। लेकिन कल से हम लोगों को साथ-साथ काम करना है। इस तरह भला कैसे काम चलेगा? अच्छा अब मेरी बात सुनो। हमारे बीच कोई दरार न होनी चाहिए। हम दोनों मेहनतकश हैं। अगर अपना लक्ष्य तुमको दुनिया में सबसे प्यारा हो तो लाओ अपना हाथ दो और चलो हम लोग कल से दोस्त की तरह काम करें। लेकिन इसके लिए जरूरी है कि तुम अपने दिमाग से सारा कूड़ा-करकट निकाल दो और किसी तरह की साज़िश में न पड़ो, वरना अगर काम में कोई जरा सी भी गड़बड़ी हुई तो हर बार हमारे बीच महाभारत होगा। लो ये लो, यह रहा मेरा हाथ, यह दोस्ती का हाथ है।'

स्वेतायेव की खुरदरी उँगलियाँ उसकी हथेली पर आकर जमीं तो कोर्चागिन को गहरे सन्तोष की अनुभूति हुई।

एक हफ्ता गुजर गया। पार्टी की जिला-कमेटी में काम का समय खतम होने आ रहा था। दफ्तरों में शान्ति छा गयी थी। मगर तोकारेव अब भी अपनी मेज पर बैठा काम कर रहा था। वह अपनी कुरसी पर बैठा एकदम ताजी रिपोर्टों को देख रहा था जब कि दरवाजे पर एक दस्तक पड़ी।

'चले आओ!'

कोर्चागिन अन्दर आ गया और उसने सेक्रेटरी की मेज पर प्रश्नावलियों के दो भरे हुए फार्म रख दिये।

'यह क्या है?'

'यह गैर-जिम्मेदारी का खातमा है। और अगर आप मुझसे पूछें तो अब इस चीज को और टाला भी नहीं जा सकता। यों ही बहुत देर हो गयी। अगर आप भी मेरी राय के हों और इस काम में मेरी सहायता कर सकें तो मैं आपका बड़ा कृतज्ञ होऊँगा।'

तोकारेव ने उड़ती हुई दृष्टि शीर्षक पर डाली, इस नौजवान को देखा और अपना कलम उठा लिया। 'रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की उम्मीदवार मेम्बरी के लिए पावेल आन्द्रिएविच कोर्चागिन की सिफारिश करने वाले साथी की पार्टी जिन्दगी कब से शुरू हुई?' इस शीर्षक के नीचे उसने मजबूत हाथ से '१९०३' लिखा और अपना हस्ताक्षर कर दिया।

'यह लो बेटा। मैं जानता हूँ कि तुम कभी मेरे सफेद बालों को लज्जित नहीं होने दोगे।'

कमरा इतना गरम था कि दम घुट रहा था। सबके दिमाग में बस एक यही खयाल सबसे ऊपर था कि कैसे जल्दी से जल्दी सोलोमेंका के बाँज के दरख्तों की शीतल छाँह में पहुँच जायें।

'खतम करो पावका, अब मुझसे एक मिनट भी और यह चीज बर्दाश्त न होगी,' स्वेतायेव ने, जिसके शरीर से पसीने का परनाला जारी था, अनुनय के स्वर में कहा। कात्युशा और दूसरों ने उसका समर्थन किया।

पावेल कोर्चागिन ने किताब बन्द कर दी और स्टडी सर्किल खतम हुआ।

जब वे लोग उठे तो दीवार पर टंगे हुए पुरानी चाल के एरिक्सन टेलीफोन की घंटी घनघनायी। स्वेतायेव ने टेलीफोन लिया, मगर कमरे में इतना शोर मच रहा था कि अपनी बात सुनाने के लिए उसे जोर से टेलीफोन में बोलना पड़ रहा था।

उसने रिसीवर रख दिया और कोर्चागिन की तरफ मुड़ा।

'पोलिश दूतावास के दो रेल के डब्बे स्टेशन पर हैं। उनकी बत्ती बुझ गयी है, तार में कोई गड़बड़ी है। एक घंटे में गाड़ी छूटेगी। थोड़े से औजार ले लो पावेल और लपककर उसे ठीक कर दो। यह बहुत जरूरी काम है।'

पहले प्लेटफार्म पर सोनेवाले मुसाफिरों के दो डब्बे खड़े थे। उनके शीशे और पालिश किये हुए पीतल के उनके हिस्से चमक रहे थे। सब लोगों के बैठने के डब्बे में, जिसमें बड़ी-बड़ी खिड़कियाँ थीं, खूब रोशनी थी। मगर उससे लगे हुए डब्बे में अँधेरा था।

पावेल उस खूबसूरत शानदार पुलमैन के पावदान तक गया और डब्बे में दाखिल होने के इरादे से उसमें लगे हुए लोहे के डण्डे को पकड़ लिया।

स्टेशन की दीवार से जल्दी से अलग होती हुई एक आकृति ने पावेल के कंधे पकड़ लिये।

'कहाँ जा रहे हो?'

यह आवाज पहचानी हुई थी। पावेल मुड़ा और उसने उस आदमी की जाकट, चौड़े माथे की टोपी, उसकी पतली सी टेढ़ी नाक और उसकी सतर्क, शंकालु आँखों को देखा।

यह आर्त्युखिन था। उसने पहले पावेल को नहीं पहचाना लेकिन, अब उसका हाथ पावेल के कंधे से गिर पड़ा और उसके चेहरे का तनाव हलका हो गया, मगर वह बदस्तूर अपनी प्रश्न करती हुई आँखों से औजारों की

पेटी को देखता रहा।

'तुम कहाँ जा रहे थे ?' उसने कुछ कम खिंचे-तने स्वर में पूछा।

पावेल ने संक्षेप में बतलाया। फिर डब्बे के पीछे से एक और आकृति सामने आयी।

'एक मिनट रुकिए, मैं उनके कंडक्टर को बुलाता हूँ।'

कोर्चागिन जब कंडक्टर के पीछे-पीछे उस सैलून गाड़ी में दाखिल हुआ तो उसने कई लोगों को बाकायदा सफरी कपड़े पहने हुए बैठे देखा। किसी के कपड़े में कोई नुक्स नहीं निकाला जा सकता था। एक औरत दमश्क के कपड़े के मेजपोश से ढँकी हुई एक मेज से लगी दरवाजे की तरफ पीठ किये बैठी थी। जिस वक्त पावेल अन्दर दाखिल हुआ, वह अपने सामने खड़े हुए एक लम्बे अफसर से बात कर रही थी। इलेक्ट्रीशियन के आते ही उन्होंने अपनी बातचीत बन्द कर दी।

कोर्चागिन ने फुर्ती से उन तारों की जाँच की जो आखिरी बत्ती से गलियारे तक दौड़ रहे थे। मगर उसे बिलकुल ठीक पाकर वह गड़बड़ी की तलाश में उस डब्बे से निकलकर दूसरे डब्बे में चला गया। वह मोटा-तगड़ा साँड़ की सी गर्दन वाला कंडक्टर पावेल के पीछे-पीछे चल रहा था। उसकी वर्दी पीतल के बड़े-बड़े बटनों से चमक रही थी, जिन पर पोलैंड का राज्य-चिह्न ईगिल बना हुआ था।

'चलिए हम लोग अगला डब्बा देखें, यहाँ तो सब ठीक है। बैटरी काम कर रही है। गड़बड़ वहाँ पर होगी।'

कंडक्टर ने दरवाजे के अन्दर चाभी घुमायी और वे दोनों अँधेरे गलियारे में पहुँच गये। तारों के ऊपर अपनी टार्च की रोशनी फेंकते हुए पावेल को जल्दी ही वह जगह मिल गयी जहाँ शार्ट-सर्किट हो रहा था। कुछ ही मिनट बाद गलियारे में बत्ती जल गयी और गलियारा रोशनी से भर उठा।

कोर्चागिन ने अपने गाइड से कहा, 'कम्पार्टमेंट के बल्ब बदलने होंगे। वे जल गये हैं।'

'उस हालत में हमें उस महिला को बुलाना होगा, उसी के पास चाभी है।' कंडक्टर इलेक्ट्रीशियन को डब्बे में अकेला नहीं छोड़ना चाहता था, इसलिए उसने पावेल को अपने पीछे-पीछे आने के लिए कहा।

पहले वह महिला कम्पार्टमेंट में दाखिल हुई और फिर उसके पीछे-पीछे कोर्चागिन आया। कंडक्टर रास्ता रोके हुए दरवाजे में खड़ा रहा। वह स्त्री कोच के एक सिरे पर बैठी हुई थी और अपने सुनहरे बालों में हाथ फेरती हुई बिजलीवाले को काम करते हुए गौर से देख रही थी।

कंडक्टर ने कुछ मुश्किल से अपनी साँड़ जैसी गर्दन को झुकाते हुए बड़े

स्वामिभक्त नौकर के ढंग से कहा, 'श्रीमती जी, मुझे जरा देर के लिए जाने की इजाजत देंगी ? मेजर साहब ने थोड़ी सी ठंडी बियर मँगायी है।'

'तुम जा सकते हो,' उस औरत ने बनावटी रोबदाब से जवाब दिया।

यह बात पोलिश जबान में हुई थी।

गलियारे से आती हुई रोशनी उस औरत के कंधे पर पड़ रही थी। कोर्चागिन उसके एक कंधे और बाँह को देख पा रहा था और वे हाथीदाँत के बने हुए से जान पड़ते थे। चेहरा छाया में था। तेजी से पेंचकश को चलाते हुए पावेल ने छत में के तार बदल दिये और पल भर बाद कम्पार्टमेंट में बत्तियाँ जल उठीं। अब उसे सिर्फ उस सोफे के ऊपर का बल्ब देखना था जिस पर वह बैठी हुई थी।

'मुझे उस बल्ब को देखना है,' कोर्चागिन ने उस औरत के सामने जाकर रुकते हुए कहा।

औरत ने रूसी जबान में कहा, 'अरे हाँ, मैं तुम्हारे रास्ते में आ रही हूँ।' वह हलके कदमों से उठी और जाकर पावेल के बगल में खड़ी हो गयी। अब पावेल उसको पूरी तरह देख सका। उसकी वह कमानीदार भवें और सम्पुटित, उपेक्षापूर्ण ओंठ उसके पहचाने हुए थे। इसमें कोई सन्देह ही न हो सकता था : यह वही वकील की लड़की नेली लेशचिन्स्की थी। पावेल के चेहरे पर अचम्भे का जो भाव था, उस स्त्री ने भी उसको लक्ष्य किया। मगर गोकि पावेल उसको पहचान रहा था, तो भी वह खुद इन पिछले चार बरसों में इतना बदल गया था कि नेली लेशचिन्स्की यह नहीं समझ सकी कि यह बिजलीवाला उसी का फ़सादी पड़ोसी है।

पावेल आश्चर्य से उसको घूर रहा था। यह चीज लेशचिन्स्की को बुरी मालूम हुई और उसके माथे पर बल पड़ गये। वह कम्पार्टमेंट के दरवाजे के पास चली गयी और वहाँ खड़ी बेचैनी से अपने पेटेन्ट जूते की एड़ी जमीन पर धीमे-धीमे पटकने लगी। पावेल ने दूसरे बल्ब की जाँच शुरू की। उसने पेंच को खोला, बल्ब को रोशनी के सामने उठाकर देखा और न जाने कैसे अचानक उससे पोलिश में पूछ बैठा :

'क्या विक्टर भी यहीं है ?'

बोलते समय पावेल पीछे नहीं मुड़ा था। उसने नेली के चेहरे को नहीं देखा। मगर उसके सवाल के बाद जो लम्बी खामोशी आयी, उससे यह बात जाहिर थी कि वह स्त्री घबराहट में पड़ गयी थी।

'क्यों, तुम उसे जानते हो क्या ?'

'हाँ, और बहुत अच्छी तरह। लगता है आप भूल गयीं। हम लोग पड़ोसी थे।' पावेल उसको देखने के लिए पीछे मुड़ा।

'तुम ... तुम पावेल हो, मेरी ...' नेली बात कहते-कहते मारे घबराहट के रुक गयी।

'... रसोईदारिन का बेटा,' कोर्चागिन ने उसकी बात पूरी की।

'मगर देखने में तो तुम कैसे बड़े से हो गये! उस वक्त तो तुम बस छोकरे थे, हाँ, लड़ने-भिड़ने में तुम जरूर तेज थे।'

नेली ने उसे सिर से पैर तक बहुत ध्यान से देखा।

'तुम विक्टर के बारे में क्यों पूछते हो? जहाँ तक मुझे याद है, तुम और वह आपस में कुछ बड़े दोस्त तो थे नहीं,' उसने अपनी सुरीली आवाज में कहा। वह बड़ी उकताहट महसूस कर रही थी और इस अचानक मुलाकात से उसे कुछ राहत सी मिली।

पेंच तेजी से दीवार के अन्दर घुस गया।

'मेरा एक कर्ज है जिसे विक्टर ने अभी तक नहीं चुकाया। उससे मिलो तो कह देना कि उसे चुकता कराने की उम्मीद मैंने अभी नहीं छोड़ी है।'

उसको अच्छी तरह मालूम था कि कोर्चागिन किस कर्ज की बात कर रहा है। उसे मालूम था कि विक्टर ने ही पावेल को पेतलुरा के सिपाहियों के हाथ में दिया था। मगर इस 'आवारे' का मजाक बनाने के खयाल से उसने जान-बूझकर यह अपमानजनक रवैया अख्तियार किया था।

'बताओ, क्या यह बात सच है कि हमारा मकान लूटा गया है और अब टूट-फूट रहा है? निश्चय ही वह ग्रीष्म-कुंज और वे तमाम झाड़ियाँ उखाड़ डाली गयी होंगी,' नेली ने उत्सुकता के साथ पूछा।

'वह मकान अब तुम्हारा नहीं हमारा है और अपनी ही जायदाद को अब हम तबाह और बर्बाद नहीं करेंगे।'

नेली मजाक उड़ाने के ढंग पर धीरे से हँसी।

'ओह, देखती हूँ कि तुम अब अच्छी तरह दीक्षित हो गये हो! मगर इस बात को न भूलना कि यह गाड़ी पोलिश मिशन की है और यहाँ पर मैं स्वामी हूँ और तुम नौकर, जैसे कि तुम हमेशा थे। तुम इसलिए काम कर रहे हो कि यहाँ रोशनी आ जाय ताकि मैं इस सोफे पर आराम से लेटकर पढ़ सकूँ, समझे! तुम्हारी माँ हमारे कपड़े धोती थी और तुम उसे पानी लाकर दिया करते थे। हम फिर बहुत-कुछ उन्हीं परिस्थितियों में एक-दूसरे से मिल रहे हैं।'

उसकी आवाज में विजय की द्वेषपूर्ण गूँज थी। अपने चाकू से तार को छीलते हुए पावेल ने उस पोलिश औरत को ऐसी निगाहों से देखा जिनमें घृणा साफ-साफ झलक रही थी।

'अगर तुम्हारे लिए काम करने की बात होती, तो मैं यहाँ एक जंग लगी कील भी न ठोंकता। लेकिन चूँकि पूँजीपतियों ने कूटनीतिज्ञों का आविष्कार

किया है, इसलिए हमको भी वही खेल खेलना पड़ता है। हम उनकी गर्दन नहीं उड़ाते, इतना ही नहीं उनके साथ शिष्टाचार का व्यवहार करते हैं, मगर तुममें तो इसका भी शऊर नहीं।'

नेली के गाल लाल हो गये।

'मान लो तुम वारसा फतह कर लो तो मेरे साथ क्या सलूक करोगे ? मैं समझती हूँ कि तुम मेरा कीमा बना दोगे, या शायद मुझको रख लो ?'

वह दरवाजे में बड़ी अदा के साथ खड़ी थी, उसके नथुने, जो कोकीन से अब अपरिचित नहीं थे, फड़क रहे थे। सोफे के ऊपर की बत्ती जल गयी थी। पावेल उठकर सीधा खड़ा हो गया।

'तुमको ? तुम्हें मारकर कौन अपना हाथ खामखाह खराब करेगा ! तुम तो यों ही, हमारे हाथ लगाये बिना ही कोकीन की ज्यादती से टें हो जाओगी। और जहाँ तक तुमको रखने की बात है, मैं सड़क पर की किसी वेश्या को ज्यादा पसन्द करूँगा।'

उसने अपना औजारों का डब्बा उठाया और दरवाजे की तरफ बढ़ा। नेली उसको रास्ता देने के लिए एक ओर हट गयी। वह गलियारे में आधे रास्ते गया होगा कि उसने अपने पीछे नेली के मुँह से निकली हुई यह गाली सुनी :

'बदमाश बोल्शेविक !'

उसके अगले रोज शाम को जब पावेल लाइब्रेरी की ओर जा रहा था तो रास्ते में उसे कात्युशा जेलेनोवा मिली। उसने अपने छोटे-छोटे हाथों से उसकी आस्तीन पकड़ ली और हँसते हुए उसका रास्ता रोककर खड़ी हो गयी।

'कहाँ तेजी से भागे जा रहे हो, राजनीति और ज्ञान के पंडित ?'

पावेल ने उसी दिल्लगी के स्वर में जवाब दिया, 'लाइब्रेरी जा रहा हूँ चाची, मुझे जाने दो !' उसने हल्के से कात्युशा के कंधों को पकड़ा और उसे एक ओर को हटा दिया। कात्युशा ने उसके हाथों से अपने को छुड़ा लिया और उसके साथ-साथ चलने लगी।

'मेरी बात सुनो पावलुशा ! यह भी कैसी बात है कि तुम हर वक्त पढ़ते ही रहते हो, जरा सोचो तो यह भी कहीं होता है। सुनो मैं एक बात कहती हूँ — चलो हम लोग आज रात एक पार्टी में चलें। जीना ग्लेडिश के यहाँ सब लोग मिल रहे हैं। लड़कियाँ मुझसे बराबर कहा करती हैं कि मैं तुम्हें ले आऊँ, मगर आजकल तुम्हें पढ़ने के अलावा कोई बात नहीं सूझती। क्या तुम्हें किसी मनोरंजन की जरूरत कभी नहीं पड़ती ? ऐसे मौकों पर एकाध बार पढ़ाई छोड़ देना तुम्हारे लिए भी अच्छा ही रहेगा,' कात्युशा ने आग्रह करते हुए कहा।

'कैसी पार्टी है यह ? हम लोग क्या करेंगे वहाँ ?'

'हम लोग क्या करेंगे !' कात्युशा ने मुस्कराकर उसका मजाक बनाने की कोशिश करते हुए कहा, 'अरे करेंगे क्या, भगवान की प्रार्थना तो करेंगे नहीं, नाचेंगे, मौज-मजा लेंगे और क्या। तुम अकार्डियन बजाते हो न ? मैंने कभी तुमको बजाते नहीं सुना, एक बार भी नहीं ! आज जरूर चलो और चलकर बजाओ, चलोगे न ? मेरी खातिर ? जीना के चचा के पास अकार्डियन तो है, मगर बजाना-वजाना उसे खाक नहीं आता। लड़कियों को तुममें बड़ी दिलचस्पी है, मगर तुम्हें अपनी किताबों से ही फुरसत नहीं, अजब किताबी कीड़े हो। यह किसने कहा कि कोमसोमोलों को दिल-बहलाव के लिए कुछ न करना चाहिए ? चलो-चलो, तुम्हें तो मनाते-मनाते मेरी जान पर बन आयी। नहीं चलोगे तो हमारा झगड़ा हो जायगा और फिर मैं तुमसे महीने भर तक नहीं बोलूँगी।'

कात्या मकानों के रंग-रोगन का काम करती थी। वह बड़ी अच्छी काम-रेड थी और कोमसोमोल की सबसे कर्मठ सदस्यों में से एक। पावेल इस लड़की का दिल नहीं दुखाना चाहता था। लिहाजा उसने कात्या की बात मान ली, गोकि इसमें शक नहीं कि ऐसी पार्टियों में उसे बड़ा अटपटा सा लगता था, खासी परेशानी होती थी।

इंजन ड्राइवर ग्लेडिश के घर पर तमाम नौजवानों की शोर मचाती हुई भीड़ इकट्ठा थी। बड़े लोग दूसरे कमरे में चले गये थे और वह बड़ा कमरा और सायबान, जो सामनेवाले छोटे से बगीचे में खुलता था, उन्होंने इन पन्द्रह लड़के-लड़कियों के लिए छोड़ दिया था। 'कबूतर चुगाने' का खेल चल रहा था जब कात्युशा पावेल को लेकर बागीचे में से होकर सायबान में आयी। सायबान के बीचोंबीच दो कुरसियाँ पीठ से पीठ जुटाकर रखी हुई थीं। गृहस्वामिनी खेल का नेतृत्व कर रही थी। उसके आवाज देने पर एक लड़का और एक लड़की आकर कुरसियों पर पीठ से पीठ लगाकर बैठ गये और जब उसने आवाज़ दी, 'अब कबूतरों को चुगाओ !' तो लड़का और लड़की दोनों पीछे को झुके और उनके ओंठ मिल गये। दर्शकों को इसमें बड़ा आनन्द मिल रहा था। इसके बाद उन्होंने 'अँगूठी' और 'डाकिये की दस्तक' नाम के दो खेल खेले। यह दोनों चुम्बन के खेल थे गोकि 'डाकिये की दस्तक' में खेलनेवाले खुलेआम रोशनी से चमकते सायबान में एक-दूसरे को न चूमकर कमरे में रोशनी बुझाकर चूमते थे। उन लोगों के लिए, जिन्हें इन दोनों खेलों में दिलचस्पी न थी, एक कोने में छोटी सी गोल मेज पर 'फ्लावर फ्लर्ट' ताशों की गड्डी रखी थी। पावेल के बगल में करीब सोलह साल की एक लड़की थी जिसकी आँखें हल्की नीली थीं और जिसने मुरा कहकर अपना परिचय दिया। उस लड़की ने नज़ाकत से उसको

देखते हुए उसे एक ताश दिया और धीमे से कहा :

'वायलेट ।'

कुछ बरस पहले पावेल ऐसी पार्टियों में शरीक हुआ था और गोकि वह खुद सीधे-सीधे इन सारी मस्तियों में शरीक नहीं हुआ था, तो भी उसने इसमें कोई बुराई नहीं देखी थी और यही समझता था कि यह एक आम कायदा है। मगर अब कस्बे की निम्न मध्य-वर्गीय जिन्दगी से हमेशा के लिए नाता तोड़ लेने पर उसको यही पार्टी बड़ी घृणित लगीं और उसे कुछ-कुछ हँसी भी आयी।

मगर वह तो खैर जो था सो था, अभी उसके हाथ में वह 'फूल वाला' ताश था।

'वायलेट' के सामने लिखा था : 'मैं तुम्हें बहुत पसन्द करती हूँ।'

पावेल ने आँख उठाकर उस लड़की को देखा। उस लड़की ने बिना झिझक पावेल की निगाह का जवाब दिया।

'क्यों ?'

अपना यह सवाल पावेल को बड़ा बेहूदा सा मालूम हुआ। मगर मुरा के पास जवाब तैयार था।

उसने धीरे से कहा, 'गुलाब' और पावेल को दूसरा पत्ता पकड़ा दिया।

गुलाब वाले पत्ते पर लिखा था : 'तुम मेरे आदर्श हो।'

कोर्चागिन उस लड़की की तरफ मुड़ा और अपनी आवाज को नर्म बनाने की कोशिश करते हुए उसने पूछा :

'यह सब बेहूदगियाँ तुम क्यों करती हो ?'

पावेल की बात सुनकर मुरा तो स्तब्ध सी रह गयी और उसकी समझ में नहीं आया कि क्या कहे।

'मेरी बात तुमको बुरी लगी क्या ?' उसने मान करती हुई छोकरी की तरह ओंठ निकालते हुए कहा।

पावेल ने इस सवाल पर कोई ध्यान नहीं दिया, मगर वह इस लड़की के बारे में और जानने के लिए उत्सुक था। उसने उससे बहुत से सवाल पूछे जिनका उस लड़की ने खुशी-खुशी जवाब दिया। कुछ ही मिनटों में वह जान गया कि वह लड़की माध्यमिक स्कूल में पढ़ने जाती है, उसका बाप कारखाने में काम करता है और यह कि वह पावेल को बहुत दिनों से जानती है और उससे परिचित होना चाहती थी।

पावेल ने पूछा, 'तुम्हारा दूसरा नाम क्या है ?'

'वोलिन्तसेवा।'

'तुम्हारा भाई रेलवे यार्ड की कोमसोमोल सेल का मंत्री है न ?'

'हाँ।'

अब कोर्चागिन परिचित भूमि पर था। यह बात उनके नजदीक अब साफ थी कि उस इलाके के सबसे सक्रिय कोमसोमोलों में से एक वोलिन्तसेव अपनी ही बहन को किसी तरह की राजनीतिक शिक्षा या संस्कार नहीं दे रहा था। वह कस्बे की दूसरी मध्य-वर्गीय लड़कियों की तरह, उन्हीं जैसे संस्कार लेकर बड़ी हो रही थी। पिछले साल वह और उसकी सहेलियाँ ऐसी न जाने कितनी ही चुम्बन-गोष्ठियों में शरीक हुई थीं। मुरा ने पावेल को बतलाया कि उसने कई बार उसे अपने भाई के यहाँ देखा था।

मुरा ने महसूस किया कि उसके पड़ोसी को उसका आचरण पसन्द नहीं आया। कोर्चागिन के चेहरे की उपेक्षापूर्ण मुस्कराहट को देख उसने आवाज दिये जाने पर भी 'कबूतर चुगाने' के खेल में हिस्सा लेने से साफ इन्कार कर दिया। वे दोनों और भी चन्द मिनट तक बैठे एक-दूसरे से बातें करते रहे और मुरा पावेल को अपने बारे में बतलाती रही जब कि जेलेनोवा उन लोगों के पास आयी।

'मैं तुम्हारे लिए अकार्डियन ले आऊँ?' उसने पूछा और शरारत-भरी निगाहों से मुरा को देखते हुए इतना और जोड़ा, 'लगता है तुम लोगों में बड़ी दोस्ती हो गयी?'

पावेल ने कात्युशा को अपने पास बिठाल लिया और अपने आसपास के शोर-शराबे और हँसी की आवाजों का फायदा उठाते हुए बोला :

'मैं नहीं बजाऊँगा। हम दोनों जा रहे हैं।'

जेलेनोवा ने ताने के स्वर में कहा, 'ओहो! अच्छा तो ग़रज़ तीर लग चुका है, क्यों?'

'ठीक कहती हो। अच्छा बताओ कात्युशा, हमारे अलावा यहाँ कोमसोमोल के और भी कोई लोग हैं? या सिर्फ हम लोग ही 'कबूतर प्रेमी' हैं?'

कात्युशा ने जैसे पावेल को मनाते हुए कहा, 'अब यह सब बचपना खतम करके हम लोग नाचना शुरू करेंगे।'

कोर्चागिन उठा।

'बहुत अच्छा, तुम नाचो मगर मुरा और मैं, दोनों चलते हैं।'

एक रात ओकुनेव, जो अनिश्चय की हालत में कुछ देर से अपने दोस्त के बिस्तर के पास मंडरा रहा था, आखिरकार बिस्तर के छोर पर बैठ गया और उसने उस किताब पर अपना हाथ रख दिया जिसे पावेल पढ़ रहा था।

'सुनो पावलुश्का, एक बात है जिसका बोझ मैं अपने सीने से उतारना चाहता हूँ। एक दृष्टि से तो वह बिल्कुल महत्वहीन सी बात मालूम पड़ेगी, मगर

दूसरी दृष्टि से वह उतनी ही महत्वपूर्ण है। मेरे और तालिया लगुतिना के बीच गलतफहमी हो गयी है। बात यह है कि पहले मैं उसे काफी चाहता था।' ओकुनेव ने बड़े कातर ढंग से अपना सिर खुजलाया। मगर जब उसने अपने दोस्त के चेहरे पर हँसी का कोई निशान नहीं देखा, तो उसे हिम्मत हुई। 'मगर तालिया...तुम जानते ही हो। ठीक तो है मैं तुम्हें तमाम तफसील की बातें न बतलाऊँगा, जरूरत भी नहीं है, उनके बिना भी बात काफी साफ है। कल हम दोनों ने शादी करने का फैसला किया। अब देखो मामला कैसा चलता है। मैं बाईस साल का हुआ, हम दोनों को वोट देने का अधिकार है। हम दोनों बराबरी के आधार पर रहना चाहते हैं। तुम्हारा क्या खयाल है?'

कोर्चागिन ने सवाल पर गौर किया।

'मैं क्या कहूँ कोलिया? तुम दोनों मेरे दोस्त हो, हम सब एक ही बिरादरी के लोग हैं और हमारे सबके तौर-तरीके एक-दूसरे से बिल्कुल मिलते हैं। तालिया बहुत अच्छी लड़की है। मजे में चलेगी जिन्दगी, उसमें कहना क्या है।'

दूसरे रोज कोर्चागिन डिपो मजदूरों के होस्टल में चला गया और कुछ दिन बाद आना ने तालिया और निकोलाई के सम्मान में एक पार्टी दी, एक सादी सी कम्युनिस्ट पार्टी जिसमें खाना-पीना नहीं था। यह अपने संस्मरण सुनाने और अपनी प्रिय किताबों से टुकड़े पढ़ने की शाम थी। उन्होंने बहुत से गाने गाये और अच्छी तरह गाये। उनकी आवाजें दूर तक गूँजीं। उसके बाद कात्युशा जेलेनोवा और वोलिन्तसेवा एक अकार्डियन ले आयीं और कमरा उसकी रुपहली लयों और भारी, जानदार आवाजों से गूंज उठा। उस शाम को पावेल ने और दिनों से भी ज्यादा अच्छा बजाया और जब सभी के दिलों में खुशी बिखेरते हुए भारी-भरकम पांक्रातोव ने नाचना शुरू कर दिया, तो पावेल भी अपने बजाने की उदास शैली को भूल गया और बड़ी मस्ती से बजाने लगा।

अकार्डियन पिछले जमाने के गीत गा रहा था, उन तूफानी सालों के गीत और आज की दोस्ती और संघर्षों और आनन्दों के गीत। मगर जब वह बाजा वोलिन्तसेव को दिया गया और जब उस मेकैनिक ने 'यावलेव्को' नृत्य की मस्त धुन शुरू की, तो कोर्चागिन से न रहा गया और वह सुधबुध भूलकर नाचने लगा। अपनी जिन्दगी में पावेल यह तीसरी और आखिरी बार नाचा था।

तेरह

यह सरहद है। दो चौकियाँ हैं जो दो अलग-अलग दुनिया की प्रतीक हैं और अपनी निःशब्द शत्रुता लिये आमने-सामने खड़ी हैं। उनमें से एक पर अच्छी तरह रन्दा किया हुआ है। उस पर पालिश भी है और काले व सफेद रंग में वह रंगी हुई भी है और देखने में पुलिस बॉक्स जैसी जान पड़ती है। उसके मस्तक पर एक सिर वाला ईगल मोटे-मोटे कीलों से अपनी जगह पर अच्छी तरह टंका हुआ है। उसके डैने फैले हुए हैं, पंजे धारीदार खम्भे को पकड़े हुए हैं, टेढ़ी चोंच खुली हुई है और वह शिकारी पक्षी अपनी द्वेषपूर्ण आँखों से सामने के उस खम्भे को देख रहा है जिस पर हँसिये-हथौड़े का निशान है। यह एक बाँज का मजबूत, गोला, मोटा, भद्दा गढ़ा हुआ खम्भा है जो मजबूती से जमीन के ऊपर पैर जमाये खड़ा है। दोनों खम्भे समतल जमीन पर हैं, मगर उनके बीच एक गहरी खाई है और वह खाई यह है कि दोनों दो दुनियाओं के प्रतीक हैं। उनके दरमियान छः कदमों के बराबर जो जगह है, उसे आप अपनी जान को खतरे में डाले बिना नहीं पार कर सकते।

यह सरहद है।

काले सागर से लेकर हजारों मील सुदूर उत्तर में आर्कटिक महासागर तक, सोवियत समाजवादी प्रजातंत्र के ये शान्त पहरुए अपने लोहे के कवच पर श्रम का महान प्रतीक लगाये मूर्तिवत् खड़े हैं। ईगल वाली चौकी पर सोवियत उक्रेन और पूंजीवादी पोलैंड की सरहदें मिलती हैं। वह उक्रेन के भीतरी प्रदेश में बेरेजदोव नामक कस्बे से करीब आठ मील पर स्थित है और उसके सामने कोरेक नामक पोलिश कस्बा है। स्लावुता से लेकर अनापोल तक के सरहदी इलाके में उत्तरी सरहदी बटालियन का पहरा है।

सरहद पर के ये सैनिक बर्फ से ढंके हुए मैदानों पर मार्च करते हैं, जंगलों को काटकर उनके बीच से रास्ता बनाते हैं, नीचे वादियों में घुसते हैं और पहाड़ियों पर चढ़ते हैं, पहाड़ों की चोटियों के पीछे खो जाते हैं और एक नदी के घाट पर जाकर रुकते हैं और वहाँ से एक विरोधी देश के सर्द मैदानों को देखते हैं।

हड्डी को कंपा देनेवाली सर्दी पड़ रही है। यह एक ऐसा दिन है जब पाले की वजह से फेल्ट जूते के तल्ले से दबकर बर्फ चरमर करती है। लाल सेना का एक भीमाकार सैनिक पौराणिक वीरों के योग्य हेलमेट लगाये हँसिये-हथौड़े वाली चौकी से निकलकर अपने भारी कदमों से गश्त पर निकल जाता है। वह एक बड़ा सा भूरा बरानकोट और फेल्ट जूते पहने है। बरानकोट के ऊपर वह एक बड़ा सा भेड़ के ऊन का कोट पहने है जो उसकी एड़ी तक

पहुँचता है और जिसका कालर भी वैसा ही बड़ा है। वह बर्फ के भयानक से भयानक तूफान में भी आदमी को गर्म रखता है। उसके सिर पर कपड़े का एक हेलमेट है और उसके हाथों में भेड़ की खाल के दस्ताने हैं। अपनी राइफल उसने कंधे पर लटका रखी है और गश्त लगाते समय जमीन पर लसरते हुए उसके कोट से बर्फ पर निशान बनता जाता है और वह अपने घर पर उगायी हुई तम्बाकू की सिगरेट का कश खूब मजे ले-लेकर खींच रहा है। खुले हुए मैदानों में सोवियत के ये सरहदी सन्तरी एक-एक किलोमीटर की दूरी पर तैनात हैं ताकि एक सन्तरी हमेशा दूसरे को देख सके।

एक पोलिश पैदल सिपाही अपनी गश्त के रास्ते पर बढ़ता हुआ लाल सैनिक की तरफ आता है। वह मोटे-मोटे फौजी बूट और कुछ हरापन लिये खाकी वर्दी पहने है और उसके ऊपर एक काला कोट है जिसमें चमचमाती बटनों की दो कतारें लगी हुई हैं। उसके सिर पर सफेद ईगल का चिह्न लिये उसकी वर्दी वाली चौखुंटी टोपी है। उसके कंधों के फीतों और कालर पर और भी सफेद ईगल बने हुए हैं, मगर उनसे उसके जिस्म को कोई गरमी नहीं मिलती। उस जाड़े-पाले में वह बुरी तरह ठिठुर गया है और अपने शरीर को गरमाने के लिए अपने सर्दी से सुन्न पड़े हुए कानों को घिसता है और चलते-चलते एक एड़ी को दूसरी एड़ी से भी मिला लिया करता है। मगर पतले दस्तानों के भीतर उसके हाथ सर्दी से ऐंठे जा रहे हैं। पाला इतने जोरों से गिर रहा है और सर्दी ऐसी भयानक है कि वह पोल एक क्षण को भी कहीं रुकने की जुर्रत नहीं कर सकता, क्योंकि खतरा है कि पाला उसके अंग-अंग को जकड़ देगा। लिहाजा वह बीच-बीच में दौड़ने भी लग जाता है। जब दोनों सन्तरी पास आ गये तो पोलिश सिपाही लाल सैनिक के साथ-साथ चलने के लिए घूम पड़ा।

सरहद पर सैनिकों का आपस में बातें करना मना है। मगर जब कोई आसपास न हो और एक किलोमीटर की दूरी पर ही दूसरा आदमी हो, तो फिर कौन कह सकता है कि सन्तरी चुपचाप गश्त लगा रहा है या अन्तर्राष्ट्रीय नियमों का उल्लंघन कर रहा है।

पोलिश सिपाही को सिगरेट की जबर्दस्त तलब लगी है, मगर अपनी माचिस वह बारक में भूल आया है और इस वक्त जैसे उसको और भी ललचाने के लिए सोवियत सरहद की तरफ से तम्बाकू की खुशबू आ रही है, गोया हवा उसको सताने के लिए ही यह खुशबू उड़ाकर ला रही हो। और उस पोलिश सिपाही की सिगरेट की प्यास और तेज हो जाती है। पोल अपना कान घिसना बंद कर देता हैं और गर्दन मोड़कर पीछे देखता है, कौन जाने कप्तान साहब या हुजूर लेफ्टिनेंट साहब अपने घोड़े पर सवार, किसी टीले के पीछे से सामने

आ जायें। अक्सर ही तो वे निगरानी के लिए निकला करते हैं। मगर उसे कुछ दिखायी नहीं देता, सिवा धूप में चमकती हुई सफेद बर्फ के। आसमान में बादल का नाम नहीं है।

'दियासलाई है कामरेड ?' उस पोल ने ही सबसे पहले नियम को तोड़ा। और अपनी तलवार जैसी संगीन लगी फ्रांसीसी राइफिल को ठेलकर कंधे पर डालते हुए उसने अपनी अकड़ी हुई उँगलियों से बड़ी मुश्किल से अपने कोट की जेब में से सस्ती सिगरेट का एक पैकेट निकाला।

लाल सैनिक ने उसकी बात तो सुन ली, मगर सरहद की दूसरी तरफ के आदमी से बात करना कायदे के खिलाफ है, इसलिए उसने कोई जवाब नहीं दिया। इसके अलावा यह भी था कि लाल सैनिक ठीक समझ नहीं पाया कि वह सिपाही क्या कहना चाहता है। इसलिए वह अपने रास्ते पर आगे बढ़ गया। उसके नर्म और गर्म फेल्ट के जूतों के नीचे बर्फ चरमर कर रही थी।

'कामरेड बोल्शेविक, दियासलाई है ? माचिस की डिबिया फेंक दो न !' इस बार पोलिश सिपाही ने रूसी में बात की।

लाल सैनिक ने अपने पड़ोसी को बहुत गौर से देखा। उसने अपने मन में कहा, 'लगता है कि पाले ने इन जनाब को बुरी तरह जकड़ लिया है। होने को तो बेचारा थैलीशाह का सिपाही है, मगर देखो कैसी भयानक जिन्दगी है। जरा सोचो, इतने कम कपड़ों में उसे बाहर की सर्दी में ढकेल दिया गया है ! क्या ताज्जुब कि वह खरहे की तरह उचकता फिर रहा है, और तब जब कि सिगरेट पीने का भी इंतजाम न हो।' बिना पीछे मुड़े लाल सैनिक ने माचिस की डिबिया उसकी तरफ फेंक दी। सिपाही ने उसे लपक लिया और कई बार की नाकाम कोशिश के बाद आखिरकार उसकी सिगरेट जली और उसने माचिस की डिबिया वापिस लाल सैनिक के पास फेंक दी। तब लाल सैनिक ने अनिच्छापूर्वक ही सही, नियम भंग करते हुए कहा :

'रखे रहो, मेरे पास और भी माचिस है।'

सरहद के उस पार से जवाब आया :

'धन्यवाद, मैं नहीं रखूँगा। कहीं उन्होंने मेरे पास यह डिबिया देख ली तो मुझे दो साल जेल में काटना पड़ेगा।'

लाल सैनिक ने गौर से अपनी माचिस की डिबिया को देखा। उसके लेबुल पर एक हवाई जहाज बना था जिसमें प्रोपेलर की जगह एक मजबूत मुट्ठी बनी हुई थी और अल्टीमेटम लिखा हुआ था।

'ठीक है, उनके यहाँ यह चीज नहीं चलेगी।'

वह सिपाही लाल सैनिक के साथ-साथ गश्त लगाता रहा। इस वीरान मैदान में वह बेहद अकेला महसूस कर रहा था।

घोड़े इतमीनान से दुलकी चाल से चले जा रहे थे और उनकी चाल के अनुसार काठियों के चूँ-चूँ करने में भी एक लय थी। पाले की हवा में घोड़ों के नथुनों से निकली हुई साँस थोड़ी देर के लिए जमकर सफेद भाप सी बन जाती थी। काले घोड़े के नथुने के इर्द-गिर्द थोड़ा सा पाला जमा हुआ था। अपनी खूबसूरत गर्दन को तिरछी किये और बड़ी खूबसूरती से डग भरती हुई बटालियन कमांडर की घोड़ी अपने मुँह में पकड़े लगाम से खिलवाड़ कर रही थी। दोनों घुड़सवार फौजी बरानकोट पहने हुए थे, उनकी कमर पर पेटी लगी थी और उनकी आस्तीनों पर तीन लाल चौखुंटे बने हुए थे। दोनों में फर्क बस इतना ही था कि बटालियन कमांडर गाव्रिलोव की वर्दी के कफ-कॉलर वगैरह हरे रंग के थे और उसके साथी के लाल रंग के। गाव्रिलोव सरहदी सैनिकों के साथ था, इस पचपन मील लम्बे विस्तार में उसी की बटालियन सरहदी चौकियों की देखभाल करती थी, वही इस सरहदी इलाके का इंचार्ज था। उसका साथी बेरेजदोव से आया हुआ एक आदमी था — बटालियन कमिसार कोर्चागिन, जो सार्वजनिक फौजी शिक्षा-व्यवस्था की ओर से आया था।

रात को बर्फ गिरी थी और ताजी सफेद बर्फ के गाले कम्बल की तरह उस सारे इलाके पर पड़े हुए थे जिन्हें आदमी या जानवर किसी ने हाथ तक नहीं लगाया था। दोनों आदमी दुलकी चाल से अपने घोड़े को बढ़ाते हुए जंगल में से निकले और खुले मैदान को पार करने ही वाले थे, जहाँ से चालीस कदम पर सरहदी चौकियाँ थीं, जब कि गाव्रिलोव ने एकाएक अपने घोड़े को रोक लिया। कोर्चागिन ने पीछे मुड़कर देखा कि गाव्रिलोव काठी से नीचे झुका हुआ बर्फ पर पड़े कुछ अजीब से निशानों का मुआइना कर रहा है। उसको देखकर ऐसा लगता था जैसे कोई छोटा सा दानेदार पहिया उस पर से गुजरा हो। कोई मक्कार जानवर इधर से गुजरा होगा और बर्फ पर ये दाग छोड़ गया है जो अब उलझन पैदा कर रहे हैं। यह तो पता लगाना मुश्किल था कि जानवर किधर गया, मगर बटालियन कमांडर के रुकने की वजह यह नहीं थी। उस निशान से दो कदम पर, बर्फ के हलके से चूरे के नीचे एक और निशान था, किसी आदमी के पैर का निशान। पैर के निशानों में संशय की कोई बात न थी, वे सीधे जंगल की ओर निर्देश कर रहे थे और इसमें जरा सा भी सन्देह नहीं था कि पोलिश सीमा से कोई आदमी आया था। बटालियन कमांडर अपने घोड़े को आगे बढ़ाता हुआ सन्तरी की गश्त के रास्ते के साथ-साथ चल रहा था। पैर के ये निशान पोलिश सरहद पर दस-

बारह कदम तक दिखलायी दे रहे थे।

बटालियन कमांडर ने बड़बड़ाते हुए कहा, 'रात को उधर से सरहद पार करके कोई आया था। तीसरा प्लैटून फिर ऊँघने लगा है — इस चीज का कोई हवाला उनकी सबेरे की रिपोर्ट में नहीं है। बहुत खराब बात है।' गाव्रिलोव की पकती हुई मूछें बर्फ और पाले में उसकी साँस से और भी सफेद हो रही थीं और इस तरह उसके ओठों पर बैठी हुई थीं कि उनको देखकर डर लगता था।

दूर पर दो आकृतियाँ इन घुड़सवारों के पास आ रही थीं। उनमें से एक दुबला-पतला आदमी था जो काले कपड़े पहने था और जिसकी फ्रांसीसी संगीन धूप में चमक रही थी, और दूसरा एक बहुत ऊँचा-पूरा आदमी था जो पीले रंग का भेड़ की खाल का कोट पहने था। चित्ती घोड़ी एड़ के जवाब में तेजी से दौड़ रही थी और वे दोनों घुड़सवार इन लोगों के पास जल्दी से पहुँच गये। आकर लाल सैनिक ने राइफिल अपने कंधे से उतार ली और अपने मुँह में दबा हुआ सिगरेट का टुकड़ा बर्फ में थूक दिया।

'सुबह मुबारक हो कामरेड। तुम्हारे यहाँ क्या हालचाल है?' बटालियन कमांडर ने अपना हाथ उस लाल सैनिक की तरफ बढ़ाया। लाल सैनिक ने हाथ मिलाने के लिए जल्दी से अपने हाथ का दस्ताना अलग किया। वह सरहदी सन्तरी इतना लम्बा था कि उस तक पहुँचने के लिए कमांडर को अपनी काठी से आगे झुकने की भी जरूरत नहीं पड़ी।

वह पोल दूर से देखता रहा। यहाँ पर दो बोल्शेविक अफसर एक सैनिक का ऐसे अभिवादन कर रहे थे जैसे वह उनका बड़ा गहरा दोस्त हो। क्षण भर के लिए उसकी आँख के सामने भी यह तस्वीर आ गयी कि जैसे वह मेजर जाक्रज्वेस्की से हाथ मिला रहा है। मगर यह विचार ही बेवकूफी से इतना भरा था कि उसने चौंककर अपने इर्द-गिर्द देखा।

'मैंने आज ही चार्ज लिया है, कामरेड बटालियन कमांडर,' उस लाल सैनिक ने रिपोर्ट दी।

'वहाँ का सारा रास्ता देख लिया है?'

'नहीं, अभी नहीं।'

'यहाँ पर रात दो से छः बजे तक किसकी ड्यूटी थी?'

'सुरोतेंको की, कामरेड बटालियन कमांडर।'

'अच्छा अच्छा, मगर जरा आँखें खोलकर चलना।'

कमांडर ने अपने घोड़े को बढ़ाते-बढ़ाते चेतावनी के ये शब्द कहे :

'और देखो, उन आदमियों के साथ जरा कम घूमा करो।'

सरहद से बेरेजदोव जाने की चौड़ी सड़क पर उनके घोड़े दुलकी चाल से

चले जा रहे थे। कमांडर ने अपने साथी से कहा, 'यहाँ सरहद पर तुम अपनी आँखें जरा खुली रखना। जरा सी भी अगर कोई चूक हुई, तो उसका बुरा भुगतान करना पड़ेगा। हम लोगों का काम ऐसा है कि हम जरा भी सुस्ताने की जुर्रत नहीं कर सकते। दिन-दहाड़े तो सरहद में घुस आना आसान नहीं है, मगर रात को काफी होशियार रहने की जरूरत है। तुम्हीं सोचो कामरेड कोर्चागिन। मेरे हिस्से में, हमारी सरहद चार गाँवों को काटती हुई जाती है, इससे मामला काफी पेचीदा हो जाता है। चाहे कितने ही पास-पास तुम सन्तरियों को क्यों न खड़ा करो, होगा यही कि सीमा-रेखा के एक तरफ के सम्बंधी, रेखा की दूसरी तरफ होनेवाली हर शादी और जशन में जरूर शरीक होंगे। और क्या ताज्जुब — उन झोंपड़ियों और खाड़ी के छिछले पानी के बीच मुश्किल से पच्चीस कदम का फासला होगा और वह पानी भी इतना छिछला है कि मुर्गी का बच्चा तक उसे पाँव-पाँव पार कर ले। इतना ही नहीं, सरहद पर माल का लेन-देन भी चोरी से होता है। यह सही है कि ज्यादातर बहुत छोटे पैमाने पर यह चीज होती है, जैसे कोई औरत पोलिश शराब की एक-दो बोतल ले आयी या इसी किस्म की चीजें। मगर थोड़ा-बहुत यह काम बड़े पैमाने पर भी होता है, बड़े-बड़े पैसेवाले इस काम को करते हैं। तुमने सुना है न कि सरहद पर के तमाम गाँवों में पोलों ने दूकानें खोल दी हैं जिनमें तुम्हें जरूरत की हर चीज मिल सकती है? और यकीन मानो कि ये दूकानें उन्होंने अपने गरीब किसानों के लिए नहीं खोली हैं।'

बटालियन कमांडर की बात सुनते-सुनते कोर्चागिन सोचने लगा कि सरहद की जिन्दगी स्काउटिंग करने जैसी जिन्दगी है जिसका कोई भी ओर-छोर नहीं।

'तुम्हारा क्या ख्याल है कामरेड गाव्रिलोव, मैं तो सोचता हूँ कि शायद चोरी-चोरी माल की बिक्री के अलावा और भी कुछ ज्यादा गंभीर चीजें यहाँ पर चल रही हैं?'

'यही तो मुसीबत है,' बटालियन कमांडर ने चिन्ता के स्वर में जवाब दिया।

बेरेजदोव एक छोटा सा कस्बा था जिसमें खास आबादी यहूदियों की थी। उसमें दो-तीन सौ छोटे-छोटे मकान थे जो बेतरतीबी से इधर-उधर फैले हुए थे और एक बड़ा सा बाजार का चौक था जिसके बीचोंबीच कोई दो दर्जन दूकानें थीं। वह चौक लीद-गोबर से गंदा रहता था। खास कस्बे के चारों तरफ किसानों की झोपड़ियाँ थीं। यहूदियों की आबादी वाले हिस्से के बीच में बूचड़खाने के रास्ते पर एक पुराना यहूदी गिर्जाघर खड़ा था।

गिर्जाघर का यहूदी पादरी एक ऐसी जिन्दगी बसर करता था जो कि निश्चय ही उसको बहुत प्रिय न थी। हर रोज कोई नयी बदमजगी पैदा हो जाती। मिसाल के लिए, कल उसने पादरी के मकान के दरवाजे पर यह साइनबोर्ड लगा देखा : 'बेरेजदोव जिला कमेटी, उक्रेन की नौजवान कम्युनिस्ट लीग।'

रबाई ने सोचा कि इस साइनबोर्ड से सिवा बुराई के दूसरी किसी भी चीज की उम्मीद करना बेसूद होगा। वह अपने ख्याल में इतना डूबा हुआ था कि उसने अपने गिर्जाघर के दरवाजे पर चिपकी हुई नोटिस को देखा ही नहीं, जब तक कि वह उसके ठीक सामने न पहुँच गया। नोटिस में लिखा हुआ था :

'मजदूर नौजवानों की एक आम सभा आज क्लब में होगी। कार्यकारिणी समिति के चेयरमेन लिसित्सिन और नौजवान कम्युनिस्ट लीग की जिला कमेटी के कार्यवाहक मंत्री कोर्चागिन के भाषण होंगे। मीटिंग के बाद नौवर्षीय स्कूल के विद्यार्थी गाने-बजाने का कार्यक्रम पेश करेंगे।'

रबाई ने गुस्से में आकर नोटिस को नोच लिया और बोला, 'अच्छा तो उन्होंने शुरुआत कर भी दी !'

स्थानीय गिर्जाघर से लगे हुए एक लम्बे-चौड़े बाग के बीच में एक बड़ा सा पुराना मकान खड़ा था जो किसी जमाने में पादरी का था। मकान के कमरों में, जहाँ पादरी अपनी बीवी के साथ रहता था, घुटन सी महसूस होती थी और ऐसा मालूम होता था कि वहाँ के कोने-कोने में भयानक ऊब और थकान भरी हुई है। यह मियाँ-बीवी उस मकान ही की तरह बुड्ढे और उतने ही जड़ थे और बहुत जमाने से एक-दूसरे से बिलकुल ऊबे हुए थे। मकान के नये मालिकों के आने के साथ ही वहाँ की सारी ऊब और थकान भी जैसे साफ हो गयी। उस बड़े हॉल में, जिसमें वे धर्मप्राण लोग सिर्फ गिर्जाघर की छुट्टियों के रोज अपने मेहमानों का स्वागत-सत्कार करते थे, अब हमेशा भीड़ लगी रहती थी क्योंकि वह मकान अब बेरेजदोव कम्युनिस्ट पार्टी कमेटी का हेडक्वार्टर था। सामने के हॉल के दाहिनी तरफवाले छोटे कमरे के दरवाजे पर खड़िये से 'कोमसोमोल जिला कमेटी' लिखा हुआ था। यहीं पर कोर्चागिन, जो दूसरी यूनिवर्सल मिलिटरी ट्रेनिंग बटालियन का फौजी कमिसार होने के साथ ही साथ नवसंगठित कोमसोमोल जिला कमेटी का कार्यवाहक मंत्री भी था, अपने दिन का काफी वक्त गुजारता था।

आना के घर की उस गोष्ठी में गये उसको आठ महीने गुजर चुके थे, मगर उसको ऐसा लगता था कि जैसे यह अभी कल की ही बात हो। कोर्चा-

गिन ने कागज के ढेर को एक तरफ सरका दिया और अपनी कुर्सी पर पीछे को झुका हुआ अपने ख्यालों में डूब गया ...

घर में शान्ति थी। रात काफी जा चुकी थी और पार्टी कमेटी का दफ्तर खाली हो गया था। कमेटी का मंत्री त्रोफीमोव कोर्चागिन को घर में अकेला छोड़कर थोड़ी देर पहले अपने घर चला गया था। पाले से खिड़की पर अजीब-अजीब सी आकृतियाँ बनी हुई थीं, मगर कमरा गर्म था। मेज पर मिट्टी के तेल का लैम्प जल रहा था। कोर्चागिन अभी कुछ दिन पहले की बातें याद कर रहा था। उसे याद आया कि कैसे अगस्त के महीने में कारखाने के कोमसोमोल संगठन ने उसे नौजवानों का संगठनकर्ता बनाकर एक मरम्मती गाड़ी के साथ एकातेरीनोस्लाव भेजा था। पतझड़ के आखिरी दिनों तक वह रेलगाड़ी के डेढ़ सौ लोगों के साथ-साथ एक स्टेशन से दूसरे स्टेशन घूमता फिरा था। लड़ाई के बाद की गड़बड़ी को दूर करके व्यवस्था स्थापित करना, टूटी-फूटी चीजों की मरम्मत करना और रेल के जले हुए और टूटे-फूटे डब्बों के अवशेषों की सफाई करना — यही उसका काम था। सिनेलनिकोवो से पोलोगी तक उन लोगों ने सफर किया और यही वह इलाका था जिसमें माखनो डाकू लूटपाट करके चारों तरफ तबाही व बर्बादी फैलाया करता था। गुलियाई-पोलिये में वाटर-टावर की ईंट की बनी इमारत की मरम्मत करने और डाइनामाइट से उड़ायी गयी पानी की टंकी की दीवारों पर जहाँ-तहाँ लोहे की पत्तरें बिछाने में पूरा एक हफ्ता लगा। गोकि पावेल फिटर नहीं था और इस भारी काम का आदी नहीं था, तब भी औरों के साथ-साथ उसने भी रिंच संभाली और न जाने कितने हजार जंग-लगे बोल्टू कसे।

पतझड़ बीतते-बीतते रेलगाड़ी घर लौटी और कारखाने फिर अपने डेढ़ सौ काम करनेवालों को पा गये ...

पाला शुरू होने के ठीक पहले नदी में बहकर आते हुए लकड़ी के कुन्दों ने नहर को जाम कर दिया। फिर पतझड़ की बाढ़ों ने उन्हें तोड़ दिया और तेज बहता हुआ पानी उस लकड़ी को, जिसकी इतनी सख्त जरूरत थी, बहा ले गया। और तब तक एक बार फिर सोलोमेंका ने अपने लोगों को रक्षा के काम पर भेजा, इस बार उस अनमोल लकड़ी की रक्षा के लिए।

कोर्चागिन दूसरे लोगों से पीछे नहीं छूटना चाहता था, इसलिए उसने हफ्ते भर तक, जब तक कि किनारे पर लकड़ी का ढेर नहीं लग गया, किसी को यह नहीं बतलाया कि उसे सर्दी लग गयी है। उसी बर्फानी पानी और पतझड़ की उस ठंडी सीलन ने उसके खून में सोते हुए उसके पुराने दुश्मन को

जगा दिया और उसे तेज बुखार चढ़ आया। वह फिर बिस्तर पर पड़ गया। दो हफ्ते तक उसके शरीर में गठिये की सख्त तकलीफ रही और जब वह अस्पताल से लौटा तो उसकी यह हालत थी कि वह एक टाँग बेन्च के इधर और एक टाँग उधर रखकर ही अपनी जगह पर काम कर सका। फोरमैन उसको देखकर उदासी से सिर हिलाता था। कुछ दिन बाद एक मेडिकल बोर्ड ने उसे काम के लिए अयोग्य घोषित कर दिया और उसको बर्खास्तगी की तनखा और पेंशन पाने के अधिकार का सर्टिफिकेट दे दिया गया। मगर कोर्चागिन ने गुस्से से उसको लेने से इनकार कर दिया।

वह कारखाने से चला तो उसका दिल भारी था। वह धीरे-धीरे अपनी छड़ी का सहारा लिये चला जा रहा था, मगर हर कदम पर उसे सख्त दर्द महसूस होता था। उसे अपनी माँ के कई खत मिले थे जिसमें उसने पावेल को घर बुलाया था और हर बार जब उसे अपनी माँ का खयाल आता, तो उसके मन में अपनी माँ के विदाई के समय के ये शब्द गूँज जाते :

'मैं तो तुम्हें तभी देखती हूँ जब तुम लाचार और मजबूर होते हो।'

सूबा कमेटी में उसे अपना कोमसोमोल और पार्टी का कार्ड दिया गया और फिर वह जाते समय कम से कम लोगों से मिलकर, ताकि जुदाई में उतना ही कम दर्द हो, चुपके से अपनी माँ के पास जाने के लिए शहर से निकल गया। दो हफ्ते तक उसकी बुढ़िया माँ ने उसकी सूजी टाँगों को भाप से सेंका और उनकी मालिश की और महीने भर में ही वह इस काबिल हो गया कि बिना अपनी छड़ी का सहारा लिये चल सकता था। उसका मन उस समय खुशी से भर उठा जब उसकी जिन्दगी में गोधूलि की जगह यह एक नया सबेरा फिर से आया। एक बार फिर रेलगाड़ी उसे सूबे के केन्द्र में ले आयी। तीन दिन उसने वहाँ पर गुजारे और संगठन विभाग ने उसे प्रादेशिक फौजी कमिसारियट में एक फौजी शिक्षा की यूनिट में राजनीतिक कार्यकर्ता का काम सौंप दिया।

एक हफ्ता और गुजरा और पावेल दूसरे नम्बर की बटालियन का फौजी कमिसार बनकर एक छोटे से, बर्फ से ढंके हुए, कस्बे में पहुँच गया। कोमसोमोल की एरिया कमेटी ने भी उसे एक काम सौंप दिया : वह काम था इलाके के बिखरे हुए कोमसोमोल सदस्यों को इकट्ठा करना और उस जिले में नौजवान सभा का संगठन कायम करना। और इस तरह जिन्दगी फिर चल निकली।

बाहर बड़ी सख्त, दम घोंटनेवाली गर्मी थी। कार्यकारिणी समिति के दफ्तर की खुली खिड़की में से चेरी के पेड़ की एक शाख भीतर झाँक रही

थी। सड़क के उस पार एक पोलिश गिर्जे के गोथिक शैली के घंटाघर के ऊपर लगा हुआ सुनहरा क्रॉस धूप में चमक रहा था। और खिड़की के सामने हाते में छोटे-छोटे, आसपास की घास के समान हरे-हरे बत्तख के बच्चे खाने की तलाश में व्यस्त घूम रहे थे। ये बत्तख के बच्चे कार्यकारिणी समिति के रखवाले के थे।

लड़ाई की आग और तोपों की गरज अब अतीत का अंग हो गयी थीं। अब निकोलाई लिसित्सिन सरहद पर के एक जिले में काम कर रहा था। जिन्दगी धीमे-धीमे सम-चाल से चली जा रही थी और कार्यकारिणी का चेयरमैन अपने दफ्तर में बैठा हर रोज बड़ी रात तक खेती की फसल की रिपोर्टों को उलटता-पलटता रहता था। इस वक्त उसके सामने जो खत था, उसने थोड़ी देर के लिए उसके हाल के गुजरे हुए जमाने की याद को ताजा कर दिया। यह तार की संक्षिप्त भाषा में एक चेतावनी थी :

'अत्यन्त गोपनीय। बेरेजदोव कार्यकारिणी समिति के चेयरमैन लिसित्सिन के नाम।

'इधर देखने में आ रहा है कि सरहद पर पोल लोग हमारी सीमा में सरहदी इलाके के लोगों में आतंक फैलाने के लिए बड़े-बड़े गिरोहों को भेज रहे हैं। बचाव का इंतजाम करने की जरूरत है। हमारा प्रस्ताव है कि अर्थ-विभाग की तमाम कीमती चीजें, जिनमें जमा किया हुआ टैक्स भी शामिल है, एरिया सेंटर में भेज दी जायें।'

अपनी खिड़की में से लिसित्सिन जिला कार्यकारिणी समिति की इमारत में आनेवाले हर आदमी को देख सकता था। उसने नजर उठायी तो पावेल कोर्चागिन को सायबान में खड़ा पाया। क्षण भर बाद दरवाजे पर दस्तक पड़ी।

लिसित्सिन ने पावेल से हाथ मिलाते हुए कहा, 'बैठ जाओ, मुझे तुमसे कुछ कहना है।'

पूरे एक घंटे तक दोनों दफ्तर में बैठे बातें करते रहे।

कोर्चागिन के दफ्तर से निकलते-निकलते दोपहर का वक्त हो गया था। जैसे ही वह दफ्तर से बाहर आया, लिसित्सिन की छोटी बहन, जो थी तो बच्ची मगर अपनी उम्र से कहीं ज्यादा गंभीर थी, बागीचे में से भागकर उसके पास आयी। कोर्चागिन को देखकर वह हमेशा बड़े प्यार से मुस्करा देती थी। कोर्चागिन उसे प्यार में अन्युत्का कह कर बुलाता था, जो उसके नाम का संक्षिप्त रूप था। इस वक्त भी उसने लजाते हुए पावेल का अभि-

वादन किया और सिर को झटका देकर एक बिखरी हुई लट को माथे पर से पीछे हटा दिया।

उसने पूछा, 'क्या कोलिया बहुत व्यस्त है ? मारिया मिखाइलोवना बड़ी देर से उसका खाना तैयार करके बैठी हुई है।'

'अंदर चली न जाओ अन्युत्का, वह अकेला बैठा है।'

दूसरे रोज सबेरे, भोर होने के बहुत पहले तीन गाड़ियाँ, जिन्हें अच्छे मोटे-ताजे घोड़े खींच रहे थे, आकर कार्यकारिणी समिति के सामने रुकीं। उन गाड़ियों के साथ जो लोग आये थे, उन्होंने धीमी आवाज में आपस में बातें की और इसके बाद कई मुहरबन्द बोरे अर्थ-विभाग से बाहर लाये गये। उन्हें गाड़ियों पर लादा गया और कुछ मिनट बाद गाड़ियाँ उनको लेकर चली गयीं और सड़क पर उनकी दूर जाती हुई आवाज सुनायी देने लगी। इन गाड़ियों को हिफाजत से अपनी जगह पर पहुँचाने की जिम्मेदारी एक सैनिक दस्ते की थी जिसका नायक कोर्चागिन था। वहाँ से प्रादेशिक केन्द्र तीस मील दूर था (जिसमें से कोई बाईस मील का रास्ता जंगल होकर था)। सुरक्षित ढंग से वे सारी कीमती चीजें एरिया अर्थ-विभाग की तिजोरियों में पहुँच गयीं।

इसके कुछ दिन बाद एक घुड़सवार, जिसके घोड़े के मुँह से फिचकुर निकल रहा था, सरहद की ओर से सरपट बेरेजदोव में आया। वह सड़कों के बीच से गुजरा तो शहर के नाकारे लोग अचंभे से उसको घूरने लगे।

कार्यकारिणी समिति के फाटक पर पहुँचकर सवार कूदकर घोड़े से नीचे आ गया और अपनी तलवार को एक हाथ से संभाले, अपने भारी-भारी बूट पहने सीढ़ियों पर धम-धम चढ़ गया। उसको देखकर लिसित्सिन के माथे पर परेशानी से बल पड़ गये और उसने उसके हाथ से खत ले लिया और लिफाफे पर दस्तखत करके लिफाफा उसे वापिस दे दिया। चिट्ठी देकर वह सरहदी संतरी अपने घोड़े पर सवार हुआ और घोड़े को सुस्ताने का जरा भी समय दिये बिना उसने घोड़े को एड़ लगायी और जिधर से आया था, सरपट उधर ही चला गया।

कार्यकारिणी समिति के चेयरमैन के अलावा और किसी को नहीं मालूम था कि उस चिट्ठी में क्या लिखा है, और अभी ही उसने उस चिट्ठी को पढ़ा था। मगर शहरवालों की नाक भी अजीब होती है, उनको पता नहीं कैसे होनेवाली घटनाओं का सुराग मिल जाता है। यहाँ के तीन में से दो छोटे-मोटे सौदागर चोरी से माल लाने-ले-जाने का काम कुछ-न-कुछ जरूर करते थे और इस काम को करने के ही सिलसिले में आनेवाले खतरे को समझ जाने की एक सहज चेतना उनके अंदर पैदा हो गयी थी।

सूरज अपने शिखर पर था। हर तरफ गरमी थी और सभी जीवित प्राणी छाया में शरण ढूँढ़ रहे थे। यहाँ तक कि कुत्ते भी शेडों में घुसे हुए हाँफते, ऊँघते और बेजान से पड़े थे। गाँवों में जिंदगी की अकेली निशानी एक सुअर था जो कुएँ के पास कीचड़ की एक तलैया में मौज से पड़ा था।

कोर्चागिन ने अपने घोड़े को खोला और घुटने के दर्द से ओठों को काटता हुआ कूदकर घोड़े की पीठ पर सवार हुआ। उस्तानी स्कूल की इमारत की सीढ़ियों पर खड़ी थी और धूप से बचने के लिए आँख पर हथेली की आड़ लिये हुए थी।

उसने मुस्कराकर कहा, 'कामरेड फौजी कमिसार, उम्मीद करती हूँ कि आप से फिर मुलाकात होगी।'

घोड़ा अधीर होकर पैर पटक रहा था और अपनी गर्दन तानकर रास पर जोर दे रहा था।

'अच्छा विदा कामरेड राकीतिना! तो यह बात तय हो गयी, कल पहला सबक आप ही पढ़ायेंगी।'

रास को ढीला पाकर घोड़ा तेजी से चल दिया। तभी एकाएक पावेल के कानों में जोर-जोर से चीखने की आवाजें आयीं। यह गाँव में आग लग जाने पर औरतों के चीखने जैसी आवाज थी। तेजी से अपने घोड़े को लौटाते हुए फौजी कमिसार पावेल ने एक नौजवान किसान स्त्री को बेतहाशा गाँव में भागकर आते देखा। राकीतिना ने जल्दी से आगे बढ़कर उस औरत को रोका। पास की झोपड़ियों से उनमें रहनेवाले, जिनमें ज्यादातर बूढ़े स्त्री व पुरुष थे, क्योंकि मेहनत कर सकनेवाले किसान खेतों में काम कर रहे थे, बाहर की ओर देखने लगे।

'ओह भाइयो, जल्दी चलो, जल्दी चलो! वहाँ वे लोग एक-दूसरे को मारे डाल रहे हैं।'

कोर्चागिन जब सरपट भागकर वहाँ पहुँचा तो लोग उस औरत के इर्द-गिर्द भीड़ लगा रहे थे, उसके सफेद ब्लाउज को पकड़कर तान रहे थे और बहुत चिंतित होकर उससे सवाल पर सवाल किये जा रहे थे। मगर उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि मामला क्या है, क्योंकि वह औरत बेतहाशा चीखे जा रही थी। 'कत्ल हो रहा है! वे लोग काटकर रखे दे रहे हैं!' बस इतना ही कह पाती थी। उलझी हुई दाढ़ीवाला एक बुड्ढा अपने हाथ के कते-बुने पाजामे को एक हाथ से संभाले दौड़ने की कोशिश करता हुआ वहाँ आया।

उसने उस घबरायी हुई औरत से चिल्लाकर कहा, 'बंद करो अपना

चीखना, साफ-साफ तो बोलो कुछ ! किसका कत्ल हो रहा है ? मामला क्या है ? अपनी यह भौं-भौं तो बंद करो !'

'हमारे आदमियों में और पोदुब्सी वालों में लड़ाई हो रही है। वे हमारे आदमियों का कत्ल कर रहे हैं !'

इसी से सारी बात उनकी समझ में आ गयी। औरतें रोने लगीं और बुड्ढे लोग गुस्से में जोर-जोर से सांस छोड़ने लगे। यह खबर गाँव भर में, कोनों-अँतरों तक में लहर की तरह फैल गयी : 'वे पोदुब्सी वाले हँसियों से हमारे आदमियों को काटे डाल रहे हैं... फिर वही पुराना सरहद वाला झगड़ा है !' सिर्फ वे लोग जो बिस्तर पकड़े हुए थे, घर के अन्दर रहे, बाकी सारे लोग बाहर गाँव की सड़क पर निकल आये और लाठी, गड़ाँसा, कुल्हाड़ी, वगैरह से लैस होकर उन खेतों की तरफ दौड़े जहाँ दोनों लोग मेड़ के झगड़ों को लेकर एक दूसरे का खून बहा रहे थे। और साल में एक बार यह चीज जरूर होती थी।

कोर्चागिन ने अपने घोड़े को चाबुक लगाया और घोड़ा सरपट भाग चला। घुड़सवार कोर्चागिन की आवाजों से घोड़ा दौड़ता हुआ गाँववालों के पास से तीर की तरह निकल गया। उसके कान पीछे को दबे हुए थे और उसकी टापें जमीन को रौंद रही थीं और उसकी चाल बराबर तेज होती जा रही थी। सामने एक पहाड़ी पर एक हवा की चक्की बाँहें फैलाये खड़ी थी मानो घोड़े का रास्ता रोकना चाहती हो। दाहिनी तरफ नदी के किनारे खाले में चरागाह थी और बायीं तरफ एक राई का खेत था जो दूर क्षितिज तक चला गया था। पकी हुई राई की बालें हवा में झूम रही थीं। दोनों तरफ पॉपी के लाल-लाल फूल थे। यहाँ पर शान्ति थी और गर्मी असह्य थी। मगर दूर से, जहाँ पर नदी एक रुपहले फीते सी नजर आती और धूप खाती जान पड़ती थी, लड़ाई की आवाजें आ रही थीं।

घोड़ा चरागाहों पर बेतहाशा भागता चला जा रहा था। 'अगर यह कहीं ठोकर खाकर गिरा तो हम दोनों का काम तमाम हो जायगा।' पावेल के मन में एकाएक यह खयाल आया। मगर अब रुकने का वक्त न था और उसे इसी तरह बढ़ते जाना था, काठी पर इसी तरह नीचे झुके हुए और कानों में तेज हवा की सीटी सी बजती हुई।

आँधी की तरह वह सरपट उस खेत पर पहुँचा जहाँ लोग गुस्से से अंधे होकर जंगली जानवरों की तरह आपस में लड़ रहे थे। बहुत से लोग लहूलुहान होकर जमीन पर पड़े थे।

घोड़े ने एक दाढ़ी वाले किसान को अपने पैरों से कुचल दिया जो एक हँसिया के बेंट का सिरा हाथ में लिये एक नौजवान का पीछा कर रहा था

और जिसके चेहरे से खून वह रहा था। उसके पास ही एक विशालकाय आदमी अपने बड़े-बड़े भारी बूटों से अपने जमीन पर पड़े हुए दुश्मन के पेट में बेदर्दी से ठोकर मार रहा था।

इन लड़ते हुए आदमियों की भीड़ में तेजी से घोड़े को दौड़ाते हुए कोर्चागिन ने उन सबको तितर-बितर कर दिया। इस अचानक हमले से सँभलने के पहले कोर्चागिन कभी एक आदमी पर और कभी दूसरे आदमी पर जा चढ़ता था। क्योंकि यह बात उसने समझ ली थी कि ये खून में लिथड़े हुए आदमी जो इस वक्त जानवर हो गये हैं, डराकर ही तितर-बितर किये जा सकते हैं।

पावेल ने गुस्से में जोर से चिल्लाकर कहा, 'भाग जाओ, जानवर कहीं के ! भाग जाओ लुटेरो, नहीं तो मैं तुममें से एक-एक को गोली से भून दूंगा !'

और अपनी पिस्तौल निकालते हुए उसने एक ऊपर उठे हुए, गुस्से से वहशियाना नजर आते हुए चेहरे पर गोली चलायी। घोड़ा फिर दौड़ा और पिस्तौल फिर बोली। कुछ लड़नेवालों ने अपने हँसिये छोड़ दिये और लौट पड़े। फौजी कमिसार पावेल ने अपने घोड़े पर सवार इधर से उधर तक मैदान को रौंदकर और लगातार गोली चलाते हुए स्थिति पर काबू पा लिया। किसान भाग निकले और चारों तरफ तितर-बितर हो गये, क्योंकि वे इस खूनी झगड़े की जिम्मेदारी से बचना चाहते थे और इस खतरनाक घुड़सवार से भी जो गुस्से से पागल होकर बेतहाशा गोली चलाये जा रहा था।

सौभाग्य से कोई मरा नहीं। और घायल लोग ठीक हो गये। बहरहाल, थोड़ी ही देर बाद इस मामले की सुनवाई के लिए पोदुब्सी में जिले की अदालत बैठी, मगर बदमाशों के सरगना लोगों का पता लगाने की जज की सारी कोशिश नाकाम हुई। सच्चे बोल्शेविक की दृढ़ता और धैर्य से जज ने अपने सामने के बिगड़े हुए किसानों को यह दिखाने की कोशिश की कि उनका काम कितना बर्बर था। जज ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि इस तरह की मारकाट बर्दाश्त नहीं की जायगी।

किसानों ने कहा, 'कामरेड जज, दोष हमारा नहीं, चौहद्दी का है। पता नहीं कैसे हर बार आपस में गडमड हो जाती है और हर साल हमें उसके पीछे लड़ना पड़ता है।'

मगर खैर वह जो भी हो, कुछ किसानों को इस लड़ाई की जवाबदेही करनी पड़ी।

हफ्ते भर बाद एक कमीशन वहाँ आया और झगड़े की जमीनों की छानबीन करने लगा।

'जमीन की नाप-जोख करते मुझे तीस साल हो गये और मैंने देखा है कि हमेशा झगड़ा बटवारे की लाइन को लेकर होता है,' कमीशन के बुड्ढे सर्वेयर

ने अपना फीता लपेटते हुए कोर्चागिन से कहा। वह बुड्ढा गरमी के कारण और काफी पैदल चलने के कारण बिलकुल थक गया था और उसके शरीर से पसीना चू रहा था। 'सचमुच अपनी आँख पर यकीन नहीं आता, जरा देखो कैसे ये चरागाहें बाँटी गयी हैं। कोई शराबी भी इससे ज्यादा सीधी रेखाएँ खींच सकता था। और खेतों का हाल तो और भी बुरा है। तीन-तीन कदमों के बराबर जमीन की पट्टियाँ हैं और उस पर तुर्रा यह कि एक की टाँग दूसरे में घुसी हुई है — कोई उनको अलग करने की कोशिश करे तो पागल हो जाय। इस पर से जब लड़के बड़े होते हैं और बाप अपनी जमीनों के और भी टुकड़े करते हैं, तो उन छोटी-मोटी पट्टियों के और भी टुकड़े हो जाते हैं। मेरी बात का यकीन करो कि आज से बीस बरस बाद जोतने के लिए कोई धरती बाकी न रहेगी, सिर्फ मेड़ें ही मेड़ें रह जायेंगी। यों भी कुल जमीन का दस फीसदी मेड़ों के पीछे बर्बाद हो रहा है।'

कोर्चागिन मुस्कराया।

'कामरेड सर्वेयर, आज से बीस बरस बाद एक भी मेड़ बाकी न रहेगी।'

उस बुड्ढे ने पावेल को बहुत बड़प्पन के भाव से देखा, जैसे उसकी बेवकूफी पर तरस खा रहा हो।

'तुम्हारा मतलब कम्युनिस्ट समाज से है? वह जरा बहुत दूर की बात है। है न?'

'आपने बुदानोव्का कोलखोज के बारे में सुना है?'

'ओह, यह मतलब है तुम्हारा।'

'आपका क्या कहना है उसके बारे में?'

'मैं बुदानोव्का में रह चुका हूँ। मगर वह बात अपवाद है, कामरेड कोर्चागिन।'

कमीशन धरती की पट्टियों की पैमाइश करता रहा। दो नौजवान खूँटे गाड़ रहे थे। और दोनों तरफ खड़े हुए किसान बड़े गौर से यह देख रहे थे कि वे सड़ी सी डंडियाँ ठीक उस जगह पर गड़ें जहाँ विभाजन की रेखा पहले थी, जो घास में मुश्किल से दिखायी दे रही थी।

अपनी मरियल घोड़ी पर चाबुक फटकारते हुए बातूनी कोचवान अपनी सवारियों की तरफ मुड़ा।

उसने कहा, 'मेरी समझ में ही नहीं आता, ये कोमसोमोल के छोकरे कहाँ से फट पड़े। आज से पहले ऐसी कोई चीज कभी न हुई थी, कम-से-कम मुझे तो याद नहीं। मैं तो दावे से कह सकता हूँ कि यह वही उस्तानी है जिसने

यह सारा खेल-तमाशा शुरू किया है। उसका नाम राकीतिना है, हो सकता है आपने भी उसका नाम सुना हो ? है तो वह जवान औरत मगर किसी काम की नहीं। वह गाँव भर की तमाम औरतों को भड़काती है। उनके दिमाग में न जाने कहाँ-कहाँ की वाही-तबाही की बातें भर देती है और उसी से तो मुसीबत शुरू होती है। उसी के चलते तो आज यह हाल है कि कोई आदमी अपनी बीवी को पीट तक नहीं सकता। पुराने जमाने में जरा भी अपनी तबियत नाराज होने पर तुम अपनी बुढ़िया को डण्डा लगा सकते थे, फिर चाहे वह कहीं जाकर कोने में बिसूरती रहे ! मगर अब तुमने कुछ किया नहीं कि वह इतना हल्ला मचाती है कि तुम कान पर हाथ धरने लगते हो कि मुझे क्या सूझी थी कि मैंने इसे छू दिया। आज तो वह तुम्हें जनता की अदालत की धमकी देती है। और जहाँ तक जवान लड़कियों की बात है, वे तो तलाक की बात करती हैं और दुनिया भर के कानून सुनाने लगती हैं। मेरी गांका को ही देखो, कसी खामोश औरत थी वह, जैसी दुनिया में न मिले। लेकिन अब उसे देखो जाकर, प्रतिनिधि बन गयी है। इसका मतलब शायद यह होता है कि औरतों के समाज में उसे बड़ा समझा जाता है। गाँव भर की औरतें उसके पास आती हैं। मैंने जब इस चीज के बारे में सुना तो मेरे जी में आया कि चाबुक से उसकी जरा अच्छी तरह मरम्मत करूँ, मगर फिर मैंने जाने दिया; कहा, इस मामले में हाथ डालना ठीक नहीं। जब सब जहन्नुम में जाना ही चाहती हैं, तो जायें। जहाँ तक घर के काम-काज की बात है, तो वह औरत बुरी नहीं है।'

कोचवान की गाढ़े की कमीज की खुली हुई जगह में से उसका बालदार सीना दिखायी दे रहा था। उसने अपने सीने को खुजलाया और घोड़े की पीठ पर अपना चाबुक फटकारा। गाड़ी में राजवालिखिन और लिदा बैठे हुए थे। उन दोनों को पोदुब्सी में काम था। लिदा महिला प्रतिनिधियों के एक सम्मेलन की योजना बना रही थी और राजवालिखिन को स्थानीय सेल के काम के संगठन में मदद पहुँचाने के लिए भेजा गया था।

लिदा ने मजाक के स्वर में कोचवान से पूछा, 'तो तुम्हें कोमसोमोल अच्छे नहीं लगते ?'

कोचवान जवाब देने के पहले थोड़ी देर तक अपनी छोटी सी खसखसी दाढ़ी के बाल नोचता रहा।

'नहीं, मुझे बुरे नहीं लगते ... मैं इस बात का हामी हूँ कि नौजवानों को मस्ती का मौका देना चाहिए, लोग नाटक-वाटक किया करें। मुझे खुद हँसने-हँसाने वाले नाटक पसंद हैं, अगर अच्छे हों। शुरू में हमने जरूर सोचा था कि नौजवान हमारे काबू के बाहर हो जायेंगे, मगर बाद में उल्टी ही बात निकली।

मैंने लोगों को कहते सुना है कि वे लोग शराब-वराब पीने और झगड़े करने वगैरह के मामले में बड़े सख्त हैं। उनका ज्यादा झुकाव किताब पढ़ने पर होता है। मगर पता नहीं क्यों वे लोग भगवान को अपनी जगह नहीं रहने देते, जब देखो तब वे गिर्जे छीनकर उनको क्लब में बदलने की फिराक में रहते हैं। मगर कुल मिलाकर वे लोग बुरे नहीं हैं। अगर तुम मुझसे पूछो, तो मैं यह जरूर कहूँगा कि गाँव के सभी दरिद्र लोगों को अपने में शरीक करके उन्होंने बड़ी गलती की। ऐसे लोगों को लेने से क्या फायदा जो खरीदे जा सकते हैं या जो अपनी खेती की देख-भाल ठीक से नहीं कर सकते। धनी किसानों के लड़कों से वे लोग कोई सरोकार ही नहीं रखते।'

गाड़ी खड़खड़ाती हुई पहाड़ी के नीचे उतरी और स्कूल की इमारत के सामने जाकर रुक गयी।

दरबान की बीवी इन नये आगंतुकों के ठहरने का इंतजाम करके पुआल पर सोने चली गयी थी। लिदा और राजवालिखिन अभी एक मीटिंग से लौटे थे जो जरा देर में खत्म हुई थी। झोपड़ी के अंदर अंधेरा था। लिदा ने जल्दी-जल्दी कपड़े उतारे, कूदकर बिस्तर पर गयी और पलक मारते सो गयी। उसकी नींद अपने शरीर पर फिरते हुए राजवालिखिन के हाथों के स्पर्श से अचानक खुली। राजवालिखिन के हाथ उसके शरीर पर इस तरह से फिर रहे थे कि लिदा के मन में कोई संदेह न रहा कि राजवालिखिन का क्या इरादा है।

'क्या है ?'

'श् श्, लिदा, इतना हल्ला मत करो। अकेले पड़े-पड़े मैं तो उकता गया। इस तरह खर्राटे भरने से अच्छी भी कोई चीज हो सकती है, क्या यह तुम्हारी समझ में नहीं आता ?'

'अपने पंजों से मुझे इस तरह गूंधो मत और फौरन मेरे बिस्तर पर से चले जाओ !' लिदा ने उसको धक्का देते हुए कहा। राजवालिखिन की तेल जैसी चिकनी मुस्कराहट से उसे हमेशा नफरत होती थी और उसके जी में आया कि उसको लज्जित और अपमानित करने के लिए कोई कड़ी बात कहे, मगर नींद उस पर भारी हो रही थी और उसने आँखें मूंद लीं।

'अरे मान भी जाओ ! यह कैसी बात तुम कर रही हो ?' तुम कोई सन्यासिन तो हो नहीं, तुम्हारा लालन-पालन किसी मठ में तो हुआ नहीं, तब फिर ऐसा क्यों ? बहुत भोली न बनो, तुम मुझे चरका नहीं दे सकतीं। अगर तुम सचमुच प्रगतिशील स्त्री होतीं तो मेरी इच्छा पूरी करके फिर मन चाहे जितना सोतीं।'

इस मामले को तय जानकर वह फिर लिदा के बिस्तरे की पाटी पर

जाकर बैठ गया और लिदा के कंधे पर उसने अपना हाथ रखा।

लिदा अब बिल्कुल अच्छी तरह जाग गयी थी, बोली, 'जहन्नुम में जाओ! मैं कल कोर्चागिन को इसके बारे में बतला दूंगी।'

राजवालिखिन ने उसका हाथ पकड़ लिया और झुंझलाते हुए धीरे से बोला :

'मैं तुम्हारे कोर्चागिन की खाक परवाह नहीं करता और देखो मेरी बात मान जाओ, मुझे रोकने की कोशिश मत करो, नहीं तो मुझे तुम्हारे साथ जबर्दस्ती करनी पड़ेगी।'

जरा देर हाथापाई हुई और फिर रात की निस्तब्धता में कसकर जड़े गये दो तमाचे गूँज उठे। राजवालिखिन कूदकर अलग हो गया। लिदा टटोलती हुई दरवाजे के पास गयी, धक्का देकर उसे खोला और दौड़कर हाते में निकल गयी। वहाँ वह चाँदनी में खड़ी थी, उसके अंदर गुस्सा उबाल खा रहा था।

'अंदर चली आओ, बेवकूफ कहीं की!' राजवालिखिन ने दुष्टता से उसको पुकारते हुए कहा।

वह खुद अपना बिस्तर बाहर ओल्ती के नीचे निकाल लाया और बाकी रात उसने वहीं गुजारी। लिदा ने भीतर से कुंडी बंद कर ली और अपने बिस्तर में सिमटकर फिर से सो गयी।

सबेरे वे लोग अपने घर के लिए रवाना हो गये। राजवालिखिन बूढ़े कोचवान के बगल में बैठा सिगरेट पर सिगरेट पीता जा रहा था।

'यह छुई-मुई कहीं सचमुच जाकर कोर्चागिन के सामने मेरा भंडाफोड़ न कर दे। अरे किसने सोचा था कि वह ऐसी सती-साध्वी निकलेगी! नखरे तो ऐसे हैं कि जैसे पता नहीं कहाँ की हसीना हो, मगर शकल-सूरत कुछ है नहीं। लेकिन उससे समझौता कर लेना अच्छा होगा, वरना मुसीबत होगी। यों भी कोर्चागिन की निगाह मुझ पर है।'

वह लिदा के पास पहुँच गया। उसने ऐसा दिखलाया कि जैसे उसे अपने ऊपर बड़ी शर्म आ रही हो, उदास चेहरा बना लिया और माफी माँगने के दो-चार शब्द बुदबुदाये।

उससे काम बन गया। अभी उन्होंने गाँव की सरहद पार भी न की थी कि लिदा ने उसे वचन दे दिया कि रात की बात वह किसी से न बतलायेगी।

सरहद पर के गाँवों में एक के बाद दूसरी जगह कोमसोमोल के संगठन बन रहे थे। जिला कमेटी के मेम्बर बड़ी सावधानी से कम्युनिस्ट आन्दोलन

की इन पहली नयीं कोंपलों की देखभाल कर रहे थे। कोर्चागिन और लिदा पोलेविख अलग-अलग बस्तियों में स्थानीय संगठन के मेम्बरों के साथ बहुत वक्त गुजारते थे।

राजवालिखिन को गाँवों में जाना अच्छा नहीं लगता था। वह नहीं जानता था कि कैसे किसान लड़कों का विश्वास पाये और बस कोई न कोई गड़बड़ी पैदा कर देता था। लिदा और पावेल को किसान नौजवानों से दोस्ती पैदा करने में कोई मुश्किल न होती थी। लडकियाँ फौरन लिदा को चाहने लग जाती थीं। वे उसे फौरन अपने में से ही एक समझने लगतीं और लिदा धीरे-धीरे उनके मन में कोमसोमोल आन्दोलन के प्रति दिलचस्पी पैदा करती। जहाँ तक कोर्चागिन की बात थी, जिले के सारे नौजवान उसको जानते थे। सोलह सौ नौजवान जो फौजी सर्विस के लिए बुलाये जानेवाले थे, वे आरंभिक फौजी शिक्षा उसकी बटालियन में ही पाते थे। उसका अकार्डियन इस गाँव में प्रचार के काम में जितना सहायक साबित हो रहा था, उतना पहले कभी नहीं हुआ था। अपने बाजे के कारण पावेल नौजवानों के बीच बड़ा लोकप्रिय था। वे नौजवान अक्सर शाम को गाँव की गलियों में जमा हो जाते थे और गाते-बजाते थे। और पता नहीं कितने बिगड़ैल जवानों ने यहीं से कोमसोमोल की तरफ अपना सफर शुरू किया था, अकार्डियन के इसी मोहक संगीत को सुनकर, जो कभी आवेगपूर्ण और उत्तेजक होता था, कभी ओजस्वी और साहसपूर्ण और कभी कोमल और दुलार-भरा जैसे कि उक्रेन के उदास, हसरत-भरे गाने ही हो सकते हैं। वे अकार्डियन सुनते थे और उस नौजवान आदमी की बात सुनते थे जो अकार्डियन बजाता था, जो कभी रेलवे मजदूर था और अब फौजी कमिसार और कोमसोमोल का मंत्री था। और तब उन्हें ऐसा महसूस होता कि जैसे अकार्डियन का संगीत उस नौजवान कमिसार की बात के अंदर डूब गया हो और दोनों के स्वर आपस में मिल गये हों। फिर जल्दी ही नये-नये गाने गाँवों में गूँजने लगते और झोपड़ियों में बाइबिलों और प्रार्थना-पुस्तकों के पास दूसरी नयी-नयी पुस्तकें दिखायी देने लगतीं।

चोरी-चोरी माल को लाने-ले-जाने वालों को अब सरहद के संतरियों के अलावा एक दूसरी शक्ति का भी सामना करना पड़ता था। कोमसोमोल के सदस्यों की शकल में सोवियत सरकार को अपने बड़े पक्के दोस्त और उत्साही सहायक मिल गये थे। कभी-कभी सरहदी कस्बे के कोमसोमोल संगठन दुश्मन को पकड़ने के उत्साह में हद से गुजर जाते थे और तब कोर्चागिन को अपने नौजवान साथियों की मदद के लिए आगे आना पड़ता था। एक बार ग्रिशुत्का खोरोवोदको को अपने निजी सूत्रों से यह पता चला कि उस रात को कुछ चोरी

से लाया हुआ माल गाँव की मिल में आनेवाला था। नीली आँखोंवाला ग्रिशुत्का खोरोवोदको पोदुब्सी ग्राम सेल का मंत्री था। वह गरम मिजाज का लड़का था और उसको बहस करना अच्छा लगता था और धर्म-विरोधी आन्दोलन में वह बहुत सक्रिय रहता था। उसने कोमसोमोल के सारे सदस्यों को जगाया और एक ट्रेनिंग राइफिल और दो संगीनों से लैस होकर वे लोग आधी रात को बाहर आये, चुपके से मिल में एक जगह छिपकर बैठ गये और अपने शिकार का इंतजार करने लगे। खुफिया विभाग की सरहदी चौकी को भी चोरी का माल लेनेवालों के इस इरादे की खबर लग गयी थी और उन्होंने भी अपने आदमी भेजे थे। अंधेरे में ये दोनों लोग एक-दूसरे से लड़ पड़े और अगर सरहदी संतरियों ने सूझ-बूझ से काम न लिया होता, तो उस झगड़े में कोमसोमोल के बहुत से नौजवान मारे जाते या घायल होते। फिलहाल हुआ यह कि उन लड़कों से हथियार छीन लिये गये और उन्हें तीन मील दूर एक गाँव में ले जाकर हवालात में बंद कर दिया गया।

संयोग से कोर्चागिन उस समय गाव्रिलोव के घर पर था। जब अगली सुबह को बटालियन कमांडर ने उसको यह खबर दी, तो पावेल घोड़े पर सवार होकर अपने लड़कों को बचाने के लिए सरपट भागा।

खुफिया विभाग के आदमी ने, जो उस जगह ड्यूटी पर था, हँसते हुए उसको यह कहानी सुनायी।

उसने कहा, 'कामरेड कोर्चागिन, मैं तुमको बतलाऊँ कि हम लोग क्या करने जा रहे हैं। ये अच्छे लड़के हैं और हम उन्हें परेशान करना नहीं चाहते, मगर अच्छा हो कि तुम उन्हें जरा डाँट-डपट दो ताकि आगे से वे हमारा काम करने की कोशिश न करें।'

संतरी ने शेड का दरवाजा खोला और ग्यारहों लड़के खड़े हो गये और खिसियाये हुए से कभी इस और कभी उस पैर पर जोर देते खड़े रहे।

खुफिया विभाग के आदमी ने जान-बूझ कर और भी कठोरता से कहा, 'इनको देखो, इन्होंने लेकर सारा मामला गड़बड़ कर दिया और अब मुझे इन लोगों को एरिया हेडक्वार्टर भेजना होगा।'

तब ग्रिशुत्का बोल उठा।

'मगर कामरेड सखारोव,' उसने आवेशपूर्ण स्वर में कहा, 'हमने कौन सा जुर्म किया है? हम लोग बहुत दिनों से उनों बदमाशों की टोह में थे। हम तो सोवियत अधिकारियों की मदद करना चाहते थे और आप हैं कि हमें लेकर यहाँ बंद कर दिया, जैसे हम कोई डाकू हों!' यह कहते हुए वह इस तरह दूसरी ओर मुँह फेरकर खड़ा हो गया कि जैसे उसके साथ बड़ा अन्याय हुआ हो।

कोर्चागिन और सखारोव में गंभीर परामर्श हुआ, मगर यह मामला ऐसा था कि उन्हें कई बार अपनी गंभीरता बनाये रखने में मुश्किल हुई। आखिर-कार, सलाह-मशविरे के बाद उन्होंने फैसला किया कि बहुत हो गया, लड़कों को काफी तम्बीह हो गयी, अब काफी डर गये होंगे।

सखारोव ने पावेल से कहा, 'अगर तुम उनकी गारंटी लो और वादा करो कि अब वे फिर कभी चहलकदमी करते हुए सरहद पर न जा निकलेंगे, तो मैं उन्हें छोड़ दूंगा। अगर वे मदद करना ही चाहते हैं, तो उसके दूसरे तरीके हैं।'

'बहुत अच्छा, मैं उनकी गारंटी लेता हूँ। मुझे उम्मीद है कि वे मुझे लज्जित होने का मौका न देंगे।'

कोमसोमोल के वे लड़के गाते हुए पोदुब्सी वापस आये। मामला दबा दिया गया। और कुछ ही दिन बाद वह मिल-वाला पकड़ लिया गया। इस बार कानून ने उसको पकड़ा था।

जर्मन क्रान्ति की खबरें, हाम्बुर्ग के बैरीकेडों के राइफलों की हलकी गूंजें, इस सरहदी इलाके में भी पहुँचीं। वातावरण में बड़ा तनाव था। लोग बड़ी आतुर आशा से अखबार पढ़ते थे। क्रान्ति की हवा पश्चिम से आ रही थी। कोमसोमोल जिला कमेटी में नौजवान कम्युनिस्टों की अर्जियों पर अर्जियाँ आ रही थीं कि वे लाल फौज में भर्ती होना चाहते हैं। कोर्चागिन उन लोगों को समझाने में व्यस्त था कि सोवियत देश शान्ति की नीति का अनुसरण कर रहा है और उसका कोई इरादा अपने पड़ोसियों से लड़ने का नहीं है। मगर इसका कोई खास असर नहीं पड़ा। हर इतवार को सारे जिले के कोमसोमोल सदस्य पादरी के मकान के बड़े बागीचे में मीटिंग करते थे और एक रोज दोपहर को पोदुब्सी का सेल बाकायदा मार्च करता हुआ जिला कमेटी के हाते में आया। कोर्चागिन ने उन्हें खिड़की में से देखा और बाहर सायबान में निकल आया। वे ग्यारह लड़के थे और खोरोवोदको सबसे आगे-आगे था। सब बड़े-बड़े फौजी बूट पहने हुए थे और सबके कंधों पर बड़े-बड़े किरमिच के किटबैग थे। वे आकर दरवाजे पर रुके।

कोर्चागिन ने आश्चर्य से पूछा, 'यह क्या है ग्रिशा ?'

खोरोवोदको ने जवाब देने के बदले पावेल को आँख का इशारा किया और उसके साथ मकान के अन्दर चला गया। लिदा, राजवालिखिन तथा दो और कोमसोमोल के सदस्य खोरोवोदको के पास घिर आये और उससे पूछने लगे कि यह क्या मामला है। खोरोवोदको ने दरवाजा बन्द कर दिया और

अपनी भवों में झुर्री डालते हुए बोला :

'साथियो, यह एक तरह का टेस्ट मोबिलाइजेशन है। यह मेरी ही सूझ है। आज सबेरे मैंने लड़कों को बतलाया कि जिला केन्द्र से एक बहुत खुफिया तार आया है कि जर्मन पूंजीशाहों से हमारी लड़ाई ठननेवाली है और जल्दी ही पोलिश जागीरदारों से भी हमें लड़ना होगा। मैंने उनको बतलाया कि मास्को से हमको आदेश मिला है कि तमाम नौजवान कम्युनिस्टों को मोर्चे के लिए जमा करो। जिस किसी को भी डर लगता हो, वह अर्जी दे सकता है और उसे घर पर रहने की इजाजत मिल जायगी। मैंने उन्हें कहा कि किसी से लड़ाई के बारे में एक शब्द भी न कहें, बस एक डबल रोटी और थोड़ा सा गोश्त लेकर आ जायँ और जिनके पास गोश्त न हो, वे लहसुन-प्याज भी ला सकते हैं। हम लोग गाँव के बाहर गुप्त रूप से मिलनेवाले थे और फिर वहाँ से जिला केन्द्र में जाने का हमारा इरादा था और फिर जिला केन्द्र से एरिया केन्द्र में जहाँ हथियार मिलने की बात थी। तुम देखते कि लड़कों पर इस चीज का कैसा गहरा असर पड़ा था! उन्होंने मुझसे बात उगलवाने की बहुत कोशिश की, मगर मैंने उनसे कहा कि चटपट तैयारी करने में लग जाओ और फिजूल के सवालात में मत पड़ो। वे लोग जो मोर्चे पर न जाना चाहते हों, बतला दें। हमें सिर्फ स्वयंसेवकों की जरूरत है। खैर इसके बाद मेरे लड़के चले गये और मैं परेशान होने लगा। मान लो उनमें से कोई न लौटा? अगर ऐसा हुआ तो मैं पूरी सेल को तोड़ दूँगा और किसी दूसरी जगह चला जाऊँगा। मैं गाँव के बाहर धड़कते हुए दिल से उनका इंतजार करता बैठा रहा। थोड़ी देर बाद, एक के बाद एक उनका आना शुरू हुआ। उनमें से कुछ रोये थे, उनके चेहरे से यह बात साफ थी गोकि वे छिपाने की कोशिश कर रहे थे। दस के दसों आ गये, हमारे बीच एक भी भगोड़ा नहीं था। ऐसा है हमारा पोदुब्सी सेल!' उसने विजयोल्लास के स्वर में अपनी बात खतम की।

उसकी बात से लिदा पोलेविख को झटका सा लगा और जब उसने खोरोवोदको को डाँटना शुरू किया तो वह उसकी ओर आश्चर्य से देखने लगा।

'तुम्हारी बात मेरी समझ में नहीं आयी। मेरी समझ में तो यह उनकी परीक्षा का सबसे अच्छा तरीका है। इस तरह हर आदमी को एकदम आरपार देखा जा सकता है। यहाँ पर किसी धोखे-धड़ी की गुंजाइश नहीं है। मैं नाटक को पूरा करने के लिए उन्हें सीधे एरिया सेंटर तक घसीट ले जाना चाहता था, लेकिन वे बुरी तरह थक गये हैं। कोर्चागिन, तुम्हें उनके सामने छोटी सी तकरीर करनी होगी। करोगे न? तकरीर के बिना बात कुछ बनेगी नहीं। उनसे बतला देना कि भरती बंद हो गयी है या इसी किस्म की कोई बात, मगर उससे क्या, हमें अपने जवानों पर गर्व है।'

इस साल सरहद पर अक्टूबर क्रांति की साल-गिरह और सालों से भी ज्यादा उत्साह से मनायी गयी। सरहद के गाँवों में इस उत्सव का संगठन करने के लिए जो कमेटी बनायी गयी थी, उसका चेयरमैन कोर्चागिन को चुना गया। पोदुब्सी की मीटिंग के बाद आसपास के तीन गाँवों के पाँच हजार किसान आधा मील लम्बा जुलूस बनाकर, बड़े-बड़े लाल झण्डे लिये और फौजी बैण्ड और ट्रेनिंग बटालियन को आगे किये सीमांत की तरफ बढ़े। सोवियत सीमा में वे लोग बाकायदा मार्च कर रहे थे। वे सरहदी चौकी के बराबर-बराबर चले जा रहे थे और उन गाँवों की तरफ बढ़ रहे थे जिन्हें विभाजन-रेखा ने दो टुकड़ों में बाँट दिया था। इसके पहले पोलों ने अपनी सीमा पर ऐसे लोगों को नहीं देखा था। बटालियन कमांडर गाव्रिलोव और कोर्चागिन अपने घोड़ों पर सवार जलूस के आगे-आगे चल रहे थे और उनके पीछे बैण्ड बज रहा था, झण्डे हवा में फरफरा रहे थे और लोगों के गाने की आवाज दूर-दूर तक गूँज रही थी। किसान नौजवान अपने बेहतरीन कपड़े पहने हुए थे और बड़े जोश में थे। गाँव की लड़कियाँ खूब मगन थीं और हँस रही थीं। प्रौढ़ लोग गंभीरतापूर्वक मार्च कर रहे थे और बुड्ढों के चेहरों पर विजय के उल्लास का शांत भाव था। जहाँ तक दिखायी देता था, यह मानव समुद्र फैला हुआ था। इसका एक किनारा सरहद पर था, मगर किसी ने उस निषिद्ध रेखा के उस पार कदम भी नहीं रखा। कोर्चागिन ने आदमियों के इस समुद्र को गुजरते देखा।

सोवियत संतरियों ने अपनी संतुष्ट मुस्कराहट से इस जुलूस का स्वागत किया। पोलिश संतरी हैरान खड़े देख रहे थे। इस प्रदर्शन से सरहद की दूसरी तरफ काफी खलबली मची, बावजूद इसके कि पोलिश कमांड को पहले से ही इस चीज के बारे में पता था। घोड़े पर सवार सिपाही गश्त करते हुए बेचैनी से ऊपर-नीचे और आगे-पीछे आ-जा रहे थे। सरहदी संतरियों की संख्या पंचगुनी कर दी गयी थी और पहाड़ियों के पीछे रिजर्व फौज को भी रखा गया था जो जरूरत के वक्त तत्काल बुलायी जा सकती थी। मगर जलूस अपने ही हिस्से में घूमता हुआ मस्ती से मार्च कर रहा था और हवा उसके गाने से भरी हुई थी।

एक पोलिश संतरी एक टीले पर खड़ा था। जलूस नपी-तुली चाल से करीब आता जा रहा था। मार्च करने के समय का एक गीत शुरू हुआ। उस पोल ने फुर्ती से अपनी राइफल नीचे कर ली और सलामी दी और कोर्चागिन ने उसके शब्द स्पष्ट सुने : 'मजदूरों का राज जिंदाबाद !'

उस सैनिक की आँखों से पावेल को मालूम हो गया कि उसी के मुँह से ये शब्द निकले थे। पावेल मुग्ध होकर अपलक उसे देखता रहा।

एक दोस्त ! सिपाही की वर्दी के भीतर जो दिल धड़क रहा है, उसे प्रदर्शनकारियों से सहानुभूति है। पावेल ने धीरे से पोलिश में जवाब दिया :

'बधाई कामरेड !'

संतरी उसी मुद्रा में खड़ा रहा और प्रदर्शनकारी गुजर गये। पावेल उस छोटी सी काली आकृति को देखने के लिए कई बार पीछे मुड़ा। यह एक और पोल था। उसकी गलमुच्छें पकने लगी थीं और उसकी टोपी के चमकदार छज्जे के नीचे उसकी आँखें एकदम भावशून्य थीं। पावेल ने अभी थोड़ी देर पहले जो बात सुनी थी, उसका संस्कार अब भी उसके मन पर था, इसलिए उसने जैसे अपने आप से बुदबुदाकर पोलिश जबान में कहा :

'वधाई, कामरेड !'

मगर कोई जवाब न मिला।

गाव्रिलोव मुस्कराया। जो कुछ बातें हुई थीं उसने सुन लिया था।

उसने कहा, 'तुम जरूरत से ज्यादा उम्मीद करते हो। वे सब के सब सीधे-सादे सिपाही नहीं हैं। उनमें से कुछ ऊँचे पद के सैनिक भी हैं। तुमने उसकी आस्तीन पर वह चिह्न नहीं देखा ? निश्चय ही वह फौजी पुलिस का आदमी है।'

जलूस का अगला हिस्सा पहाड़ी के नीचे उतरने लगा था और एक गाँव की तरफ बढ़ रहा था जिसे सरहद ने दो हिस्सों में बाँट दिया था। गाँव का सोवियत वाला आधा हिस्सा मेहमानों के स्वागत की जबर्दस्त तैयारी कर रहा था। गाँव के सारे रहनेवाले नदी के किनारे सरहद के पुल पर खड़े इंतजार कर रहे थे। सड़क के दोनों तरफ नौजवान खड़े थे। गाँव के पोलिश हिस्से के घरों और शेडों की छतों पर लोग भरे हुए थे। वे नदी के इस पार की कार-वाइयों को बड़ी गहरी और सतर्क दिलचस्पी से देख रहे थे। घरों के सायबानों में और बागीचों की बाड़ियों पर किसानों की भीड़ थी। आदमियों के उस गलियारे में दाखिल होने पर जलूस ने 'इंटरनेशनल' गान की तान छेड़ी। उसके बाद एक मंच पर से, जिसे हरी-हरी पत्तियों से सजाया गया था, खूब जोरदार तकरीरें हुई। नौजवानों और सफेद बालवाले बुड्ढे क्रांतिकारियों ने भाषण दिये। कोर्चागिन ने भी अपनी मातृभाषा उक्रेनी में भाषण दिया। उसके शब्द उड़ते हुए सरहद के उस पार पहुँचे और नदी पार के लोगों ने उनको सुना। फौजी पुलिस के आदमियों ने वहाँ पर जमा देहातियों को भगाना शुरू कर दिया क्योंकि उन्हें डर था कि वे शब्द उन सुननेवालों के दिलों में भी आग लगा देंगे। गोलियाँ हवा में छोड़ी जाने लगीं।

सड़कें खाली हो गयीं। नौजवान फौजी पुलिस की गोलियों से डरकर छतों पर से हट गये। सोवियत सरहद के लोग इन चीजों को देखते रहे और उनके चेहरे गंभीर हो गये। जो कुछ अभी देखा था, उससे अत्यन्त क्रुद्ध होकर एक बुड्ढा गड़ेरिया गाँव के कुछ लड़कों की मदद से मंच पर चढ़ आया और उत्तेजित होकर भाषण देने लगा।

'तुमने देखा मेरे बच्चो! यही सलूक कभी हमारे साथ भी होता था। मगर अब किसान हमारे यहाँ गाँव का राजा है और अब कहीं नगाइका नहीं है। जागीरदारों, ताल्लुकेदारों का राज खतम हो गया है और हमारी पीठ पर अब उनके कोड़े नहीं पड़ते। बच्चो, यह तुम्हारा काम है कि तुम अब फिर कभी उन जागीरदारों और थैलीशाहों को लौटने न दो। मैं बुड्ढा आदमी हूँ और मुझे भाषण-वाषण देना नहीं आता। लेकिन अगर मैं बोल सकता, तो मेरे पास कहने को बहुत कुछ है। जारशाही में हम लोग सारी जिंदगी बैलों की तरह काम करते थे और भूख और बदहाली में रहते थे ... उन बेचारों की ही तरह!' कहते हुए उसने अपने दुबले-पतले हाथ से नदी के उस पार इशारा किया और फूट-फूटकर रोने लगा जैसे बच्चे और बुड्ढे ही रो सकते हैं।

उसके बाद ग्रिशुत्का खोरोवोदको बोला। उसकी गुस्से से भरी हुई तकरीर को सुनते हुए गान्निलोव ने अपना घोड़ा मोड़ा और नदी के दूसरे किनारे पर यह देखने के लिए निगाह डाली कि कोई इन तकरीरों का नोट ले रहा है या नहीं। मगर नदी का किनारा वीरान था। पुल पर तैनात संतरी भी हटा लिया गया था।

पतझड़ के आखिरी दिनों में एक बरसाती रात को आन्तोन्युक और उसके सात आदमियों की मारकाट की कहानी आखिरकार खतम हो गयी। वह लुटेरा मैदान-विला की जर्मन बस्ती में एक धनी किसान के घर एक शादी के मौके पर पकड़ा गया। खोलिन्स्की कम्यून के किसानों ने उसको पकड़ा था।

गाँव की औरतों ने शादी में आये हुए इन मेहमानों के बारे में खबर दी और बाहर कोमसोमोल फौरन इकट्ठा हो गये और जो भी हथियार मिले, उनसे लैस होकर गाड़ी पर चढ़कर मैदान-विला के लिए रवाना हुए और एक आदमी को खबर लेकर बेरेजदोव भेज दिया। सेमाकी में संयोग से उस खबर ले जानेवाले आदमी की मुलाकात फिलातोव की टुकड़ी से हो गयी जो खबर मिलते ही लुटेरों को पकड़ने के लिए चल दी। खोलिन्स्की के आदमियों ने फार्म को घेर लिया और उनमें और आन्तोन्युक के गिरोह के लोगों में राइफिलें चलने लगीं। आन्तोन्युक के गिरोह वाले मकान के एक हिस्से में किलेबन्दी

करके बैठ गये और जो भी उनकी राइफिल की मार में आता, उस पर फौरन गोली चलाते। उन्होंने एक बार भाग निकलने की भी कोशिश की। मगर उन्हें मारकर फिर उस इमारत के अंदर घुसने पर मजबूर कर दिया गया। इस कोशिश में उनका एक आदमी मारा गया। आन्तोन्युक ऐसी अनेक कठिन घड़ियों से गुजर चुका था और अपने दस्ती बमों और अंधेरे की मदद से लड़कर अपना रास्ता बनाने में कामयाब हुआ था। इस बार भी वह भाग गया होता, क्योंकि खोलिन्स्की के नौजवान कम्युनिस्टों के दो आदमी मारे जा चुके थे। मगर संयोग से उसी वक्त फिलातोव मौके पर पहुँच गया। आन्तोन्युक ने समझ लिया कि उसका खेल अब खतम हो गया। सवेरे तक वह तमाम खिड़कियों में से गोलियाँ चलाता ही रहा, मगर भोर होते-होते उसे पकड़ लिया गया। उन सातों में से एक ने भी आत्म-समर्पण नहीं किया। इन लुटेरों का सफाया करने में चार जानें गयीं। उनमें से तीन हाल ही में संगठित खोलिन्स्की के कोमसोमोल दल के लड़के थे।

कोर्चागिन की बटालियन को इलाकाई फौजों की पतझड़ के दिनों की फौजी कार्रवाइयों के लिए बुला लिया गया। बटालियन मूसलाधार बारिश में एक ही दिन में तीस मील मार्च करके डिवीजनल कैम्प पर पहुँची। वे सवेरे रवाना हुए और बहुत रात गये अपनी मंजिल पर पहुँचे। बटालियन कमांडर गुसेव और उसका कमिसार दोनों घोड़ों पर सवार थे। बटालियन के आठ सौ ट्रेनिंग पानेवाले जब बारक में पहुँचे तो थककर चूर हो रहे थे और वे फौरन सो गये। दाँव-पेंच की कार्रवाइयाँ अगले रोज सुबह शुरू होनेवाली थीं; टेरीटोरियल डिवीजन के हेडक्वार्टर ने बटालियन को बुलाने में देर कर दी थी। बटालियन के लोग जब अपनी वर्दियाँ पहने और राइफिलें लिये मुआइने के लिए कतार में खड़े हुए, तो उनकी शकल एकदम बदली हुई थी। इन नौजवानों को फौजी ट्रेनिंग देने में गुसेव और कोर्चागिन ने बहुत समय और शक्ति लगायी थी और उन्हें इस बात का पूरा विश्वास था कि उनकी यूनिट इम्तहान में पास हो जायगी। जब सरकारी मुआइना खतम हो गया और बटालियन ने ड्रिल के मैदान में अपनी योग्यता भी दिखला दी, तब एक कमांडर ने, जो खूबसूरत मगर थुलथुल आदमी था, कोर्चागिन की तरफ मुड़कर तेज स्वर में जवाब तलब किया :

'तुम घोड़े पर क्यों सवार हो ? हमारी ट्रेनिंग बटालियनों के कमांडरों और कमिसारों को घोड़े पर सवार होने का हक नहीं। अपने घोड़े को अस्तबल में रख दो और पैदल आकर इन कार्रवाइयों में शरीक होओ।'

कोर्चागिन जानता था कि अगर वह घोड़े से उतर पड़ा तो परेड में हिस्सा न ले सकेगा क्योंकि उसकी टाँगों में एक कदम भी चलने की ताकत न थी। मगर वह अपनी बात कैसे इस बढ़-बढ़कर बात करनेवाले छैले को समझाये जो इतने ठाठबाट से अपने फीते-वीते लगाये हुए है !

'मैं पैदल परेड में हिस्सा न ले सकूँगा।'

'क्यों ?'

यह समझकर कि उसे कोई न कोई जवाब देना ही होगा, कोर्चागिन ने धीरे से कहा :

'मेरी टाँगें सूजी हुई हैं और मैं एक हफ्ते तक इस दौड़ने-भागने को बर्दाश्त नहीं कर सकूँगा। मगर यह तो बतलाओ कामरेड कि तुम कौन हो ?'

'पहली बात तो यह कि मैं तुम्हारी रेजिमेंट का चीफ आफ स्टाफ हूँ, और दूसरी बात यह कि मैं एक बार फिर तुमको घोड़े पर से उतरने का हुक्म देता हूँ। अगर तुम बीमार हो, तो तुम्हें फौज में नहीं होना चाहिए।'

पावेल को ऐसा महसूस हुआ जैसे किसी ने उसके मुँह पर चाबुक मार दिया। उसने जोर से लगाम को अपनी तरफ खींचा और जैसे उतरने को हुआ, मगर गुसेव के मजबूत हाथ ने उसे रोक दिया। कुछ देर तक पावेल के मन में आहत स्वाभिमान और आत्मसंयम के बीच द्वन्द्व हुआ। मगर पावेल कोर्चागिन अब मामूली लाल सैनिक न था जो बहुत आसानी से इस यूनिट से उस यूनिट तक जा सकता था। अब वह बटालियन कमिसार था और उसके पीछे उसकी बटालियन खड़ी थी। अगर वही हुक्म न माने, तो अपने आदमियों के सामने अनुशासन की दृष्टि से वह कैसा बुरा उदाहरण रखेगा ! इस घमंडी गधे के लिए तो उसने अपनी बटालियन को तैयार किया नहीं था। उसने रकाब में से अपने पैर निकाले, घोड़े से उतर पड़ा और घुटनों के भयानक दर्द से लड़ता हुआ दाहिनी तरफ चला गया।

कई दिन तक मौसम बहुत ही अच्छा रहा। परेड और दूसरी फौजी कार्रवाइयाँ अब खतम होने आ रही थीं। पाँचवें रोज सैनिक शेपेतोवका के करीब थे और यहीं ये कार्रवाइयाँ खतम होनेवाली थीं। बेरेजदोव की बटालियन को क्लिमेन्तोविची गाँव की तरफ से स्टेशन पर कब्जा करने का काम दिया गया था।

कोर्चागिन ने, जो अब अपने घर की जमीन पर था, स्टेशन पर पहुँचने के सभी रास्ते गुसेव को दिखला दिये। बटालियन दो हिस्सों में बँट गयी और एक लम्बा घेरा लेते हुए दुश्मन की पिछली पाँतों में जा निकली और खुशी से जोर-

जोर से चिल्लाते हुए स्टेशन की इमारत में घुस गयी। इस काम की बड़ी प्रशंसा हुई। बेरेजदोव के लोगों का कब्जा स्टेशन पर कायम रहा और जिस बटालियन ने स्टेशन की रक्षा की थी, वह जंगल में चली गयी और फैसला करनेवालों ने यह फैसला किया कि उन्होंने अपने आधे आदमी गंवा दिये थे।

कोर्चागिन बटालियन के आधे हिस्से का कमांडर था। उसने अपने आदमियों को मैदान में फैल जाने का हुक्म दे दिया था और कमांडर और तीसरी कम्पनी के राजनीतिक शिक्षक के साथ सड़क के बीच में खड़ा था, जब कि एक लाल सैनिक उसके पास दौड़ता हुआ आया।

उसने हाँफते हुए कहा, 'कामरेड कमिसार, बटालियन कमांडर जानना चाहते हैं कि क्या तोपची रेलवे क्रॉसिंगों का बचाव करेंगे। कमीशन के लोग इधर ही आ रहे हैं।'

पावेल और उसके साथ के कमांडर एक क्रॉसिंग पर गये। रेजिमेंटल कमांडर और उसके सहायक वहाँ पर थे। गुसेव को इस कामयाब फौजी कार्रवाई के लिए बधाई दी गयी। हारी हुई बटालियन के प्रतिनिधि खिसियाये से खड़े थे और उन्होंने अपनी सफाई में भी कुछ नहीं कहा।

गुसेव ने कहा, 'इस चीज का श्रेय मैं नहीं ले सकता। कोर्चागिन ने ही हमको रास्ता दिखलाया था। वह यहीं का आदमी है।'

चीफ आफ स्टाफ घोड़े पर सवार होकर पावेल के पास आया और व्यंग के स्वर में बोला, 'तो तुम अच्छा-खासा दौड़ लेते हो, कामरेड। घोड़ा जो तुमने ले रखा था, वह केवल रोब जमाने के लिए, क्यों?' वह और कुछ कहने जा रहा था, मगर कोर्चागिन के चेहरे के भाव को देखकर रुक गया।

जब बड़े कमांडर चले गये तो कोर्चागिन ने गुसेव से पूछा, 'तुम्हें इस आदमी का नाम तो नहीं मालूम?'

गुसेव ने उसके कंधे पर हाथ मारा।

'अरे छोड़ो भी, क्यों फिजूल उस छिछोरे के पीछे अपना दिमाग खराब करते हो। उसका नाम चुजानिन है। पहले वह शायद अलमबरदार था।'

उस रोज पावेल ने कई बार अपने दिमाग पर जोर डालकर यह याद करने की कोशिश की कि यह नाम उसने पहले कहाँ सुना था, मगर उसे याद नहीं आया।

दाँव-पेंच की कार्रवाइयाँ खतम हो गयी थीं। बटालियन बहुत प्रशंसित होकर बेरेजदोव लौट गयी। कोर्चागिन अपनी माँ से मिलने के लिए एक-दो दिन के लिए रुक गया। उसकी माँ के दिन बड़ी मुश्किल से कट रहे थे। दो

रोज तक वह बारह-बारह घंटे सोया और तीसरे रोज आर्तेम से मिलने के लिए यार्ड में गया। इस धूल से अटे हुए, धुएँ से काले घर में पावेल को बड़ा अच्छा मालूम हुआ। उसने भूखे आदमी की तरह कोयले के धुएँ को अपने फेफड़ों में भरा। यही उसकी असली जगह थी और यहीं पर वह रहना चाहता था। उसको लगा कि जैसे उसकी कोई बहुत ही प्यारी चीज खो गयी हो। इंजन की सीटी सुने महीनों हो गये थे और पहले के इस फायरमैन और बिजलीवाले के मन में अपने परिचित परिवेश के लिए वैसी ही प्यास थी जैसी किसी मल्लाह के दिल में बहुत दिनों तक समुद्र के किनारे पर रहने के बाद समुद्र के असीम विस्तार के लिए होती है। इस भावना पर विजय पाने में उसे काफी समय लगा। वह अपने भाई से ज्यादा नहीं बोला। उसका भाई अब लुहारखाने में काम करता था। आर्तेम के माथे पर उसने नयी झुर्रियाँ देखीं। अब वह दो बच्चों का बाप था। साफ जाहिर था कि आर्तेम की जिंदगी आराम की जिंदगी न थी। उसने कोई शिकायत नहीं की, मगर पावेल खुद इस बात को समझ गया।

दोनों ने संग-संग एक-दो घंटे काम किया और फिर अलग हो गये।

रेलवे क्रॉसिंग पर पावेल ने अपने घोड़े की लगाम खींची और रुका और बड़ी देर तक स्टेशन को देखता रहा। फिर उसने घोड़े को चाबुक लगाया और जंगल में होता हुआ सरपट सड़क पर निकल गया।

जंगल की सड़कें अब काफी सुरक्षित थीं। बोल्शेविकों ने सभी छोटे-बड़े लुटेरों का सफाया कर दिया था और उस इलाके के गाँव अब शांति से जिंदगी बसर करते थे।

दोपहर होते-होते पावेल वेरेजदोव पहुँचा। लिदा पोलेविख उसके स्वागत के लिए दौड़कर जिला कमेटी के सायबान में निकल आयी।

उसने बड़ी प्यार-भरी मुस्कराहट के साथ कहा, 'स्वागत, घर लौटने पर! तुम्हारे बिना यहाँ बहुत बुरा लगता था!' उसने पावेल को अपनी बाँहों में ले लिया और फिर दोनों कमरे में चले गये।

उसने लिदा ने कहा, 'मुझे बतलाओ, यहाँ की अच्छी-अच्छी खबरें क्या हैं। तुम क्रूसेव्का गयी थीं? वहाँ लड़कों का क्या हाल है?'

लिदा जब उसको सारी खबरें दे रही थी, उस वक्त पावेल अपने थके हुए शरीर को आराम देने के लिए कोच पर लेटा हुआ था।

'परसों राकीतिना को पार्टी का उम्मीदवार सदस्य बना लिया गया। इससे हमारा पोदुब्सी सेल बहुत मजबूत हो जायगा। राकीतिना अच्छी लड़की है, मैं उसे बहुत पसन्द करती हूँ। यहाँ की उस्तानियाँ अब हमारे साथ आने लगी हैं, उनमें से कुछ तो आ भी चुकी हैं।'

कोर्चागिन और पार्टी की जिला कमेटी का नया मंत्री लिचीकोव, यह दोनों अक्सर शाम को लिसित्सिन के घर पर मिलते थे और फिर तीनों उस बड़ी मेज पर बैठे बड़ी रात तक पढ़ते रहते थे।

जिस कमरे में लिसित्सिन की बीवी और बहन सोती थीं, उसका दरवाजा कसकर बंद कर दिया जाता और फिर तीनों किसी छोटी सी किताब पर झुके हुए धीमे-धीमे आपस में बात करते। लिसित्सिन को पढ़ने का वक्त सिर्फ रात को मिलता था। तब भी जब कभी पावेल अपनी अक्सर होनेवाली गाँव की यात्राओं से लौटता, तो उसे यह देखकर बड़ी खीझ होती कि उसके साथी बहुत आगे निकल गये हैं।

एक दिन पोदुब्सी के संदेशवाहक ने यह खबर दी कि न जाने किन लोगों ने पिछली रात को ग्रिशुत्का खोरोवोदको की हत्या कर दी थी। पावेल फौरन भागा-भागा कार्यकारिणी समिति के अस्तबल में गया और अपनी टाँगों के दर्द को भूलकर पागल आदमी की तरह जल्दी-जल्दी एक घोड़े की जीन कसी और उस पर सवार होकर सरपट सरहद की तरफ चल दिया।

ग्रिशुत्का गाँव की सोवियत के मकान में सनोबर की शाखों से ढँका एक मेज पर पड़ा था और सोवियत का लाल झंडा उस पर पड़ा हुआ था। एक सरहदी संतरी और एक कोमसोमोल दरवाजे पर खड़े पहरा दे रहे थे और जब तक कि अधिकारी नहीं आ गये, वे किसी को अंदर नहीं जाने देते थे। कोर्चागिन मकान के अंदर दाखिल हुआ, मेज के पास गया और झण्डे को उलट दिया।

ग्रिशुत्का का चेहरा मोम की तरह पीला था और उसकी आँखें फैली हुई थीं जैसी मौत की यंत्रणा में हो गयी होंगी, और उसका सिर एक तरफ को लुढ़का हुआ था। सनोबर की एक टहनी सिर के पिछले हिस्से में उस जगह को ढँके हुए थी, जिसे किसी तेज हथियार ने काट दिया था।

इस नौजवान की जान किसने ली? विधवा खोरोवोदको के इस इकलौते बेटे की? उस विधवा के बेटे की जिसका पति मिल का मजदूर था और बाद में गरीब किसानों की कमेटी का मेम्बर हो गया था और जिसने क्रांति के लिए लड़ते हुए जान दी थी?

अपने बेटे की मृत्यु से बुढ़िया को जो आघात लगा, उससे उसने बिस्तर पकड़ लिया। अभागी माँ को पड़ोसी सांत्वना देने की कोशिश कर रहे थे।

और उसका बेटा सर्द और बेजान पड़ा था, अपनी असामयिक मृत्यु के रहस्य को छिपाये हुए।

ग्रिशुत्का के कत्ल से गाँव के सारे लोगों में गुस्सा छा गया। कोमसोमोलों के इस नौजवान नेता और गरीब किसानों के हिमायती के गाँव में दुश्मनों से कहीं ज्यादा दोस्त निकले।

राकीतिना को इस खबर से बड़ी सख्त चोट लगी और वह अपने कमरे में बैठी फफक-फफककर रोती रही। कोर्चागिन कमरे में आया तो उसने आँख उठाकर भी नहीं देखा।

'राकीतिना, तुम्हारा क्या खयाल है, किसने यह हत्या की?' कोर्चागिन ने थकान से बेदम होकर कुर्सी पर बैठते हुए भर्रायी हुई आवाज में पूछा।

'यह वही मिल वाले बदमाश होंगे, वही जो चोरी से माल लाते-ले-जाते हैं। ग्रिशा उनके पहलू का काँटा था।'

दो गाँव के लोग ग्रिशा खोरोवोदको के जनाजे में शरीक हुए। कोर्चागिन अपनी बटालियन को ले आया और कोमसोमोल के सभी लोग अपने साथी को अंतिम श्रद्धांजलि देने के लिए इकट्ठा हुए। गाव्रिलोव ने गाँव सोवियत के सामनेवाले चौक में ढाई सौ सरहदी संतरियों की एक कंपनी को जमा किया। जनाज़े की मातमी धुनों के बीच लाल झण्डे में लिपटा हुआ ताबूत बाहर लाया गया और चौक में रखा गया। वहाँ गृहयुद्ध में जान देनेवाले बोल्शेविक छापे-मारों की कब्रों के पास एक नयी कब्र खोदी गयी।

ग्रिशुत्का की मौत ने उन सभी लोगों को एकता की डोर में बाँध दिया जिनके हितों के लिए वह बराबर उद्योग करता रहा था। नौजवान खेतिहर मजदूरों और गरीब किसानों ने कोमसोमोल की मदद करने की शपथ ली और उस मौके पर जितने लोग बोले, उन सबने गुस्से के साथ इस बात की माँग की कि खूनियों का पता लगाया जाय और यहीं इस चौक में, इस कब्र के पास ही उन पर मुकदमा चलाया जाय ताकि हर कोई देख सके कि वे दुश्मन कौन हैं जिन्होंने यह खून किया।

राइफिलें तीन बार गरजीं और सनोबर की ताजी टहनियाँ कब्र पर रखी गयीं। उसी शाम को सेल ने राकीतिना को अपना नया मंत्री चुना। खुफिया की सरहदी चौकी से कोर्चागिन के पास खबर आयी कि वे लोग खूनियों का पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं।

एक हफ्ते बाद जब कस्बे के थियेटर हॉल में जिले की सोवियत का दूसरा सम्मेलन शुरू हुआ, तो लिसित्सिन ने गंभीर उल्लास के स्वर में घोषणा की:

'साथियो, मुझे इस सम्मेलन को यह खबर देते हुए बड़ी खुशी हो रही है कि पिछले एक साल में हमने बहुत सफलताएँ प्राप्त की हैं। इस जिले में सोवियत सत्ता मजबूती से कायम हो गयी है, लुटेरों का सफाया कर दिया गया है और चोरी से माल लाने-ले-जाने के व्यापार का भी लगभग खातमा कर दिया गया है। गाँवों में गरीब किसानों के मजबूत संगठन पैदा हो गये हैं, कोमसोमोल के संगठन पहले से दस गुना ज्यादा मजबूत हैं और पार्टी के संगठनों में भी विस्तार आया है। पोदुब्सी के कुलकों की उस आखिरी काली करतूत का भी पर्दाफाश कर दिया गया है जिसने हमारे कामरेड खोरोवोदको की जान ली। खूनी पकड़ लिये गये हैं। मिलवाले और उसके दामाद ने यह खून किया। कुछ ही दिनों में सूबे की अदालत में उन पर मुकदमा चलेगा। गाँवों के कई प्रतिनिधि मंडलों ने माँग की है कि यह सम्मेलन प्रस्ताव पास करे कि इन लुटेरों और खूनियों को मौत की सजा दी जाय।'

इस बात के समर्थन में एक तूफान सा उठा जिससे हॉल हिल उठा।

'जरूर-जरूर ! सोवियत सत्ता के दुश्मनों को मौत की सजा दी जाय !'

लिदा पोलेविख पीछे के एक दरवाजे पर दिखायी दी। उसने इशारे से पावेल को बुलाया।

बाहर गलियारे में पहुँचकर उसने पावेल को एक लिफाफा दिया जिस पर 'बहुत जरूरी' लिखा हुआ था। पावेल ने लिफाफा खोला और पढ़ा :

'कोमसोमोल की बेरेजदोव जिला कमेटी के नाम। नकल पार्टी की जिला कमेटी को। सूबा कमेटी के फैसले के अनुसार कामरेड कोर्चागिन को जिले से सूबा कमेटी में कोमसोमोल के जिम्मेदार काम के लिए बुलाया जाता है।'

पावेल ने इस जिले से छुट्टी ली जहाँ उसने पिछले साल भर काम किया था। उसके जाने के ठीक पहले पार्टी की जिला कमेटी की जो आखिरी मीटिंग हुई उसके सामने एजेंडे में ये दो खास बातें थीं : १) कामरेड कोर्चागिन को कम्युनिस्ट पार्टी की मेम्बरी देना; २) कोमसोमोल की जिला कमेटी के मंत्री पद से पावेल को मुक्त करते हुए उसके सर्टिफिकेट की तसदीक करना।

विदा होते समय लिसित्सिन और लिदा ने जोर से पावेल से हाथ मिलाया और प्यार से उसे गले लगाया और जब उसका घोड़ा हाते में से निकलकर सड़क पर पहुँचा तो एक दर्जन रिवाल्वरों ने उसको विदा की सलामी दी।

चौदह

बड़ी सख्त और बेदर्द सर्दी से सन् १९२४ की शुरुआत हुई। जनवरी का बर्फानी पंजा बर्फ से ढंकी धरती पर जमा हुआ था और महीने के दूसरे पखवारे में आँधी और तूफान का जबर्दस्त जोर था।

दक्षिण-पश्चिमी रेलवे लाइनें बर्फ से ढंकी हुई थीं। आदमी पगलायी हुई प्राकृतिक शक्तियों से लड़ रहे थे। बर्फ की सफाई करनेवाले फावड़े बर्फ को काट-काटकर रेलगाड़ियों के लिए रास्ता बना रहे थे। टेलीग्राफ के तार बर्फ के बोझ से आँधी और तूफान के कारण टूटे जा रहे थे और बारह लाइनों में से कुल तीन काम कर रही थीं — एक इंडो-योरोपियन और दो सरकारी लाइनें।

शेपेतोवका स्टेशन के तारघर में तीन आले अनवरत खटखटा रहे थे, मगर उनकी भाषा ऐसी थी जो सिर्फ जानकार आदमी की ही समझ में आ सकती थी।

ऑपरेटर लड़कियाँ अभी जवान थीं, मगर अभी उन्होंने बीस किलोमीटर से ज्यादा फ़ीता न टपटपाया होगा जब कि उनके बगल का बुड्ढा तार बाबू दो सौ किलोमीटर से ज्यादा कर चुका था। अपने नौजवान साथियों की तरह उस बुड्ढे को तार से भेजा गया संदेश समझने के लिए उस फीते को पढ़ना नहीं पड़ता था, न वह मुश्किल शब्दों और वाक्यांशों की ही पहेली में उलझता था, और न उसके माथे पर झुर्रियाँ ही पड़ती थीं। उसका ढंग यह था कि शब्द पढ़ता जा रहा था और मशीन टपटपाता जा रहा था। तभी उसके कान में शब्द पड़े, 'सब के लिए, सब के लिए, सब के लिए!'

'बर्फ साफ करने के बारे में कोई दूसरा सरकुलर होगा,' बुड्ढे तार-बाबू ने उन शब्दों को लिखते हुए अपने मन में कहा। बाहर बर्फ का तूफान जोरों से चल रहा था जिससे कड़ी-कड़ी बर्फ आकर खिड़की से टकराती थी। तार बाबू ने सोचा कि खिड़की पर कोई दस्तक दे रहा है। उसकी आँखें आवाज की ओर मुड़ गयीं और वह क्षण-भर के लिए खिड़की के शीशे पर बर्फ से बनी हुई आकृतियों को देखने लगा। कोई भी नक्काश पत्ती की ऐसी नक्काशी न कर सकता था।

उसके विचार इधर-उधर बहने लगे और थोड़ी देर के लिए उसने तार के आले को सुनना बन्द कर दिया। मगर थोड़ी ही देर बाद उसने निगाह नीची की और उन शब्दों को पढ़ने के लिए, जिन्हें उसने बीच में ही छोड़ दिया था,

फीते की तरफ हाथ बढ़ाया।

तार की मशीन ने ये शब्द लिखे थे :

'२१ जनवरी की शाम को छः बजकर पचास मिनट पर ...'

तार-बाबू ने जल्दी-जल्दी ये शब्द लिखे, फीते को नीचे रख दिया और अपने सिर को हाथ पर टिकाकर आगे की बात सुनने लगा।

'कल गोर्की में मृत्यु हो गयी ...' धीरे-धीरे उसने ये शब्द कागज पर उतार दिये। अपनी लम्बी जिन्दगी में उसने न जाने कितने संदेश लिखे थे, खुशी के संदेश और गम के संदेश; कितनी बार दूसरों के दर्द और दूसरों की खुशी की खबर उसी ने सबसे पहले सुनी थी। अपने काम के सिलसिले में उसने न जाने कब से तार के उन छोटे संदेशों के अर्थ पर ध्यान देना छोड़ दिया था। उसका तो काम बस इतना था कि ध्वनियों को पकड़े और मशीन की तरह उनको कागज पर उतार दे।

यह भी किसी की मौत की खबर थी और किसी को इसकी सूचना दी जा रही थी। तार बाबू को शुरू के वे शब्द 'सबके लिए, सबके लिए, सबके लिए' भूल गये। मशीन ने टिक्-टिक् करके 'व्लादीमीर इलिच' लिखा और बुड्ढे तार बाबू ने उनको अक्षरों में उतार दिया। उसके ऊपर कोई असर नहीं हुआ, बस थोड़ी-सी थकान मालूम हुई। व्लादीमीर इलिच नाम का आदमी कहीं मर गया था और किसी को दुख की यह खबर मिलेगी, दर्द की एक चीख किसी के सीने से निकलेगी मगर उसको इससे क्या ? मशीन डैश-डॉट-डैश-डॉट बोलती जा रही थी। अपनी उस सुपरिचित ध्वनि में से तार बाबू ने पहला अक्षर पकड़ा और उसे तार के फारम पर लिखा। यह अंग्रेजी का 'एल' था। फिर दूसरा अक्षर था 'ई'। उसके बाद ही उसने लिखा 'एन' फिर जल्दी ही जोड़ा 'आई', फिर आखिरी अक्षर लिखा 'एन'।

इसके बाद मशीन ने विराम दिया और क्षण भर के लिए तार बाबू की आँखें अपने लिखे हुए शब्द 'लेनिन' पर ठहर गयीं।

मशीन टपटपाती रही, मगर अब वह परिचित नाम तार बाबू की चेतना में दाखिल हुआ। उसने एक बार फिर उस सन्देश के आखिरी शब्द पर निगाह डाली 'लेनिन'। क्या ? लेनिन ? तार की सारी इबारत उसके मन में बिजली की तरह कौंध गयी। वह तार के फारम को घूरता हुआ बैठा रहा और अपने काम की बत्तीस बरस की जिन्दगी में पहली बार वह अपने लिखे हुए शब्दों का विश्वास नहीं कर सका।

उसने तीन बार उस लाइन पर जल्दी-जल्दी निगाह दौड़ायी, मगर वे शब्द जरा भी नहीं बदले : 'व्लादीमीर इलिच लेनिन की मृत्यु हो गयी।' बुड्ढा उछलकर खड़ा हो गया, उसने फीते को उठा लिया और उसको ऐसे घूरने

लगा जैसे उसमें छेद कर देगा। जिस बात का विश्वास करने से वह इनकार कर रहा था, उस पर कागज के उस टुकड़े ने तसदीक की मुहर लगा दी थी। उसका चेहरा ऐसा जर्द पड़ गया जैसे उसमें जान ही न बाकी हो। वह अपने दूसरे साथियों की तरफ मुड़ा और उसकी चीख उनके कानों में पड़ी : 'लेनिन मर गये !'

इस भयानक मृत्यु की खबर तारघर के खुले हुए दरवाजे में से निकली और आँधी की तरह स्टेशन में फैल गयी और तूफान के डैनों पर सवार होकर रेल की पटरियों और स्विचों से जाकर टकरायी और बर्फ के तूफान के साथ-साथ रेलवे वर्कशाप के बर्फ से ढंके हुए फाटकों को चीरती हुई अंदर घुस गयी।

मरम्मत करनेवाले कुछ मजदूर पहले से ही पिट पर खड़े हुए एक इंजन की मरम्मत कर रहे थे। बूढ़ा पोलेन्ताव्स्की खुद अपने इंजन के नीचे घुसकर उन जगहों को बतला रहा था जिनमें गड़बड़ी थी। जखार, ब्रुजाख और आर्तेम आतिशदान की मुड़ी हुई लोहे की सलाखों को सीधा कर रहे थे। जखार उसको निहाई पर रखे हुए था और आर्तेम हथौड़ा चला रहा था।

जखार अधेड़ हो गया था। पिछले कुछ सालों ने उसके माथे पर गहरी झुर्रियाँ डाल दी थीं और उसकी कनपटी के बाल सफेद हो चले थे। उसकी कमर झुक गयी थी और उसकी गढ़े में धंसी हुई आँखों में स्याही थी।

दरवाजे में खड़े हुए किसी आदमी की छायाकृति क्षण-भर के लिए दिखायी दी और फिर रात का अंधेरा उसको निगल गया। लोहे पर हथौड़ों की चोटों ने उसकी पहली चीख को डुबा दिया, मगर जब वह इंजन पर काम करते हुए आदमियों के पास पहुँचा तो आर्तेम के हाथ का हथौड़ा उठा का उठा रह गया।

'साथियो ! लेनिन मर गये !'

हथौड़ा धीरे-धीरे आर्तेम के कंधे से नीचे आ गया और उसके हाथों ने खामोशी से उसको नीचे कंकरीट के फर्श पर रख दिया।

'क्या हुआ ? तुमने क्या कहा ?' कहते हुए आर्तेम ने यह भयानक खबर लानेवाले आदमी की चमड़े की जाकट को पागल की तरह झटके से पकड़ लिया।

और उसने हाँफते हुए, बर्फ से ढंके हुए, अपनी धीमी, टूटी हुई आवाज में दुहराया :

'हाँ साथियो, लेनिन मर गये !'

और चूँकि उस आदमी ने बात धीरे से कही थी, इसलिए आर्तेम ने समझ लिया कि यह भयानक खबर जरूर सही होगी। कुछ देर बाद उसने इस आदमी को पहचाना। यह स्थानीय पार्टी संगठन का मंत्री था।

इंजन की मरम्मत करनेवाले मजदूर पिट में से कूदकर बाहर आये और उन्होंने मौन होकर उस आदमी की मौत की खबर सुनी जिसका नाम सारी दुनिया में गूँज रहा था।

फाटक के बाहर कहीं एक इंजन सीटी दे रहा था, जिसे सुनकर ये लोग काँप गये। इंजन की इस दर्द में डूबी हुई आवाज के बाद वैसी ही आवाज दूर पर एक और इंजन ने की, उसके बाद एक और ने। उनकी इस आवाज में बिजलीघर के साइरेन ने योग दिया। साइरेन की आवाज बुलन्द और बम के उड़ते हुए छर्रों की तरह तेज और चुभनेवाली थी। फिर ये आवाजें जरा देर बाद कीव के लिए रवाना होनेवाली मुसाफिर गाड़ी के खूबसूरत 'एस' इंजन की भारी गूँजती हुई आवाज में डूब गयीं।

खुफिया का आदमी चौंक गया जब शेपेतोवका-वार्सा एक्सप्रेस के पोलिश इंजन ड्राइवर ने इंजनों की इन सीटियों का कारण जानने पर, कान लगा-कर उसको सुना और फिर धीरे-धीरे अपना हाथ उठाकर सीटी की रस्सी को खींचा। वह जानता था कि यह आखिरी बार उसको ऐसा करने का मौका मिल रहा है, इसके बाद उसे फिर कभी यह गाड़ी चलाने को न मिलेगी। मगर उसके हाथ ने सीटी के तार को न छोड़ा और उसके इंजन की चीख ने पोलिश दूतों और कूटनीतिज्ञों को चौंकाकर उन्हें अपने नरम कोचों से उठा दिया।

रेलवे के हाते में लोगों की भीड़ जमा थी। वे तमाम फाटकों के अन्दर चले आ रहे थे और जब वह विशाल इमारत ठसाठस भर गयी, तो शोक सभा निस्तब्ध शान्ति के वातावरण में आरम्भ हुई। पार्टी की शेपेतोवका एरिया कमेटी के मंत्री, पुराने बोल्शेविक शराब्रिन ने तकरीर की।

'साथियो ! लेनिन, दुनिया भर के मजदूरों के नेता लेनिन, मर गये। पार्टी की अपूरणीय क्षति हुई है क्योंकि वह आदमी उठ गया जिसने बोल्शेविक पार्टी का निर्माण किया और उसको दुश्मनों के प्रति निर्मम होना सिखलाया ... हमारी पार्टी और हमारे वर्ग के नेता की मृत्यु मजदूर वर्ग की सर्वोत्तम सन्तानों के लिए एक पुकार है कि वे आकर हमारी पार्टी में शामिल हों ...।'

शोक संगीत की धुनें गूँज उठीं। वहाँ पर उपस्थित उन सैकड़ों लोगों ने अपनी टोपियाँ उतार लीं और वह आर्तेम जो पन्द्रह बरस से नहीं रोया था, उसको लगा कि जैसे दर्द से उसका गला घुंट रहा है और उसके वे मजबूत चौड़े कंधे हिल उठे।

आदमियों की भीड़ के दबाव से रेलवे मजदूरों के क्लब की दीवारें भी मानो कराह रही थीं। बाहर बड़ी सख्त सर्दी थी, हॉल के दरवाजे के पास खड़े हुए दो लम्बे-लम्बे फर के दरख्त बर्फ का लबादा पहने खड़े थे। मगर

हॉल के अन्दर अंगीठियों और छः सौ लोगों की सांसों के कारण घुटन महसूस हो रही थी। ये छः सौ लोग पार्टी द्वारा बुलायी हुई इस शोक-सभा में आये थे।

हॉल में कहीं बातचीत की भुनभुनाहट नहीं थी। गहरे दर्द ने लोगों की आवाजें रूँध दी थीं और वे एक-दूसरे से धीरे-धीरे फुसफुसाकर बातें कर रहे थे और उन तमाम सैकड़ों लोगों की आँखों में दुख और चिन्ता के भाव थे। वे एक ऐसी किश्ती के मल्लाह थे जिसकी पतवार चलानेवाला तूफान में ही उनसे बिछुड़ गया था।

ब्यूरो के मेम्बरों ने शान्ति से मंच पर आसन ग्रहण किया। मोटे-तगड़े सिरोतेंको ने सावधानी से घंटी उठायी, धीरे से उसको बजाया और वापिस मेज पर रख दिया। इतने ही से हॉल में शान्ति छा गयी।

मुख्य भाषण के बाद पार्टी संगठन का मंत्री सिरोतेंको बोलने के लिए उठा। और यद्यपि उसने जो घोषणा की, वह शोक सभा के लिए कुछ असाधारण ही थी, मगर किसी को उससे आश्चर्य नहीं हुआ।

उसने कहा, 'कई मजदूरों ने इस सभा से माँग की है कि वह पार्टी मेम्बरी की अर्जी पर विचार करे। इस अर्जी पर सैंतीस साथियों के हस्ताक्षर हैं।' और उसने वह अर्जी पढ़कर सुना दी :

'दक्षिण-पश्चिम रेलवे शेपेतोवका स्टेशन की बोल्शेविक पार्टी के रेलवे संगठन की सेवा में।

'हमारे नेता की मृत्यु हमारे लिए पुकार है कि हम बोल्शेविक पार्टी में शामिल हों। और हम सभा से अनुरोध करते हैं कि वह इस बात पर विचार करे कि हम लेनिन की पार्टी के सदस्य होने के योग्य हैं या नहीं।'

इस छोटे से वक्तव्य पर दो कालम भरकर हस्ताक्षर थे।

सिरोतेंको ने उन्हें पढ़कर सुना दिया और हर नाम के बाद वह थोड़ी देर के लिए रुक जाता था ताकि श्रोताओं को वह नाम याद हो जाय।

'स्तानिस्लाव जिग्मन्दोविच पोलेनताव्स्की, इंजन ड्राइवर, छत्तीस साल की सर्विस।'

हॉल में समर्थन की ध्वनि गूँज गयी।

'आर्तेम आन्द्रीएविच कोर्चागिन, मेकैनिक, सत्रह साल की सर्विस।'

'जखार फिलिप्पोविच ब्रुजाक, इंजन ड्राइवर, इक्कीस साल की सर्विस।'

मंच पर बैठा हुआ वह आदमी जैसे-जैसे गँठीले हाथोंवाले रेलवे मजदूरों की बिरादरी के पुराने तपे हुए लोगों के नाम पुकारता जाता था वैसे-वैसे हॉल में शोर बढ़ता जाता था।

मगर फिर शांति छा गयी जब पोलेनताव्स्की, जिसका नाम सूची में सबसे पहले था, आकर सभा के सामने खड़ा हुआ।

अपनी जिन्दगी की कहानी सुनाते समय उसके मन में जो उद्वेग था, उसको वह बुड्ढा इंजन ड्राइवर छिपा नहीं सका।

'... मैं आपको क्या बतलाऊँ साथियो? आप सभी जानते हैं कि उन दिनों में हम मजदूरों की जिन्दगी कैसी थी। मैंने जिन्दगी भर गुलाम की तरह मेहनत की, फिर भी बुढ़ापे में आकर मैं भिखमंगे का भिखमंगा ही रहा। जब क्रांति आयी तो मुझे यह कहने में संकोच नहीं है कि मैं अपने को गिरस्ती की परेशानियों के बोझ से दबा हुआ एक बुड्ढा आदमी समझता रहा और पार्टी के अन्दर नहीं आया। और गोकि मैंने कभी दुश्मन का साथ नहीं दिया, फिर भी खुद संघर्ष में मैंने कम ही भाग लिया। १९०५ में मैं वार्सा में मोटर के कारखाने में हड़ताल कमेटी का मेम्बर था और बोल्शेविकों के साथ था। तब मैं जवान था और मुझ में लड़ने की शक्ति थी। मगर अब उन बीती बातों को याद करने से क्या फायदा। इलिच के मरने से मेरे दिल पर भारी धक्का सा लगा है, हमने अपना दोस्त और साथी खो दिया है और आज यह आखिरी बार मैं अपने बुड्ढे होने की बात कह रहा हूँ। मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि कैसे अपनी बात कहूँ, क्योंकि मुझे कभी भाषण देना नहीं आया। मगर मैं सिर्फ इतना कहना चाहता हूँ कि मेरा रास्ता बोल्शेविकों का रास्ता है, दूसरा कोई रास्ता नहीं है।'

उस इंजन ड्राइवर ने अपने पके बालों वाले सर को झटका दिया और उसकी सफेद भवों के नीचे उसकी आँखें श्रोताओं को दृढ़ता से देखती रहीं जैसे उनके फैसले का इंतजार कर रही हों।

उस छोटे से, पके बालों वाले आदमी की अर्जी के खिलाफ विरोध की एक भी आवाज नहीं उठी और सब लोगों ने वोट दिया। इस वोट में गैर-पार्टी लोगों को भी शरीक किया गया।

पोलेनताव्स्की जब सभापति मंडली की मेज से हटा, तो वह कम्युनिस्ट पार्टी का मेम्बर था।

हर आदमी समझ रहा था कि कोई ऐतिहासिक बात हो रही है। अब उस इंजन ड्राइवर की जगह विशालकाय आर्तेम खड़ा था। उस मेकैनिक की समझ में नहीं आ रहा था कि अपने हाथों का क्या करे, लिहाजा वह बार-बार अपनी खूब बालों वाली फर की टोपी को तान रहा था। उसकी भेड़ की खाल की जाकट, जिसके सिरे एकदम घिस गये थे, खुली हुई थी। मगर उसकी भूरी फौजी वर्दी के गले तक पहुँचनेवाले कालर में पीतल के दो बटन लगे हुए थे, जिससे उसकी आकृति बड़ी चुस्त-दुरुस्त नजर आ रही थी, जैसी छुट्टी के दिन

अच्छे-अच्छे कपड़ों के पहनने पर नजर आती है। आर्तेम हॉल की ओर मुड़ा और उसे एक परिचित स्त्री के चेहरे की झलक मिली। यह राजगीर की लड़की गालिना थी जो अपनी दर्जिन साथियों के साथ वहाँ बैठी हुई थी। वह उसे सहानुभूतिपूर्ण मुस्कराहट की आँखों से देख रही थी और उस मुस्कराहट में आर्तेम ने समर्थन पाया, और और भी कुछ जिसे शब्दों में रख सकना उसके लिए संभव न था।

उसने सिरोतेंको को कहते सुना, 'लोगों को अपने बारे में बतलाओ आर्तेम !'

मगर आर्तेम के लिए अपनी कहानी शुरू करना आसान न था। ऐसी बड़ी सभा में बोलने का वह आदी न था और उसने एकाएक महसूस किया कि जिंदगी ने जो कुछ उसके अंदर भर दिया था, उन सबको व्यक्त करना उसकी शक्ति के बाहर था। शब्दों के लिए वह अटक रहा था और अपनी घबराहट के कारण ही बोलने में उसे और भी मुश्किल हो रही थी। इसके पहले उसने कभी ऐसा नहीं महसूस किया था। उसको इस बात की तीक्ष्ण चेतना थी कि वह किसी बड़े परिवर्तन के मोड़ पर खड़ा है, कि वह एक ऐसा कदम उठाने जा रहा है जो उसकी कठोर, ऐंठी हुई, घुटी हुई जिंदगी में गरमाहट भर देगा और उसकी जिंदगी फिर बेमानी न रह जायगी।

आर्तेम ने शुरू किया, 'हम लोग चार आदमी थे।'

हॉल में शांति थी। छः सौ लोग उत्सुकता से इस टेढ़ी नाकवाले लम्बे मजदूर को सुन रहे थे, जिसकी आँखें घनी भवों के नीचे छिपी हुई थीं।

'मेरी माँ अमीर लोगों के घरों में रसोई पकाया करती थी। मुझे अपने बाप की कुछ खास याद नहीं है, उसमें और मेरी माँ में नहीं बनती थी। वह बहुत ज्यादा शराब पीता था। इसलिए मेरी माँ को ही हम बच्चों की देखभाल करनी पड़ती थी। इतने लोगों के खाने का इंतजाम करना उसके लिए आसान न था। सबेरे से लेकर रात तक वह बैल की तरह काम में जुटी रहती थी और इसके लिए उसे महीने में चार रूबल और खाना मिलता था। मैं इतना खुशकिस्मत था कि मुझे दो साल स्कूल में पढ़ने का मौका मिला। उन्होंने मुझे पढ़ना-लिखना सिखाया। मगर मैं जब नौ साल का हुआ तो मेरी माँ के सामने इसके अलावा कोई रास्ता न था कि मुझे ले जाकर एक कारखाने में भर्ती करा दे। तीन साल तक मैंने सिर्फ खाने पर काम किया...उस कारखाने का मालिक फेस्टर नाम का एक जर्मन था। पहले वह मुझे लेना न चाहता था, क्योंकि मैं बहुत छोटा था। मगर मैं बहुत तगड़ा था और फिर मेरी माँ ने मेरी उम्र दो साल बढ़ाकर बतलायी थी। तीन साल तक मैंने उस जर्मन के लिए काम किया मगर कोई काम न सीख सका क्योंकि मुझे घर की सेवा-टहल के काम करने पड़ते थे और दौड़-दौड़कर वोडका लानी पड़ती थी। मेरा

मालिक बुरी तरह पीता था...वह मुझे कोयला और लोहा लाने के लिए भी भेजता !...मालकिन ने तो मुझे बिलकुल गुलाम ही बना लिया था : मुझे आलू छीलने पड़ते, बर्तन धोने पड़ते। अक्सर मार पड़ती और खामखाह, क्योंकि उनको मारने की आदत पड़ी हुई थी। अगर मैं अपनी मालकिन को खुश न कर सकता, तो वह कसकर मेरे मुँह पर थप्पड़ मारती और उसकी हालत यह थी कि अपने पति के पीने के कारण वह हमेशा गुस्से में भरी बैठी रहती थी। मैं उससे भागकर सड़क पर पहुँच जाता, मगर कहाँ जाता, किससे शिकायत करता ? मेरी माँ चालीस मील दूर थी और फिर मुझे वह अपने पास रख भी तो नहीं सकती थी...और कारखाने में भी तो हालत कुछ बेहतर न थी। मालिक के भाई उसके इंचार्ज थे। बड़ा सूअर आदमी था वह। उसे मुझको तंग करने में मजा आता था। कभी वह मुझसे कहता, 'ए छोकरे, वह वाशर तो उठा ला,' और कोने में भट्ठी की तरफ इशारा करता। मैं दौड़कर जाता और वाशर को उठा लेता और जोर से चीख पड़ता क्योंकि वह ताजा-ताजा भट्ठी से निकलकर पड़ा होता, और गोकि जमीन पर पड़ा हुआ वह काला नजर आता, मगर छूते ही आग लग जाती। और तब मैं दर्द से चीखता खड़ा होता और उसके पेट में हँसते-हँसते बल पड़ जाते। मैं यह तकलीफ बर्दाश्त न कर सका और भागकर अपने घर माँ के पास चला गया। मगर वह समझ नहीं पाती थी कि मेरा वह क्या बंदोबस्त करे, लिहाजा वह फिर मुझे एक जर्मन के यहाँ ले गयी। मुझे याद है, वह पूरे रास्ते रोती गयी। कहीं तीसरे साल जाकर उन्होंने मुझको कुछ-कुछ काम सिखलाना शुरू किया, मगर मार-पीट बदस्तूर चलती रही। मैं फिर भाग गया और इस बार स्तारोकोन्स्तान्तिनोव पहुँचा। वहाँ मुझे एक सॉसेज के कारखाने में काम मिल गया और मैंने डेढ़ साल डब्बे धोने के पीछे बरबाद किये। फिर हमारे मालिक ने जुए के पीछे कारखाने को तबाह कर दिया, चार महीने तक हमें एक कौड़ी भी न दी और गायब हो गया। इस तरह मैं उस खंदक में से निकला। तब मैंने जमेरिका की गाड़ी पकड़ी और वहाँ काम ढूंढ़ने निकला। संयोग से वहाँ पर मुझे एक रेलवे मजदूर मिला जिसे मुझ पर दया आयी। जब मैंने उसको बतलाया कि मैं थोड़ा-बहुत मेकैनिक का काम जानता हूँ, तो वह मुझको अपने मालिक के पास ले गया और बोला कि यह मेरा भतीजा है और मुझे काम देने की सिफारिश की। मेरा डील-डौल ऐसा था कि उन्होंने मुझको सत्रह साल का समझा और इस तरह मुझे एक मेकैनिक के मददगार का काम मिल गया। जहाँ तक मेरे मौजूदा काम का ताल्लुक है, मैं आठ साल से यहाँ काम कर रहा हूँ। अपनी पिछली जिन्दगी के बारे में इससे ज्यादा मुझे कुछ नहीं कहना है। यहाँ की मेरी जिन्दगी के बारे में आप सब जानते ही हैं।'

आर्तेम ने अपनी टोपी से माथा पोंछा और एक लम्बी साँस ली। अभी तक उसने खास बात नहीं कही थी। और इसी को कहना सबसे कठिन काम था, मगर कहना तो था ही और कोई वह अनिवार्य सवाल पूछ बैठे, इसके पहले ही कहना था। लिहाजा अपनी घनी भवों में बल डालते हुए उसने अपनी कहानी को जारी रखा :

'आप सबको मुझसे यह सवाल पूछने का हक है कि मैं क्रांति के पहले दिनों में बोल्शेविक पार्टी में क्यों नहीं शरीक हुआ ? आप मुझसे यह सवाल पूछ सकते हैं। मगर मैं इसका क्या जवाब दूँ ? अभी मैं बुड्ढा तो हुआ नहीं, तब नहीं तो अब सही। मगर सवाल यह है कि अब तक मुझे यह रास्ता क्यों नहीं दिखायी दिया ? मैं सीधे-सीधे बात करूँगा, क्योंकि मेरे पास छिपाने को कुछ नहीं। वह रास्ता हमें दिखायी नहीं दिया और यह हमारी ही गलती थी। हमें १९१८ में ही इस रास्ते को पकड़ना चाहिए था जब हमने जर्मनों के खिलाफ बगावत की थी। मल्लाह जुखराई ने हमसे बहुत बार यही बात कही। १९२० में आकर ही मैंने पहली बार राइफिल उठायी। तूफान के खतम होने पर और श्वेत रूसियों को काले सागर में ढकेलकर हम लोग लौट गये। उसके बाद फिर परिवार, बच्चे ... मैं घर-गृहस्थी में एकदम उलझ गया। मगर अब जबकि कामरेड लेनिन नहीं हैं और पार्टी ने हमको पुकारा है, तो मैंने पीछे मुड़कर अपनी जिन्दगी को देखा है और समझ रहा हूँ कि उसमें किस चीज की कमी थी। अपने राज की हिफाजत करना ही काफी नहीं है, हमें लेनिन की जगह एक बड़े परिवार की तरह एकता की मजबूत डोर में बँधकर रहना है ताकि सोवियत राज फौलाद के पहाड़ की तरह मजबूती से खड़ा रहे और उसे कोई हिला न सके। हमको बोल्शेविक बनना ही है। यही हमारी पार्टी है, या मैं झूठ कहता हूँ ?'

इन्हीं सीधे-सादे शब्दों में मगर गहरी ईमानदारी से मेकैनिक आर्तेग ने अपनी बात कही। और जब उसकी बात खतम हुई, तो जहाँ उसे थोड़ी-थोड़ी लाज भी लग रही थी कि वह कैसे यों धारा-प्रवाह बोलता गया, वहाँ उसे यह भी महसूस हुआ कि जैसे उसके कंधे पर से कोई भारी बोझ उतर गया और अच्छी तरह तनकर खड़े होते हुए वह आनेवाले सवालों का इंतजार करने लगा।

'कोई सवाल ?' सिरोतेंको की आवाज ने शांति को भंग किया।

उपस्थित लोगों में खलबली-सी मची, मगर किसी ने पहले सभापति की बात का जवाब नहीं दिया। तब एक फायरमैन, जो सीधे अपने इंजन से चला आ रहा था और कालिख की तरह काला हो रहा था, निश्चयात्मक स्वर में बोला :

'पूछने को क्या है ? हम उसे जानते नहीं क्या ? उसे पार्टी में ले लो और क्या !'

लुहार गिलियाका का चेहरा गर्मी और आवेश से लाल हो रहा था। उसने अपनी फटी हुई आवाज में चिल्लाकर कहा :

'यह बिलकुल ठीक ढंग का कामरेड है, कभी गद्दारी नहीं करेगा। तुम उस पर भरोसा कर सकते हो। वोट ले लो सिरोतेंको !'

हॉल के पिछले हिस्से में से, जहाँ कोमसोमोल बैठे हुए थे, कोई जो उस अंधेरे में दिखायी नहीं दे रहा था, उठा और बोला :

'कामरेड कोर्चागिन बतलायें कि उन्होंने क्यों किसानी जीवन अपनाया है और कैसे उसका मेल मजदूर मनोवृत्ति के साथ बिठाते हैं।'

हाल में नाराजगी की एक हलकी-सी भुनभुनाहट पैदा हुई और किसी ने एतराज करते हुए कहा :

'तुम ऐसे क्यों नहीं बोलते जिससे सीधे-सादे लोग भी तुम्हारी बात समझ सकें ? खूब वक्त चुना तुमने भी काबलियत बघारने के लिए ...'

मगर आर्तेम ने जवाब देना शुरू कर दिया था :

'यह बिलकुल ठीक बात उसने पूछी है, कामरेड। उसने बिलकुल ठीक कहा है कि मैंने किसानी जीवन अपना लिया है। मगर मैं कहना चाहता हूँ कि मैंने अपने मजदूर विवेक के साथ विश्वासघात नहीं किया है। बहरहाल, आज से वह चीज खतम हो गयी। मैं अपने परिवार को रेलवे यार्ड के और पास ले आ रहा हूँ। यहाँ ज्यादा अच्छा रहेगा। वह मनहूस खेत बहुत दिन से मेरे गले में फँसता रहा है।'

एक बार फिर आर्तेम का दिल काँपा जब उसने अपने समर्थन में उठे हुए हाथों के उस जंगल को देखा, और सिर ऊँचा करके जब वह आकर अपनी सीट पर बैठा तो उसे ऐसा लग रहा था जैसे उड़ा जा रहा हो। अपने पीछे उसने सिरोतेंको को एलान करते सुना : 'सर्वसम्मति से पास।'

मंच पर खड़ा होनेवाला तीसरा आदमी पोलेनताव्स्की का पहले का मददगार जखार ब्रुजाक था। यह खामोश तबियत का बुड्ढा आदमी खुद बहुत दिनों से इंजन ड्राइवर था। उसने जब अपनी मेहनत की जिन्दगी का वर्णन खतम किया और कहानी को उस दिन तक ले आया, तो उसकी आवाज धीमी पड़ गयी और वह धीमे-धीमे बोलता रहा, पर इतने धीमे नहीं कि लोग उसकी बात सुन न सकें :

'मेरे बच्चों ने जो चीज शुरू की, उसको पूरा करना मेरा कर्तव्य है। उनको हरगिज यह बात पसन्द नहीं होती कि मैं अपने दर्द को लेकर एक कोने में मुँह छिपाये पड़ा रहूँ। इस चीज के लिए उन्होंने जान नहीं दी। उनके मर

जाने से जो कमी हो गयी है, अब तक मैंने उस कमी को पूरा करने की कोशिश नहीं की है। मगर हमारे नेता लेनिन की मृत्यु से मेरी आँखें खुल गयी हैं। मुझको अपने पिछले जमाने की जवाबदेही करने के लिए न कहो। आज से हमारी नयी जिन्दगी शुरू होती है।'

जखार के दिल में दर्द से भरी हुई यादें घुमड़ रही थीं, उसके चेहरे पर मानो बादल सा छा गया था, मगर उसका चेहरा कठोर था। लेकिन जब उसको पार्टी में लेने के समर्थन में हाथों का एक समुन्दर लहराया, तो उसकी आँखें चमकने लगीं और उसका पके बालों वाला सिर गर्व से तन गया।

नये लोगों को पार्टी में लेने की यह कार्रवाई बहुत रात गये तक चलती रही। सबसे अच्छे और ऐसे लोग ही लिये गये, जिन्हें सब लोग जानते थे और जिनके जीवन में कहीं कोई धब्बा न था।

लेनिन की मृत्यु ने लाखों मजदूरों को बोल्शेविक बनाया। नेता चला गया, मगर पार्टी बदस्तूर कायम रही, उसमें कहीं कोई कमजोरी नहीं आयी। कोई दरख्त जिसकी विशाल जड़ें धरती में मजबूती के साथ गड़ी होती हैं, उसके सिरे को अगर काट भी दिया जाय, तब भी वह मरता नहीं।

पन्द्रह

होटल के कंसर्ट हॉल के दरवाजे पर दो आदमी खड़े थे। उनमें लम्बा-वाला नाक के ऊपर ठहरा हुआ चश्मा लगाये था और उसकी बाँह में एक लाल फीता बंधा था जिस पर लिखा था 'कमांडेंट।'

रिता ने पूछा, 'उक्रेन के डेलीगेशन की मीटिंग यहीं हो रही है?'

उस लम्बे आदमी ने सर्द शिष्टाचार के स्वर में जवाब दिया, 'हाँ। आपको क्या काम है कामरेड?'

वह लम्बा आदमी रास्ते को रोककर खड़ा हो गया और रिता को ऊपर से लेकर नीचे तक देखने लगा।

'आपके पास डेलीगेट कार्ड है?'

रिता ने अपना कार्ड पेश कर दिया जिस पर सुनहले अक्षरों में लिखा था: 'केन्द्रीय समिति की सदस्य।' उसको देखते ही उस आदमी का बर्ताव फौरन बहुत नम्र और मीठा हो गया।

'अन्दर चलिए कामरेड, आपको उधर बायीं तरफ कुछ खाली सीटें मिल जायेंगी।'

रिता गयी और एक खाली सीट पर जाकर बैठ गयी।

स्पष्ट ही मीटिंग खतम होने जा रही थी क्योंकि सभापति का अन्तिम भाषण चल रहा था। उसकी आवाज रिता को परिचित लगी।

'अखिल रूसी कांग्रेस की कौंसिल का निर्वाचन हो गया। कांग्रेस की कार्रवाई दो घंटे में शुरू होगी। इस बीच मैं आपकी इजाजत से डेलीगेटों की फेहरिस्त को एक बार फिर दुहरा देना चाहता हूँ।'

यह अकिम था! रिता ध्यानावस्थित होकर सुनती रही और वह फेहरिस्त को जल्दी-जल्दी पढ़ रहा था। हर डेलीगेट अपना नाम पुकारे जाने पर अपना लाल या सफेद पास लेकर हाथ उठाता था।

तभी रिता ने एक परिचित नाम सुना : पांक्रातोव।

एक हाथ तेजी से उठा। रिता ने मुड़कर उसको देखा मगर बीच में इतनी कतारें थीं कि वह उस मल्लाह का चेहरा न देख सकी। नामों का पढ़ा जाना चलता रहा और फिर रिता ने एक परिचित नाम सुना—ओकुनेव और उसके बाद एक और, जार्की।

डेलीगेटों के चेहरों को गौर से देखते हुए उसकी नजर जार्की पर पड़ी। वह उससे थोड़ी ही दूर पर बैठा हुआ था और उसका चेहरा आधा उसी की तरफ मुड़ा हुआ था। हाँ, यह वान्या ही था। वह उस चेहरे को लगभग भूल ही गयी थी। उसको देखे कई बरस बीत भी तो गये थे।

नाम पुकारे जाते रहे। और तब अकिम ने एक नाम पढ़ा जिसे सुनकर रिता जोर से चौंक पड़ी :

'कोर्चागिन।'

दूर पर सामने की कतार में एक हाथ उठा और गिरा और अजीब बात थी कि रिता उस्तिनोविच के मन में उस आदमी के चेहरे को देखने की दारुण चाह हुई जिसका नाम वही था जो उसके बिछुड़े हुए साथी का था। वह उस जगह से अपनी आँख अलग न कर सकी, जहाँ से वह हाथ उठा था। मगर पीछे से सामने की कतार में बैठे हुए सब लोगों के सिर एक-जैसे नजर आते थे। रिता उठ खड़ी हुई और बीच के रास्ते से सामनेवाली कतारों की तरफ बढ़ी। उसी वक्त अकिम ने नाम पढ़ना खतम किया। लोगों ने जोर से अपनी कुर्सियाँ पीछे खिसकायीं और हॉल आवाजों की भुनभुनाहट और नौजवानों की हँसी से भर उठा। इस शोर में अपनी बात लोगों के कानों तक पहुँचाने के लिए अकिम ने चिल्लाकर कहा :

'बोलशोय थियेटर...सात बजे। देरी न हो!'

हॉल से निकलने के अकेले दरवाजे पर डेलीगेटों की भीड़ लग गयी। रिता ने देखा कि इस भीड़ में वह अपने किसी भी पुराने दोस्त को कभी न ढूँढ़ सकेगी। अकिम के जाने के पहले उसी को पकड़ने की कोशिश करनी चाहिए, दूसरों को ढूँढ़ने में उसी से मदद मिलेगी। तभी कुछ डेलीगेट दरवाजे की तरफ बढ़ते हुए उसके पास से गुजरे और उसने किसी को कहते सुना :

'अच्छा कोर्चागिन, अब हम लोगों को भी चलना चाहिए।'

और एक आवाज ने, जो इतनी परिचित थी और हमेशा याद रहनेवाली, जवाब दिया :

'हाँ चलो।'

रिता झट से मुड़ी। उसके सामने एक लम्बा, दबे रंग का नौजवान खाकी वर्दी और नीली बिर्जिस पहने खड़ा था। उसकी वर्दी में एक पतली सी काकेशियन पेटी लगी हुई थी।

रिता ने आँख फाड़कर उसको देखा। फिर उसने उसकी बाँहों को अपने गिर्द महसूस किया और उसकी काँपती हुई आवाज को धीरे से कहते सुना : 'रिता,' और वह जान गयी कि यह पावेल कोर्चागिन ही था।

'तो अभी तुम जिंदा हो ?'

इन शब्दों से पावेल की समझ में सारी बात आ गयी। मतलब कि रिता को यह नहीं मालूम हुआ था कि उसकी मौत की खबर गलत थी।

हॉल बड़ी देर का खाली हो चुका था और त्वेर्स्काया का शोर-शराबा खुली हुई खिड़की में से अन्दर आ रहा था। घड़ी ने छः बजाया। मगर उन दोनों को ऐसा लग रहा था कि जैसे अभी क्षण भर पहले मिले हों। मगर घड़ी की आवाज सुनकर उनको बोलशोय थियेटर का खयाल आया। खूब चौड़ी सीढ़ी से उतरकर रिता ने एक बार और पावेल को गौर से देखा। अब वह उससे काफी ऊँचा हो गया था और ज्यादा परिपक्व और आत्मसंयमी दीख पड़ता था। इसके अलावा पावेल में कुछ भी नहीं बदला था और वह वही पुराना पावेल था।

रिता ने कहा, 'मुझे देखो कि मैंने तुमसे यह भी नहीं पूछा कि कहाँ काम कर रहे हो ?'

पावेल ने मुस्कराते हुए जवाब दिया, 'मैं कोमसोमोल की एरिया कमेटी का मंत्री हूँ।'

मोटरें जूं-जूं करती भागी जा रही थीं और शोर करती भीड़ पक्के फुटपाथों पर जमा थी। थियेटर के रास्ते में उनमें आपस में कोई बात नहीं हुई, एक ही से विचार दोनों के दिमागों में भरे हुए थे। उन्होंने जाकर देखा कि थियेटर बहुत से लोगों के एक तूफानी समुंदर से घिरा हुआ है, जिसकी लहरें

थियेटर की इमारत के पत्थरों से आ-आकर टकरा रही हैं ताकि दरवाजों पर पहरा देते हुए लाल सैनिकों के घेरे को तोड़कर अंदर घुस जायें। मगर संतरी सिर्फ डेलीगेटों को अंदर आने दे रहे थे और वे अपने पास शान से दिखलाकर अंदर चले आते थे।

यह कोमसोमोल का समुंदर था जो थियेटर को घेरे हुए था, नौजवानों का एक समुंदर जिन्हें कांग्रेस के उद्घाटन-समारोह का टिकट नहीं मिल पाया था मगर जो किसी भी कीमत पर अंदर घुसने पर तुले हुए थे। उनमें से कुछ नौजवान जो ज्यादा फुर्तीले थे, डेलीगेटों की टोली में पहुँच गये थे और कागज का कोई लाल टुकड़ा दिखलाकर दरवाजे तक पहुँचने में कामयाब हुए थे।

कुछ थोड़े से वे लोग दरवाजे के अंदर घुसने में भी कामयाब हुए थे। मगर अंदर पहुँचकर उन्हें ड्यूटी पर तैनात केंद्रीय समिति के आदमी या कमांडेंट से डांट खानी पड़ती थी जो अतिथियों और डेलीगेटों को उनकी नियुक्त जगहें दिखला रहे थे। और फिर उन्हें बाहर निकाल दिया जाता था जिससे उन तमाम लोगों को, जिनके पास टिकट नहीं थे, अपार संतोष होता था।

जितने लोग उपस्थित होना चाह रहे थे, उनके दशांश लोगों के लिए भी थियेटर में जगह नहीं थी।

रिता और पावेल बड़ी मुश्किल से हॉल के दरवाजे तक पहुँचे। डेलीगेट लोग आते रहे, कुछ लोग ट्रामगाड़ी से आये, कुछ लोग मोटर से आये। वे सब दरवाजे पर इकट्ठा हो गये थे और लाल सैनिक, जो खुद भी कोमसोमोल थे, दीवार से चिपककर खड़े थे। उसी वक्त दरवाजे के पास भीड़ में से एक शोर उठा :

'बाउमान इंस्टीच्यूट, यह चला !'

'चलो दोस्तो, हमारी जीत हो रही है !'

'हुर्रा !'

पावेल और रिता के साथ ही हॉल में तेज आँखोंवाला एक लड़का घुसा, जो कोमसोमोल का बैज लगाये हुए था और कमांडेंट की आँख बचाकर थियेटर के बाहरवाले बड़े कमरे की तरफ सीधे लपका। क्षण भर में वह भीड़ में खो गया।

रिता ने पीछे की कतार में एक कोने की दो सीटों की तरफ इशारा करते हुए कहा, 'आओ यहाँ बैठें।'

बैठने पर रिता ने कहा, 'मैं तुमसे एक सवाल पूछना चाहती हूँ। इसका ताल्लुक गुजरे हुए जमाने से है, मगर मुझे यकीन है कि तुम जवाब देने से इनकार नहीं करोगे। बतलाओ तुमने क्यों उस वक्त हम लोगों का संग-संग

पढ़ना छोड़ दिया और हमारी दोस्ती तोड़ दी ?'

और गोकि पावेल बड़ी देर से इस सवाल का इंतजार कर रहा था, जब से रिता मिली थी तभी से, फिर भी इस सवाल से उसे परेशानी हुई। उनकी आँखें मिलीं और पावेल ने देख लिया कि रिता असली कारण जानती है।

'मेरा खयाल है कि तुम खुद अपने सवाल का जवाब जानती हो रिता। यह चीज तीन बरस पहले हुई थी और अब मैं सिर्फ यह कह सकता हूँ कि उस बात के लिए पावका की निन्दा करूँ। सच बात यह है कि कोर्चागिन ने अपनी जिन्दगी में बहुत-सी छोटी-बड़ी भूलें की हैं। वह भी उन्हीं में से एक है।'

रिता मुस्करायी।

'भूमिका तो बहुत अच्छी है। मगर अब जवाब दो !'

पावेल ने धीमी आवाज में शुरू किया, 'इसमें दोष अकेले मेरा न था। इसमें गैड-फ्लाई का भी दोष था, उसके क्रांतिकारी रोमांस का। उन दिनों मुझ पर ऐसी किताबों का बड़ा गहरा असर था, जिनमें तपे हुए साहसी क्रांतिकारियों का सजीव चित्रण होता था, ऐसे लोगों का जिन्होंने अपने पवित्र लक्ष्य के लिए अपने को न्यौछावर कर दिया। ऐसे लोगों का मुझ पर बड़ा गहरा असर पड़ता था और मैं भी उन्हीं की तरह बनना चाहता था। तुम्हारे प्रति मेरे मन के जो भाव थे, उन पर मैंने उस गैड-फ्लाई नाम की किताब का असर पड़ने दिया। अब वह बात बड़ी बेवकूफी की मालूम होती है और मेरे पास शब्द नहीं हैं कि मैं बतला सकूँ कि मुझे इस चीज के लिए कितना खेद है।'

'तो तुमने उस किताब के बारे में अपनी राय बदल दी है ?'

'नहीं रिता, बुनियादी तौर पर नहीं, लेकिन हाँ, इतना मैंने जरूर किया है कि अपनी इच्छाशक्ति की बार-बार परीक्षा लेने की कष्टदायी प्रक्रिया और उससे पैदा होने वाली अनावश्यक ट्रेजेडी की व्यर्थता को समझ लिया है। मैं अब भी उस किताब की सबसे अहम बातों का हामी हूँ, उसके साहस का, उसकी असीम सहन शक्ति का। मेरे नजदीक वह एक ऐसे आदमी का रूप है जो अपने दर्द को हर ऐरे-गैरे को दिखलाये बगैर मौन होकर अपनी पीड़ा को झेल सकता है। मैं उस तरह के क्रांतिकारी होने का समर्थक हूँ जो पूरे समाज की जिन्दगी के सामने अपनी निजी जिन्दगी को कुछ नहीं समझता हो।'

'कितने अफसोस की बात है पावेल कि तीन बरस पहले तुमने मुझे यह बात न बतलायी,' रिता ने एक ऐसी मुस्कराहट के साथ कहा जिससे पता चल रहा था कि उसके विचार कहीं दूर भटक रहे हैं।

'अफसोस की बात तुम इसीलिए कहती हो न रिता, कि मैं तुम्हारे नजदीक कभी एक कामरेड से ज्यादा कुछ नहीं था ?'

'नहीं पावेल, तुम उससे ज्यादा बन सकते थे।'

'मगर वह तो अब भी हो सकता है।'

'नहीं कामरेड गैड-फ्लाई, अब बहुत देर हो गयी।'

रिता ने मुस्कराते हुए अपनी बात साफ की, 'बात यह है कि अब मेरी एक छोटी-सी लड़की है। मैं उसके पिता को बहुत प्यार करती हूँ। हम तीनों में बड़ी दोस्ती है और अभी तो तीनों अविभाज्य हैं।'

उसकी उंगलियाँ पावेल के हाथ को छू रही थीं। पावेल के प्रति सहानुभूति से ही उसने ऐसा किया था, मगर फौरन ही उसने समझ लिया कि इस चीज की जरूरत नहीं है। हाँ, इन तीन सालों में पावेल परिपक्व हुआ था और शारीरिक रूप से ही नहीं, मानसिक रूप से भी। उसकी आँखों को देखकर रिता ने समझ लिया कि उसकी स्पष्टोक्ति से पावेल को कितनी चोट लगी है। मगर पावेल ने सिर्फ यह कहा :

'जो कुछ मैंने अभी-अभी खोया है, उसके मुकाबले में जो कुछ अभी मेरे पास बचा हुआ है, वह कहीं बड़ा है, कहीं ज्यादा।' और रिता ने समझा कि यह कोई खोखले शब्द नहीं हैं जो पावेल ने कहे हैं, यह तो सीधा-सादा सत्य है।

मंच के पास जाकर बैठने का समय हो गया था। वे उठे और उस कतार की तरफ बढ़े जिसमें उक्रेन के डेलीगेशन के लोग बैठे हुए थे। बैंड बजने लगा। हॉल में लगी हुई झंडियों पर लिखा हुआ था, 'भविष्य हमारा है!' हजारों लोग उस हॉल की सीटों पर बैठे हुए थे। ये हजारों लोग मिलकर एक विराट् इकाई बन गये थे जिनमें अशेष उत्साह लहरें मार रहा था। देश के औद्योगिक मजदूरों की बिरादरी की श्रेष्ठतम नयी संतानें यहाँ पर उपस्थित थीं। हजारों आँखों में सामने के भारी पर्दे के इन जलते हुए अक्षरों की प्रतिच्छाया चमक रही थी : 'भविष्य हमारा है!' और अब भी लोगों की भीड़ अन्दर चली आ रही थी। कुछ ही क्षण बाद वह मखमल का भारी पर्दा हट जायगा और फिर रूसी कम्युनिस्ट युवक संघ की केन्द्रीय समिति का मंत्री इस महान अवसर पर क्षण भर के लिए उद्विग्न होकर घोषणा करेगा :

'अब रूसी कम्युनिस्ट युवक संघ की छठी कांग्रेस की कार्रवाई शुरू होती है।'

इसके पहले कभी पावेल कोर्चागिन को क्रांति की महत्ता और शक्ति की ऐसी गहरी मार्मिक चेतना नहीं हुई थी और यह सोचकर उसका मन वर्णनातीत आनन्द और गर्व से भर उठा कि जिन्दगी उसे नौजवान बोल्शेविकों की विराट रैली में ले आयी थी, उसको जो खुद भी एक सैनिक और निर्माता था।

भोर से लेकर बहुत रात तक उसका सारा समय कांग्रेस में चला जाता था। इसलिए कई दिन बाद, जब कांग्रेस खतम होने आ रही थी और उसके

आखिरी इजलास हो रहे थे, पावेल की रिता से दुबारा मुलाकात हुई। वह उक्रेनियनों के एक दल के साथ थी।

रिता ने उसको बतलाया, 'काँग्रेस खतम होते ही मैं कल चली जाऊँगी। मैं नहीं जानती कि मुझे फिर तुमसे बात करने का मौका मिलेगा या नहीं और इसलिए मैंने अपनी डायरी की दो पुरानी नोटबुकें और एक छोटी-सी चिट्ठी तुम्हारे लिए तैयार की है। उनको पढ़ लेना और पढ़कर डाक से मुझे वापस भेज देना। वे तुम्हें वह सब कुछ बतला देंगी जो मैं तुम्हें नहीं बतला सकी।'

पावेल ने रिता का हाथ दबाया और बड़ी देर तक उसको देखता रहा जैसे उसके चेहरे को दिमाग में पक्की तरह बिठाल रहा हो।

अगले रोज वायदे के अनुसार वे दोनों बड़े दरवाजे पर मिले और रिता ने उसको एक पैकेट और एक बंद लिफाफा पकड़ा दिया। वे अकेले नहीं थे, उनके आस-पास और लोग थे, इसलिए उन्हें अपने ऊपर संयम रखते हुए एक-दूसरे से विदा होना पड़ा। मगर तब भी पावेल ने रिता की कुछ-कुछ आर्द्र आँखों में एक गहरे ममत्व को पढ़ा जिसमें दर्द भी मिला हुआ था।

अगले रोज उनकी गाड़ियाँ उन्हें अलग-अलग दिशाओं में लेकर चली गयीं। जिस गाड़ी में पावेल सफर कर रहा था, उसके कई डब्बों में उक्रेन के डेलीगेशन के लोग थे। उसके कम्पार्टमेंट में कीव के कुछ डेलीगेट थे। शाम को जब दूसरे मुसाफिर सो गये और पास की बर्थ पर ओकुनेव आराम से खर्राटे भरने लगा, तब पावेल ने लैम्प को पास सरकाया और चिट्ठी को खोला।

'पावेल, मेरे प्यारे पावेल! यह सब बातें मैं तुम्हें उस वक्त बतला सकती थी जब हम साथ थे। मगर इस तरह और अच्छा होगा। मैं सिर्फ एक बात की कामना करती हूँ कि कांग्रेस के पहले हम लोगों ने जो बातें कीं, उनके घाव का कोई निशान तुम्हारी जिन्दगी पर न रहे। मैं जानती हूँ कि तुम मजबूत आदमी हो और मैं यह भी जानती हूँ कि अपने व्यक्तिगत सम्बन्धों में, चाहे कभी-ही-कभी, अपवाद किये जा सकते हैं बशर्ते कि वे एक सच्चे और गहरे प्यार पर आधारित हों। मैं तुम्हारे लिए यह अपवाद कर सकती थी, मगर मैंने जवानी के उस आवेश को ठुकरा दिया। मैं समझती हूँ कि ऐसा करने से हम दोनों में से किसी को सच्चा सुख नहीं मिलेगा। मगर फिर भी मैं यह कहूँगी पावेल, कि तुम्हें अपने साथ इतना कठोर न होना चाहिए। हमारी जिन्दगी में केवल संघर्ष ही नहीं है, उसमें उस सुख के लिए भी जगह है जो सच्चे प्यार से मिलता है।

जहाँ तक तुम्हारे जीवन के मूल अभिप्राय, उसके मर्म की बात है, मुझे उसके बारे में किसी तरह की कोई शंका नहीं है। मैं अपने हृदय के समस्त प्यार से तुम्हारे हाथ को अपने हाथ में लेती हूँ।

—रिता'

पावेल ने अपने विचार में डूबे-डूबे उस चिट्ठी के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। उसने खिड़की में से हाथ निकाला और हवा उसके हाथ से कागज के उन टुकड़ों को उड़ा ले गयी।

सबेरा होते-होते उसने रिता की डायरी की दोनों नोटबुकें पढ़ ली थीं और उन्हें लपेट और बाँधकर डाक में छोड़ने के लिए तैयार कर दिया था।

दो साल गुजर गये। समय की निर्बाध गति से दिन और महीने बीतते जा रहे थे, मगर जिंदगी में रंगों का मेला था जिससे उसकी दीख पड़नेवाली एकरसता में सदा कोई नवीनता रहती थी और दो दिन एक-से न रहते थे। सोलह करोड़ जनता का यह महान राष्ट्र, धनधान्य से पूर्ण अपने विशाल देश के भविष्य को अपने हाथों में लेनेवाली संसार की पहली जनता, युद्ध से तहस-नहस आर्थिक व्यवस्था को ठीक करने के विराट काम में लगी हुई थी। देश की शक्ति बढ़ी, उसकी रगों में नया उत्साह बढ़ने लगा और अब कहीं भी ऐसे उजड़े कारखाने नहीं थे जिनसे धुआँ न उठता हो और जिन्हें देखकर दिल को तकलीफ होती हो।

पावेल के लिए वे दो साल अनवरत काम के प्रवाह में तेजी से बीत गये। वह जिंदगी को आराम से बितानेवाला आदमी नहीं था कि नये दिन का स्वागत इतमीनान की एक जम्हाई से करता और दस का घंटा बजते ही सोने के लिए बिस्तर पर पहुँच जाता। उसकी जिंदगी की रफ्तार तेज थी और वह न खुद अपने को और न किसी दूसरे को एक भी क्षण बर्बाद करने देता था।

सोने के लिए उसने कम-से-कम वक्त दिया था। अक्सर उसकी खिड़की की रोशनी बहुत रात गये तक जलती रहती और कमरे के भीतर लोग एक मेज के इर्द-गिर्द बैठे हुए पढ़ाई में मशगूल नजर आते। इन दो सालों में उन्होंने 'कैपिटल' के तीसरे खंड का गहरा अध्ययन कर लिया था और पूंजी-वादी शोषण की सूक्ष्म कार्य-प्रणाली का चित्र अब उनके सामने बिलकुल स्पष्ट हो गया था।

जिस इलाके में इन दिनों कोर्चागिन काम करता था, उसी में राजवालि-खिन भी आ गया था। उसको सूबा कमेटी ने इस सिफारिश के साथ वहाँ

भेजा था कि उसे देहात के किसी कोमसोमोल संगठन का मंत्री बना दिया जाय। राजवालिखिन जब आया तब पावेल कहीं बाहर गया हुआ था और उसकी अनुपस्थिति में ब्यूरो ने राजवालिखिन को एक देहात में भेज दिया। लौटने पर पावेल को यह खबर मिली और उसे सुनकर वह कुछ नहीं बोला

महीने भर बाद पावेल एक रोज अचानक राजवालिखिन के देहात में पहुँच गया। वहाँ ज्यादा कुछ देखने को तो नहीं मिला, मगर जो कुछ मिला, वह काफी निन्दनीय था। नया मंत्री शराब पीता था, उसने अपने इर्द-गिर्द खुशामदी लोगों को जमा कर लिया था और ईमानदार सच्चे सदस्यों की आगे बढ़कर काम करने की प्रवृत्ति को दबा रहा था। पावेल ने यह चीज ब्यूरो के सामने रखी और जब मीटिंग ने यह प्रस्ताव रखा कि राजवालिखिन को कड़ाई से फटकार सुनायी जाय, तो पावेल ने उठकर कहा :

'मैं प्रस्ताव करता हूँ कि उसको संगठन से निकाल दिया जाय और यह एक अंतिम निश्चय हो जिसकी कहीं भी सुनवाई न हो।'

पावेल के इस प्रस्ताव से दूसरे लोग हैरत में आ गये। उनका ख्याल था कि यह सजा परिस्थिति को देखते हुए जरूरत से ज्यादा कड़ी है। मगर पावेल ने अपनी बात पर जोर दिया।

'उस बदमाश को निकाल देना ही चाहिए। उसे एक अच्छे इंसान बनने के सारे मौके थे, मगर वह कोमसोमोल के अन्दर आज भी एक परदेसी बना हुआ है।' और पावेल ने ब्यूरो को बेरेजदोव वाली घटना के बारे में बतलाया।

राजवालिखिन ने चिल्लाकर कहा, 'मैं इसका प्रतियाद करता हूँ। कोर्चागिन व्यक्तिगत झगड़ों के आधार पर ऐसा कह रहा है। उसकी बात में कोई सार नहीं है। उससे कहिए कि अपने अभियोगों के समर्थन में तथ्य पेश करे, कागजात पेश करे। मान लीजिए मैं आपके पास आकर यह कहूँ कि कोर्चागिन चोरी से माल लाता-ले-जाता है, तो क्या उसकी बिना पर आप कोर्चागिन को कोमसोमोल से निकाल देंगे? उसे लिखित प्रमाण देना चाहिए।'

कोर्चागिन ने जवाब दिया, 'फिक्र न करो, मैं सारे जरूरी प्रमाण दूंगा।'

राजवालिखिन कमरे से बाहर चला गया। आध घंटे बाद पावेल ने ब्यूरो को अपनी बात समझाकर इस फैसले के लिए राजी कर लिया था कि राजवालिखिन को कोमसोमोल से निकाल दिया जाय, क्योंकि वह कोमसोमोल के भीतर एक विजातीय तत्व है।

गर्मी आयी और उसके साथ गर्मी की छुट्टियाँ आयीं। पावेल के साथ काम करनेवाले एक के बाद दूसरे अपनी छुट्टियाँ बिताने चले गये। जिन लोगों को

स्वास्थ्य के खयाल से समुद्र-किनारे जाने की जरूरत थी, वे लोग वहाँ गये और पावेल ने उनको सेनेटोरियम में जगह और रुपये-पैसे दिलाने में उनकी मदद की। वे गये तो पीले और कुम्हलाये हुए थे, मगर छुट्टियों के खयाल से बड़े खुश थे। उनके काम का बोझ पावेल के कंधों पर आ गया और पावेल ने बिना एक शब्द कहे इस अतिरिक्त बोझ को उठा लिया। कुछ समय बाद वे जीवन और उत्साह से भरकर और धूप में सिंक कर लौट आये और दूसरे लोग चले गये। गर्मी भर दफ्तर में काम करनेवालों की कमी रही। मगर उससे जीवन की तेज गति में कोई कमी नहीं पड़ी और पावेल एक दिन का भी काम छोड़ने की स्थिति में नहीं था।

गर्मी बीत गयी। पावेल को इस खयाल से ही डर मालूम हो रहा था कि अब पतझड़ और उसके बाद जाड़ा आयेगा क्योंकि इन ऋतुओं में उसे बहुत शारीरिक यातना होती थी।

उस साल उसने विशेष उत्सुकता से गर्मी के आने की प्रतीक्षा की थी। क्योंकि चाहे उसे अपने तईं भी यह बात मानने में कितनी ही तकलीफ क्यों न होती हो, यह बात सही थी कि वह साल-ब-साल अपनी ताकत को कम होते महसूस कर रहा था। उसके सामने सिर्फ दो रास्ते थे : या तो वह इस बात को मंजूर कर ले कि उतनी कड़ी मेहनत उसके लिये मुमकिन न थी और अपनी असमर्थता की घोषणा कर दे या जब तक दम-में-दम है, तब तक अपनी चौकी पर मुस्तैदी से जमा रहे। उसने यह बादवाला रास्ता ही अख्तियार किया।

एक रोज पार्टी की एरिया कमेटी की ब्यूरो मीटिंग में डाक्टर बार्तेलिक उसके पास आकर बैठ गये। वह पार्टी के एक पुराने अंडरग्राउंड कार्यकर्ता थे जो इन दिनों पब्लिक हेल्थ के इंचार्ज थे।

'तुम काफी कमजोर नजर आ रहे हो, कोर्चागिन! तुम्हारी सेहत कैसी है? मेडिकल बोर्ड ने तुम्हारी जाँच की है? नहीं? मेरा भी यही खयाल था। मगर दोस्त, मैं समझता हूँ कि तुम्हें पूरी ओवरहॉलिंग की जरूरत है। बृहस्पति की शाम को चले आना, हम लोग तुमको देख लेंगे।'

पावेल नहीं गया। वह बहुत व्यस्त था। मगर बार्तेअिक उसे नहीं भूले और कुछ दिन बाद आकर पावेल को जाँच के लिए अपने साथ मेडिकल बोर्ड में ले गये। वहाँ वे न्यूरोपैथालॉजिस्ट की हैसियत से काम करते थे। मेडिकल बोर्ड ने पावेल की जाँच करके लिखा : 'पावेल कोर्चागिन को फौरन छुट्टी दी जानी चाहिए ताकि वह क्रीमिया जाकर रह सके और अपना इलाज काफी दिनों तक करा सके। उसके बाद उसका बाकायदा इलाज होना चाहिए। अगर यह नहीं किया गया तो परिणाम भयंकर हो सकता है।'

मेडिकल बोर्ड की सिफारिश के साथ लैटिन जबान में जिन तमाम बीमारियों की लम्बी फेहरिस्त थी, उनको देख पावेल की समझ में सिर्फ इतनी बात आयी कि खास बीमारी उसकी टाँगों में नहीं, बल्कि उसके केन्द्रीय स्नायु-तंत्र में है जो काफी खराब हो गया है।

बार्तेलिक ने बोर्ड का फैसला ब्यूरो के सामने रखा और उसके इस प्रस्ताव का किसी ने विरोध नहीं किया कि कोर्चागिन को फौरन काम से छुट्टी दे दी जाय। मगर खुद कोर्चागिन ने जरूर यह बात कही कि उसकी छुट्टी तब तक स्थगित रखी जाय जब तक कि संगठन-विभाग का प्रधान स्वितनेव लौट नहीं आता। वह कमेटी को नेतृत्वहीन नहीं छोड़ना चाहता था। ब्यूरो ने उसकी बात मान ली गोकि बार्तेलिक ने इस देरी पर आपत्ति की।

और इस तरह अब तीन हफ्ते बाद पावेल छुट्टी पर चला जायेगा जो कि उसकी जिन्दगी की पहली छुट्टी थी। योपेतोरिया के सेनेटोरियम में उसके लिये जगह रिजर्व कर दी गयी थी और इस आशय का एक कागज उसकी मेज की दराज में पड़ा हुआ था।

इस बीच पावेल ने और भी तेजी से काम करना शुरू किया। उसने एरिया कोमसोमोल के सभी सदस्यों की एक मीटिंग की और अपने साथ बेदर्द होते हुए जी-ज़ान से इस बात की कोशिश की कि सभी बिखरे हुए सूत्रों को बटोर ले ताकि वह शान्ति से जा सके।

और उसके जाने के ठीक पहले, जब कि उसे समुद्र की पहली झलक मिलनेवाली थी, एक बड़ी घृणित बात हुई जिस पर यों शायद वह विश्वास भी न करता।

उस दिन काम के बाद पावेल पार्टी के प्रचार आन्दोलन विभाग की एक मीटिंग में गया हुआ था। जब वह पहुँचा तब कमरे में कोई नहीं था और इसलिए वह दूसरे लोगों के आने के इंतजार में किताबों की आलमारी के पीछे खुली हुई खिड़की पर बैठा हुआ था। थोड़ी ही देर बाद कई लोग अन्दर आ गये। किताब की आलमारी के पीछे से वह उन्हें देख तो न सकता था, मगर एक आवाज पहचानी-सी मालूम हुई। यह फ़ाइलो की आवाज थी। फ़ाइलो एरिया के अर्थ-विभाग का इंचार्ज था, लम्बा, खूबसूरत, फौजी चाल-ढाल। शराब पीने और औरतों के पीछे भागने के लिए वह बदनाम था।

किसी जमाने में फ़ाइलो छापेमार रहा था और अब भी वह डींग हाँकने का कोई मौका हाथ से जाने न देता था और बहुत हँस-हँसकर बतलाया करता था कि कैसे उसने माखनो डाकू के दर्जनों लोगों के सिर उड़ा दिये। पावेल को इस आदमी से सख्त नफरत थी। एक रोज एक कोमसोमोल लड़की पावेल के पास रोती हुई आयी और उसने बतलाया कि फाइलो ने उसको शादी करने का

वचन दिया था, मगर एक हफ्ते तक उसे अपने पास रखकर उसे छोड़कर चला गया और अब मुलाकात होने पर साधारण नमस्कार भी नहीं करता। जब यह मामला कंट्रोल कमीशन के सामने आया तो फ़ाइलो साफ बचकर निकल गया क्योंकि वह लड़की कोई प्रमाण न दे सकी। मगर पावेल को उसकी बात का विश्वास हो गया था। अब वह उन लोगों की बात सुन रहा था। वे लोग आपस में खुलकर बातें कर रहे थे और उन्हें पावेल की उपस्थिति का ज्ञान नहीं था।

'कहो फ़ाइलो, क्या हाल-चाल है? इधर तुमने कौन से नये गुल खिलाये?'

यह ग्रिबोव था, फ़ाइलो का लंगोटिया यार। किसी कारण से ग्रिबोव को अच्छा प्रचारक समझा जाता था गोकि वह बिलकुल अनपढ़, संकुचित दिमाग का और बेवकूफ आदमी था। मगर वह सब जो भी हो, ग्रिबोव को इस बात का गर्व था कि उसे प्रचार कार्यकर्त्ता कहा जाता है और वह हर मौके पर लोगों को इस बात की याद दिला ही देता।

'मुझे बधाई दो दोस्त। कल मैंने एक नयी फतह की है—कोरोतायेवा की। तुम कहते थे कि कोई नतीजा न निकलेगा। यही तो तुम्हारी गलती है यार। जब मैं किसी औरत का पीछा करूँ तो अच्छी तरह समझ लिया करो कि आगे-पीछे मैं उसे जरूर हथिया लूंगा,' फ़ाइलो ने घमंड से कहा और उसके साथ एक अश्लील बात कही।

पावेल के अन्दर जब कोई गहरी खलबली मचती तो उसका शरीर बुरी तरह काँपने लगता। इस वक्त भी उसका वही हाल हो रहा था। कोरोतायेवा महिलाओं के काम की देखभाल करती थी और उसके साथ ही एरिया कमेटी में आयी थी। पावेल जानता था कि कोरोतायेवा एक खुशदिल, लगनवाली पार्टी कार्यकर्ता है जो उन औरतों के साथ सहानुभूति का बरताव करती है जो उसके पास मदद के लिए और सलाह-मशविरे के लिए आती हैं। पावेल यह भी जानता था कि कमेटी के दूसरे लोग उसको आदर की दृष्टि से देखते थे। पावेल जानता था कि उसकी शादी नहीं हुई है और उसे कोई शक नहीं रहा कि फ़ाइलो उसी की बात कर रहा है।

'सुनाओ, फ़ाइलो, यह कैसे हुआ! उस औरत के बारे में इस बात पर यकीन नहीं आता। लगता है तुम यों ही उड़ा रहे हो।'

'मैं उड़ा रहा हूँ? तुमने मुझे समझा क्या है? मैंने इससे भी बड़े-बड़े मार्के सर किये हैं, यह छोकरी किस खेत की मूली है! सारी बात यह है कि तुमको काम करने का ढंग आना चाहिए। हर लड़की के पास पहुँचने का अलग ढंग होता है और वही मालूम हो जाय तो मामला फतह समझो। उनमें से

कुछ होती हैं जो फौरन अपने-आपको दे डालती हैं। मगर ऐसी लड़कियाँ किसी काम की नहीं होतीं। कुछ होती हैं जिन्हें पटाने में पूरा एक महीना लग जाता है। महत्व की बात यह है कि उनके मनोविज्ञान को समझ लेना चाहिए। कैसे उन पर हमला किया जाय, यही खास बात है। अरे यार, यह तो पूरा विज्ञान है, मगर मैं भी तो आखिर उसका एक पंडित हूँ। सारा विज्ञान घोखे बैठा हूँ। हो-हो-हो !'

फ़ाइलो अपनी ही बात पर बेइन्तहा मगन हो रहा था। उसका श्रोता उसे कुरेद रहा था ताकि वह उसको और भी रसभरी तफसीलें सुनाये।

कोर्चागिन उठ खड़ा हुआ। उसने कसकर अपनी मुट्ठी बन्द कर ली। उसका दिल जोरों से धड़क रहा था।

'मैं जानता था कि साधारण चारे से कोरोतायेवा को पकड़ने की कोई उम्मीद न थी। मगर मैं इस शिकार को छोड़ना न चाहता था, खासकर इसलिए कि मैंने ग्रिबोव से इसी चीज के लिए शराब की एक दर्जन बोतलों की शर्त बदी थी। इसलिए मैंने अन्दरूनी दाँव-पेंच का इस्तेमाल किया। मैं उससे मिलने के लिए एक-दो बार गया, मगर मैंने देखा कि उस पर कोई खास असर नहीं पड़ रहा है। इसके अलावा एक मुसीबत यह भी तो है कि मेरे बारे में दुनिया भर की बातें कही जा रही हैं और उनमें से कुछ बातें उसके कानों में भी पहुँची ही होंगी ...। संक्षेप में यह कि जब सीधा वार खाली गया, तो मैंने बगल से वार किया। हो-हो ! बड़ा मजा आया उसमें ! हाँ तो मैंने उसे अपनी करुण कहानी सुनायी कि कैसे मैं मोर्चे पर लड़ा, दुनिया भर में भटका और ठोकरें खायीं, मगर मुझे अपने मन की स्त्री न मिली और इसी तरह भटक रहा हूँ, एक अकेला आदमी जिसे कोई प्यार करनेवाला नहीं...और इसी तरह की बहुत सी बकवास। देखते हो न, मैं उसके मर्म की कमजोर जगह पर चोट कर रहा था। यह तो मुझे मानना ही चाहिए कि उसे फँसाने में काफी मुश्किल हुई। एक बार मैंने यह भी सोचा कि क्या रखा है इसमें, जाने भी दो साली को ! मगर अब तो सिद्धान्त की बात आ गयी थी और इसलिए मैंने निश्चय किया कि मैं मामले को यों ही अधूरा नहीं छोड़ सकता। कहने का मतलब कि आखिरकार मैंने उसे फतह कर ही लिया, और जानते हो ? वह कुमारी निकली, अक्षतयोनि कुमारी ! हा-हा ! बड़ा मजा आया !'

और इसी तरह फाइलो अपनी उस घिनौनी कहानी को सुनाता रहा।

पावेल गुस्से से उबलता हुआ फाइलो के बगल में जा पहुँचा था।

उसने गरजकर कहा, 'सुअर !'

'ओह, मैं सुअर हूँ और तुम क्या हो जो चोरी-चोरी दूसरों की बातें सुनते हो ?'

पावेल ने जरूर और भी कुछ कहा, क्योंकि फाइलो ने, जो होश में नहीं था, उसकी वर्दी को सामने से पकड़ लिया था।

'मेरा अपमान करने आये हो ?' वह चीखा और पावेल पर घूँसा चलाया।

पावेल ने बाँज की लकड़ी का बना हुआ एक भारी स्टूल उठा लिया और एक ही चोट में उसे ढेर कर दिया। फाइलो किस्मत का धनी था कि उस समय पावेल के पास अपना रिवाल्वर नहीं था नहीं तो वह मर ही गया होता।

मगर वह अजीब बेसिर-पैर का कांड हो ही गया। अतएव जिस दिन पावेल क्रीमिया के लिए रवाना होनेवाला था, उस दिन वह पार्टी की अदालत के सामने खड़ा था।

पार्टी के सभी लोग कस्बे के थियेटर हॉल में इकट्ठा हो गये थे। इस घटना से सब लोगों के अन्दर बड़ी खलबली मच गयी थी और मामले की सुनवाई, पार्टी की नैतिकता, उसके आचार-विचार और व्यक्तिगत सम्बंधों की एक गंभीर बहस में तब्दील हो गयी। इस मामले में जो सिद्धान्त की बातें निहित थीं, उनकी बहस के लिए इस मामले ने सिगनल का काम किया और खुद यह घटना गौण हो गयी। फाइलो ने बहुत ही उद्धत ढंग से आचरण किया, बड़ी दुष्टता से मुस्कराया और बोला कि इस मामले को जनता की अदालत के सामने ले जायगा और कोर्चागिन को उसका सिर फोड़ने के जुर्म में कड़ी मशक्कत की सजा मिलेगी। उसने किसी भी सवाल का जवाब देने से साफ इन्कार कर दिया।

'तुम मुझे लेकर गप-शप का मसाला पाना चाहते हो ? वह नहीं होने का। तुम मुझ पर चाहे जो भी अभियोग लगाओ, मगर सचाई यह है कि यहाँ की औरतें मुझसे खार खाये रहती हैं क्योंकि मैं उनको कुछ समझता ही नहीं। और तुम्हारा यह पूरा मामला तो बिल्कुल फिजूल की बकवास है। अगर यह १९१८ होता तो मैंने अपने ही तरीके से इस पागल कोर्चागिन से अपना झगड़ा सुलझा लिया होता। और अब आप मेरे बिना भी काम चला सकते हैं,' यह कहते हुए फाइलो हॉल से निकल गया।

तब चेयरमैन ने पावेल से घटना का विवरण देने के लिए कहा। पावेल ने काफी शांति से आरम्भ किया गोकि अपने को संयत रखने में उसे काफी कठिनाई हो रही थी।

'यह सारी घटना इसलिए हुई कि मैं अपने को काबू में नहीं रख सका। मगर वे दिन कब के विदा हो गये जब कि मैं अपनी अक्ल की बनिस्बत अपने हाथों से ज्यादा काम लिया करता था। इस बार जो चीज हुई है, वह एक आकस्मिक घटना है। मुझे याद भी नहीं कि मैंने कब और कैसे फाइलो को मारकर गिरा दिया। पिछले कई वर्षों में यह मेरी पहली 'छापेमार' कार्रवाई

है जिसका मैं दोषी हूँ और जिसकी मैं खुद भी निन्दा करता हूँ, गोकि मैं समझता हूँ कि फाइलो की हरकत इसी के योग्य थी। फाइलो घृणित आदमी है। मैं कभी नहीं समझ सकता और मैं कभी इस बात का विश्वास नहीं करूँगा कि एक क्रांतिकारी, एक कम्युनिस्ट ऐसा बदमाश और जालिम जानवर भी हो सकता है। इस मामले ने सिर्फ एक अच्छी बात की है और वह यह कि इसने हमारा ध्यान इस बात पर केन्द्रित कर दिया है कि हमारे सहयोगी कम्युनिस्ट कार्यकर्ता अपनी व्यक्तिगत जिन्दगी में कैसा आचरण करते हैं।'

सदस्यों के एक विशाल बहुमत ने इस प्रस्ताव के पक्ष में वोट दिया कि फाइलो को पार्टी से निकाल दिया जाय। ग्रिबोव को झूठी गवाही देने के जुर्म में कड़ी फटकार मिली और उसे चेतावनी दी गयी कि अगर फिर उसने कोई जुर्म किया, तो उसे भी पार्टी से निकाल दिया जायगा। बाकी लोगों ने, जो उस दिन की बातचीत में शरीक थे, अपनी गलती मान ली और उन्हें डाँटकर छोड़ दिया गया।

तब बार्तेलिक ने सभा को पावेल की स्नायविक स्थिति के बारे में बतलाया और सभा ने कड़े शब्दों में अपना विरोध व्यक्त किया जब इस मामले की छानबीन के लिए पार्टी की ओर से नियुक्त साथी ने प्रस्ताव रखा कि कोर्चागिन को भी चेतावनी दी जाय। उस साथी ने अपना प्रस्ताव वापस ले लिया और पावेल निर्दोष घोषित करके रिहा कर दिया गया।

कुछ राज बाद पावेल खारकोव के लिए रवाना हो गया। पार्टी की एरिया कमेटी ने आखिरकार उसका यह आग्रह मान लिया था कि उसे अपने मौजूदा काम से छुट्टी देकर उक्रेन के कोमसोमोल की केन्द्रीय समिति के साथ लगा दिया जाय। अकिम भी केन्द्रीय समिति का एक मंत्री था। खारकोव पहुँचते ही पावेल उससे मिलने गया और उसे पूरी कहानी सुनायी।

अकिम ने पावेल के सर्टिफिकेट पर नजर डाली। उसमें लिखा था कि वह 'पार्टी में असीम श्रद्धा रखता है', मगर साथ ही यह भी लिखा था : 'कुल मिलाकर वह सन्तुलित बुद्धि का कार्यकर्ता है, मगर कभी-कभी अपना आत्मसंयम खो बैठता है। इसका कारण उसकी स्नायविक बीमारी है।'

अकिम ने कहा, 'यह बात लिखकर उन्होंने एक अच्छे टेस्टीमोनियल को खराब कर दिया पावेल। मगर कोई बात नहीं दोस्त, ऐसी चीजें मजबूत से मजबूत आदमियों के साथ भी होती हैं। 'दक्षिण जाओ और अपनी सेहत बनाओ और जब तुम लौट आओगे तब हम तुम्हारे काम के बारे में बातें करेंगे।'

अकिम ने दिल खोलकर बड़ी मुहब्बत से उससे हाथ मिलाया।

केन्द्रीय समिति का कम्युनार्ड सेनेटोरियम। गुलाब की झाड़ियों के बागीचे के बीचोबीच सफेद इमारतें जिन पर लताएँ चढ़ी हुई हैं, और चमकते हुए फव्वारे और वहाँ छुट्टियाँ बिताने के लिए आये हुए लोग गर्मी के सफेद कपड़े और नहाने के चुस्त कपड़े पहने हुए। एक नौजवान डाक्टरनी ने उसका नाम रजिस्टर में दर्ज किया और वह कोनेवाली इमारत के एक बड़े कमरे में पहुँच गया। हंस के पर जैसे सफेद तकिये और बिस्तर की चादर, चारों ओर अत्यधिक स्वच्छता और शांति, पूर्ण शांति, कहीं कोई शोर-शराबा नहीं।

वह नहाकर ताजा हुआ और कपड़े बदल जल्दी-जल्दी समुद्र किनारे चला गया।

उसके सामने समुद्र फैला हुआ था, शांत, अत्यंत सुन्दर, शानदार मानो पॉलिश किये हुए संगमरमर का नीला-काला विस्तार दूर क्षितिज तक फैला हुआ हो। बहुत दूर पर, जहाँ समुद्र आकाश से मिलता था, नीला-सा कुहासा छाया हुआ था और उसकी सतह पर सूरज की लाल-लाल चमक फैली हुई थी। सबेरे के उस कुहासे के बीच से एक पर्वत श्रृंखला की रूपरेखा धुंधली-धुंधली दिखायी दे रही थी। पावेल ने गहरी साँस लेकर ताजी समुद्री हवा को अपने फेफड़ों में भरा और उस नीले विस्तार की असीम शांति को निर्निमेष देखता रहा।

एक लहर धीरे-धीरे उसके पैरों तक आयी और किनारे पर की सुनहरी बालू को छू गयी।

सोलह

सेंट्रल पोलिविलनिक का बागीचा केन्द्रीय समिति के सेनेटोरियम के मैदान से लगा हुआ था। केन्द्रीय समिति के सेनेटोरियम के मरीज समुद्र-किनारे से घर लौटते हुए उस बागीचे में से होकर गुजरते थे क्योंकि उधर से आने में कम चलना पड़ता था। पावेल को एक बड़े से चिनार के पेड़ की छाया में विश्राम करना बहुत अच्छा लगता था। यह पेड़ चूने के पत्थर की एक ऊँची दीवाल के बगल में उगा हुआ था। अपनी इस शांत जगह से वह बागीचे के रास्ते पर टहलते हुए लोगों को देख सकता था और शाम को अपने उस कोने में

बैठकर, उस बड़े सेनेटोरियम के मस्त लोगों की भीड़ के धक्के खाये बिना वह संगीत सुन सकता था।

आज भी वह अपनी चुनी हुई जगह पर पहुँच गया था। धूप, और समुद्र में नहाने के कारण उसे नींद सी मालूम हो रही थी और वह इतमीनान से आराम कुर्सी पर लेट गया और तन्द्रा में डूब गया। उसकी तौलिया और वह किताब, जो वह पढ़ रहा था, फुर्मानोव का 'विद्रोह', दोनों चीजें उसकी बगल में कुर्सी पर पड़ी हुई थीं। अभी सेनेटोरियम आने के अपने पहले दिनों में तो उसके स्नायुओं को फायदा नहीं पहुँचा था और उसके सिर का दर्द अब भी बदस्तूर चल रहा था। सेनेटोरियम के डाक्टर अब तक उसकी बीमारी को समझ नहीं पा रहे थे और परेशान थे, मगर वे बीमारी की जड़ को पकड़ने की कोशिश जरूर कर रहे थे। बार-बार की डाक्टरी जाँच से पावेल परेशान था। उससे उसको थकान मालूम होती थी और वह अपने वार्ड की डाक्टर से बचने की हर मुमकिन कोशिश करता था। उसके वार्ड की डाक्टर एक खुश-दिल औरत थी; वह पार्टी मेम्बर थी और उसका अजीब-सा नाम था, येरूसा-लिम्चिक। अपने इस मरीज को खोज निकालने में और उसे इस बात के लिए राजी करने में कि वह कभी एक विशेषज्ञ और कभी दूसरे विशेषज्ञ के यहाँ चले, उसे बहुत कठिनाई होती थी।

पावेल उससे याचना के स्वर में कहता, 'मैं तो इस चीज से तंग आ गया हूँ। दिन में पाँच बार मुझे वही कहानी दुहरानी पड़ती है और एक-से-एक बेहूदा सवालों का जवाब देना पड़ता है : क्या तुम्हारी दादी का दिमाग खराब था ? क्या तुम्हारे परदादा को गठिया हुआ था ? मुझे क्या मालूम कि उन्हें क्या हुआ था, क्या नहीं हुआ था ! मैंने तो उन्हें देखा तक नहीं। हर डाक्टर मुझे बहलाने की कोशिश करता है कि मैं मान लूं कि मुझे सूजाक या उससे भी कोई बुरी बीमारी हुई थी और ऐसे सवाल इतनी देर तक चलते रहते हैं कि मेरा जी होने लगता है कि उनके गंजे सिरों पर कसकर एक धौल जमा दूँ। मुझे आराम करने का मौका दो, मुझे किसी और चीज की जरूरत नहीं, बस आराम की जरूरत है। अगर पूरे छः हफ्ते, जब तक कि मुझे यहाँ रहना है, इसी तरह मेरा रोग-निदान चलता रहा, तो मैं निश्चय ही समाज के लिए एक खतरा बन जाऊँगा।'

येरूसालिम्चिक हँसती और उसके साथ मजाक करती, मगर फिर कुछ मिनट बाद बड़ी नरमी से उसकी बाँह पकड़ती और रास्ते भर बकबक करती हुई उसे सर्जन के पास ले जाती।

मगर आज कोई जाँच नहीं होनी थी और खाने में अभी घंटे भर की देर थी। तभी अपनी तंद्रा की अवस्था में उसने पास आते कदमों की आहट सुनी।

उसने आँखें नहीं खोलीं, 'वे सोचेंगे कि मैं सो रहा हूँ और चले जायँगे', उसने अपने मन में कहा। मगर यह कोरी दुराशा थी। उसने अपने पास की कुर्सी का चरमराना सुना और कोई उस पर बैठा। उसे इत्र की हलकी-सी खुशबू मिली जिससे उसने समझ लिया कि यह कोई औरत है। उसने आँखें खोलीं। पहली चीज जो उसने देखी वह एक चमचमाती हुई सफेद पोशाक थी। उसके साथ ही उसने नर्म चमड़े की स्लीपर पहने हुए पैर देखे, फिर लड़कों की तरह के कटे हुए बाल, दो बड़ी-बड़ी आँखें और सफेद दाँतों की एक पंक्ति, वैसे दाँत जो चूहे के दाँतों जैसे तेज नजर आते थे। वह स्त्री उसे देखकर कुछ झेंपी और मुस्करायी।

'मेरे यहाँ रहने से आपके आराम में खलल तो नहीं पड़ रही है?'

पावेल ने कोई जवाब नहीं दिया। यह शिष्टाचार के खयाल से कोई अच्छी बात न थी, मगर अब भी पावेल को उम्मीद थी कि वह चली जायगी।

'यह क्या आपकी किताब है?' वह 'विद्रोह' के पन्ने पलट रही थी।

'जी हाँ, मेरी ही है।'

क्षण भर को शांति छा गयी।

'कम्युनार्ड सेनेटोरियम में हैं न?'

पावेल बेचैनी से हिला। यह कैसी औरत है कि खामखाह परेशान कर रही है? वाह रे, यह तो खूब आराम हो रहा है। अभी देखना, वह मेरी बीमारी के बारे में सवाल पूछने लग जायगी। कोई चारा नहीं, मुझे यहाँ से जाना ही होगा।

उसने रुखाई से जवाब दिया, 'नहीं।'

'मेरा तो खयाल है, मैंने आपको वहाँ देखा है।'

पावेल उठने ही वाला था कि उसे अपने पीछे किसी स्त्री की एक गहरी और अच्छी लगनेवाली आवाज सुनायी दी।

'क्यों डोरा, तुम यहाँ क्या कर रही हो?'

एक मोटी-ताजी, धूप से तपे हुए रंग की, सुनहरे बालोंवाली लड़की समुद्र किनारे लेटने के कपड़े पहने हुए एक कुर्सी के छोर पर बैठ गयी थी। उसने तेजी से कोर्चागिन पर निगाह डाली।

'मैंने तुमको कहीं देखा है, कामरेड! तुम खारकोव के हो न?'

'हाँ।'

'कहाँ काम करते हो?'

पावेल ने इस बातचीत को खतम करने का फैसला किया।

उसने जवाब दिया, 'कूड़े-करकट की सफाई के विभाग में।' उसके इस मजाक पर जो हँसी हुई, उससे पावेल चौंक पड़ा।

'तुम्हें कोई यह दोष नहीं दे सकता कामरेड कि तुम जरूरत से ज्यादा शिष्ट हो !'

इसी तरह उनकी दोस्ती शुरू हुई। बाद में मालूम हुआ कि डोरा राद-किना खारकोव की पार्टी की शहर कमेटी ब्यूरो की मेम्बर थी और बाद में जब दोनों में दोस्ती हो गयी, तो वह अक्सर अपनी पहली मुलाकात की इस मजेदार घटना को लेकर पावेल को चिढ़ाया करती।

एक रोज तीसरे पहर थलासा सेनेटोरियम के मैदान की खुली जगह में संगीत का एक आयोजन हुआ और वहाँ पर पावेल की अचानक अपने पुराने दोस्त जार्की से मुलाकात हो गयी। और अजीब बात यह थी कि एक नाच के सिलसिले में उनकी मुलाकात हुई।

सबसे पहले एक अच्छी, खूबसूरत, भरे जिस्म की स्त्री ने अपनी पतली, सुरीली और तेज आवाज में, वह दिलफरेब गाना 'आह, हमारी वो रंग-रँगीली मद-भरी रातें !' बड़े मार्मिक स्वर में श्रोताओं को सुनाया। उसके बाद एक स्त्री और पुरुष कूदकर स्टेज पर आ गये। पुरुष एकदम नंगा था, बस उसके सिर पर एक लाल टॉप-हैट थी और कूल्हों पर कुछ चमकदार सलमा-सितारे, बदन पर एक चमकदार सफेद कमीज का सामने का हिस्सा और गले में बो-टाई, और कुल मिलाकर वह आदमी किसी हबशी की नकल मालूम हो रहा था। गुड़िये के-से चेहरे वाली उसकी संगिन ढेरों कपड़ों में लिपटी हुई थी। आराम कुर्सियों और खाटों पर सेनेटोरियम के मरीज बैठे थे और उनके पीछे मोटी-मोटी गर्दनोंवाले नेपमैनों की भीड़ बेहद मगन होकर तरह-तरह की आवाजें कर रही थी और वह जोड़ा स्टेज पर फॉक्स-ट्रॉट की ताल पर चक्कर लगा-लगाकर नाच रहा था। इससे ज्यादा घृणित दृश्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। वह मोटा थुलथुल आदमी घामड़ की तरह टॉप-हैट लगाये अपनी संगिन को कसकर अपने शरीर से चिपकाये ऐसी मुद्राओं में नाच रहा था जिसके अन्दर नंगे इशारे छिपे हुए थे। पावेल ने पीठ पीछे किसी मोटे थुलथुल आदमी की भारी साँस की एक गड़गड़ाहट सुनी। वह जाने के लिए मुड़ा ही था कि सामने बैठा हुआ कोई आदमी उठा और जोर से चिल्लाया :

'यह चकलों का तमाशा बन्द करो ! भाड़ में जाय !'

यह जार्की था।

पियानो बजानेवाले ने बजाना बन्द कर दिया और वायलिन एक पतली चीख की आवाज करके चुप हो गयी। सामने स्टेज पर नाचते हुए जोड़े ने नाच बन्द कर दिया जिसे देखकर नर-मादा कीड़ों की किलबिल का आभास मिलता

था। पीछे की भीड़ ने मारपीट पर उतारू ढंग से शोर मचाना शुरू किया।

'कैसी बदतमीजी है, बीच में लेकर नाच को रोक दिया !'

'सारा योरप नाच रहा है, एक इन्हीं को ...।'

'हद हो गयी बदतमीजी की !'

मगर सर्योजा जबानोव ने, जो चेरेपोवेत्स कोमसोमोल का मंत्री था और कम्युनार्ड सेनेटोरियम में रहता था, अपनी चार उँगलियाँ मुँह में डालीं और जोर से सीटी बजायी। दूसरों ने भी उसका अनुकरण किया और देखते-देखते वे दोनों नाचनेवाले स्टेज से ऐसे गायब हो गये जैसे हवा उन्हें उड़ा ले गयी हो। नाचनेवाली मंडली के खुशामदी सरदार ने, जो देखने में अर्दली मालूम होता था, एलान किया कि मंडली जा रही है।

पावेल सामने की कतार में पहुँचा और वहाँ जार्की से उसकी मुलाकात हुई। दोनों दोस्तों में बड़ी देर तक पावेल के कमरे में बातचीत होती रही। जार्की ने पावेल को बतलाया कि वह पार्टी की एक एरिया कमेटी के प्रचार-आन्दोलन विभाग में काम कर रहा है।

जार्की ने कहा, 'तुम्हें पता है या नहीं कि मेरी शादी हो गयी ? जल्दी ही मेरी बीवी को बच्चा होनेवाला है, पता नहीं लड़का है कि लड़की।'

पावेल ने आश्चर्य से कहा, 'शादी हो गयी ? किससे ?'

जार्की ने अपनी जेब से एक फोटो निकाली और पावेल को दिखायी।

'पहचानते हो ?'

यह उसकी और आना बोर्हार्ट की फोटो थी।

डोरा अन्दर आयी और अपने साथ और भी कई लोगों को लायी। उसने जार्की के जाकेट पर लगे हुए तमगे को देखा और पावेल से पूछा :

'क्या तुम्हारे यह साथी पार्टी मेम्बर हैं ? कहाँ काम करते हैं ?'

पावेल को कुछ हैरानी हुई, मगर उसने संक्षेप में उस लड़की को जार्की के बारे में बतलाया।

लड़की ने कहा, 'अच्छा, तब इनके रहने में कोई बुराई नहीं है। यह साथी अभी-अभी मास्को से आये हैं। यह हमको पार्टी की ताजी खबरें सुनायेंगे। हमने तय किया है कि तुम्हारे कमरे में चलकर एक छोटी-सी पार्टी मीटिंग की जाय,' उसने बात साफ की।

पावेल और जार्की को छोड़ बाकी वे सब पुराने बोल्शेविक थे। बार्ताशेव ने, जो मास्को कन्ट्रोल कमीशन का मेम्बर था, उन लोगों को उस नये विरोधी दल की बात बतलायी जिसके नेता त्रॉत्स्की, जिनोवियेव और कामेनेव थे।

बार्ताशेव ने अपनी बात खतम करते हुए कहा, 'ऐसे संगीन मौके पर हम सबको अपनी-अपनी जगह पर होना चाहिए। मैं कल यहाँ से जा रहा हूँ।'

पावेल के कमरे की इस मीटिंग के तीन दिन बाद सैनेटोरियम एकदम खाली हो गया। पावेल भी कुछ रोज बाद, अपना वक्त खतम होने के पहले ही वहाँ से चला गया।

कोमसोमोल की केंद्रीय समिति ने उसको अपने पास नहीं रोका। उसे कोमसोमोल का मंत्री बनाकर एक औद्योगिक इलाके में भेज दिया गया और हफ्ते भर में ही वह फिर स्थानीय संगठन की एक मीटिंग में बोल रहा था।

उसी पतझड़ के आखिरी दिनों में वह मोटर, जिसमें पावेल तथा दो और पार्टी कार्यकर्ता दूर के देहात जा रहे थे, एक खाई में जा गिरी और उलट गयी।

मोटर में बैठे हुए सभी लोगों को चोटें लगीं। पावेल का दाहिना घुटना पिस गया था। कुछ दिन बाद उसे खारकोव के सर्जिकल इन्स्टीच्यूट में ले जाया गया। जाँच के बाद और जख्मी घुटने का एक्सरे करके मेडिकल बोर्ड ने राय दी कि फौरन ऑपरेशन होना चाहिए।

पावेल ने स्वीकृति दे दी।

'तो फिर कल सबेरे,' उस मोटे प्रोफेसर ने कहा जो बोर्ड का प्रधान था। वह उठा और बाकी लोग भी उसके पीछे-पीछे चले गये।

एक छोटा खूब रोशनीदार वार्ड था जिसमें सिर्फ एक खाट पड़ी थी। वहाँ खूब सफाई थी और अस्पताल की वह खास गंध थी जिसे वह बहुत दिनों से भूला हुआ था। उसने आसपास निगाह डाली। खाट की बगल में एक छोटी मेज थी जिस पर बर्फ जैसा सफेद मेजपोश पड़ा हुआ था और उसके पास ही सफेद रोगन से पुता हुआ एक स्टूल था। और बस।

नर्स उसका खाना लायी। पावेल ने उसे लौटा दिया। अपने बिस्तर पर बैठकर वह चिट्ठियाँ लिख रहा था। घुटने का दर्द उसके विचार-क्रम को भंग कर रहा था और इसी दर्द के कारण उसकी भूख भी गायब हो गयी थी।

उसने अपनी चौथी चिट्ठी लिख ली थी, तभी दरवाजा धीरे से खुला और सफेद साया पहने और टोपी लगाये एक युवती उसके बिस्तर के पास आयी।

उस धुंधलके में पावेल ने उसकी नाजुक भवों और बड़ी-बड़ी आँखों को देखा जो काली नजर आ रही थीं। उसके एक हाथ में एक चमड़े का बैग था और दूसरे में एक पन्ना कागज और एक पेंसिल।

युवती ने कहा, 'मैं तुम्हारे वार्ड की डाक्टर हूँ। अब मैं तुमसे बहुत से सवाल पूछूँगी और तुम्हें अच्छा लगे चाहे न लगे, मुझको अपने बारे में सब कुछ बतलाना होगा।'

बड़े प्यारे ढंग से वह मुस्करायी और उसकी मुस्कराहट से पावेल के मन

से आनेवाली 'जिरह' का डर टूट गया। करीब एक घंटे तक पावेल उसको न सिर्फ अपने बारे में, बल्कि कई पुश्त पीछे तक के अपने तमाम रिश्तेदारों के बारे में बतलाता रहा।

ऑपरेशन थियेटर। लोग नाक पर और मुँह पर बारीक जालियाँ लगाये हुए थे। चमचमाते हुए निकेल के औजार, एक लम्बी संकरी-सी मेज, जिसके नीचे एक बड़ी-सी चिलमची रखी थी।

प्रोफेसर अभी हाथ धो रहा था जबकि पावेल ऑपरेशन टेबुल पर लेट गया। उसकी पीठ पीछे ऑपरेशन की तैयारियाँ जल्दी-जल्दी की जा रही थीं। उसने उधर को अपना सिर घुमाया। नर्स ऑपरेशन के तमाम औजार, नश्तर के चाकू और चिमटियाँ वगैरह निकालकर रख रही थी।

'इधर मत देखो कामरेड कोर्चागिन,' उसकी वार्ड डाक्टर बाजानोवा ने उसकी टाँग की पट्टी खोलते हुए कहा, 'यह स्नायुओं के लिए अच्छा नहीं पड़ता, खामखाह घबराहट मालूम होने लगती है।'

'किसके स्नायु और कैसी घबराहट, डाक्टर!' पावेल ने मजाक के ढंग से मुस्कराते हुए पूछा।

कुछ मिनट बाद उसके चेहरे पर एक भारी मास्क लगा दिया गया और उसने प्रोफेसर साहब की आवाज को कहते सुना :

'हम तुम्हें क्लोरोफार्म देने जा रहे हैं। नाक से लम्बी साँस लो और गिनती गिनना शुरू करो।'

'बहुत अच्छा,' मास्क के भीतर से एक घुट्टी हुई शांत आवाज ने जवाब दिया, 'बेहोशी की हालत में अगर मैं कोई बहुत भद्दी बात बोल बैठूं तो मैं नहीं जानता। मैं पहले से ही उसके लिए माफी माँग लेता हूँ।'

प्रोफेसर बरबस मुस्करा पड़ा।

क्लोरोफार्म की पहली बूंदें। वह दम घोंटनेवाली, घिनौनी गंध।

पावेल ने लम्बी साँस ली और जोर लगाकर साफ स्वर में गिनना शुरू किया। उसके जीवन के दुखान्त नाटक के पहले अंक का पर्दा उठ गया था।

आर्तेम ने लिफाफा फाड़ा और चिट्ठी की परतें खोलीं। पहली कुछ पंक्तियों पर उसने जोर से आँख गड़ायी और बाकी चिट्ठी को जल्दी-जल्दी पढ़ गया।

'आर्तेम! हम लोग एक-दूसरे को कितनी कम चिट्ठियाँ लिखते हैं, साल में मुश्किल से एक-दो बार! मगर कितनी बार लिखते हैं, यह तो मेरी समझ

में कोई बड़ी अहम बात नहीं है। तुमने लिखा है कि तुम अपने परिवार को लेकर शेपेतोवका से कजातिन के रेलवे यार्ड में पहुँच गये हो, क्योंकि तुम देहात से अपना सम्बंध काटना चाहते हो, वहाँ की जमीन से अपनी जड़ों को उखाड़ना चाहते हो। मैं जानता हूँ कि असल में वे जड़ें स्त्योशा और उनके सम्बंधियों की पिछड़ी हुई, निम्न-पूंजीवादी मनोवृत्ति में हैं। स्त्योशा की तरह के लोगों का पुनर्निर्माण कठिन काम है और मुझे आशंका है कि तुम भी इसमें सफल नहीं होगे। तुमने लिखा है कि अब इस बुढ़ापे में तुम्हें अध्ययन करने में काफी कठिनाई हो रही है, मगर मैं तो सोचता हूँ कि तुम्हारी प्रगति बुरी नहीं है। तुम जो कारखाने को छोड़ शहर की सोवियत के चेयरमैन का काम संभालने से बराबर इनकार करते जा रहे हो, यह बात ठीक नहीं है। बतलाओ कि क्या तुम इसी मजदूर राज के लिए लड़े थे या नहीं ? तब फिर अब उसे अपने हाथ में क्यों नहीं लेते ? कल ही तुम शहर की सोवियत का काम अपने हाथ में ले लो और उसमें जुट जाओ।

'अब मैं तुम्हें अपने बारे में बतलाऊँ। मेरे साथ कोई बड़ी गड़बड़ी हो गयी है। मैं बार-बार अस्पताल पहुँचने लगा हूँ। दो बार मेरा ऑपरेशन हो चुका है, काफी खून भी गया है और ताकत भी, कुछ पता नहीं चलता कि यह चीज कब खतम होगी।

'मैं अपने काम से अलग पड़ गया हूँ और अब एक नया ही धंधा मैंने अपना लिया है और वह धंधा यह है कि मैं मरीज हूँ। मुझे बहुत दर्द सहना पड़ता है और कुल मिलाकर इस सबका नतीजा यह है कि मैं अपने दाहिने घुटने को हिला भी नहीं सकता, मेरे शरीर के तमाम अंगों में नश्तर के तमाम घावों के निशान हैं और उसके बाद यह ताजी डॉक्टरी खोज सुनने को मिली है : सात बरस पहले मेरी रीढ़ की हड्डी में चोट लगी थी और अब उन लोगों का कहना है कि यह चोट मेरे लिए बहुत महंगी पड़ सकती है। मगर मैं कुछ भी सहने के लिए तैयार हूँ बशर्ते मैं लौटकर अपने मोर्चे पर फिर पहुँच सकूँ।

'जिंदगी में मेरे लिए इससे ज्यादा भयानक बात कोई नहीं है कि मैं अपनी फौज से कटकर अलग जा पड़ूँ। यह एक ऐसी संभावना है जिस पर विचार करने के लिए भी मैं कभी तैयार नहीं हो सकता। और इसलिए वे लोग मेरे साथ जो भी करना चाहते हैं, मैं सब कुछ उन्हें करने देता हूँ। मगर मेरी हालत में कोई सुधार नहीं हो रहा है और बादल रोज-ब-रोज और भी काले, और भी घने होते जा रहे हैं। पहले ऑपरेशन के बाद मैं जैसे ही चलने-फिरने के काबिल हुआ, फौरन अपने काम पर वापिस पहुँच गया। मगर कुछ ही दिन बाद वे लोग फिर मुझे यहाँ ले आये। अब मुझे योपेतोरिया

के एक सेनेटोरियम में भेजा जा रहा है। मैं कल यहाँ से चला जाऊँगा। मगर उदास मत हो आर्तेम, तुम जानते हो कि मैं जल्दी हार माननेवाला आसामी नहीं हूँ। मुझमें तीन आदमियों के बराबर प्राण-शक्ति है। मेरे भाई, अभी तुमको और मुझको बहुत काम करना है। अब तुम अपनी सेहत की फिक्र करो, बूते से बाहर अपनी ताकत को खर्च न करो क्योंकि सेहत की मरम्मत की भारी कीमत पार्टी को चुकानी पड़ती है। वह सारा तजुर्बा जो हमें काम के दौरान में मिलता है, और ज्ञान जो हमें अध्ययन से मिलता है, बड़ी अनमोल चीजें हैं और उन्हें इस तरह अस्पताल में बंद रहकर बर्बाद नहीं किया जा सकता। प्यार के साथ ... —पावेल'

जिस वक्त आर्तेम, माथे पर झुर्रियाँ डाले अपने भाई का खत पढ़ रहा था, पावेल अस्पताल में डाक्टर बाजानोवा से विदा हो रहा था।

युवती ने पावेल के हाथ में अपना हाथ देते हुए कहा, 'तो कल तुम क्राइमिया के लिए रवाना हो जाओगे? बाकी दिन भर तुम्हें क्या करना है?'

पावेल ने जवाब दिया, 'कामरेड रादकिना थोड़ी देर में यहाँ आनेवाली हैं। वह मुझे अपने परिवारवालों से मिलाने के लिए अपने घर ले जायेंगी। रात मैं वहीं गुजारूँगा और कल वही मुझे स्टेशन ले जायेंगी।'

बाजानोवा डोरा को जानती थी क्योंकि वह पावेल से मिलने कई बार अस्पताल आयी थी।

'मगर कामरेड कोर्चागिन, क्या तुम अपने वायदे को भूल गये कि जाने से पहले एक बार मेरे पिता से मिलोगे? मैंने उनको तुम्हारी बीमारी के बारे में विस्तार से बताया है और मैं चाहती हूँ कि वह एक बार तुम्हारी जाँच कर लें। क्या आज शाम को नहीं हो सकता?'

पावेल ने फौरन उसकी बात मान ली।

उसी शाम को बाजानोवा पावेल को अपने पिता के बड़े और साफ-सुथरे दफ्तर में ले गयी।

उस मशहूर सर्जन ने बड़ी सावधानी से पावेल की जाँच की। उनकी बेटी क्लिनिक से पावेल के एक्सरे की तमाम तसवीरें और रिपोर्ट लेती आयी थी। पावेल ने भी लक्ष्य किया कि जब बाजानोवा के पिता ने लैटिन में कोई बात कही, तो उसका चेहरा अचानक पीला पड़ गया। पावेल ने अपने ऊपर झुके हुए प्रोफेसर के बड़े गंजे सिर को बहुत गौर से देखा और उनकी तेज आँखों में अपने सवाल का जवाब ढूँढ़ने की कोशिश की। मगर बाजानोवा के चेहरे के भाव से उसे कुछ पता न चल सका।

पावेल ने कपड़े पहन लिये तो प्रोफेसर ने बड़ी आजिजी से उससे छुट्टी ली और बतलाया कि उन्हें एक सम्मेलन में जाना है और अपनी जाँच का नतीजा पावेल को बतलाने का काम अपनी लड़की पर छोड़ दिया।

पावेल बाजानोवा के खूबसूरती से सजे हुए कमरे में कोच पर लेटा हुआ डॉक्टरनी के बोलने का इंतजार कर रहा था। मगर बाजानोवा की समझ में नहीं आ रहा था कि बात कैसे शुरू करे। उसकी हिम्मत नहीं पड़ रही थी कि उसके पिता ने जो कुछ उसे बतलाया था, उसको दुहरा दे—कि दवाइयाँ अब तक पावेल के शरीर में होनेवाली घातक सूजन की रोक-थाम नहीं कर सकी थीं। प्रोफेसर साहब ऑपरेशन के हक में नहीं थे। 'इस नौजवान को लकवे का खतरा है और इस दुखदायी बात को रोकना हमारी ताकत के बाहर है।'

न तो डाक्टर की हैसियत से और न दोस्त की हैसियत से ही उसने पूरी बात पावेल को बतलाना ठीक समझा। इसलिए थोड़े से शब्दों में उसने पावेल को सचाई का एक अंश ही बतलाया।

'मुझे यकीन है कामरेड कोर्चागिन कि योपेतोरिया की गीली मिट्टी से तुम्हें फायदा होगा और पतझड़ आते-आते तुम अपने काम पर लौट सकोगे।'

मगर वह भूल गयी थी कि पावेल की तेज आँखें उसे गौर से देख रही थीं।

'तुम जो कुछ कह रही हो, बल्कि यों कहूँ कि जो कुछ तुमने नहीं कहा है, उससे मैं समझ रहा हूँ कि मेरी हालत संगीन है। याद करो, मैंने तुमसे कहा था कि मुझे खोलकर पूरी बात बतला दिया करना। मुझसे कुछ छिपाने की जरूरत नहीं है। सुनकर न तो मैं बेहोश हो जाऊँगा और न अपना गला ही काटने की कोशिश करूँगा। मगर यह मैं जरूर जानना चाहता हूँ कि मुझे आगे अभी और क्या भुगतना है।'

बाजानोवा जी को खुश करनेवाली दिल्लगी की बात कहकर सीधे जवाब को बचा गयी और पावेल को उस रात सच्ची बात नहीं मालूम हो सकी।

विदा होते समय डाक्टर ने धीमे से कहा, 'मेरी दोस्ती को मत भूल जाना, कामरेड कोर्चागिन। कौन जाने हमारे लिए जिन्दगी में कब क्या होना है। अगर कभी तुम्हें मेरी मदद या मेरे सलाह-मशविरे की जरूरत पड़े, तो मुझे लिखना। मैं जो कुछ भी तुम्हारे लिए कर सकूँगी, जरूर करूँगी।'

खिड़की में से उसने उस लम्बी, चमड़े का कोट पहनी हुई, आकृति को छड़ी का सहारा लेकर बहुत दर्द के साथ दरवाजे से बस तक जाते देखा जो उसका इंतजार करती खड़ी थी।

एक बार फिर योपेतोरिया की गरम दक्खिनी धूप। धूप से संवलाये हुए, शोर मचाते लोग, बेल-बूटेदार टोपियाँ लगाये हुए। मोटर का दस मिनट का

सफर नये आनेवालों को चूने के पत्थर की बनी एक दुमंजिला भूरी इमारत पर ले आया — यह माइनाक सेनेटोरियम था।

ड्यूटी पर तैनात डाक्टर को जब यह मालूम हुआ कि पावेल के रहने की जगह उक्रेन की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने रिजर्व की है, तो वह उसे ग्यारह नम्बर के कमरे में ले गया।

'मैं तुम्हें कामरेड एबनर के साथ रखूँगा। वह जर्मन हैं और उन्होंने अपने कमरे में एक रूसी साथी की माँग की है,' डाक्टर ने दरवाजे पर दस्तक देते हुए कहा। भीतर से किसी जर्मन की आवाज सुनायी दी, 'आ जाओ।'

पावेल ने अपना सफरी थैला रख दिया और उस सुनहले बालों और चमकती हुई नीली आँखों वाले आदमी की तरफ मुड़ा जो बिस्तर पर लेटा हुआ था। उस जर्मन ने मुहब्बत-भरी मुस्कराहट से उसका स्वागत किया।

जर्मन ने पहले अपनी भाषा में उसका अभिवादन किया, मगर फिर अपने को सुधारते हुए रूसी में कहा, 'दिन मुबारक हो,' और अपनी लम्बी-लम्बी उंगलियों वाला पीला हाथ पावेल की तरफ बढ़ाया।

कुछ क्षण बाद पावेल उसके बिस्तर के पास बैठा हुआ था और दोनों 'अन्तर्राष्ट्रीय भाषा' में घुट-घुटकर बातें कर रहे थे, उस भाषा में जिसमें शब्दों का महत्त्व गौण होता है और कल्पना, मुद्राएँ और संकेत — अलिखित भाषा के वे सारे माध्यम — शब्दों की कमी को पूरा कर देते हैं।

पावेल को मालूम हुआ कि एबनर एक जर्मन मजदूर था जिसे १९२३ के हाम्बुर्ग विद्रोह में कूल्हे पर चोट लगी थी। वह पुराना जख्म फिर खुल गया था और इसीलिए वह बिस्तर पकड़ने पर मजबूर हुआ था। वह प्रसन्न चित्त से अपनी सारी यातनाओं को सह रहा था और इसीलिए तत्काल पावेल का मन उसके लिए आदर से भर उठा।

उससे अच्छे साथी की आकांक्षा पावेल नहीं कर सकता था। सबसे अच्छी बात उसमें यही थी कि सुबह से लेकर रात तक वह अपनी तकलीफों और बीमारियों का दुखड़ा न रोयेगा। इसके विपरीत, उसकी संगत में आदमी खुद अपनी तकलीफ को भूल जा सकता था।

'मगर कितनी बुरी बात है कि मुझे जर्मन नहीं आती,' पावेल ने खिन्न होते हुए सोचा।

सेनेटोरियम के मैदान के एक कोने में कुछ 'झूलनेवाली कुर्सियाँ,' बाँस की एक मेज और दो लम्बी आरामकुर्सियाँ रखी हुई थीं। इसी जगह पर ये पाँच मरीज, जिन्हें बाकी लोग 'कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की कार्यकारिणी' के नाम से पुकारते थे, इलाज के बाद अपना समय गुजारा करते थे।

एबनर आरामकुर्सी पर अधलेटा पड़ा था। पावेल भी, जिसे टहलने की

मनाही थी, दूसरी कुर्सी पर लेटा हुआ था। इनके अलावा उस टोली के बाकी तीन सदस्य थे : वाइमान, जो एस्तोनिया का रहनेवाला एक मोटा-तगड़ा मजदूर था, और वाणिज्य-व्यापार की कमसारियट में काम करता था; मार्ता लॉरिन, जो एक नौजवान, भूरी आँखों की, लतविया की रहनेवाली स्त्री थी और देखने में अठारह साल की लड़की मालूम होती थी, और लम्बा-तगड़ा साइबेरियन लेदेनेव, जिसकी कनपटी के बाल पक चले थे। इस छोटी-सी टोली में वस्तुतः पाँच भिन्न जातियों के प्रतिनिधि थे— जर्मन, एस्तोनियन, लतवियन, रूसी और उक्रेनियन। मार्ता और वाइमान जर्मन जबान बोलते थे और एबनर उनसे दुभाषिये का काम लेता था। पावेल और एबनर दोस्त थे क्योंकि दोनों एक ही कमरे में रहते थे; मार्ता, वाइमान और एबनर भी दोस्त थे क्योंकि उनकी जबान एक थी। लेदेनेव और कोर्चागिन के बीच दोस्ती का आधार शतरंज थी।

लेदेनेव के आने से पहले कोर्चागिन सेनेटोरियम में शतरंज का चैम्पियन था। उसने बड़ी कठिन लड़ाई के बाद वाइमान से यह पद जीता था। अपनी हार से उस मोटे एस्तोनियन को काफी धक्का-सा लगा था और बहुत दिन तक वह कोर्चागिन को इस बात के लिए माफ नहीं कर सका कि उसने उसको हराया था। मगर एक रोज एक लम्बा आदमी सेनेटोरियम में आया जो अपनी पचास बरस की उम्र को देखते हुए बहुत ही नौजवान नजर आता था। उसने कोर्चागिन से शतरंज की एक बाजी खेलने के लिए कहा। पावेल को इस बात का कोई गुमान नहीं था कि कैसे खिलाड़ी से उसका पाला पड़ा है, इसलिए उसने बड़े इतमीनान से एक ऐसी चाल चली जिससे जाहिरा तो उसका वजीर कट जाता था, मगर दूसरे खिलाड़ी की मात हो जाती थी। लेदेनेव मंजा खिलाड़ी था, इसलिए वह मजे में चाल समझ गया और उसका जवाब उसने बीच के पैदलों को आगे बढ़ाकर दिया। चैम्पियन की हैसियत से पावेल को हर नये आनेवाले के साथ बाजी खेलनी पड़ती थी और खेल में दिलचस्पी रखनेवाले बहुत से दर्शक शतरंज की बिसात के इर्द-गिर्द खड़े हो जाते थे। नवीं चाल के बाद पावेल ने महसूस किया कि उसका विरोधी बराबर अपने पैदलों को आगे बढ़ाता हुआ उसके खेल को अपंग करके रखे दे रहा है। अब पावेल की समझ में आया कि खतरनाक खिलाड़ी से उसका पाला पड़ा है और उसे मन में दुख होने लगा कि वह शुरू में इतनी लापरवाही से क्यों खेला।

तीन घंटे तक उनकी लड़ाई चली और इस बीच पावेल ने पूरा जोर लगाया। आखिरकार उसे हार माननी पड़ी। दर्शकों के बहुत पहले ही उसने इस बात को देख लिया था कि उसकी हार लाजमी है। उसने अपने विरोधी की ओर नजर उठायी और देखा कि लेदेनेव विजेता-सुलभ मुस्कराहट से उसकी

ओर देख रहा है। स्पष्ट था कि उसने भी देख लिया था कि बाजी का क्या अन्त होनेवाला है। वह एस्तोनियन भी देख रहा था जिसे पावेल ने हराया था। वह बड़े गौर से खेल को देख रहा था और अपनी इस ख़ाहिश को छिपा भी नहीं रहा था कि कोर्चागिन हार जाय। मगर अभी उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि ऊँट किस करवट बैठनेवाला है।

'मैं हमेशा अपने आखिरी पैदल तक खेल खेलता हूँ और हार नहीं मानता', पावेल ने कहा और लेदेनेव ने उसके समर्थन में अपना सिर हिलाया।

पाँच दिन में पावेल ने लेदेनेव के साथ दस बाजी खेली जिनमें से सात वह हारा, दो जीता और एक में बाजी बराबरी पर छूट गयी।

वाइमान बहुत खुश था।

'शुक्रिया, शुक्रिया, कामरेड लेदेनेव! उसकी तुमने अच्छी मरम्मत की! उसको इसी की जरूरत थी! उसने हम सब पुराने खिलाड़ियों को हराकर नाक में दम कर दिया था और आखिरकार उसे एक पुराने खिलाड़ी से हार खानी ही पड़ी। हा...हा!'

पहले के विजयी और अब के हारे हुए पावेल को चिढ़ाते हुए उसने कहा, 'कहो, हारने में कैसा लगता है?'

लेदेनेव के आने से पावेल का चैम्पियन का पद तो छिन गया, मगर उसे एक दोस्त जरूर मिल गया जो आगे चलकर उसके लिए बहुत अनमोल साबित हुआ। अब उसकी समझ में आया कि शतरंज में उसकी हार स्वाभाविक ही थी। शतरंज के दाँव-पेंच की उसकी जानकारी बहुत उथली थी। और उसने एक ऐसे खिलाड़ी के हाथ हार खायी थी जिसे खेल के सारे राज़, खेल के दाँव-पेंच का पूरा रहस्य मालूम था।

कोर्चागिन और लेदेनेव को पता चला कि उनकी जिन्दगी में एक तारीख समान थी : पावेल जिस साल पैदा हुआ था, उसी साल लेदेनेव पार्टी में दाखिल हुआ था। दोनों अपनी-अपनी जगह पुराने और नये बोल्शेविकों के ठेठ प्रतिनिधि थे। एक के पीछे गहरे राजनीतिक कामों की, हलचलों की लम्बी जिंदगी थी, अंडरग्राउंड आंदोलन में छिप-छिपकर कई साल का काम और जारशाही की कैदें और उन सबके बाद महत्व का सरकारी काम; दूसरे के पीछे थी उसकी जलती हुई जवानी और सिर्फ आठ साल का संघर्ष। मगर ये आठ साल ऐसे थे जो एक पूरी जिन्दगी को जलाकर खाक कर देने के लिए काफी थे। और ये दोनों, जिनमें से एक बूढ़ा था और दूसरा नौज़वान, जिन्दगी से बेहद प्यार करते थे, मगर उनकी तंदुरुस्ती टूटी हुई थी।

शाम के वक्त एबनर और कोर्चागिन का कमरा क्लब जैसा बन जाता था। सारी राजनीतिक खबरें यहीं से शुरू होती थीं। कमरा कहकहों और

बातचीत से गूंजता रहता। वाइमान अक्सर बातचीत में छोटा-मोटा गंदा लतीफा घुसेड़ने की कोशिश करता। मगर हमेशा दो तरफ से उसके ऊपर हमला होता, मार्ता की तरफ से और कोर्चागिन की तरफ से। आम तौर पर मार्ता कोई तेज व्यंगपूर्ण बात कहकर उसका मुँह बन्द करने में कामयाब होती। मगर जब उससे काम न चलता तो कोर्चागिन को दखल देना पड़ता।

मार्ता कहती, 'वाइमान, तुम्हारा मजाक हमें कुछ पसंद नहीं आता।'

कोर्चागिन गुस्से में भरते हुए कहता, 'मेरी समझ में नहीं आता कि तुम्हारे मुँह से ऐसी गंदी बात क्योंकर निकलती है।'

वाइमान अपना मोटा निचला होंठ निकालकर अपनी छोटी-छोटी आँखों में व्यंग्य की चमक भरकर देखता।

'हमें राजीनितक शिक्षा-विभाग के अन्तर्गत एक सदाचार का विभाग भी खोलना पड़ेगा और मैं प्रस्ताव करता हूँ कि कोर्चागिन को उसका चीफ इंस्पेक्टर बनाया जाय। मार्ता क्यों आपत्ति करती है, यह बात मेरी समझ में आ सकती है, क्योंकि वह स्त्री है और विरोध करना उसका धर्म है। मगर कोर्चागिन तो खामखा भोला बनने की कोशिश करता है, जैसे वह कोई नन्हा-सा कोमसोमोल बच्चा हो और जंगल में खो गया हो ... इतना ही नहीं, खास आपत्ति तो मुझे इस बात पर है कि अंडा मुर्गी को पाठ पढ़ाने की कोशिश कर रहा है!'

कम्युनिस्ट नैतिकता के सवाल पर गरमागरम बहस हुई और उसके बाद गंदे मजाकों के मसले पर सिद्धांत की दृष्टि से बहस की गयी। लोगों की अलग-अलग रायों को मार्ता ने अनुवाद करके एबनर को बतलाया।

एबनर ने कहा, 'ये गंदे लतीफे अच्छे नहीं कहे जा सकते। मैं पावेल से सहमत हूँ।'

वाइमान को मजबूर होकर पीछे हटना पड़ा। उसने भरसक इस मामले को हँसकर उड़ाने की कोशिश की। मगर इतना हुआ कि इसके बाद उसने फिर कभी अपने गंदे लतीफे नहीं सुनाये।

पावेल ने मार्ता को कोमसोमोल का मेम्बर समझा था क्योंकि उसका खयाल था कि वह उन्नीस से ज्यादा की न होगी। उसे यह जानकर बड़ा अचरज हुआ कि वह १९१७ से पार्टी में थी, उसकी उम्र इकतीस साल की थी और वह लतविया की कम्युनिस्ट पार्टी की बहुत सक्रिय मेम्बर थी। १९१८ में क्रांति-विरोधी श्वेत-रूसियों ने उसको गोली से उड़ाने की सजा दी थी, मगर वह बच गयी क्योंकि जब कैदियों की अदला-बदली हुई तो कुछ और साथियों के साथ वह सोवियत सरकार के हवाले कर दी गयी। इन दिनों वह 'प्रावदा' के सम्पादकीय विभाग में काम कर रही थी और इसके साथ ही यूनीवर्सिटी में पढ़ रही थी। न जाने कब उसके और पावेल के बीच दोस्ती

पैदा हो गयी और वह छोटी-सी लतवियन स्त्री, जो अक्सर एबनर से मिलने आया करती थी, इन पाँचों की टोली का एक जरूरी अंग बन गयी।

इस मामले को लेकर एग्लिट, जो लतविया का एक अंडरग्राउंड कार्यकर्ता था, उसे अक्सर चिढ़ाया करता था, 'अब उस बेचारे ओजोल का क्या होगा जो मास्को में घर पर बैठा तुम्हारे लिए आहें भर रहा है? अरे मार्ता, यह तुमने क्या गजब किया?'

एक रोज सुबह को, बिस्तर छोड़ने की घंटी बजने से ठीक पहले, एक मुर्गे ने सेनेटोरियम में जोर से बांग दी। उसकी आवाज सुनकर परेशान नौकर इधर-उधर उस चिड़िया की तलाश में दौड़ने लगे जिसने यह गलत काम किया था। उनको इस बात का खयाल भी नहीं आया कि एबनर ने, जो मुर्गे की बांग की हूबहू नकल कर लेता था, उनको हैरान करने के लिए ऐसा किया था। कई रोज तक सुबह यही चीज होती रही और एबनर इस चीज का मजा लेता रहा।

सेनेटोरियम में अपने महीने भर रहने के आखिरी दिनों में पावेल की हालत और खराब हो गयी। डाक्टरों ने उसे बिस्तर पर लेटे रहने का आदेश दिया। एबनर को इससे बड़ी बेचैनी हुई। वह इस हिम्मती नौजवान बोल्शेविक से बहुत प्यार करने लगा था, जिसमें इतना जीवन और इतना उत्साह था और जो इतनी कच्ची उम्र में अपनी सेहत खो बैठा था। और जब मार्ता ने एबनर को बतलाया कि कोर्चागिन के भविष्य के बारे में डाक्टर कैसी दर्दनाक बात कहते हैं, तो एबनर को सख्त तकलीफ हुई।

बाकी जितने दिन पावेल सेनेटोरियम में रहा, उसमें वह लगातार बिस्तर पर ही पड़ा रहा। वह अपने आसपास के लोगों से अपनी तकलीफ छिपा लेता था और अकेले मार्ता उसके चेहरे की भयानक जर्दी से भांप जाती थी कि उसे बहुत दर्द हो रहा है। अपने जाने के एक हफ्ता पहले पावेल को उक्रेनियन केन्द्रीय समिति का खत मिला जिसमें लिखा था कि डाक्टरों की सलाह के अनुसार उसकी छुट्टी और दो महीने बढ़ायी जाती है क्योंकि उनका कहना है कि वह काम करने के अयोग्य है। खत के साथ ही खर्चे के लिए पैसा आया।

पावेल ने इस पहली चोट को उसी तरह सह लिया जिस तरह उसने बरसों पहले घूंसेबाजी का सबक लेते हुए जुखराई के घूंसे खाये थे। तब भी वह गिर पड़ा था, मगर फौरन ही फिर उठ खड़े होने के लिए।

उसको माँ की एक चिट्ठी मिली जिसमें उसने पावेल को यह लिखा था कि वह जाकर उसकी एक पुरानी दोस्त से मिल आये। इस दोस्त का नाम अलबिना क्युत्सम था। वह योपेतोरिया के पास ही समुद्र के किनारे एक छोटे से कस्बे में रहती थी। पावेल की माँ अपने दोस्त से पन्द्रह साल से नहीं मिली

थी और उसने पावेल से बहुत अनुरोध किया था कि जब तक वह क्राइमिया में है, उसी बीच जाकर उससे मिल ले। इस चिट्ठी ने पावेल की जिन्दगी में आगे चलकर बहुत महत्त्व की भूमिका अदा की।

एक हफ्ते बाद उसके सेनेटोरियम के दोस्तों ने उसे जहाज के घाट पर जाकर बहुत मोहब्बत से विदा किया। एबनर ने भाई की तरह गले से लगाया और चूमा। मार्ता उस वक्त कहीं गयी हुई थी और पावेल बिना उससे विदा लिये हुए ही चला गया।

दूसरे रोज सुबह जब वह घाट पर पहुँचा, तो घोड़ागाड़ी उसे एक छोटे से मकान में ले गयी जिसके सामने एक वैसा ही छोटा-सा बगीचा था।

क्युत्सम परिवार में पाँच लोग थे : माँ अलबिना, जो एक अधेड़ स्थूल-काय स्त्री थी और जिसकी आँखें काली और उदास थीं। उसके बूढ़े हो रहे चेहरे पर पुराने सौन्दर्य की निशानियाँ थीं। माँ के अलावा उस परिवार में थीं दो बेटियाँ — लोला और ताया; लोला का नन्हा-सा बेटा और बूढ़ा क्युत्सम, जो घर का स्वामी था। बूढ़ा क्युत्सम मोटा-सा चिड़चिड़ा आदमी था और देखने में सुअर-जैसा था।

बूढ़ा क्युत्सम कोऑपरेटिव स्टोर में काम करता था। छोटी लड़की ताया जो भी काम हाथ लग जाय, करती थी और लोला, जो टाइपिस्ट रह चुकी थी, हाल ही में अपने पति से अलग हुई थी। उसका पति शराबी और बदमिजाज आदमी था। लोला अब घर पर रहकर अपने छोटे से लड़के की देखभाल करती थी और घर के काम में अपनी माँ का हाथ बँटाती थी।

इन दो बेटियों के अलावा घर में एक बेटा भी था जिसका नाम जॉर्ज था और जो उस वक्त, जब पावेल वहाँ पहुँचा तब लेनिनग्राद में था।

घरवालों ने पावेल का हार्दिक स्वागत किया। सिर्फ बुड्ढे ने अतिथि को सन्देह और शत्रुता की आँखों से देखा।

पावेल ने धैर्यपूर्वक अलबिना को अपने घर के बारे में सारी खबरें बतायीं और उसके जवाब में उसे भी क्युत्सम के कुनबे की जिन्दगी के बारे में बहुत कुछ जानने का मौका मिला।

लोला बाईस बरस की थी। वह एक सीधी-सादी लड़की थी जिसके भूरे बाल कटे हुए थे। उसका चौड़ा-सा खुला हुआ चेहरा था और उसने फौरन पावेल को अपना अन्तरंग बना लिया और उसे अपने घर के सारे राज़ बतला दिये। उसने बतलाया कि बुड्ढा निरंकुश राजा की तरह पूरे परिवार पर शासन करता है और घर के लोगों में किसी भी तरह की स्वतंत्रता की भावना के आते ही फौरन उसे दबा देता है। वह संकीर्ण बुद्धि का, कट्टर और जिद्दी आदमी था और घरवालों को आतंकित करके रखता था। इसी वजह से घर

के सारे बच्चे उससे बहुत चिढ़ते थे और उसकी बीवी उससे नफरत करती थी। उसकी बीवी ने पच्चीस साल तक उसकी निरंकुशता के खिलाफ संघर्ष किया मगर कोई नतीजा न निकला। लड़कियाँ हमेशा अपनी माँ का साथ देती थीं। घर में होनेवाले उन रोज-रोज के झगड़ों ने उनकी जिन्दगी में जहर घोल दिया था। दिन-के-दिन गुजर जाते थे और झगड़े, गाली-गुफ्ता, तू-तू मैं-मैं खत्म ही न होने आते थे।

लोला ने पावेल को बतलाया कि घर की जिन्दगी का एक और पाप उसका भाई जॉर्ज था जो एक बिलकुल नाकारा, ज़ीटियल, घमंडी लड़का था, जिसे अच्छे खाने, तेज शराबों और ठाठदार कपड़ों के अलावा और किसी चीज की फिक्र न थी। स्कूल की पढ़ाई खतम करने पर जॉर्ज ने ऐलान किया कि वह राजधानी जा रहा है और उसने अपने इस सफर के लिए पैसे माँगे।

'मैं यूनीवर्सिटी में जा रहा हूँ। लोला अपनी अंगूठी बेच सकती है और तुम्हारे पास भी कुछ चीजें हैं जिन्हें गिरवी रखकर तुम पैसे पा सकती हो। मुझे पैसों की जरूरत है और मुझे इससे बहस नहीं कि तुम कहाँ से उन पैसों को लाती हो।'

जॉर्ज को अच्छी तरह मालूम था कि उसकी माँ कभी किसी चीज के लिए उससे इनकार नहीं करेगी और इसलिए वह अपने प्रति माँ के प्यार का बेजा फायदा उठाता था। अपनी बहनों के साथ उसका बर्ताव ऐसा था जैसे वे उसके सामने कुछ न हों, जैसे वे उसकी बाँदियाँ हों। माँ अपने पति से जो भी पैसे खींचतान कर निकाल पाती थी, उन्हें अपने बेटे के पास भेज देती थी और उसके अलावा ताया जो कुछ भी कमाती थी वह भी। इस बीच जॉर्ज मैट्रिक की परीक्षा में फेल होकर अब लेनिनग्राद में मजे उड़ा रहा था। वह अपने मामा के साथ रहता था और बार-बार तार से पैसे मँगा-मँगाकर अपनी माँ को सताया करता था।

पावेल जिस रोज वहाँ पहुँचा, उस रोज कहीं रात में जाकर उसकी मुलाकात ताया से हुई। उसकी माँ अपनी बेटी से मिलने के लिए झट से बाहर हॉल वाले रास्ते में गयी और पावेल ने माँ को फुसफुसाकर उसके आने की खबर अपनी बेटी को देते सुना। उस लड़की ने शर्माते हुए इस अपरिचित नौजवान से हाथ मिलाया और मारे शर्म के उसका चेहरा लाल हो गया। पावेल काफी देर तक उसके मजबूत, घट्ठोंवाले हाथ को अपने हाथ में लिये रहा।

ताया उन्नीसवें साल में चल रही थी। वह खूबसूरत न थी, मगर फिर भी उसकी बड़ी-बड़ी भूरी आँखें और उसका मंगोलों जैसा चेहरा, अच्छी-सी नाक और भरे हुए ताजे होंठ, इन सबको मिलाकर वह आकर्षक लगती थी। धारीदार ब्लाउज के नीचे उसकी कसी हुई जवान छातियाँ उभरी हुई थीं।

दोनों बहनों के पास अपनी-अपनी दो छोटी-छोटी कोठरियाँ थीं। ताया के कमरे में लोहे की एक तंग खाट थी, दराजों की एक आलमारी थी जिसमें दुनिया भर की छोटी-मोटी चीज़ें भरी हुई थीं, एक छोटा-सा आइना था और दीवारों पर दर्जनों फोटो और तसवीरों वाले पोस्टकार्ड थे। खिड़की पर दो गुलदान रखे थे जिनमें लाल जेरेनियम और हलके पीले और गुलाबी ऐस्टर के फूल लगे हुए थे। लेस के परदे में एक हल्का नीला फीता टँगा हुआ था।

लोला ने अपनी बहन को चिढ़ाते हुए कहा, 'आम तौर पर ताया पुरुषों को अपने कमरे में नहीं घुसने देती। तुम्हारे लिए वह इस नियम का अपवाद कर रही है।'

दूसरे रोज शाम को घर के लोग बूढ़े दम्पति के रहने की जगह में चाय पर बैठे हुए थे। क्युत्सम तेजी से अपनी चाय चला रहा था और बीच-बीच में सामने बैठे हुए अतिथि पावेल को अपनी ऐनक के ऊपर से देख लेता था।

उसने कहा, 'आजकल जो शादी के कानून बन रहे हैं, उनको मैं बिलकुल बेकार समझता हूँ। आज शादी हुई और कल के रोज शादी नहीं रही। जो जी चाहे कीजिए। पूरी आजादी है।'

बुड्ढे का गला फँस रहा था और वह बड़बड़ा रहा था। उसकी साँस लौटी तो उसने लोला की तरफ इशारा किया।

'इसको देखो, यह गयी और बिना किसी की इजाजत लिये अपने उस आदमी से शादी कर बैठी और फिर उसी तरह बिना किसी से कुछ पूछे-जाँचे उससे अलग भी हो गयी। और अब मुझे ही उसके और उसके छोकरे दोनों के खाने का बंदोबस्त करना पड़ता है। कैसी बेहूदा बात है!'

लोला को बड़ी चोट लगी और वह शर्म से गड़ गयी। उसने अपनी नम आँखें पावेल से छिपा लीं।

'तो आपका ख्याल है कि उसे उस बदमाश के साथ रहना चाहिए था, क्यों?' पावेल ने पूछा और उसकी आँखों में गुस्से की चमक आ गयी।

'उसे अच्छी तरह समझ लेना चाहिए था कि वह किससे शादी कर रही है।'

अलबिना ने बीच-बचाव किया। किसी-न-किसी तरह अपने गुस्से को दबाते हुए उसने तेजी से कहा, 'कैसे हो, एक नये आदमी के सामने ऐसी बातों पर बहस कर रहे हो? तुम्हारे पास बात करने के लिए और कुछ नहीं है?'

बुड्ढा मुड़ा और उसी पर झपट पड़ा :

'मैं खूब जानता हूँ कि मैं क्या बात कह रहा हूँ! यह तुम कब से मुझे नसीहत करने लगीं कि मुझे क्या कहना चाहिए!'

उस रात को पावेल बड़ी देर तक अपने बिस्तर में जागता पड़ा रहा और

क्युत्सम परिवार के बारे में सोचता रहा। संयोग से ही वह यहाँ आ गया था और अनजाने ही इस पारिवारिक नाटक में शरीक हो गया था। उसकी समझ में नहीं आता था कि वह किस तरह माँ और बेटियों को इस बंधन से मुक्त करने में सहायक हो सकता था। खुद उसकी जिन्दगी बिलकुल अव्यवस्थित थी, बहुत से मसले थे जिन्हें अभी हल करना बाकी था और कोई हिम्मत का कदम उठाना उसके लिए और दिनों से ज्यादा मुश्किल काम था।

स्पष्ट ही केवल एक रास्ता था : यह कि इस परिवार को तोड़ दिया जाय और माँ और बेटियाँ बुड्ढे को छोड़कर अलग हो जायँ। मगर यह आसान काम न था। पावेल इस पारिवारिक क्रांति का बोझ उठाने की स्थिति में नहीं था क्योंकि उसे कुछ ही दिनों में वहाँ से चला जाना था और मुमकिन है कि फिर कभी उन लोगों से उसकी मुलाकात भी न हो। क्या यह ज्यादा अच्छा न होगा कि वह उस चीज को जैसे-का-तैसा छोड़ दे और जो होना हो, हो? तलैया के इस गंदे पानी को हिलाने-डुलाने से क्या फायदा? मगर उस बुड्ढे के घिनौने चेहरे की याद उसे चैन न लेने देती। बहुत-सी योजनाएँ पावेल के दिमाग में आयीं, मगर उन्हें अव्यावहारिक समझकर उसने छोड़ दिया।

अगले दिन इतवार था और जब पावेल टहलकर शहर से वापस आया तो उसने ताया को घर में अकेला पाया। बाकी लोग रिश्तेदारों से मिलने बाहर गये हुए थे।

पावेल उसके कमरे में गया और थका हुआ तो था ही, एक कुरसी पर लस्त होकर पड़ गया।

उसने ताया से पूछा, 'तुम कभी बाहर क्यों नहीं जातीं और अपनी खुशी का कोई सामान क्यों नहीं करतीं?'

ताया ने धीमे स्वर में जवाब दिया, 'मेरा कहीं जाने को जी नहीं चाहता।'

पावेल को अपनी रात की सोची हुई योजनाओं की याद आयी और उसने उन्हें ताया के सामने रखने का फैसला किया।

जल्दी-जल्दी बोलते हुए ताकि दूसरों के आने के पहले ही वह अपनी बात खतम कर ले, पावेल सीधे अपनी खास बात पर आ गया।

'सुनो ताया, हम दोनों अच्छे दोस्त हैं। तब फिर हम लोग क्यों एक-दूसरे के साथ झूठा शिष्टाचार बरतें। मैं जल्दी ही यहाँ से चला जाऊँगा। बड़े दुख की बात है कि मैंने तुम्हारे परिवार को ठीक ऐसे समय में जाना जब कि मैं खुद मुसीबत में हूँ, नहीं तो सूरत कुछ दूसरी ही होती। अगर यह चीज साल-भर पहले हुई होती तो हम सब लोग एक साथ यहाँ से चले जा सकते थे। तुम्हारे और लोला जैसे लोगों के लिए चारों तरफ तमाम काम-ही-काम है। बुड्ढे को छोड़ो, उसकी बात अलग है, उसकी अकल को ठीक नहीं किया जा

सकता। मगर वह तो खैर जो भी है, इस वक्त कोई रास्ता नहीं है। मैं अभी यही नहीं जानता कि मेरा क्या होगा। इस वक्त मैं बिलकुल असहाय हूँ। मगर उसका तो खैर कोई इलाज नहीं है। मैं इस बात पर जोर देने जा रहा हूँ कि मुझे वापिस काम पर भेजा जाय। डाक्टरों ने मेरे बारे में पता नहीं क्या-क्या वाहियात बातें लिख दी हैं और साथी लोग मेरा पीछा ही नहीं छोड़ते। उनका कहना है कि मैं कयामत के रोज तक अपना इलाज कराता बैठा रहूँ। मगर खैर उसके बारे में देखेंगे कि क्या किया जा सकता है। मैं माँ को चिट्ठी लिखूँगा और तुम्हारे यहाँ के झगड़े के बारे में उससे सलाह लूँगा। मैं इस तरह इस चीज को चलने नहीं दे सकता। मगर तुम्हें समझना चाहिए ताया कि इसका मतलब होगा कि तुम्हें अपने को अपनी मौजूदा जिन्दगी से काटकर जबरन अलग करना होगा। क्या तुम्हें यह चीज पसंद होगी और इसकी ताकत तुम अपने अंदर पाओगी ?'

ताया ने आँख ऊपर उठाकर देखा।

फिर धीमे से कहा, 'मुझे यह चीज जरूर पसंद होगी और जहाँ तक ताकत की बात है, मैं नहीं कह सकती।'

पावेल उसके अनिश्चय को समझ गया।

'कोई बात नहीं ताया। अगर तुम्हारे अंदर इस चीज की चाह है तो सब ठीक हो जायगा। क्या तुम सचमुच अपने परिवार को बहुत चाहती हो ?'

इस सवाल ने ताया को थोड़ा परेशानी में डाल दिया क्योंकि वह इसके लिए तैयार न थी और जवाब देने में पल भर को हिचकिचायी।

आखिरकार उसने कहा, 'मुझे माँ के लिए बड़ा दुख है। पिताजी ने उसकी जिन्दगी दूभर कर रखी है और अब जॉर्ज उसको सता रहा है। मुझे उसके लिए सचमुच बेहद दुख होता है गोकि मैं जानती हूँ कि उसने कभी मुझे जॉर्ज के बराबर प्यार नहीं किया ...।'

दोनों बड़ी देर तक इसी तरह दिल खोलकर बातें करते रहे। घरवालों के लौटने के थोड़ी देर पहले पावेल ने मजाक में कहा :

'ताज्जुब की बात है कि बुड्ढे ने अब तक तुम्हें किसी से ब्याह नहीं दिया !'

इस विचार से ही डर के मारे ताया ने हाथ फटकारे।

'न बाबा, मैं कभी शादी न करूँगी। मैंने देखा है कि बेचारी लोला को क्या-क्या भुगतना पड़ा है। मैं कभी किसी कीमत पर शादी न करूँगी।'

पावेल हँसा।

'अच्छा तो तुमने अपनी पूरी जिन्दगी के लिए आखिरी बार इस मामले का फैसला कर डाला है ? और मान लो कोई अच्छा-भला खूबसूरत नौजवान तुम्हारी जिन्दगी में आ जाय, तो क्या हो ?'

'नहीं, मैं कभी शादी न करूँगी। शादी के पहले सब बड़े अच्छे रहते हैं।'

पावेल ने उसको मनाने के अंदाज में उसके कंधे पर अपना हाथ रखा।

'बहुत अच्छी बात है, ताया। पति के बिना भी तुम बड़े मजे में चल सकती हो। मगर तुम्हें सभी नौजवानों के बारे में ऐसी बेइंसाफी की बात न कहनी चाहिए। यह अच्छा है कि तुम मुझ पर यह सन्देह नहीं कर रही हो कि मैं तुमसे प्रणय-निवेदन करने की कोशिश कर रहा हूँ, वरना मुसीबत ही थी!' और उसने बड़े भाई के अंदाज में ताया की बाँह को थपथपाया।

ताया ने धीमे से कहा, 'तुम्हारी तरह के आदमी किसी और ही तरह की लड़कियों से शादी करते हैं।'

कुछ दिन बाद पावेल खारकोव के लिए रवाना हो गया। ताया, लोला और अपनी बहन रोजा के साथ अलबिना उसे विदा करने स्टेशन पर आयी। अलबिना ने पावेल से वचन ले लिया कि वह उनकी लड़कियों को न भूलेगा और उन्हें अपनी मौजूदा परेशानी में से निकलने में मदद पहुँचायेगा। उन्होंने पावेल को उसी तरह विदा किया जैसे किसी बहुत सगे और प्यारे आदमी को किया जाता है। उस वक्त ताया की आँखों में आँसू थे। अपने डब्बे की खिड़की में से पावेल ने लोला की सफेद रूमाल और ताया के धारीदार ब्लाउज को बराबर छोटे-से-छोटा होते देखा जब तक कि वे नजर से ओझल न हो गये।

खारकोव पहुँचकर वह सीधे अपने दोस्त पेत्या नोवीकोव के घर गया क्योंकि वह डोरा को परेशान नहीं करना चाहता था। सफर की थकान मिटते ही वह केंद्रीय समिति में गया। वहाँ उसने अकिम का इंतजार किया और आखिर में जब दोनों अकेले रह गये, तो उसने कहा कि उसे फौरन काम पर भेजा जाय। अकिम ने अस्वीकृति में सिर हिलाया।

'यह चीज नहीं हो सकती पावेल! हमारे सामने मेडिकल बोर्ड और सेंट्रल कमेटी का फैसला है। उसके मुताबिक तुम्हारी तंदुरुस्ती की संगीन हालत को देखते हुए तुम्हें इलाज के लिए 'न्यूरो-पैथोलॉजिकल इंस्टीच्यूट भेजा जाना चाहिए और किसी हालत में तुम्हें काम नहीं करने देना चाहिए।'

'मुझे खाक परवाह नहीं कि वे लोग क्या कहते हैं, अकिम! मैं तुमसे विनती करता हूँ, मुझे काम करने का मौका दो! एक अस्पताल से दूसरे अस्पताल में जाना मुझे कोई फायदा नहीं पहुँचा रहा है।'

अकिम ने इनकार करने की कोशिश की, 'हम लोग फैसले के खिलाफ नहीं जा सकते। तुम इस बात को नहीं देखते पावलुशा, कि यह तुम्हारे फायदे की बात है!' उसने तर्क करते हुए कहा। मगर पावेल ने इतने जोरों से

वकालत की कि आखिर में अकिम को उसकी बात माननी ही पड़ी।

अगले ही रोज पावेल केंद्रीय समिति के सेक्रेटेरियट के विशेष विभाग में काम करने लगा। उसका खयाल था कि काम शुरू करते ही उसकी गयी हुई ताकत लौट आयेगी। मगर जल्दी ही उसने देख लिया कि ऐसा सोचना उसकी भूल थी। वह दोपहर का खाना खाये बगैर आठ-आठ घंटे तक मेज पर बैठा काम करता रहता था और सिर्फ इसलिए कि खाना खाने के लिए तीन-तीन ज़ीना नीचे उतरकर पब्लिक भोजनालय में जाने की ताकत उसके अंदर नहीं थी। अक्सर उसके हाथ-पैर अचानक सुन्न पड़ जाते और कभी-कभी उसका पूरा शरीर थोड़ी देर के लिए ऐसा हो जाता कि जैसे उसे लकवा मार गया हो। हरारत उसे हमेशा ही बनी रहती। किसी-किसी रोज सुबह को वह अपने अंदर इतनी ताकत भी न पाता कि बिस्तर से उठ सके और जब तक लकवे का हमला थमता, तब तक उसे काम पर जाने में एक घंटे की देर हो गयी रहती और इसका उसे बहुत दुख होता। आखिरकार वह दिन आया जब उसे काम पर देर से आने के लिए सरकारी तौर पर तम्बीह की गयी। यह उस चीज की शुरुआत थी जिससे अपनी जिन्दगी में वह सबसे ज्यादा डरता था—वह आगे बढ़नेवाले सैनिकों की कतार में पीछे छूटा जा रहा था।

दो बार अकिम ने उसको दूसरे काम पर लगाकर उसकी मदद की, मगर जो चीज अनिवार्य थी वह होकर रही। काम पर लौटने के महीने भर बाद पावेल ने फिर से बिस्तर पकड़ लिया। उस वक्त उसे विदाई के समय कहे हुए बाजानोवा के शब्द याद आये। उसने उसको चिट्ठी लिखी और वह उसी दिन आ गयी। और आकर उसने पावेल को वह बात बतलायी जिसे वह जानना चाहता था : यह कि अस्पताल में जाना एकदम जरूरी नहीं है।

'तो मेरा हाल इतना अच्छा है कि मुझे इलाज की भी जरूरत नहीं है?' उसने दिल्लगी के स्वर में कहा। मगर वह दिल्लगी का मौका न था, इसलिए मजाक बेमानी होकर रह गया।

जैसे ही उसने अपने भीतर कुछ और ताकत महसूस की, वह वापिस केन्द्रीय समिति में पहुँच गया। इस बार अकिम ने दृढ़ता से उसका विरोध किया। उसने इस बात पर जोर दिया कि पावेल अस्पताल जाय।

पावेल ने थके हुए स्वर में कहा, 'मैं कहीं नहीं जा रहा हूँ। उससे कोई फायदा नहीं। यह बात मुझे अच्छे-अच्छे डाक्टरों से मालूम हुई है जिन्हें इस चीज के बारे में राय देने का हक है। मेरे लिए करने को सिर्फ अब एक चीज बची है कि पेन्शन ले लूँ और रिटायर हो जाऊँ। मगर मैं ऐसा नहीं करूँगा! तुम मुझे काम छोड़ने पर मजबूर नहीं कर सकते। मैं अभी सिर्फ चौबीस साल का हूँ और बीमार की तरह इस अस्पताल से उस अस्पताल का चक्कर

लगाते हुए अपनी जिन्दगी काटने के लिए तैयार नहीं हूँ। मैं यह जानता हूँ कि अस्पताल में जाने से मुझे कोई फायदा नहीं होगा। तुम्हें चाहिए कि मुझे कोई काम दो, ऐसा काम जो मेरी स्थिति के अनुकूल हो। मैं घर पर बैठकर काम कर सकता हूँ या दफ्तर में रह सकता हूँ। बस एक दर्ख्वास्त है कि क्लर्की का ऐसा काम मत दो जिसमें मुझे सिर्फ दफ्तर से बाहर जानेवाले कागजात पर नम्बर दर्ज करना पड़े। मुझे ऐसा काम मिलना चाहिए जिससे मुझे यह सन्तोष हो कि अब भी मेरी कुछ उपयोगिता है।'

भावावेश में पावेल की आवाज बुलन्द होती गयी।

अकिम को पावेल से गहरी सहानुभूति थी। वह समझता था कि इस जोशीले नौजवान की जिन्दगी की यह सबसे बड़ी ट्रैजेडी थी—उस नौजवान की जिसने अपनी छोटी-सी जिन्दगी का एक-एक क्षण पार्टी को दिया था। पावेल को संघर्ष से मजबूरन अलग होना पड रहा था और दूर एक कोने में घुटने तोड़कर बैठना पड़ रहा था। इस विचार से पावेल को कितनी मानसिक यातना हो रही होगी, यह बात अकिम समझ रहा था। उसने तय किया कि उसकी मदद के लिए जो कुछ बन पड़ेगा, वह जरूर करेगा।

'बहुत अच्छा पावेल, तुम परेशान न हो। कल सेक्रेटेरियट की मीटिंग होगी और मैं तुम्हारे मामले को साथियों के सामने रखूंगा। मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि मुझसे जो कुछ बन पड़ेगा, मैं तुम्हारे लिए करूँगा।'

पावेल थके हुए, भारी कदमों से उठा और अकिम का हाथ पकड़ लिया।

'अकिम, क्या तुम सचमुच यह सोचते हो कि जिन्दगी एक कोने में ढकेल-कर मुझे कुचल सकती है? जब तक मेरे दिल में यहाँ यह धड़कन बाकी है'—कहते हुए उसने अकिम का हाथ अपने सीने पर रख लिया ताकि वह उसके दिल की धड़कन को महसूस कर सके — जब तक यह धड़कन है, तब तक कोई भी मुझे पार्टी से काटकर अलग नहीं कर सकता। सिर्फ मौत ही मुझे लड़नेवाले सैनिकों की कतार से अलग कर सकती है। इसे याद रखना, मेरे दोस्त।'

अकिम ने कुछ नहीं कहा। वह जानता था कि यह कोरी लफ्फाजी नहीं है। यह एक ऐसे सिपाही की चीख थी जिसे लड़ाई में सख्त चोट लगी है। वह जानता था कि कोर्चागिन जैसे लोग इसके सिवा किसी और तरह से नहीं बोल सकते और न महसूस ही कर सकते हैं।

दो दिन बाद अकिम ने पावेल को बतलाया कि उसे एक बड़े अखबार के कार्यालय में काम करने का अवसर दिया जानेवाला है, बशर्ते उसमें साहित्यिक काम करने की योग्यता हो। सम्पादकीय दफ्तर में पावेल का बहुत अच्छा स्वागत हुआ और सहायक सम्पादिका ने, जो एक पुरानी पार्टी कार्यकर्ता

और उक्रेन की केन्द्रीय कंट्रोल कमेटी की सदस्या थी, उससे पूछताछ की।

उसने पावेल से पूछा, 'तुम्हें क्या शिक्षा मिली है कामरेड ?'

'प्राथमिक पाठशाला में तीन साल।'

'क्या तुम पार्टी के किसी सियासी स्कूल में भी रहे हो ?'

'नहीं।'

'कोई बात नहीं, कुछ लोग इसके बिना भी अच्छे पत्रकार बनते देखे गये हैं। कामरेड अकिम ने तुम्हारे बारे में हमको बतलाया है। हम तुम्हें ऐसा काम दे सकते हैं जिसे तुम घर बैठे कर सको और मोटे तौर पर हम तुम्हारे लिए ऐसा इंतजाम करने के लिए तैयार हैं कि तुम सहूलियत से काम कर सको। मगर इस तरह के काम में काफी जानकारी की जरूरत होती है। खास करके साहित्य और भाषा के क्षेत्र में।'

इस सबसे पावेल को लगा कि इस काम में उसकी हार अवश्यंभावी है। आध घंटे की उस पूछताछ से उसे पता चल गया कि उसकी जानकारी काफी नहीं है। और उसका इम्तहान लेने के लिए जो लेख उससे लिखाया गया था, वह जब उसके पास लौटा तो उसमें शैली और हिज्जे की तीन दर्जन गलतियाँ थीं जिन पर लाल पेंसिल से निशान लगा हुआ था।

सम्पादिका ने कहा, 'कामरेड कोर्चागिन, तुममें काफी योग्यता है और अगर कुछ मेहनत करोगे तो काफी अच्छा लिखने लगोगे। मगर इस वक्त तुमसे व्याकरण की भूलें हो जाती हैं। तुम्हारे लेख से पता चलता है कि तुम अच्छी तरह रूसी भाषा नहीं जानते। यों इसमें ताज्जुब की कोई बात नहीं है क्योंकि तुम्हें पढ़ने का मौका ही नहीं मिला। हमें खेद है कि हम तुम्हारा उपयोग नहीं कर सकते, गोकि जैसा मैंने अभी कहा, तुम्हारे अन्दर योग्यता है। अगर तुम्हारे लेख को सुधारा जाता, बिना उसकी विषय-वस्तु को बदले, तो इसमें सन्देह नहीं कि वह बहुत अच्छा हो जाता। मगर बात यह है कि हमें ऐसे लोगों की जरूरत है जो दूसरों के लेखों को सुधार सकें।'

कोर्चागिन छड़ी का सहारा लेते हुए उठा। उसकी दाहिनी पलक फड़की।

'ठीक है, मैं आपकी बात समझ गया। सचमुच मैं किस काम का पत्रकार होऊँगा। किसी जमाने में मैं बुरा फायरमैन नहीं था और इलेक्ट्रीशियन भी बुरा नहीं था। घुड़सवारी मैं अच्छी करता था और कोमसोमोल के नौजवानों को आन्दोलित करना भी मुझे आता था। लेकिन जहाँ तक आपके मोर्चे की बात है, निश्चय ही मैं उसके लिए किसी काम का साबित नहीं होऊँगा, यह बात मेरी समझ में आ गयी।'

उसने हाथ मिलाया और चला गया।

गलियारे के एक मोड़ पर वह लड़खड़ाया और अगर पास से गुजरती हुई

एक औरत ने उसे पकड़ न लिया होता, तो वह गिर पड़ता।

'क्या बात है कामरेड? तुम तो काफी बीमार नजर आते हो!'

पावेल को होश आने में कुछ क्षण लगे। तब उसने धीरे से उस औरत को एक ओर कर दिया और अपनी छड़ी के सहारे आगे बढ़ गया।

उस दिन के बाद से पावेल ने महसूस किया कि उसकी जिन्दगी ढलान पर है। काम करने का अब सवाल ही नहीं उठता था। उसे बार-बार और पहले से कहीं ज्यादा बिस्तर पकड़ना पड़ता। केन्द्रीय समिति ने उसे काम से छुट्टी दे दी और उसकी पेन्शन का प्रबन्ध कर दिया। ठीक समय पर पेंशन आ गयी और उसके साथ-साथ बीमार होने का सार्टिफिकेट भी। केन्द्रीय समिति ने उसे पैसा दिया और उसके कागजात उसके हवाले कर दिये जिनसे उसे हक मिल गया कि वह जहाँ चाहे जाय।

मार्ता के पास से उसे एक खत मिला जिसमें उसने पावेल को मास्को आने और उसके यहाँ रहकर कुछ दिन आराम करने की दावत दी थी। मास्को जाने का तो पावेल का इरादा यों भी था, क्योंकि उसके मन में अभी तक यह धुँधली-सी आस बाकी थी कि ऑल यूनियन सेन्ट्रल कमेटी उसे ऐसा कोई काम दे सकेगी जिसमें इधर-उधर दौड़ने-भागने की जरूरत न होगी। मगर मास्को में भी उसे डाक्टरी इलाज कराने की सलाह दी गयी और एक अच्छे अस्पताल में जगह देने की बात कही गयी। मगर उसने इनकार कर दिया।

उसके उन्नीस दिन तो मार्ता के घर में, जहाँ वह अपने दोस्त नादिया पीटर्सन के साथ रहती थी, जल्दी से बीत गये। पावेल ज्यादातर घर में अकेला ही रहता क्योंकि दोनों युवतियाँ सबेरे ही घर से काम पर निकल जातीं और शाम को लौटतीं। पावेल मार्ता की अच्छी लाइब्रेरी में से किताबें ले-लेकर पढ़ने में अपना वक्त गुजारता। शामें उन दोनों लड़कियों और उनके दोस्तों की सोहबत में मजे से कट जातीं।

क्युत्सम परिवार के खत आते जिनमें उसे वहाँ बुलाया जाता। वहाँ पर जिन्दगी असह्य होती जा रही थी और पावेल की मदद की जरूरत थी।

लिहाजा एक रोज सबेरे कोर्चागिन ने गुस्यातनिकोव स्ट्रीट का वह खामोश छोटा सा फ्लैट छोड़ दिया। रेलगाड़ी उसे तेजी से दक्खिनी समुद्र की तरफ ले चली, नम बरसाती पतझड़ से दूर दक्खिनी क्रीमिया के गर्म तट की तरफ। वह खिड़की पर बैठा तार के खंभों का तेजी से गुजरना देखता रहा। उसके माथे पर बल पड़े हुए थे और उसकी काली-काली आँखों में हठीली चमक थी।

सत्रह

नीचे समुद्र की लहरें चट्टान से टकराकर पछाड़ खा रही थीं। दूर तुर्की से आती हुई तेज खुश्क हवा उसके चेहरे को स्पर्श कर रही थी। बन्दरगाह, जिसे सीमेन्ट का एक रास्ता बनाकर समुद्र के सीधे हमले से बचाया गया था, टेढ़े-मेढ़े अर्धवृत्त आकार में फैला हुआ था। और उस सबके ऊपर से दीख पड़ रही थीं शहर के छोर पर की छोटी-छोटी सफेद इमारतें जो पहाड़ के ढलान पर बनी थीं और ठीक नीचे समुद्र का नीला विस्तार था।

शहर के बाहर इस पुराने पार्क में बहुत शांति थी। मेपुल के दरख्त की पीली-पीली पत्तियाँ उड़-उड़कर धीरे-धीरे पार्क के रास्तों पर गिर रही थीं और रास्तों पर घास उगी हुई थी।

वह बूढ़ा ईरानी गाड़ीवान, जो पावेल को शहर से वहाँ ले आया था, पावेल के गाड़ी से उतरने पर यह सवाल पूछ ही बैठा :

'यहाँ क्यों आये हो ? न यहाँ जवान औरतें हैं, न दिल बहलाने का और कोई सामान। यहाँ तो बस गीदड़ हैं ... यहाँ क्या करोगे ? मिस्टर कामरेड, बेहतर हो कि मैं तुम्हें शहर में वापस ले चलूँ !'

पावेल ने गाड़ी का किराया चुकाया और बूढ़ा गाड़ी लेकर चला गया।

वह पार्क सचमुच एक जंगल था। पावेल को पहाड़ी पर एक खाली बेंच मिल गयी और वह उस पर बैठ गया। पावेल ने पतझड़ के हलके सूरज की ओर मुँह उठाया। पहाड़ी समुद्र के किनारे पर थी।

वह इस खामोश जगह में यह सोचकर आया था कि अपनी जिन्दगी पर गौर करेगा, उसकी जिन्दगी जो राह पकड़ रही थी, उसके बारे में और यह कि अब उसको क्या करना चाहिए। परिस्थिति पर विचार करने और कोई फैसला लेने का वक्त आ गया था।

दूसरी बार जब वह क्युत्सम के यहाँ गया तो घर के झगड़े और भी बढ़ गये और ऐसी हालत पैदा हो गयी कि उस झगड़े को खतम करने के लिए कोई-न-कोई कदम उठाना जरूरी जान पड़ने लगा। बुड्ढे को जब उसके आने की बात मालूम हुई तो वह आग-बबूला हो गया और उसने इस चीज के खिलाफ बड़ा शोर मचाया। स्वभावतः उसका मुकाबला करने की जिम्मेदारी कोर्चागिन पर आ गयी। बुड्ढे को बड़ा ताज्जुब हुआ जब उसकी बीवी और लड़कियों ने डटकर उसका विरोध किया, क्योंकि उसको इस चीज की उम्मीद न थी। पावेल के आने के पहले रोज से ही घर दो विरोधी शिविरों में बँट गया। मकान के जिस आधे हिस्से में माँ-बाप रहते थे, उसके दरवाजे में ताला जड़ दिया गया और बगल का एक छोटा कमरा कोर्चागिन को किराये पर दे दिया गया।

पावेल ने किराया पेशगी दे दिया और इस चीज से बुड्ढे का गुस्सा कुछ कम हुआ। अब उसकी लड़कियाँ उससे अलग हो गयी थीं और इसलिए उनके भरण-पोषण की जिम्मेदारी उसकी न रह गयी थी।

कूटनीतिक कारणों से अलबिना अपने पति के साथ ही रही। जहाँ तक बुड्ढे की बात थी, तो वह अपने ही हिस्से में रहता था और उस आदमी से मिलना बचाता था जिससे उसको इतनी सख्त नफरत थी। मगर बाहर हाते में वह ज्यादा से ज्यादा शोर मचाता था ताकि यह बात किसी को भूलने न पाये कि वही घर का मालिक है।

को-आपरेटिव में काम करने से पहले बुड्ढा क्युत्सम जूते बनाकर और बढ़ईगिरी के काम से अपनी रोजी चलाता था और अब अपने लिए उसने एक छोटी सी वर्कशाप घर के पिछवाड़े के हाते में बना ली थी। अब पावेल को तंग करने के लिए उसने अपने काम करने की बेन्च शेड से हटाकर पावेल की खिड़की के ठीक सामने हाते में जमा ली थी और वहाँ बैठा घंटों ताबड़तोड़ हथौड़ी चलाया करता और उसको इस बात से एक ढंग का संतोष मिलता कि उसके काम से कोर्चागिन की पढ़ाई में बाधा पड़ रही है।

वह दाँत पीसकर अपने मन में कहता, 'रुको बच्चू, मैं ऐसी हालत पैदा कर दूँगा कि सर पर पैर रखकर भागोगे ...'

दूर क्षितिज पर स्टीमर का काला धुआँ पानी पर फैला हुआ था। समुद्री चिड़ियों का झुंड तीखी आवाज में शोर करता हुआ समुद्र पर टूटता था।

पावेल हथेली पर अपनी ठुड्डी टिकाये अपने विचारों में डूबा बैठा था। उसकी पूरी जिन्दगी, बचपन से लेकर आज तक, जल्दी-जल्दी उसकी मन की आँखों के आगे घूम गयी। उसकी जिन्दगी के चौबीस बरस कैसे बीत गये थे? उसने अपनी जिन्दगी को ठीक से बिताया था या नहीं? उसने साल-के-साल उनके ऊपर दुबारा गौर किया, गंभीरता से, निष्पक्ष होकर, और तब उसे यह जानकर बड़ा सन्तोष मिला कि उसने जिन्दगी को कुछ यों ही नहीं बिताया था, उसका ठीक ही इस्तेमाल उसने किया था। उसमें गलतियाँ जरूर हुई थीं, जवानी की अनुभवहीनता की गलतियाँ और मुख्य रूप से समझदारी की कमी की गलतियाँ। मगर सोवियत सत्ता के लिए होनेवाले संघर्ष के तूफानी दिनों में वह लड़ाई के तूफान में रहा था और क्रांति के लाल झंडे पर उसके अपने खून की भी कुछ बूँदें जरूर थीं।

जब तक उसकी शक्तियों ने जवाब न दे दिया, वह बराबर लड़नेवालों की कतार में रहता आया और अब घायल हो जाने पर, जबकि गोली चलानेवालों की कतार में खड़े रहना उसके लिए मुमकिन न था, इसके सिवा वह और कर भी क्या सकता था कि मैदानी अस्पताल में दिन गुजारे? उसे उस समय की

याद आयी जब उन लोगों ने वारसा पर हमला किया था और लड़ाई जब अपने शिखर पर थी, तो कैसे एक सिपाही को गोली लगी थी। वह अपने घोड़े की टापों के नीचे जमीन पर गिर पड़ा। उसके साथियों ने जल्दी-जल्दी उसके जख्म पर पट्टी बाँधी, उसे स्ट्रेचरवालों के सिपुर्द किया और दुश्मन का पीछा करते हुए तेजी से आगे निकल गये। एक घायल सैनिक के लिए आगे बढ़ता हुआ दस्ता रुका न था। एक महान लक्ष्य के लिए लड़ी जानेवाली लड़ाई में ऐसा ही हो सकता था और ऐसा ही हुआ। यह सही है कि उसने ऐसे तोपची भी देखे थे जिनकी टाँगें न थीं और जो तोप को खींचनेवाली गाड़ियों पर सवार होकर लड़ाई में जाते थे। ऐसे आदमी दुश्मन को दहलाकर रख देते थे, उनकी तोपें चारों तरफ मौत और तबाही बिखेर देती थीं और अपनी इस्पाती हिम्मत और कभी न चूकनेवाली आँख के कारण वे अपनी टुकड़ियों के लिए गौरव योग्य भी होते थे। मगर ऐसे लोग बहुत कम थे।

अब उसे क्या करना था, जब पराजय ने उसे छा लिया था और लड़ने-वालों की कतार में वापस पहुँचने की कोई उम्मीद न थी? क्या उसने बाजा-नोवा से खोद-खोदकर यह बात नहीं पूछ ली थी कि उसे भविष्य में और भी बड़ी यातनाएँ भुगतनी पड़ेंगी? तो अब क्या किया जाय? यह सवाल, उसके पैरों के पास फैली हुई चौड़ी-सी खाई की तरह, मुँह बाये उसके सामने खड़ा था और इसका कोई जवाब उसके पास न था।

अब वह किस चीज के लिए जीये, जब वही चीज न रही जो उसकी नजर में सबसे अनमोल थी, यानी लड़ सकने की क्षमता? वह क्या कहकर अपने मन को समझाये कि वह आज किस चीज के लिए जी रहा है और कल किस चीज के लिए जीयेगा, जब कहीं कोई खुशी नहीं? किस तरह वह अपनी जिंदगी के दिनों को गुजारे? जीये सिर्फ साँस लेने के लिए, खाने के लिए, पीने के लिए? जब उसके साथी लड़ते हुए आगे बढ़ रहे हों, तो क्या वह असहाय दर्शक की तरह खड़ा रहे? एक बोझ बन जाय अपनी फौजी टुकड़ी के लिए? क्या यह बेहतर न होगा कि वह अपने शरीर को खतम कर दे जिसने उसके साथ दगा की? सीने में एक गोली — और मामला साफ, यह बेमतलब जिंदगी खत्म! एक जिंदगी जो अच्छी तरह बितायी गयी, जिसके लिए आदमी को फख्र हो सकता है! उसका यही मुनासिब अंत होगा! इसके बाद भी जीना तो लाश को घसीटना होगा! अपनी यंत्रणा को खतम करने के लिए जिस सिपाही ने अपने-आपको खतम कर दिया, उसकी निंदा कोई क्यों करेगा?

उसने अपनी जेब में पड़ी हुई चपटी ब्राउनिंग पिस्तौल का स्पर्श अनुभव किया। उसके हत्थे पर उसकी उंगलियाँ मजबूती से जम गयीं और धीरे-धीरे उसने अपनी पिस्तौल बाहर निकाली।

'किसने सोचा था कि तुम्हारा यह अंत होगा ?'

पिस्तौल की नली ठंडी उपेक्षा से उसकी ओर देख रही थी। उसने पिस्तौल अपने घुटने पर रख ली और अपने-आपको बुरा-भला कहने लगा।

'वीरता का यह प्रदर्शन बहुत सस्ता है दोस्त ! खुद को गोली मारकर तुम दिखलाना चाहते हो कि बड़ी बहादुरी का काम कर रहे हो ! मगर इसमें क्या रखा है, कोई भी अपने-आपको गोली मार सकता है, बेवकूफ-से-बेवकूफ आदमी भी। यह तो सबसे आसान रास्ता है, कायर आदमी का रास्ता। जब जिंदगी भारी हो जाय, तब गोली तो मारी ही जा सकती है। मगर क्या तुमने जिंदगी से लड़कर उसे हराने की कोशिश की ? क्या तुम विश्वास के साथ यह कह सकते हो कि इस फौलादी घेरे को तोड़कर निकलने की तुमने हर मुमकिन कोशिश की ? क्या तुम नोवोग्राद-वोलिन्स्की की उस लड़ाई को भूल गये जिसमें हमने दिन-भर में सत्रह बार हमले किये और आखिरकार सभी मुश्किलों के बावजूद कामयाबी हासिल की ? पिस्तौल को रख दो और फिर कभी इसकी बात किसी से न कहो। जीवन जब असह्य हो उठे, तब भी जीने की कला सीखो। अपने जीवन को उपयोगी बनाओ।

वह उठ खड़ा हुआ और सड़क पर चलने लगा। उधर से गुजरते हुए एक पर्वतारोही ने उसे अपनी गाड़ी पर चढ़ा लिया। शहर पहुँचकर वह उतर गया और उसने एक अखबार खरीदा और देमियान बेदनी क्लब में शहर के पार्टी ग्रुप की एक मीटिंग का एलान पढ़ा। उस रात को जब पावेल घर लौटा तो बहुत देर हो गयी थी। वह उस मीटिंग में बोला भी था और उसे इस बात का कतई गुमान न था कि वह अपनी जिंदगी में आखिरी बार किसी बड़ी आम मीटिंग में बोल रहा है।

वह घर लौटा तो उसने देखा कि ताया अब भी जगी हुई थी। पावेल के इतनी देर तक न आने से वह परेशान हो रही थी। सोच रही थी कि उसके साथ क्या बात हो गयी जो वह घर नहीं लौटा। उसे इसलिए और भी परेशानी हो रही थी कि उस सुबह को उसने पावेल की आँखों में एक अजीब कठोर, ठंडा भाव देखा था, उन आँखों में जो हमेशा जिंदगी से इतनी भरपूर नजर आती थीं। उसे अपने बारे में बात करना अच्छा नहीं मालूम होता था। मगर ताया महसूस कर रही थी कि पावेल को कोई गहरी मानसिक परेशानी है।

उसकी माँ के कमरे की दीवाल घड़ी ने जिस वक्त दो का घंटा बजाया, उसने फाटक के चूँ करने की आवाज सुनी और अपनी जाकट चढ़ाती हुई दरवाजे को खोलने के लिए गयी। ताया उसके पास से गुजरी तो लोला, जो

अपने कमरे में सो रही थी, बेचैनी से बड़बड़ायी।

'मुझे परेशानी होने लगी थी,' ताया ने खुशी और इतमीनान से फुस-फुसाकर उस समय कहा जब कि पावेल हॉल के अंदर दाखिल हुआ।

पावेल ने भी वैसे ही धीमे से जवाब दिया, 'ताया, जब तक मैं जिंदा हूँ, मुझे कुछ नहीं हो सकता। लोला सो रही है? किसी वजह से मुझे जरा भी नींद नहीं आ रही है। मुझे तुमसे कुछ बात कहनी है। चलो हम लोग तुम्हारे कमरे में चलें ताकि लोला की नींद खराब न हो।'

ताया हिचकिचायी। रात बहुत जा चुकी थी। इतनी रात गये वह कैसे पावेल को अपने कमरे में ले जाय? माँ क्या सोचेगी? मगर वह इनकार न कर सकी क्योंकि उसे डर था कि पावेल का जी दुखेगा। उसने मन में कहा, 'क्या बात हो सकती है,' और उसे अपने कमरे में ले गयी।

'बात यह है ताया,' पावेल ने धीमी आवाज में कहना शुरू किया। कमरे में मद्धिम प्रकाश था और पावेल ताया के ठीक सामने बैठ गया, इतने पास कि ताया उसकी साँस को महसूस कर सकती थी। 'जिंदगी कभी-कभी ऐसे अजीब मोड़ ले लेती है कि आदमी हैरान रह जाता है। मेरे पिछले कुछ दिन बहुत बुरे गुजरे हैं। मेरी समझ ही में नहीं आता था कि मैं जीऊँ कैसे। इसके पहले कभी मुझे जिंदगी इतनी अँधेरी न नजर आयी थी। मगर आज मैंने अपने मन के पोलिटिकल ब्यूरो की एक मीटिंग की और उसमें एक बहुत अहम फैसला किया। मैं जो कुछ तुमसे कहने जा रहा हूँ, उसे सुनकर चौंकना मत।'

उसने ताया को वह सब-कुछ बतलाया जो पिछले महीनों उस पर गुजरा था और बहुत-सी वे बातें भी जो उस दिन पार्क में उसके मन में आयी थीं।

'तो यही मेरी परिस्थिति है। अब वह सबसे जरूरी बात जो मैं तुमसे कहना चाहता हूँ। इस घर के अंदर तूफान अब शुरू ही हो रहा है। हमें इस कुएँ में से जितनी दूर मुमकिन हो सके, बाहर ताजी हवा में चले जाना चाहिए। हमें नये सिरे से अपनी जिंदगी शुरू करनी चाहिए। एक बार जब मैंने इस लड़ाई में हिस्सा लिया है, तो मैं अंत तक उसको निबाहूँगा। हम लोगों की, यानी तुम्हारी और मेरी जिंदगी इस वक्त कुछ बहुत सुखी नहीं है। मैंने फैसला किया है कि इसके अंदर कुछ नयी गरमाहट डालूँगा। क्या तुम जानती हो कि मेरा क्या मतलब है? तुम क्या मेरी जीवन-संगिनी, मेरी पत्नी बनोगी?'

ताया सांस रोककर उसकी बातों को सुन रही थी और इन अंतिम शब्दों को सुनकर चौंक पड़ी।

पावेल अपनी बात कहता गया, 'मैं आज रात ही तुमसे जवाब देने के लिए नहीं कह रहा हूँ। तुम अच्छी तरह इस चीज पर विचार कर लो। मैं समझता हूँ कि तुम्हारी समझ में यह बात नहीं आ रही है कि पहले बहुत दिन

तक प्रेम का किस्सा चलाये बिना कैसे यह चीज ऐसे लट्ठमार तरीके से कही जा सकती है। मगर हमको इस तरह की वाहियात बातों की कोई जरूरत नहीं है। यह लो, मैं तुम्हें अपना हाथ देता हूँ। अगर तुम मुझ पर विश्वास करोगी तो मुझे गलत न समझोगी। हम दोनों एक-दूसरे को बहुत कुछ दे सकते हैं। मैंने जो निश्चय किया है, वह यह कि हमारा सम्बंध तब तक कायम रहेगा जब तक कि तुम एक सच्ची इंसान, एक सच्ची बोल्शेविक नहीं बन जातीं। अगर मैं तुम्हारे लिए इतना भी न कर सकूँ तो मेरा मोल कौड़ी के बराबर भी नहीं। तब तक हमें यह सम्बंध नहीं तोड़ना होगा। मगर जब तुम बड़ी हो जाओगी, समझदार हो जाओगी, तब तुम्हारे ऊपर किसी किस्म की कैद नहीं रहेगी। कौन जानता है क्या हो ? हो सकता है कि मेरा शरीर बिलकुल टूट जाय और उस हालत में इस बात को याद रखना कि तुम अपने-आपको किसी भी तरह मुझसे बँधा हुआ न समझना।'

कुछ क्षणों के लिए वह खामोश हो गया और फिर प्यार से भरी हुई, नरम आवाज में बोला : 'और फिलहाल मैं तुम्हें अपनी दोस्ती और अपना प्यार देना चाहता हूँ।'

उसने ताया का हाथ अपने हाथ में ले लिया और बड़ा इतमीनान महसूस करने लगा मानो ताया अपनी रजामंदी दे चुकी हो।

'तुम वादा करते हो कि मुझे कभी नहीं छोड़ोगे ?'

'मैं तुम्हें सिर्फ वचन दे सकता हूँ ताया। तुम चाहे विश्वास करो, चाहे न करो, लेकिन तुम्हें समझना चाहिए कि मेरे जैसे आदमी अपने दोस्तों के साथ दगा नहीं करते .... इतना बहुत है कि वे मेरे साथ दगा न करें,' उसने तीखेपन से इतना और जोड़ दिया।

ताया ने जवाब दिया, 'मैं आज रात तुमको जवाब नहीं दे सकती। मुझे सोचने का समय दो, यह तो बड़ी अचानक बात हो गयी।'

पावेल उठ खड़ा हुआ।

'सो जाओ ताया। सुबह होने में अब देर नहीं है।'

वह अपने कमरे में चला गया और बिना कपड़े उतारे बिस्तर पर लेट गया और इधर उसका सिर तकिये से लगा और उधर वह नींद में डूब गया।

पावेल के कमरे में खिड़की के पासवाली मेज पर पार्टी की लाइब्रेरी की किताबों, अखबारों और कई कापियों का ढेर लगा था जिनमें पावेल ने अपने नोट लिख रखे थे। इसके अलावा उसके कमरे में था एक बिस्तर, दो कुर्सियाँ और चीन का एक बड़ा-सा नक्शा जिस पर काली और लाल झंडियाँ पिन से खुसी हुई थीं और जो उसके और ताया के कमरे के बीच के दरवाजे के ऊपर पिन से जड़ा हुआ था। स्थानीय पार्टी कमेटी के लोगों ने पावेल को उसकी

जरूरत की किताबें और पत्र-पत्रिकाएँ देना मंजूर कर लिया था और वादा किया था कि शहर की सबसे बड़ी पब्लिक लाइब्रेरी के मैनेजर से कह देंगे कि पावेल जो-कुछ भी माँगे, वह उसे भेज दिया करे। कुछ ही दिन बाद किताबों के बड़े-बड़े पार्सल आने लगे। लोला को यह देखकर वड़ी हैरानी होती थी कि वह बड़े सबेरे से उठकर अपनी किताबें लिये बैठा होता और सारा दिन पढ़ता और नोट बनाता रहता। सिर्फ नाश्ते और खाने के लिए थोड़ी-थोड़ी देर के लिए उठता। शाम का वक्त वह दोनों लड़कियों के साथ गुजारता और उन्हें अपनी दिन भर की पढ़ी हुई बातें बतलाया करता।

आठ साल में पहली बार पावेल को खूब अवकाश मिल रहा था और उस पर किसी तरह के काम की कोई जिम्मेदारी न थी। उसने अपने वक्त का अच्छा इस्तेमाल किया और खूब उत्साह से पढ़ता रहता, ऐसा उत्साह जो नये जिज्ञासुओं में ही पाया जाता है। वह दिन में अठारह घंटे पढ़ता रहता। कहा नहीं जा सकता कि इस कदर मेहनत को उसकी सेहत और कितने दिन तक बर्दाश्त कर सकेगी। मगर एक रोज ताया ने यूँ ही एक बात कह दी जिसने सारा नक्शा ही बदल दिया।

'तुम्हारे कमरे में खुलनेवाले दरवाजे से जो आलमारी अड़ी हुई थी, उसको मैंने अलग कर दिया है। अब अगर कभी तुम्हारी इच्छा मुझसे बात करने की हो तो तुम सीधे मेरे कमरे में आ सकते हो। लोला के कमरे में से होकर आने की कोई जरूरत नहीं।'

आवेग से पावेल का चेहरा तमतमा गया। ताया खुशी से मुस्करायी। उनके सम्बन्ध पर मुहर लग गयी।

बुड्ढे को अब कोनेवाले कमरे की बंद खिड़की की संध में से रोशनी नजर नहीं आती। ताया की माँ ने भी बेटी की आँखों में एक ऐसी चमक देखी जो एक ऐसे सुख का पता दे रही थी जिसे वह लड़की छिपा न पाती थी। उसकी आँखों के नीले हलक़े विनिद्र रातों की कहानी कहते थे। अब अक्सर उस छोटे-से घर में ताया के गाने और गिटार के बजने की गूँज सुनायी देती।

मगर ताया का सुख बिना काँटों का नहीं था। उसका जागा हुआ नारीत्व उनके सम्बन्ध की गोपन प्रकृति के खिलाफ विद्रोह करता था। हर आवाज पर वह काँप-काँप जाती थी, क्योंकि उसे लगता था कि जैसे वह अपनी माँ के कदमों की आहट सुन रही हो। मान लो अगर वे पूछ बैठें कि वह क्यों रात को अपने कमरे की कुंडी चढ़ा लेती है तो ? पावेल ने उसके इस भय को लक्ष्य किया और उसे आश्वस्त करने की कोशिश की।

वह बड़ी नरमी से कहता, 'तुम्हें किस चीज का डर है ? हम दोनों ही तो यहाँ के मालिक हैं। इतमीनान से सोओ। कोई हमारी जिन्दगी में मदाखलत नहीं करने पायेगा।'

आश्वस्त होकर वह अपना गाल उसके सीने पर रख लेती और अपने प्रेमी को बाँहों में भरे हुए सो जाती और वह जागता पड़ा रहता और उसकी निश्चिन्त निर्द्वन्द्व साँसें सुनता रहता। वह जरा भी न हिलता-डुलता ताकि ताया की नींद न खराब हो और भीतर-बाहर से उसका मन इस लड़की के लिए गहरे प्यार से भर उठता जिसने अपनी जिन्दगी उसके हाथों में सौंप दी थी।

ताया की आँखों की चमक का राज़ सबसे पहले लोला ने समझा और उस दिन से दोनों बहनों के बीच एक खाई-सी पड़ गयी। जल्दी ही माँ ने भी इस चीज का पता पा लिया, या यूँ कहें कि उसने भाँप लिया। और तब उसे परेशानी हुई। उसे कोर्चागिन से इस चीज की उम्मीद न थी।

उसने लोला से कहा, 'ताया का इस आदमी के साथ ठीक जोड़ नहीं बैठता। मैं तो समझ नहीं पा रही हूँ कि इसका क्या नतीजा निकलेगा ?'

उसके मन में तरह-तरह की चिन्ताएँ उठीं। मगर उसे इतना साहस न हुआ कि कोर्चागिन से कुछ कह सके।

बहुत से नौजवान पावेल के पास आने लगे और कभी-कभी इतने लोग हो जाते कि उस छोटे से कमरे में उन सब के लिए काफी जगह ही न रहती। मधुमक्खियों की गुंजार की तरह उन लोगों की आवाजें बुड्ढे के कान में पड़तीं और अक्सर वह उन लोगों का कोरस गान सुनता :

गूँज रहा है यह डरावना पागल सागर
गूँज रहा दिन रात कुद्ध भीषण इसका स्वर

और पावेल का प्रिय गाना :

सारी दुनिया भीग गयी आँखों के जल से

यह नौजवान कार्यकर्ताओं का वह स्टडी सर्किल था जिसे पार्टी कमेटी ने पावेल के जिम्मे सौंपा था, क्योंकि वह बार-बार माँग कर रहा था कि उसे प्रचार का काम दिया जाय। इसी तरह पावेल के दिन गुजरते थे।

उसने एक बार फिर अपने दोनों हाथों से मजबूती से पतवार पकड़ ली थी और उसकी जिंदगी की किश्ती, जो कई बार चट्टानों से टकराते-टकराते बची थी, अब फिर एक नयी राह पर आगे बढ़ी जा रही थी। उसका यह सपना कि वह अध्ययन के जरिये फिर से लड़नेवाले सैनिकों की कतार में शरीक हो सकेगा, पूरा होने आ रहा था।

मगर जिंदगी उसकी राह में काँटे बिछाती जा रही थी और वह हर काँटे को बहुत तकलीफ और क्षोभ के साथ देखता था, क्योंकि उसके कारण उसे अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में देर हो रही थी।

एक रोज वह अभागा विद्यार्थी जॉर्ज मास्को से आ गया और अपने साथ अपनी बीवी को भी लेता आया। वह अपने बैरिस्टर ससुर के घर ठहरा और वहाँ से अपनी माँ को पैसे के लिए परेशान करने लगा।

जॉर्ज के आने से क्युत्सम घराने की खाई और चौड़ी हो गयी। जॉर्ज ने निस्संकोच होकर अपने बाप का साथ दिया और अपनी बीवी के घरवालों की मदद से, जो कुछ-कुछ सोवियत-विरोधी थे, उसने बेजा तरीकों का इस्तेमाल करके कोर्चागिन को घर से निकालने की कोशिश की और ताया को बहलाना चाहा कि वह कोर्चागिन से सम्बंध-विच्छेद कर ले।

जॉर्ज के आने के दो हफ्ते बाद लोला को एक दूसरे शहर में नौकरी मिल गयी और वह अपनी माँ और छोटे-से लड़के को लेकर चली गयी। कुछ रोज बाद पावेल और ताया भी समुद्र तट के एक शहर में चले गये।

आर्तेम को अपने भाई के खत बहुत कम ही मिलते थे। मगर कभी-कभी जब उसे अपनी परिचित लिखावट का लिफाफा शहर की सोवियत में अपनी मेज पर पड़ा मिलता तो वह बड़े आवेग से उसके पन्नों पर नजर दौड़ाता। यह आवेग आर्तेम के लिए असाधारण चीज थी। आज भी जब उसने लिफाफा खोला तो प्यार से भरते हुए सोचा :

'आह पावेल ! काश कि तुम मेरे और पास रहा करते। मुझे तुम्हारी सलाह की कितनी जरूरत पड़ती है !'

उसने पढ़ा :

'आर्तेम, मैं आज तुम्हें वह सब-कुछ बतलाने के लिए खत लिख रहा हूँ जो पिछले दिनों मुझ पर गुजरा है। ऐसी बातें मैं तुम्हें छोड़ और किसी को नहीं लिखता। मगर मैं जानता हूँ कि मैं अपनी गुप्त-से-गुप्त बात तुमसे कह सकता हूँ क्योंकि तुम मुझे अच्छी तरह जानते हो और मेरी बात को समझोगे।

'तन्दुरुस्ती के मोर्चे पर जिंदगी मुझे बराबर दबाती जा रही है और एक के बाद दूसरी चोट लगा रही है। एक चोट के बाद मैं किसी-किसी तरह अपने पैरों पर खड़ा हो पाता हूँ कि दूसरी चोट, पहली से भी ज्यादा निर्मम, ज्यादा कठोर, आकर मुझे ढेर कर देती है। सबसे भयानक बात यह है कि इसका मुकाबला करने की ताकत अब मेरे अंदर नहीं है। पहले मेरी बायीं बाँह में लकवा लगा। और अब जैसे कि उतना ही काफी न हो, मेरी टाँगों

ने जवाब दे दिया है। पहले ही मैं मुश्किल से चल-फिर सकता था (यानी अपने कमरे के अंदर) मगर अब तो मेरे लिए बिस्तर से मेज तक घिसटकर जाना भी मुश्किल हो गया है। और अभी और भी पता नहीं क्या-क्या देखना है। कोई नहीं जानता कि कल क्या होगा।

'मैं कभी घर से बाहर नहीं जाता और मेरी खिड़की से समुद्र का एक बहुत छोटा-सा टुकड़ा दिखायी देता है। क्या इससे ज्यादा करुण कोई बात हो सकती है कि एक ही आदमी में दो विरोधी चीजों का मेल हो जाय — एक दगाबाज शरीर जिस पर किसी का वश न हो और एक बोल्शेविक का दिल, ऐसे बोल्शेविक का जो काम के लिए तरसता है, लड़नेवालों की कतार में, तुम्हारी बगल में, आकर खड़ा होना चाहता है, उन लोगों की कतार में जो आँधी और तूफान में पूरे मोर्चे पर आगे बढ़ रहे हैं।

'मुझे अब भी विश्वास है कि मैं लड़नेवालों की कतार में शरीक हो सकूँगा और हमला करनेवाले दस्तों में मेरी संगीन की भी अपनी जगह होगी। मुझे यह विश्वास करना ही होगा। इस विश्वास को मैं छोड़ दूँ, इसका मुझे अधिकार नहीं है। दस साल तक पार्टी और कोमसोमोल ने मुझे लड़ना सिखाया है और हमारे नेता के शब्द, जो सबको सम्बोधित करके कहे गये थे, मेरे ऊपर उसी तरह लागू होते हैं : 'ऐसे कोई किले नहीं हैं जिन्हें बोल्शेविक फतह नहीं कर सकते।'

'मेरी जिन्दगी इन दिनों पूरी तरह पढ़ाई में ही गुजर रही है। किताबें, किताबें और किताबें। मैंने बहुत-कुछ पढ़ लिया है, आर्तेम। मैंने मार्क्सवाद-लेनिनवाद की तमाम बुनियादी किताबें अच्छी तरह पढ़ ली हैं और कम्युनिस्ट युनिवर्सिटी की पत्रों द्वारा दी गयी शिक्षा का पहले साल का इम्तहान पास कर लिया है। शाम को मैं कम्युनिस्ट नौजवानों का स्टडी सर्किल लेता हूँ। ये नौजवान साथी पार्टी-संगठन की अमली जिन्दगी के साथ मेरे सम्बंध की कड़ी हैं। फिर ताया है जिसकी राजनीतिक शिक्षा और सामान्य ज्ञान को बढ़ाने की मैं भरसक कोशिश कर रहा हूँ। और फिर प्यार तो है ही और मेरी छोटी-सी बीवी की मुहब्बत की बातें। हम दोनों, ताया और मैं, एक-दूसरे के सबसे अच्छे दोस्त हैं। हमारा घर बड़ी सादगी से चलता है — मेरी बत्तीस रूबल की पेन्शन और ताया की कमाई से हमारा काम अच्छी तरह चल जाता है। ताया उसी रास्ते पर चल रही है जिस रास्ते से मैं पार्टी में पहुँचा : कुछ दिन तक उसने एक घर में नौकरानी का काम किया और अब एक पब्लिक डाइनिंग रूम में (इस कस्बे में कोई उद्योग-धंधे नहीं हैं) रकाबी धोने का काम करती है।

'अभी उस रोज की बात है कि ताया ने बड़े गर्व से मुझे अपना डेलीगेट

का पहला पास दिखलाया जो उसे महिला विभाग ने दिया है। उसके लिए यह कोरा दफ्ती का टुकड़ा नहीं है। उसके अन्दर मैं नयी जिन्दगी को जन्म लेते देख रहा हूँ और नये के इस जन्म में मैं उसकी मदद करने की हर कोशिश कर रहा हूँ। इसके बाद का अगला कदम होगा एक बड़े कारखाने में काम करना। वहाँ मेहनतकशों की एक बड़ी जमात के अंग के रूप में उसमें धीरे-धीरे राजनीतिक परिपक्वता आयेगी। मगर यहाँ तो जो अकेला रास्ता उसके लिए खुला है, उसी को वह ले रही है।

'ताया की माँ दो बार हमसे मिलने आ चुकी हैं। अपने अनजाने में ही वह इस बात की कोशिश कर रही हैं कि ताया को फिर उन्हीं ओछी बातों की जिन्दगी में घसीट लिया जाय, उसी टुच्ची जिन्दगी में जो चारों तरफ छोटे-मोटे स्वार्थों से घिरी हुई है। मैंने अलबिना को यह समझाने की कोशिश की कि उसे ऐसा कुछ न करना चाहिए जिससे कि उसके पिछले कुत्सिल जीवन की छाया उस रास्ते को अंधेरा कर दे जिसे उसकी लड़की ने अपने लिए चुना है। मगर कोई नतीजा नहीं निकला। मैं महसूस कर रहा हूँ कि एक-न-एक रोज माँ अपनी बेटी के रास्ते में आड़े आयेगी और तब झगड़ा होकर रहेगा। प्यार लो,

तुम्हारा—पावेल'

जिन्दगी बदस्तूर बढ़ती रही। ताया काम करती थी और पावेल पढ़ता था। स्टडी सर्किल के काम को दुबारा शुरू करने से पहले एक और मुसीबत अनचित्ते में उस पर टूट पड़ी। लकवे से उसकी दोनों टाँगें बिलकुल बेकार हो गयीं। अब उसे सिर्फ अपने दाहिने हाथ पर बस रह गया। जब बार-बार कोशिश करने के बाद आखिरकार उसकी समझ में यह बात आ गयी कि अपने शरीर पर उसका कोई बस नहीं रहा, तो उसने इतने जोर से दाँत अपने होंठ पर गड़ाये कि खून आ गया। ताया को इस बात से बड़ा क्षोभ और बड़ी पीड़ा होती थी कि वह पावेल की कोई मदद करने में असमर्थ थी। मगर उसने बड़ी वीरता से अपने मन के उस भाव को छिपा लिया। लेकिन पावेल ने मुस्कराकर मानो क्षमा माँगते हुए ताया से कहा :

'ताया, अब हम दोनों को एक-दूसरे से अलग हो जाना चाहिए। यह चीज हमारे इकरारनामे में नहीं थी। आज मैं इसके बारे में ठीक से सोचूँगा।'

ताया ने उसको बोलने नहीं दिया। वह सिसकियाँ लेने लगी और रोते-रोते अपना चेहरा उसने पावेल के सीने में छिपा लिया।

आर्तेम को जब अपने भाई की इस आखिरी बदनसीबी की खबर मालूम

हुई तो उसने अपनी माँ को खत लिखा। मारिया याकोवलेवना सब कुछ छोड़कर फौरन अपने बेटे के पास गयी। अब तीनों साथ रहने लगे। ताया और पावेल की माँ में शुरू से ही बनने लगी।

पावेल सब कुछ के बावजूद अपना अध्ययन चलाता रहा।

जाड़े की एक शाम को ताया ने घर आकर अपनी पहली विजय का समाचार दिया—वह शहर सोवियत के लिए निर्वाचित हुई थी। उसके बाद पावेल की ताया से बहुत कम मुलाकात हो पाती। सेनेटोरियम की रसोई में दिन भर काम करने के बाद, और उसका काम रकाबियाँ धोना था, ताया सीधे सोवियत में जाती और जब बहुत रात गये घर लौटती तो थकी होती। मगर तमाम खयालात उसके अन्दर भरे होते। कुछ ही रोज बाद वह पार्टी मेम्बर की उम्मीदवारी के लिए दरखास्त देगी और वह बड़ी आतुर उत्सुकता से अपने उस चिर-प्रतीक्षित दिन की तैयारी कर रही थी। और तभी दुर्भाग्य ने पावेल पर एक और चोट की। पावेल की बराबर बढ़ती हुई बीमारी अन्दर-ही-अन्दर अपना काम किये जा रही थी। पावेल की दाहिनी आँख में तेज जलन और भयानक दर्द हुआ जो तेजी से बायीं आँख में भी पहुँच गया। एक काला पर्दा गिर गया और उसके चारों तरफ की दुनिया बुझ गयी और जिन्दगी में पहली बार पावेल ने अंधे हो जाने की भयानकता को समझा।

एक नयी बाधा चुपके-चुपके आकर उसके रास्ते में खड़ी हो गयी थी — एक भयंकर, अजेय दीख पड़नेवाली बाधा। उसके कारण ताया और पावेल की माँ को बड़ी निराशा हुई। मगर पावेल बर्फ की तरह सर्द और खामोश था। उसने मन में संकल्प करते हुए कहा :

'मुझे इन्तजार करना चाहिए, देखूं क्या होता है। अगर सचमुच आगे बढ़ने की कोई संभावना न हो, अगर लड़नेवालों की कतार में वापस पहुँचने की मेरी तमाम कोशिशों को यह आँख की रोशनी का चला जाना खतम किये दे रहा हो, तो मैं जिन्दगी की कहानी को ही समाप्त कर दूंगा।'

पावेल ने अपने दोस्तों को चिट्ठियाँ लिखीं और उसके दोस्तों ने उसे जवाब देते हुए यह लिखा कि हिम्मत से काम लो और अपनी जिन्दगी की लड़ाई को बुलन्दी से जारी रखो।

कठिन संघर्ष के इन्हीं दिनों में एक रोज ताया बहुत खुश-खुश घर आयी और उसने एलान किया :

'मैं पार्टी की उम्मीदवार हो गयी, पावलुशा।'

पावेल ने उस सेल-मीटिंग का वृत्तान्त आवेश में भरी हुई ताया के मुँह से सुना जिसमें उम्मीदवारी की उसकी अर्जी मंजूर हुई थी और उस समय पावेल को अपने वे दिन याद आये जब उसने पार्टी के अन्दर कदम रखा था।

उसने ताया का हाथ दबाते हुए कहा, 'अच्छा तो कामरेड कोर्चागिना, तुम और मैं मिलकर अब एक कम्युनिस्ट फ्रैक्शन बन गये।'

अगले रोज उसने पार्टी की जिला कमेटी के मंत्री को एक खत लिखा जिसमें उससे दरखास्त की कि वह आकर उससे मिले। उसी शाम को कीचड़ में सनी हुई एक गाड़ी मकान के सामने आकर रुकी और उसके एक मिनट बाद वोलमर पावेल का हाथ खूब जोरों से दबा रहा था। वोलमर एक अधेड़ लतवियन था और उसकी खूब फैली हुई, कानों तक पहुँचती हुई दाढ़ी थी।

'कहो क्या हाल है? तुम्हारी इन हरकतों का क्या मतलब है? फौरन उठ बैठो। हम तुम्हें गाँव में काम करने भेज देंगे,' उसने हँसते हुए कहा।

वह दो घंटे तक पावेल के पास रहा और उस मीटिंग के बारे में भी भूल गया जिसमें उसे जाना था। वह कमरे में टहलता रहा और पावेल के इस आग्रहपूर्ण अनुरोध को सुनता रहा कि उसे कोई काम दिया जाय।

पावेल ने जब अपनी बात खतम कर ली तो उसने कहा, 'स्टडी सर्किलों की बात करना छोड़ दो। तुम्हें आराम करना है। और हमें तुम्हारी आँख की भी फिक्र करनी है। मुमकिन है अब भी कुछ हो सके। कैसा रहे अगर तुम अपनी आँख मास्को के किसी विशेषज्ञ को दिखलाओ? सोच देखो...'

मगर पावेल ने उसको बीच में ही टोकते हुए कहा :

'कामरेड वोलमर, मुझे आदमी चाहिए, जीते-जागते रक्त और मांस के आदमी! आज मुझे उन्हीं की जरूरत है और जितनी जरूरत आज है, उतनी पहले कभी नहीं थी। मेरे पास लड़कों को भेजिए, उनको जिनके पास सबसे कम अनुभव है। वे यहाँ गाँवों में बहुत उग्र वामपक्षी होते जा रहे हैं। पंचायती खेती से उनकी शक्तियों को काफी निकास नहीं मिलता, वे अपने कम्यून बनाना चाहते हैं। कोमसोमोलों को तो आप जानते ही हो, अगर उन्हें पीछे न खींचा जाय तो कुछ अजब नहीं कि वे दस्ते के आगे-आगे चलने लगें। मैं खुद भी ऐसा ही था।'

वोलमर टहलता-टहलता रुक गया।

'तुम्हें यह बात कैसे मालूम हुई? आज ही तो देहात से यह खबर मिली है।'

पावेल मुस्कराया।

'मेरी बीवी ने मुझे बतलाया। तुम्हें शायद उसकी याद हो। उसे कल पार्टी के अन्दर ले लिया गया।'

'तुम्हारा मतलब कोर्चागिना से है जो रकाबियाँ धोती है? अच्छा तो वह तुम्हारी बीवी है! मुझे नहीं मालूम था!' कुछ देर के लिए वह चुप हो गया। मगर तभी उसे कोई खयाल आया और उसने अपने माथे पर हाथ

मारा। मैं समझ गया कि तुम्हारे पास किसे भेजूंगा — लेव बर्सेनेव को। उससे अच्छे साथी की तुम आकांक्षा नहीं कर सकते। वह बिलकुल तुम्हारे दिल का आदमी है। तुम दोनों में खूब पटेगी — दो हाई फ्रीक्वेन्सी ट्रान्सफार्मरों की तरह। मैं भी कभी बिजली का काम करता था और उसी के शब्द अब तक मुझे याद हैं। लेव तुम्हारे लिए रेडियो तैयार कर देगा। इस काम में वह बहुत उस्ताद है। मैं अक्सर उसके घर पर कान में इयरफोन लगाये दो-दो बजे रात तक बैठा रहता हूँ। मेरी बीवी को तो मुझ पर शक होने लगा। वह जानना चाहती थी कि मैं क्यों इतनी-इतनी देर करके घर लौटता हूँ।'

कोर्चागिन मुस्कराया।

उसने पूछा, 'बर्सेनेव कौन है ?'

वोलमर ने टहलना बंद कर दिया और बैठ गया।

'वह हमारा नाजिर है, मगर सच पूछो तो उसको यह काम उतना ही आता है जितना मुझे बैले नृत्य करना। अभी हाल तक वह एक महत्वपूर्ण पद पर था। सन् १९१२ से वह आंदोलन में है और क्रांति के समय से ही पार्टी मेम्बर है। गृहयुद्ध के दिनों में वह दूसरी घुड़सवार फौज की क्रांतिकारी अदालत में काम कर चुका है। यही वह वक्त था जब ह्वाइट-गार्ड पिस्सुओं की सफाई की जा रही थी। वह जारित्सिन में भी था और दक्खिनी मोर्चे पर भी। फिर कुछ दिनों तक वह सुदूर-पूर्वी प्रजातंत्र की सर्वोच्च फौजी अदालत का भी सदस्य था। वहाँ उसे बहुत काम करना पड़ता था; और उसके दिन आसान नहीं गुजरते थे। आखिरकार उसे तपेदिक हो गया। तब वह उस सुदूर-पूर्वी इलाके को छोड़कर यहाँ काकेशस में चला आया। पहले वह यहाँ एक सूबाई अदालत का चेयरमैन और टेरीटोरियल अदालत का नायब चेयरमैन रहा। फिर उसकी फेफड़े की बीमारी ने उसे बिलकुल ही मजबूर कर दिया। तब उसके सामने यही रास्ता रह गया कि या तो यहाँ आकर आराम करे या मर जाय। इस तरह हमको इतना अच्छा नाजिर मिला। यह काम भी अच्छा ही है। इसमें बहुत भाग-दौड़ नहीं करनी पड़ती और उसके लिए ऐसे ही काम की जरूरत थी। धीरे-धीरे यहाँ के लोगों ने उसके जिम्मे एक सेल कर दिया। उसके बाद वह जिला कमेटी के अन्दर चुना गया। और फिर देखते-देखते एक राजनीतिक स्कूल का भार उसे सौंप दिया गया और अब वह कन्ट्रोल कमीशन में है। वह ऐसे तमाम महत्वपूर्ण कमीशनों का स्थायी सदस्य है जो कठिन झगड़ों को सुलझाने के लिए बनाये जाते हैं। इसके अलावा उसे शिकार का शौक है। उसे रेडियो भी बहुत अच्छा लगता है और गोकि अब उसके पास सिर्फ एक फेफड़ा है, लेकिन यह तुम उसको देखकर भाँप नहीं सकते। उसके अन्दर शक्ति तो फूटी पड़ती है। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि

उसकी मौत जिला कमेटी और अदालत के रास्ते में ही कहीं होगी ।'

पावेल ने उसकी बात को काटा ।

तेज स्वर में उसने पूछा, 'तुम लोगों ने आखिर क्यों उस पर इतना बोझ लाद दिया है ? यहाँ तो वह पहले से भी ज्यादा काम कर रहा है ।'

वोलमर ने उसको मजाक के अन्दाज में देखा और कहा :

'और मान लो मैं तुम्हें कोई स्टडी सर्किल या ऐसा ही कोई काम थमा दूँ, तो लेव जरूर यही कहेगा : 'तुम लोगों ने आखिर क्यों उस पर इतना बोझ लाद दिया है ?' मगर जहाँ तक उसकी अपनी बात है, वह यही कहता है कि मुझे एक साल तक डटकर काम करना मंजूर है, मगर पाँच साल अस्पताल में पड़े रहकर खटिया तोड़ना मंजूर नहीं । ऐसा लगता है कि समाजवाद कायम होने के पहले हम लोग अपने आदमियों की ठीक देखभाल न कर सकेंगे ।'

'यह बात बिलकुल सच है । मुझे खुद जीवन और उत्साह का एक वर्ष, बेकार के पाँच वर्षों से ज्यादा पसंद है । मगर यह भी मानना पड़ेगा कि हम लोग कभी-कभी अपनी शक्तियों को बहुत बुरी तरह बर्बाद कर देते हैं, जिसका हमें कोई हक नहीं है । अब मैं इस बात को समझ गया हूँ कि यह चीज वीरता का चिह्न उतना नहीं है, जितना कि अयोग्यता और गैर-जिम्मेदारी का । अब मैं इस बात को समझने लगा हूँ कि मुझे अपनी तंदुरुस्ती के बारे में इतनी लापरवाही करने का हक नहीं था । अब मैं देख रहा हूँ कि ऐसा करके मैंने कोई बड़ी वीरता का काम नहीं किया । अगर मैंने अपने साथ वे सब फिजूल सख्तियाँ न की होतीं, तो शायद कुछ और साल चल सकता था । दूसरे शब्दों में, वामपंथी बालव्याधि ही एक मुख्य खतरा है ।'

वोलमर ने सोचा, 'अभी तो यह ऐसी बात कह रहा है, मगर जरा पैर पर खड़े होने दो और फिर वह सारी बातें भूल जायगा और उसे सिर्फ काम ही याद रह जायगी ।' मगर उसने कुछ कहा नहीं ।

दूसरे रोज शाम को लेव बर्सेनेव आया । आधी रात को वह पावेल के यहाँ से गया तो उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसे अपना भाई मिल गया हो ।

सबेरे के वक्त लोग कोर्चागिन के घर की छत पर रेडियो का एरियल लगाने लगे और लेव घर में बैठा रेडियो तैयार करने लगा । वह काम करता जाता था और पावेल को अपनी पिछली जिन्दगी की दिलचस्प कहानियाँ सुनाता जाता था । पावेल उसको देख नहीं सकता था, मगर उसके बारे में ताया ने पावेल को जो-कुछ बताया था, उसके आधार पर उसने समझ लिया था कि लेव एक लम्बा, सुनहरे बालों और नीली आँखों वाला नौजवान है जिसकी भाव-भंगिमाओं में हृदय का आवेग भरा होता है । लेव से पहली बार मिलने

पर पावेल ने अपने मन में उसकी ठीक यही छवि उतारी थी।

शाम होते-होते कमरे में रेडियो के तीन वॉल्व चमकने लगे। लेव ने गर्व से पावेल को इयरफोन पकड़ाया। तमाम आवाजें हवा में भरी हुई थीं। पोर्ट के ट्रांसमिटर चिड़ियों की तरह चूं-चूं कर रहे थे और पास ही समुद्र पर किसी जहाज का वायरलेस डॉटों और डैशों की लहरें भेज रहा था। मगर इन सब तरह-तरह के शोरों और आवाजों के बीच से तार ने एक शांत और आत्म-विश्वास से भरी हुई आवाज को पकड़ लिया :

'यह मास्को है...।'

उस छोटे से वायरलेस ने दुनिया के तमाम हिस्सों के साठ ब्राडकास्टिंग स्टेशन पावेल की पहुँच के भीतर ला दिये। वह जिन्दगी, जिससे अब वह वंचित कर दिया गया था, इयरफोन के अन्दर से अब फिर उसके पास तक पहुँचने लगी। एक बार फिर वह जिन्दगी की तेज धड़कन महसूस करने लगा।

पावेल की आँखों में खुशी की चमक देखकर थका हुआ बर्सेनेव संतोष से मुस्कराया।

उस बड़े से मकान में चारों ओर निस्तब्धता थी। ताया नींद में बेचैनी से बड़बड़ा रही थी। इन दिनों पावेल की मुलाकात अपनी बीवी से बहुत कम ही हो पाती थी। वह बहुत रात गये थकी और सर्दी से काँपती हुई घर लौटती। उसका काम उसका ज्यादा-से-ज्यादा समय लेता जा रहा था और शायद ही कभी उसको एक खाली शाम मिलती। इस चीज के बारे में बर्सेनेव ने उससे जो-कुछ कहा था, उसकी याद पावेल को आयी :

'अगर किसी बोल्शेविक की बीवी भी पार्टी कामरेड हो, तो दोनों में शायद ही कभी भेंट हो पाती है। मगर इसके दो फायदे हैं : एक तो वे कभी एक-दूसरे से ऊबते नहीं और दूसरे उन्हें झगड़ने का वक्त ही नहीं मिलता !'

और सचमुच पावेल आपत्ति करता भी तो किस आधार पर ? आखिर इसी चीज की तो संभावना थी। एक वक्त था कि ताया की सभी शामें उसी को समर्पित थीं। तब उनके आपसी सम्बंध में ज्यादा गरमाहट, ज्यादा प्यार और नरमी थी। मगर तब वह केवल उसकी पत्नी थी, अब वह उसकी शिष्या और पार्टी कामरेड है।

वह जानता था कि ताया में जितनी ही राजनीतिक प्रौढ़ता आयेगी, उतना ही कम वक्त वह दे सकेगी और उसने इस अनिवार्यता के आगे सिर झुका दिया।

उसे एक स्टडी सर्किल लेने का काम दिया गया और एक बार फिर शाम के वक्त घर में आवाजें गूंजने लगीं। ये घंटे, जो पावेल इन नौजवानों के साथ गुजारता था, उसके अंदर नयी शक्ति और नया उत्साह भर देते थे।

बाकी वक्त रेडियो सुनने में निकल जाता था, यहाँ तक कि खाने के वक्त

भी उसकी माँ को उसके हाथ से इयरफोन छुड़ाने में मुश्किल होती थी।

रेडियो उसे वह चीज देता था जो उसके अंधेपन ने उससे छीन ली थी — ज्ञान प्राप्त करने का अवसर। उसके अंदर ज्ञान प्राप्त करने की यह जो जबर्दस्त भूख थी, उसके कारण वह उस दर्द को भूल जाता था जो उसके शरीर को तोड़े डाल रहा था, उस आग को जो उसकी आँखों में सलाखें चुभो रही थी और उन मुसीबतों को जिनका पहाड़ उसके ऊपर टूटा था।

जब पावेल की पीढ़ी के बाद के नौजवान कम्युनिस्टों की सफलताओं की खबर मैगनितोस्त्रोय से रेडियो पर आयी तो पावेल को बेहद खुशी हुई।

उसकी सूनी आँखों के आगे उन निर्मम बर्फ के तूफानों की तसवीर खिंच गई, यूराल के उस तीखे जाड़े-पाले की जो भूखे भेड़ियों की तरह क्रूर था। उसने हवा का तेज सनसनाना सुना और उड़ती हुई बर्फ के बीच से दूसरी पीढ़ी के कोमसोमोलों की एक टुकड़ी को, आर्क लैम्पों की रोशनी में, एक विशाल कारखाने की इमारत की छत पर, उस कारखाने को बर्फ के हमले से बचाने के काम में लगा देखा। इसकी तुलना में जंगल का वह रेल की पटरी बिछाने का काम, जिसमें कीव के कोमसोमोलों की पहली पीढ़ी ने प्रकृति के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी, कितना छोटा था! देश ने प्रगति की थी और उसके साथ ही जनता ने।

और नीपर नदी पर पानी ने लोहे के बाँधों को तोड़ दिया था, आदमी और मशीनों को बहा ले गया था। और एक बार फिर कोमसोमोल नौजवानों ने उस दरार के बीच अपने को झोंक दिया था और दो दिन तक उस निरंकुश प्रवाह के खिलाफ डटकर मोर्चा लेते हुए उस पर काबू पा लिया था। इस महान संघर्ष में एक नयी पीढ़ी आगे-आगे चल रही थी और इन वीरों में पावेल ने अपने पुराने साथी पांक्रातोव का नाम सुना।

अठारह

मास्को में पहले कुछ दिन वे लोग एक संस्था के पुराने कागजात रखने की जगह में रहे। उसका प्रधान पावेल को एक खास क्लिनिक में ठहराने का बंदोबस्त कर रहा था।

अब पावेल की समझ में आया कि तब बहादुरी कितनी आसान थी, जब उसके पास अपनी जवानी थी और एक मजबूत जिस्म था। लेकिन अब जब जिन्दगी ने उसे अपने फौलादी पंजे में दबोच लिया था, यह सब उसके लिए इज्जत की बात हो गयी थी।

पावेल कोर्चागिन को मास्को आये डेढ़ साल हो गये थे — वर्णनातीत

पीड़ा के अठारह महीने।

आँख के क्लिनिक में प्रोफेसर आयरबाक ने पावेल को साफ-साफ बतला दिया था कि उसकी आँख की रोशनी लौटने की कोई उम्मीद नहीं है। भविष्य में जब सूजन गायब हो जायगी, तब मुमकिन है आपरेशन हो सके। तब तक उसने सूजन को रोकने के लिए एक आपरेशन की सलाह दी।

पावेल से जब उसकी अनुमति माँगी गयी, तो उसने डाक्टरों से कहा कि वे जो कुछ भी जरूरी समझें, करें।

तीन बार उसने मौत के स्याह डैनों के स्पर्श को अनुभव किया, जब वह घंटों आपरेशन की मेज पर लेटा रहा और डाक्टर का चाकू उसके थाइरॉयेड ग्लैन्ड को निकालने के लिए उसके गले में घूमता रहता था। मगर पावेल कसकर जिन्दगी को पकड़े हुए था और कई घंटों की अनिश्चय-भरी प्रतीक्षा की यातना के बाद ताया फिर अपने प्रिय पावेल को पा लेती। उसके चेहरे पर मौत सरीखा पीलापन होता, मगर वह हमेशा की तरह सजीव, शांत और नम्र दिखायी देता :

'घबराओ मत प्यारी, मुझे मारना इतना आसान नहीं है। मैं जिन्दा रहूँगा, अगर और किसी के लिए नहीं तो इसीलिए कि मैं इन विद्वान डाक्टरों की कही हुई तमाम बातों को उलट-पुलट कर रख देना चाहता हूँ। मेरी तन्दुरुस्ती के बारे में वे जो कुछ कहते हैं, सब ठीक है, मगर उनकी सबसे बड़ी गलती यह है कि वे मुझे काम के लिए बिलकुल अयोग्य करार देकर घूर पर उठाकर रख देना चाहते हैं। देखूंगा कि वे ऐसा कैसे कर पाते हैं!'

पावेल का संकल्प था कि नयी जिन्दगी के निर्माताओं की कतार में अपनी जगह लिये बिना वह नहीं रहेगा। अब उसे मालूम हो गया था कि उसे क्या करना चाहिए।

जाड़ा बीत गया था और खुली खिड़कियों में से बसन्त अन्दर घुस रहा था। पावेल का एक और ऑपरेशन हुआ और वह उससे जिन्दा निकल आया। उसने संकल्प किया कि वह कितना ही कमजोर क्यों न हो, अस्पताल में अब और नहीं रहेगा। इतने महीनों तक लोगों की इतनी पीड़ा के बीच रहना, चारों तरफ ऐसे लोगों के रोने-कराहने से घिरे रहना, जिन लोगों के बचने की कोई उम्मीद न थी, खुद अपनी तकलीफ को सहने से ज्यादा मुश्किल था।

और इसलिए जब एक और ऑपरेशन का प्रस्ताव किया गया तो उसने रुखाई से जवाब दिया :

'नहीं, अब नहीं। बहुत हो चुका। मैंने विज्ञान के लिए अपना काफी खून दे दिया। अब जो बचा है, उसके लिए मेरे पास दूसरा उपयोग है।'

उसी रोज पावेल ने केंद्रीय समिति को खत लिखा जिसमें उसने बतलाया कि चूंकि इलाज की तलाश में अब और भटकना बेकार है, इसलिए वह

मास्को में रहना चाहता है जहाँ उसकी बीवी इन दिनों काम करती है। यह पहला मौका था जब उसने पार्टी से सहायता माँगी थी। उसकी दरखास्त मंजूर हो गयी और मास्को की सोवियत ने उसको रहने की जगह दे दी। वह अस्पताल से चला तो उसके मन में यही कामना थी कि फिर कभी वहाँ लौटना न पड़े।

क्रोपोत्किस्काया के पास की एक खामोश गली में उसका यह मामूली-सा कमरा उसके लिए शान-शौकत की सबसे ऊँची चोटी था। और अक्सर रात को जागते समय पावेल को यह विश्वास करने में कठिनाई होती कि अब अस्पताल सचमुच उसके लिए बीते दिनों की एक चीज हो गया था।

ताया अब तक पूरी पार्टी मेम्बर हो गयी थी। वह बहुत अच्छी कार्यकर्ता थी और व्यक्तिगत जिन्दगी की दुखद घटनाओं के बावजूद कारखाने के सबसे आगे बढ़े हुए मजदूरों से किसी मामले में पीछे नहीं रहती थी। उसके साथ के मजदूरों ने इस शांत और विनम्र युवती के प्रति अपना सम्मान दिखलाने के लिए उसे कारखाने की ट्रेड यूनियन कमेटी का मेम्बर चुन लिया। पावेल को अपनी पत्नी के लिए गर्व होता था क्योंकि वह धीरे-धीरे एक सच्ची बोल्शेविक बनती जा रही थी और इससे पावेल को खुद अपनी तकलीफ को सहने में मदद मिलती थी।

बाजानोवा किसी काम से मास्को आयी और पावेल से मिलने गयी। उन दोनों में बड़ी देर तक बातें हुईं। पावेल जब उसको अपनी योजनाएँ बतलाने लगा कि कैसे वह जल्दी ही नयी जिन्दगी के निर्माताओं की कतार में पहुँच जायगा, तो उस वक्त वह आवेश से चंचल हो उठा।

बाजानोवा ने पावेल की कनपटी पर चाँदी के तारों को देखा और धीमे से कहा :

'साफ दिखायी देता है कि तुम्हें बहुत तकलीफों के बीच से गुजरना पड़ा है मगर तब भी तुम्हारा उत्साह जरा भी कम नहीं हुआ। तुम्हें और क्या चाहिए ? मुझे खुशी है कि तुमने उस काम को शुरू करने का फैसला किया है जिसके लिए तुम पिछले पाँच सालों से अपने-आपको तैयार करते आ रहे हो। मगर कैसे करोगे ?'

पावेल आत्मविश्वास से मुस्कराया।

'कल मेरे दोस्त मुझे दफ्ती का एक स्टेंसिल लाकर देंगे जिसकी मदद से मैं लाइनों को एक-दूसरे पर चढ़ाये बिना सीधे-सीधे लिख सकूँगा। उसके बिना मैं लिख ही नहीं सकता। बहुत सोचने के बाद मुझे यह तदबीर सूझी। होगा यह कि दफ्ती के बड़े सिरे मेरी पेन्सिल को सीधी लाइन से इधर-उधर बहकने न देंगे। इसमें क्या शक कि ऐसे बिना देखे लिखना, और जब कि तुम अपने लिखे हुए को पढ़ भी न सको, बहुत मुश्किल काम है। मगर नामुमकिन

नहीं। मैंने उसे करके देखा है और जानता हूँ कि किया जा सकता है। इसका तरीका समझने में मुझे बहुत वक्त लगा, मगर अब मैंने धीरे-धीरे, पर अक्षर को रुक-रुककर लिखना सीख लिया है और परिणाम काफी संतोषजनक है।'

और इस तरह पावेल ने काम शुरू किया।

उसने वीर कोतोव्स्की डिवीजन के बारे में एक उपन्यास लिखने की बात सोची थी; उसका शीर्षक अपने-आप उसे सूझ गया : **तूफान के बेटे**।

उसकी समूची जिन्दगी अब इस उपन्यास के लिखने में ही लगी हुई थी। धीरे-धीरे एक-एक लाइन करके पन्ने निकलने लगे। काम करते वक्त वह अपनी तसवीरों की दुनिया में पूरी तरह डूबा रहता और उसे अपने आस-पास की किसी चीज का ध्यान न रह जाता। जीवन में पहली बार उसे सृजन की पीड़ा की अनुभूति हुई और उसने उस क्षोभ और दर्द को महसूस किया जिसे कलाकार उस वक्त महसूस करता है जब जीते-जागते, कभी न भूलनेवाले दृश्य, जो आँखों के सामने खड़े दिखते हैं, कागज पर उतरते ही बेजान और पीले लगने लगते हैं।

उसे अपना लिखा हुआ एक-एक शब्द याद रखना पड़ता। जरा-सी भी बाधा से उसके विचारों की शृंखला टूट जाती और उसका काम रुक जाता। उसकी माँ अपने बेटे के काम को भय और शंका की दृष्टि से देखती थी।

कभी-कभी उसे पूरे-पूरे सफे और यहाँ तक कि अध्याय भी अपनी याद से सुनाने पड़ते और ऐसे मौके आते थे जब उसकी माँ को डर लगने लगता था कि पावेल का दिमाग खराब हो रहा है। उसके काम करते समय उसके पास जाने का माँ को साहस न होता, मगर फर्श पर गिरे हुए कागजों को चुनते समय वह डरते-डरते पावेल से कहती :

'मेरी बड़ी इच्छा है पावलुशा कि तुम और कोई काम करो। इस तरह जो तुम हरदम बैठे लिखा करते हो, यह तुम्हारे लिए अच्छी बात नहीं...।'

पावेल हँसकर उसकी शंकाओं को उड़ा देता और अपनी बुड्ढी माँ को आश्वासन देता कि घबराने की कोई बात नहीं है। अभी उसका दिमाग ठीक है।

उसकी किताब के तीन अध्याय हो गये थे। पावेल ने उन्हीं कोतोव्स्की डिवीजन के अपने पुराने सैनिक साथियों के पास राय के लिए ओदेसा भेजा और थोड़े ही रोज बाद उसे एक खत मिला जिसमें उसके काम की तारीफ की गयी थी। मगर उसकी पांडुलिपि लौटते समय डाक में खो गयी। छः महीनों के काम पर पानी फिर गया। यह उसके लिए एक भयानक आघात था। उसे बहुत क्षोभ हो रहा था कि उसने क्यों अपनी पांडुलिपि, जिसकी नकल भी उसके पास नहीं थी, बाहर भेजी। लेदेनेव को जब यह बात मालूम हुई तो उसने पावेल को डाँटा :

'तुम इतने लापरवाह कैसे हो गये ? मगर कोई बात नहीं, बीती बात को

भूल जाओ, उस पर सिर धुनने से कोई लाभ नहीं। अब फिर से शुरू करो।'

'मगर इन्नोकेंती पावलोविच, मेरी तो छः महीने की मेहनत लुट गयी! हर रोज मैंने आठ-आठ घंटे काम किया था। जहन्नुम में जायें सब।'

लेदेनेव ने अपने दोस्त को सांत्वना देने की पूरी कोशिश की।

काम को दुबारा शुरू करने के अलावा कोई चारा न था। लेदेनेव ने उसे कागज लाकर दिया और पांडुलिपि के टाइप कराने में उसकी मदद की। छः हफ्ते बाद पहला अध्याय दुबारा लिख लिया गया था।

कोर्चागिन के घर के ही एक हिस्से में अलेक्सियेव नाम का एक परिवार रहता था। उनका बड़ा लड़का अलेक्जांडर कोमसोमोल की एक जिला कमेटी का मंत्री था। उसकी बहन गालिया एक कारखाने के ट्रेनिंग स्कूल में पढ़ती थी। गालिया अठारह साल की एक खुशमिजाज लड़की थी। पावेल ने अपनी माँ से कहा कि वह गालिया से बात करे और पता लगाये कि क्या वह पावेल के सेक्रेटरी की हैसियत से उसके काम में मदद करने के लिए तैयार होगी। गालिया फौरन राजी हो गयी। वह एक रोज मुस्कराती हुई आयी और उसे बड़ी खुशी हुई जब उसे मालूम हुआ कि पावेल एक उपन्यास लिख रहा है।

उसने कहा, 'कामरेड कोर्चागिन, मैं बड़ी खुशी से तुम्हारे काम में हाथ बटाऊँगी। पिता जी की उन उबा देनेवाली गश्ती चिट्ठियों से, जिनमें बतलाया जाता है कि पंचायती घरों में कैसे सफाई रखनी चाहिए, कहीं ज्यादा मजा इस काम में आयेगा।'

उस दिन से पावेल का काम दुगनी तेजी से होने लगा। सचमुच एक महीने में इतना काम हो गया कि पावेल को अचम्भा हुआ। गालिया के प्रसन्नचित्त सहयोग और सहानुभूति से उसे अपने काम में बड़ी मदद मिलती थी। उसकी पेन्सिल तेजी से कागज पर चलती जाती थी और जब कोई टुकड़ा उसे खास तौर पर अच्छा मालूम होता, तो वह उसे कई-कई बार पढ़ती और पावेल की सफलता से उसे हार्दिक खुशी होती। उस घर में संभवतः वह अकेली थी जिसे पावेल के काम में विश्वास था। बाकी लोग सोचते थे कि इसका कोई नतीजा न निकलेगा और पावेल मजबूर होकर बेकार बैठे रहने की हालत में अपनी सूनी घड़ियों को भरने के लिए कुछ कर रहा है।

लेदेनेव किसी काम से शहर से बाहर गया हुआ था। मास्को लौटने पर पर उसने पहले के कुछ अध्याय पढ़े और कहा :

'लिखे जाओ दोस्त। मुझे कोई संदेह नहीं कि तुम्हारी विजय होगी। कामरेड पावेल, तुम्हारे सामने महान सुख का साम्राज्य बिखरा हुआ है। मुझे पक्का विश्वास है कि तुम्हारा लड़नेवालों की कतार में वापस पहुँचने का सपना जल्द ही पूरा होगा। उम्मीद मत हारो, बेटा!'

वह बुड्ढा पावेल को इतने उत्साह में देखकर वहाँ से लौटा तो संतुष्ट था।

गालिया नियमित रूप से आती और उसकी पेन्सिल सफों पर तेजी से दौड़ती रहती और अविस्मरणीय अतीत के दृश्य फिर से जी उठते। उन क्षणों में जब पावेल स्मृतियों की बाढ़ में बहता हुआ अपने विचारों में खो जाता, तो गालिया को उसकी बरौनियों का फड़कना दिखायी देता और उसकी आँखों से पता चलता कि विचार कैसी तेजी से उसके आगे आ रहे हैं। इस बात पर विश्वास करने को जी नहीं होता कि वे आँखें देख नहीं सकती थीं क्योंकि उसकी साफ बेदाग पुतलियों में बहुत जान नजर आती थी।

दिन का काम खतम होने पर वह अपना लिखा हुआ पावेल को पढ़कर सुनाती। पावेल गौर से उसे सुनता और उसकी पेशानी पर झुर्रियाँ पड़ जातीं।

'तुम्हारी त्यौरी में बल क्यों पड़ रहे हैं ? अच्छा नहीं हुआ क्या ?'

'नहीं गालिया, बात बनी नहीं।'

जो सफे उसे अच्छे न लगते, उन्हें वह फिर से खुद ही लिखता। स्टेन्सिल के उस तंग, संकरे से टुकड़े के कारण उसे काम में रुकावट होती और वह कभी-कभी झुंझलाकर उसे दूर फेंक देता। और फिर जीवन से क्रुद्ध होकर, क्योंकि उसी ने उसकी आँख की रोशनी छीन ली थी, वह अपनी पेन्सिल को तोड़ देता और ओठों को चबाने लगता, यहाँ तक कि खून निकल आता।

जैसे-जैसे काम समाप्ति पर आ रहा था, निषिद्ध भावनाएँ उसकी चिर जागरूक इच्छाशक्ति के बंधनों को तोड़े डाल रही थीं। ये निषिद्ध भावनाएँ थीं — उदासी और सीधी-सच्ची मानवीय अनुभूतियाँ, प्यार की और दुलार की अनुभूतियाँ, जिनका अधिकार अकेले उसको छोड़कर दुनिया में सब को था। मगर वह जानता था कि अगर उनमें से किसी एक के सामने भी उसने घुटना टेक दिया, तो उसका परिणाम अत्यंत करुण होगा।

ताया जब रात को कारखाने से घर लौटती तो उस वक्त भी पावेल को काम करता पाती और मारिया याकोवलेवना से बहुत धीमे-धीमे दो-एक बात करके, ताकि पावेल के काम में रुकावट न पड़े, वह सोने के लिए चली जाती।

आखिरकार अंतिम अध्याय लिखा गया। फिर कुछ दिन तक गालिया ने पावेल को पूरी किताब पढ़कर सुनायी।

कल पांडुलिपि प्रादेशिक पार्टी कमेटी के सांस्कृतिक विभाग के पास लेनिनग्राद भेजी जायगी। अगर किताब मंजूर होती है, तो उसे प्रकाशक को दिया जायगा और फिर ...

इस खयाल से उसका दिल जोर से धड़कने लगा। अगर सब-कुछ ठीक-ठाक रहा तो उसकी नयी जिन्दगी शुरू होगी जिसके लिए उसने बरसों हाड़-तोड़ मेहनत की थी, मगर हिम्मत न हारी थी।

किताब की किस्मत का फैसला खुद पावेल की किस्मत का फैसला होगा। अगर पांडुलिपि अस्वीकृत होती है, तो इसका मतलब होगा कि पावेल का जीवन शेष। अगर उसके कुछ अंशों को ही खराब पाया जाता है और उसके दोषों को और मेहनत करके दूर किया जा सकता है, तो वह फ़िर फौरन अपने नये उद्योग में लग जायगा।

उसकी माँ पांडुलिपि का पार्सल डाकखाने में ले गयी। आतुर प्रतीक्षा के दिन शुरू हुए। इसके पहले जीवन में कभी पावेल ने किसी चिट्ठी के लिए ऐसी आतुर प्रतीक्षा न की थी और न कभी उसे इस दुविधा ने इतना सताया था कि पता नहीं कैसी चिट्ठी आये। सबेरे से लेकर शाम तक वह डाक का इन्तजार करता रहता मानो यही उसकी जिन्दगी का अकेला काम हो। मगर लेनिनग्राद से कोई समाचार न आया।

प्रकाशकों की इस चुप्पी से पावेल को डर मालूम होने लगा। रोज-ब-रोज उसकी यह आशंका बढ़ती गयी और पावेल ने इस बात को अपने तईं स्वीकार किया कि किताब के पूरी तरह अस्वीकृत किये जाने के बाद वह जी नहीं सकेगा। यह चीज उसकी सहन-शक्ति के बाहर होगी। तब जीने के लिए उसके पास कोई कारण ही नहीं बचेगा।

ऐसे क्षणों में उसे समुद्र के किनारेवाली पहाड़ी के उस पार्क की याद आती और वह यही सवाल अपने से बार-बार पूछता :

'क्या तुमने इस फौलादी शिकंजे से बाहर निकलने और लड़नेवालों की कतार में वापस पहुँचने की, अपने जीवन को उपयोगी बनाने की, हर मुमकिन कोशिश की ?'

और उसे जवाब देना पड़ता : 'हाँ, मैं समझता हूँ कि मैंने सब-कुछ किया।'

आखिरकार जब प्रतीक्षा की पीड़ा प्रायः असह्य हो गयी तो उसकी माँ, जिसे अपने बेटे के बराबर ही वह पीड़ा हो रही थी, एक रोज दौड़ती और चिल्लाती हुई कमरे में आयी :

यह प्रादेशिक कमेटी का तार था। तार की संक्षिप्त भाषा में लिखा हुआ था : 'उपन्यास बहुत पसंद किया गया। प्रकाशकों को दे दिया गया। सफलता पर बधाई !'

उसका दिल तेजी से धड़क रहा था। उसका हमेशा-हमेशा का संजोया हुआ सपना पूरा हो रहा था। वह फौलादी शिकंजा छिन्न-भिन्न पड़ा था और अब एक नये हथियार से लैस होकर पावेल एक बार फिर जिन्दगी के मैदान में लड़नेवालों की कतार में वापस आ गया था।
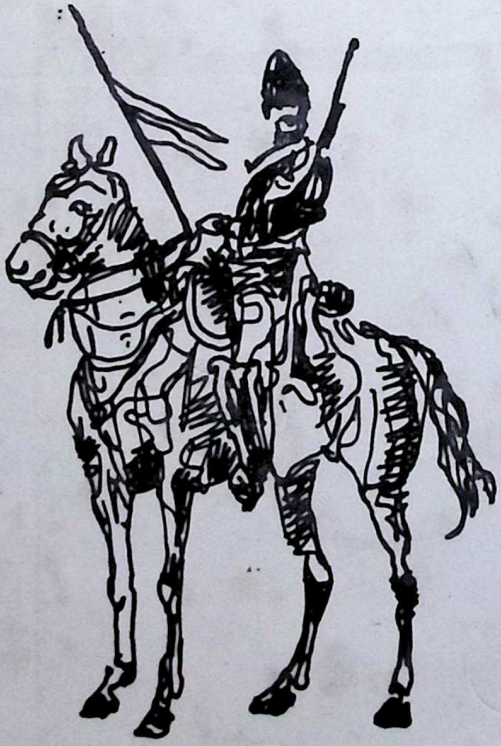
2542
डा. दिल्ली रमण रेमी
कल्याणी रेमी स्मारक
पुस्तकालय